10·2

श्री कंचन मुखर्जी उर्फ़ कंचनकुमार प्रतिभा और व्यक्तित्व में समान हैं। पैदा हुए बंगाल में और आकर बस गये बनारस में। बंगाल के ख्याति प्राप्त कवि के पुत्र होने के कारण इनके जिस्म में भी साहित्य के खतरनाक कीटाणु घुस गये। कुछ दिनों तक 'आह्वान' (बंगला मासिक) फिर 'नागफनी' (अनियमित व्यंग प्रधान हिन्दी पत्रिका) का संपादन, प्रकाशन और हाकरी करते रहे। चश्मा लगाने के आदि होने के कारण सभी बातों को जरा अपने ऐंगिल से देखते हैं।

'राग विराग' के बाद 'पाषाण कन्या' से मुहब्बत की। फिर 'उलझती [illegible]' अपनाया; कुछ दिन हुए 'अनजान द्वीप, बदनाम घाटी' में आ बसे हैं। पर जल्दी ही आप 'सुनहली नदी' की खोज में निकलने वाले हैं।

ढाको

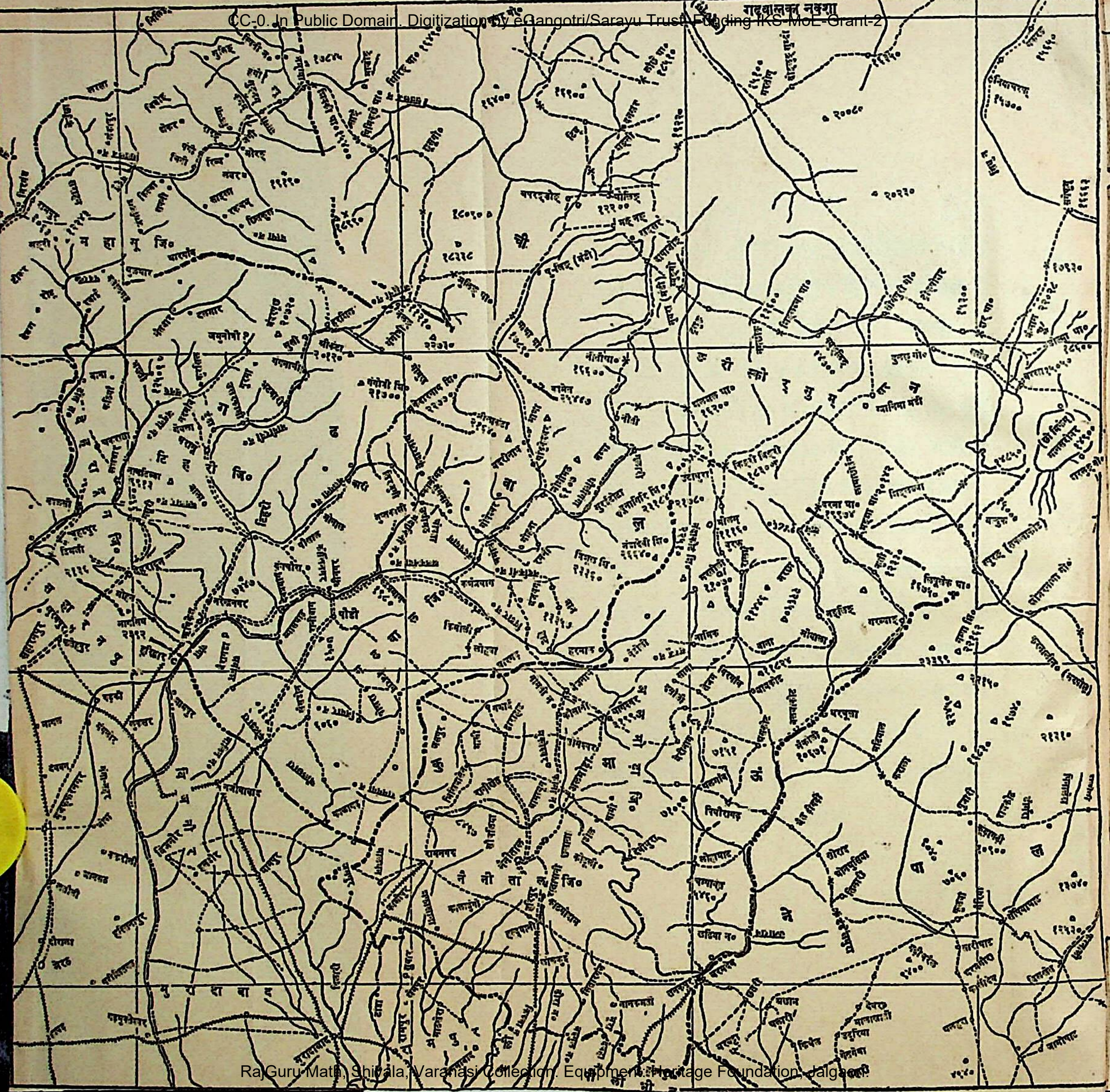

गढ़वालका नक्शा

जमुनोत्री
गंगोत्री
टिहरी
पौड़ी
हरिद्वार
नजीबाबाद
रामनगर
मुरादाबाद
नैनीताल जि०

हिमालय-परिचय (१)

गढ़वाल

राहुल सांकृत्यायन

मुद्रक और प्रकाशक
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

समर्पण

गढ़भूमिके सुपुत्र
श्रीमुकुंदीलाल
बी०ए० (कौंब्रिज), बैरिस्टर-एट्-ला
के करों में

प्राक्कथन

हिमालय किसको अपनी ओर आकृष्ट नहीं करता? मेरा तो उसके प्रति आकर्षण १९१० ई०से ही हुआ, और पिछले तैंतालीस वर्षोंमें उसके साथ इतना घनिष्ट संवंध हुआ, कि "स्वान्तः सुखाय" भी मुझे लेखनी चलानेकी जरूरत महसूस होने लगी। लिखनेका मतलव ही है, और अधिक परिचय प्राप्त करना। पहले मेरा ख्याल नहीं था, कि मैं "हिमालय-परिचय"पर कलम चलाऊँगा। यदि वैसा होता, तो इस ग्रंथ (गढ़वाल)को "हिमालय-परिचय (३) —गढ़वाल" नाम देना पड़ता, क्योंकि तिब्वत-संवंधी पुस्तकोंको छोड़ देनेपर "किन्नर देशमें" इस विषयकी मेरी पहली पुस्तक है, और दूसरी "दोर्जिलिङ्-परिचय"। हिमालयके नेपाल, कूर्माचल कुमाऊं, केदार (गढ़वाल), जलन्धर (शिमला-कांगड़ा या हिमाचल प्रदेश), और कश्मीर ये पांच खंड संस्कृतके पुराने ग्रंथोंमें माने गये हैं। "कुमाऊं" लिख लेनेपर मेरे मनमें ख्याल आया, कि "हिमालय-परिचय" लिख डालना चाहिए। यह प्रसन्नताकी वात है, कि नेपाल, कुमाऊं और गढ़वाल तीनों क्रमशः "हिमालय-परिचय" (३),(२),(१)के रूपमें लिखकर छप या प्रेसमें जा चुके। "किन्नर देशमें" को जलन्धर (हिमालय प्रदेश)का पूरा परिचय नहीं कहा जा सकता, तो भी उसके सवसे अधिक अल्प-परिचित प्रदेश—सतलजकी ऊपरी उपत्यका—के वारेमें उसमें काफी लिखा जा चुका है, और यदि हो सका तो अगले संस्करणमें उसे "हिमालय-परिचय (४)—हिमाचलप्रदेश"के नामसे परिवर्द्धित किया जा सकता है। तव दार्जिलिंगसे चम्बा (तिस्तासे चनाव) तकके हिमालयका परिचय पाठकोंके सामने आ जायगा। साठ सालकी उमरमें किसी कामके लिए संकल्प करना अच्छा नहीं है। उसे तो सिर्फ हाथमें लिया जा सकता है। इसी ख्यालसे "हिमालय-परिचय (५)—कश्मीर"के वारेमें मैं संकल्प नहीं करता। इस पांचवें खंडको "मेरी लदाख-यात्रा"में स्पर्श किया गया है; किन्तु, कश्मीरके वारेमें विस्तृत लिखनेके लिए एक वार फिर वहांकी यात्रा (चौथी) करनी होगी, जिसके लिए मेरा स्वास्थ्य और शरीर आज्ञा नहीं देता।

हिमालयके पांचों खंडोंकी सीमायें प्राचीनकालमें एक जगह नहीं रही होंगी, यह तो निश्चय है, किन्तु पुरानी सीमायें अधिकतर स्थानीय भाषाओं या संस्कृ-

तियोंके आधारपर हुआ करती थीं, इसीलिए उनका परिचय पाना दिलचस्पीसे खाली नहीं होगा। मेरी समझमें नेपाल और कूर्मांचलकी पुरानी सीमा करनाली और गंडकीके पनढरोंकी सीमा (जलविभाजक) थी, इसीलिए नेपालके पूरविया और कुमाईं ब्राह्मणोंके मूलस्थान इसी पनढरके वारपार थे। नेपालके विद्वान आज भी कालीगंडकीके पश्चिम कुमाईं ब्राह्मणोंकी भूमि मानते हैं। कूर्मांचल (कुमाऊं) और केदार (गढ़वाल)की सीमा शारदा (महाकाली) और गंगाका पनढ है। वधान शताब्दियों तक कुमाऊनियों और गढ़वालियोंके झगड़ेका कारण बना रहा। केदार और जलन्धरकी सीमा आजकल देखनेसे जमुना या उसकी पश्चिमी शाखा टौंस (तमसा) मानी जा सकती है, यद्यपि जमुनापारी—जौनपुर और जौनसारके—लोग अपनी भाषा और रीति-रवाजसे गढ़वालियों और हिमाचल प्रदेशियोंसे भिन्नता रखते हैं। जौनपुर, जौनसारका मेल रवाईं (ऊपरी जमुना)से अधिक खाता है। जमुनाकी उपत्यकाके लोगोंको प्राचीनकालमें, हो सकता है, केदारके भीतर ही माना जाता हो। आज भी वदरी, केदार और गंगोत्रीकी तरह जमुनोत्री केदारखंडके भीतर है।

जलन्धर तव टौंसके पश्चिम माना जाता होगा, जैसा कि आजकल भी हिमाचल-प्रदेशकी सीमा उसे माना जा रहा है। यह विचित्रसी वात है, कि पुराने समयमें जलन्धरको पश्चिमी हिमालयका एक वड़ा खंड माना जाता था, जिसमें सतलज, व्यास, रावी और चनावकी चारों नदियां वहती थीं; लेकिन, पीछे किसी समय मैदानमें आधुनिक जलन्धरके प्रदेशको वह नया नाम दिया गया। इसका क्या कारण हो सकता है? शायद पहाड़ी जलन्धरियोंने किसी समय पंजावके इस मैदानी इलाकेको जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया, और अपने एक नगरका नामकरण जलन्धर किया। जलन्धर नगर एक विशाल नगर होनेकी योग्यता रखता है, और ईसाकी आरंभिक शताब्दियोंमें वह वैसा महत्त्वपूर्ण नगर रहा भी। पंजावियोंने सचमुच ही भांग खा ली, जव उन्होंने पंजावीक्षेत्रके ऐसे अच्छे नगरके रहते अपनी भाषासे वाहर चंडीगढ़में राजधानी वनानी आरंभ की। आज करोड़ों रुपये लगाकर चंडीगढ़को आवाद किया जा रहा है, लेकिन क्या जाने उसकी भी अवस्था दौलतावाद जैसी हो। प्रदेश भाषाओंके अनुसार ही वन सकते हैं, इसलिए आज या कल किसी समय पंजावी भाषाभाषियोंका एक प्रदेश वनकर रहेगा, और उसे पेप्सू, तथा पूर्वी पंजावके रूपमें हरियानाको मिलाकर खिचड़ी पकाये रखना सम्भव नहीं हो सकेगा। उस समय जलन्धरका भाग्य फिर खुले, तो कोई आश्चर्य नहीं। तव चंडीगढ़को अपने संस्थापकोंके

नामपर रोना पड़ेगा, या उसे एक औद्योगिक केन्द्र बनकर जीवित रहनेका अधिकार मिलेगा।

जलन्धर-खंड (हिमाचल प्रदेश)के लिखनेका ख्याल अभी छूटा नहीं है।

इस ग्रंथको पूर्ण कहना उपहासास्पद होगा। पूर्ण तो वस्तुतः किसी ग्रंथको नहीं कहा जा सकता, क्योंकि हरेक पीढ़ी अपने अनुभव और ज्ञानके अनुसार ज्ञान-प्रासादकी एक ईंट ही रख सकती है, जिसपर आनेवाली पीढ़ियां अपने अधिक विशाल और गम्भीर ज्ञान तथा अनुभवके अनुसार प्रासाद खड़ी करती हैं। यदि मेरा "हिमालय-परिचय" पहली ईंट बननेके योग्य माना गया, तो मैं अपने प्रयत्नको सफल समझूंगा। इस पुस्तकके लिखनेमें अपने पहलेके लेखकोंसे मुझे बड़ी सहायता मिली, जिनके नाम जहां तहां आ चुके हैं। हिंदीमें श्री रतूड़ीका "गढ़वालका इतिहास" ही गढ़वालके इतिहासपर प्रकाश डालता है। समसामयिक लेखकके तौरपर महान् चित्रकार और कवि मोलारामका ग्रंथ बहुत महत्त्व रखता है, जिसकी प्राप्तिमें गढ़वालके सुपुत्र बैरिस्टर मुकुन्दीलालजीका मैं बहुत कृतज्ञ हूं। श्री शम्भूप्रसाद बहुगुणा द्वारा उद्धृत "मानोदय" काव्यके कुछ अंश भी दिशाप्रदर्शनमें बहुत सहायक हुए, उसके लिए उनका भी आभारी हूं। श्री विश्वेश्वरदत्त चंदोलाने अपनी संगृहीत पुस्तकोंको देकर मेरी बड़ी सहायता की, जिसके लिए उनका कृतज्ञ होना आवश्यक है। और जिन महानुभावोंने पुस्तकके लिखनेमें जो सहायता की, उन सबका नाम देना यहां सम्भव नहीं है, तो भी उनमेंसे कितनों हीके नाम जहां तहां आ चुके हैं। हिमालयने अंग्रेजोंको १९वीं शताब्दीके आरंभसे ही अपनी ओर आकृष्ट करना शुरू किया, और उन्होंने हिमालयमें गर्मियोंमें भी शीतल रहनेवाले नगर ही स्थापित नहीं किये, बल्कि उसके बारेमें भी पचासों लेख और पुस्तकें लिखीं। एट्किन्ससनका दो विशाल जिल्दोंमें 'हिमालय गज़ेटियर" कुमाऊं और गढ़वालवाले हिमालयके ज्ञानकी खान कहा जा सकता है। अंग्रेजीमें जितने भी महत्त्वपूर्ण ग्रंथ सुलभ थे, मैंने उनसे मधुसंचय करनेकी यहां कोशिश की है, और "क्वचिदन्यतोपि" कहनेकी तो अवश्यकता ही नहीं।

ग्रंथमें सभी तरहका परिचय दिया गया है, यह तो उसके अवलोकनसे ही मालूम होगा, और इसे दुस्साहस कहा जा सकता है, क्योंकि सभी देनेपर सभी बातें अपूर्ण रहती हैं। लेकिन, हिंदीमें अभी इस तरहके साहित्यका आरंभ ही हो रहा है, इसलिए कितनी ही बातोंके बारेमें दूसरे ग्रंथोंकी ओर संकेत करके नहीं छोड़ा जा सकता। हिंदीको अब हमारे देशमें वह सब काम करना है, जो अब तक

अंग्रेजी द्वारा होता रहा। "हिमालय-परिचय"की त्रुटियां मुझे मालूम हैं त्रुटियोंको हटाकर और अच्छे ग्रंथको प्रदान करना हमारी नई पीढ़ी काम है।

यह प्रसन्नताकी बात है, कि "हिमालय-परिचय (२)—कुमाऊं" औ "हिमालय-परिचय (३)—नेपाल" भी प्रेसमें हैं। प्रकाशकोंसे हम आशा रख हैं, कि वह इसी सालमें उन्हें प्रकाशित कर देंगे।

मसूरी, १०-३-५३

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

अध्याय १

प्राकृतिक रूप

§१. मध्य हिमालय ३
§२. गढ़वाल ४
(१) सीमा-क्षेत्रफल ४
(२) उपत्यका-सौंदर्य ४
(३) भावर ५
§३. पर्वत ६
§१. पर्वत-श्रेणियां ६
(क) हिमालय ६
(१.२) नंदादेवी—वदरीनाथ ६
(३) कामेत-गंधगादन श्रेणी ६
(४,५) गंगोत्री-जमुनोत्री श्रेणी ७
(ख) अन्य श्रेणियां ७
(६) तुंगनाथ-श्रेणी ७
(७) मंदाकिनी ,, ७
(८) रमनी ,, ७
(९) खमिल ,, ७
(१०) नंदाकोट-दूदातोली श्रेणी ७
(११) ग्लावदम श्रेणी ७
(१२,१३) दूदातोली मुख्य श्रेणी ७
(१४) धनपुर-श्रेणी ८
(१५) अमेली-श्रेणी ८
(१६,१७) विनसर-रानीगढ़ श्रेणी ८
(१८) खतली-श्रेणी ८
(१९) उताई-श्रेणी ८
(पैनखंडा) ८
२ः पर्वत-शिखर ९
(१) कामेत १०
(२) कुन्लिङ् १०
(३) केदारनाथ १०
(४) गौरीपर्वत ११
(५) चौखंवा ११
(६) चन्द्रशिला ११
(७) त्रिशूल ११
(८) दूनागिरि ११
(९) नंदादेवी ११
(१०) वंदरपूछ १२
(११) भारतखंड १२
(१२) श्रीकंठ १२
(१३) संतोपंथ (सुमेरु) १२
(१४) स्वर्गारोहिणी १२
(१५) हाथी-पर्वत १३
३ः हिमानियां १३
§४. नदियां १३
(१) गुडयार ताल १६
(२) गोहना १६
§५. ताल १६
(३) देवरीताल १६

(४) देवताल १७
(५) भेकलताल १७
(६) लोकपाल १७
(७) सतोपथ १७
(८) सुवताल १७
§६. तप्तकुंड १७
§७. भूतत्त्व और खनिज १८
१. भूतत्त्वीय १८
(१) उपहिमालय १८
(२) वाह्यहिमालय १८
(३) उत्तरहिमालय १८
२. खनिज १८
(क) अधातुक खनिज १९
(ख) धातुक खनिज २१
(१) तांवा २१
(२) पारा २३
(३) लोहा २३
(४) सीसा २३
(५) सोना २४
§८. जलवायु और ऋतु २५
(१) जलवायु २५
(२) ऋतुयें २६
(३) तापमान २७
(४) वर्षा २७
§९. जंगल २८
१. जंगल-इतिहास २९
२. जंगल-डिवीजन ३०
§१०. वनस्पति ३३
§११. प्राणि-जगत् ३६
१. वन्य जन्तु ३६
२—पक्षी ३८
३—सरीसृप ३८

अध्याय २

इतिहास

(प्रदेश) ४०
§१. प्रागैतिहासिक काल ४२
१—किन्नर-किरात-नाग ४२२
(१) किरात-भाषा ४
(२) किन्नर-भाषा ४८
(३) नाग ५०
(४) किरात-भूमि ५१
२—खश ५२
(१) संस्कृतमें खश ५२
(२) रोमक लेखक और खश ५५
(३) खश पामीर तक ५६
(४) खशोंकी समाधियां ५८
३—वैदिक आर्य ५९
§२. आरंभिक इतिहास ६०
१. पुरातात्त्विक स्थान ६१
(क) स्थान ६१
(ख) सिक्के ६३
२—शक ६४
३—हूण ६७
४—हर्षवर्धन-काल ६७
५—तिब्वती-शासन ६८
§३. कत्यूरी-वंश ७१
१. कत्यूरी-समस्या ७१

(१) काल ७१
(२) कत्यूरी-अभिलेख ७२
(३) वंश-परंपरा ७२
(४) समसामयिक राजा ७३
२—कत्यूरी प्रताप ७४
(१) ललितशूर ७४
(२) कत्यूरी-अभिलेख ७५
१—ललितशूरका ताम्रलेख (१) ७५
२— „ „ (२) ७५
३—भूदेवका शिलालेख ८१
४—पद्मटदेव ताम्रलेख ८३
५—सुभिक्षराज ताम्रलेख ८४
(३) पालों और कत्यूरियोंके अभिलेखोंकी तुलना ८८
(क) अधिकारियोंकी सूचि ८८
(ख) भौगोलिक-नाम-सूचि ९०
(ग) जाति-नाम-सूचि ९४
३—कत्यूरी-वंशका उद्गम १००
(१) कत्यूरी और शक १०१
(२) काबुली कटोर और कत्यूर १०१
(३) कत्यूर कार्तिकपुर १०४
४—हिमालय बौद्धसे ब्राह्मण-धर्मी १०४
५—कत्यूरी वंशावलि १०५
६—अंतिम दिन १०९
§४. बहुराजकता ११०
१. अशोक चल्ल ११०
(१) गोपेश्वर-लेख १११
(२) बाडाहाट-लेख ११२
(३) तत्कालीन मानस प्रदेश ११२
(४) क्राचल्ल देव ११४
§५. पँवार-वंश ११६
१. बावनगढ़ ११७
२. वंशावलि ११९
३. वंशकी ऐतिहासिकता १२४
४. तैमूरका आक्रमण १२७
५. पँवारवंशी राजा १२८
(१) अजयपाल १२८
(२) सहजपाल १३०
(३) मानशाह १३१
(४) श्यामशाह १३२
(५) दुलारामशाह १३५
(६) महीपतिशाह १३७
(७) पृथिवीपतिशाह १४२
(८) मेदिनीशाह १४७
(९) फतेहशाह १४८
(गुरु रामराय) १४९
(१०) उपेंद्रशाह १५१
मुगल-साम्राज्यका अन्त) १५१
(११) प्रदीपशाह १५४
(१२) ललितशाह १५८
(१३) जयकृतशाह १६२
(क) गढ़राज-उत्पत्ति १६३
(ख) कृपारामका प्रभुत्व १६६

(ग) घमंडसिहकी तपी १७०
(घ) अजवरामका विद्रोह १७४
(ङ) सिरमौरकी सहायता १७७
(च) अंतिम दिन १७७
(१४) प्रद्युम्नशाह १७९
§६. गोरखा-शासन १८३
१. गोरखावंशकी स्थापना १८३
(क) चौबीसगढ़ १८४
(ख) साही-ठकुरी १८७
(ग) द्रव्यशाह १८९
२. राज्य-विस्तार १९१
(१) रामशाह १९१
(२) पृथिवीपतिशाह १९३
(३) नरभूपालशाह १९३
३. विजययात्रा १९४
(१) पृथिवीनारायण-शाह १९४
(क) नेपाल-उपत्यका १९४
(ख) काशीयात्रा १९५
(ग) नेपाल-विजय १९६
(घ) सप्तगंडकी-विजय २०१
(२) रणवहादुरशाह २०२
(क) पश्चिमकी विजय-यात्रा २०२
(ख) कांगड़ा तक २०५
(ग) कुमाऊँ-गढ़वाल-विजय २०७
(घ) गढ़वालपर गोरखोंका आक्रमण २०९
(३) गोरखा-प्रशासन २१०
(१) व्यवहार २१०
(क) कर-भार २११
(ख) शासन और उत्पीडन २११
(२) गोरखा-शासनपर मोलाराम २१३
(क) श्रीनगर-दुर्दशा २१३
(ख) कांगड़ापर प्रथम आक्रमण २१५
(ग) कांगड़ापर द्वितीय आक्रमण २१८
(घ) कांगड़ापर तृतीय आक्रमण २२०
(ङ) कांगड़ापर अंतिम आक्रमण २२१
(५) गोरखा-अंग्रेज-युद्ध २२४
(१) आक्रमण २२६
(२) गोरखा-वीरता २२९
(३) वीर वलभद्र २३१
(४) चीनसे सहायता-याचना २३४
(५) संधि २३५
§७. अंग्रेजी-शासन २३५
१. अंग्रेज शासक २३६
२. अंग्रेजी शासनपर मोलाराम २३६

३. पर्गने और पट्टियां २३९
  (१) गढ़वाल जिलेमें २३९
  (२) टेहरी जिलेमें २४२
४. गढ़वाल -शासन २४५
  (१) गढ़वाल जिला वोर्ड २४५
  (२) मालगुजारी २४६
५. टेहरी-शासन २४६
  (१) सुदर्शनशाह २४६
  (२) भवानीशाह २४७
  (३) प्रतापशाह २४७
  (४) कीर्तिशाह २४७
  (५) नरेंद्रशाह २४७
§८. गणराज्य २४८

अध्याय ३.

भोटान्त

§१. प्रदेश २५१
§२. लोग २५२
§३. स्त्रियां २५५
§४. तिब्बती व्यापार २५६
§५. तिब्बत-चीन समझौता २५७

अध्याय ४.

(निवासी)

§१. लोग २६४
  (१) गांव २६४
  (२) जनसंख्या २६४
  (३) घनता २६५
§२. भाषा २६५
§३. जातियां २६५
  १. बीठ २६५
    (१) ब्राह्मण २६६
    (२) राजपूत २७१
  २. शिल्पकार २७६
§४. धर्म २७८
  (१) बौद्ध २७८
  (२) हिंदू (ब्राह्मण) धर्म २७९
    (१) संप्रदाय २७९
    (२) देवता २८०
    (३) लिंगवास २८१
    (४) गुंठ २८१
    (५) सदावर्त्त २८१
  ३. सिक्ख २८२
  ४. जैन २८२
  ५. आर्य २८२
  ६. मुसल्मान २८२
  ७. ईसाई २८२
§५. आकृति और वेष-भूषा २८३
  १. आकृति २८३
  २. स्वभाव २८३
  ३. वेष-भूषा २८३
  ४. स्त्रियां २८४
  ५. आभूषण २८५
  ६. खान-पान २८५
  ७. रीति-रवाज २८६
    (१) स्त्रियोंका स्थान २८७
    (२) विवाह २८७

८. भाषा २८८
- (१) टेहरी श्रीनगरी बोली २८८
- (२) रवाई-जौनपुरी बोली २८८
- (३) चौंदकोट-सलाणी बोली २८८

अध्याय ५

आजीविका

§१. कृषि २८९
- (१) कृषिका ढंग २८९
- (२) भूमिके भेद २९०
- (३) खाद २९३
- (४) फसलें २९३
- (५) तरकारियां २९४

§२. शिल्प-उद्योग २९४
- (१) भंगेला २९५
- (२) चाय-वगान २९६
- (३) टोकरी आदि वनाना २९८
- (४) ऊन कताई-बुनाई २९८
- (५) धातु-शिल्प २९९
- (६) चमड़ा ३००
- (७) पनचक्की ३०१
- (८) विजली ३०२
- (९) भविष्य ३०३

§३. व्यापार ३०३
- (१) वाहरी व्यापार ३०३
- (२) भीतरी व्यापार ३०३
- (३) नाप-तोल ३०४
- (४) मेले ३०४

§४. पशु-पालन ३०६
- (१) पशु ३०६
- (२) भेड़-वकरियां ३०८
- (३) मत्स्य-पालन ३०९
- (४) मधुमक्खी-पालन ३१०

अध्याय ६

यातायात और संचार

§१. रेल ३११

§२. सड़कें ३११
- (१) प्रोदेशिक सड़कें ३११
- (२) स्थानीय सड़कें ३१२
- (३) अन्य सड़कें ३१३
- (४) कुछ सड़कोंका विवरण ३१३
- (५) पुल ३१६

§३. डाकबंगले ३१७

§४. डाक और तारघर ३१९

अध्याय ७

स्वास्थ्य और शिक्षा

§१. स्वास्थ्य ३२३
- क—वीमारियां ३२३
  - (१) मलेरिया ३२३
  - (२) पेटकी बीमारी ३२३
  - (३) चेचक ३२३
  - (४) हैजा ३२३
  - (४) महामारी ३२३

(६) संजर ३२४
(७) कुष्ट रोग ३२४
ख—जन्म और मृत्यु ३२४
(१) आंकड़े ३२४
(२) मृत्युके कारण ३२४
ग—अस्पताल ३२५
§२. शिक्षा ३२५

अध्याय ८

प्रसिद्ध ग्राम-नगर

अकारादि क्रमसे

(जिनमें कुछ—)

ऊखीमठ ३२६
कालीमठ ३२७
केदारनाथ ३२७
गंगोत्री ३२७
जोशीमठ ३३१
टेहरी ३३६
देवप्रयाग ३३६
पांडुकेश्वर ३३८
वदरीनाथ ३३९
वाड़ाहाट (उत्तरकाशी) ३४७
श्रीनगर ३५०

अध्याय ९

यात्राओंकी तैयारी

§१. यात्रा-माहात्म्य ३५३
§२. यात्रा ३५३
§३. नौकर ३५४
§४. सवारी ३५६
§५. वस्त्र-परिधान ३५७
(१) पुरुषोंके लिए ३५७
(२) महिलाओंके लिए ३५७
§६. आवश्यक वस्तुयें ३५८
(१) विस्तर ३५८
(२) दूसरी वस्तुयें ३५८
(३) पैकिंग ३५९
(४) भेंट-इनामकी चीजें ३५९
(५) पड़ावोंपरके खर्च ३५९
(६) दो सप्ताहका खाद्य ३६०
(७) एक दिनका खाद्य ३६१
(८) पावरोटी ३६१
(९) लालटेन ३६१
(१०) पेय ३६२
(११) मनीआर्डर, चिट्ठियां ३६२
§७. यात्रामें ३६२
§८. रोगादि ३६३
§९. कलाकी वस्तुयें ३६५
§१०. फोटोग्राफी ३६५
§११. तीर्थयात्रीके लिए ३६६

अध्याय १०

यात्रायें

§१. तीर्थ-यात्रायें ३६८
१.—ऋषिकेश-जमुनोत्री ३६८
२.—गंगोत्री-केदारनाथ-वदरीनाथ ३६९
३.—गंगोत्री ३७४

४.—ऋषिकेश-चिनी(कनौर) ३७४

५.—केदारनाथ (पैदल) ३७५

६.—केदारनाथ ३७६

७.—बदरीनाथ ३७४

८.—केदारनाथ-बदरीनाथ ३७७

§२. मानसरोवर–यात्रा ३७८

९.—ऋषिकेश-गंगोत्री-मानसरोवर ३७९

१०.—माणा (बदरीनाथ)-मान सरोवर ३८०

११.—नीती (दमजन)-मानसरोवर ३८१

१२.—नीती (चोरहोती) „ ३८३

१३.—नीती (गणेशगंगा)- „ ३८४

१४.—गंगोत्री-मानसरोवर-लिपूलेख-अल्मोड़ा ३८५

१५.—गंगोत्री-मानसरोवर-दारमा-अल्मोड़ा ३८६

१६.—गंगोत्री-मानसरोवर उंटाधुरा-अल्मोड़ा ३८७

१७.—नीती-मानसरोवर गूगे-शिमला ३८८

१८.—माणा-मानसरोवर थोलिङ्-शिम्ला ३९०

§३. अन्य यात्रायें ३७८

१९.—काठगोदाम-बैजनाथ तपोवन-बदरीनाथ ३९१

२०.—नन्दप्रयाग-बदरीनाथ ३९२

२१.—द्वाराहाट-बदरीनाथ ३९२

२२.—कर्णप्रयाग-माणा-मानसरोवर ३९४

२३.—बैजनाथ-नीती-मानसरोवर ३९५

२४.—कोटद्वारा-केदारनाथ ३९६

२५.—बदरीनाथ. ३९६

२६.—माणा-मानसरोवर ३९७

२७.—नीती (दमजन) „ ३९८

२८.—माणा-मानसरोवर-अल्मोड़ा ३९९

२९.—नीती-(चोरहोती)-मानसरोवर-अल्मोड़ा ३९९

३०.—चमोली-गोहनाताल ४००

३१.—म्यूँढार (नंदनवन) ४००

३२.—हेमकुंड (लोकपाल) ४०१

३३.—जोशीमठ-अल्मोड़ा ४०१

३४.—देवप्रयाग-टेहरी-गंगोत्री ४०२

३५.—पौड़ी-अल्मोड़ा ४०२

३६.—काठगोदाम ४०३

३७.—मसूरी-जमुनोत्री-गंगोत्री ४०३

३८.—मसूरी-टेहरी ४०३

३९.—टेहरी-बदरीनाथ ४०३

४०.—टेहरी-अल्मोड़ा ४०४

४१.—ऋषिकेश-बदरीनाथ ४०५

४२.—माणा-मानसरोवर ४०५

४३.—नीती (चोरहोती)-मानसरोवर ४०५

४४.—रामनगर-बदरीनाथ ४०६

अध्याय ११

केदार-बदरी-यात्रा

§१. केदारनाथको ४०८
§२. बदरीनाथको ४३५

अध्याय १२

जन-साहित्य

§१. गद्य ४९०
१—चिट्ठी ४९०
२—कृतज्ञता ४९१
§२. पद्य ४९१
१—नथुली ४९१
२—ताचुली ४९२
३—बेटी नगीना ४९३
४—ढोलमंत्र ४९३
५—चाँछड़ ४९४
६—चौंफोला ४९४
७—बारहमास्या ४९५
८—चेतावनी ४९५
९—स्वामीकु रैंवार गीत ४९६
१०—बेटीबेची दुर्गति ४९७
११—प्यूली ४९९
१२—नारीवर्णन ५००

चित्र-नकशे

पृष्ठ
१. नकशा १
(चित्र)—
१. जौनपुरकी स्त्री
२. गुप्तकाशीके पुजारी ४०८
३. नालामें बौद्ध स्तूप
४. पंडा काशीनाथ
५. गढ़वाली बच्चे ४२१
६. खंडित गौरी मूर्ति
७. केदारनाथ मंदिर
८. खंडित मूर्त्तियां ४३०
९. काली मठका मुखलिंग
पृष्ठ
१०. गोपेश्वर मंदिर ४३०
११. प्राचीन शिवलिंग
१२. खंडित मूर्त्तियां ४५६
१३. पांडुकेश्वरके जोड़े मंदिर
१४. हिमालयका एक दृश्य
१५. " " "
१६. बदरीनाथके शिखर ४७०
१७. गंगाराम चपरासी
१८. मारछा बच्चे
१९. बदरीनाथ धाम ४८३
२०. मारछा तरुणी

हिमालय-परिचय

(१)

गढ़वाल

अध्याय १

प्राकृतिक रूप

हिमालयको प्राचीनोंने पाँच खंडोंमें विभाग किया था—

> "खण्डाः पंच हिमालयस्य कथिता नेपाल-कूर्माचलौ ।
> केदारोऽथ जलंधरोऽथ रुचिरः कश्मीर-संज्ञोऽन्तिमः ॥"

जो हैं:(१) नेपाल, (२) कूर्माचल, (३) केदार ,(४.) जलंधर और (५) कश्मीर। काली नदीसे पूर्व नेपाल-खंड है, कालीसे पश्चिम कूर्माचल या कुमाऊ नन्दाकोट और रामगंगा (पश्चिमी) तक है—जो आजकल अलमोड़ा और नैनीतालके दो जिलोंमें विभक्त है। कूर्माचलकी पश्चिमी सीमासे जमुनातक अथवा गंगा और प्राय: जमुनाका सारा पनढर केदारखंड है, जो मध्यकालमें छोटे-छोटे ठाकुरों (सामन्तों) की ५२ गढ़ियोंमें विभक्त होनेसे गढ़, गढ़वाल या वावनी कहा जाने लगा। देहरादून भी वस्तुतः पूर्वकालमें गढ़वालका अंश रहा, किंतु अंग्रेजोंने मनमाना उसे निकालकर मेरठ कमिश्नरीमें डाल दिया, जवकि गढ़वाल कुमाऊँ-कमिश्नरीमें रह गया। १९४८ में जव रियासतोंको भारतका अभिन्न अंग वनाया जाने लगा, तो टेहरी राज्यको उत्तर-प्रदेशमें मिलाकर उसका एक स्वतन्त्र जिला रहने दिया गया। अगले अध्यायके पढ़नेसे मालूम होगा, कि किस तरह नेपाल-अंग्रेज युद्धके वाद अंग्रेजोंने गढ़वालको दखल करते हुए गढ़वाल (पँवार)-राजवंशको टेहरीवाला इलाका दे दिया, और वाकीको गढ़वाल और देहरादूनके दो जिलोंमें विभक्त कर दिया। गढ़वाल वस्तुतः कालीसे सतलजतक फैले मध्य-हिमालयका अंग है।

§१. मध्य-हिमाचल

मध्य-हिमाचलमें कुमाऊँ कमिश्नरीके चार और मेरठ-कमिश्नरीका देहरादून—ये पाँच जिले सम्मिलित हैं। यहाँ १०,४५८ गाँव और १८ नगर हैं। पाँच जिलोंमें अलमोड़ा और नैनीताल कुमाऊँमें हैं, तथा गढ़वाल और टेहरी

गढ़वालमें। देहरादून मुख्यतः गढ़वालियों और जौनसारियोंसे बसा है। मध्य-हिमाचलका क्षेत्रफल आदि निम्न प्रकार है—

	जिला	क्षेत्रफल (वर्गमील)	जनसंख्या (१९३१)	आय (१९३०)
कुमाऊँ	अल्मोड़ा	५३९०	५,८३,०००	२,६०,०००
	नैनीताल	५६५८	२,७७,०००	५,८२,०००
गढ़वाल	गढ़वाल	५६२९	५,३४,०००	२,४३,०००
	टेहरी	४५१६	४,००,०००	६,१४,०००
	देहरादून	११९३	२,३०,०००	१,५७,०००
			२०,२४,०००	१८,५६,००० रु०

§२. गढ़वाल

१. सीमा, क्षेत्रफल—

गढ़वालसे यहाँ वर्तमान गढ़वाल तथा टेहरी दोनों जिले अभिप्रेत हैं, जिसके पूर्व-उत्तरमें चीनगणराज्यका प्रदेश भोट (तिब्बत) है, पश्चिम-उत्तरमें हिमाचल-प्रदेश और दक्षिण तथा पूर्वमें उत्तर-प्रदेशके देहरादून, विजनौर, नैनीताल, अल्मोड़ाके जिले हैं। यह उत्तरी अक्षांश २९°, २६' और ३१° .८ तथा देशान्तर ७७° .४९' और ८०° .६ के बीचमें है। क्षेत्रफल १०१४५ वर्गमील है, जिसमें ४५१६ वर्गमील टेहरीका बतला चुके हैं।

२. उपत्यका-सौंदर्य—

वेदोंकी भूमि कुरु-पंचालका उत्तरी पड़ोसी होनेसे प्राचीनोंका ध्यान हिमालयके इस खंडकी ओर जाना स्वाभाविक था, किंतु, यह उनका अस्थाने पक्षपात नहीं था। हिमाचलकी कुछ अतिसुन्दर उपत्यकायें यहीं हैं। इसकी सत्यताके लिए नंदाकोट-हिमानीसे निकलनेवाली पिंडारी नदीकी सारी उपत्यका (उसके स्रोतसे कर्णप्रयागमें अलकनंदासे संगम) को देख लीजिये। कहीं सदाहरित देवदारों और बंजों (ओक, बान) के सुन्दर वन हैं। किसी जगह पानीके झरने और शीतल छाया श्रान्त पथिकके हृदयको प्रफुल्लित करनेको तैयार है। चाँदपुर पर्गनेकी धनपुर-पर्वत-श्रेणी अपने प्राकृतिक सौंदर्यके लिए प्रसिद्ध है। रमनी (दसोली), विरहीगंगाकी उपत्यका, सूखा-ताल, छिजो-

नली गाड, (वधाण)-उपत्यका भी गढ़वालके रमणीय स्थान हैं। गढ़वालका सर्वोच्च भाग सदा हिमाच्छादित रहता है, जो सारे क्षेत्रफलके एक तिहाईके करीव है। यही वह स्थान है, जहाँ कोई प्राणी या वनस्पति नहीं दीखते, और जहाँ प्राचीन कालसे सजीव देवताओंका निवास माना जाता है। उसके नीचेके शीतकालमें हिमाच्छादित रहनेवाले स्थानोंमें भी ग्राम या अरण्य नहीं है, किन्तु यही वह बुग्याल है, जो पशुपालोंका स्वर्ग है। वर्षामें यह सारी भूमि रंगविरंगे हजारों प्रकारके पुष्पोंसे ढँकी रहती है। वर्षाकाल यहाँका वसंत है।

३. भावर—कुमाऊँकी भाँति गढ़वालमें भी भावरकी भूमि है, जिसे पातली-दूण और कोटादूण कहते हैं। यह पहाड़की जड़में देशके मैदानसे लगी समतल भूमि है। "ऊपरसे वहकर आई हुई मिट्टी और पत्थरसे दूण (दून)की घाटियाँ वनी हैं। जाँच करने वालोंने इसके तहकी मोटाई १७,००० फुट वतलाई है। गढ़वालका भावर ५८ मील लंवा, और अधिकसे अधिक दो मील चौड़ा है। इसका अधिक भाग गंगा और गढ़वालके रक्षित-वनके वीचमें, है, जिसके वहुत थोड़े ही भागोंमें काटकर खेत वनानेकी कोशिश की गई है। गंगा जैसी कुछ वड़ी नदियोंको छोड़ पहाड़की सारी छोटी-छोटी नदियाँ भावरमें पहुँचकर अन्तर्धान हो जाती हैं, और कुछ मील वाद फिर ऊपर आती हैं। खेतीके लिए यहाँकी सूखी निर्जल भूमिमें सिंचाई वड़ी समस्या है। अंग्रेजी शासनके आरंभ (१८१५ ई०) में भी भावर आवाद नहीं था, किन्तु कोटद्वारसे पाँच मील पश्चिम मावकोटमें कितने ही तालावोंके अवशेष हैं, जिससे पता लगता है, कि पहले यहाँ वस्तियाँ थीं। पतली-दूनके नीचे पहाड़की जड़में कुछ गाँव उन्नीसवीं शताव्दीके आरंभसे ही वसे हैं। खोह और मालन (शकुन्तलाकी मालिनी) नदियोंकी नहरोंके भरोसे कुछ खेती अवश्य वढ़ाई गई है, किंतु इसका आरंभ १८६९-७० ई० में हुआ। उस समय कर्नल गर्सिनकी जिला-मजिस्ट्रेटीमें १८ गाँव तथा २०६९ वीघा[1] कृष्टभूमि थी। १८९९ में गाँवोंकी संख्या ६२ और कृष्टभूमि २५,५४२ वीघा हो गई—यह सव खोह और मालनकी नहरोंकी कृपासे ही। १९०७ में गाँव वढ़कर ६८ और कृष्ट-भूमि ३७,५६१ वीघा हो गई। भावरको आवाद करानेका यह ढंग था—ठीकेदारको जंगलका कुछ भाग सरकारी नहरसे पानी पीनेके प्रवन्धके साथ ठीकेपर दे दिया जाता था। यही ठीकेदार आदमियोंको वसाते, जंगल कटवाकर खेत और गाँव आवाद करते। गाँवके काफी आवाद हो जानेपर वहाँके अपने

---

[1] भावरका साढ़े छ बीघा एक एकड़के बराबर होता है।

हलबैलसे खेती करनेवाले परिवारोंके साथ खेतका बन्दोवस्त कर दिया जाता और मूल ठीकेदार गाँवका मुखिया बना दिया जाता ।

§३. पर्वत

१. पर्वत-श्रेणियाँ—

भावरकी थोड़ीसी भूमिको छोड़कर गढ़वाल पर्वतोंकी भूमि है, जिसमें लक्ष्मणझूला-ऋषि केशकी १,००० फुटकी ऊँचाईसे नन्दादेवी त्रिशूलकी २५,६६० फुटकी उंचाइयाँ भी सम्मिलित हैं। गढ़वालमें मुख्यतः तीन प्रकारकी पर्वत-श्रेणियाँ हैं—(क) **हिमाल**, जिसकी नौसे ग्यारह हजार फुट ऊँची पर्वत-श्रेणियाँ नवंबरसे अप्रैलतक हिमाच्छादित रहती हैं। सत्रह हजार फुटसे ऊपर सदा हिम बनी रहती है। इसमें नन्दादेवी और वदरीनाथ दो श्रेणियाँ हैं। (ख) **दूदातोली** पर्वत-श्रेणी अलकनंदासे पूर्व और पिंडारसे दक्खिन है; (ग) **दीपाडांडा**—अलकनंदासे पूर्व एवं नयार नदीसे दक्खिनमें है। इन तीनों प्रकारकी पर्वत-श्रेणियोंका विभाजन निम्न प्रकार है:—

(क) हिमाल—

(१, २) **नंदादेवी-बदरीनाथ**—नंदादेवी तथा वदरीनाथ दोनों श्रेणियाँ पूर्वसे पश्चिमकी ओर २५ मीलतक फैली हुई हैं। नंदादेवी-श्रेणीमें ही नंदादेवी, नंदाकोट, त्रिशूल जैसी ऊँची चोटियाँ हैं; वदरीनाथ-श्रेणीमें वदरीनाथ, चौखंभा और केदारनाथ। यह दोनों श्रेणियाँ वस्तुतः एक ही श्रेणी हैं, जिसे कि अलकनंदाने (जल और लंबाईकी मात्राके आधिक्यकी दृष्टिसे वस्तुतः इसे ही गंगाकी मुख्य धार मानना चाहिए) पीपलकोटी चट्टीके पास काटकर दो टुकड़ोंमें बाँट दिया है। यह दोनों श्रेणियाँ एक दूसरेसे कुछ ही मीलके अंतरपर आकर गंगाकी धारकी ओर ढल जाती हैं। इस स्थानको हिमालय-द्वार (क्रौंच-द्वार) कह सकते हैं। इसीके भीतर १५९२ वर्गमीलका पैनखंडाका विशाल पर्गना गढ़वालका बहुत टंडा तथा सुन्दर भूभाग है।

(३) **कामेत-गंधमादन श्रेणी**—नंदादेवी-वदरीनाथ-श्रेणी तिब्बत (चीन) और भारतकी सीमा नहीं है। इस श्रेणीके उत्तरमें एक और विशाल हिम-पर्वत-श्रेणी है, जो दोनों देशोंको विभक्त करती है, उसीकी एक वाहींपर कामेत (२५, ४४३ फुट) शिखर है। इस श्रेणीकी औसत ऊँचाई १८,००० फुट है। नंदादेवी-वदरीनाथ-श्रेणीके पीछे होनेसे आदमीको पता भी नहीं लगता, कि इस हिमालके पीछे भी एक और हिमाल है।

(४, ५) गंगोत्री-जमुनोत्री श्रेणी—टेहरी जिले में है ।

(ख) अन्य श्रेणियाँ—

(६) तुंगनाथ श्रेणी—वदरीनाथ श्रेणीसे तुंगनाथ होते यह पर्वतवाही अलकनंदा तटपर रुद्रप्रयागके पास पहुँचती है । यही केदारनाथसे आनेवाली मंदाकिनीकी उपत्यकाको अलकनंदा उपत्यकासे अलग करती है ।

(७) मंदाकिनी-श्रेणी—केदारनाथसे निकलकर यह पर्वतवाही मंदाकिनी और भागीरथीकी उपत्यकाओंको अलग करती देवप्रयागतक पहुँचती है । इसका अधिकाँश भाग टेहरी जिले में है ।

(८) रमनी श्रेणी—अलकनंदासे पूर्व अवस्थित नंदादेवी-हिमालश्रेणीमें त्रिशूलसे चलकर यह पर्वतवाही नन्दकिनी और विडहीकी उपत्यकाओंको अलग करती अलकनंदा-तट तक पहुँचती है ।

(९) खमिल श्रेणी—यह श्रेणी नन्दकिनी-उपत्यकाको पिंडार और कैल-गंगाकी से पृथक् करती है । इसकी खमिल चोटी १३,३५६ फुट ऊँची है ।

(१०) नन्दाकोट-दूदातोली श्रेणी—नन्दाकोटसे चलकर पिंडारके वायें तटसे होती पहिले दक्षिण-पश्चिम फिर पश्चिमकी ओर हो दूदातोली श्रेणीकी ओर जाती यह पर्वतश्रेणी गढ़वालकी पर्वत-श्रेणियोंकी कुंजीसे है । यही श्रेणी सरयू और गंगाकी जलविभाजक है, जिनमेंसे एक ओरका पानी वरमदेवमें जाकर पहाड़ छोड़ता है, और दूसरा हरद्वारमें ।

(११) ग्लावदम-श्रेणी—उपरोक्त (८) श्रेणीकी ही एक शाखा वधानगढ़-चोटीके पास रामगंगा (पश्चिमी) को गंगा और सरयू दोनोंके पनढरोंसे अलग करती है ।

(१२) दूदातोली (१३) मुख्य श्रेणी—जैसा कि पहले वतलाया, दूदातोली-श्रेणी हिमाल और उसकी शाखाओंसे एक स्वतन्त्र श्रेणी है, यद्यपि देखनेमें वह ग्वालदम-श्रेणीसे संवद्ध मालूम होती है। ग्वालदम-श्रेणी काले चूना-पत्थरकी है, जो वहुधा सीधी खड़ी है। लाखों वर्षोंसे क्षीण होते पाषाणोंने इसके निम्न भागमें वहुत उर्वर मिट्टी जमा कर दी है । दूदातोलत्त-श्रेणी सफेद दिखाई देते चकमक और वलुआ पत्थरोंकी है । सारे गढ़वालमें धीरे-धीरे ढलान लेते ऐसे पहाड़ नहीं हैं । इसके नीचेके भागकी मिट्टी वलुआ तथा अनुर्वर है । लोहवापट्टीमें जहाँ रामगंगाके पश्चिमकी भूमि कृषिके लिए दरिद्र है, वहाँ पूर्वकी ओर वह वड़ी उर्वर है । हिमाल-श्रेणीके वाद सारे कुमाऊँ-गढ़वालमें दूदातोली-श्रेणी वहुत चौरससी ऊँची श्रेणी है, जहाँ ६,००० फुटसे १०,१८८ फुटके वीचमें ५० वर्गमील अच्छी कृष्टभूमि है ।

इससे निकलनेवाली कितनी ही वाहियाँ ८ से १० मीलतक ८,००० फुटकी ऊँचाई कायम रखती हैं।

(१४) **धनपुर-श्रेणी**—दूदातोलीकी पूर्वसे पश्चिमकी ओर जाती शाखा अपनी ताँबेकी खानोंके लिए कभी बहुत महत्त्व रखती थी और आगे भी रखेगी। वधाणगढ़ीकी दुरारोह काली पहाड़ी इसीमें है। यह अपनी ९,००० फुटकी ऊँचाई बहुत दूर तक कायम रखती है। और इसकी चोटियाँ तो ९,८०० फुटसे अधिक ऊँची हैं। आगे पूर्व और दक्षिणकी ओर चलती ७,००० फुटसे अधिककी खिरसू, देवीदत्त (पौड़ीके ऊपर) और रानीबागकी चोटियोंको लेते व्यासघाट पहुँचती है। शायद ही कहीं इसका डांडा ६,००० फुटसे कम ऊँचा है। दूदातोली- श्रेणी जैसा कि पहले कहा, नयार-उपत्यकाको अलकनन्दाकीसे पृथक् करती है।

(१५) **अमेली श्रेणी**—दूदातोलीकी यह शाखा दोनों नयारोंकी उपत्यकाओंको अलग करती नयार और अलकनन्दाके संगमतक पहुँचती है।

(१६,१७) **बिनसर-रानीगढ़-श्रेणी**—दूदातोलीकी यह श्रेणी नयार-उपत्यकाकी उत्तरी और पूर्वी सीमा है।

(१८) **खतली श्रेणी**—इसको दूदातोलीसे मिलानेवाली बिनसर श्रेणी है। यह पूर्वसे अल्मोड़ाकी सीमापर खमलेकगढ़ीसे पश्चिममें रिखनीखालतक चली गई है। इसकी कितनी ही चोटियाँ ७,००० फुट ऊँची हैं।

(१९) **उताई-श्रेणी**—रिखनीखालसे आगे उपरोक्त श्रेणी चमेताखाल (४,००० फुट) तक चली जाती है। इसकी मुख्य चोटी ६,९०० फुट ऊँची है। चमेताखालसे आगे इसीके ऊपर कलोनगढ़ी (लैंसडोन) और लंगूरगढ़ीकी महत्त्वपूर्ण पहाड़ियाँ हैं। करौंदा (कीचका डंडा) से इसकी दो वाहियाँ हो जाती हैं, जिनके बीचमें ह्यूंल-उपत्यका है।

पैनखंडा—कुमाऊँके कमिश्नर मिस्टर बैटन (१८४८-५६ ई०) ने हिमाचलकी इस उच्च अधित्यकाके बारेमें सौ वर्ष पहिले लिखा था—"जोशीमठके पास नन्दादेवीके पश्चिम पार्श्वसे आनेवाली रिनी नदीके संगम तक यह सारी श्रेणी अत्यंत सौंदर्यशाली है। नदीतटतक ढलते दक्षिणी पहाड़ बंज (ओक), जंगली गुलाब (कुंज), पांगर, सफेदा (आदि) के घने जंगलोंसे ढंके है। वहाँ कहीं-कहीं सुन्दर गाँव हैं, जिनकी मुख्य शोभा है लाल मरसा और बत्थूके खेत। बदरीनाथ और नीतीकी उपत्यकाओंको पृथक् करनेवाली उत्तरी पहाड़ों तथा शिखरोंकी श्रेणी खड़ी उतराईके साथ धौली नदी पर पहुँचती है। रिनीके ऊपर

उपत्यकाके दोनों पार्श्व नियमपूर्वक हिमालयके वन्य सौन्दर्यको धारण करते हैं, द्यपि यहाँ भी दुरारोह ऊँचाइयोंपर जहाँ-तहाँ कोई-कोई गाँव टंग हुए हैं। यहाँ दी चौड़ी और गहरी है, जिसमें कहीं ही कहीं उछलता पानी मिलता है। तल्ला नखंडा और मल्ला (ऊपरी) पैनखंडाको अलग करनेवाले दस-वारह मीलके उपत्यका-भागमें कोई गाँव नहीं है। वांजके वृक्षोंको छोड़कर अब हम देवदार-भूमिमें हुँच चुके हैं। यहाँ पहाड़पर नीचेसे ऊपर तक केवल देवदार ही देवदारके जंगल हैं, जिनमेंसे कुछ अत्यंत विशाल तथा २७ फुटकी पेटीवाले भी पाये जाते हैं। मेजर गार्सिनने उनमेंसे एकको ३८ फुट तथा मिस्टर ममने जुमाग्वारमें दूसरेको ४५ फुट (३० हाथ) की मोटाईका नापा था।

“जुमासे मल्ला-पैनखंडा आरंभ होता है। प्रकृति अपनी विशालताके साथ यहाँ अत्यंत प्रियदर्शन हो उठी है। यहां हर खुली जगहमें ठीक स्विट्ज़रलैण्ड जैसे गाँव मिलते हैं, जिनके चारों तरफ देवदारके वृक्ष तथा ऊपर विशाल शैल—जिनके शीर्षस्थान पर चमकती हिमराशिकी सीमातक हरे जंगल—दिखाई पड़ते हैं। ....मलारीसे आगे हम एक अत्यंत सुन्दर उपत्यकामें चले, जहाँ शाखा फैलाये देवदार वृक्ष नदीकी धार तक चले आये थे। अब जंगलमें वीच-वीचमें चित्त-दयार (Pinus excelsa) और रघा भी मिले-जुले थे। कुछ गाँवोंको पार होते हम वम्पा, गमसाली आदिमें पहुँचे, जोकि १०,२०० से ११,००० फुटकी ऊँचाईपर वसे हुए हैं। वम्पामें देवदार समाप्त हो जाते हैं, और भुर्ज (भोजपत्र), चित्त छोड़ दूसरे वृक्ष पहाड़ोंपर दिखाई नहीं पड़ते, हाँ, निम्न भूभागमें, देवदार, हंसवदर (Gooseberries), Currants, जंगली गुलाव (कुंज) और पद्म अवश्य मिलते हैं।”

पश्चिमी धौली प्रदेशमें गिरथी और रिनी गंगाकी उपत्यकायें निर्जन, निर्वन सुनसान वयावान हैं। ऋषि-उपत्यकासे नन्दादेवीके हिमाच्छादित शिखरका पूर्णदर्शन होता है।

२. पर्वतशिखर—

हिमाचल-पर्यटक सर जान स्ट्रेचीने लिखा था—“मैंने वहुतेरे युरोपीय पहाड़ोंको देखा है, किंतु अपनी विशालता तथा भव्य सौंदर्यमें उनमेंसे कोई हिमालयकी तुलनामें नहीं आ सकता। कुमाऊँ (गढ़वाल) की चोटियोंमें यद्यपि कोई उतनी ऊँची नहीं हैं, जितनी कि हिमाल-श्रेणीके दूसरे भागोंकी कुछ चोटियाँ—यहाँकी केवल दो ही चोटियाँ २५,००० फुटसे अधिक ऊँची हैं, किन्तु गढ़वाल-कुमाऊँ

हिमाल-श्रेणीकी औसत ऊँचाई सबसे बढ़कर है। २० मीलतक लगातार इ कितने ही शिखर २२,००० से २५,००० फुटतक ऊँचे हैं।"[1]

गढ़वालके प्रधान-प्रधान हिमशिखर निम्न हैं—

(१) **कामेत**—(२५४४३ देशाँतर ७९°. ३५'; अक्षांश ३०°. ५५ गढ़वालका यह सर्वोच्च शिखर भीतरी हिमाल (कमेत)-श्रेणीमें पर्गना प खंडाकी मल्ला-पैनखंडापट्टीमें विष्णुगंगा और धौलीगंगाके पनढरपर अवस्थि हैं। नीती और माणा दोनों ही इसके समीप हैं। इसकी हिमानीसे स्रवि जल नीचे जमा होकर देवताल वन जाता है।

(२) **कुन्लिङ्**—(२१,२२६ और २०,०३८ फुट)—यह वदरीना शिखरसमूहमेंसे एक है। विष्णुगंगा इन्हींकी हिमानियाँसे निकलती है। इन दक्षिण-पश्चिममें नर और नारायणके दो सुन्दर शिखर हैं। इनके पूर्वमें नी कंठ (नीलाकाँठा) शिखर है। इनकी पूर्वी ढलानमें भगत-खडक और सतोपंथ हिमानियाँ अलकनंदाका उद्गम हैं।

नन्दादेवी-समूहमें निम्न शिखर हैं—

	ऊँचाई (फुट)	
नन्दादेवी	२५५८९	
त्रिशूल (१)	२३४०६	(नंदादेवीसे दक्षिण-पश्चिममें)
त्रिशूल (२)	२३४९०	,, ,,
त्रिशूल (३)	२२३६०	,, ,,
दूनागिरि	२३५३१	(नन्दादेवीसे उत्तर-पश्चिम, औ नीतीसे दक्षिण-पूर्व)

नंदादेवीसे पश्चिम वदरीनाथ-समूहमें—

	ऊँचाई (फुट)	
सतोपंथ (सत्यपथ)	२३२४०	
,,	२१९९१	
कुनलिङ	२१२२६	(विष्णुगंगाका उद्गम)
,,	२००३८	

वदरीनाथ-समूहसे पश्चिम केदारनाथ-समूहमें—

(३) **केदारनाथ** (२२८४४ फुट)—इसके दो शिखर भारतखंड औ

---

[1] "India"

रचा-खंड क्रमशः २२८४४ और २१६९५ फुट ऊँचे हैं। इन्हीं शिखरोंके नीचे दारनाथ तीर्थ हैं। इनके दक्षिण-पूर्वके सानुसे मंदाकिनी निकलती है। केदार-थसे भागीरथी-उद्गम तक लगातार हिमाल है, जिसमें कितने ही शिखर ०,००० फुटतक ऊँचे हैं।

(४) **गौरीपर्वत** (७९° .४२'×३०° .४३')——मल्ला-पैनखंडामें कमेत शृंखलाकी एक चोटी है।

(५) **चौखंबा** (२०,००० फुट)——बदरीनाथ तीर्थके ऊपरकी चोटी, जिसकी हिमानियोंसे अलकनंदा निकलती है।

(६) **चन्द्रशिला** (१२०७१ फुट)——या तुंगनाथ-शिखिर चोपताचट्टीसे मीलपर है। यहाँसे गढ़वालकी पर्वतमालाकी सुन्दर झाँकी होती है।

(७) **त्रिशूल** (२३,४०६ फुट, दे० ७९° .४५'×३०° .१८')——नंदादेवी-श्रेणीका यह शिखर-समूह है, जिसमें मुख्य शिखर २५,६६०फुट, दूनागिरि २३,१८४ फुट, नंदाकोट २२,५३० फुट और छंङावंग २२,५१६ फुट है। त्रिशूल नंदादेवी समूहके दक्षिण-पश्चिमके भाग में है। नंदा (पार्वती) के पास शिवजीका त्रिशूल रहना ही चाहिए। त्रिशूलकी तीनों चोटियाँ एक सरल-रेखामें उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पश्चिम चली गई हैं। इनमें सबसे ऊँची उत्तर-पूर्वी छोरपर (२३,४०६ फुट) है। इसके और बिचले शिखर (२२,४९०)के बीच त्रिशूल-हिमानी है। तीसरा शिखर २२,३६० फूट ऊंचा है। डाक्टर लौंगस्टाफ १२ जून १९०७ के चार बजे शामको त्रिशूल-शिखरको विजय करनेमें सफल हुए।

(८) **दूनागिरि** (२३१८४ फुट)——

यह नंदादेवी-परिवारका एक शिखर है।

(९) **नंदादेवी** (२५,६६०°, दे० .८०'×अ० ३०° २०')——भारतका यह सबसे ऊँचा पर्वतशिखर तल्ला-पैनखंडा-पट्टीमें अवस्थित है। नंदादेवी पार्वतीका ही नाम है। अपने पिता हिमालयके घरमें रहनेसे नन्दा शायद ननांदासे ही बना। नवीं-दसवीं शताब्दीके प्रतापी कत्यूरी राजा अपनेको "नन्दाभगवती कमलकमलासनाथमूर्ति" अथवा नंदाके सेवक कहनेमें गौरव अनुभव करते थे। उन्हें क्या मालूम था, कि नंदा-शिखर नेपाल-तिब्बत-सिक्किमके तीन शिखरोंको छोड़ एसियाका सबसे बड़ा शिखर है। त्रिशूल (२३,४०० फुट), दूनागिरि (२३,१८४) और नन्दाकोट (२२,५३०) इसी परिवारके शिखर हैं। नंदा-परिवार गंगा और सरयूका जलविभाजक है। नंदादेवी-शिखर इतना सीधा खड़ा है, कि उसपर हिम ठहर नहीं सकता। शिखरसे एक मील नीचे हर बारहवें वर्ष नन्दा भगवतीका मेला

लगता है। स्थानकी दुर्गमताके कारण वहाँ मुश्किलसे ५० श्रद्धालु पहुँच हैं।

(१०) **बंदर-पूँछ** (२०,७३१ फुट, दे० ९८°. २८'×अ० ३१°. १')—टेह रवाँई पर्गनेमें अवस्थित इस शिखरकी तीन चोटियाँ एक दूसरेके आमने-सा हैं, जिनमें श्रीकंठ २०,१३५ फुट, बंदरपूँछ २०,७१८ फुट और जमनोत्री- २०,०२९ फुट है। इसके दक्षिण ओरसे जमुना निकलती है और पूर्वसे सीया निकलकर झालाके पास भागीरथीमें मिल जाती है, पश्चिमोत्तर-पार्श्वसे (तमसा) निकलकर कालसी-हरिपुरके पास जमुनासे मिलती है। बंदर नामकरणके बारेमें कहा जाता है, कि लंका-विजयके बाद अयोध्या लौटने हनूमानजीने तपस्याके लिए बंदरपूँछको ही चुना। तबसे वह यहीं तप करते उनकी सेवाके लिए प्रतिवर्ष एक हृष्ट-पुष्ट वानर अयोध्या (हनुमानगढ़ी) आकर हनुमान-गंगाके किनारे-किनारे वन्दरपूँछकी ओर जाता दिखाई पड़ता है हिमालमें भोजनके अभावसे वह कंकालमात्र रह और शिखरपर अपनी पूँछ सालभर बाद लौट जाता है, फिर उसकी जगह दूसरा बंदर आ जाता है।

(११) **भारतखंड** (२२८,३३३, दे० ७९°. ६'×अ ३०°. ४४')- यह केदारनाथके दो शिखरोंमेंसे एक है, जिनके नीचे कि केदारनाथतीर्थ है

(१२) **श्रीकंठ** (२०,१३० फुट)—केदारनाथके ऊपरवाले हिमाल यह एक शिखर है, जहाँ सतोपंथ हिमाल-श्रेणीका अन्त होता है।

(१३) **सतोपंथ** (२३,६६० फुट)—इसका दूसरा नाम सतोपथ भी है यह, मल्ला-पैनखंडामें अवस्थित है। इसकी चार चोटियोंमें दो २१,९९१ अ २३,२४९ फुट ऊँची है। सतोपथसे पूर्वमें माणा-घाटा है, जिसके पास २०,० फुटसे ऊपर तीन, २१,००० फुटसे ऊपर तीन और २३,००० फुटसे ऊपर ऊँचाईके तीन शिखर हैं।

सुमेरु—सतोपथका ही दूसरा नाम है।

(१४) **स्वर्गारोहिणी** (२०,२९५ फुट)—केदारनाथकी तीन चोटियोंमें एक है। इसकी उत्तरी ढलानसे केदार-गंगा निकलकर गंगोत्रीके सामने भागी रथीमें मिल जाती है और दक्षिण-पूर्वकी ढलानसे मन्दाकिनी तथा काली निकल है। मन्दाकिनी रुद्रप्रयागमें अलकनंदासे मिलती है। इन्हीं पर्वतोंकी दरारों "भृगुपंथ" और "महापंथ" नामक स्थान हैं, जहाँ "केदारकल्पके"[1] अनुसार-

---

[1] पटल ५, श्लोक ४

"आत्मानं घातयेद् यस्तु भृगुपृष्ठेषु मानवः ।
इन्द्रेण धारिते छत्रे रुद्रलोकं स गच्छति ॥"

गुपृष्ठ(भैरवझाँप)से गिरके मरकर इन्द्र द्वारा धारित छत्रसे वंचित रहते लोगोंको क शताब्दी हो गई। अंग्रजोंने इसे बन्द कर दिया।

(१५) हाथी-पर्वत (२२,१४१ फुट दे० ७९°४२′×अ० ३०°४२′)—ल्ला-पैनखंडामें अवस्थित यह पर्वत धौली और अलकनन्दाकी उपत्यकाओंको लग करता है। इसकी आकृति कुछ कुछ बैठे हाथी जैसी है।

हिमानियाँ——

नंदादेवीसे गंगोत्रीतक कितनी ही छोटी-बड़ीं हिमानियाँ चली गई हैं, जिनमेंसे कुछके नाम हैं——

(१) अरहमनी (नंदादेवीसे पश्चिम)
(२) कमेत
(३) कोसा
(४) खैग्राम
(५) जुमा
(६) त्रिशूल
(७) थिअपका-वाँक
(८) पिंडारी
(९) वगात खरक (नालीकाँठासे नीचे)
(१०) वागिनी (दूनागिरिके सामने)
(११) वाँके
(१२) वेटातोली (लाटा खरकके पास)
(१३) भ्युदर-खरक (लकपाल कुंडके पास)
(१४) रायकाना
(१५) लवानी
(१६) सतोपंथ (माणा गाँवसे कुछ मील उत्तर-पश्चिम)

§४. नदियां

सारा गढ़वाल गंगा का पनढर है—यहाँ के प्रायः सभी स्थानोंका बरसाका जल भिन्न-भिन्न नालों-गाडों या शाखानदियोंमें होकर गंगामें जाता है। दरद

लोग जैसे सभी नदियोंको सिन्धु कहते हैं, वैसे ही गढ़वाली भी अपनी नदियों
किसी-न-किसी गंगाका नाम देते हैं। यहाँकी मुख्य नदियाँ अलकनंदा, जमुना, टौं
धौली, नंदकिनी, नयार, पिंडार, भागीरथी, भिलम, मन्दाकिनी, मालन, रामग
(पश्चिमी), रुपिन, विष्णुगंगा और सुपिन हैं, जिनके उद्गम और शाखाएँ नि
प्रकार हैं—

नाम	शाखायें	उद्गम आदि
१ अलकनंदा		विष्णुगंगा धौली=विष्णुप्र
	सरस्वती	माणा डाँडेसे
	रुद्रगंगा	रुद्रनाथ (तुंगनाथ)
	पातालगंगा	तुंगनाथ
	विड्हीगंगा	त्रिशूली-कंठाका पश्चिमपा
	बालासुती	पिंडारी हिमानीके उत्तरमे
	निगोमती	केदारनाथ शिखर पू० द
	नंदकिनी	दूदातोली-श्रेणी
	पिंडार	नन्दादेवी-श्रेणी
	मंदाकिनी	केदारनाथ-श्रेणी
	नयार (पूर्वी, पश्चिमी)	
२ जमुना		वंदर-पूँछ
	टौंस	
३ टौंस		
	रुपिन	
	सुपिन	
४ धौली (प०)		नीती-डांडा
	गिरथी	कुङ-री-बुंग-री श्रेणी
	रिनी गंगा	नंदादेवी शिखर
	गनेश गंगा	
५ नंदकिनी		नंदादेवी, संगम नंदप्रयाग
६ नयार		,, संगम व्यासघाट
	पसीन	
	कोटा	

		छरा	
		पान	
		कूल	
७	पिंडार		संगम कर्णप्रयाग
		भाई गंगा	
		कैल गंगा	
		तलोर	
		गोपतारा	
		भवारी	
		तलिगर	
८	भागीरथी		गोमुख, संगम देवप्रयाग
		जाड़गंगा या जाह्नवी	
		भिलंगना	
९	मंदाकिनी		संगम रुद्रप्रयाग
		डमर	
		पावी	
		काली	
		गाविनि	
		व्युम	
		पौन	
		धरमा	
		लस्तेर	
१०	मालन	(रामगंगाकी शाखा)	(भावरमें)
११	रामगंगा (प०)		लोहबापट्टीमें दूदातोली
		सूना	
		मंदाल	
		पलायन	
		खोह	
		मालन	
		खासण	
		विदासण	

१२	रुपिन	(टौंसकी शाखा)	
१३	विष्णुगंगा		कुनलिङ्ग शिखर
		सरस्वती	माणा घाटासे
		सतपती	कुनलिङ्ग शिखरसे
		पविगर	,,
		सुपन	,,
१४	सुपिन		(टौंसकी ऊपरी धारा)

§५. ताल

गढवालमें कई ताल हैं; जिनमें हिमाल-श्रेणीके भीतरके सतोपंथ, लोकपालकुं देवताल बड़े हैं। १८९३ तक देवरीताल यहाँका सबसे बड़ा ताल था, जब पर्वतपातके कारण बिडरी गंगामें गोहना (दुरमी) ताल बन गया। यह नैनीताल तीन गुना बड़ा है। कुछ तालोंका विवरण निम्न प्रकार है—

१. **गुड्यार ताल**—दसोली पर्गनेकी मल्ली-दसोली पट्टीमें यह छोटा ता है। पहिले यह आध मील लम्बा था, किन्तु १८६८ के पर्वपातने तालके पेंद पूरी तरह भर दिया। इसके कारण उस समय चमोलीचट्टी (लाल साँगा) विश्राम करते ७३ यात्री बह गये।

२. **गोहना**—मल्ली दसोलीमें बिड्ही गंगाके किनारे गोहना गाँव है सितंबर १८९३ में एक जबर्दस्त पर्वतपातके कारण नदीकी धारामें ९०० फु ऊंचा, (नीचे ११,००० फुट तथा ऊपर २०००, फुट चौड़ा) बाँध बन गया नदीका पानी एकत्रित होते जब (२५ अगस्त १८९४) बाँधके ऊपर पहुँ गया, तो उसने बाँधको तोड़ते भयंकर बाढ़का रूप लेते अपने मार्गमें प्रलय-लील मचा दी। इंजीनियरोंने पहले ही हिसाब लगा लिया था, इसलिए प्राणहानि न हुई। इससे श्रीनगरकी पुरानी नगरीको भारी क्षति हुई। पर्वतपातसे बने बाँध अब वहाँ एक बड़ा ताल तैयार कर दिया है, जिसे पासके गाँवके नामसे गोहना-ता कहते हैं। चित्रकार मोलारामके प्रपौत्र बालकराम जैसे कितनोंका विश्वास है कि अंग्रेज इंजीनियरने अपनी भविष्यद्वाणी सच्ची सिद्ध करनेके लिए डाइन माइटसे बाँधका थोड़ासा भाग तोड़ दिया।

३. **देवरीताल** (८,००० फुट, ४००× २५०×६६ गज)—ऊखीमठ ६ मील उत्तर-पूर्व बदरीनाथसे नन्दकिनी नदीकी ओर आनेवाली पर्वतवाहीप

८०० गज घेरेका यह ताल अवस्थित है। उत्तरी भाग में यह वहुत गहरा है, वैसे कहीं भी यह वहुत उथला नहीं है। इसके तटका दृश्य अत्यंत मनोहर है। विशाल दर्पणकी भाँति इसमें १५ मील पर अवस्थित बदरीनाथ-शिखर सिरसे पैरतक प्रतिविंवित दिखाई पड़ता है। प्रातःकाल सारी वदरीनाथ-केदारनाथ हिमाल-श्रेणी सरोवरकी जलराशिके भीतर डूवी दीखती है। देवरीतालके चारों ओरकी प्राकृतिक सुषमा हिमालयके सर्वोत्तम दृश्योंमें है।

४. देवताल—पर्गना वधाणमें यह छोटा ताल है।

५. भेकलताल (९००० फुट)—यह छोटा (२० एकड़का) किन्तु अत्यंत सुन्दर ताल है, जो वधाण पर्गनेकी पट्टी पिंगरपारके फलदिया गाँवसे १० मीलपर अवस्थित है। इसके तटवर्ती पहाड़ोंपर भुर्ज, बुराँश (गुराँश), केल और रिंगाल (पतले वाँसों) के घने जंगल हैं। पर्वत-प्राकारके भीतर सूर्यका ताप वहुत कम जा पाता है, जिससे जाड़ेमें गरमीमें भी तालके धरातलपर काफी मोटी वर्फकी तह जम जाती है।

६. लोकपाल—पाँडुकेश्वरसे १६ मील पूर्व यह सुन्दर सर या कुंड है। इसे हेमकुंडके नामसे सिक्खोंने अपना तीर्थ वना लिया है।

७. सतोपथ (सत्पंथ)—वदरीनाथसे १६ मील पश्चिम यह सरोवर है।

८. सुवताल—वधाण पर्गनेमें यह एक छोटी सी झील है।

§६. तप्तकुंड

गढ़वालके निम्न स्थानोंपर तप्तकुंड हैं—

१. कुलसानी	पिंडारके वायें तटपर
२. गंगनाणी	गंगोत्रीके रास्तेपर
३. गौरीकुंड	केदारनाथके मार्गपर
४. जमुनोत्री	जमुनोत्री तीर्थमें कई तप्तकुंड हैं, जिनमेंसे एकमें १९४°.७ गर्मी है
५. तपोवन	जोशीमठसे ७ मील (चार कुंड)
६. पलाई नदी	नदी तटपर वदलपुर-पट्टीमें
७. बदरीनाथ तप्तकुंड	(तापमान १२८° तक)
८. मौरी	पर्गना गंगा सलाणमें अमोला गाँवके पास

§७. भूतत्त्व और खनिज

१. भूतत्त्वीय विभाग—

भूतत्त्वकी दृष्टिसे गढ़वालकी भूमि तीन भागोंमें विभक्त है—

१. **उप-हिमालय**—गढ़वालके दक्षिणमें यह पतली-सी गिरिमेखला चली ग है। यहाँ वनाच्छादित छोटे पहाड़ हैं, जिनके ही बीच दून (द्रोणी) की पतल पट्टीसी मौजूद है। दूनकी १७,००० फुट मोटी बालू-रोडे आदिकी तहमें ऊपरी तृतीय युगके अलवण-सिंधु के पदार्थ मिलते हैं। इसके निम्न भागमें निम्न-सिवालिक (या नाहन) वलुआ-पत्थर है। इसके ऊपरी मध्य-सिवालिकके वलुआ-चट्टानें और फिर ऊपरी-सिवालिककी ढंडमंड चीजें हैं। उप-हिमालयके जंगलोंके आगे निम्न-हिमालयमें पहाड़ आमतौरसे ऊँचे हो गये हैं।

२. **वाह्य-हिमालय**—वाह्य-हिमालयकी भूमि और केन्द्रीय अक्षमें ऊँचे भूभाग तथा हिमाच्छादित चोटियाँ हैं। इसके दक्षिणार्धमें स्लेट, विशाल चूना, पाषाण हैं, जहाँ कहीं-कहीं मध्यजीवक युगके चूनापाषाणकी पट्टियाँ तथा उत्तरमें स्लेट-शिस्टोज, क्वार्ट्ज (विल्लौर)-शिस्ट तथा आधारित लावाके प्रवाह भी मिलते हैं। शिस्टोज स्लेटके वाद, अभ्रक शिस्ट आ जाते हैं, जिनमें कहीं-कहीं आग्नेय संग-खारा (ग्रेनाइट) के पेवंद लगे हुए हैं।

३. **उत्तर-हिमालय**—हिमालयके केन्द्रीय अक्षसे उत्तर नीतीघाटाके पास यही तिव्वतीय जल-विभाजक है। इसकी चट्टानें और अवशेष सिलूरीय युगसे क्रेलकस (Crelaceoas) तकके सामुद्रिक तत्व मिलते हैं, जो इसकी विलकुल नये किस्मकी वनावटको वतलाते हैं।

२. खनिज

यहाँकी खनिज संपत्ति अपार है। किसी समय अपने ताँवे और लोहेके लिए मध्य-हिमालय वहुत प्रसिद्ध था। ताँवेकी खानोंमें अंग्रेजी राज्यके आरंभ (१८१५) तक अच्छा काम होता था। अंग्रेजोंको आरंभमें हिमालयके अनुकूल जलवायुको देखकर ख्याल आया था, कि अस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ़्रीकाकी भांति इसे भी यूरोपीय उपनिवेश वना दिया जाये। लेकिन यह काम नौकरी या दूकानदारीसे नहीं हो सकता था। अंग्रेज-परिवार तभी यहाँ स्थायी तौरसे वस सकते थे, जव कि यहींसे वह अपनी जीविका अर्जित कर सकते। इसके लिए उनका ध्यान चाय-वगान और फलोद्यानके साथ-साथ खनिज उद्योगकी ओर गया। गार्डनर कुमाऊँका प्रथम कमिश्नर ६ महीनेसे अधिक नहीं रहा और उस समय भी ट्रेल उसका

सहायक था । ट्रेलको आज्ञा हुई, कि यहाँकी धूनों (ओर) के नमूने कलकत्ता-टकसालमें भेजें । विशेषज्ञकी सम्मति धूनके अनुकूल नहीं मिली । १८२८ में कप्तान हरवर्टको इस कामपर लगाया गया । उसकी रिपोर्टका भी कोई परिणाम नहीं निकला—इंगलैण्डके खनिज उद्योगपति इसे क्यों पसंद करने लगे, कि भारतमें भी उनके उद्योगका प्रतिद्वंद्वी खड़ा हो जाये । लेकिन, अंग्रेज हिमालयको अंग्रेज-उपनिवेश वनानेपर तुले हुए थे । १८३८ में कप्तान ड्रमंडकी नियुक्ति हुई । ड्रमंड अपने साथ कार्नवालके एक खनक (विल्किन) को लाया । कंपनी-सरकारने ३४१५ का अनुदान दिया —"अपने उद्देश्यके लिए सवसे अनुकूल खानोंको परीक्षार्थ खोला जाये । उद्देश्य यही था "पता लगावें, कि क्या युरोपीय प्रबंधके आधीन काम करनेपर खानें लाभपूर्वक चल सकेंगी । इसके लिए तल्ला-नागपुरमें पोखड़ीको चुना गया ।"[1] परीक्षा सफल नहीं हुई ।

(क) अधातुक खनिज—

गढ़वाल प्रदेशमें अजवेस्तो, अभ्रक, गंधक, गृहपाषाण, ग्रेफाइट, जिप्सम्, नीलम, विजोत्रा, शिलाजीत जैसे अधातुक खनिज निकलते हैं, जिनके स्थान आदिका विवरण निम्न प्रकार हैं—

(१) **अज्वेस्तो**—इसे मुर्दा-कपास या पाषाणतूल भी कहते हैं। ऊखीमठसे थोड़ी दूर उत्तर अच्छे किस्मका अज्वेस्तो मिला है। मोरीके पाइप, लोहेके कारखानेकी ईंटों आदिके वनानेके लिए इसकी वहुत माँग है, किन्तु, जवतक सस्ते यातायातका प्रवन्ध नहीं होता, अर्थात् पनविजलीकी सहायतासे चलनेवाला रज्जुमार्ग (रोपवे) ऊखीमठतक नहीं वन जाता, अथवा वड़ी लारियोंके लिए मोटर सड़क नहीं तैयार हो जाती, तवतक वहाँ किसी कारखानेके खोलने या अज्वेस्तोंको ही अन्यत्र ले जानेकी वात वेकार है ।

(२) **अभ्रक**—अभ्रक कई जगह मिला है, किन्तु उसके निकालनेका काम नहीं होता ।

(३) **कोयला**—पत्थरका कोयला ढ़ेला (लालढंगके पास), चला और फीका नदियोंमें मिला है ।

(४) **गंधक**—गढ़वालमें दो गंधकके चश्मे हैं । (१) एक मध्यमेश्वर मन्दिर (पर्गना नागपुर) के उत्तर-पूर्वमें हिमाल-श्रेणीमें है; (२) वीरी नदी

---

[1] British Garhwal Gazetteer (H. G. Walton, Allahabad 1910) p. 8.

के किनारे उसके अलकनंदाके साथ संगमसे दो मील ऊपर है। 'वीरीवाले चश्मे गंध दूरसे ही मालूम होने लगती है। इन दोनों चश्मोंसे गंधक निकालनेका क नहीं किया जाता।

(५) **गृह-निर्माण सामग्री**—चूनापाषाण, गृहपाषाण और स्लेट अ घरके बनानेकी सामग्री गढ़वालमें बहुत सुलभ है।

(क) **चूनापाषाण**—गढ़वालमें चूनापाषाणकी तीन पर्वत-श्रेणियाँ हैं (१) एक नागपुर पर्गनेमें अलकनंदासे उत्तरमें है; (२) दूसरी लोहवा पिंडूरतक और फिर बछनस्यून पट्टीमें अलकनंदातक चली गई है; (३) ती नयार नदीके दक्षिणमें मैदानकी भूमिसे समानान्तर चली गई है। वैसे छो छोटे चूनापाषाणी पहाड़ और जगहोंमें भी मिलते हैं। श्रीनगरके पास रा बागमें चूना निकाला जाता है। वहाँ १९२३ में ६० आदमी काम करते

(ख) **गृहपाषाण**—मकान बनानेके साधारण पत्थर हर जगह मिलते हैं

(ग) **स्लेट**—पहाड़में मकानोंकी छतोंके लिए स्लेटका बहुत उपयोग हो है, और वह प्रायः सब जगह मिलता है। गहरे नीले रंगके स्लेट केवल लोहव मिलते हैं। लिखनेके लिए लोहेकी चादरपर सीमेंट जमाये स्लेट तथा छतोंके लि टीनकी चादरें अब स्लेटकी प्रतिद्वंद्वितामें खड़ी हो गई हैं, तो भी गरीबोंके झो अभी भी स्लेटकी पट्टियोंसे ही छाये जाते हैं।

(६) **ग्रेफाइट**—पट्टी लोहवामें कर्णप्रयागकी सड़कपर यह खनिज मि है। यह पेंसल तथा दूसरी चीजोंके बनानेमें काम आता है।

(७) **जिप्सम्**—रसायनिक खादमें जिप्सम् सबसे आवश्यक पदार्थ है अलकनंदाके किनारे पनाई और नगरासूमें जिप्सम् पाया जाता है। गहरे नी रंगका जिप्सम् भी मिलता है, जिसका बर्तन बनता है। जिप्सम्से पेरिस-प्लास बनाया जाता है, किन्तु अभी हिमालयके जिप्सम्का उपयोग लेनेवाला कोई न है।

(८) **नीलम**—भिलङ पर्गनेमें भिलंगना नदीके उद्गमपर कच्चे नीलम खान है, शायद वहाँ नीचे पक्का नीलम भी निकले।

(९) **फिटकिरी**—इसकी खानें कोटगाँव और गगवाडस्यूँ (पौड़ीके पा में है।

(१०) **बिजोत्रा**—या कच्चे हीरेके टुकड़े बहुत जगह मिट्टीमें मिलते हैं

(११) **शिलाजीत** (अलुमिना-गंधेत)—यह पैनखंडा और नागपु पर्गनोंमें चट्टानोंसे निकलता है। प्रतिवर्ष मार्चके महीनेमें चमोलीमें एस० डी

प्रो० इसका ठीका देते हैं, जिससे "४०० से १७३९ रुपये वार्षिक आमदनी होती है।"[1]

हरताल, साबुन-पाषाण आदिका भी यहाँ पता लगा है।

(ख) धातुक खनिज—

गढ़वालमें ताँबा, पारा, लोहा, सीसा, सोना जैसी धातुयें मिलती हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार है—

(१) **ताँबा**—जैसा कि पहले कहा, यह प्रदेश भारतके प्रमुख ताम्र-उत्पादक स्थानोंमें है, और इस उद्योगका उच्छेद अंग्रेजी शासनमें हुआ। गोरखा-शासन (१८०५—१५ ई०)में सरकारको ताँबेकी खानोंसे प्रतिवर्ष ५० हजार रुपयोंकी आय होती थी। कंपनीके बीस वर्षके शासनके बाद १८३८ में वह सौ रुपये रह गई। उस साल ३४१८ रुपयेके अनुदानसे जो तजर्बा किया गया, उसमें ७३८४ रुपयेका घाटा रहा। कमिश्नरने उसके बारेमें लिखा था—"इस तजर्बेकी असफलताको देखकर मेरा साहस नहीं होता, कि फिरसे नया तजर्बा करनेकी राय दूँ। इस प्रदेशकी ताँबेकी खानोंके बारेमें यही राय कायम कर सकता हूँ, कि इस समय उनमें पूँजी लगाना उचित सिद्ध नहीं होगा।" किन्तु विशेषज्ञ कप्तान ड्रमंडकी राय दूसरी थी। उनकी राय थी कि पहिले अनुदानको अनुसंधान और परीक्षणमें लगाना चाहिए था, लाभकी आशासे छोटे रूपमें कारबार शुरू करना ठीक नहीं था। १८४५ में मिस्टर रेकेनडोर्फकी भी सम्मति वैसी ही थी, और वह चाहते थे कि यह काम किसी प्राइवेट कंपनीको हाथमें लेना चाहिए। १८५२ में फिर खानोंमें काम लगाया गया, किन्तु सफलता नहीं हुई। आधी शताब्दी बाद १९०९ में फिर एक यूरोपियन कंपनीने कुछ जाँच-पड़ताल की, किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। यहाँकी धून (ओर) मुख्यतः पाइराइट और धूसर (Vitreous) ताम्र है। लाल ओपिद तथा हरा कार्बनेत भी कहीं कहीं मिलता है, किन्तु हरा कार्बनेत दुर्लभ है। खरना, डंडा, डूंगर, बखनास्यूँ, तालपुंगला, थाला, धनपुर, धोबरी, नोता, पोखरी, बगौड़ी, राजाखान यहाँकी ताँबेकी खानें हैं, जिनमें मुख्य हैं देवलगढ़ पर्गनेमें धोबली तथा धनपुरकी, एवं नागपुर पर्गनेमें पोखरीकी खानें। विशेष विवरण निम्न प्रकार है—

(१) **अगरसेरा**— पट्टी लोहबामें लालगंगाके दाहिने किनारेपर

---

[1] Report on the Industrial Survey of Garhwal District, p. 18

(२) खरना	नागर नदीके संगमके पास वंगतालके नीचे (खरना स्थिति थाला जैसी है) ।
(३) डंडा	पोखरीसे ढाई मील, थालासे १,००० हाथ ऊपर
(४) डुंगरा-वछनस्यूं	डोव गाँवके पास (पट्टी धनपुर, पर्गना देवलगढ़
(५) ताल पुंगला	डंडासे एक मील उत्तर-पूर्व
(६) थाला	नोतासे एक मील उत्तर-पश्चिम । इंधन पानी मौ हैं, यद्यपि खानमें भरजानेवाले पानीका निकास ए समस्या है ।
(७) धनपुर	खानें उत्तर ओरके एक ऊँचे पहाड़में अवस्थित हैं धूनोंका स्तर उत्तरसे दक्षिणकी ओर चला गया है जो कहीं-कहीं एक फुट मोटा है, १ इंचकी मोटाई आ है । खानोंके पहाड़के ऊपर होनेसे जलनिर्गमकी दिक्क नहीं है, दीवारोंकी मजबूतीके कारण थूनी भी नह चाहिए ।
(८) धोवरी	(प० देवगढ़) धनपुर पहाड़के दक्षिण भागमें है धोवरी-उपत्यकाके पश्चिमकी खानें अधिक अच्छी हैं। इनकी धूनमें २५% ताँबा है । पानी और इंधन दोनों पासमें मौजूद हैं ।
(९) नोता	पोखरीसे ढाई मील उत्तर-पश्चिम । समीप हीमें उपयोगके लिए पानी और काष्ठ-इंधन मौजूद है ।
(१०) पोखरी	यहाँ वहुत-सी खानें हैं ।
—केसवारा	
—गगली	
—चौमटिया	
—दुइनेद	
—देवथान	
(११) राजाकीखान	—राजाखानसे ९०० हाथ उत्तर, २५% ताँबा
—कुबेरचौक	
—गजाचौक	
—भरतवाल कुंड	
(१२) वगोड़ी	

(२) **पारा**—हिमाल-श्रेणीमें वतलाया जाता है।

(३) **लोहा**—ताँवेकी भाँति लोहेके लिए भी मध्य-हिमाचल प्रसिद्ध था। दिल्ली (कुतुव) की निर्मल लोहेकी लाट किसी समय यहींके अगरियोंने अपने लोहेसे वनाई थी। अगरियाँके पूर्वज कलिया लोहारने पाँडवोंके लिए हथियार वनाये थे, जिसके लिए आज भी अगरियाँ पाँच कोयला पहिले निकाल देते हैं—यह परंपरा चली आती है। वर्तमान शताब्दीके आरंभमें भी स्थानीय उपयोगका वहुतसा लोहा यहीं निकाला जाता था, किन्तु यन्त्रोंद्वारा उत्पादित सस्ते लोहेके सामने अगरियों के महँगे और नरम लोहेको कौन पूछता? यहाँकी धूनमें ७०% तक शुद्ध लोहा होता है, जिससे पुराने ढंगसे मनमें पाँच सेर ही लोहा निकल पाता था। धून काली, चुंवकिक, स्फटिन है। लोहेकी मुख्य खानें नागपुर, दसौली और इरियाकोटमें है। उनका विवरण निम्न प्रकार है—

(१) खुश	पैनखंडा पर्गनामें सीली-चाँदपुरके पास
(२) गीलेत	विचला-नागपुर पर्गनेकी पट्टी तल्ली-कालीफांटमें
(३) चलिया	पट्टी पैपूनमें
(४) चारवंग	पट्टी मल्ली-दसौली (धून पड़ोसी मोक खान जैसी है)।
(५) जाखटोली	पट्टी विचला-नागपुर
(६) डंडातोली	पट्टी हरियाकोट
(७) डुंगरा	
(८) तल्ली-चाँदपुर	पट्टी-वछनस्यूं में गढ़वालका सवसे अच्छा लोहा
(९) पिपली	पट्टी इरियाकोट
(१०) बुखंडा	पट्टी विचला नागपुर
(११) मोक	पट्टी मल्ली दसौली (अत्यधिक चुंवकिक)
(१२) राजवुंगा	पट्टी सिली-चाँदपुर (पर्ग०-पैनखंडा) हेमेतित धून
(१३) लोहवा	(हेमेतित)
(१४) हाट	पट्टी मल्ला-नागपुरमें अलकनंदाके किनारे (पैराइट धून) केजणी, कैइली और भरपूरमें भी लौहधून है।

(४) **सीसा**—ताँवे-लोहेकी भाँति गढ़वालमें सीसेकी भी प्रचुरता है। नागपुरमें इसकी अच्छी खानें हैं, यद्यपि वह दुर्गम स्थानोंमें है। कुछ खानें निम्न स्थानोंमें हैं—

ऐयार	टौंसके वाँये तटपर (जौनसार)
गोल	पट्टी खरोही

तच्छिरा	पर्गना धनपुर
बोरैला	टौंसके वाँये तटपर (जौनसार)
मैयार	टौंसके वाँयें तटपर (जौनसार)
सोरगंगा	पट्टी मौदरस्यूंन

(५) **सोना**—अभीतक सोनेकी खानका पता नहीं लगा है, किंतु, उसक संभावना कितनी ही नदियोंके वालूमें प्राप्त सोंनेसे पाई जाती है। अलक नंदा, पिंडार और सोनाके उद्गम गढ़वालके भीतर है। पिछली शताब्दी कप्तान हर्बर्टको अलकनंदाके तटपर कहीं ग्रेनाइट (संगखारा) की मातृकामें सोन प्राप्त हुआ था।

सोनाधुलाई—अलकनंदा, पिंडार और सोनगढ़के अतिरिक्त लछमन झूलात गंगा, तथा सोनगढ़के संगमसे थोड़ा नीचेतक रामगंगा (पश्चिमी)की रेतमें सोन पाया जाता है। आजकल सोना नदीमें लालदर्वाजा और दुधियाके वीच धोणीलो (न्यारिये) सोना धुलाई करते हैं। यह भूमि जंगल-विभागके हाथमें है, जिस सोनेंसे वार्षिक २५ रुपये शुल्कके रूपमें मिल जाया करता था। ३० वर्ष पूर्व १०-१२ धोणिया प्राचीन ढंगसे सोना निकालनेका काम करते थे। उस समय एक आदमीको आध आनासे चार आना रोज मिल जाता था। सोनेका मूल्य चौगुना होनेसे यदि आय वढ़ गई होगी, तो खाद्यका दाम चौगुनासे भी अधिक हो गया है। धुलाईका समय जनवरीसे अप्रैलतक तीन-चार महीनेका है, जवकि धार क्षीणतम रहती है। धोणिये प्रतिवर्ष पाँच-सात तोला सोना निकाल लिया करते थे—१९२२ में ९ आदमियोंने ४ महीना काम करके ७ तोला सोना निकाला था, जिसका दाम २५ रुपया तोलाके हिसावसे १७५ रुपया हुआ। २५ रुपया सरकारी शुल्क दे देनेपर १५० रुपया धोणियोंको मिला। १९२३में ११ धोणियोंने ५ तोला ही सोना निकाल पाया। धोणियोंका ढंग वहुत पुराना है। लंबी कठौतमें वाँस की छलनीसे छनकर पानीसे धोया जाता वालू जमा होता है। उसे फिर पानीमें घोते इस प्रकार वहाया जाता है, कि हल्के कण वह जायें और भारी नीचे वैठ जायें। इस प्रकार सोनेंके कण दिखलाई देने लगते हैं, जिनमें वड़ोंको ही धोणिये निकाल पाते हैं। यदि सूक्ष्म सुवर्ण-कणोंको इकट्ठा करनेके लिए वालूमें पारा मिश्रित किया जाता, तो और भी सोना निकलता और पीछे गरम करके पारेको भी निकाल लिया जाता, किन्तु अभी हमारे धोणिये आस्ट्रेलियाके धोणिये नहीं वन पाये हैं। गढ़वालकी इन सुवर्ण-कणवाली नदियोंके तट या उद्गमपर कहाँ सोनेकी मातृका है, यह अभी अज्ञात है।

§८. जलवायु और ऋतु

१. जलवायु—

ऊँचाईका प्रभाव जलवायुपर कितना पड़ता है, इसके दृष्टांत श्रीनगर (१७५८ फुट) और पौंडी (५८३० फुट) हैं; इनके बीचमें केवल ८ मीलका अन्तर है, और दोनों ही ३०°. १३' और ३०. ८'. ५९" उत्तरी अक्षांशके बीचमें हैं। जलवायुकी अनुकूलताके अनुसार वृक्षोंको भी पाया जाता है। ३५०० फुटतक आम, पीपल, वर्गद अच्छी तरह होते हैं, और बाँज, बुराँस (रोडेन्ड्रन) साढ़े चार और छ हजारकी ऊँचाई चाहते हैं। छ से सात हजार फुटतक दो प्रकार का जलवायु मिलता है —

(१) **गर्म-भूभाग**—भावर तथा चार हजार फुट की ऊँचाई तककी उपत्यकायें गर्मियोंमें गर्म रहती हैं। अप्रेलसे अक्तूबरतक यहाँका तापमान कष्टप्रद रहता है। रातको भी गर्म हवा चलती है और मध्यम तापमान ४०° रहता है। वर्षामें यहाँ मच्छरों-मक्खियोंकी भरमार रहती है और वर्षाके अन्तमें मलेरिया, चर्मरोग तथा पेचिशकी शिकायत हो जाती है। नवंबरसे मार्चतक यहाँकी ऋतु सुखद रहती है।

(२) **नर्म-भूभाग**—५,०००—७,००० फुट अत्यंत स्वास्थ्यकर ऊँचाई है। यहाँके निवासी सालभर बहुतसे रोगोंसे सुरक्षित रहते हैं। जाड़ा तीव्र नहीं होता, वर्फ ४,०००फुटतक पड़ जाती है। लोग बारहों महीने शारीरिक और मानसिक परिश्रमके कार्य निराबाध कर सकते हैं। गर्मियोंमें बहुत सी चिड़ियाँ मैदान छोड़ यहाँ आ जाती हैं—स्वास्थ्यकामना उनमें भी होती है।

अपनी भिन्न-भिन्न ऊँचाइयोंके कारण कुमाऊँकी भांति गढ़वालमें अतिशीत प्रधान देशोंका भी जलवायु मिलता है। यहाँके कितने ही स्थान सिबेरियाकी स्थिति उपस्थित करते हैं, जैसे—

(३) **तैगा**—६,००० से १०,००० फुटकी ऊँचाईपर हिमाचलमें सिबेरियाकी तैगा मौजूद है, जहाँ देवदार, वज्रकाष्ठ (बाँज या ओक), ब्रोंस (गुरांस) के जंगल हैं। यहाँ के पहाड़ोंके उत्तरी भागपर सूर्यकी किरणें कम समयतक रहती हैं, जिससे वहाँ धरतीमें नमी अधिक बनी रहती है। यही कारण है, जो पहाड़ोंके उत्तरी पार्श्व जंगलदार होते हैं, और अधिक धूपके कारण दक्षिण-पार्श्व वृक्षहीन देखे जाते हैं।

(४) **बुग्याल**—तैगासे ऊपर १०,०००—१३, ००० फुटपर घाससे

ढँकी ढलाने हैं, जिन्हें पयार या बुग्याल कहते हैं। यहाँ पशुपाल युगका स्वर्ग श्र भी मौजूद है। इस भूमिमें वर्फ मार्चसे पिघलने लगती है, फिर हरी घासों फर्श विछ जाता है, जो वरसातमें रंग-विरंगे फूलोंका उद्यान वन जाता है। अप्रैल हीं यहाँ पशुपाल —भोटांतिक मेषपाल और दूसरे—डेरा डाल देते हैं, औ सितंवर-अक्तूवरमें ही हटते हैं।

(५) तुंद्रा—हिमाल-श्रेणीकी हिमानियों (ग्लेसियर) तथा हिमशिखरोंके इ ओर सिवेरियाकी तुंद्राकी भाँति आठ मास धरती वर्फसे ढँकी रहती है। गर्मीमें व के पिघल जानेपर भी कुछ ही इंच नीचे धरती सदा हिमित रहती है। तुंद्राकी भाँ यहाँ भी वनस्पतिके नामपर कुछ झाड़ियाँ और छोटे-छोटे पौधे पाये जाते हैं

(६) **ध्रुवकक्षीय भूभाग**—१३,००० फुटसे ऊपर ध्रुवकक्षीय जलवा आ जाता है। यहाँ जाड़ा लंवा और गर्मीका मौसिम छोटा होता है, जिसके कार अभी वर्फ अच्छी तरह पिघलने भी नहीं पाती, कि नई वर्फ पड़ जाती है। शीतक अधिकता यहाँ वनस्पतिके अभावका कारण है।

२. ऋतुयें—

गढ़वालमें तीन ऋतुयें मानी जाती हैं, यद्यपि वह सभी ऊँचाइयोंपर नहीं मिलतीं। वह हैं—

१.	रूडी या खडसो (ग्रीष्म)	१३ फरवरी—१२ जून
२.	वस्काल (वर्षा)	१३ जून—१२ अक्तूवर
३.	ह्यूंद (शीतकाल)	१३ अक्तूवर—१२ फरवरी

माणा और नीती गाँव यहाँकी उच्चतम उन्नतांशकी मानव-वस्तियाँ हैं। वह वसन्त वहुत छोटा होता है, जब कि उस समय थोड़ी गरमाहट मालूम पड़ती है। जू और जुलाई वहाँके ग्रीष्मके दिन हैं। उस समय तापमान दोपहरको घरमें ७० ८० डिग्रीतक होता है, और घरसे वाहर ९०° से ११०° तक। लंवे दिनों औ उसके ही कारण संचित होती गर्मीसे जुलाईमें बोई फसल सितंवरमें पककर कट लायक होती है। सितंवरके अन्तमें तापमान तेजीसे गिरने लगता है। सवास वर्ष पहिले कमिश्नर ट्रेलने लिखा था—"यहाँ मईसे सितंवरतकके पाँच महीनों वसंत, ग्रीष्म, शिशिर सभी आ जाते हैं। इनके भी चार महीनोंमें ऐसा समय क होता है, जवकि हिमपात नहीं होता। सितंवरके अन्तसे वर्फ पड़ने लगती है जो अप्रैलके आरंभतक जमा होती रहती है। इस समय वहुत कड़ी सर्दी होत है। फिर वर्फ पिघलने लगती है, यद्यपि हिमपात मईके अन्तमें भी हो जाता है खुली और समतल भूमिमें ६ से १२ फुट मोटी वर्फ जम जाती है। दिसंवर

अप्रैलतक माणा और नीतीके गाँव सफेद हिमकी चादरके नीचे ढँके मानव-शून्य हो जाते हैं।

३. तापमान—

भिन्न-भिन्न ऊँचाइयोंके अनुसार यहाँके तापमानमें भेद पाया जाता है। उत्तरके माणा, नीती जैसे अतिशीतल स्थानोंमें औसत वार्षिक तापमान ५० (१०° सेंटीग्रेड) पाया जाता है। उष्णतम समय मध्य-जून में ५,००० फुटके स्थानोंमें ९४°. १०' होता है। प्रति हजार फुटकी ऊँचाईपर ३° के हिसाबसे तापमान गिरता है। यहाँके कुछ स्थानोंका तुलनात्मक तापमान निम्न प्रकार है—

स्थान	उन्नतांश (फुट)	जनवरी	अप्रैल	जून	नवंबर	वर्ष
वरेली	५६८	५७°.३	८३°.४	९०°.३	६६°.५	७५°.८
श्रीनगर	१९५०		७१.०	८४.०	..	..
कालसी	२०००	५८.३	७७.७	८६.०	६३.२	७१.८
देहरादून	२२३२	५४.८	७६.१	८४.९	६२.५	७०.६
पौड़ी	५३५०		६०.०	७३.०	..	..
अल्मोड़ा	५५४६	४६.३	६४.७	७५.०	५७.९	६३.२
मसूरी	६९३७	४१.५	५९.६	६८.५	५२.३	५६.७
चकराता	७०५२	४१.६	५९.६	६८.०	५२.२	५६.३
लंढौर	७५११	३७.८	५६.३	६८.५	४९.४	५५.२
नीती	११४६४					५०.०
लेह	११५३८	१७.६	४०.१	५३.६	३०.७	३९.३
स्पिती	१३०००	१७.५	३७.५	५६.९	२२.५	३७.२

हिमरेखा—यहाँकी सनातन हिमरेखा १६,०००—१७,००० फुटपर है, जो जाड़ोंमें ७,००० फुट तक चली आती है।

४. वर्षा—

मानसून वंवईसे प्रायः १५ दिनमें यहाँ पहुँचता है। वर्षाकी मात्रा कुछ स्थानोंकी निम्न प्रकार है—

स्थान	उन्नतांश	वर्षा (इंच)
कोटद्वार	...	६८.८८
देवप्रयाग	१५५०	३०.०

श्रीनगर	१७५०	३६.६३
देहरादून	२२३०	७४.९६
टेंहरी	२५२६	३६.८७
वाडाहाट (उ. काशी)	. . .	३८.५५
कर्णप्रयाग	२६००	५३.१२
ऊखीमठ	४३००	३१.३७
पौड़ी	५३५०	५०.२२
अलमोड़ा	५४९०	३८.९४
जोशीमठ	६१५०	२२.९६
मसूरी	६५००	९४.९
नीती	११४६०	५.५

जिसकी तुलना कीजिए—

ठाकुरद्वारा	७८०	४४.५४
देववंद (देववन)	८७०	३१.०४
हरद्वार	९२४	४५.६९
सहारनपुर	९५०	३६.७६
काशीपुर	९५०	४३.८१

कुमाऊँ गढ़वालमें ऊँचाईके अनुसार वार्षिक वर्षा (इंच) निम्न प्रकार होती हैं—

उन्नतांश (फुट)	वर्षा (इंच)	उन्नतांश	वर्षा
८००	४३	७०००	८८
१०००	६०	८०००	५२
२०००	१२५	९०००	२७
३०००	१५९	१००००	८४
४०००	१६१	११०००	७
५०००	१४९	१२०००	४
६०००	१२२		

§६. जंगल

पिछले डेढ़ सौ सालोंमें गढ़वालकी जनसंख्या चौगुनी हो गई। कृषि आजीविकाका मुख्य साधन होनेसे कृषिकी भूमिको उसी परिमाणमें बढ़ाना आवश्य

था, जिससे जंगल वहुत कट गये। जो रक्षित वनखंड वचे हुए हैं, वह भी खराव हो गये होते, यदि जंगल-विभागने उन्हें संभाला न होता। वाहरी हिमालयमें रामगंगासे गंगातक और कुछ पतली दूनमें भी वन हैं,।

गढ़वाल और टेहरी जिलोंमें जंगल क्षेत्र निम्न प्रकार हैं—

	कुल क्षेत्र	जंगलक्षत्र (वर्गमील)
गढ़वाल	५६२९	८००
टेहरी	४२००	३१३५

१. जंगल-इतिहास—

(क) **गढ़वाल-जंगल**—पुराने समयसे ही जंगलको राजसंपत्ति माना जाता था, किन्तु उससे उसकी रक्षा नहीं हो पाती थी। झूमप्रथाके अनुसार जंगलको काट-जलाकर साफ कर, वहाँ दो-चार साल खेती कर, फिर उसे छोड़ दूसरी जगह चले जाते। यद्यपि लोगोंकी स्थायी आवादीके कारण झूमका प्रचार वहुत नहीं था। राज्यने वनकर वसूल करनेके लिए जगह-जगह चौकियाँ स्थापित कर दीं। यह प्रथा कंपनी सरकारने भी कितने ही समयतक रक्खी। फिर इसको हटाकर कमिश्नर ट्रेलको प्रवन्धका भार दिया गया। ट्रेलने जंगलके काठ, वाँस और कत्थाके महाल जमींदारोंको ठेकेपर दे दिये, जिसके फलस्वरूप १८१८ की ५६६ रुपयेकी आमदनी १८२८ में १४०५ रु० हुई। १८४९ में वन और चराई करकी वसूली कोटरीदूनमें देहरादूनके सुप्रिन्टेन्डेंट (जिलाधीश) और उदयपुरमें विजनौरके कलेक्टरको दे दी गई। १८५८ में कमिश्नर हेनरी रामज़े प्रथम वनपाल (कंजर्वेटर) नियुक्त हुए। उन्होंने ठेकेदारी प्रथाको वन्द कर दिया और उत्तरके जंगलोंको अछूता रखते किसानोंको निचले पहाड़ों तथा भावरमें भूमि लेनेकी प्रेरणा दी। १८६८ तक यही प्रवन्ध रहा, फिर गढ़वालके जंगलोंको जंगल-विभागके हाथमें दे दिया गया। १८७९ में भारतीय वन-विधानकी धारा ३४ के अनुसार जंगलोंको रक्षित-वन घोषित कर दिया गया, और गंगासे रामगंगातकका सारा जंगल पाँच व्लाकोंमें विभक्त किया गया, जिनमें सनेह, लालढांग और खाराके जंगलोंको मिलाकर दिसंवर १८७९ में गंगा-विभाग वनाया गया। नवंवर १८८० में चंडी व्लाकको भी रुडकी वर्कशापके सुप्रिन्टेंडेंटसे लेकर गंगा-डिवीजनमें मिला दिया गया। अप्रेल १८८५ में खोह नदीके पूर्वका कोटरी-दून-जंगल गढ़वाल डिवीजनसे हटा दिया गया। इस प्रकार गंगा और गढ़वालके दो जंगल-डिवीजन गढ़वाल जिलेके जंगल-प्रवन्धके लिए वनाए गये।

(ख) **टेहरी-जंगल**—टेहरी जिलेका प्रायः आधा भाग जंगल है, और ये

जंगल देवदार जैस वड़े मूल्यवान काष्ठकी निधि हैं। गोरखा-शासन तथा उस पहिले यहाँ भी वही काठ-बाँस-करका रवाज था। जंगलोंकी सुरक्षा और आमदनीके ख्यालसे राजाने पहिले १८६५-८५ के लिए अंग्रेजी सरकारको ठेका दिया १८८५ में उसमेंसे केवल ६४.५ वर्गमीलका ही ठेका १२,००० रु० वार्षिकपर दोवारा दिया गया, जिसमें टौंस और पव्वरके देवदार वन तथा शिवपुरीके शालवन भी सम्मिलित थे। दो साल वाद शिवपुरी जंगल छोड़ दिया गया। १८९६ नष्ट होनेसे वचाने के लिए टौंस-उपत्यकाके ७२.१ वर्गमील चीड़-वनका भी ठेका ८०%पर ले लिया गया। १९०४ में जंगल-विभागने देवदार वनका ठेका लाभ ८०%पर ले लिया। १९४९ में राज्यके विलयनपर टेहरी जिलेके जंगलक स्थिति भी गढ़वाल जिलेके जंगलों जैसी हो गई।

२. जंगल-डिवीजन—

गढ़वालके जंगल ३ डिवीजनों (विभागों) और गढ़वाल-जिला जंगलमें बँटे हुए हैं। इनमें गंगा और गढ़वाल डिवीजन गढ़वाल जिलेमें हैं और टेहरी-डिवीजन टेहरी जिलेमें।

(१) **दक्षिण-गढ़वाल डिवीजन**—यह डिवीजन पूर्वमें रामगंगा और पलाई नदीसे पश्चिममें गंगातक और उत्तरमें गंगासलाण और तल्लासलाणसे दक्षिणमें कंडी सड़कतक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल २,२४,१०४ एकड़ या प्राय: ३५० वर्गमील है। साल (साखू) के वृक्ष यहाँ प्राय: पाये जाते हैं, विशेषकर उत्तरकी ओरकी ढलानोंमें वह अच्छे होते हैं। हलदूके वृक्ष उतने अधिक नहीं पाये जाते, और वह अधिकतर दक्षिणकी ढलानोंपर होते हैं। सोतोंमें अच्छी प्रकारकी जामुन मिलती है। तून वहुत कम पाया जाता है। सवसे अच्छे साल कोटली और पलाईके रेंजोंमें होते हैं। बाँस इस डिवीजनमें वहुत और अधिक लाभका भी है। यह ३५०० फुटकी ऊँचाई तक पाया जाता है—विशेषकर पर्वत-सानुओंपर। जंगली हाथी खानेसे भी अधिक दलमलकर इन्हें वरवाद करते हैं, कन्सूर और मंडलीके व्लाकोंमें वाँस वहुत अच्छे होते हैं, किन्तु उपयोग-क्षेत्रसे दूर हैं, तो भी वाँससे आधी आमदनी होती है। साईं, वकली धौरा, गोसम, शीशम, खैर, सन्दन, तेंदूके वृक्ष गंगा-डिवीजनमें मिलते हैं। इस डिवीजनका काष्ट अधिकतर गंगा द्वारा वहाकर सनेह और हरद्वार इन दोनों प्रधान काठ-वाजारोंमें पहुँचाया जाता है, जहाँ उसे दिल्ली और मेरठके व्यापारी खरीद लेते हैं। जंगलके आसपासके पहाड़ी लोगोंको कुछ नियमोंके साथ जंगलमें मुफ्त पशुचारण, घास काटने-बेचने, कृषिके कामके लिये लकड़ी लेने तथा सूखे काठोंको जमा करनेका अधिकार है।

जंगलकी देखरेखके लिए डिवीजनमें एक डिप्टी कंजर्वेटर (उपवनपाल) है, जिसका निवास लैंसडोनमें है, किंतु कामके मौसममें वह कोटद्वारमें चला आता है। सारा डिवीजन रेंजरों या उपरेंजरोंके आधीन सात रेंजोंमें विभाजित है। १९२२-२३ में इसकी आय थी–काष्ठ ५७,८५८ रु०, ईंधन २८,३२७, और अन्य ३०,१२१, कुल १,१६,३०६ रु०।

(२) **उत्तर-गढ़वाल डिवीजन**——यह गढ़वाल जिलेके दक्षिण-पूर्व कोनेमें पलाईं और रामगंगा नदियोंके पूर्वमें अवस्थित है। इसके उपवनपालका कार्यालय नैनीतालमें है, किंतु नवंबरसे अप्रैलतक वह रामनगरमें चला आता है। इस डिवीजनका १,३४,३५४ एकड़का जंगल चार रेंजों में विभक्त है। अद्नाला और मंडलके रेंज पलाईं और रामगंगाके बीचमें है, तथा दक्षिणी पतली-दून और धाराके रेंज रामगंगाके दक्षिणमें हैं। ये जंगल ९०० से ३,९०० फुटकी ऊँचाईपर हैं। इन जंगलोंको २४ फरवरी १८७९, १० जुलाई १८८६ और ३ अप्रैल १८९० की सूचनाओं द्वारा रक्षित-वन बनाया गया। यहाँके मुख्य वृक्ष साल और साईं हैं, कहीं कहीं बाँस भी हैं। रामगंगाके किनारे तथा कितनी ही और खालोंमें भी बाँस होता है। १८४० में प्रबन्ध संभालनेपर ठेकेदारोंको जंगलके उपयोगका ठेका दिया जाता था। १८५४ में सरकारने स्वयं इसे करना चाहा, किन्तु १८५८ में फिर ठेकेदारोंको सुपुर्द कर दिया गया, साथ ही नियम कर दिया गया, कि ठेकेदार चिह्नित वृक्षोंको ही काटें। आगसे रक्षा करनेका काम वैसे १८६५ में शुरू कर दिया गया था, किन्तु उसका सफलतापूर्वक सुप्रबंध १८७० से होने लगा। मुख्य आय शाल और बाँससे है। यहाँका शाल मुरादाबाद, मेरठ, दिल्ली और कानपुरतक जाता है। बाँस रामगंगामें बहाकर बरेली और कानपुरतक पहुँचाये जाते हैं। १८९८-१९०७ की औसत वार्षिक आय शाल और बाँससे क्रमशः ७५,३४६ और ३१८७४ रुपये हुई।

गंगम डिवीजनकी भांति यहाँके जंगलोंमें भी आसपासके लोगों को पशुचारण आदिका अधिकार है।

गढ़वालके जंगलोंकी अपनी बहुत-सी सड़कें तथा डाकबंगले हैं।

१९२२-२३ में आय थी—काष्ठ १७,२६६, ईंधन ३४,५८८, बाँस १,८०५, अन्य ४५,५१७ कुल ९९,१७६ रू०।

(३) **जिला-जंगल**——डिवीजनके जंगल मुख्यतः व्यवसायी दृष्टिसे रक्षित-वर्धित किये जाते हैं, किंतु जिला-जंगल स्थानीय लोगोंकी हितकी दृष्टिसे रक्षित किये गये हैं। इनका प्रबन्ध जिलाधीश (डिप्टी-कमिश्नर) करते हैं। इसमें

लाभ उठानेका ख्याल नहीं रखा गया है। यहाँकी आय भी जंगलके प्रवन्ध ग्रं
विकासमें ही लगाई जाती है। लोगोंको चरानेका अधिकार प्रायः सभी जंगलों
है, और वह घास और काठका भी यथच्छ उपयोग कर सकते हैं।

जिला-जंगल तीन प्रकारके हैं—(१) पहिले वह जो नष्ट-प्राय हो चुके
इसलिए उन्हें रक्षित करनेकी आवश्यकता नहीं। (२) दूसरे प्रकारके जं
इतने बड़े हैं, कि उनके खुले रखनेसे भी भय नहीं है। (३) तीसरे प्रका
जंगल रोके जंगल हैं। दूसरे प्रकारके जंगलोंकी देखरेख प्रधानों और पटवारियों
जिम्मे है। जंगलके अधिकारी अपना सारा ध्यान तीसरे प्रकारके जंगलोंपर र
हैं। जिलेके जंगल उपरेंजरोंके अधीन उत्तरी, दक्षिणी तथा केन्द्रीय इन तं
रेंजोंमें विभक्त हैं। जिनके ऊपर एक अतिरिक्त सहवनपाल जिलाधीशके नियन्त्र
काम करता है।

(क) **दक्षिणी रेंज**—यह गरम मलेरियावाले इलाकेमें है, जहाँ वस्ति
वहुत कम हैं, और खेतीके लिए जंगलोंका सत्यानाश नहीं किया गया है।

(ख) **केंद्रीय रेंज**—यहीं चौंदकोट और वारहस्यूनके पर्गने आवाद
जिनमें घास और काठकी वहुत कमी है, जिससे जंगलकी रक्षामें वड़ी साव
रखनेकी अवश्यकता है। चौंदकोट और वारहस्यूनके दक्षिणमें नयार नदी है
इसके किनारे खड़े पहाड़ झाड़ियोंसे ढँके हैं। यहाँ कतील (झूम)-प्रथासे खे
करनेका रवाज रहा, जिसमें जंगलको काट-जला दो-तीन फसल लेकर छों
दिया जाता था। इससे पहाड़ जंगल-विहीन होते गये, भूपातोंने नीचेकी उपत्यक
खेतोंको भी वर्वाद कर दिया। कतील-प्रथा निषिद्ध कर दी गई। इगासर, च
नौन, शिमार, मुंडनधार, वेलनधार, और मल्दाधार जैसी जंगलविहीन की
पर्वतवाहियोंमें चीड़, देवदार और वाँजके बीज वोकर फिरसे जंगल तैयार करने
कोशिश की गई है।

(ग) **उत्तरी रेंज**—जिलेके उत्तरी तथा उत्तर-केन्द्रीय भागमें खूब अन
जंगल है। तल्ला-नागपुरमें उसका कुछ अभाव-सा था, जिसको दूर करनेके लि
नये जंगल लगाये गये। चाँदपुर पर्गनेमें दूदातोली[1] का विशाल जंगल सैकड़ों व

---

[1] यहाँ गर्मियोंमें अल्मोड़ा और गढ़वालके पशु चरने आते हैं। सारा प
निचले भागमें चीड़ और वंजसे तथा ऊपरवाले भागमें तिलोंज-खरसूके जंगल
ढँका है। यह पिंडार और रामगंगाकी उपत्यकाओंको पृथक् करता है। दोनों नद
के उद्गम यहीं हैं।

मीलोंमें फैला हुआ है। यहाँके अधिकाँश डांडे ७,००० फुटसे अधिक ऊँचे हैं, इसलिए कृषिकी पहुँचसे वाहर होनेसे वह रक्षाकी आवश्यकता नहीं रखते। गर्मियोंमें यहाँ हजारों पशु चरने आते हैं। यहीं रामगंगा तथा दोनों नयारोंके उद्गम हैं। इसके और उत्तरी भागमें पिंडार और मंदाकिनीकी उपत्यकाओंके सुन्दर देवदार वन हैं, जहाँ करोड़ों परिपक्व देवदार वृक्ष हैं। इनके पाससे वहनेवाली नदियाँ लकड़ी वहानेका काम करती हैं। यहाँ वस्तियाँ वहुत कम हैं, जिनको वढ़ानेका भी प्रयत्न किया जाता है।

(४) **टेहरी डिवीजन**—११०० वर्गमीलका टेहरी जंगल चार रेंजोंमें विभक्त है। यहाँ तीन चौथाई चीड़ आदिके जंगल हैं, और एक चौथाई देवदारके।

(क) **रवाईं-रेंज**—यह टौंस और जमुनाकी उपत्यकाओंमें मुख्यतः चीड़के जंगलोंका जंगल है।

(ख) **टकनोर-रेंज**—भागीरथी-उपत्यकाके इस रेंजमें उत्तरकी ओर देवदारके जंगल हैं, जिसका जाड़गंगाके पासवाला भाग तिव्वतके साथ विवादग्रस्त है। रेंजके निचले भागमें वाँज, कैल, चीड़ आदिके जंगल हैं।

(ग) **भिलंगणा रेंज**—भागीरथी और अलकनंदाकी उपत्यकाओंके वीचके भूभागमें यह भिलंगणा-उपत्यका रेंज है। यहाँ मुख्यतः चीड़, वाँज जैसे वृक्षोंके जंगल हैं।

(घ) **शिवपुरी रेंज**—यहाँ मुख्यतः साल, केल और चीड़के जंगल हैं—साल और केल तीन चौथाई और वाकीमें देवदार और साल।

१९०७-८ में टेहरीके जंगलोंसे ८३,००० रुपयेकी आय और ४७,००० व्यय हुआ था। यहाँके काष्ठ भागीरथी, जमुना और टौंस द्वारा वहाये जाते हैं।

§१० वनस्पति

ऊंचाईके अनुसार गढ़वालमें भिन्न-भिन्न वृक्षोंके क्षेत्र निम्न प्रकार हैं—

फुट	वृक्ष
४००० तक	शालकी सीमा, हलदू, तूण, साइँ (असीं), धौरी, सांदण
५०००	चीड़की वहुतायत
६०००	देवदारका आरंभ, वाँज, वुराँस (ब्रोंस)
७०००	चीडका अन्त, वाँज, वुराँस, साइप्रसकी वहुतायत
८०००	वाँजका अंत, तिलोंज (कठोर वाँज), पद्म, राघ (रघा)

९०००	तिलोंज, खरसू
१००००	उदुंवर, बुराँस (ब्रोंस), पाँगर, घास-ढलान (बुग्याल) आरंभ
११०००	घासढलान अधिक, पद्म, रघा, थनेर, सैंसला
१२०००	भुर्ज और पद्म
१३०००	वनस्पतिका अभाव

१. **चीड़**—पहाड़में ७ हजार फुटकी ऊँचाईतक चीड़की वहुतायत है। इसका क्षेत्र दक्खिनके पार्श्वपर १६००फुट (धूप अधिक जहाँ लगे) से ७२०० फु है। यह अपने पास किसी वृक्ष-वनस्पतिका रहना पसन्द नहीं करता। इसका अप पत्ता भी न घना और न अधिक हरा होता है, इसलिए यह पर्वतोंकी श्रीवृद्धि न कर सकता। पहाड़के साधारण मकान इसीकी लकड़ीके होते हैं। पानी न पड़े लकड़ी कम मजवूत नहीं होती। रेलोंकी स्लीपरके लिए चीड़की माँग है। इस काष्ठ में लीसा(गोंद, गुग्गुल)ज्यादा होता है, जिससे ताड़पीन तथा दूसरे उपयो पदार्थ निकाले जाते हैं। वरेलीमें इसका कारखाना है। चीड़के वीजको खा जाता है।

२. **बाँज**—चीड़के मुख्य क्षेत्रसे आगे अर्थात् ४००० फुटसे ऊपर बाँज हो है। इसके नाम वाँज, वान, वंज, वजराँठ (नेपाली) वज्रकाष्ठके अपभ्रंश जो इसके अतिकठोर काष्ठके लिए उपयुक्त ही हैं। इसके तथा इसके भाई तिलों की कटाई-चिराईके लिए जवतक विजली या यन्त्रचालित आरोंका उपयोग न होता, तवतक इस मूल्यवान् काष्ठका सदुपयोग करना कठिन है। इसका कोय धातुओंके गलानेके लिए अधिक उपयोगी माना जाता था। वह देरतक जलता है वाँजके मुख्य क्षेत्र ६०००–८००० फुटपर हैं।

३. **तिलोंज**—८००० फुटसे ऊपर वाँजका स्थान तिलोंज लेता है, जो अ अधिक कड़ा है। इसके पत्तोंके मुड़े किनारोंपर काँटे होते हैं। जाड़ोंमें जव कि ही वृक्षोंके हरे पत्ते गिर जाते हैं, तव भी इसके और वाँजके पत्ते हरे रहते हैं। जा चारेका अभाव होनेपर वाँज और तिलोंजके पत्ते पशुओंके भारी अवलंब हैं।

४. **रिंगाल**—ठंडी जगहोंपर यह सरकंडे जैसा वाँस १०,००० फुटतक १ २० फुट ऊँचे झुर्मुटके रूपमें अधिक सीलवाली जगहोंमें होता है। चाँदपुरके पर्ग इसकी डलियाँ, टोकरी आदि वनाई जाती हैं।

५. **बुराँस**—(रोडेंड्रन)—ब्रोंस (अल्मोड़ा), गुराँस (नेपाली) भी इस नाम हैं। इसके अतिरक्त फूल अप्रेल-मईके महीनोंमें कभी-कभी सारे वृक्ष ढाँके वहुत सुन्दर दिखाई पड़ते हैं। इसके फूलकी पकौड़ी वहुत अच्छी होती है

६. पाँगर (हॉर्स चेस्टनट)—१० हजार फुटतक पाई जाती है।

७. उदुंबर (साइकामोर)—भी इसी ऊँचाईपर मिलता है। इसकी लकड़ीको पनखरादपर खरादकर लकड़ीके वर्तन वनाये जाते हैं।

८. राघ (रघा)—यह सूचीपत्रक-जातीय वृक्ष ७५००-११००० फुटपर होता है, दूदातोलीके ऊपरी डांडोंपर और रमनीके समीप इसके भारी जंगल हैं। देखनेमें यह देवदार जैसा मालूम होता है।

९. रौंसला (स्प्रूस)—भी राघकी ही ऊँचाईपर होता है। उक्त दोनों वृक्ष १२० फुटतक ऊँचे और १५ फुट घेरेके मिलते हैं।

१०. थनेर और पदम—भी उसी ऊँचाईपर मिलते हैं।

११. कैल (साइप्रस)—३८ फुट मोटे घेरेवाला कभी कभी देखा गया है। इसका काष्ठ कठोर, चिम्मड़ और टिकाऊ होता है, किन्तु वहुत भारी होनेके कारण इसका नदीमें वहाना मुश्किल है।

१२. चीमा या चिमोली—बुराँसकी ही झाड़ीदार उपजाति है, जिसके लाल ही नहीं पाँडुर, नील शुद्ध-श्वेत आदि रंगोंके भी फूल होते हैं।

१३. भुज (भोजपत्र)—यह १२००० फुटपर होता है। इसकी पतली स्तरवाली छाल कागज़के युगसे पहिले लिखनेके लिए उपयुक्त होती थी। ऊपरी भागोंमें काष्ठकी छतोंके नीचे पानी न जानेके लिए भुर्जपत्रकी तह लगा दी जाती है। यह पानीमें गलती-सड़ती नहीं।

१४. चीला—भुर्जका सहवासी ११,००० फुटपर पाया जाता है और शक्लमें चीड़ जैसा किन्तु चीड़की भाँति तिनपतिया नहीं पँचपतिया होता है।

१५. देवदार—सुलभ वृक्ष नहीं है, यद्यपि पश्चिमी धौलीके तटपर खडक और मलारीके वीच तथा पाँडुकेश्वरके पास काफी वड़े देवदार-वन हैं। पानी, दीमकसे सुरक्षित तथा सुदृढ़ होनेके कारण इसकी वहुत माँग है, विशेषकर मन्दिरोंके द्वार और छतके वनानेके लिए।

१६. फलवृक्ष—सेव, नासपाती, गिलास, खूवानी, आड़ू, अखरोट, आलूबुखारा यहाँ जंगली हालतमें मिलते हैं। वमोरा, वेरू, टिमली, काफल, किलमोड़ा, (किंगोरा), रस्पवेरी, ब्लेकवरी आदि भी जंगलोंमें मिलती हैं। कपासी या भोटिया-बादाम (हेज़ल) भी जंगलका एक फल है।

§११. प्राणि-जगत्

१. वन्यजन्तु—

१. हाथी—भावरमें जंगली हाथी हैं, यद्यपि पहलेकी भांति वहुसंख्यक नह जवतक कोई हाथी नरघातक न हो जाये हाथीका शिकार वर्जित ह खेड़ाके कारण हाथियोंकी संख्या इतनी कम हो गई थी, कि सरकारको वलरामपु वालोंका खेड़ा वंद करना पड़ा।

२. बाघ—भावरमें काफी वाघ हैं। पहाड़में कभी कभी उसे १०० फुटतक पाया गया है। दूदातोली जंगलमें कमसे कम एक जोड़ा वाघ जरूर देख आता है। टेहरीके उत्तरी भागमें भी वाघ मिलता है। चाँदपुर, कंदरस्यूँ दूदातोली इसके वासस्थान हैं, किन्तु कभी कभी तुंगनाथ, केदारनाथतक, उसे दे गया है।

३. चीता (बघेरा)—पश्चिमी टेहरीमें चीता बहुत पाया जाता है। गढ़व जिलेमें भी वह वहुत मिलता है। वाघ या बघेरा मनुष्यपर तभी आक्रमण क है, जवकि वह नरभक्षक हो जाता है। बघेरा कुत्तोंका भारी शत्रु है।

४. बर्फानी चीता (ज़िक)—यह वर्फानी स्थानोंपर ही मिलता है।

५. बिल्लियां—यहाँ कई तरहकी हैं, जिनमें गंधमार्जार भी एक है। इस नाभि-कस्तूरी भी कड़ी गंधवाली होती है।

६. लकड़बग्घा (चरक)—यह और भेड़िया पहाड़में दुर्लभ जन्तु हैं।

७. मैदानी रीछ—भावर और नीचेके पहाड़ोंमें मिलता है।

८. हिमालीय काला रीछ—३००० फुटसे ऊपर मिलता है, यद्यपि जाड़ों कभी कभी वह भावरतक चला जाता है। यह खतरनाक है, और मिलनेपर आदमी को झिझोड़ डालता है। जाड़ोंमें यह दीर्घ निद्रा लेता है, और वरसातमें इसे अधिक देखा जाता है। मँडुआका यह वड़ा शत्रु है। कभी-कभी यह ढोरों भेड़-वकरियोंको भी मारता है।

९. लाल रीछ—टेहरी जिलेमें पाया जाता है। यह वड़ा भीरु जन्तु और घने जंगलोंमें वहुत ऊँचाईपर रहता है। जाड़ोंमें यह भी किसी दुर्गम गु छमासी नींद लेता है।

१०. कोक (कोकी) या जंगली कुत्ते सारे गढ़वालमें विशेषकर पि उपत्यका और दूदातोलीमें पाये जाते हैं। यह झुंडमें रहते हैं, ढोरों और वकरियोंपर एक साथ टूट पड़ते हैं।

११. **छतरैला (पाइमार्टन)**—छोटे शिकारोंका यह शत्रु है, जिस तरह कि ऊद-विलाव मछलियोंका। ये दोनों जन्तु यहाँ पाये जाते हैं।

१२. **पहाड़ी स्यार**—इसका छाला वहुत नरम और घना होता है।

१३. **वानर**—हिमालयमें भी वानरों (लंगूरों तथा ललमुंहों) का राज है। यह फल और फसलको भारी हानि पहुँचा रहे हैं। लोग त्राहि-त्राहि करते हैं, तो भी हनुमानजीका नाम सुनकर कुछ नहीं करना चाहते।

१४. **मृग**—

(१) **साँभर या जड़ाव**—यह भावरमें भी मिलता है, और पहाड़में भी १०,००० फुटतक। पहाड़ी साँभर मोटाई और सींग दोनोंमें भावरवालेसे अधिक विशाल होता है। अत्यंत घने जंगलोंमें रहनेके कारण इसका शिकार करना आसान नहीं है। तुंगनाथ, देवरीताल, चोपता, रकसी, वासुकी इसके रहनेके स्थान हैं।

(२) **चीतल**—वहुत मिलता है, किन्तु निम्न पहाड़ोंमें ही ६०, ६० के झुंडमें देखा जाता है।

(३) **गोन और पाढ़ा**—यह दोनों भावरमें नदियोंके किनारे पाये जाते हैं, इनमें गोनकी जाति प्रायः नष्ट हो चुकी है।

(४) **काकड़**—यह तीन फुटका छोटा मृग भूँकू-मृग भी कहलाता है, क्योंकि संध्या-सवेरे इसकी कुत्ते जैसी आवाज सुनाई पड़ती है। इसके ऊपरी जवड़ेमें खाँग होती है, जिससे वह आदमीको घायल कर सकता है।

(५) **कस्तूरा**—यह ८००० फुटसे नीचे शायद ही कभी मिलता है। इसके रोम मोटे, रूखे और भिदुर होते हैं, पिछले पैर अगलोंसे वड़े होते हैं। नर-मादा दोनों शृंगहीन होते हैं, किन्तु नरके ऊपरी जवड़ेमें प्रायः ३ इंच लंबी पतली खांग होती है। मृग-नाभि नरकी नाभिके पास ग्रन्थि रूपमें मिलती है। माणा, नीतीके डांडे इसके आवास हैं।

(६) **गुराल**—यह ११००० फुट तक पाया जाता है। यह तीनचारके गिरोहमें देवदार और राघाकी वहुत घनी ढलानोंमें रहता है। सींगें इसकी प्रायः छ इंच लंबी होती हैं।

(७) **बढ़ाल**—नीती घाटा या दूसरे स्थानोंमें १००००—१६००० फुटपर यह जंगली भेड़ नंगी घासवाले-स्थानोंमें रहती है।

(८) **सरा**—यह गुरालसे कुछ वड़ा जानवर घने जंगलोंसे ढँके दुर्गम चट्टानोंवाले स्थानोंमें रहता है। उतराईमें भी यह बड़ी तेजीसे छलाँगें मारता है।

(९) थर—७०००—१२००० फुटपर यह सुन्दर मृग रहता है। नर सींग १३,१४ इंच लंबी होती हैं। खरथर डील और सींग दोनोंमें छोटा और नीचे उन्नतांशोंमें रहता है।

१०–सूअर—वनैला सूअर १०००० फुटतक अधिकतर बाँजके जंगलों रहता है।

२. पक्षी—

गढ़वालमें कुमाऊँकी भाँति ही वहुत तरहके पक्षी पाये जाते हैं। प्रत्येक जाति पक्षी अपनी रुचिकी शीतलतावाली ऊंचाईको पसंद करता है। सफेद गालवा वुलवुल ७००० फुट तक आम मिलता है।

यहाँके कुछ पक्षी हैं—

गृहचटका (गौरैया)		
वुलवुल	मोनाल	८०००–१२००० फुट
कठफोड़ा	लुंगी	१२०००
कोयल	कोकला (पोकरा)	६०००–१००००
तोता	चीर	५०००–१००००
पंडुक	कलिज	६०००
पहाड़ी मैना	चकोर	
कवूतर	प्योडा	
मोर	रामचकोर	
गिद्ध	वाज	

अधिकांश चिड़ियाँ ४०००—६०००० फुटपर रहती हैं।

३. सरीसृप—

गढ़वालमें १० प्रकारके गिरगिट मिलते हैं, कहीं कहीं साँड़ोंकी भरमार है यहाँ विषैले और विषहीन १५ प्रकारके सर्प भी होते हैं। अजगर भावर ही न तुंगनाथके निचले सानुतक पाया गया है। मेंडक भी मिलते हैं।

४. मछलियाँ—

मछलियाँ प्रायः सभी जलाशयोंमें मिलती हैं, और प्रायः सभी लोग मत्स् भोजी हैं। महसिर, करौंत, गैर, कलावाँस, फरकटा, चिलवार साधारण मछलि हैं। सभी नदियाँ राज-संपत्ति हैं, किन्तु लोगोंको फटियाला, पिंजड़ा-जालसे मछ मारनेका अधिकार है। सरकारने कई सालोंसे टेहरी और गढ़वालमें रोहू (रोहि पालनेका प्रयत्न किया। गोहना तालाव और ऊपर विड़ही नदीमें २०,००० ब

कितनेही साल पहिले डाले गये थे। इसी तरह टेहरीमें अस्सी और हनुमानगंगामें भी रोहूके चल्हवे डाले गये। जलको विषावत करने, बारुद-प्रयोग, रातको प्रकाशकी सहायता, जाल आदिके प्रयोग द्वारा मछली विना आज्ञाके नहीं मारी जा सकती। विडही गंगामें रोहूकी रक्षाके लिए साधारण जाल या धार बाँधकर मछली मारना भी निषिद्ध है। अप्रैलसे जुलाईतक मछलियाँ नीचेसे ऊपरकी ओर चढ़ती हैं, अंडोंके देनेका भी यही समय है। इस वक्त मछलियोंकी रक्षा उनकी वृद्धिके लिए आवश्यक है।

अध्याय २

इतिहास

(प्रदेश)—गढ़वाल नाम वहुत अर्वाचीन है, जो कि वहुराजकता-कालमें ५२ ठाकुरोंके गढ़ोंके नामसे पड़ा है। ग्यारहवीं सदीमें, जव कि अलकनंदा और भागीरथीके ऊपरी भाग पश्चिमी-तिब्वत (गूगे)के शासकोंके अधीन थे, गर-देशसे शायद गरतोक नहीं वल्कि गढवालके गढ़ अभिप्रेत थे। ग्यारहवीं सदीमें वहुराजकता यहां थी, इसमें संदेह नहीं; किंतु, यह नाम गढ़वालके अपने उल्लेखोंसे उतना पुराना नहीं जान पड़ता, "जव पंवार-वंशज महाराजा अजयपालने गढ़वालके सव ठकुरी राजाओं और सर्दारोंको विजय कर उनके राज्योंको एक साथ मिलाकर एक सुविस्तीर्ण राज्य स्थापित किया, तव इस प्रदेशका नाम अधिक गढ़ोंके होनेके कारण गढ़वाल रखा गया। गढ़वाल नाम इस देशका. . . . १५०० से १५१५ ई०के वीच रखा जाना पाया जाता है। तवसे यह देश गढ़वाल नामसे प्रसिद्ध हुआ।"[1]

वैसे विस्तृत हिमाचलके पांच खंड किसी प्राचीन परंपराके अनुसार निम्न प्रकार हैं—[2]

खण्डाः पंच हिमालयस्य कथिता नेपाल-कूर्माचलौ।
केदारोऽथ जलन्धरोऽथ रुचिरः कश्मीर-संज्ञोऽन्तिमः॥

अर्थात्—नेपाल, कूर्माचल (कुमाऊं), केदार (गढ़वाल), जलंधर (शिमला-कांगड़ा) और कश्मीर, किंतु वर्तमानकी भांति कालीको कभी नेपालकी सीमा माना गया, यह संदिग्ध है, वल्कि नेपालकी परंपरा, जो भी वहुत पुरानी नहीं हो सकती, वतलाती है[3]—

पूर्वस्यां कौशिकी पुण्या सर्वपापविनाशनी।
गंगा त्रिशूलगंगाख्या प्रतीच्यां दिशि संस्थिता॥

---

[1] गढ़वालका इतिहास, पृ० २ [2] वहीं, पृ० १ पर उद्धृत

[3] पृथ्वीनारायण शाह, पृ० ७ टि० स्कन्दपुराणान्तर्गत नेपाल-महात्म्य, पृ०१०२ (प्रभाकरी कंपनी, बनारस)

उत्तरस्यां दिशि तथा सीमा शिवपुरी मता।
दक्षिणस्यां दिशि नदी पवित्रा शीतलोदका॥
एतन्मध्ये महापुण्यं नेपालं क्षेत्रमीरितम्।

इससे स्पष्ट है, कि उस समय त्रिशूली गंगासे पश्चिम नेपाल नहीं माना जाता था। आगे अशोकचल्लके अभिलेखसे मालूम होता है, कि बारहवीं सदीमें दुलू नेपालमें नहीं माना जाता था। इस प्रकार हिमालयके उपरोक्त पांच खंडोंको मोटी तौरसे ही लेना चाहिए। तो भी, जहां तक गढ़वालका संबंध है, वह "केदारखंड"के नामसे काफी समयसे प्रसिद्ध था।

स्कंदपुराण (केदारखंड) अध्याय ४०के अनुसार केदारखंडका विस्तार है—

पंचाशद् योजनायामं त्रिंशद्-योजनविस्तृतम्।
इदं वै स्वर्ग-गमनं न पृथ्वीं तां महाविभो॥२७॥
गंगाद्वारमर्यादं श्वेतान्तं वरवर्णिनि।
तमसातटतः पूर्वभागे बौद्धाचलं शुभम्॥२८॥
केदार-मंडलं ख्यातं भूम्यास् तद् भिन्नकं स्थलम्।
वात्सल्यात् तव देवेशि कथितं देशमुत्तमम्॥२९॥

इससे पूर्वमें बौद्ध गिरिसे लेकर पश्चिममें तमसा (टौंस) नदी तक केदारखंड माना जाता था। टौंस जमुनाकी एक शाखा आज भी जौनसारकी पश्चिमी सीमा है, जौनसारका ही एक अंश जौनपुर-इलाका टेहरी-गढ़वालका आज भी अंग है। बौद्धाचल बौद्धप्रधानताके युगका अवशेष है, जो अनेक बौद्ध चिन्होंकी भांति गढ़वालसे लुप्त हो गया है; किंतु, इसका उल्लेख कत्यूरी ताम्र-पत्रमें भी आया है और वह कुमाऊंकी सीमापर ही रहा होगा। उत्तरमें श्वेतांत या हिम-श्वेत शिखरोंकी सीमा स्पष्ट ही है, यदि उत्तर पश्चिमको लिया जाये, तो कनौर (किन्नर) देशकी सीमा गढ़वाल-टेहरीसे लगती है। गंगा-भागीरथी और सतलजकी शाखा वस्पाके बीच एक ही पर्वत-श्रेणी है, जो किन्नरको गढ़वालसे अलग करती है, और जो दोनों देशोंके बीच यातायातमें कभी बाधक नहीं हुई। आज भी गढ़वाली ब्राह्मण जोतिसी इसी पर्वतश्रेणीको पारकर वस्पा-उपत्यकाके अपने अर्ध-बौद्ध यजमानोंके पास पहुंचते हैं।

गढ़वालकी मोटी सीमा भाषा द्वारा ही नहीं प्रकृतिकी ओरसे भी निश्चित है। हिमालयमें गंगाका रूप लेनेवाली सारी जल-प्रणालियां जिस भूभागमें प्रवाहित होती हैं, वही गढ़वाल (केदारखंड) है।

§१. प्रागैतिहासिक काल

१. किन्नर-किरात-नाग

गढ़वाल-कुमाऊंमें—और पश्चिमी हिमालयका भी यही हाल है—आ जिन जातीय तत्त्वोंको देखा जाता है, वह पहिले यहाँ मौजूद नहीं थे। कुमा गढ़वाल और किन्नरके तिव्वती सीमान्तोंपर जो हमारे भोटांतिक भाई आ मंगोल-मुख मुद्रामें ही नहीं कितने ही भाषामें भी मिश्रित या शुद्ध रूपमें तिव्ब पाये जाते हैं। यह अवस्था वहां छठीं शताव्दी तक नहीं थी। सातवीं-आठ सदीमें तिव्वती लोग पश्चिमी हिमालयमें फैले, लदाख और वल्तिस्तानमें तिव्वती भाषाका प्रसार इसी समय हुआ। यह प्रभाव भाषा और मुखाकृति इतना पड़ा, कि आज इस भूभागको "छोटा तिव्वत" माना जाता है। हम आ वतलाएंगे, कि तिव्वती (भोट) जातिके पश्चिमाभिमुख प्रसारके वहुत पहिले गिलगित और कराकुरम तकका प्रदेश खश-दरद लोगोंका था, जो दोनों एक वंशके थे। ईसापूर्व द्वितीय सहस्राव्दीके प्रारंभमें खश लोग पूर्वी मध्य-एसि (काशगर, खोतान)की ओरसे हिमालयमें आये। उनसे पीछे वैदिक आर्य उत्त भारतके मैदानों (कुरु-पंचाल)से हिमालयमें पहुंचे। इन दोनों जातियोंके आने वहुत पहिले एक जाति हिमाचलमें रहती थी, जिसे हम किन्नर-किरात जा कह सकते हैं। किन्नरों और किरातोंके पारस्परिक सम्वन्धको ठीकसे वतला आसान नहीं है। किन्नरोंका देश एक समय हिमाचलमें गंगाके पनढरसे पश्चिममें सत लज और चंद्रभागाके पनढर तक फैला हुआ था और किरात गंगाके पनढरकेपू छोरको लिये सारे नेपाल तक थे। १८वीं सदीमें कोसीसे पूर्वमें वसनेवाली जाति राई, लिम्वू, याखा, किरात कही जाती थीं। गोरखा-जुमलाके वीचके प्रधान निवा मगर और गुरुंग जातियोंको यद्यपि किरातमें नहीं गिना जाता था, किन्तु मानवतत्त्व दृष्टिसे ये भी उसी विशाल किरात जातिका अंग थी। कालीके पश्चिमी तट (अस्कोटमें) अव भी राजी (राजकिरात) उसी किरात जातिके अवशेष हैं।

किन्नर (मलाणी) और किरात (राजी) दोनों भाषाओंमें संस्कृतज औ तिव्वती शव्दोंकी अधिकता पाई जाती है; किन्तु, साथ ही उनमें उभय-भिन्न ए तीसरी भाषा भी तलछटके रूपमें विद्यमान है।

(१) किरात (राजी) भाषा——

राजी लोग अस्कोट (अलमोड़ा)में वड़ी पिछड़ी अवस्थामें रहते हैं उनकी भाषाके कुछ नमूने देखिए——

(क) क्रियासूची[1]—

आयो—जोत (कि०)
आयो चि वियन्—जोत आये (कि०)
ईर—गा (भविष्य)
ईस—सो जा (कि०)
ईस जियर कै—सो जाते हैं (कि०)
कानि—आया (,,)
किन—होओ (,,)
कुने-चि—हो (,,)
कै (पुवाँन)—हो गया (,,)
कै हिन—हो गई (,,)
खोअन कै—खुल गया (,,)
गा-हिन—जायेंगे (,,)
गुन—हैं (,,)
गुनी—करैं (,,)
घत—जा (,,)
चि—भूतकालिक प्रत्यय (,,)
चिकुने—हो (,,)
चि-गुनी—क्या करैगा (,,)
चि-जानी—खाया (,,)
चि-भीरे—आये हैं (कि० ति०).
छुजी—बैठो (कि० ति०)
छै—बैठा (कि० ति०)
जा—खाना (ति०)
जानी—खा लिया (,,)
जारी। ति—खायेगा (,,)
जावरे—खाता हूँ (,,)
जिगर—जात (कि०)

---

[1] "कुमाऊँका इतिहास" पृ० ५२०-२३ [यहाँ संकेत हैं—कि० किरात, किन्० किन्नर, ति० तिब्बती, हि० हिन्दी आर्य, त० तमिल (द्रविड़)]

ठाडी—खडा (हि०)
ता—लो (कि०)
तारा कौनी—हल्ला मत कर
तु ओर—पीता हूं (ति०)
तुङ—पी (ति०)
तुवाँ बोये—पीते हो (ति०)
पीय कुनास—आ रहा है (कि०)
पुवाँन-कै—हो गई (कि०)
वयाँ—दो (,,)
वये—देते (,,)
वयेर—देवे (,,)
वियन—आये (कि० किन्०)
वीयर—आता हूं (कि०)
भैकर—मांगते हैं (कि०)
यकी—उठ (ति०)
लाप—लाओ (कि०)
लो—आ (कि०)
सीयन—मरना, मर जायेगा (ति०)
स्यकारलम्—पहचानते हैं (कि०)
हना पौस्याँ—मंगाया (कि०)
हनावनी—मरता है तू (,,)
हरै कोकि—पहचानते हो (,,)
हानोन्—मारूँ (हि०)
हियन—होना (हि०)
ह्वैस्पकौनी—पहिचान (कि०)

(ख) शब्दसूची—

कपाअख—कपास (हि०)
खोत—अच्छा (कि०)
गजिरौ—रातमें (,,)
गरा—धान (,,)
घुमड़—गेहूं (हि०)

चअना—चना (,,)
चंजि—छोटा (ति०)
चीहणा—चीना (हि०)
तिलड़ू—तिल (,,)
ती—पानी (कि०, किन्०, मलाणी)
दरो—चावल (कि०)
देव—वर्षा (हि०)
नामक—नाम (हि०)
नीक—अच्छा (हि०)
पया—लड़का (कि०)
पित्तअ—लोबिया (हि०?)
वडहर—भटमास (हि०)
वरी—वड़ी (हि०)
वाघो—वाघ (हि०)
भाट्ट—ब्राह्मण (,,)
भात्त—भाजन (,,)
मँढुवा—मँडुवा (,,)
माँअख—माष (,,)
माखूर—मसूर (,,)
मांदीदरो—सवाँ
म्हे—आग (ति०)
याङू—राह (ति०)
हलडू—हल (हि०)

(ग) अव्यय-सर्वनाम—

अगरा—देरी
अतर—अब
आखू—कौन (कि०)
इचे—इतने
कताई—किसलिए (हि०)
किनाची—कब
किनौ—कब

कीले—कल
कीलेक
कोता—वहां
ग्वथा—कहां
(थैला चिगुनिर—क्या करता है)
च्या—क्यों
जीवक—परसों

ता—मत
दे—आज (ति०)
ना—में (त०)
नी—तुम (त०)
भायर—वाहर (हि०)
मां—से (कि०)
हंकताई—क्यों (,,)
हंक—हां ,, (,,)
हा—क्या (,,)
हां—क्या (,,)
,, —क्या (,,)

हां—नहीं (कि०)
हांकु चि—क्यों (,,)
हित—यहाँ (हि०)
हियन—कव (कि०)

(घ) दिननाम—

दे—रविवार
किलेक—सोमवार
नीव—मंगल
क़ुंव—वुध

पारीख—वृहस्पति
पाँच—शुक्र
खात्रव—शनिवार

(ङ) संख्या—

ग—एक
नी—दो (ति०)
खुङ्—तीन (ति०)
पारी—चार (हि०)
पांच—पांच (हि०)
तुरकौ—छ (कि०)

खात्त—सात (हि०)
आट्ठ—आठ (,,)
नौव—नौ (,,)
दख—दस (,,)
ड़ाक—सौ

(च) कुछ वाक्य—

हित ला—यहाँ आ
कोता घत्—वहां जा
ग्वथा मां चिपीयन—कहां से आये ?
ग्वथा जिगार—कहां जाते हो ?
ना वयां—मुझे दो (त०, किन्०)
दे हां-चिजानी—आज क्या खाया ?

निम् क्यनर—तुम्हें देता हूँ (त०, कि०)
हां वया—नहीं देता (कि०, किन्०)
गाजिरौ कै खोअन—रात खुल गई
ती लापअ—पानी लाओ
चु जावरे—खाता हूं
कै इस् जियर—सो जाते हैं

भात्त जा—भात खाओ (हि०, ति०)
भात्त कै जानी—भात खा लिया
ती तुङ—पानी पी (किन्०, ति०)
ठाडी किन—खडा
नीक चिकूने—अच्छे हो
म्हे वया—आग दो

निङ पया किनौ हियन—तेरा लड़का कब हुआ ?
ना वरी गुन—हम बड़े हैं
नी चीचंजी गुन—तुम छोटे हो
नीं हंक ची कर—तुम क्या मांगते हो
हंक हां चिगा—क्यों नहीं आते
निङ मेताङ कुनीले—तेरी स्त्री है

नी सियन्—तू मरैगा (त० ति०)
होना चि गुनिर—मारूं तो क्या करेगा
नी कुच्या इनावनी—क्यों मारता है
भायर भाट्ट पयिकुनास—बाहर ब्रह्मण आ रहा है
हम् वयेर—क्या देवे (किन्०)
इसे हंक तै हना पौस्याँ—इन्होंने क्या मँगाया ?
इचे कताई हना पौस्याँ—इतना किसके लिए मँगाया ?
किना चि वियर—कब आवेगा ?
इम् घैला चि गुनीर—क्या करता है ?
आखू वियन्—कौन आया ?
आखू कानि—कौन आया ?
निङ हा नामक—तेरा क्या नाम (त०, कि०, हि०)
अतर अगरा कै हिन कि लेक गहिन—अब देर हो गई, कल जावेंगे
नी चे हरैकोकि—तुम पहिचानते हो
गजिरौ ता घत् वाघो ति जारी—रात को बाहर मत जा, बाघ खायेगा
देवलागो होनेर, भीतर ला—वर्षा हो रही है, भीतर आ
नी खोत छुजी—अच्छी तरह बैठो

राजी (राज-किरात)-भाषाकी कोई कथा या गीत हमारे सामने नहीं है, इसलिए हम यह नहीं कह सकते, कि इस भाषामें कितने प्रतिशत हिंदू-आर्य, तिब्बती और किराती भाषाके शब्द हैं। संख्यावाची ११ शब्दोंमें दो—नी, खुङ(सुङ, सुम्) और म्हे-मे (आग) तिब्बती, ती (जल) किन्नर और किरात भाषाओंमें समान हैं। धातुओंमें किराती वीयन (आता है) और किन्नर वीतोक (आयेगा) एकार्थ-वाची है। सँभव है राजी भाषाके विस्तृत संग्रहमें किन्नर-किरातके और भी समान शब्द मिलें। सर्वनामोंमें ना (मैं), नी (तुम), तामिल भाषामें

मिलते हैं। यह आश्चर्य करने की बात नहीं, क्योंकि उत्तरी भारतकी भाषाओं पिल्ला, मीन आदि कितने ही द्रविड़ भाषाके शब्द मौजूद हैं, और मानवत वेत्ताओंके अनुसार उत्तर-प्रदेश, विहारके लोगोंमें आर्यद्रविड़ शरीरलक्षण भी

(२) किन्नर-भाषा—

किन्नर, मलाणी[1] और किरात एक ही मूल भाषाकी शाखायें हैं, यह ऊप कितने ही उदाहरणोंसे मालूम होगा। यद्यपि इसका यह अर्थ नहीं, कि किरा भाषाने हिन्दू-आर्य और तिव्वती भाषासे काफी लिया। तुलनाके लिए यहाँ किन्नर (कनोरी) भाषाके भी कितने ही शब्द देते हैं।[2]

अग—गुफा
अते—भाई
अपी—दादी
ओरचस—वढ़ई
कङ्—वेटा
कर—वेटा
कर—भेंड़ा
का—अखरोट
कुई—कुत्ता
कुफ—उल्लू
कुम—तकिया
क्यङ—चिनगारी
क्यल्मङ—देवदार
क्युच्—चूहा
खतुच—दुलहा
खलङ—गाय
खस—भेंड़
खो—हरिन
गस—परिधान

गुजेर—मच्छर
गुद—हाथ
गोलिङ—कुदाल
ग्यदुर—अँगीठी
चीसङ—आटा
छङ—वालक
छटोच—टोकरी
छतक—डंस
छतगढ—जलपात
छद—दामाद
छेचस—स्त्री
छे चाच—तरुणी वालिका
जू—वादल
टका—वत्थू
तलङ च—चमड़ा
ठंटी—चवूतरा
ठनङ—वर्फ
डना—टीला
डंवर—देवता

---

[1] मलाणी नगर (कुल्लू)से १०-१२ मील दक्षिण पूर्व है, यहांके निवा भी कनोरी लोगोंकी तरह ती (पानी), ह्लिग्ज (वहिन) बोलते हैं।

[2] विस्तारके लिए देखिए मेरा "किन्नर-देश"

रङ—नदी
खरस—पुरुष
मङ—लोहार
क—चकोर
पलोक्च—मेंडक
शम्—जोंक
—जल (मलाणी भी)
रप्यातच्—चमगादड़
ते० को—परदादा
त—नाना, दादा
तफलच—शिशु
स्—बैल
ओर्ची—वह्नि
च—पात
सरङ—चिमनी
ङ—थोली
ने—मामी
द—भुर्ज
ङ—गाल
शी—बिल्ली
शमिक—बोना
ाच्—धुन
म्—हिम
च—गदहा
ङ—पैर
निङ—बर्तन
रमिक्—मीसना, मसलना
स—मधु
खीर—बकरी
रशा—डंडा
द—छाल

डेखराच—तरुण
मन—मादा
ममा—फूपा
मल—चाँदी
मे-रक—अग्निपाषाण, चकमक
यङ—मक्खी
यालू—गुलाब
रग्—पत्थर
रङ—घोड़ा
रिग्—जूँ
रिम्—खेत
रु—ससुर
रुजा—बूढ़ा
रोच—कस्तूरा (हरिन)
रोन—लोहा
लस्त—कुल्हाड़ी
लान—वायु
लानिङ—लता
लानिक्—काटना
लिम्—कैलू
लोमिक—ओसाना
लीलाच—आँधी
लुम—आँधी
लेमा—गँड़ासा
वन—भाप
वल—शिखर
शग—कंगुनी
शङ—कंकड़
शू—देवता
श्पक—पिस्सू
सखुल—भाथी

बोम—पथ
सावनिक—भूतनी
सुट—खटमल
सोफोक—विच्छू
सोत—जस्ता
सोलिच—पौधा
स्कन—साग
सग—हीर
स्वयो—नर
स्तुकुद—नाक
स्पाच—पौत्र
होङ—कीट
होम—रीछ

किन्नरकी प्राचीन भाषामें शू (सू) देवता-वाचक शब्द है, जिसमें आर्य "महा" लगाकर महासू जौनसारका सबसे वड़ा तथा किन्नरका एक है। गढ़वालके बहुतसे ग्रामोंके नामोंमें सू (धरासू) और स्यूँ शब्द आ जैसे वारहस्यून पर्गनेकी पट्टियोंके नाम हैं—

१. असवल स्यूँ
२. इदवाल स्यूँ
३. कंदवाल स्यूँ
४. कफोल स्यूँ
५. खाट स्यूँ
६. गगवार स्यूँ
७. नांदल स्यूँ
८. नापई स्यूँ
९. पटवा स्यूँ
१०. वंगार स्यूँ
११. वनेल स्यूँ
१२. मन्यार स्यूँ
१३. रावत स्यूँ
१४. सितोन स्यूँ

डाक्टर पातीराम[1]ने स्यूँ को सिंहका अपभ्रंश माना है और श्री शालि वैष्णवने[2] सीमाका। वारहस्यूँ बहुत ही घना आवाद इलाका (२११ वर्ग जनसंख्या ५८१७१) उत्तर और पश्चिममें अलकनंदा तथा दक्षिण और क्रमशः संयुक्त नयार एवं पश्चिमी नयारसे घिरा है। "यहाँके गाँव वड़े और वहुसंख्यक एवं परिश्रमी हैं।[3] गढ़वाल जिलेका मुख्य स्थान पौडी इसी है। स्यूँको किन्नर-किरातका शब्द मानना अधिक युक्तियुक्त मालूम होता

(३) नाग—

हिमालयके आदिम-निवासियोंकी ही वस्तुतः किन्नर, किरात और अलग अलग शाखायें थीं।

ह्वीलरने अपने "भारत-इतिहास"में नागोंके वारेमें लिखा है—

---

[1] Garhwal Ancient and Modern, p. 220.

[2] भूगोल जिला-गढ़वाल, पृ० ३७

[3] Gaz., p. 149.

"गढ़वालमें नागोंका संबंध हम नागपुर और उरगम् पट्टियोंमें पाते हैं। सार्वजनिक परंपरा बतलाती है, कि अलकनंदा-उपत्यकामें नागोंकी बस्तियाँ थीं। पांडुकेश्वरमें शेषनागकी पूजा की जाती है। रतगाँवमें भेकलनाग, तलोरमें ंगलनाग, मरगाँवमें वनपुरनाग, जेलम (नीती)में लोहंविया नाग, नागनाथ (नागपुर)में पुष्करनाग पूजे जाते हैं।" पौड़ीके पास नागदेवकी पूजा होती है। बहुतसे गाँवोंमें यहाँ "नागराज-तोक" नागोंके मंदिरोंके ही अवशेष हैं। नागपुर, दसोली और पैनखंडा नागोंके गढ़ थे—उरगम् (पैनखंडा)में बोरंचा नाग, नागपुरमें वासुकि और पुष्कर नाग और दसोलीमें तक्षक नागकी प्रतिष्ठा अब भी कम नहीं है। प्रागार्यकालीन नागोंके बहुतसे गढ़ भारतके और भागों (राजगृह आदि)में मिलते हैं, हो सकता है हिमालयके इस भागके कितने ही पुराने गढ़ इन्हीं नागोंके रहे हों।

(४) किरात-भूमि—

ताल्मीने भी जमुनासे शारदा (काली) तकके प्रदेश (गढ़वाल-कुमाऊँ)को किरातोंका निवास तथा तंगण प्रदेश कहा है। तंगण या टंगण प्रदेश अपनी छोटी जातिके मजबूत टांघनों (घोड़ों)के कारण बहुत प्रसिद्ध था। आज भी बदरीनाथके रास्तेपर टंगणी नामकी चट्टी चमोलीसे १८ मील ऊपर तथा जोशीमठसे १५ मील नीचे मौजूद है; लेकिन, ये तंगण किरात नहीं खश थे।

केदारखंड खसमंडल बननेसे पूर्व किरातमंडल था, यह केदारखंडके निम्न श्लोकों (अध्याय २०६)से भी पता लगता है—

तस्मिन्नेव महाक्षेत्रे हिमवदाश्रमे मुनेः।
वशिष्ठो मुनिशार्दूलोऽरुंधत्या च समन्वितः ॥१॥
ययौ महादेवमनाः संयतात्मा दृढ़व्रतः।
चकार वसतिं तत्र भिल्लानाँ निचयैर्युतः ॥२॥
रेमे सोऽपि किरातैश्च सन्ध्यास्नानपराङ्मुखः।
मृगमांसाशनो नित्यं कृष्णकंबल-कंचुकः ॥४॥

महाभारत (वनपर्व, अध्याय १४०)में भी किरात-तंगण निवासका वर्णन—

किराततंगणाकीर्णं पुलिन्द-शत-संकुलम्।
हिमवत्यवरे जुष्टं पिकाश्चर्य-समाकुलम् ॥२५॥
सुबाहुश्चापिता दृष्ट्वा पूजया प्रतिगृह्णतः।
विषयान्ते कुलिन्दानामीश्वर-प्रीतिपूर्वकम् ॥२६॥

हिमवान्‌के इन किरातोंका परिचय महाकवि कालिदास (चौथी सदी भी था। शायद उन्हें भारतकी सबसे ऊँची चोटी नन्दादेवीकी निवासिनी पार्वतीका पता था, और कुमारके संभव (जन्म)को उन्होंने यहीं माना उन्होंने किरातोंका वहाँ स्मरण किया है (कुमार संभव सर्ग १)—

इदं तुषारस्रुतिधौतरक्तं यस्मिन्न दृष्ट्वा पिहितद्विपानाम्
विदन्ति मार्गं नखरन्ध्रमुक्तैर्मुक्ताफलैः केशरिणां किराताः ॥
भागीरथीनिर्झरसीकराणां वोढा मुहुः कम्पित-देवदारु
यद्वायुरान्विष्ट मृगैः किरातैरासेव्यते भिन्न-शिखंडवर्हः ॥

२. खस

ऋग्वेदकालीन पितापुत्र पंचालराज दिवोदास-सुदास्‌का शंवर आदि असुर-राजाओंके साथ युद्ध हुआ था, वह हिमाचलके इसी किन्नर-किरात-नाग-जातिके सरदार थे, किन्तु यह संघर्ष भीतरी हिमालयमें न होकर (रुहेलखंड) से मिलते पहाड़ी इलाकेमें हुए होंगे। पहाड़में वसनेके लिए आर्य बहुत पीछे आये। उनके आनेसे पहिले ही उन्हींके भाईवंद खश (मध्य-एसियासे पहाड़ों ही पहाड़ आकर गिल्गितसे काली नदी और पीछे के पूर्वी सीमान्त तक फैल गये। "आज भी खस पहाड़में अपनी संख्याके बहुत महत्त्व रखते हैं।"[1]

(१) संस्कृतमें खस—

"केदारे खसमंडले"की उक्तिके अनुसार केदारखंड खसदेशका पर्याय गंगाकी मुख्यधारा यद्यपि भागीरथीको माना जाता है, किन्तु जलकी मात्रा लंबाईको देखनेपर अलकनंदा और उसकी भी ऊपरी धारा सरस्वती—जो जोतसे निकलती है—को गंगा मानना होगा। भारतकी सबसे पुनीत उद्‌गम-स्थान होनेसे केदारखंडकी महिमा अधिक होनी ही चाहिए, इतिहासकी ठोस सामग्री मूर्ति, अभिलेख आदि हमें चौथी सदीसे आगे नहीं जाते। भाषाकी दृष्टिसे गढ़वाल और कुमाऊंकी आजकी भिन्नता काफी मालूम होती है, और इसी तरह इन दोनों देशोंका राजनीतिक विलगाव भी है, किन्तु वह भेद खस क्या कत्यूरी कालमें भी उतना नहीं रहा होगा। तो मानना पड़ेगा कि कूर्माचल-केदारखंडमें केवल शकों, गुप्तों, भोटों, रियोंके शासनकालमें ही राजनीतिक एकता रही होगी। पीछे गढ़वालमें

---

[1] Almora Gaz., p. 112.

शने इस एकताको कायम किया। बाकी समयोंमें सदा यह देश छोटी-छोटी कुराइयोंमें बंटा रहा होगा। खसोंकी निवासभूमि बहुत विशाल रही है, जिसमें किसी समय काशगर (खसगिरि) से लेकर प्रायः सारा हिमालय सम्मिलित रहा।

महाभारतमें युधिष्ठिरके यज्ञमें भेंट लेकर आनेवालोंमें खशोंका उल्लेख है[1]—

मेरुमंदरयोर् मध्ये शैलोदाम् अभितो नदीम्।
एते कीचकवेणूनां छायां रम्यामुपासते ॥२॥
खसा एकासना ह्यर्हाः प्रदरा दीर्घ-वेणवः।
पारदाश्च कुलिन्दाश्च तंगणाः परतंगणाः ॥३॥
तद् वै पिपीलकं नाम उद्धृतं यत् पिपीलिकैः।
जातरूपं द्रौणमेयम् अहार्षुः पुंजशो नृपाः ॥४॥
पार्वतीयं बलिं चान्यं आहृत्य प्रणताः स्थिताः।
अजातशत्रोर्नृपतेर् द्वारि तिष्ठन्ति वारिताः ॥

मेरु और मंदर (दोनों पर्वतों) के बीच शैलोदा नदीके किनारे कीचक (नामक) ांसोंकी रम्य छायामें खस, एकासन, अर्ह, प्रदर, दीर्घवेणु, पारद, कुलिंद, तंगण रतंगण लोग बसते हैं, ये राजा (युधिष्ठिर के यज्ञमें) पिपीलिकाओं (चींटियों) ारा निकाले पिपीलक नामक सुवर्णको द्रोण-द्रोण भर पुंजशः .... ार्वतीय उपायनोंको लिए शत्रुहीन राजा (युधिष्ठिर) के द्वारको घेरे प्रणत खड़े ं।]

आज भी खस लोग इसी नामसे काँगड़ासे नेपाल तक पुकारे जाते हैं। कुलिन्द, ुनेत्, कनेत शिम्ला और कुल्लूके पहाड़ोंमें खसोंके ही भेद माने जाते हैं। तंगण ाति और नगरका नाम कत्यूरी अभिलेखोंमें आया है। आज भी गढ़वाल और ल्मोड़ाके राजपूतोंकी एक जाति "टंगणिया"[2] है। पुरानी तंगण और परतंगण ाति अलकनंदा तथा मंदाकिनीकी ऊपरी उपत्यकाओंमें रहती थी, जहां कि हले किरातोंका प्राधान्य था।

महाभारतके युद्धमें खश लोग सात्यकि (कौरवपक्षीय) के साथ लड़े थे[3]। नु[4]ने खशोंको क्षत्रियसे शूद्र हो जानेका फतवा देते कहा है—

---

[1] सभापर्व, अध्याय ५२

[2] देखो मेरा "कुमाऊँ" परिशिष्ट ४

[3] महाभारत द्रोणपर्व १२१/४३, उद्योगपर्व १६०/१०३

[4] मनुस्मृति अध्याय १०

शनकैस्तु क्रियालोपाद् इमाः क्षत्रिय-जातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणाऽदर्शनेन च ॥४३॥
पौंड्रकाश्चौड्र-द्रविड़ाः कम्बोजा यवनाः शकाः ।
पारदाः पह्लवाः चीनाः किराता दरदाः खशा ॥४४॥

(पौंड्र, ओड्र, द्रविड़, कंवोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन किरात, दरद खश यह क्षत्रियजातियां संसारमें क्रिया-भ्रष्ट होने तथा ब्राह्मणोंका दर्शन न से धीरे-धीरे शूद्र हो गईं।)

यद्यपि यहां तथा अन्यत्र भी तंगणों, कुलिदों, दरदोंको खशोंसे अलग गि गया है, किंतु वस्तुतः ये भी विशाल खश-जातिके ही अंग थे।

महाभारतमें खश आदि ऐतिहासिक जातियोंकी उत्पत्तिके वारे में वत गया है, कि जव वशिष्टकी गाय नंदिनीको उनके प्रतिद्वन्दी गाधिसुत विश्वामि जवर्दस्ती ले जाना चाहा, तो नंदिनीने अपनी रक्षाके लिए इन जातियोंको भिन्न-भिन्न अंगोंसे उत्पन्न किया—

असृजत् पल्लवान् पुच्छात् प्रस्नवाद् द्रविड़ान् शकान् ।
योनिदेशाच्च यवनान् शकृतः शवरान् वहून् ॥३५॥
मूत्रतश्चासृजत् कांश्चित् शवरांश्चैव पार्श्वतः ।
पौंड्रान् किरातान् यवनान् सिंहलान् वर्वरान् खसान्
चिवुकाच्च पुलिंदांश्च चीनान्, हूणान् सकेरलान् ।
ससर्ज फेनतः सा गौः म्लेच्छान् वहुविधानपि ॥३७॥

—आदिपर्व अध्याय

अन्यत्र भी—

गंधारान् मद्रकान्, मत्स्यान् त्रिगर्तान् तंगणान् खशान् ॥१

—कर्णपर्व, अध्या

और कल्किपुराणमें—

खश— काम्वोजकान् सर्वान् शवरान् वर्वरानपि ॥३२॥
मरुः खशैश्च काम्वोजैः युयुधे भीमविक्रमैः ।
देवापिः समरे चीनैर्वर्वरैः तंगणैरपि ॥४१॥

—अध्या

इन उद्धरणोंसे पता लगता है, कि ईसाकी आसन्न-पूर्व और पश्चा शताब्दियोंमें हमारे इतिहास-भूगोलके जानकारोंको खशोंका परिचय

(२) रोमक-लेखक और खस—

रोमक इतिहासकार प्लीनी (७९ ई०)ने खशोंके बारेमें लिखा है—"सिंधु Indus) और जमुना (Jomanes) के बीचकी पहाड़ी, जातियां खश (Cesi) ौर क्षत्रियाणी (खत्री Cetriboni) हैं, जो जंगलोंमें रहती हैं।"

ऐसे और उद्धरणोंपर भी विचार करते हुए अट्किन्सन्ने लिखा है [1]—'प्लीनीके अनुसार उस समय खश लोग अपने वर्तमान निवास कुमाऊं और नेपालसे हुत पश्चिममें रहते थे, और टौंस तथा शारदा (काली) के बीचकी भूमि (गढ़ाल-कुमाऊं) में तंगण और किरात रहते थे।"

तालमी (८७–१६५ ई०) को उद्धृत करके अट्किन्सनने फिर लिखा है [2]—

"वह (१) दर्दोंको सिन्धुके उद्गमके पास और (२) कस्पेरोई (Kaspeaioi) को झेलम, रावी, चनावके उद्गमोंके पास रखता है, (३) कुलिद यास-सतलज—जमुना-गंगाके उद्गमोंके पास रहते थे, जिनका देश कुलिन्द्रिन Kulindrine) कहलाता था। इनमेंसे पहिले (दर्द) अस्तोर और गिल्गितमें ाज भी बसते हैं, दूसरे कस्पेरोई कश्मीर (उपत्यका) और सतलजके बीचके निवासी थे, और तीसरे (कुलिद) सतलज और गंगाके बीचके थे।"

गिल्गितसे जोज़ीला तकके निवासी आज भी दरद कहे जाते हैं। उनके डांडेके इस पार कस्पेरोई या कश्मीरी झेलम (वितस्ता) की उपत्यकामें रहते ही हैं। उनसे पूर्व चनाव तक (कश्तवार और चंबा) की जातियां खशोंके ंतर्गत हैं, यद्यपि खश नामका पूरा प्रयोग उससे पूर्व कुल्लु-कांगड़ासे लेकर नेपाल तक ही आजकल होता है। कुल्लूके कुनेत (कुनिंद) लोग आज भी खसिया और राव दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं। कुनेत या कुनैत (कुलिंद) नाम आजकल कश्तवार —चंबासे शिमला और कन्नौर (ऊपरी सतलज) तक ही अधिक प्रचलित है, किन्तु यह लोग खसिया या खोसिया नामसे भी प्रसिद्ध हैं, जिससे स्पष्ट है कि, कुनेत (कुलिंद) भी खसों हीमें से थे।

अट्किन्सनने फिर लिखा है [3]—

"गंगातटवासी जातियोंमें सबसे उत्तरमें तंगणोंका स्थान था और वह सरबू (पालीमें सरभू और आधुनिक शारदा) के ऊपरी भागमें रहते थे।" आज भी खशोंकी एक उपजाति "टंगणिया" मौजूद है। जोशीमठ और चमोलीके बीच

---

[1] महाभारत द्रोणपर्व १२१/४३, उद्योगपर्व १६०/१०३

[2] वहीं, p. 355

[3] Himalayan Districts, Vol. II

टंगणी नामकी एक चट्टी भी है। पांडुकेश्वरमें प्राप्त एक ताम्रलेखसे मालूम
है, कि कत्यूरी राजा ललितशूर (९वीं सदी) ने तंगणपुर और अंतरांग
दो जिलों (विषयों) की कुछ भूमि वदरीके ब्राह्मणोंको दी थी।
कुछ भूक्षेत्रके दक्षिणमें गंगा बहती थी, इसलिए ये जिले गंगाके ऊपरी
अवस्थित थे। वहींके एक दूसरे ताम्रपत्रमें बुद्धाचल और काकस्थलका भी
है। काकस्थल "केदारखंड" में उल्लिखित काकाचल ही है, जो कि भागी
और अलकनन्दाके संगम (देवप्रयाग) के पास था। इस प्रकार तंग
आसानीसे हम गंगाकी ऊपरी तटभूमि तथा अंतरांगको भागीरथी और अलक
बीचका दावा मान सकते हैं।"

कत्यूरी राजधानीके तंगणपुर, सुभिक्षपुर, कार्तिकेयपुर भिन्न-भिन्न ना
जो संभवतः वंर्तमान जोशीमठ है। इसलिए बुद्धाचल या "केदारखंड"
बौद्धाचल पैनखंडामें ही कहीं बौद्धोंका पवित्र पर्वत था—यदि मूलतः वदरि
तपोवनमें था, तो वर्त्तमान वदरीनाथ ही बुद्धाचल हो सकता है।

(३) खश पामीरतक—

खश, खस और कश एक ही शब्दके भिन्न-भिन्न उच्चारण हैं। नेपा
कश्मीर तककी प्रभावशाली जातियां अब भी खश या कश (कश्मीरी) ही के
पुकारी जाती हैं। तिब्बती भाषामें कश्मीर और कश्मीरियोंको ख-छे कहते हैं
कि खशका ही विगड़ा रूप है। आजकल वहां खछे मुसलमानको कहते हैं, जि
कारण यही है, कि तिब्बती लोगोंने मुसलमानोंको पहिले-पहिल कश्मीरियों
के रूपमें देखा। हमारा भी मुसलमानोंसे घनिष्ट परिचय तुर्कोंके रूपमें
प्रथम हुआ था, इसलिये तुर्क शब्दको कबीरने (हिन्दू-तुरक) मुसलमानका प
मान लिया।

कश्मीरसे आगे चित्राल और कश्कर (उत्तरी और दक्षिणी) तथा य
और मस्तूजके इलाके हैं। जहांके निवासी खो कहे जाते हैं। कश्मीरकी
कश्करमें भी वही कश या खश शब्द जुड़ा हुआ है। इस प्रकार नेपालसे दर
पश्चिमी सीमा (गिल्गित) तक आज भी खश जातिका निवास है।

अट्किन्सनने खशों, कश्करके खोओं और काबुलके कटोरोंको एक व
हुए लिखा है[1]—

"वे (खश) एक ऐसी जातिके अंग हैं, जिसने हिमालय के भिन्न-भिन्न

---

[1] वहीं, Vol. II, pp. 440–41

र अपनी छाप छोड़ी है।....इनका तथा पश्चिमी हिमालयकी जातियोंका क ही उद्गम है। कालान्तरमें यह महाजाति राजनीतिक कारणों तथा दूसरी जातियोंके घुस आने पर भिन्न-भिन्न लोगोंमें बंट गई। इनमेंसे कुछ मुसलमान हो गए, कुछ बौद्ध रहे, और...कुछ ब्राह्मणिक प्रभावोंके कारण धर्म, आचार तथा भाषामें हिंदू हो गये।..सभी जानते हैं कि मानवधर्मशास्त्र (मनुस्मृति) के कर्ताओं द्वारा शास्त्रीय रीतिसे स्थापित जातियोंके लिए सम्मान, धन, शक्ति वंशपरम्परासे प्राप्त (होती) है, इस लिए वह (खश) अपना संबंध अपनेसे किसी उच्चतर वंशसे जोड़ना चाहते हैं। आज भी ध्यानसे देखनेपर उन नियमोंको काम करते देखा जाता है, जिन्होंने सैकड़ों वर्षोंके भीतर आदिम पहाड़ी जातियोंको अच्छे हिन्दुओंके रूपमें परिणत कर दिया। एक सम्पन्न कुमाऊंनी संगतराश आसानीसे एक निम्न राजपूत--खसिया--की लड़कीसे व्याह कर सकता है, और एक सफल खसिया किसी वंशागत शुद्ध राजपूतकी लडकी मोल ले व्याह कर सकता है। ये लोग दिनों-दिन अधिक और अधिक कट्टर होते जा रहे हैं।....उत्तरमें तिव्वतसे और दक्षिणमें मैदानसे जो (विजेता) जातियां यहाँ आ घुसती रहीं, वह या तो पच्चर बन कर (अलग जातिके रूपमें) यहां रह गईं, अथवा खसियोंके ऊपर छा गईं--कहींपर उन्होंने विजित जातियोंके साथ व्याह-संबंधसे और कहीं अवैध संबंधसे रक्त-संमिश्रण कर डाला। इन्हीं कारणोंसे करकरके खोओं और कटोरों अथवा कुमाऊँके कत्यूरी और खसियोंके बीच संबंध स्थापित करना संभव नहीं है। तो भी दोनों एक हैं, इसे माननेके काफी प्रमाण हैं।"

हिमालयकी भिन्न-भिन्न जातियों और प्रदेशोंके संबंधकी पौराणिक जनश्रुतियोंके आधारपर अट्किन्सनकी राय है[1]—

"गिल्गित और अस्तोरके निवासी दरद हैं, यह प्रसिद्ध ही है। खशीर भी यस्कुनुओंकी भाँति खशोंकी एक शाखा है, जिन्हें प्लीनीने कसिरी (Casiri) कहा है। वराहसंहिता (वरामिहिर) के नामोंको लेनेपर हम तंगणोंके बाद ऊपरी टौंसके तटपर कुलूत और सारित्योंको पाते हैं, फिर वन-देश (आता है) जो कि आजकलका जमुनाके पासका इलाका (जौनसार) है। फिर भागीरथी-उपत्यकामें स्वेन्-चाङका ब्रह्मपुर (बाडाहाट या उत्तरकाशी) तब दार्वाद या दारुदेश अलमोड़ाके पासका इलाका है, जिसके पास जागेसरके समीप पूर्वकालमें अवस्थित आम्रवन था। फिर राजकिरातोंका देश।....मार्कण्डेयपुराणमें ब्रह्मपुर-

---

[1] वहीं, p. 362

का उल्लेख है, जिसकी एक तरफ वनराष्ट्र था और दूसरी ओर एकपद और सुवर्णभूमिके प्रदेश थे। सुवर्णभूमि या स्वेन्-चाङ्का सुवर्णगोत्र ति ङ-री-कोर-सुम (मानसरोवर) प्रदेश है। जो गढ़वाल और अलमोड़ाके उ अवस्थित हैं।"

इस प्रकार उस महाजातिका हमें पता लगता है, जो किन्नर-किरात जा प्रधानताके वाद उनकी भूमिमें फैलकर धीरे-धीरे सर्व-सर्वा बन गई। भा अन्यत्रके उदाहरणोंसे यह समझना मुश्किल नहीं है, कि पहिले आये खशों उनके वाद आये वैदिक आर्योंने किन्नर-किरातोंको एक आत्मसम्मानयुक्त जाति न रहने दे उन्हें डोम (शिल्पकार) जातिमें परिणत कर दिया, जंगलोंमें भागनेके लिए मजवूर किया। खसों और वैदिक आर्योंमें आसान समझौता हो गया, क्योंकि वह मूलतः एक ही जातिकी शाखायें थीं। दो संयुक्त शक्ति ही किरातोंको पूरी तौरसे दवा सकी होगी।

(४) खसोंकी समाधियाँ—

खश और शक मूलतः एक जाति थी, यह हम आगे वतलायेंगे। श भांति खशोंमें भी मुर्दोंको सामर्थ्यानुसार अच्छी प्रकार समाधि देनेकी प्रथा महान् शक-सामन्तोंकी जो समाधियाँ दक्षिणी रूस और अल्ताईमें मिली हैं, देखनेसे छोटे रूपमें मिश्रकी पुरानी समाधियां याद आती हैं। हिमालयके ये पाल खश उतने समृद्ध नहीं थे, तो भी कोई आश्चर्य नहीं होगा, यदि खश-सरदा कुछ वड़ी कब्रें भी मिलें।

खशोंके विस्तारके अनुरूप ही यह कब्रें लदाख, लाहुल, चंबा, कनौर (कि से कुमाऊँके द्वाराहाट, वैजनाथ, वागेश्वर तक मिलती हैं। आजकल मुसलमा ही कब्र देनेका रवाज देखकर लोग इन्हें भी उन्हींके साथ जोड़ देते हैं। ले इन कब्रोंमें कुछ विशेषतायें हैं, जो मुसलमानी कब्रोंसे इन्हें पृथक् करती किन्नर (कनौर) में लिप्पा, कनम्, स्पूसे, आगे तिव्वती सीमान्तपर अव भारतके अंतिम गाँव नम्ग्यातक यह कब्रें मिलती हैं। मुसलमानी कब्रोंसे भि यह है, कि इनमें शवके शिरके पास मद्य और भोजनके दो वर्तन अवश्य रखे मि हैं। दोनों वर्तन प्रायः मिट्टीके होते हैं, किन्तु कुछ वड़ी कब्र.में धा वर्तन भी पाये गये हैं—लिप्पाकी एक वड़ी कब्रमें मुझे भोजनपात्र कांसेका गोल कटोरा मिला था। लिंप्पाकी एक कब्रको मैंने खोदकर देखा। उसका दीर्घकपाल था, जव कि आजकल वहां मध्यकपाल तथा आयतकपाल ही मिलते हैं। उक्त कब्रका मुर्दा घुटने मोड़कर लिटाया हुआ था। शायद और जगह

घुटने-मोड़ कब्रें मिलें, किन्तु अभी यह कहना मुश्किल है, कि सभी खश-कब्रें टने-मोड़ हुआ करती थीं। लिप्पाकी कांसेकी बर्तनवाली कब्रमें नीचे उतरनेके ए उसकी दीवारमें तीन-चार खुड्डियाँ बनी थीं। छोटी कब्र कोनोंपर छंटी कोर थी। चारों ओर अनगढ़ पत्थरकी पट्टियोंको खड़ा कर दिया गया था, र ऊपर चौड़ी पट्टियोंसे ढांक दिया गया था। पहिले हीसे मुसलमान कब्रें न लेनेसे द्वाराहाट, बैजनाथ बागेश्वरकी कब्रोंकी जांचपड़ताल नहीं की गई। ास नदीके किनारे भी ऐसी कब्रें मिलती हैं, जिनमें बर्तन मिलते हैं, ऐसा मुझे क सज्जनने बतलाया। यदि सावधानीसे खोज की जाय, तो गिल्गितसे नेपाल कके सारे प्राचीन खस-प्रदेशमें दीर्घकपाल खशोंके अशन-पानके दोनों पात्रोंके साथ ब्रें मिलेंगी।[1]

. वैदिक आर्य

किरातों और खशोंके बाद वैदिक आर्योंकी पहिली लहर मैदानसे पहाड़ोंकी ार बढ़ी। पंचाल नामसे प्रख्यात त्रित्सु अपने नामसे बसी पंचालभूमिके स्वामी ते हिमालयके सानु तक पहुँच गये। पंचाल के इन त्रित्सुओंको मैदानी भूमि व कुल जनशून्य जंगलके रूपमें नहीं मिली। उन्हें यहां द्रविड़ और पहाड़ोंके नजदीक पहुँचनेपर किरातोंसे मुकाबला करना पड़ा। यह कहना कठिन है, के ईसापूर्व द्वितीय सहस्राब्दीके मध्यमें पंचाल राज दिवोदास् तथा तत्पुत्र दास्का जिस शंवर-असुरसे मुकाबिला हुआ, वह मैदानी द्रविड़ोंका राजा था थवा किरातोंका। वैदिक आर्योंके साथ संघर्षसे पराजित होनेपर असुर-सामन्तों-

---

[1] Atkinson Vol., p. 512 n. "The only tradition regarding the Mughals is that certain tombs lined with and covered by large tiles and stones have been found at Dwarahat and Bageswar and are assigned to a Mughal tribe, who are said to have held Central Kumaon for twenty years....At different places in Lahul old tombs have been found and the local traditions point to a people beyond Yarkand as the builders of these tombs." "और कुमाऊंका इतिहास" पृ० ६३७ : "कुछ कब्रें ईंटोंकी बनी हुई बागेश्वर और द्वाराहाटमें पाई गई हैं, जिनको पुरातत्त्ववेत्ता मुगलोंकी कब्रें कहते हैं, किन्तु यहाँपर ये साधुओंकी समाधियाँ मानी जाती हैं।"

को भी पहाड़ोंकी शरण लेनी पड़ी होगी। शंवरके पहाड़ी दुर्गोंपर आक्रमण सुदास्‌को जो लोहेके चने चबाने पड़े, वह यही बतलाता है, कि ये असुर कसित अवस्थाके किरात न हो द्रविड़ (असुर) ही रहे होंगे। द्रविड़ों किरातोंका संपर्क राजी (किराती) भाषाकी तुलनामें हम बतला चुके हैं।

शंवरके पहाड़ी दुर्ग पंचाल (वर्तमान रुहेलखंड) के उत्तर होनेसे कुमाऊँके ही पहाड़ोंमें रहे होंगे। संभव है, मैदानमें परास्त असुर इन दुर्गोंमें ले आर्योंकी बस्तियों पर आक्रमण किया करते हों, जिसके लिए दिवोदास्-सुद इन दुर्गोंपर आक्रमण करना पड़ा। इसका प्रमाण नहीं मिलता, कि आर्योंने अपने लोगोंको वहां बसानेके लिए इन दुर्गबद्ध असुरोंसे लोहा वैदिक साहित्यमें हिमालयमें आर्योंके बसनेका कोई उल्लेख नहीं मिलता, विरुद्ध हम यहां मध्य-काल तक ही नहीं, आज भी खशोंकी प्रधानता देखते दिवोदास्-सुदास्‌के समय चाहे खश पंचालके उत्तरवाले हिमाचलमें नहीं हों, किंतु अंतमें वही किरातप्रधान इस प्रदेशको खसदेश बनानेमें सफल

महाभारतमें हिमालके इस खंडका अनेक बार उल्लेख इतना ही करता है, कि महाभारतके संग्रहके समय (ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दी) में इस प्रदेशसे परिचित हो गये थे। परिचित तो वह बुद्ध-कालमें भी थे, हिम ऋषियोंकी निवासभूमि कहा जाता था। इस समय तक यह खश देश बन था। फिर रंग-रूपमें एकसे इन ऋषियोंके खशोंमें भी भक्त हो सकते थे। भारत या बादके भी कितने ही समयोंतक यदि कुरु या पंचालमें कोई प्रतापी हुए, तो उन्होंने गंगोत्री, जमुनोत्री या बदरीनाथ तक अपना सीधे राज्य स्था कर लिया होगा, यह आशा नहीं रखना चाहिए। मुस्लिमकालके उदाह हम इतना ही मान सकते हैं, कि पहाड़ के शासक अपने प्रतापी दक्षिणी पड़ो अपने देशकी कुछ सौगात दे देता था, जिससे पंचाल या कुरुके छत्रधा पूरा संतोष हो जाता था।

§२. आरंभिक इतिहास

अबतक इतिहासके बारेमें जो कहा गया, वह इतिहासकी किसी पुराता ठोस सामग्रीके आधारपर नहीं कहा गया। वस्तुतः ऐसी सामग्री अभी असंदिग्ध रूपसे प्राप्त नहीं हुई। ऐतिहासिक कालके भीतर घुसनेसे यहांके पुरातात्त्विक स्थानोंके बारेमें कुछ कह देना आवश्यक है। हमारी

ी पूर्ण नहीं कही जा सकती। इन स्थानोंके बारेमें आगे भी कुछ कहना है, लिए यहाँ हम अतिसंक्षेपमें ही कहेंगे।

१. पुरातात्त्विक स्थान

क. स्थान

१. **अगस्तमुनि**—कार्तिकेय मंदिर यहांसे छ मीलपर है। अगस्त्य-मुनिसे दारनाथ तक बहुत-से पुराने मंदिर हैं, जिनमें गुप्तकाशी, नल्ला, भेत्, गौरीकुंड, र केदारनाथ प्रसिद्ध हैं।

२. **आदिबदरी**—यहां कत्यूरी कालके १६ मंदिर हैं। किसी समय चांद-रगढ़ राजधानी था।

३. **उरगम्**—हेलङसे १॥ मील अलकनंदातक उतराई फिर ५ मील चढ़ाई। हाँ तीन प्राचीन-मंदिर हैं।

४. **कल्पेश्वर**—हेलङमें यहींसे ३ मील उतराई ३ मील चढ़ाई चढ़कर लता है। यहां विष्णु और शिवके दो मंदिर हैं।

५. **कालीमठ**—गुप्तकाशीसे १॥ मील आगे नाला है, यहांसे पगडंडी द्वारा न मील उतराई तीन मील चढ़ाईपर कालीमठ है। कुंडका दर्शन वसन्त और रदके नवरात्रोंमें ही होता है। काली मठसे ३ मील आगे पर्वतकी चोटीपर ाली–शिलामें कई प्रकारके चित्र बने हैं। मार्ग विकट है।

६. **केदारनाथ**—यहां शिव, सत्यनारायण, नवदुर्गा, हरगौरीकी सुंदर र्तियाँ हैं। मंदिरमें कई शिलालेख हैं, बाहर एक मंदिरमें एक खंडित पुराना तिब्बती) लेख है।

७. **कोलसारी**—कर्णप्रयागके पास यहाँ पुराने मंदिर हैं।

८. **गढ़ताङ्**—जाड (जाह्नवी) गंगाके किनारे तिब्बती राजाकी राजधानी थी।

९. **गणाई**—पासमें लखनपुरके पुराने मंदिर तथा ध्वंस हैं।

१०. **गरुड़गंगा**—पीपलकोटीसे ५ मील। थोड़ी दूरपर सड़कके दाहिने पाखी ंवमें पुराना नृसिंह-मंदिर है।

११. **गुप्तकाशी**—शिव, नारायणकी मूर्तियां।

१२. **गोपेश्वर**—एक पुराने त्रिशूलपर अशोक चल्ल, और क्राचल्ल देवके ख उत्कीर्ण हैं।

१३. **गौरीकुंड**—पुरानी पार्वती तथा शंकरकी मूर्तियां।

१४. **चांदपुरगढ़**—कर्णप्रयागसे १० मील पर रामनगरकी ओर पँवारोंकी रानी राजधानी।

१५. **जोशीमठ**—ग्रीक शैलीकी मूर्तियां। सात पुराने मंदिर हैं, नारायण, नवदुर्गा, प्राचीन शिव, गणेश, नरसिंहकी मूर्तियां हैं। छतके नीचे सिंहधारा है। नरसिंह मूर्ति काले पत्थरकी है। वासुदेव मंदिरकी मूर्ति है। दुर्गामंदिर वासुदेव-मंदिरसे मिला हुआ है। ज्योतीश्वर मठ गांवसे मील पश्चिम चढ़ाईपर जीर्णशीर्ण अवस्थामें है।

१६. **टंगणी**—पीपलकोटीसे ५ मीलपर ऊपर है।

१७. **टेहरी**—पुरानी मूर्तियां हैं।

१८. **तुंगनाथ**—कई पुरानी मूर्तियां हैं, जिनमें एक धातुकी बुद्धमूर्ति

१९. **देवप्रयाग**—पुराना मंदिर, रामकी ६ फुट ऊंची पत्थरकी मूर्ति

२०. **नल्ला**—पुराने शिवालयके बाहर एक बौद्ध पाषाण-स्तूप है। मंदिरके द्वारपर तीन पंक्तियोंका कत्यूरीकालीन लेख है।

२१. **नागनाथ** (नागपुर)—कर्णप्रयागसे चार मील पहिले छतवा चट्टी पर लोहा पुलसे अलकनंदा पार हो ९ मीलकी चढ़ाईपर नागनाथ ती पास ही पर्वत शिखरपर नागपुरगढ़ है।

२२. **नारायण बगड़**—कर्णप्रयागके पास, यहां पुराने मंदिर हैं।

२३. **पत्ती**—कर्णप्रयागके पास, यहाँ पुराने मंदिर हैं।

२४. **पाँडुकेश्वर** (योगबदरी)—दो मंदिर बहुत पुराने हैं। यहां राजाओंके चार ताम्र-पत्र थे जिनमें तीन अब जोशीमठमें रखे हैं। मंडपपर ग्रीक प्रभाव है। कुषाण राजा वासुदेवके सिक्कों जैसा नादिया शूरके ताम्रलेखपर भी मिला है।

२५. **पांडुवाला**—प्राचीन नगरका ध्वंसावशेष गंगासलान पर्गनेमें ह ६ मील पूर्व मंधल (ध्वस्त) गांवके पास एक पुराना मंदिर है; कितनी ही सुंदर मूर्तियां हैं।

२६. **बदरीनाथ**—बदरीनाथकी मूर्ति काले संगमरमरकी तीन फुट ध्यानावस्थित बुद्ध-मूर्ति है। इसके दक्षिणओर उत्सव (ऊधव) मूर्ति, नर, यण और बाईं ओर कुबेर और नारद। "इसको बौद्धोंकी स्थापित की हुई भगवानकी मूर्ति बतलाते हैं।" मंदिर मुगल-शैलीका है।

२७. **बमोथ**—कर्णप्रयागसे नीचे है, यहां पुराने मंदिर हैं।

२८. **बाड़ाहाट**—अभिलेख-सहित विशाल त्रिशूल ऊपर गोलाई १'. नीचे ८',९", और ऊंचाई २६' है। यहाँ तिब्बती राजा नागराज (ग्या सदी) की बनवाई धातुमयी बुद्ध-मूर्ति(दत्तात्रेय) भी है।

२९. **वैराटगढ़ (या गढ़ी)**—कालसीसे ऊपर टूटी फूटी अवस्थामें है।

३०. **वैरासकुंड**—नंदप्रयागसे सात मील वटियाकी चढ़ाई पर है, यहां एक ड और प्राचीन शिवमंदिर हैं।

३१. **भटवारी**—वाडाहाटसे १८ मील ऊपर, यहां चढ़ाई पर कुछ मूर्तियां हैं।

३२. **भिल्ल-केदार**—श्रीनगरसे २॥ मील नीचे विल्लकेदारसे २ मीलपर ाकिनारे एक प्राचीन विष्णु-मंदिर है, जिसे शंकरमठ कहते हैं। इसीके पास ोयंत्र है।

३३. **भेत् (नारायण कुटी)**—गुप्तकाशीसे २॥ मील आगे यहां बहुतसे राने मंदिर हैं, जो अधिकांश मूर्ति-शून्य है। प्रधान मंदिर लक्ष्मीनारायणका । सत्यनारायण, वीरभद्र, शिव, प्राचीन शिव, तथा कुंड दर्शनीय हैं।

३४. **मोरध्वज या मुनवरा**—कोटद्वारा-नजीवावाद सड़कके आधी दूरपर । पुराने गढ़का घेरा ८००–६२५ फुट है। शिगरीका भीटा ४३ फुटके रेमें है। यह एक पुराना बौद्ध स्तूप है। यहांके पत्थरोंसे कोटद्वारा और जीवावादके पुल वनाये गये। आठवीं सदीके अक्षरोंमें "ये धर्म्मा०" की मुद्रायें ी यहां मिली थीं।

३५. **रैंगू**—कंडारगढ़के पास पर्गना नागपुरमें पुराने मंदिर हैं।

३६. **श्रीनगर**—ओड लोग हालतक यहां पत्थरकी मूर्तियां वनाते थे। ोलारामके कुछ चित्र उनके वंशजोंके पास हैं। विरही (गोहना) तालके ८९४ में टूटनेपर जो ध्वंसलीला मची, उससे कमलेश्वर महादेव छोड़ सारा गर ध्वस्त हो गया।

३७. **सुन्यामुन्या**—कर्णप्रयागके पास पुराने मंदिर थे, जो गोहनाकी ाढ़में वह गये।

३८. **सुवै**—तपोवनसे ३ मीलकी चढ़ाई चढ़कर यहां भविष्य-वदरी मंदिरमें हुंचा जा सकता है, जो शायद भविष्य नहीं भूत तथा असली वदरी है।

३९. **हरियाली**—पुनाड (रुद्रप्रयाग) से १५ मीलकी चढ़ाई चढ़कर पर्वत-ाखर पर प्राचीन लक्ष्मी-मंदिर है। तीन मील नीचे जसोलीमें भी लक्ष्मी-मंदिर है।

४०. **हेलङ्**—जोशीमठसे आठ मील इधर है। यहांसे १ मील आगे सड़कसे ाहिने आधमील चढ़नेपर पैनखंडाका पुराना गढ़ है, जिसके नामपर पर्गनेका नाम ड़ा।

ख. सिक्के—

१. **कुणिंद**—गढ़वालके सिक्कोंका बहुत कम ही अनुसंधान हुआ है। यहाँ

मिले सवसे पुराने "कुणिदों" के सिक्के हैं। ऐसे हजार सिक्कों (रुपयों निधि सुमाड़ी गांवमें हल जोतते समय मिली। यह तीसरी-चौथी सदीके कुणिद राजाके हैं।

२. **गढ़तांग**—गंगोत्री प्रदेशमें जाड़गंगाके ऊपर गढ़तांगेमें किसी भोटिया राजा राज करते थे। इनके भी सिक्के यहां मिले हैं, जो चार या तीन माशेके होते थे।

३. **मानोशाही**—वहुराजकताके समय किसी ठाकुरने यह सिक्के च यह तीन माशेका होता था, पांच मिलाकर १५ माशेका रुपया वनता था

४. **फतेहशाही**—यह ५ तोले भरका चांदीका सिक्का है, जिसपर रहता है "मेदिनीशाहसूनो श्री फतेहशाहावनीपते १७५१" तथा दूसरी "वदरी नाथकृपया मुद्रा जयति राजते १७५१"।

५. **गोरखा**—रणवहादुरशाहकी रानी तिरहुती ब्राह्मणीके पुत्र गी युद्ध विक्रमशाहके नामसे यह सिक्का श्रीनगरमें ढाला गया था। इसपर और फारसीमें लिखा रहता है "महाराजा गीरवान जोध विक्रम ज़रव श्री और दूसरी ओर "वादशाह आलम गाजी।"

२. शक

वैदिक आर्योंके प्रवेश तथा खशोंके हिमाचलके इस भागमें आ ज वात हम कह चुके। मौर्योंके समय, जव भारतके वहुत वड़े भागका एकी हुआ, हिमाचलके छोटे-मोटे शासकोंने उपायन भेजकर उनकी अधीनता स्वी की होगी, इसमें संदेह नहीं। कालसी (देहरादून) में प्राप्त अशोकके शिला भी अनुमान होता है, कि हिमाचलके वाणिज्य-द्वारोंके महत्त्वको मौर्य मानते थे, और उन्होंने हिमालयसे नजदीकका संवंध स्थापित किया था। मौ उत्तराधिकारी यवनोंने पश्चिमी भारतपर अधिकार रखा, जव तक कि ई प्रथम शताब्दीमें शकोंने उनके शासनको समाप्त नहीं कर दिया। जौ (देहरादून) और जौनपुर (टेहरी) के लोगोंकी रूपरेखा, रीति रवाज, भूषाको देखकर जौनको यवन (ग्रीक) से जोड़नेका लालच हो आता है, और अधिक प्रमाणोंके विना ऐसा निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है। जौ और जौनपुर नाममें यमुनाके समीप होनेसे "जौन" जमुनाके लिए ही आय सकता है। तो भी इससे जौनसारी लोगोंकी समस्या हल नहीं हो जाती। सारी स्त्रियां ऐसा कोट अपनी जातीय पोशाकके तौरपर पहिनती हैं, जो

मध्यएसिया) के पुराने तुखारियोंसे मिलती हैं । क्यों यहांकी स्त्रियां
स्पर मिलनेपर चुंवन द्वारा स्वागत-प्रदर्शन करती हैं ?

कुमाऊं-गढ़वालमें जोशीमठ और पांडुकेश्वरके स्थापत्य और कुछ
तियोंपर ग्रीक प्रभाव वतलाया जाता है। ऐसा हो भी तो कोई आश्चर्यकी वात
हीं है, किन्तु जिस समय की यह मूर्तियाँ हैं, उस समय ग्रीककलाको वहुत मोड़ोंके
द पहुंचना पड़ा होगा। प्रभावकी वात तभी कही जाती है, जव कि वह
संदिग्ध रूपसे दिखाई पड़े।

यवनोंकी अपेक्षा शकोंका प्रभाव यहाँ अवश्य स्पष्ट है, और यह माननेके
ए भी काफी प्रमाण मिलेंगे, कि यहाँ शकोंका शासन ही नहीं रहा, वल्कि यहाँके
तापी वंशको भी शकोंने ही प्रदान किया। शक मूलतः खसोंके ही वंशके थे।
श शब्द ही उलट कर शख, शक हो जाता है। प्राचीन खसोंके प्रथम हिमालय-
भियानदके वहुत समय वाद हूणोंसे हारकर १७० ई० पूं० के आसपास शक
पने मूलस्थान पूर्वी सिङ्क्याङको छोड़नेके लिए मजवूर हुए और धीरे-धीरे
गे वढ़ते १३० ई० पू० में वाल्हीक (वाख्तर) से ग्रीकोंको हटाकर वहाँके स्वामी
न गये। वहांसे ई० पू० प्रथम शताव्दीमें वह पंजाव—अफगानिस्तान सहित
श्चिमी भारतके शासक हो गये। ये शक घुमन्तू कवीले थे। इनमें सम्राट्
ौर सामन्त ही नहीं थे, वल्कि उनकी सेना थी, उनका ओर्दू-घुमन्तू परिवार-
मूह—जो अपने पशुओं, और सारे परिवारके साथ वैसे ही चलता था, जैसे
ाजके उनके वंशज गद्दी और गूजर पशुपाल। कालांतरमें इन शक ओर्दुओंका
हुत-सा भाग राजपूत, गूजर, जाट, अहीरके रूपमें जहां मैदानी भूभागमें वस गया,
हाँ कुछ पहाड़की ओर भी चला आया, जहां कि उनके पुराने वंधु खश शता-
दियोंसे वस चुके थे, और जिनके साथके पुराने संवंधको वह कुछ कुछ जानते
ी थे। गुप्तों और हूणों द्वारा शकोंकी प्रभुता के नष्ट होनेपर (चौथी सदीमें)
कितने ही शक राजकुमार और सामन्त आगे आनेवाले हेफ़ताल (श्वेत-हूण)
मिहिरकुलकी भाँति हिमालयके भिन्न-भिन्न दुर्गम स्थानोंमें शरण लेनेके लिए
जवूर हुए।

शकोंकी शाखा कुषाण वंशके सम्राटोंपर भारतीयताका भारी रंग चढ़ चुका
ा। कुषाण सम्राट् कनिष्क वौद्ध धर्मके लिए द्वितीय अशोक माना गया है।
सके उत्तराधिकारी तो और भी भारतीयताको अपनानेमें आगे वढ़े। कनिष्कके
त्तराधिकारी थे—

कनिष्क ७९–१०६ ई०

वसुष्क	१०६–१४ ई०
हुविष्क	११४–५२ ई०
वासुदेव	१५२–७६ ई०

कनिष्कके उत्तराधिकारियोंमें वासुदेव जैसा नाम ही नहीं मिलता, उनके सिक्कोंपर ब्राह्मणिक देवताओंके लांछन बतलाते हैं कि शक कितनी हिन्दू बन गये—वासुदेवके सिक्केकी भांति कत्यूरी राजा ललितशूरके ता पर भी नादिया (बैल) बना पाया जाता है। शायद उनकी इसी ब्राह्मण-भ देखकर भागवतमें लिखा गया—

"किरात-हूणां-ध्र-पुलिंद-पुल्कसा आभीर-कंका यवनाः खसादयः ।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाभयाः शुध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः ॥"
—स्कंध पु० २, अध्य

और इसी भावको लेकर गोस्वामी तुलसीदासने कहा—

"स्वपच सबर खस जमन जड़, पाँवर कोल-किरात ।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ॥"

शकोंके कुमाऊँ-गढ़वालके संबंधकी परिचायिका उनकी सूर्य-प्र हैं। शक लोग अपने वंशज अन्-ईसाई रूसियोंकी भाँति सूर्यके परम-उपासक अपनी जैसी बूटधारिणी सूर्यकी द्विभुज मूर्तियाँ शकोंने ही भारतमें स्थापित मार्तंड (कश्मीर) के कटारमल (अलमोड़ा) तक ऐसी अनेकों प्रतिमायें स्थ हुई थीं। आज भी कुमाऊँ-गढ़वालमें निम्न सूर्यमंदिर मौजूद हैं—

स्थान	जिला (पर्गना या पट्टी)	देवताका न
बेलार (बेल)	अलमोड़ा (गंगोली)	आदि
पमाई (")	अलमोड़ा (")	
रमक	"(महार, काली कुमाऊँ)	आदित्य
नैनी	"(लखनपुर, चौगरखा)	आदि
जगेश्वर	"	
जोशीमठ	गढ़वाल	सूर्यनारा

शकीय ढंगकी सूर्य-मूर्तियोंवाले देवालय भारतमें अन्यत्र भी अपना विशेष हासिक महत्व रखते हैं, किन्तु यहाँ खशदेशमें तो वह शकोंके व्यापक प्र प्रतीक हैं। कत्यूरी-राजवंश मूलतः शक-वंशसे संबंध रखता था, यह हम बतलायेंगे। गढ़वालके पश्चिममें सतलजके तटपर निरतका प्राचीन सूर्य- शक बूटधारी सूर्यका है, जो आठवीं-नवीं सदीके बादका नहीं हो स

ात् वह कत्यूरी-वंशके आरंभिक कालका है और यदि ललितशूरके ताम्रलेखमें धिक अतिशयोक्तिसे काम नहीं लिया गया है, तो हो सकता है, निरतका सूर्य-दिर विशाल कत्यूरी राज्यका ही एक स्मृतिचिह्न है—कत्यूरी राज्यकी पश्चिमी मा सतलज थी, यह परंपरा भी वतलाती है।

शकोंका कुमाऊँ—गढ़वालसे विशेष संवंध था इसमें संदेह नहीं, शायद पहाड़में से अधिक शक-शालिवाहन संवत्का प्रचार तथा गढ़वाल और अलमोड़ाके लके राजवंशोंका शालिवाहनसे संवंध भी उसी वातकी पुष्टि करता है।

३. हूण

हूण वस्तुतः भारत तक नहीं पहुँचे, तो भी किदार, तोरमान, मिहिरकुलके ीलोंको ईरानकी भाँति हमारे यहाँ भी हूण समझ लिया गया था, यद्यपि वह नहीं थे। हूणोंसे उनका इतना ही संवंध था, कि शकोंके प्रायः सभी कवीलोंके नी जन्मभूमि (शकद्वीप) को खाली कर आनेपर भी यह (हेताल) शक-कवीला ें पाँच सदियोंतक किसी तरह वना रहा, और पाँचवीं सदीमें ही किसी कारणसे वूर होकर उसे मध्यएसियाकी ओर भागना पड़ा, जहाँ कुषाण साम्राज्यको स करते ४५५ ई० में स्कन्दगुप्तको हराकर वह भारत पहुँच गये। इनके ा तोरमान (मृ० ५०२ ई०) का विशाल राज्य कस्पियन समुद्रसे मध्य-भारत फैला हुआ था। उसने ग्वालियरमें सूर्यका एक सुन्दर मंदिर वनवाया था। के पुत्र मिहिरगुल (रविकुमार) ने मगधतक आक्रमण किया और ५३४ ई० मालवेश्वर यशोवर्मा तथा मगधेश्वर वालादित्यकी सम्मिलित शक्तिसे पराजित ोर ही उसे भागकर कश्मीरमें शरण लेनी पड़ी। तोरमान और मिहिरगुलके सनकालमें हिमालयका वहुत-सा भाग उनके हाथमें रहा होगा।

४. हर्षवर्धनकाल

मिहिरगुलकी पराजय (५३३–३४) के वाद उत्तरी भारतके प्रधान राजवंश —थानेश्वरके वर्धन, मगधमें गुप्तोंके उत्तराधिकारी मागध गुप्त, कान्यकुब्जमें के उत्तराधिकारी मौखरी, और सौराष्ट्रमें वलभीवंश। मिहिरगुल ५३७ ई० कश्मीरमें शासन करता रहा। मध्य-हिमालय(कुमाऊँ-गढ़वाल)के मांडलिक ा मौखरियों या वर्धनोंके अधीन रहे होंगे। मौखरि ईशानवर्मा (५५४ ई०) ेको आन्ध्र (चालुक्य), गौड़ (गुप्त), सूलिक विजेता कहता है, फिर वह ची राज्य-सीमाको हिमालयमें वढ़ाये विना कैसे रहा होगा? हर्षवर्धनकी

भगिनी राज्यश्रीका पति ग्रह वर्मा अंतिम मौखरि राजा था। उसकी मालवराजसे लड़ते हुई थी, जिसका वदला लेनेके लिए गये हर्षवर्धनके अग्रज सौंगत राज्यवर्धनको गौड़ाधिपति शशांकने छलसे मार डाला (६०५ ई०) वर्धन (६०५–४७ ई०) उत्तरी भारतका अंतिम चक्रवर्ती तथा थानेश्वर (और कान्यकुब्ज (मौखरि) दोनों राज्योंका स्वामी था । उत्तरमें हिमाल सौराष्ट्र और गौड़ (वंगाल) तक उसका शासन था। ६०५ के कुछ ही स हर्षके पिता प्रभाकर वर्धनकी मृत्यु हूणों (हेफतालों) से लड़ते रणक्षेत्रमें हु जिसका अर्थ यही है, कि मिहिरगुलके हारकर कश्मीर जानेपर भी अभी श्वे का वल पंजाब-सिन्धमें खतम नहीं हुआ था। यद्यपि अब वहाँ श्वेतहूणोंका तुरुष्कोंने ले लिया था, किंतु उन्हें हमारे लोग श्वेतहूण ही समझ रहे थे।

हर्षवर्धनका शासनकाल (६०५–४७ ई०) वड़ी शान्ति और समृद्धिका इसी समय चीनी पर्यटक स्वेन्-चाङ् भारतभ्रमणके लिए आये थे। इस हिमालयमें ब्रह्मपुरका एक राज्य था। स्वेन्-चाङ् ६३४ ई० में थानेश्वर ण्वीश्वर) से स्रुघ्न[1] होते गंगापार कर मंदावर (विजनौर) गये। उन्होंने पुर (हरद्वार) का वर्णन किया है, जहाँसे कि वह पो-लो-कि-मो-पुला (ब्र गये। वह मदावर(विजनौर)से ३०० ली (५०मील) उत्तर था। ब्रह्मपुरका ४००० ली (६६० मील)लम्वा-चौड़ा था। स्वेन्-चाङ्ने यह भी लिखा ब्रह्मपुर-राज्यके उत्तरमें सुवर्णगोत्र (सु-फ-ल-न-कु-त-लो) या सुवर्णभू जहाँपर अच्छी जातिका सोना निकलता है। यह वर्तमान् ङ्-री-कोर-सुम (सरोवर-प्रदेश) था, इसमें संदेह नहीं, जहाँ कि महाभारतके अनुसार पि (चींटी) सुवर्ण निकलता था। पिपीलिक सुवर्णकी कहावत रोमक ले भी मालूम थी। कनिंघमने ब्रह्मपुरको कत्यूरी-राजधानी लखनपुर या वै माना है, किन्तु वह वाड़ाहाट भी हो सकता है, जिसके उत्तरमें ङ-री-को मौजूद है, और जहां अब भी सिंधुकी उपत्यकामें खोदकर सोना निकाला है। ब्रह्मपुर, हर्षवर्धनके अधीन रहा होगा।

५. तिब्बती शासन (६५०-८५० ई०)

हर्षवर्धनकी मृत्यु (६४७ ई०)के वाद उसका विशाल साम्राज्य छि हो गया। इसी समय पश्चिममें ईरानको निगलकर अरबकी इस्लामिक

---

[1] सुंग, जिला सहारनपुर।

की ओर बढ़नेका उपक्रम कर रही थी। किंतु, वह हिमालयमें काबुल-कश्मीर क, सो भी बहुत पीछे पहुंच सकी। इसी समय तिब्बतमें एक नई शक्ति रूप रही थी। स्रोङ्-चन्-स्गम्-पो (६२९-४९ ई०)ने एक नये साम्राज्यकी ापना की, जो पश्चिममें प्रायः गिल्गित, उत्तरमें तरिम् तथा ह्वाङ्होकी उप-काओं, पूर्वमें चीनके कुछ भीतरसे लेकर दक्खिनमें सारे हिमालयमें फैल गया। रीव दो शताब्दियोंतक इस राज्यके प्रभावमें आसामसे गिल्गित तक सारा मालय रहा—यहाँके निवासियोंकी भाषापर तिब्बती भाषाका और मुखोंपर गोल मुखमुद्राकी छाप इन्हीं दो शताब्दियोंमें चिरस्थायी तौरसे पड़ी। स वंशके राजा और उनके समसामयिक उत्तर-भारतीय राजा निम्न कार थे—

भोट (ल्हासा)	कन्नौज	मगध
१. (ख्री) स्रोङ्-व्चन (६२९)	हर्षवर्धन (६०५-४७)	
२. मङ्-स्रोङ्-मङ्-व्चन् (६५०)	भंडीवंश (६५०-७८३)	
३. (ख्री) दुस्-स्रोङ् (६७६)		
४. (") ल्दे-ग्चुग्-ब्र्तन् (७०४)		
५. (") स्रोङ्-ल्दे-व्चन (७५५)		१. गोपाल (७६५)
	(प्रतिहार)	२. धर्मपाल (७७०)
६. (") मु-ने-व्चन्-पो (७८०)	१. वत्सराज (७८३)	
७. जु-चे-व्चन्-पो (७९७)		
८. (ख्री) ल्दे-स्रोङ् (८०४)		
९. (") ग्चुग-ल्दे-व्चन् (८१४)	२. नागभट्ट (८१५)	३. देवपाल (८१५)
०. (ग्लङ्-दर्-म) द्बुदुम्-ब्र्तन् (८३६)	३. भोज (८३६)	
१. ओद्-स्रुङ्स् (८४१-)		४. विग्रहपाल (८५४)
२. ऽखोर्-त्रा-व्चन्		५. नारायणपाल (८५७)

हर्षवर्धनके सेनापति भंडीके वंशको साम्राज्यका उत्तरी भाग (हिमालय भी) ला, किन्तु वहाँ उत्तरी प्रतिद्वन्द्वीके सामने वह देरतक न टिक सका होगा, शेषकर जब कि हर्षवर्धनके उत्तराधिकारी बन बैठे अर्जुनकी भारी दुर्गति ब्बती सेनाने चीनीदूतकी हिमायतमें आकर की थी, और उसे पकड़कर चीन

भेज दिया था। इससे यही मालूम होता है, कि हिमालयका यह भाग आसानीसे ल्हासाके अधीन हो गया होगा। ६४०-७८० तक ल्हासा सा एक दुर्धर्ष शक्ति थी। तिब्बती इतिहासके अनुसार इस समय सारे लयके राजा तिब्बतके सामन्त रहे। ख्रि-स्रोङ्-ल्दे-ब्चन्का काल (७५५- ल्हासा साम्राज्यकी प्रभुताका मध्याह्न था, जब कि ७६३ ई०में विजयिनी ति सेना चीनकी राजधानी छङ्-आन्में प्रविष्ट हुई थी। ८३९से तिब्बतकी का ह्रास होने लगा।—ग्लङ्-दर-माके बौद्ध-धर्मविरोधी कार्योंके कारण शक्ति निर्बल होने लगी और उसके उत्तराधिकारी ओद्-स्रुङ्स (का समय ८४८ ई०में थाङ्सेनाने तिब्बतको बुरी तरह हराया। अन्तमें ८६६ उइगुर (तुर्क) सेना-नायक बुक्कुने तरिम्-उपत्यका (सिङ्-क्याङ्)परसे ति अधिकारको समाप्त कर दिया।

७६३में जिस समय तिब्बती सेना चीन-राजधानीमें प्रविष्ट हुयी, स्रोङ्-ल्दे-ब्चन् (७५५-८० ई०) जैसा शक्तिशाली शासक ल्हासामें कर रहा था। इसीने नालंदाके महान् आचार्य शांतरक्षितको बुलाकर धर्म- करानेके साथ तिब्बतके सर्व-पुरातन सम्-ये बिहारकी स्थापना कराई। समय भंडी-वंशने हिमालयको ल्हासासे छीन लिया होगा, यह संभव नहीं ७८३में कान्यकुब्जके दो दावेदारों—चक्रायुध और इन्द्रायुध—का पक्ष गुर्जर-प्रतिहार देवशक्ति वत्सराज (७८३-८१५) और मगधराज ध (७७०-८१५) सदलबल कन्नौज पहुँचे थे। पहिले धर्मपालका पलरा मालूम होता दिखाई दिया, किन्तु बीचमें राष्ट्रकूट ध्रुव (७८०-९४)आ अंतिम परिणाम वत्सराजके अनुकूल हुआ। इस झगड़ेके समय ल्हासाका रुख था, यह बतलाना मुश्किल है, ल्हासाकी शक्ति इस समय क्षीण नहीं हु यह स्मरण रखना चाहिए।

धर्मपाल और उसके प्रतापी पुत्र देवपाल (८१५-५४) दोनों हिम अधिकार रखनेका दावा करते हैं। धर्मपालकी कन्नौजमें आरम्भिक स उसके दावेको कुछ संभव अवश्य बनाती है, किन्तु उसी समय ल्हासाकी सफलता और सिङ्-क्याङ्पर दृढ़ अधिकार होना यह भी ध्यानमें रखनेकी है। चीनी इतिहासके अनुसार ८३९-८४८ ई० ही ऐसा समय है, जब कि ति का भाग्य-सूर्य गिरने लगा। इस समय कन्नौजपर प्रतिहार भोज प्रथम (९२)का दृढ़ शासन था। जान पड़ता है, इसी समय हिमाचल तिब्बतके निकल गया।

§३. कत्यूरी-वंश

१. कत्यूरी-समस्या

(१) **काल**—कत्यूरी हिमालयका प्रथम ऐतिहासिक राजवंश है, किन्तु के आरम्भिक राजाओंका काल और वंशोद्गम ऐतिहासिकोंके लिए एक ड़ी समस्या है। कत्यूरी और पाल अभिलेखोंकी अत्यधिक समानतासे इतना मालूम होता है, कि कत्यूरी-प्रशस्ति लेखक आदिम पालोंके अभिलेखोंसे ली भाँति परिचित थे। यह होना कठिन नहीं था, क्योंकि धर्मपाल और उसके त्र देवपाल केदारखंड-विजय करनेका दावा करते हैं। कन्नौजपर राष्ट्रकूट वके आ कूदनेसे पहले धर्मपालका वहाँके झगड़ेमें सफलता-पूर्वक हस्तक्षेप इसे भव भी कर देता है। आखिर गुप्तों तथा हर्षवर्धनके समय केदारखंड उन्हींका । हर्षवर्धनके उत्तराधिकारी भंडीवंशके लिए ल्हासा-साम्राज्य वाधक था। रायणपाल (८५७-९११)के समकालीन प्रतिहार राजा महेन्द्रपाल (८९२-१३)का राज्य श्रावस्ती भुक्ति तक था, यह दिघवा-दुवौली (सारन, विहार)-प्राप्त महेन्द्रपालके ताम्रलेखसे सिद्ध है। श्रावस्ती भुक्तिकी सीमापर गंडक र तीरभुक्ति (तिरहुत) पालोंकी थी, जो हिमालयसे मिली हुई थी। ८४१में ङ्-दर् माके समय तिब्वती राज्यकी स्थितिके डाँवाडोल होते ही देवपाल ८१५-५४) और भोज प्रथम (कन्नौज)को हिमालयकी ओर हाथ बढ़ानेमें ई बाधा नहीं थी। हो सकता है, इस समय देवपालने नेपालको अपने प्रभावमें र लिया हो, और उसकी या भोजकी शहसे कत्यूरी वसंतनदेवने केदारखंडमें पना पैर मजबूत किया हो। इस प्रकार हम इतना तो अनुमान कर सकते हैं, ८५० ई०के आसपास कत्यूरी राजवंशने अपना राज्य हिमालयमें स्थापित या। वसंतनकी आठ तथा सलोणादित्यकी पाँच—इन तेरह पीढ़ियोंको द एक दूसरेका उत्तराधिकारी और एक शताब्दीमें छ राजाओंका होना मान , तो तेरह कत्यूरी राजाओंका शासनकाल ८५०-१०५० ई० तक रहा होगा। ह माननेमें अभिलेखोंकी लिपिके कालसे कोई विरोध नहीं होता। प्रश्न इतना है, कि कत्यूरियोंके दक्षिणी पड़ोसी प्रतिहार, भोज प्रथम (८३६-९२), महेन्द्र-ाल प्रथम (८९२-९१४) और महीपाल प्रथम (९१४-४५) बड़े ही प्रवल ासक थे, उनके शासनकालमें कत्यूरी राजा कैसे हस्तिवल और उष्ट्रवलके स्वामी मैदानी प्रदेश (वर्तमान रुहेलखंड तथा मेरठकी कमिश्नरियों)पर प्रभुत्व ख सकते थे। यही नहीं, केदारखंड भी कैसे प्रतिहारोंके प्रभावसे मुक्त रह सकता

था? यदि महीपाल (९१४-४५)के बाद कत्यूरियोंकी शक्तिको वढ़ी तो ९५०-११५० ई० इस राजवंशका शासनकाल मानना पड़ेगा, जो आदिके ख्यालसे पीछे पड़ जाता है । हमें तो ८५०-१०५० ई कत्यूरियोंका शासनकाल मालूम होता है । प्रतिहारोंके प्रभावकी सं लिए वसंतन (८५०-७० ई०)से इष्टगण (९३०-४८) तकको प्रति सम्मानित सामन्त मान लेनेसे काम चल जायेगा । इन राजा अपना कोई अभिलेख भी नहीं है, जिसमें हस्तिवल, उष्ट्रवल आदिकी हो ।

(२) **कत्यूरी-अभिलेख**—कत्यूरियोंके पाँच ताम्रपत्र और एक शिल मिले हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार है—

प्राप्तिस्थान	अभिलेख	राजा	काल	राजधानी	रा
१. पांडुकेश्वर	ताम्र	ललितशूर	९४५-५०	कार्तिकेयपुर	
२. ”	”	”	”	”	
३. वागेश्वर १	शिला	भूदेव	९६०-८०		
४. वालेश्वर	ताम्र	देशट	१०१५-३०	कार्तिकेयपुर	
५. पांडुकेश्वर	”	पद्मट	१०३०-४५	”	
६. ”	”	सुभिक्षराज	१०४५-६०	सुभिक्षपुर	

(३) **वंशपरंपरा**—इनमें पहिले तीन अभिलेखोंके अनुसार वंशवृक्ष प्रकार है—

१. वसन्तन=सज्यनरा
|
=.....
|
२. खर्पर=....
|
३. अधिधज=लउदधा
|
४. त्रिभुवनराज=...
|
५. निंवर्त= नाशू
|
६. इष्टगण=वेग
|
७. ललितशूर=लया
|
८. भूदेव

बाकी तीन अभिलेखोंमें वंशवृक्ष है—

१. सलोणादित्य=सिंहवली
२. इच्छट=सिंधु
३. देशट=पद्मल्ल
४. पद्मट=ईशाल
५. सुभिक्षराज

दोनों परम्पराओंका परस्पर क्या संबंध था, इसका उल्लेख नहीं मिलता, तु अधिकतर संभावना यही है, कि द्वितीय परम्परा पहिलीकी उत्तराधिकारिणी । दोनों परम्पराओंके अभिलेखोंकी लिपि कुटिला है, जो ९वीं-१०वीं सदीके लवंशी अभिलेखोंमें तथा कुछ पीछेके तिब्बतसे प्राप्त तालपत्रोंमें मिलती है। नों एक ही कत्यूरी वंशके थे। दोनों परम्पराओंके चार अभिलेखोंमें राजधानी र्तिकेयपुर थी। भूदेव अपने पिता ललितशूरसे अलग अपनी राजधानी ले या होगा, इसकी सम्भावना बहुत कम है। सुभिक्षराजने अपने पिता पद्मटदेवकी जधानी कार्तिकेयपुरको ही, जान पड़ता है, अपने नामपर सुभिक्षपुर कहा।

(४) **समसामयिक राजा**—कत्यूरियोंके समसामयिक पड़ोसी राजाओंका ड़ासा वर्णन ऊपर आ गया है। उनकी परम्परा निम्न प्रकार है—

कत्यूरी (जोशीमठ)	भोट (तिब्बत)	प्रतिहार (कन्नौज)	पाल (मगध)
१. वसन्तन ८५०	११. ओद्-स्रुङ्८४१	३. भोज I ८३६	४. विग्रहपाला ८४५
२. खर्पर ८७०	१२. ड्खोरवा-चन्		५. नारायण ८५७
३. अधिधज८९७			
४. त्रिभुवनराज ८९५	१३. ञि-म-मगोन (ङ-री)	४. महेन्द्रपाल I ८९२	
		५. भोज II	
५. निंवर्त ८१५		६. महिपाल I (९१४)	६. राज्यपाल ९११
६. इष्टगण ९३०			७. गोपाल II
		७. महेन्द्रपाल II ९४५	
७. ललितशूर ४५९		८. देवपाल II ९४८	

		९. विनायक ९५३	
८. भूदेव ९६०		१०. महिपाल (९५४)II	
	१४. क्र-शिस्-स्दे	११. वत्सराज (९५५)II	
		१२. विजयपाल ९६०	
९. सलोणादित्य ९८०	१५. ऽखोर-स्दे		८. विग्रहपाल (९९
१०. इच्छट १०००	१६. नागराज		९. महिपाल
११. देशट १०१५	१७. स्रोङ्-स्दे	१३. राज्यपाल १०१८	
	१८. ल्ह-स्दे	१४. त्रिलोचन १०२७	
१२. पद्मट १०३०	१९. स्रोङ-स्दे	१५. यशपाल	१०. नयपाल
१३. सुभिक्ष १०४५			११. विग्रह III
		(गहडवार वंश)	१२. महिपाल
		१. चंद्रदेव १०८०	१३. शूर १०८
	२०. चे-स्दे १०७६		१४. राम १०८
		२. मदनचंद्र ११००	
		३. गोविंद १११४	१५. कुमार
			१६. गोपाल II (११
			१७. मदनपाल
		४. विजयचंद ११५५	१८. गोविंदपा
		५. जयचंद ११७०९३	

२. कत्यूरी-प्रताप

(१) ललितशूर—

वसन्तन कत्यूरी-वंशका संस्थापक होनेसे महत्त्व रखता है । जैसा कि प
कहा गया, ग्लङ्-दर्मा और उसके पुत्र ओद्-स्रुङ्के समयकी भोटसाम्रा
निर्वलतासे लाभ उठाकर पालों या प्रतिहारोंके वलसे इसने भोटशासनको
कर अपना राज्य स्थापित कर लिया। अभिलेखोंमें ललितकी भारी
यही वतलाती है, कि उसने महिपाल प्रथम (९१४-४५)का सामन्त होना

---

¹Atk. Vol. II. p. 450

र कर दिया। ललितशूर कत्यूरीवंशका सबसे प्रतापी राजा था, और सर्व- ातन अभिलेख भी इसीका मिलता है। दसवीं सदीके मध्यमें उत्तरकी भोट र दक्षिणकी प्रतिहार-राजशक्ति बहुत निर्बल हो गई थी, ऐसे समय ललितशूर पने हस्तिवल, उष्ट्रवल, अश्ववल और लड़ाकू पैदल सेनाको लेकर नीचे देशमें जययात्रा कर सकता था। शायद ऐसी यात्राका स्मरण फरिश्ताने[1] पर्वतीय जाके दिल्ली-विजयके रूपमें किया। पाल-अभिलेखोंमें वंश-संस्थापक गोपाल- ो उपमा पृथुसे दी गई है, वही उपमा ललितशूरकी भी है, जिससे उसके बड़े जेता होनेका आभास मिलता है।

देवपालके अभिलेखमें "भोट" और "लासत" नामोंसे तिव्वतका उल्लेख या है; किन्तु, कत्यूरी लेखोंमें आंध्र, द्रविड़ तकके विजयकी झूठी डींग मारनेपर ो पड़ोसी भोटका नाम न आना खटकता-सा है। संभवतः ललित-पुत्र भूदेवने ०९६-८०) अपने वागेश्वरवाले शिलालेखमें जो अपने परममित्र "किरातपुत्र"- ा उल्लेख किया है, वह कोई तिव्वत-जातीय सामन्त अथवा वागेश्वर लाकेमें ही रहता कोई किरात-सामन्त था।

२) कत्यूरी अभिलेख—

ललितशूरके दोनों ताम्रलेख पांडुकेश्वरमें थे, किन्तु एक खो गया, वाकी तीन अव ोशीमठमें रखे हैं, जिनमें उसके २१वें राज्य-संवतका अभिलेखमें निम्नप्रकार है—

१—ललितशूरका ताम्रलेख (१)

स्वस्ति (१) श्रीमन्कार्तिकेयपुरात् सकलामरदितितनुजमनुज-विभुभक्तिभाव-
रभारानमितोत्तमाङ्ग-सङ्गि-विकट-मुकुटकिरीट-विटंक-कोटि-कोटिशोऽनेक ना-
२)ना-नायक-प्रदीपद्वीपदीधितिपानमद-रक्तचरणकमलामल-विपुल-वहल-किरण
शरासारसारिताशेष-विशेषमोषि-घनतमस्तेजसस् स्वर्धूनीधौत-जटाजू(३)टस्य
गवतो धूर्ज्जटेः प्रसादान् निजभुजोपार्ज्जितोर्ज्जित्य-निर्ज्जित-रिपु-तिमिर-लव्धो-
यप्रकाश-दया-दाक्षिण्यसत्य-सत्त्व-शीलशौचशौर्योदार्य-गाम्भीर्य-मर्यादार्य-वृत्ताश्चर्य
४)-कार्यवर्यादि-गुण-गणालंकृत-शरीरः महासुकृतिसन्तानवीजावतारः कृतयुगागम-
पाल-ललितकीर्तिः नन्दाभगवतीचरण-कमलकमलासनाथमूर्तिः श्रीनिम्बरस् तस्य
नय(५)स् तत्पादानुध्यातो राज्ञीमहादेवी श्री नाशू देवी तस्याम् उत्पन्नः परम-
ाहेश्वरः परमव्रह्मण्यः शितकृपाणधारोत्कृत्तमत्तेभकुम्भा-कृष्टोत्कृष्टमुक्तावलीयशः-
ताका(६)च्छायचन्द्रिकापहसिततारागणः परमभट्टारक-महाराजाधिराजपरमेश्व-
श्रीमद् इष्टगणदेवस् तस्य पुत्रस्तत्पादानुध्यातो राज्ञी महादेवी श्रीवेगदेवी तस्याम्

उत्पन्नः परममा(७)हेश्वरः परमब्रह्मण्यः कलिकलंक-पंकातंक-मग्नधरण्
धारितधौरेय-वरवराहचरितः सहजमतिविभवविभूति-स्थगितारातिचक्रप्रता
(,) अति वैभवसंभारारम्भ-सं(८)भृतभीमभृकुटि-कुटिलकेसरिसटाभीतारातो
लभभरः अरुणारुण-कृपाणवाण-गुण-प्राणगण-हठाकृष्टोत्कृष्टसलील-जय
प्रथम-समालिंगनावलो(९)कनवलक्ष्य-सखेद-सुरसुन्दरीविधूतकर-स्खलद्वलय
प्रकरप्रकीर्णावतंस-सम्वर्द्धितकीर्तिवीजः पृथुरिव दोर्द्दण्डसाधित-धनुर्मण्ड
वष्टम्भवश(१०)-वशीकृत-गोपालनानिश्चलीकृताधराधरेन्द्रः परमभट्टारक
राजाधिराजपरमेश्वर-श्रीमल्-ललितशूरदेव(:) कुशली....(।).
अस्मिन्नेव श्रीमत्कार्तिकेयपुर-विषये समु(११)पागतान् सर्व्वानिव
स्थान् राज-राजानक-राजपुत्रा-सृष्ट(राजा)मात्य-सामन्त-महासामन्त-ठक्कु
मनुष्य-महाकर्तृ-कृतिक-महाप्रतीहार-महादण्डनायक-महाराजा-प्रमातर-श(१
भङ्ग-कुमारामात्य-ोपरिक-दुस्साध्यसाधनिक-दशापराधिक-चौरोद्धरणिक-शौ
गौल्मिक-तदायुक्तक-विनियुक्तक-पट्टाकोपचारिक-ाशेधभंगाधिकृत-हस्त्य-
(१३)वल व्यापृतक-दूतप्रेषणिक-दण्डिक-दण्डपाशिक-गमागमि-शार्ङ्गिक-ाभित्
णक-राजस्थानीय-विषयपति-भोगपति-नरपत्य-श्वपति-खण्डरक्ष्य-प्रतिशूरि(१
स्थानाधिकृत-वर्त्मपाल-कोट्टपाल-घट्टपाल-क्षेत्रपाल-प्रान्तपाल-किशोर-वडवा-
हिष्यधिकृत-भट्ट-महत्तम-ाभीर-वणिक्-श्रेष्ठिपुरोगान् अष्टादशप्रकृ(१५)त्या
नीयान् खश-किरात-द्रविड-कलिंग-गौड़-हूणो-ड्र-मेदा-न्ध्र-चाण्डालपर्यन्तान् सर्व
सान् समस्तजनपदान् भट-चट-सेवकादीन् अन्यांश्च कीर्तितान् अकीर्तितान्
(१६) त्पादपद्मोपजीविनः प्रतिवासिनश्च ब्राह्मणोत्तरान् यथार्हं मानयति बो
समाज्ञापयति(——)अस्तु वस् सम्विदितम् उपरिनिर्दिष्ट-विषये गोरुन्नासायां
वद्ध-खषियाक-परिभुज्यमानपल्लिका तथा पणिभूतिकायां प्रतिवद्ध गुग्गुल
भुज्यमान-पल्लिकाद्वयं एते मया मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये
विघट्टिता(१८)श्वत्थपत्रवच्चलत्-तरंग-जीवलोकमवलोक्य जलवुद्वुदाकार
वायुर् दृष्ट्वा गजकलभकर्णाग्रचपलताञ्चालक्ष्य ,त्वापरलोकनिःश्रेयसार्थसंसा
वोत्तरणार्थञ्च(१९) पुण्येहनि उत्तरायणसङ्क्रान्तौ गन्धपुष्पधूपदीपोपलेपन
वलिचरुनृत्यगेयवाद्यसत्त्रादि-प्रवर्तनाय खण्ड-स्फुटित-संस्करणाय अभिनव
करणा(२०)य च भृत्यपदमूलभरणाय च गोरुन्नासायां महादेवी श्रीसामदेव्या
कारापितभगवते श्रीनारायणभट्टारकाय शासनदानेन प्रतिपादिताः प्रकृतिप
युक्ताः (२१) प्रचाटभटाप्रवेशाः अकिञ्चित्प्रग्राह्याः अनाच्छेद्या आचन्द्रार्क
स्थितिसमकालिकः विषयाद् उद्धृतपिण्डास्थसीमागोचरपर्यन्तस् सवृक्षारामो

वनोपे(२२)तः देवब्राह्मणभुक्तभुज्यमानवर्जितः यतस् सुखं पारंपर्येण परिञ्जतश् चास्योपरिनिर्दिष्टैर् अन्यतरैर् व्वा धरणविधारण-परिपन्थनादिकोपत्रो मनागपि न कर्त्त(२३)व्यो नान्यथा द्रुहतो महान् द्रोहस् स्याद् (।) इति वर्द्धमान-विजयराज्य-सम्वत्सर एकविंशतिमे २१ माघवदि(।) दूतकोत्र महानाक्षपटलाधिकृत श्रीपीजकः । लि(२४)खितमिदं महासन्धिविग्रहाक्षपटलाधित श्रीमद् आर्यटवतुना (।) टंकोत्कीर्णा श्रीगंगभद्रेण ।

बहुभिर् वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः (।)
यस्य यस्य यदा भुमिस् त(२५)स्य तस्य तदा फलं ।
सर्व्वान् एतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः (।)
सामान्योऽयं धर्म्मसेतुर् नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः (॥)
स्वदत्ताम् परदत्ताम् वा यो ह(२६)रेत वसुन्धरां ।
षष्ठिम्वर्षसहस्राणि श्वविष्ट्या जायते कृमि (:॥)
भूमेर् दाता याति लोके सुराणां हंसैर् युक्तं यानम् आरुह्य दिव्यं (।)
लौहे कुम्भे तैलपूर्णे सुतप्ते भूमेर् (२७) हर्त्ता पच्यते कालदूतैः (॥)
षष्ठिम्वर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिदः (।)
आच्छेत्ता चानुमन्ता च तान्येव नरके वसेत् ।
गाम् एकाञ् च सुवर्णञ्च भूमेर् अप्येकमंगुलम् (।)
हृत्वा नर(२८)कम् आयाति यावद् आहूतिसंप्लवं ।
यानीह दत्तानि पुरा नरेन्द्रैर् दानानि धर्म्मार्थ-यशस्कराणि (।)
निर्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि को नाम साधुः पुनराददीत ।
अस्मत्कुल(२९)क्रममिदं समुदाहरद्भिर् अन्यैश्च दानम् इदम् अभ्यनुमोदनीयम् (।)
लक्ष्म्यास् तडित्-सलिल वुद्वुदचञ्चलाया दानं फलं परयशः परिपालनञ्च ।
इति कमल-दलोद(१०)-विन्दु-लोल-मिदम् अनुचिन्त्य मनुष्यजीवितञ्च ।
सकलम् इदम् उदाहृतञ्च वुद्ध्वा नहि पुरुषैः परकीर्तयो विलोप्याः ।

(राजमुद्रामें नन्दीके साथ लेख है—)

श्रीनिम्बरस् तत्पादानुध्यातः
श्रीमद्इष्टगणदेवः तत्पादानुध्या(तः)
श्रीमल्ललितशूरदेवः क्षितीशः ।

अभिलेखका अर्थ है—

(स्वस्ति) श्रीमत् कार्तिकेयपुरसे. . . .भगवान् धूर्जटिकी कृपासे निज-भुजा द्वारा उपार्जित. . . .नन्दा भगवतीके चरणकमलके कमलकी शोभासे

सनाथ मूर्ति श्रीनिंवर (थे), उनके तनय. . . .रानी वेगदेवीसे उत्पन्न पर
श्वर (परमशैव) परमब्रह्मण्य (परमब्राह्मणभक्त) परमभट्टारक महारा
राज परमेश्वर (महाप्रभु) श्रीमान् इष्टगणदेव (थे)। तिनके पुत्र
महादेवी वेगदेवीसे उत्पन्न परममाहेश्वर(परमशैव) परमब्रह्मण्य. . . .पृ
. . . .परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान् ललितशूरदेव
पूर्वक (हैं और वह) इसी श्रीमत् कार्तिकेयपुरके वीच आये सभी आज्ञानुवर्त्ति
राजा, राजानक, राजपुत्र, आसृष्ट, राजामात्य सामन्त, महासामन्त,
महामनुष्य, महाकर्ता, कृतिक, महाप्रतीहार, महादण्डनायक, महाराजप्र
शरभंग, कुमारामात्य, उपरिक, दुस्साध्यसाधनिक, दशापराधिक, चौरोद्ध
शौल्किक, गौल्मिक, तदायुक्तक, विनियुक्तक, पट्टकापचारिक, आशेधभंगा
हस्ति-अश्व-उष्ट्र-सेना-व्यापृतक, दूतप्रेषणिक, दण्डिक, दण्डपाशिक, गमा
शार्ङ्गिक, अभित्वरमाणक, राजस्थानीय, विषयपति, भोगपति, नरपति, अश्व
खंड(वन)-रक्ष, प्रतिशूरिक-स्थानाधिकृत, वर्त्मपाल, कोट्टपाल, घट्टपाल, क्षेत्र
प्रान्तपाल, किशोर-वडवा-अधिकारी, गाय-भैंस-अधिकारी, भट्ट, महत्तम, आ
वणिक्, श्रेष्ठी आदि प्रजाओंके अठारह अधिष्ठाताओंको, खश, किरात, द्रविड़,
(ओडिया), मेद, आंध्र, चंडाल तक सभी संवासोंको, समस्तजनपदोंको,
चट, सेवक आदि उक्त-अनुक्त हमारे चरणकमलके दूसरे आश्रितोंको, प्रति
ब्राह्मणों आदिको यथायोग्य मानते संवोधित करते आज्ञा देते हैं—"तुमको
हो, कि उपरोक्त (कार्तिकेयपुर) विषय (जिले)में गोरुन्नासासे संवंधित,
द्वारा उपभोग की जाती पल्लिका (गाँव) तथा पणिभूतिकासे संवंधित गु
द्वारा उपभोग की जाती दो—पल्लिकाओं—इन (तीनों) को मैंने माता-पिता
अपने पुण्य और यशकी वृद्धिके लिए संसारको पीपलके पत्तेके समान चला
देखकर. . . .और संसार-समुद्रसे उतरनेके लिए पुण्य-दिन उत्तरायण (म
संक्रान्तिको गंध, पुष्प, धूप, दीप, उपलेपन, नैवेद्य, वलि, चरु, नृत्य, गीत,
सत्र आदिके चलानेके लिए टूटे-फूटेकी मरम्मत तथा नई इमारतके वनानेके
और भृत्यों चरणाश्रितोंको पोसनेके लिए गोरुन्नासामें महादेवी श्रीसामदेवी
वनवाये श्रीनारायण भगवान्के लिए (इस ताम्र-) शासन द्वारा प्रदान कि
(उक्त संपत्तिपर) न प्रजाका अधिकार न प्रचाट-भट(सिपाही-सैनिक)के
योग्य, न कुछ भी लेने योग्य, न छीनने योग्य है(।). . . .प्रवर्धमान वि
राज्य संवत्सर २१ माघवदि ३ (।) यहाँ (इस ताम्र-पत्रके लिए राजा
प्रेषित) दूतक महादान (दानविभाग)के अक्षपटल-अधिकारी श्रीपीजक (

(ताम्रशासन)को लिखा संधिविग्रह (विदेशमंत्री)के अक्षपटल (अभिलेख-
भाग)के अधिकारी श्रीमान आर्यटपतुने (और) खोदा श्रीगंगभद्रने. . . .”

(इस ताम्रशासनकी गोल तथा नंदी-लांछित मुद्राकी तीन पंक्तियोंमें लिखाहै—

“श्रीनिंवर, उनके पदानुचर
श्रीमान् इष्टगणदेव, उनके पदानुचर
श्रीमान् ललितशूर देव क्षितीश।”

२. ललितशूरका ताम्रलेख (२)

स्वस्ति श्रीमत्कार्त्तिकेयपुरात् सकलामर-दिति-तनुज-मनुज-विभु-भक्ति-भाव-
न्नमितोत्तमांग-संगि-विकट-मुकुट- किरीटविटंक-कोटिकोटिशोऽनेकनानानायक-
पद्दीप-दीधिति-पानमदरक्त-चरण-कमलामल-विपुलवहलकिरण-केशरासारसरि-
ोष-विशेष-मोषि-घनतमस्तेजसस् स्वर्धुनीधौत-जटाजूटस्य भगवतो धूर्जटेः प्रसा-
निजभुजोपार्जितौर्जित्यनिर्जित-रिपु-तिमिर-लव्धोदय-प्रकाश-दयादाक्षिण्यादि
लशौच-शौर्यौ-दार्य-गाम्भीर्य-मर्यादार्यवृत्ताश्चर्य-कार्यवर्यादिगुण-गणालङ्कृतशरीरः
सुकृति-सन्तान-वीजावतारःकृतयुगागम-भूपाललित-कीर्तिःनन्दा-भगवतीचरण-
लकमला-सनाथमूर्त्तिः श्रीनिम्बरस्, तस्य तनयस् तत्पादानुध्यातो राज्ञी श्रीमहा-
श्रीनाशूदेवी तस्याम् उत्पन्नः परममाहेश्वरः परमब्रह्मण्यः शितकृपाणधारोत्कृ-
त्खात-मत्तेभ-कुम्भाकृष्टोत्कृष्ट-मुक्तावली -यशःपताकाच्छाय-चन्द्रिका-पहसित
रागणः परम-भट्टारक-महाराजाधिराजपरमेश्वर-श्रीमद् इष्टगणदेवस्, तस्य
स् तत्पादानुध्यातो राज्ञी श्रीमहादेवी श्रीवेगदेवी तस्याम् उत्पन्नः परममाहेश्वरः
मब्रह्मण्यः कलिकलंक-पंकातंक-धरण्युद्धारधारित-धौरेय-वर-वराहचरितः सहज
त-विभवविभु-विभूति-स्थगितारातिचक्र-प्रताप-दहनः अतिवैभव-सम्भारारम्भ-
त-भीम-भृकुटि-कुटिल-केसरि-सटा-भीत-भीताराति-कलभभरः अरुणा-रुणकृपाण-
गगुण-प्राण-गण-हठाद्-आकृष्ठोत्कृष्ट-सलील -जयलक्ष्मीप्रथम-समालिंगनावलोक-
वलक्ष्य-सखेद-सुरसुन्दरी-विधूत-करस्खलद्- वलय-कुसुम-प्रकर-प्रकीर्णावतंस-संव-
त कीर्त्तिवीजःपृथुरिव दोर्दण्ड-साधित-धनुर्मण्डलावष्टम्भवश-वशीकृत-गोपालना-
चलीकृतधराधरेन्द्रः परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्रीमल् ललितशूर-
ः कुशली श्रीमत्कीर्त्तिपुर-विषये समुपागतान् सर्वान् एव नियोगस्थान् राज-
न्यक-राजपुत्र -राजामात्य-सामन्त-महासामन्त-ठक्कुर-महामनुष्य-महाकर्त्ता-कृ-
क-महाप्रतीहार-महादण्डनायक -महाराजप्रमातार-शरभंग-कुमारामात्य- परिक-
ध्यसाधनिक-दशापराधिक-चौरोद्धरणिक-शौल्किक-गौल्मिक- तदायुक्तक-विनि-

युक्तक-पट्टकापचारिक-सेधभंगाधिकृत-हस्त्यश्वो-ष्ट्र-वलाधिकृत-दूतप्रेषणिक क-दण्डपाशिक-गमागमिक-शार्ङ्गिका-भित्वरमाणक-राजस्थानीय-विषयप पति-नरपत्य-श्वपति-खण्डरक्ष-प्रतिशूरिकस्थानाधिकृत-वर्त्मपाल-कोट्टपाल- क्षेत्रपाल-प्रान्तपाल-किशोर-वडवा-गो-महिष्यधिकृत-भट्ट-महत्तम-ाभीर-वणि पुरोगान् साष्टादश-प्रकृत्यधिष्ठानीयान् खस-किरात-द्रविड-कलिंगौड्र-गौ ड्-द्रमिडा-मेदा-न्ध्र-चाण्डाल-पर्यन्तान् सर्वसंवासान् समस्तजनपदान् भ सेवकादीन् अन्यांश्च कीर्त्तितान् अकीर्त्तितान् अस्मत्पादपद्मोपजीविनः प्रतिवा ब्राह्मणोत्तरान् यथार्हं मानयति बोधयति समाज्ञापयति (—) अस्तु वः उपरि-निर्दिष्ट-विषये **पलसारि-प्रतिवद्ध देन्द्र[1]वाक** परिभुज्यमानक-स्था मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये पवन-विघट्टिताश्वत्थपत्र-चंचलत लोकम् अवलोक्य जलवुद्वुदाकरम् असारं संसारं च दृष्ट्वा गजकलभकर्णा च लक्ष्म्या ज्ञात्वा परलोकनिःश्रेयसोर्थं संसारार्णवतारणार्थं पुण्येहनि विषुव गन्धपुष्प-धूपोपलेपन-वलि-चरु-नृत्य-गीत-गेय-वाद्य-सत्रादि-प्रवर्तनाय खण्ड संस्करणाय च **गरुड़ाश्रमे भट्टश्रीपुरुषेण** प्रतिष्ठापितः भगवतः **श्रीनाराय** कस्य शासनदानेन प्रतिपादितं प्रकृतिपरिहार-युक्तम् अचाट-भट[1]-प्रवेशम् ञ्चित्प्रग्राह्यम् अनाच्छेद्यम् आचन्द्रार्कक्षिति-स्थितिसमकालिकविषयाद् पिण्डं स्वसीमागोचरपर्यन्तं सवृक्षारामोद्भेद-प्रस्रवणोपेतं देव-ब्राह्मण-भु मान-वर्जितं यतः सुखं पारंपर्येण परिभुंजतश्चास्योपरिनिर्दिष्टैर् अन्यतरैवा विधारण-परिपन्थनादिकोपद्रवो मनागपि न कर्त्तव्यो न्यथा-ज्ञाहानौ मह स्याद् इति निवेश (?) तस्य देवस्य **वदरिकाश्रमीय-तपोवन-प्रतिवद्ध** ब्रह्म यत्किञ्चित्प्रार्थ्यं तत् कर्त्तव्यं तत्सर्वं ब्रह्मचारिभिः करणीयम्। प्रवर्द्धमान राज्य-संवत्सरे द्वाविंशतिमे सम्वत् २२, कार्त्तिक सुदी १५। दूतकोत्र मह पटलाधिकृत श्रीवीजकः महासन्धिविग्रहाक्षपटलाधिकृत श्रीमदार्य्यट टंकोत्कीर्णा श्रीगंगभद्रेण।

वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदाभू मिस् तस्य तस्य तदा फलम्॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेच्च वसुन्धराम्।
षष्ठिवर्षसहस्राणि श्वविष्टा जायते क्रमिः॥
षष्ठिवर्षसहस्राणि स्वर्गं तिष्ठति भूमिदः॥

---

[1] वेन्द्र (रतूडी)

आच्छेत्ता चानुमन्ता च तानेव नरकं वसेत् ।
गामेकां च सुवर्णञ्च भूमेरप्येकमंगुलम् ।
हर्त्ता नरकमाप्नोति यावदाहूति-संप्लवं ।
इति कमल-दलांबु-विन्दुलोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितं च ।
सकलमिदमुदाहृतञ्च वुद्ध्वा नहि पुरुषैः परकीर्त्तयो विलोप्याः ।।

(३) भूदेवका शिलालेख (वागेश्वर)

ललितशूरके पुत्र भूदेवने अपने सिंहासनारोहणके चौथे वर्षके दानका वागे-के मंदिरमें एक शिलालेख लगवाया था, जो कितने ही साल हुए, गुम हो । अट्किन्सनने उसका जो अंग्रेजी अनुवाद अपने ग्रंथमें[1] छापा है, उसका ांतर निम्न प्रकार है—[1]

"नमः स्वस्ति । इस सुंदर मंदिरके दक्षिण-भागमें विद्वद्रचित राजवंशावली ीर्ण है ।

"जन्तुजालध्वंसक रम्य ग्राममें **पवुपड़िदलके** **निनूननुति** नामक द्वारपर स्थित परदेवको नमस्कार ।

"परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर **मसंतन**[2] देव नामक राजा । उनकी पतिपरायणा पत्नी रानी **सज्यनरा** देवीसे उत्पन्न पुत्र परमसम्मानित ाभाजन अति-विभव-संपन्न परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान् . .हुए । परमेश्वर (शिव)के पूजार्थ अनवरत वृत्ति-प्रदाता, **जयकूलभुक्ति**-ओर जानेवाले कई सार्वजनिक मार्गोंके निर्माता, **अंबलिपालिकाके व्याघ्रेश्वर** के पूजार्थ गंध-पुष्प-धूप-दीप-अनुलेपन-द्रव्योंके दाता और युद्धोंमें त्राता थे । ोंने अपने पिता (वसंतनदेव) द्वारा वैष्णवोंको प्रदत्त **शरणेश्वर** ग्राम और ादि द्रव्य उन्हीं देव (व्याघ्रेश्वर) को प्रदान किया, (तथा) सार्वजनिक ोंके किनारे गृह(पांथशालाएँ) वनवाये । उनकी कीर्ति यावत् चंद्र-दिवाकर ल रहैगी ।

"उनके पुत्र परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर **खर्परदेव** । उनके पुत्र उनकी पतिपरायणा पत्नी. . . .से उत्पन्न वित्त-विद्या-मान-न्वित तत्पादानुध्यात परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान् **अधिधज** । उनके पुत्र उनकी पतिप्रिया रानी **लद्धादेवीसे** उत्पन्न कर्म-धन-मान-बुद्धि-

---

[1] Vol. II pp. 69-79; J.A.S.B. VII. p. 1056

[2] वसंतन

सम्पन्न त्रिभुवनराज देव हुए। उन्होंने उन देव(व्याघ्रेश्वर)को जयकूल-भं गाँवमें दो द्रोण[1]का नय नामक उर्वरखेत प्रदान किया, तथा उन्हीं देव(व्याघ्रे की पूजाके लिये उसमें गंधादि द्रव्योंके उत्पादन करनेकी आज्ञा दी। विदित हो, कि उन(त्रिभुवनराज)के परममित्र किरात-पुत्रने उक्त दे गंबियपिंड देवताके लिये ढाई द्रोण भूमि दान दी। अधिधजके दूसरे पुत्रने देवताको एक द्रोण भूमि दी तथा दो....(द्रोण) भूमिके दानका संक शिलालेख करवाया। उसने व्याघ्रेश्वर देवको एक द्रोण और चंडालमुंडा १४....(खंड) भूमि प्रदान की और व्याघ्रेश्वर देवके सम्मानमें ए स्थापित किया। यह सब भूमिखंड व्याघ्रेश्वर देवकी पूजाके लिये दा गये।

"दूसरे भी दाक्षिण्य-सत्त्य-सत्त्व-शील-शौच-शौर्य-औदार्य-गांभीर्य-मर्याद वृत्त-आदि-गुणगणालंकृत, सुदर्शन-नन्दन-अमरावति-नाथ-चरणकमल-पूजा शरीर निवर्त नामक राजा हुए, जो अपने अनेक स्वच्छ सुन्दर वृहद् रत्नों, क्रीड़ित-उज्ज्वल-केसरपुष्पों द्वारा अन्य-भास्वर-द्रव्य-निष्प्रभकारक गंगा जलसे उज्ज्वल जटा-युक्त-शिरवाले कोटिवरद धूर्जटिके प्रसादसे स्व धनुषके बल द्वारा सदा(रणमें)विजेता गौरांग, सुवर्णवर्ण, सकल-स्व पराजेता, सर्व-सुरासुरनर-बुधजन-पूजामें सदा बद्धादर और विन यज्ञानुष्ठानोंसे उद्भूत उनका यश सर्वत्र गाया जाता था।

"तिन(निंवर्त)के पुत्र उनकी पतिपरायणा अग्र-महिषी नाशूदेवी तत्पादानुध्यात परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान्...इष्ट हुए। तिनके पुत्र पतिव्रता स्वपत्नी धरा(वेंग)देवीमें उत्पन्न तत्पादानुध्या भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान् ललितशूरदेव हुए। तिन पतिभक्ता स्वपत्नी लयादेवीसे उत्पन्न परमभट्टारक परमेश्वर श्रीमान् हैं। वह परमब्राह्मणभक्त, वृद्धश्रवण(०मण)—शत्रु, सत्त्यप्रिय, सुंदर, सदा धर्मानुष्ठानतत्पर हैं। उनके पास कलि नहीं फटक सकता। वह वर्ण तथा उनके नेत्र नील-सरोज सम सुन्दर तथा चपल हैं। उनके चरणोंमें प्रणत राजसमूहके मुकुटोंकी मणियोंके शब्दोंसे बहुधा उनके श्रवण रहते हैं। उनके महान् शस्त्रने अंधकारको ध्वस्त कर दिया। उन्होंने कृपापात्र अनुचरोंको वृत्ति प्रदान की।....

---

[1] डेढ़ एकड़ [2] भटकू (?)

(४) पद्मटदेव ताम्रलेख (पांडुकेश्वर)

स्वस्तिश्रीमत्कार्तिकेयपुरात् समस्तसुरासुर-मुकुट-कोटि-सन्निविष्टविकट-मा-
ग्य-किरण-विच्छुरित-नखमयूखोत्खाततिमिरपटलप्रभाव-दर्शिताशयशमशक्ति-
ीयसो भगवतश्चन्द्रशेखरस्य चरणकमल-रजःपवित्रीकृत-निज-निज-तनुभुजार्जि-
र्जिता-नेकरिपुचक्र-प्रतिष्ठित-प्रताप-भास्कर-भासित-भुवनाभोग-विभव-पावक-
खावली-विलीन-सकल-कलिकलंक-समुद्भूतोदार-तपोवदात-देहः शक्तित्रय-प्रभा-
पंबृंहितहितहेतिर् दानदमसत्यशौर्यशौटीर्य-धैर्यक्षमाद्यपरिमित-गुणगुणाकलित-
र-दिलीप-मान्धातृ-धुन्धुमार-भगीरथ-प्रभृति-कृतयुग-भूपाल-चरितसागरस् त्रैलो-
ानन्दजननो नन्दादेवी-चरणकमललक्ष्मीतः समधिगताभिमतवरप्रसाद-द्योतित-
खिलभुवनादित्यः श्रीसलोणादित्यः तस्य पुत्रस् तत्पादानुध्यातो राज्ञीमहादेवी
अवली[1] देवी तस्यामुत्पन्नः परममाहेश्वरः परमब्रह्मण्यो परमभट्टारक-महाराजा-
राज-परमेश्वर-श्रीमदिच्छटदेवः तस्य पुत्रस् तत्पादानुध्यातो राज्ञी महादेवी
सिन्धुदेवी तस्यामुत्पन्नः परममाहेश्वरः परमब्रह्मण्यो दीनानाथकृपणातुर-शरणा-
वत्सलः प्राच्योदीच्यप्रतीच्यदाक्षिणात्य-द्विजवर-मुख्यानाम् अनवरत-हेमदान-
मृता)-र्द्दितकरः समस्तारातिचक्रप्रमर्दनः कलिकलुषमातंगसूदनः कृतयुगधर्माव-
रः परमभट्टारक-महाराजाधिराजपरमेश्वर-श्रीमद्देशटदेवः तस्य पुत्रस् तत्पादा-
ध्यातो राज्ञी महादेवी श्रीपद्मल्लदेवी तस्यामुत्पन्नः परममाहेश्वरः परमब्रह्मण्यः
मभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्रीमत्पद्मटदेवः कुशली (।) टंकणपुर
ये समुपागतान् सर्वानेव नियोगस्थान् राज-राजन्यक-राजपुत्र-राजामात्य-सामन्त-
ासामन्त-महाकर्ता-कृतिक-महादण्डनायक-महाप्रतिहार-महासामन्ताधिपति-महा-
ाप्रमातार-शरभंग-कुमारामात्य- ोपरिक-दुःसाध्यसाधनिक-दोषापराधि-क-चौरो-
णिक-शौल्किक-गौल्मिक-तदायुक्तक-विनियुक्तक-पट्टकापचारिक-सौधभं गाधि-
-हस्त्य-श्व- ोष्ट्र-वलव्यापृतक-दूतप्रेषणिक-दाण्डिक—दण्डपाशिक-विषयव्यावृतक-
ागमिक-खाड्गिक-त्वरमाणक-राजस्थानीय-विषयपति-भोगपति-काण्डपति नर-
-श्वपति-खण्डरक्षास्थानाधिकृत-वर्त्मपाल-कोट्टपाल-घट्टपाल-क्षेत्रपाल-प्रान्तपाल
ुर-महामनुष्य-किशोर-वडवा-गो-महिष्य-धिकृत-भट्ट-महत्तम-ाभीर-वणिक्-श्रेष्ठि
गान् अष्टादशप्रकृत्यधिष्ठानीयान् खश-किरात-द्रविड़-कलिंग-गौड़-हूणान्यभेदान्[2]
चाण्डाल-पर्यन्तान् सर्वसमावासान्[3] समस्तजनपदान् भटचाटसेवकादीन् अन्यांश्च
ततान् अकीर्तितान् अस्मत्पादोपजीविनः पल्लिवासिनश्च ब्राह्मणोत्तरान् यथा-

---

[1] सिंह (र.) [2] हूणान्ध्र० [3] सर्वसंवासान्

हंम् मानयति बोधयति समाज्ञापयति(——)अस्तुः वः संविदितम् उपरिसं
विषयप्रतिवद्ध द्रुमतीप्रतिबद्ध दीर्घादित्य[1]वुद्धाचल-यिदादित्य-गुणादित्यानां
भुज्यमाना पल्लिका च नम्र(?)तथा तस्मिन्नेव द्रुमत्यां पंगरस्य पंचदशभाग
योशि प्रतिवद्धं अोगलावृत्तिर् अपरभूमिकर्मान्त-स्थलिकास्मिन्नेव योशि-प्र
गंगापश्चिमकूलसंक्रमसंन्निकृष्टा खणोड्डुपरिउलिका परिछिन्नापरं च तां
द्रुमत्या काकस्थली ग्रामे पारेवतवृक्षतलिमभागे भूमिः तदीय-देशाचा
द्रोणिकवाधा[2] एतद्द्रोणद्वयवापा भूर्नन्दकेन मूल्येन गृहीत्वा वदरिकाश्रम-भ
प्रतिपादिता (।) मया च सर्वा एता पल्लि पल्लिकावृत्तिकर्मान्तादिभूमि-
उत्तरायण-संक्रान्तौ मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये पवनविघटित
पत्र-चंचलतरंगजीवलोकम् अवलोक्य जलबुद्वुदाकारम् असारं चायुर् दृष्ट्वा
लभकर्णाग्रचंचलताञ्च लक्ष्म्या ज्ञात्वा परलोक-निःश्रेयसोर्थं संसारार्णवतार
वलि-सत्र-नैवेद्य-प्रदीप-गन्ध-धूप-पुष्प-गेय-वाद्य-नृत्यपूजाप्रवर्तनाय खण्डस्फु
संस्काराय च भगवते वदरिका-श्रमाय प्रतिपादिता पुष्पपट्टनिवेशं कृत्वा
परिहारयुक्तं अचाटभटप्रवेश्यं अकिंचित्प्रग्राह्यं अनाछेद्यं आचन्द्रार्कक्षिति
समकालिका विषयाद् उद्धृतपिण्डांश्च आसीमागोचरपर्यन्तां सवृक्ष
द्भिद्-प्रस्रवणोपेतं राजभोग्य-सकल-प्रत्यय-समेतं देवब्राह्मण-भुक्तभुज्यमान
(।)यतः सुखं परिभुंजतोपरिनिर्द्दिष्टैरन्यतरैर् वा स्वल्पमपि धारण
परिपन्थनादिकोपद्रवो न कैश्चित् करणीयः अतोन्यथास्य व्यतिक्रमे महान् द्रोह
(।) इति प्रवर्द्धमान-विजयराज्य-संवत्सरे पंचविंशतितमे संवत् २५ माघ व
दूतकोत्र महादानाक्षपटलाधिकृत श्रीभट्ट धणः लिखितमिदं महासंधिविग्रहाक्ष
धिकृतश्रीनारायणदत्तेनोत्कीर्णमिदं श्रीनन्दभद्रेण (।)

भो राजानः प्रार्थयत्येष रामो भूयोभूयः प्रार्थनीया नरेन्द्राः (।)
सामान्योयं धर्मसेतुर् नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः।

५. सुभिक्षराज ताम्रलेख (पांडुकेश्वर)

स्वस्तिश्रीमत्सुभिक्षुपुरात् समस्तसुरासुर-पति-मुकुट-कोटि-सन्निविष्ट
माणिक्यकिरण-विच्छुरित-चरणनखमयूखोत्खात-तिमिरपटलप्रभावातिशय-
वित-महीयसो भगवतश्चन्द्रशेखरस्य चरणकमलरजः पवित्रीकृतनिजतनु
भुजार्जितोर्ज्जितानेकरिपु-चक्रप्रतिष्ठित-प्रताप-भास्कर-भासित -भुवनाभोग-
शिखावलीन-सकलकलिकलंक-समुद्भूतोदारतपोवदातदेहः शक्तित्रयप्रभाव-

---

[1] तीर्थादित्य (र.) [2] द्रोण=पौन एकड़=१६ नाली=३२ सेर (

हेतिदान-दम-सत्य-शौर्य-शौटीर्य-धैर्य्य-क्षमाद्यपरिमित-गुणगणालंकृत-सगर-दि-
-मान्धातृ-धुन्धुमार-भरत-भगीरथ-दशरथ-प्रभृतिकृतयुग-भूपालचरित-सागरस्
क्यानन्द-जननो नन्दादेवी-चरणकमल-लक्ष्मीतः समधिगताभिमतवरप्रसादोद्यो-
तनिखिलभुवनादित्यः श्रीसलोणादित्यः तस्य पुत्रः तत्पादानुध्यातो राज्ञी महादेवी
सिंहवली देवी तस्यामुत्पन्नः परममाहेश्वरः परमब्रह्मण्यः परमभट्टारक-महाराजा-
राज-परमेश्वर श्रीमद् इच्छटदेवस् तस्य पुत्रस् तत्पादानुध्यातः(,) राज्ञी महा-
श्रीसिन्धुदेवी तस्याम् उत्पन्नः परममाहेश्वरः परमब्रह्मण्यो दीनानाथकृपणातुर-
णागतवत्सलः प्राच्योदीच्यप्रतीच्यदाक्षिणात्य-द्विजवरमुख्यानाम् अनवरत-हेम-
ामृता(र्द्रित)करः समस्ताराति-चक्र-प्रमर्द्दनः कलिकलुष-मातंगसूदनः कृतयुग-
वितारः परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर श्रीमद् देशट देवस् तस्य
स् तत्पादानुध्यातो राज्ञी महादेवी श्रीपद्मल्लदेवी तस्याम् उत्पन्नः परममाहेश्वरः
मब्रह्मण्यः स्वयमुत्खात-भास्वद्दीप्ति-प्रभा-वितान-सवलीकृत-वाहुवलविर्व्जिता-
-दिग्देशागत - प्रणामोपनीत-करि-तुरंग-विभूषणानवरत-प्रदान - तिरस्कृताशेष -
न-वैकर्तन-दधीचि-चन्द्रगुप्त-चरितश् चतुरुदधि-परिखा-पर्यन्तमेखलादाम्नः क्षितेर्
परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर श्रीपद्मट देवस् तस्य पुत्रस् तत्पादानु-
तो राज्ञी महादेवी श्रीमद्-दिशालदेवी तस्याम् उत्पन्नः परमवैष्णवः परमब्रह्मण्यः
दित-शास्त्रप्रतिपालकः दूरापसारित-कलि-तिमिर-निकर-हेला-कलित-सकल-क-
पालंकृत-शरीरः भुवन-विख्यात-दुर्मदाराति-सीमन्तिनी-वैधव्यदीक्षा-दानदक्षैक-
प्रतिपक्षलक्ष्मीहठ-हरणागणित-प्रचण्डदोर्दण्ड-दर्पप्रसरः परमभट्टारक-महारा-
धिराज-परमेश्वर श्रीमत् सुभिक्षराज (देवः) कुशली टंकणपुर-विषये
तरांगविषये च समुपागतान् सर्वानेव नियोगस्थान् राज-राजन्यक-राजपुत्र-
ामात्य-सामन्त-महासामन्त-महाकर्ता-कृतिक-महादण्डनायक-महाप्रतिहार-महा-
मन्ताधिपति-महाराजप्रमातार-शरभंग-कुमारामात्य- ोपरिक-दुःसाध्यसाधनिक-
ापराधिक-चौरोद्धरणिक-शौल्किक-गौल्मिक-तदायुक्तक-विनियुक्तक-पट्टकापचा-
-सौधभंगाधिकृत-हस्त्यश्वो-ष्ट्रलव्यापृतक-दूतप्रेषणिक-दाण्डिक-दण्डपाशिक-ग-
ामिक-खाड्गिका-भित्वरमाणक-राजस्थानीय-विषयपति-भोगपति-काण्डपति-नर-
श्वपति-खण्डरक्षास्थानाधिकृत-वर्त्मपाल-कोट्टपाल-घट्टपाल-क्षेत्रपाल-प्रान्तपाल-
कुर-महामनुष्य-किशोर-वडवा-गो-महिष्याधिकृत-भट्ट-महत्तमा-ाभीर-वणिक्-श्रे-
पुरोगान् साष्टादशप्रकृत्यधिष्ठानीयान् खस–किरात–द्रविड–कलिंग–गौड हूणोड्र-
ड़-न्ध्र-भेदानाचाण्डाल-पर्यन्तान् सर्वसंवासान् समस्तजनपदान् भटचाट-सेवका-
अन्यांश्च कीर्तितानकीर्तितान् अस्मत्पादपद्मोपजीविनः प्रतिवासिनश्च ब्राह्मणो-

त्तरान् यथार्हं मानयति वोधयति समाज्ञापयति (——) ग्रिस्तु वः संविदितम् उपं
चितवैषयिक-नम्बरम[1]-ग्राम-प्रतिवद्ध वच्छरकसत्कविडिमलाक नामा भूः
नालिकानां वापा तथा भेटसार्यां भूखंडम् अष्टनालिका-वापः तथा वाडिव
भूखण्डं चतुर्णां द्रोणानां वापः तथा भागरुसत्कवनोलकाभिधाना भूखण्डं त्रयणां
वापं तथा सुभट्टकसत्का शरणंखोन[3] रामद्धितं कण्डियाका-परिच्छिन्नं तथा
राकभुतिरोड-सत्कशठिकनामा भूमि द्वय-द्रोण-वापं तथा गोवितंगक सत्क
सृद्धाभिधान-भूमि त्रयद्रोण-वापः तथा वेनवाक-सत्क क्षीरानावा-भिधान
त्रय-द्रोणवापं तथा शोषिजीवाक-सत्क गंगरकनामा भूमि अष्टद्रोणवापा त
जीवाकसीमादित्य-इच्छवलान्ता-सत्क पेट्टकनामा भूमि त्रयद्रोणवापा तथ
नामा भूमि द्वय-द्रोणवापा नाम्बरंगीय[4] समस्त-जनपदानां सत्क न्यायपट्टक
भूमि दश-द्रोण-वापा तथा पंकरहस्तमेकं तथा इच्छाबल-विहलक-महा
प्रथमादित्यानां सत्क बडिवलाभिधाना भूमि षड्द्रोणवापा शिलादित्य-सत्क
खोट्टक नामा भूमि षण्णां वापः तथा श्रीहर्षपुर कर्मान्त-प्रतिवद्ध पूर्व पव
उंगक-परिभुज्यमान पल्लिका (।) एतद्भूमयः पल्लिकाश्च श्रीहर्षपुरीय श्री
विपया तथा वरोषिका-ग्राम-संवंधना उष्णोदक-विज्जट-दुर्जणातंग-विष
चाचटक-वराह-सिट्टक[6]-सत्का नपाभिधान[7] भूखण्ड नवद्रोणवापं तथा
पुत्राणां नपीणां सत्का नय भूखण्ड-चतुष्टयं खारिवापं[8] तथा जातिपाटक
भूइज्जार समद्धितं तथा समिज्जीयं भूखण्डद्वयं नवद्रोण-वापं तथा सत्रक
सत्क पैरी-ग्राम-प्रतिवद्ध गोदोथकाभिधाना भूमिर् विंशद्रोणवापा तथा यो(?
ग्रामनिवासिनां सत्क द्यस्सेरुका नाम भूमिद्वयद्रोणवापा तथा सिहारा नाम भूमि
वापं तथा वलीवर्दशिला नाम भू त्रयद्रोणवापं तथा इहंगनामा भू पंच-द्रो
तथा तिरंगानामा[10] भूः त्रय-द्रोण-वापं तथा कट्टंणशिल्ल नामा भू त्रयद्रोणवा
गान्दोडारिक नामा भू त्रयद्रोणवापं तथा युग नामा भूः द्रोणवापं ककठयाल
भूः त्रयद्रोणवापं तथा पंकरहस्ते द्वय तथा धारणाक-सत्क दालीमूलक न
द्वय-द्रोणवापं तथा शिखन-सत्क ग्रामिदारके भूखण्ड द्वयद्रोणवापं तथा इ
शिलादित्ययोस् सत्क सूष्टधीमा नाम भू पंचद्रोणवापं तथा विषयिणानां

---

[1] नवरंग(र.), [2] वाडिवालिके(र.) [3] शरण्यंखोतु यक्षद्धया(र.)
[4] नायरंगीय (र.), [5] वरमाणक (र.), [6] सिट्टक (र.), [7] नना (र.
द्रोण (६४० सेर बोने की भूमि)=-एक खारी (१६ एकड़) [9] ज
[10] पात्रकोशविका ।

ण्ठक भू चतुर्णां द्रोणानां वापं तथा कट्टुस्थिकानां सत्क चिधाभारिका नाम भू द्रोणवापं तथा रडवक ग्रामिणानां सत्क पन्तकोरापिका नामा भू द्वादशद्रोणवापं ा तुंगादित्य-सत्क लोहरसमेणा भू पण्णालिकानां वापं तथा योषिक-कर्मान्त-वद्ध ग्रासपरक नामा भू पंचदशद्रोणवापः मठिक-समन्विता एतद् भूमयो विष्णु-ा-सम्मेलित-भगवते श्रीनारायण-भट्टारकाय तथा सदायिका-प्रतिवद्ध रच्चप-ल्लका भिधानस्य घाटानि लिख्यंते (——) श्रीसंकटसीमायां पश्चिमतः अण्डारिनि-नक पूर्वतः गंगायाम् उत्तरतः समेहक ग्राम दक्षिणतस् तथा सेवायिकायां बच्छक-क ग्रहणकयाकी सप्तनालिकावापाः भगवते ब्रह्मेश्वर-भट्टारकाय एता भूमय पल्लिके च मया माता-पित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये पवन-विघट्टिताश्वत्थपत्र-वल-तरंग-जीवलोकम् अवलोक्य जल-बुद्बुदाकारम् असारं चायुर् दृष्ट्वा नकलमकर्णाभचपलतां च लक्ष्म्या ज्ञात्वा परलोकनिःश्रेयसोर्थं संसारार्णवतार-र्थञ्च पुण्ये हनि भगवद्भ्यः श्रीदुर्गादेवी-श्रीनारायणभट्टारक-श्रीब्रह्मेश्वर-ट्टारकेभ्यः गन्ध-धूप-दीप-पुष्पोपलेपन-संमार्ज्जन-गीत-वाद्य-नृत्य-वलिचरुस् तत्र वर्तनार्थं खण्डस्फुटित-पुनःसंस्करणार्थं च प्रतिपादितः प्रकृतिपरिहार-युक्ता-चाट-प्रवेश्याम् अकिंचित्प्रग्राह्याम् अनाच्छेद्यां आचन्द्रार्कक्षितिस्थिति-समकालिक-पया उद्धृतपिण्ड-स्वसीमा-गोचर-पर्यन्तं अवृक्षारामोद्भेद-प्रस्रवणोपेतं देवब्राह्मण-क्तभुज्यमान-वर्जितं यतः सुखं पारम्पर्येण परिभुज्यमानानां स्वल्पमपि धरण-धारण-परिपन्थनादिकोपद्रवो न कैश्चित् करणीयो न्यथा व्यतिक्रमे महान् द्रोहः ाद् (।) इति प्रवर्द्धमान-विजयराज्य-सम्वत्सरे चतुर्थं सम्वत् ४ ज्येष्ठ वदि ५ (।) कोत्र महादानाक्षपटलाधिकृत श्रीकमला. . . .लिखितमिदम् महासन्धिविग्रहा-कृत श्रीईश्वरीदत्तेन(,) उत्कीर्णमिदञ्च श्रीनन्दभद्रेण (।)

वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः (।)
यस्य यस्य यदा भूमिस् तस्य तस्य तदा फलम् (॥)
षष्ठि-वर्ष-सहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिदः (।)
आच्छेत्ता चानुमन्ता च तानेव नरकं वसेत् ।
अनूदकेष्वरण्येषु शुष्ककोटरवासिनः ।
कृष्णसर्पा विजायन्ते ब्रह्मदायं हरन्ति य ।
भो राजानः प्रार्थयत्येष रामो भूयो भूयोःप्रार्थनीया नरेन्द्राः ।
सामान्यो यं धर्म्मसेतुर् नराणां काले-काले पालनीयो भवद्भिः ।
इति कमलदलाम्बु-विन्दु-लोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्य-जीवितञ्च ।
सकलमिदमुदाहृतञ्च बुद्ध्वा न हि पुरुषैः परकीर्तयो विलोप्याः ।

(३) पालों-कत्यूरियोंके अभिलेखोंकी तुलना

पालवंशी (१) देवपाल (८१५-५४) के मुंगेरवाले[1] तथा (२) नाराय
(८५७-९११ ई०) के ताम्रलेखोंकी भाषा, लिपि और पदाधिकारियोंको लि
(५) पद्मट[3] और (६) सुभिक्ष राजके[3] ताम्रलखोंसे मिलानेपर जो स
दीख पड़ती है, वह आकस्मिक नहीं हो सकती; विशेषकर जब कि वही स
गुर्जर-प्रतिहारोंके अभिलखोंमें नहीं मिलती—

(क) अधिकारियोंकी सूची—

		१	२	३	४
	(अर्थ)	देवपाल	नारायण	ललित	पद्मट
अभित्वरमाणक	धावनदूत				
अमात्य-राज	राजमंत्री	३	३	५	५
अश्वपति	सवार-नायक			४०	४०
अश्वबलाधिकृत	सवार-सेनापति	२६	२६	२८	२८
आभीर	अहीर			४९	४९
आयुक्तक, तद्-	तदर्थ कमिश्नर	२४	२४	२३	२३
उपचारिक, पट्टक-	अभिलेख-अधिकारी			२६	२६
उपरिक	राज्यपाल	१३	१३	१७	१७
उष्ट्रबलाधिकृत	ऊँट-सेनापति	२६	२६	२८	२८
किशोर-अधिकृत	खच्चरअधिकारी (?)	२७	२७	४७	४७
किशोर-वडवा-गो-महिष्यधिकृत	खच्चर. . अधिकारी	२७	२७	४७	४७
कुमारामात्य	जिला-अधिपति	९	१२	१६	१६
कोषपाल	खजांची	२२	२२	४३	४३
क्षेत्रपाल	कृषि-अध्यक्ष		२०	४५	४५
खड्गिक	खड्गधारी			३४	३४
खंडपति	वनपाल	२३	२३		

वेगदेवी—ललितशूरके (पांडुकेश्वर १) ताम्रपत्रमें।

[1] मुंगेर ताम्रपत्र (As. Res. I. p. 123) [2] भागलपुर-ताम्रपत्र
S. B. XLVI. I. p. 384

[3] पांडुकेश्वर (अब जोशीमठ) में

रक्षास्थानाधिपति	कंजर्वेटर			४१	४१	४२	३५
गमिक	दूत	२९	२९	३३	३३	३३	३६
अधिकृत	गो-अफसर	२७	२७	४७	४७	५०	४३
ल्मक	सिपाही	१९	१९	२२	२२	२१	१३
पाल	डांडेका रक्षक			४४	४४	४५	३८
रोद्धरणिक	चोरनिग्राहक	११	१५	२२	२०	१९	१३
कुर	खश-सामन्त			८	८	४८	४१
पति	घाट-अधिकारी	३२	३०	३९	३९	४०	३३
नायक, महा-	मजिस्ट्रेट	५	११	१२	१२	९	९
पाशिक	पुलीस	१७	१७	३२	३२	३१	२४
डिक	दंडधारी	१६	१६	३१	३१	३०	२३
ाध्यसाधनिक	पुलीस-सुप्रेंटेंडेंट	८	१०	१८	१८	१७	
प्रेषणिक	दूतप्रेषक	२८		३०	३०	२९	२२
ापराधिक	पुलीस पर्यवेक्षक	१४	१४	१९	१९	१८	
प्रोगस्थ	शासननियुक्त			१	१	१	१
क	अभिलेख			१५	२५	२४	१७
कोपचारिक	०अधिकारी			१५	२५	२४	१७
त्यधिष्ठानीय, अष्टादश-१८	प्रजाधिष्ठाता			५२	५२	५५	४८
तहार, महा-	महाअंगरक्षक	६	८	११	११	१०	१०
ातार	सर्वेयर	१०		१४	१४	१३	
न्तपाल	सीमारक्षकअधिकारी	२१	२१	४६	४६	४७	४०
महोत्तम				४८	४८	५१	४४
गपति	उपरिक			३८	३८	३८	३१
ामनुष्य	ग्राम-सरपंच			९	९	४९	४२
राजा				१३	१३	१२	
हिष्यधिकृत	भैंस अफसर	२७	२७	४७	४७	५०	४३
जन्यक	रैनका, राजकुमार	१	१	३	३	३	३
जपुत्र	राजपूत	२	२	४	४	४	४
जस्थानीय		१	२	३	४	५	६
जा				२	२	२	२
वा-अधिकृत	घोडी-अफसर	२७	२७	४७	४७	५०	४३

वणिक्	व्यापारी			५०	५०	५३
वर्त्मपालक	मार्गरक्षक			४२	४२	४३
विनियुक्तक		२५	२५	२४	२४	२३
विषयपति	जिलाधिपति	३१	३१	३७	३७	३७
विषयव्यापृतक	जिला-सचिव					३२
व्यापृतक	सचिव			२९	२९	२८
शरभंग		११		१५	१५	१४
शौल्किक	कर-अफसर	१८	१८	२१	२१	२०
श्रेष्ठी	नगरसेठ			५१	५१	५४
सामन्त				६	६	६
सामन्त, महा-		७	६	७	७	७
सामन्ताधिपति, महा-						११
सौधभंगाधिकृत	महलइंजीनियर			२७	२७	२६
हस्तिबलाधिकृत	गज-सेनानायक	२६	२६	२८	२८	२७
हस्त्यश्वोष्ट्रबलाधिकृत	गज-अश्व-ऊँट०	२६	२६	२७	२८	२७

(ख) **भौगोलिक नाम—**

कत्यूरियोंके अभिलेखोंमें बहुतसे स्थानों, भूभागों तथा जातियोंके ना उल्लेख है, जिनमेंसे बहुत कमका पता लग सका है। "मानसखंड"में भी ब भौगोलिक नाम आते हैं, किन्तु वह निश्चय ही अभिलेखोंसे बहुत पीछेकी कृ यहाँ इन नामोंकी सूची दी जाती है—[1]

नामसूची—

नाम	कहाँ	अभिलेख	राजा
अंडारिगनिक	रत्नावलीसे पूर्व	पांडुकेश्वर ४	सुभिक्ष
अंतग	(भरोंसिक)	”	”
अंतरांग (प्रदेश)[2]		” ३	पद्म.
अंवलिपालका	में व्याघ्रेश्वर	वागेश्वर	भूदेव.

---

[1] यहाँ अभिलेखोंके संकेत हैं: ल१—ललितशूर (पांडुकेश्वर १), ल२—ललि (पांडुकेश्वर २), भू—भूदेव (वागेश्वर), देश—देशट (बालेश्वर), पद्म— (पांडुकेश्वर ३) सुभि-सुभिक्षराज (पांडुकेश्वर ४), देव—देवपाल (मुं

[2] अलकनंदा और भागीरथी के बीचका द्वाबा।

दित्य (प्रदेश)	में पेट्टक[1]	पांडु. ४	सुभि.
च्छावल	शीलादित्य	"	"
ज्जर	में जातिपोतक	"	"
द्वक		पांडुकेश्वर २	ल. २
हंग	योशिका (जोशीमठ)	" ४	सुभि.
शाल	में यमुनाग्राम	वालेश्वर	देश.
गक	भरोसिक	पांडु. ४	सुभि.
टनसिला	घरनाग	"	"
टुस्थिक	में दारक	"	"
डायिक	सुभट्टकमें	"	"
थासिल	आदित्य	"	"
रनसिल	घरनग	"	"
र्कटथल	"	"	"
र्तिकेयपुर		पांडु. १	ल. १.
टाखोट्टनक	शिलादित्य	" ४	सुभि.
गा	रत्नावलीसे उत्तर	"	"
ारक	सोशीजीवक पास	"	"
ांधारिक	घरनाग	"	"
िचिगटक	में यच्छसद्दा	"	"
दोधक	पैरी	"	"
रुन्नासा		" १	ल. १
रनाग	योशिका[2]	" ४	सुभि.
यकूलभुक्ति		वागेश्वर	भू.
ातिपतोक	इज्जरमें	"	"
ंगणपुर[3]		पांडु. ३	पद्म.

---

[1] पेट्टक, कथासिल, न्यायपट्टक, वंदीबल।

[2] इसी प्रदेशमें धारुमेंगक, सिदारा, बलीवर्दशिला, इहंग, रुल्लथ, तिरिंग, टनसिल, गंधोधरिक, पुग, कर्कटथल, रालीमूलक थे।

[3] अलकनंदा–भागीरथी संगमसे ऊपर अलकनंदाकी उपत्यका ही तंगण प्रदेश थी जिसमें तंगणी नामकी आज भी एक चट्टी है।

,,		,, ४	सुभि.
तपोवन		,, २	ल. २
तमेहक	रत्नावली पास	,, ४	सुभि.
तल्लासाट	विहान्दक	,,	,,
तिरिंग	घरनाग	,,	,,
तुंगादित्य[1]	रणदावक....	,,	,,
थपलियासारी	इन्द्रवक पास	पांडु. २	ल. २
दारक	कटुस्थिकामें	पांडु. ४	सुभि.
दालीमूलक	घरनाग	,,	,,
दावक	तुंगादित्यमें	,,	,,
दुज्जन	भरोसिकामें	पांडु. ४	सुभि.
दुर्गभट्ट	हर्षपुर	,,	,,
न्यायपट्टक	आदित्य	,,	,,
पणभूतिक		,, १	ल. १
पर्वभानु	उगंक	,, ४	सुभि.
पूग	घरनाग	,,	,,
पेट्टक	आदित्य	,,	,,
पैरी	में गोदोघ	,,	,,
वदरिकाश्रम[2]	तंगणपुरमें	,,	,,
वंदीवल	आदित्य	,,	,,
वलीवर्द	घरनाग	,,	,,
वरियाल		,,	,,
भरोसिक	सिट्टक[3]	,,	,,
भिहलक	शिलादित्य	,,	,,
भेटसरी		,,	,,
महाराजियक	शिलादित्य	,,	,,
यच्छसद्दा	गोचिगाटक	,,	,,
यमुना		वालेश्वर	देशट.

---

[1] में रणदावक और लोहरस।

[2] वदरिकाश्रममें [3] सिट्टक, उसोक, विजत, दुज्जत, अंतग, वाचटक, वराह

शिका[1]	घासमेंगक	पांडु. ४	सुभि.
नावली[2]	सडायिक पास	"	"
लनाथ		"	"
हरस	तुंगादित्य	"	"
तोलिक		"	"
च्छतक	विधिमालके पास	"	"
तिपतोक	इज्जर	"	"
राह	भरोसिक	"	"
चाटक	"	"	"
जट	"	"	"
धिमालका		"	"
हान्दक		"	"
ाग्रेश्वर	अंवलिपालिका	वागेश्वर	भू.
ला		पांडु. ४	सुभि.
लादित्य[3]		"	"
रा	वेनवक	"	"
कट		पांडु. ४	सुभि.
दायिक	रत्नावली	"	"
टिकतोक		"	"
त्रकपुत्र	समिज्जीय	"	"
रना	सुभट्टक पास	"	"
ामिज्जीय	सत्रकपुत्र	"	"
ट्टक	भरोसिक	"	"
दारा	योशिका	"	"
ला		"	"
भट्टक	सरना पास	"	"

---

[1] योशिक (जोशीमठ) में घासमेंगक, सिद्दारा, वलीवर्दशिला, ईहंग, रुल्लथ,
तीरंग, कटनसिल, गंधोधारिक, पुग, कर्कटथल, द्राली [2] मूलक इसकी सीमा
ी पूर्वमें अंदारिगनिक पश्चिममें संकट, दक्षिणमें तमेहक (सेनयिक)
[3] इसमें थे—इच्छावल, भिहलक, महाराजविरु, खोराखोट्टनक।

सेनीयक	तमेहक	"	"
सोशीजीवक	गंगारक पास	"	"
हर्षपुर		"	"

(ग) जाति-नामसूची–

आन्ध्र	पांडु. १, २	ल. १, २
"	वालेश्वर	देश.
"	पांडु. ४	सुभि.
आन्ध्रक	मुँगेर	देव.
ओड्र	पांडु. १, २	ल. १, २
"	पांडु ३	पद्म.
"	पांडु. ४	सुभि.
कलिंग	पांडु. १, २	ल. १, २
"	वालेश्वर	देश.
"	पांडु. ३	पद्म.
"	मुँगेर	देव.
किरात	पांडु. २	ल. २
"	पांडु. ३	पद्म.
"	" ४	सुभि.
खष (खश, खस)	" १ २	ल. १ २
"	वालेश्वर	देश.
"	पांडु ३	पद्म.
"	" ४	सुभि.
"	मुँगेर	देव.
गौड़	पांडु. १, २	ल. १ ल. २
"	वालेश्वर	देश.
"	पांडु ३	पद्म.
"	पांडु ४	सुभि.
"	मुँगेर	देव.
चंडाल	पांडु. १, २	ल. १, २
"	वालेश्वर	देश.
"	पांडु. ३	पद्म

,	" ४	सुभि.
,	मुँगेर	देव.
वेड़	पांडु १, २	ल. १, २
	" ३	पद्म.
	" ४,	सुभि.
ट (तिब्बती)	मुँगेर	देव.
ह	पांडु. २	ल. २
,,	वालेश्वर	देश.
,,	पांडु. ३	पद्म.
,,	"	सुभि.
,,	मुँगेर	देव.
	"	"
सत (ल्हासा)		
ग	पांडु. २	ल. २
,,	" ३	पद्म.
,,	" ४	सुभि.
,,	मुँगेर	देव.

(घ) मानसखंडमें आये भौगोलिक नाम—

गस्त्येश्वर	अगस्त्यमुनि (मंदाकिनी-तट)
ग्नितीर्थ	अग्निकुंड
सुरगिरि	पालीसे ऊपर (तल्ला डोरामें)
ाकाशगंगा	तुंगनाथसे निकली नदी (आगास)
हृषिकेष	हृषिकेश
र्णप्रयाग	
ल्पस्थल	
ल्पेश्वर लिंग	उरगम गाँवमें
षाय	कशार (कलमांटिया-शिखर, अलमोड़ा)
ात्यायनी (श्यामा) देवी—सियाही देवी	
ालिक्षेत्र	काल वंगवारा
ाली	कैल गंगा
ूर्म-शिला	कानादेव पहाड़ (पट्टी चरालमें छीरापानीके पास)
ूर्माचल	कुमाऊँ

केतुमान्	गोरीफाटमें एक पर्वतवाँही
केरलगि	छे-छ्ल (व्यांस)
कौशिकी	कोसी नदी
क्षीर गंगा	मंदाकिनीकी ऊपरी धारा
खेचर तीर्थ	खोजरनाथ (तिव्वत)
गणनाथ	अलमोड़ाके पास
"	व्यांसमें
गर्ग (पर्वत)	गागर
गार्गी	गौला
"	गगास नदी
गालव	ऋषि
गुप्तवाराणसी	गुप्तकाशी (मारी गाँव)
गोदावरी	गाँव
गोपेश्वर	गाँव (चमोलीके पास)
गोपीवन	गोपाई
गोरक्षाश्रम	त्रियुगी
गोस्थल	गोपेश्वर
गोस्थल-क्षेत्र	गोथल (मल्ला-नागपुर)
गंगाद्वार	हरद्वार
गंगेश्वर	फलासी गाँव (तल्ला-नागपुर)
गंडकी	गिधिया (काली कुमाऊँ)
गौरी गिरि	डोल्मा ला (?)
घोषेश्वर	नेलङ्के ऊपर (माना, रुदता, जाट संगम)
चक्रेश्वर	विकिया साईंमें नैलेश्वर
चतुर्दंष्ट्र	चौंदंस प्रदेश
चंद्रभागा -	चंद्रभागा
चंद्रशेखर	
चर्मण्वती	मेना नदी (उरगम)
चंडीश	शिवगण
चित्रशिला	रानीवागके पास
जीवार	जोहार

तिर्धाम	जोशीमठ
लातीर्थ	ज्वालामुखी (कांगडा)
र	जागेश्वर पहाड़
क	सर्पगाँव (सोमेश्वरके समीप)
क्षेत्र	पिंडार पार आधाकोश
वन	जोशीमठके पास
सा	टौंस नदी
रक	तारकधुरा (भोट-मार्ग)
ष	नैनीताल
र	जागेश्वर
रा	”
विक्रमनदी	सिनी (त्रियुगी-पास)
तीर्थ	
यंतीसर	रानी दमयंतीका ताल(नैनीताल जि०)
रक(शिखर)	संथोली दरकोट
कावन	जागेश्वर
ण	दारुम (गंगोली)
न	जागेश्वरपहाड़
श्वर	भ्युँखी गाँव
सनेश्वर	सुकोचर (पट्टी अठागुलीमें, वसुलीसरके पास)
की	दवका नदी
कुंड	नागनाथके पास (वि० नागपुर)
णन	द्वारकाके परे
ण	दूनागिरि (द्वारा-हाट)
दप्रयाग	नन्दकिनी-अलकनन्दा संगम
कुंड	नलपटन
कोण सरोवर	नौकुचिया (नैनीताल जि०)
गपुर	नाकूरी (पर्गना दानपुर)
ला	कैलास पर्वत-मालाका शिखर
लगिरि	कोकसका डंडा (वार्गश्वर)

पंचशिरा	पंचचूली
पंचसरोवर	कालीह्लद, कामह्लद, पद्मह्लद
पताका	ध्वज पहाड़ (पट्टी खरायत)
पाटन	वालेश्वरसे ऊपर
पांडुस्थान	पांडुकेश्वर (वदरीनाथके पास)
पावन (पहाड़)	पट्टी माली (शिरा)
पिंडारक	पिंडार नदी
पिनाकीश	पिननाथ (बैजनाथके पास)
पुष्कर	त्रिशूलका एक शिखर
पुष्करशिखर	पोखरी गाँवके ऊपर (वि० नागपुर)
पुष्पभद्र	भीमतालकी नदी
पुलोमा शिखर	दरमा-व्यांस-विभाजक गिरि-दंड
फाल्गुण तीर्थ	सोमेश्वरके पास
ब्रह्मकपाल	बदरीनाथके पास चट्टान
ब्रह्मद्वार	ब्रह्मकंठी
ब्रह्मपुत्रस्थान	वान-उपत्यकामें
ब्रह्म-सरोवर	मानसरोवर
वालखिल्य	सुसवा नदी (देहरादून)
विन्ध्य	अगरगार
भिल्ल-क्षेत्र	भिलंगना-उपत्यका (टिहरीमें त्रियुगीसे पश्चिम)
भीम-सरोवर	भीमताल
भीमसेन	भीम उडियार (गुफा)
भुवनेश्वर, पाताल-	(पट्टी बराँवमें)
भृगुतुंग	पोखरी (पट्टी-भेरङ्)
मणिभद्रा	महादेवसर (प० दसोली)
मन्धाता	उखीमठ मंदिर
मर्कंतेश्वर	माको गाँव (तुंगनाथके पंडोंका)
मल्लनारायण	मूलेन (पिंडारीके मार्गमें सुरिङ्से ऊपर)
मल्लिका	माला गाँवके पास
मल्लिकादेवी	नदीकी चट्टान
मल्लिकार्जुन	अस्कोटमें

हापंथ	केदारके ऊपर शिखर-हिमानी
हाभद्र	मल्ली-दसोलीमें
हिषमर्दनी	त्रियुगी गाँव
ध्त्रो	नलपटनसे उत्तर
नस	मानसरोवर, मि-फम्-छो
तीश्वर	गोपेश्वरसे नीचे, त्रिशूल-संगमपर
थवाहिनी	पश्चिमी रामगंगा
भा	अल्मोड़ामें मिशन-स्कूलसे निकली धारा
जराजेश्वरी	रांसी तरसाली गाँव
मसरोवर	कुहुरिया ताल
वण ह्लद	राकस ताल
क्ष्मण-स्थान	लछमन भूला
स्य-तरंगिणी	लातूर नदी (टिहरी)
घ्रशिखर	भदकोट
ोह	लोहाघाट नदी
रादित्य	कटारमल्ल सूर्यमंदिर
ह्लितीर्थ	अग्नितीर्थ (गौरीकुंड)
गलक्षेत्र	टेहरीमें
गेश्वर	व्याघ्रेश्वर
राणसी क्षेत्र	उत्तरकाशी
द्रोण	विधोन
नायकद्वार	त्रियुगी-मंदाकिनी संगम
भांडेश्वर	राना (डोरा-मल्ला)के पास
रह्वती	विरहीगंगा
ल्वेश्वर	
ष्णुगंगा	अलकनन्दा
ष्णुतीर्थ	यमुना-तमसा-संगम (कलसीके पास)
णु	वेनशिखर (आदिबदरीके पास)
तालीन	खमगढ़
तरणी	कुदरीगढ़
याघ्रेश्वर	वागेश्वर

व्यासाश्रम	व्यांस
शतद्रु	सतलज
शंभु	गुरला (?)
शाकंभरी क्षेत्र	टेहरीमें
शारदा	करनाली नदी
शाली	सुवाल नदी
शाल्मलि	सालम
शिवकुंड	मध-मन्दाकिनीके संगमपर
शीतवनि	कोटा (दून)
शेषनाग	नागमंदिर
शेषेश्वर	टेहरीमें
सरयू	करनाली नदी
सरस्वती	सुन्दर ढुंगा
सारा	लोहवाकी नदी
सिद्धकूट	नागसिद्ध
सीताह्रद	कुहुरियाके समीप (अब शुष्क)
सूर्यकुंड	बागेश्वरसे ऊपर सरयूपार
सौम्यकाशी	गुप्तकाशी
स्वयंभू	सितोला (अलमोड़ा समीपे)
स्वर्गारोहणी	महापंथके ऊपरके शिखर-समूह
हरिद्रानदी	जलमाल (सिनीगढ़)
हरिणकाली०	गत्-क्युत्-छो, गोर, ग्यल-छो, छोल-गन (राव
हंसतीर्थ	कानदेव
हिरण्यगर्भ	गौरीकुंड
हेमशृंग	नागशिखर

३. कत्यूरीवंशका उद्गम

परम्पराके अनुसार इस वंशका संस्थापक वासुदेव और समापक वीरदे
दोनोंका नाम किसी अभिलेखमें नहीं है। आश्चर्य तो यह है, कि
वंशावलियोंमें भी नहीं हैं। वैजनाथके मूर्तिसंग्रहालयमें दो शिलालेख हैं,
एकमें "महाराजाधिराज परमभट्टारक श्री लखनपाल देव के" भूमिदा

द्यनाथ कार्तिकेयपुर" का उल्लेख है। यहीं रुद्रपाल देव, तिभुवनपाल देवके म भी उल्लिखित हैं, जिनका भी पता दोनों वंशावलियोंमें नहीं है। उनके रेमें कहा जा सकता है, कि डोटी और अस्कोट शाखाके अतिरिक्त पाली (द्वारा-ट) की भाँति वैजनाथमें भी कोई कत्यूरी शाखा राज करती होगी, लखनपाल सी शाखाका राजा था।

(१) कत्यूरी और शक—

शत्रुद्वारा पदच्युत राजाओं अथवा राजवंशोंका दुर्गम पर्वतोंमें शरण लेना तिहासमें बहुत देखा जाता है। श्वेत-हूणोंने जब बलख और मध्यएसियाके याण राजाओंको परास्त किया, तो उन्होंने दरवाज़, बदखशाँ आदि की दुर्गम हाड़ियोंमें शरण ली और वहाँके सीधेसादे निवासियोंकी श्रद्धा तथा शक मन्तुओंकी सहायतासे वह छोटे-मोटे राज्य स्थापित करनेमें सफल हुए। यही वस्था हूणों तथा दूसरे शत्रुओंके प्रहारसे भारतीय शक-शासकोंकी भी हुई होगी। टी और अस्कोटकी वंशावलियोंमें कत्यूरियोंका मूलपुरुष शालिवाहन माना गया । गढ़वालकी दो वंशावलियों (विलियम्स और अल्मोड़ाकी) में भी क्रमशः ठवें तथा ग्यारहवें राजा शालिवाहन हैं। यद्यपि शालिवाहन आंध्र-शातवाहनोंका म है, जो कितने ही समयतक शकोंके प्रतिद्वन्द्वी तथा संबंधी भी रहे, किन्तु स तरह शकोंके शकाब्दको शालिवाहन शकाब्द भी कहा जाता है, वैसे ही शक लिये शालिवाहनका प्रयोग किया जा सकता था। कत्यूरियोंके शकोंसे संबंधका ससे भी अधिक प्रमाण हैं, शकों जैसी बूटधारी सूर्यकी मूर्तियाँ, जो गोरेश्वर, टारमल, बैजनाथ, बागेश्वर, द्वाराहाट सभी जगहोंमें बहुतायतसे मिली हैं।

(२) काबुली कटोर और कत्यूर—

कत्यूरको कार्तिकेयपुर या कार्तिकपुरका अपभ्रंश माना जाता है, किन्तु र्तिकपुर 7 कत्तियउर 7 कत्तिउर 7 कत्यूर अधिक स्वाभाविक है। कत्यूरका कभी भी कटार भी हो जाता है, यह कटारमलके प्रसिद्ध सूर्यमंदिरके नामसे प्रकट ता है। अटकिन्सनने लिखा है[1]—"ऊपरी कुनार-उपत्यकाकी चित्राल, स्सन और मस्तूज रियासतोंका नाम (कश्कर) है। ......इन रियासतोंके सक आज भी **कटोरवंशके** हैं, (जिनमें) खुशवक्तिया शाखा यस्सन और मस्तूजमें हती है और शाहकटोर-शाखा चित्रालमें ।......अभिलेखोंसे आठवींसे लहवीं सदी तक एक वंशकी परम्परा प्राप्त होती है, जिससे कि अनेक छोटे-छोटे

---

[1] At. Vol II, p. 381

राजवंश इन पहाड़ोंमें आ फूटे। गढवाल-कुमाऊंके खसिया–कत्यूरीके उदय लिये हमें सिन्धु पारके इन पहाड़ी खसिया-कटोरोंकी ओर देखना होगा। " कत्यूर और कटोरसे संबंध स्थापित करनेके लिये यह आवश्यक नहीं है, जि कत्यूरोंको सिन्धुपारसे आया मानें, और न यही आवश्यक है, कि कटोरोंको माना जाये। खश और शक एक ही जातिकी दो लहरें हैं, जिनमें शक और प्रथम शताब्दीमें भारतमें आये, जब कि खस आर्योंके हिमालयमें फैलनेसे यहां फैल गये थे। कटोर और कत्यूर खशोंसे अपनी आत्मीयता भले ही रहे हों, विशेषकर खशोंके देशमें आके बस जानेपर, वह वस्तुतः शकोंकी शाखाके अंतर्गत थे, तभी उनका संबंध शकशालिवाहन–कनिष्कसे जोड़ा सकता है। शब्द-साम्य, सूर्यपूजा-साम्य आदिसे कत्यूर और कटोर अवश्य ए सकते हैं।

अट्किन्सनकी संचित[1] सामग्रीका सारांश यह है: मुसलमान ऐतिहासि अनुसार काबुलमें कटोरमान वंशका राज्य था। इसके राजाओंमें एक वासुदे जिसका उत्तराधिकारी कनक अंतिम राजा हुआ। जोशीमठ (प्रथम कार्तिके के कत्यूरीवंशके संस्थापकका नाम भी वासुदेव था। पाँचवीं सदीके कस्पियनसे यमुना तकका भूभाग श्वेतहूणों (हेफ्तालोंके) हाथमें था, कि सदीके मध्यमें काबुल तकका उनका राज्य तुर्कोंने ले लिया, और भारत मिहिरकुलको पराजित हो कश्मीरमें शरण लेनी पड़ी। इसी समय काबु तुर्कोंका शासन स्थापित हुआ होगा। प्रारम्भिक मुसलमान भूगोलज्ञोंके पता लगता है, कि उनके समयमें काबुल—जिसे अल्बेरूनी कपिशा[2] भी लि है—के निवासी हिन्दू और शासक तुर्क (मुसलमान नहीं) थे। इतिहा इस्तखी (९१५ ई०) लिखता है: "काबुलका दुर्ग अपनी दृढ़ताके लिये है, जिसपर पहुँचनेका एक ही मार्ग है। वहाँ मुसलमान भी हैं, किन्तु अ नगरमें हिन्दके काफिर रहते हैं।" काबुलकी ओर मुसलमानोंका प्रथम आ ६४४ ई० में खलीफा उस्मानके इराकी क्षत्रप अब्दुल्लाके समयमें हुआ था, गाजी अवदुर्रहमान ६६१ ई० में ही काबुल पहुंच सका, जब कि उसने वहाँके (काबुलशाही) को बंदी करके मुसलमान बनाया। राजाने फिर इस् छोड़ मुसलमानोंको मार भगानेके लिये भारतके राजाओंसे प्रार्थना की।

---

[1] At. Vol. II, pp. 382, 984, 430-43

[2] अल्-हिन्द

य: अपने सारे राज्यको स्वायत्त करना चाहा, किन्तु उसे अरब-सेनाके सामने रास्त हो वार्षिक कर देना स्वीकार करना पड़ा। ६८३–८४ ई० में कावुलके जाने कर देनेसे इन्कार किया, जिसपर अरबोंने आक्रमणकर उसे मार डाला। सके वाद भी संघर्ष वंद नहीं हुआ, कभी कावुलका राजा विल्कुल स्वतंत्र हो जाता र कभी करद वन जाता। ६९७–९८ में राजा रत्नपाल (रनवल) ने मुस्लिम नाको वुरी तरह हराया और अरव सेनापतिको अपना प्राण बड़े मंहगे मोल लेना ड़ा। अव वगदादके अब्वासी खलीफोंका शासन था, जिसकी स्थापनामें सबसे ारी हाथ ईरानी हुज्जाज़का था। हुज्जाजने (७००–१ में) वदला लेनेके लिये वदुर्रहमानके नेतृत्वमें एक वड़ी सेना कावुल भेजी, जो राजा कावुलको हरानेमें फल हुई, किन्तु हुज्जाजने विजेताका जैसा स्वागत-सम्मान करना चाहिए था, हीं किया, क्योंकि उसने स्थायी रूपसे कावुलपर अधिकार नहीं कर लिया। ब्दुर्रहमानने कावुलके राजासे समझौता करके विद्रोह किया, किन्तु वह असफल हो ात्मघात करनेके लिए वाध्य हुआ। भावी खलीफा मामून जव खुरासानका वर्नर था, उसी समय कावुलपर अधिकार करके उसने राजाको मुसलमान वनाया, न्तु यह विजय भी अस्थायी थी। वगदादी खलीफोंके साम्राज्यके ध्वंसके वाद थापित होनेवाले खुरासान-मध्यएसियाके शासक याकूव लैसपुत्रने ८६९-७० में ावुलपर अधिकार कर उसके राजाको वंदी वना लिया। यह विजय कुछ स्थायी रूर थी, किन्तु अन्तिम नहीं। वेरूनीके अनुसार कनक कटोरमान-वंश तथा कावुलका तिम राजा था। उसे वह तुर्क वंशका वतलाता है। वेरूनीकी जन्मभूमि ख्वारेज्म ई सदियोंतक तुर्कोंके शासनमें रही। वह उनके जातिवंशसे भली प्रकार परिचित ा, इसलिए वह कटोरमानोंको तुर्क कहनेमें गलती नहीं कर सकता, किन्तु समें संदेह है, कि छठी सदीसे चार सदियोंतक अन्य हिन्दुओंमें व्याह-शादी करके ी कटोरमान अपनी तुर्की (मंगोली) मुखमुद्राको कायम रख सके होंगे। कटोर-ान कनकका राज्य व्राह्मण-मंत्री कलारके हाथमें चला गया, जिसके उत्तराधि-कारी भीम, जयपाल, आनंदपाल और निरंजनपाल थे। निरंजनपाल १०२१ में गद्दीपर वैठा, जिसके पाँच साल वाद उसका पुत्र भीमपाल राज्यारूढ़ हुआ।

पहिलेके मुसलमान सुलतान कावुलसे दूर रहते थे, किन्तु ९६१ ई०में गजनीके (तुर्क) सुल्तान अल्पतगिनने गजनीमें अपना राज्य स्थापित किया, इसी समयसे कावुलके वौद्धों और व्राह्मणधर्मियोंपर जवर्दस्त अत्याचार होने लगा, जिससे वह या तो मुसलमान हो गए अथवा पहाड़ों या भारतकी ओर भाग गये। यही अवस्था उसके उत्तराधिकारी सुवुक-तगिन तथा तत्पुत्र महमूद गजनवीके समय भी रही।

महमूदके पुत्र मसऊद (१०३२ ई०) के समय एक नवमुस्लिम बने हिंदू सभी हिन्दू कटोरोंको सुल्तानके आधीन बनवाया।

तैमूरने १४०८ ई० में कटोरोंपर आक्रमण किया था। उस समय उपत्यकामें कटोर ही नहीं तुर्क, ऐमक (मंगोल) और अरब भी निवास तो भी अधिकांश निवासी ताजिक थे, जैसा कि आज भी पासकी (कपिशा) उपत्यकामें हैं। उत्तर-पूर्वके पहाड़ोंमें तब भी काफिर कटोर और रहते थे। इस समय कटोरोंकी भूमि कश्मीरसे काबुलतकके पहाड़ोंमें फैली जहांगीरके समय (१६१९ ई०में) इस प्रदेश—पकली सरकार (जिले)के कटोर प्रदेश, दक्षिणमें घक्कर, पूरबमें कश्मीरी पर्वत और पश्चिममें अटक- थे। आजकल कटोर गिल्गित, दरेल, और चित्रालके इलाकोंका नाम है, जैसा कि पहिले कहा गया, खुशवक्तिया कटोर यस्सनके शासक हैं, महतर (राजा) शाहकटोर हैं। गिल्गितका अंतिम राजा श्री बुद्धदत्त भी कटोर-वंशी था।

(३) कत्यूर-कार्तिकपुर

जिस तरह पहाड़ोंमें काबुल-गिल्गित-काशगरसे कुमाऊँ और आगे तक कश, या शक जातिका विस्तार रहा है, वही बात यदि उनके उत्तराधिकारियों और कत्यूरोंके समय हो, तो कोई आश्चर्य नहीं है। कुषाण-शकोंके कार्तिक (कार्तिकेय या स्कन्द) की भी मूर्ति रहती थी, इसलिए उनके अपने वंश-गौरव तथा वीरत्वकी सूचनाके लिए यदि देव-सेनानीके नाम पर राजधानीको कार्तिकपुर या कार्तिकेयपुर कहें, तो स्वाभाविक ही है। प्रथम कार्तिकेयपुर जोशीमठमें था, जिसके पतनपर यह नाम कत्यूरवंश नयी राजधानी वैद्यनाथ और गौमती-उपत्यकाके लिये व्यवहृत होने लगा।

४. हिमाचल बौद्धसे ब्राह्मणधर्मी

परम्परा वासुदेव (८५० ई०) को कार्तिकेयपुर तथा कत्यूरीवंशका बतलाती है, और यह भी कि वही बौद्धसे ब्राह्मणधर्मी बना। अभिलेखोंमें तेरह राजाओंमें उसका नाम नहीं मिलता। वसंतनदेवको वासुदेव मान पहिले कहे अनुसार वह कन्नौजके राजा भोज प्रथम (८३६–९२) और विग्रहपाल (८४५–५७) का समकालीन होगा। भोटके शासनका फेंकनेका काम शायद इसीने किया, यह कह आये हैं। यह भी संभव है, कि कटोरवंशीके इस भूभागमें आ जमनेमें भोटसाम्राज्य कारण बना हो,

ट-साम्राज्य कटोरोंके देश गिल्गित (उत्तर कटोर) तक फैला हुआ था, जहां कि अरब और भोट राज्योंकी सीमायें मिलती थीं। वासुदेव "गिरिराज-चक्र-डामणि" की उपाधिसे भी विभूषित किया गया है। शंकराचार्य (७८८-८२० ई०) सुदेव या वंसतनके समकालीन हो सकते हैं। परम्परा शंकराचार्यके हिमालय-इस भागमें आनेकी भी बात कहती है। आनेपर वह वसंतन या वासुदेवके समय ये होंगे। किन्तु यह कोरी कल्पना है, कि शंकरने भारतके और स्थानों तथा से भी बौद्धोंका उच्छेद किया। वागेश्वर (व्याघ्रेश्वर), वैद्यनाथ आदिकी शेष प्रकारकी शिवमूर्तियों और लिंगोंसे पता लगता है, कि यहाँका धर्म माहेश्वर दाय, (लकुलीश) था, जिसका गुर्जर-प्रतिहार कालमें उत्तर-भारतमें सर्वत्र र पाया जाता था। इसमें शिवलिंगको पूरे शिश्नका रूप देनेकी कोशिश की ती थी। अभिलेखोंमें कत्यूरी राजाओंने अपनेको "परममाहेश्वर" लिखवाया और उनके समयकी शिवमूर्तियाँ उन्हें लकुलीश पंथसे जोड़ती हैं। नवीं शताब्दी रतके बहुतसे भागोंमें बौद्धधर्मके ह्रासकी शताब्दी नहीं मानी जा सकती। ी समय पूर्व-भारतमें नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविख्यात बौद्ध विद्यापीठ दूर तक ज्ञान-विज्ञानका प्रसार कर रहे थे। हाँ, सिंध, मुलतानपर एक शता-के मुस्लिम-शासनके कारण वहाँ ब्राह्मण और बौद्ध दोनों धर्मोंको क्षति जरूर थी। हिमालयमें कश्मीर अब भी बौद्धगढ़ था, जहांके पंडितोंने संस्कृतसे ब्बतीभाषामें सैकड़ों अनमोलग्रंथोंका अनुवाद करनेमें भारी सहायता की। हिमालयके इस भागमें बौद्ध धर्मका ह्रास हुआ और उसका स्थान ब्राह्मण ने लिया, तो इसका कारण शंकराचार्य नहीं थे, उनका तो यहां उस समय नाम लोग नहीं जानते होंगे।

वस्तुस्थिति यह थी: कम या अधिक दो शताब्दियोंसे इस भागपर विदेशी टदेशियोंका शासन था, जिसमें कभी कभी जन-साधारण पर अत्याचार, ब्बतियोंके बौद्ध होनेके कारण बौद्धोंके प्रति पक्षपात एवं ब्राह्मणोंके प्रति द्वेष या उदासीनता भी रही होगी। तिब्बती लोग ब्राह्मणोंके वर्णाश्रम-म्राज्यसे दूर रहते थे, उससे उन्हें कुछ लेना-देना नहीं था, इसलिए वह अपना देश आए कुषाणोंकी भाँति उनके फंदेमें फंसनेके लिए मजबूर नहीं थे। जब ब्बती राज-शक्ति विकेन्द्रित होने लगी, केदारखंड परसे उसका दबाव हटने ा और यहाँ शक्ति हथियानेके लिए विदेशी (भोट) क्षत्रप तथा स्वदेशी मन्तोंका द्वन्द्व मचा, उस समय विदेशी बौद्ध सत्ताधारियोंके हिन्दुत्वको स्वीकार करनेके कारण भोट क्षत्रपका बल निर्बल रहा होगा और स्वदेशीय जातीयताके

समर्थक सामन्तोंका बल मजबूत। इस प्रकार राजनीतिक युद्धमें जौके साथ भाँति बौद्धधर्म पिस गया होगा। इसी समय शक-वंशीय कत्यूरी वसंतन देवने हवाका रुख देख बौद्धधर्म छोड़ ब्राह्मणधर्मकी शरण ली होगी, भोट- उठानेमें सहायता की होगी, और इस प्रकार अलकनंदाकी घाटीका एक केदारखंडका राजा बन गया।

ऐतिहासिक परिस्थिति बतलाती है, कि यहां नवीं शताब्दी तक बौद्ध अच्छा प्रचार था, किन्तु यह आश्चर्यकी बात है, कि गढवाल-कुमाऊँमें बौ पुरातात्विक चिह्नोंका सर्वथा अभाव-सा है। बैजनाथ (अलमोड़ जिस मूर्तिको लोग बुद्धकी मूर्ति बतलाते हैं, वह कुबेर या भैरवकी मूर्ति है, हर्गिज नहीं। द्वाराहाट (द्वारा) में दसवीं-बारहवीं सदीके एक पीतल त पाषाण जैन मूर्तियाँ विद्यमान हैं, किन्तु वहाँ भी कोई बौद्ध मूर्ति नहीं दि पड़ती। सिर्फ बागेश्वरकी दो पाषाणमूर्तियाँ बुद्धमूर्ति-सी मालूम होती हैं, जो जलते मंदिरमें से निकली हैं, किंतु सामनेसे पत्थरके एक मोटे स्तरके निकल जानेसे वह इतनी विरूप हो गई हैं, कि पद्मासनके साथ भू मुद्राकी रूपरेखा ही से उनके बुद्धमूर्ति होनेका संदेह होता है। इससे मालूम होता है, कि इस स्वदेशी-विदेशी कलहमें नगरों-ग्रामोंमें आग लगा ध्वंसलीला हुई थी, उसके शिकार मंदिर और विहार भी हुए थे। यह भी कुमाऊँमें बौद्ध मूर्तियोंके अभावका कारण हो सकता है। वैसे ति विहारोंके देखनेसे मालूम है, कि उस समय केदारखंडके बौद्धविहारोंकी भी पत्थरकी नहीं बल्कि अधिकतर धातु, काष्ठ और मिट्टीकी रही होंगी। मूर्तियाँ तो कत्यूरीकालके पीछेके संघर्षोंमें नष्ट हुयी होंगी। काष्ठमूर्तियां दहनसे कैसे बच पातीं? मिट्टीकी मूर्तियां तो स्वतः भंगुर होती हैं, उनकी लिए किसी गोबी या तकलामकानकी बालुकाराशि यहाँ नहीं थी।

५. कत्यूरी वंशावली

सुभिक्षराज (१०४५-६५ ई०)के बादका मौन शायद कत्यूरी ह्रासका सूचक है, तो भी उनके आधुनिक उत्तराधिकारियोंकी परम्परा है, कि तेरहवीं सदीके अंतमें मूलवंशका अंतिम बिखराव हुआ, जब अस्कोट, पाली (द्वाराहाट)में स्वतंत्र कत्यूरी राजवंश स्थापित हुए।

दोनों परम्पराओंके अनुसार राजा शालिवाहन इस वंशके प्रथम पुरुष बात भी अपने भीतर ऐतिहासिक महत्व रखती है, कि जहाँ सारे उत्तर

क्रमी संवत्का प्रचार था, वहाँ हिमाचलमें शकसंवत्की आज भी प्रधानता और शकसंवतीय दक्षिणापथकी भाँति यहाँ सौरपंचांग चलता है। मैदानके राजपूत भी अपना पूर्वज शालिवाहनको मानते हैं, और डोटीके रैनकाके राधिकारी नेपालके डोटीवाले अपनेको शालिवाहन-वंशज तथा बैस-राजपूत ते हैं। यहाँ हम डोटी, अस्कोट और पालीके घरानोंसे प्राप्त राजावलिको हैं (डोटीकी परम्पराके २९ राजाओंकी जगहपर अस्कोटमें ४८ राजा मिलते हैं)—

डोटी[1]	अस्कोट[2]	पाली	अभिलेख
१. शालिवाहन देव	१. शालिवाहन	०	०
२. शक्तिवाहन देव	२. संजय	०	०
	३. कुमार	०	०
३. हरिवर्म देव	४. हरित सिंह	०	०
४. ब्रह्मदेव	५. ब्रह्म	०	०
	६. शक	०	०
५. वज्र"	७. वज्र	०	०
	८. धनंजय (?)	०	०
६. विक्रमादित्य"	९. विक्रमादित्य	०	०
	१०. सारंगधर	०	०
७. धर्मपाल"	११. धर्मपाल	०	०
८. नीलपाल"	१२. नीलैपाल	०	०
९. मुंजराज"	·	०	०
०. भोज	१३. भोजराज	०	०
	१४. विनयपाल	०	०
	१५. भुजनपाल	०	०
१. समरसिह देव	१६. समरसी	०	०
२. असल देव	१७. असल	०	०
	१८. अशोक	०	०
३. सारंग्य देव	१९. सारंग	०	०
	२०. नज	०	०
	२१. कामजय	०	०

---

[1] Atkinson. Vol. II, pp. 530-31.

[2] वहीं, pp. 531-32.

१४. नकुलदेव	२२. शालि-नकुल	०	०
	२३. गणपति	०	०
१५. जयसिंह	२४. जयसिंह	०	०
	२५. संकसर	०	०
	२६. सनेश्वर	०	०
१६. अनिजल "	२७. ऋसिध्यि	०	०
१७. विद्याराज "	२८. विधिराज	०	०
१८. पृथिवीश्वर "	२९. पृथिवीश्वर	०	०
१९. चनपाल "	३०. वलाकदेव	०	०
२०. असंति "	३१. असंतिदेव	१. असंतिदेव	०
२१. वसंति ,,	३२. वसंति ,,	२. वसंतिदेव	१. वसंत
			(८५
२२. कटारमल्ल "	३३. कटारमल्ल		२. खर्पर
			(८७
	३४. सोतदेव	३. सोतदेव	
२३. सिंहमल्ल "	३५. सिंध "		
२४. फनिमल्ल "	३६. कीना	४. फनेत्र	
२५. निंफि	३७. रानाकीना		३. निंवर
			(९१५
२६. निलपराय "	३८. निलपराय		
२७. वज्रवाहु "	३९. वज्रवाहु		
२८. गौरांग "	४०. गौर		
२९. सीयमल्ल "	४१. सकिल		
३०. ईलराज "	४२. इतिनराज		
३१. नीलराज "	४३. तिलंगराज		
३८. फटिकसिलाराज "	४४. उदकसिला		
३३. पिथियराज "	४५. प्रीतम		
३४. धाम "	४६. धाम	५. धामदेव	
३५. व्रह्मदेव	४७. व्रह्मदेव	६. व्रह्मदेव	
३६. त्रिलोकपाल देव	४८. त्रिलोकपाल"	३. असन देव	
३७. निरंजनदेव	४९. अभयपाल	४. अभयदेव	

	(१२७९ ई०)	
नागमल्ल	५०. निर्भयपाल	५. निर्भयदेव
अर्जुनशाही	५१. भारतीपाल	६. भारतीपाल

डोटी और आस्कोटकी राजावलियोंमें भेद होते भी कितने ही नामोंमें समा- ा है, अंतिम राजाओंमें पालीवंशावली भी साथ देती है, किन्तु अभिलेखोंमें ये १३ कत्यूरी राजाओंको इनसे मिलाना वहुत कठिन है।

६. अंतिम दिन

यद्यपि वीरदेवका नाम न किसी अभिलेखमें मिलता है, न कत्यूरी-वंशकी सी प्रचलित वंशावलीमें ही, तो भी परम्परा उसे ही महान् कत्यूरी वंशका अंतिम जा वतलाती है। इसके अत्याचारोंकी कितनी ही कथाएँ प्रसिद्ध हैं। आज भी ाऊँमें देवताके सिरपर आनेके समय देववाहन कहता है—

हंकारो[1], तुम्हारा वावा जिन ऊँचा-गढ[2] नीचा वनाया।
नीचा गढ ऊँचा वनाया, मार गड मैदान वनाया।
हंकारो, तुम्हारा वावा सुलटी नाली ले ल्हिछा[3], [4]
उलटी नाली ले दिंछा[5] तरणी[6] तिरिया र्होण[7] नि दिना[8]।
वरुणी-वाकरी र्होण नि दिना।
महाराजनके राजा[9] पेड़ोंपर फलफूल नि र्होण दिना।
हंकारो तुम्हारा वावा, मान[10] चवाँणीको[11] घट रिङो[12] छा।
वांजा[13] घटकी[14] भाग ल्हिं छा[15]”

उस समय प्रजापर होते अत्याचारकी इस कहानीका अर्थ है: राजाकी ारसे कूटनेके लिए लोगोंको धान तौलते समय नालीको[16] उलटकर पेंदीकी रसे नापा जाता और कुटकर आनेपर चावलको नालीको सीधा करके नाप

---

[1] पुकारो [2] महल या दुर्ग [3] सो लेते थे। [4] [5] देते थे [6] तरुणी
[7] दुहने [8] दिने [9] कत्यूरी महाराजाधिराज [10]
[12] [13] [14]

दूसरी भी कहावत है—“बांजा घटकी भाग उघौनी, बाभी गैंकी दूध छीनी।
उलटी नाली भर दीनी, कणक बनै लीनी।

[16] मापका एक पात्र जिसमें दो सेर अन्न समाता है।

लिया जाता। तरुणी स्त्रियोंको राजा जवर्दस्ती पकड़वा मँगाता, और घर बकरी भी नहीं वचने पाती। महाराजाधिराज किसीके पेड़पर भी नहीं रहने देता था। कौसानीके पास अब भी एक निर्झरका नाम " है, जहाँसे (सीधे जानेपर भी ३-४ मील) दूर राजान्तःपुर (हाट) तक स्त्री कतार खड़ी कर दी जाती, क्योंकि महाराजा झरनेका ताजा पानी पीना थे। ये लोग झरनेका पानी कलशमें भरकर उसे एक हाथसे दूसरे हाथ राजाके पास पहुँचा देते थे। वीरदेवके वारेमें यह भी कहा जाता है, कि उस विरुद्ध अपनी मामी तिलोत्तमादेवीको रख लिया था।[1] प्रजा उसके अत्या त्राहि-त्राहि कर रही थी। जब वह पालकी (डांडी) पर चलता, तो उसके ढोनेवालोंके कंधेपर छेदकर चमड़ेके भीतरसे डलवाता। दो ढोनेवालोंने इस चारीके अंत करनेका निश्चय कर लिया, और जिस समय राजाकी सवा खड्डके किनारेसे गुजर रही थी, दोनोंने डांडी लिये दिये खड्डमें छलांग मार

वीरदेवके वाद कत्यूरी राज्य छिन्न-भिन्न होकर अपने खानदान और वालोंमें बँट गया। गढ़वाल शायद पहले ही अलग हो गया था। कुमाऊँमें कत्यूरी ब्रह्मदेवने काली-कुमाऊँ (काली-उपत्यका) का शासन सँभाला, उस (२) दूसरी शायद जेठी शाखा डोटीमें शासन करने लगी; (३) तीसरी सुईमें था; चली गई; (४) चौथी वारामंडल (अलमोड़ा इलाकेमें) राज करने (५) पाँचवीं शाखा कत्यूरी (वैजनाथ-वागेश्वर) और दानपुर पर्गनोंकी हुई; (६) छठी शाखाका राज्य द्वाराहाट और लखनपुरमें था। गढ़वालमें कत्यूरी शाखायें राज करती रही होंगी, किंतु उनकी ऐतिहासिक सामग्री परम्पराओंसे ही मिल सकती हैं, जिसके संग्रह करनेकी कोशिश नहीं की ग

§४. बहुराजकता

(११९०–१४०० ई०)

१. अशोकचल्ल (११९१ ई०)

वंशावलियोंमें, शायद वीरदेवके भी बाद, त्रिलोकपाल अंतिम कत्यूरी जिसका एक (ज्येष्ठ) पुत्र निरंजनदेव डोटीमें रहा और दूसरा अभयपाल १२ अस्कोट चला गया। किन्तु अभिलेखों द्वारा हमें मालूम है, कि ११९१ ई०में

---

[1] "मामी तिले धारो बोला"

लने कत्यूरियोंकी भूमिको विजय किया अर्थात् इस नेपाली (?) विजेताने उस न कत्यूरी राज्यका ध्वंस किया। इसके दो साल बाद (११९३ ई०में) उसके णी महान् पड़ोसी कन्नौजके गहड़वारोंका ध्वंस मुहम्मद गोरीने किया।

अशोकचल्लने अपनी विजयके परिचायक दो अभिलेख छोड़े हैं—(१) नमेंसे एक **गोपेश्वरमें** १६ फुट लंबे विशाल लौह त्रिशूलपर उत्कीर्ण है, और) दूसरा बाडाहाट (उत्तर-काशी) में २१ फुट लंबे पुराने अष्टधातुके त्रिशूलपर। श्वर चमोलीसे तीन मील पहिले केदारनाथसे आनेवाली सड़कपर है, अर्थात् कत्यूरोंकी पुरानी राजधानी जोशीमठ(कार्तिकेयपुर)से ३१ मीलपर। कत्यूरी ोंमें यही प्रदेश तंगण था, जिसका परिचायक चमोलीसे[1] आगे पीपलकोटीसे र तंगणी चट्टी अब भी मौजूद है। गोपेश्वर और बाडाहाट (उत्तरकाशी)के भलेखोंसे मालूम होता है, कि बारहवीं सदीके अंतमें **अशोकचल्लका** अधिकार कनन्दासे भागीरथी तककी सारी **केदारभूमि** अर्थात् आजके टेहरी और गढ़वाल नों जिलोंपर था। गूगे(पश्चिमी मानसरोवर-प्रान्त)के भोटनृपति परमभट्टारक गराज द्वारा बनवाई बुद्धकी भव्य धातु-मूर्ति बाराहाटमें आज भी दत्तात्रेयके मसे पूजी जा रही है, जिससे पता लगता है कि ग्यारहवीं शताब्दीके आरंभमें **भल्याणा** तककी भागीरथी उपत्यका कत्यूरियोंके हाथमें नहीं रह गई थी।

(१) अशोकचल्लने अपने गोपेश्वरके अभिलेखमें लिखा है—[2]

"ओं स्वास्ति। जिसकी प्रतापाग्निने उसके शत्रुओंकी तलवारोंको भस्म कर या, जिस (के पदों)की नखमणि शत्रु-राजाओंकी वधुओंके ललाटसिंदूरसे रंजित जो अपनी कीर्तिके गांभीर्य और विस्तारमें सागर-सा है, जिसके पादुकापीठके नोंकी प्रभा शत्रु-मित्र-राजगणकी भास्वर शिरोमणियोंके किरणजालसे चारों र उद्भासित है, जो नृपगजोंका सिंह, बेतालके (राजा) **विक्रमादित्य** की भाँति नवभूतलका राजा है, जो नारायणकी भाँति सर्पराज-गरुड़-वाहन तथा शवनिष्पन्न है, उसी **गौडवंशोद्भव** वैराथ-कुल-तिलक, अभिनव-बोधिसत्त्वावतार अवनि तिलक परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीमान् **अशोकमल्लने** अपनी सर्वगामिनी हिनीसे **केदार-भूमिको** जीता। जीते भूभागको अपना प्रदेश बना, युद्धसे निवृत्त हो स पृथ्वीपतिने यहां **पद्मपाद**-राजायतन बना स्वभोग्य सर्व वस्तुसे अलंकृत कर दान र भोज दिये। शकसंवत् गताब्द १११३ (११९१ ई०) सौर-मानतः ० ० ० गत

---

[1] बदरीनाथ मार्गपर अलकनन्दाके किनारे। [2] Ae. Re. XI A. 477 अट्-न्सनने अशोकमल्ल लिखा है, किन्तु मैंने उसे अशोकचल्ल पढ़ा है।

दिनांक गणपति १२, शुक्रवासर नवमी चंद्र ००० लिखितं मल्लश्रीराज ईश्वरीदेव, पंडित श्री रंजनदेव, और श्री चंद्रोदय सेना-पति सेनानायकके

गोपेश्वरके विशाल लोहत्रिशूलपर द्वाराहाट वाले छंदोंमें अशोक निम्न लेख भी है—[1]

“यशस्वी महाराजा अनेकमल्लने अपने दिग्विजयका विस्तार कर इस पुण्यस्थानपर स्तम्भ-लांछनके नीचे स्वविक्रमजित जगत्के प्रभुओंका किया....और इस प्रकार इस विजयस्तम्भको पुनः स्थापित कर कीर्ति की—परास्त हुए योग्य शत्रुको ऊपर उठाना पुण्य-कर्म है।”

(२) **बाराहाट** (उत्तरकाशी) के २१ फुट लंबे पीतलके विशाल वारेमें (अटकिन्सनके अनुसार) स्थानीय परम्परा कहती है, कि इसे किसी (भोट) राजाने स्थापित किया, और यह प्रदेश पहिले तिब्बतके अधी परम्परा क्या, जैसा कि पहिले कहा गया, दत्तात्रेयके नामसे अब भी पूजी बुद्धमूर्तिपर भोटराज नागराजका लेख “चम्-बो नगरजइ थुव-प (नागराजके मुनि) भी वाराहाटके भोट-राज्यके अन्तर्गत होनेकी पुष्टि कर कमिश्नर ट्रेलने त्रिशूलके अभिलेखकी प्रतिलिपि (कलकत्ता) ऐसियाटिक यटीके पास भेजी। डा० व० ह० मिलने अपने अध्ययनका जो परिणाम सोस जर्नलमें[2] प्रकाशित कराया, वह पूर्ण नहीं है, तो भी उसका कुछ अंश निम्न प्र

“(१)....यस्य तत् कर्म यच्छृंगोच्छ्रितं दीप्तं....(२) ग्रीष्म पृथिवीरसशोषिणी असंख्य सेना द्वारा उन्नत-वैभव तत्पुत्र सिंहासन पर उसने अपने धनुषको नवाये विना लोभ-त्याग सुमंत्रणासे शासन किया। चरित नामसे पहिले ज्ञात, सर्वधर्मकृत्यपटु उसने परमशक्तीश्वरकी भांति विरोधियोंकी पंक्तिको उनके रथादिको चूर्ण छिन्न-भिन्न कर दिया (३) पुत्रस्य (पिताके पुत्रका) ....तिलकं यावदंके पि ध्वजे तावत् कीर्तिः योरक्षामयी तस्यास्तु राज्ञः (तिलकको जब तक धारण करता है, तब राजाकी कीर्ति और सुकीर्ति रक्षित होवे)”

(३) **तत्कालीन मानसप्रदेश**—वाडाहाटका यह त्रिशूल अशोकचल्लके पहिलेका है।

अशोकचल्ल या अनेकमल्ल कहांका राजा था? जहाँतक उसके अपने

---

[1] At. Vol. II, p. 515 (डाक्टर मिलके अंग्रेजी अनुवादसे)

[2] G. A B. S. Vol II, pp. 34–48, plate IX

ोंसे पता लगता है, वह दानव-भूतलका स्वामी गौड़-वंशोद्भूत वैराथकुल-तिलक । यह तीनों वातें नेपालके लिच्छवि या किसी और राजापर नहीं घटतीं। दानव-ल नाम "हूणदेश" (पश्चिमी तिव्वत) पर घट सकता है, किन्तु पश्चिमी तिव्वतके ट-राजाओंको गौड़वंशी कहना कठिन है। वारहवीं सदीमें मल्लनामधारी जा नेपालमें होते थे, यह संदिग्ध है; किन्तु पड़ोसके गूंगे (पश्चिमी मानसरोवर श) में प्रायः इसी समय मल्लनामधारी राजा थे, और वह वाराहाटमें बुद्ध-ित (अतएव विहार) स्थापित करनेवाले राजा नागराजके ही वंशज थे—[1]

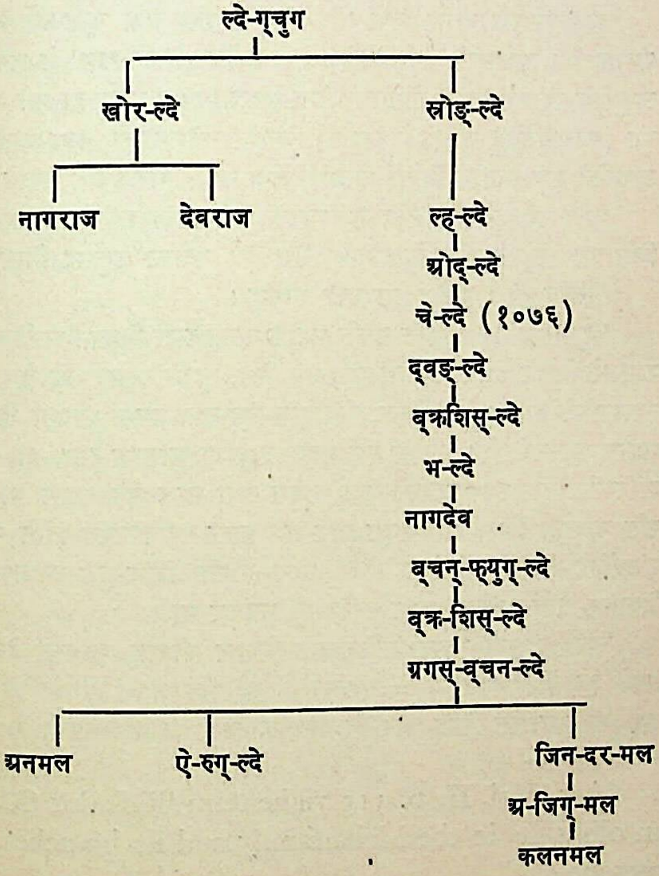
ल्दे-ग्चुग
खोर-ल्दे
स्रोङ्-ल्दे
नागराज
देवराज
ल्ह-ल्दे
अोद्-ल्दे
चे-ल्दे (१०७६)
द्वङ्-ल्दे
व्क्रशिस्-ल्दे
भ-ल्दे
नागदेव
ब्चन्-फ्युग्-ल्दे
व्क्र-शिस्-ल्दे
अगस्-व्चन-ल्दे
अनमल
ऐ-रुग्-ल्दे
जिन-दर-मल
अ-जिग्-मल
कलनमल

---

[1] देखो "तिब्बतमें बौद्ध धर्म" परिशिष्ट ११ (मेरा)

चे-ल्देका समय (१०७६ ई०) निश्चित है, जिससे आठवीं पीढ़ीमें
हुआ था, अर्थात् आठ पीढ़ियोंके लिये १२५ वर्ष लेनेपर अनेकमल्ल और अन
समयएक हो जाता है। जो भी हो, यह विचारणीय वात है, कि इधर
शङ्शुङ् (थोलिङ्) के इलाकेमें मल्लनाम-धारी राजा वारहवीं सदी
होते थे।[1]

२. क्राचल्ल देव (१२२३ ई०)

अनेकमल्लके वत्तीस वर्षों बाद इस नये विजेताके कुमाऊँमें आने
लगता है। क्राचल्लके नेपाली होनेका पता नेपालके इतिहास[2] से लगता है
ठाकुरोंके राज्यके समय नेपालमें टोलों-मुहल्लोंतकके राजा हो गये थे।
पुर (काठमांडव) में १२ राजा थे, जिन्हें झिनिमथकुल कहा जाता था
ठाकुरोंने वहुतसे बौद्ध विहार वनवाये, तथा उनमें वृत्तिवंधान लगाये थे।

क्राचल्लदेवका अभिलेख वालेश्वरके उसी ताम्रपत्रकी पीठपर उत्
जिस पर कत्यूरी राजा देशटदेवका लेख है। लेखका अनुवाद निम्न प्र

"सिद्धि हो। भरोत राज्यकी समृद्धि।

"युद्धमें वलाद् आकृष्ट उसके भटोंके भालों द्वारा निहत-निपातित श
कपालसे विखरे अनर्घ मोतियों द्वारा प्रभासित, नाकपति द्वारा ही जेय वि
स्वस्वामिके द्वारा सदा दृढ़ीकृत, गोब्राह्मण-हित-रक्षा-प्रवणा श्रीमती शिरा
शासन कर रही है। उसका पुत्र महावीर राजा क्राचल्ल हुआ, जो सभी
धारियों और शास्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ, प्रमुख तथा शील-दानपरायण था।
पति क्राचल्ल देव भाला, खड्ग और पाश द्वारा नवोद्गतदंत-दंतीसे युद्ध
पांडवोंकी भांति अद्भुत था। वह परम-सौगत[3] जिनि-कुल-कमलका प्र
दिवाकर आयुधशक्तिमें और पराक्रममें भयंकर था।

"परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान् क्राचल्ल देव
अपने १६ वें विजयराज्य(=संवत्सर)में अधिकृत क्षेत्रमें हथियारोंसे अप
शत्रुचक्रको परास्त किया और विध्वस्त कीर्तिपुर (कार्तिकेयपुर) के रा

---

[1] Atk. Vol. II, p. 515 "The term 'Raika' or 'Rain
an old title in the Malla family and its branches
present day"

[2] Atk. Vol. II, p. 51

[3] परमबौद्ध।

टकर वहां अपना अधिकार स्थापित किया। फिर उसने पुराने राजाओं द्वारा
त्त भूमिका निरीक्षण किया, और उन सभीको उनके धनागमके साथ अब
मवंदनीय एक-रुद्र श्री वालेश्वर ००० (के पूजाधिकारी) वंगज ब्राह्मण भट्ट
रायणको ०००योगक्षेमार्थ दान किया।

यहाँ राजाकी भगिनीका यह श्लोक है—

“मेघ भूरिशः वर्षाजलको पर्वतों और नदियोंपर फैलाते हैं,
किन्तु जगदाह्लादक यह कीर्ति त्रिभुवनमें फैलती है।”

फिर महारानीका यह श्लोक है—

“दानादि गुण श्रेष्ठ हैं, किन्तु वह (नारी) और भी (श्रेष्ठ) है, जो स्वधर्म-परायणा सदा स्वपतिभक्ता है, क्योंकि काल-मुख (सवका) भक्षक है।”

श्री याहडदेव मांडलिक
श्री चंद्रदेव ″
श्री हरिराज राउत्तराज
श्री अनिलादित्य ″
श्री विनयचंद्र मांडलिक
श्री विद्याचंद्र मांडलिक
श्री जयसिंह ″
श्री जीहलदेव ″
श्री वल्लालदेव ″
श्री मूसदेव ″

न अपने पारिषदों तथा मित्रामात्योंसे मंत्रणा कर और अपने कर्तव्य कर्मपर
ारकर (क्राचल्ल देवने) उपरोक्त दान नैयायिक, तांत्रिक, पारिषद सत्पुरुष,
, विवेकी, कलियुगमें गद्य-पद्य-काव्य-रचनामें प्रख्यात कवि, कृत्यानुष्ठान-
यण, जातकफलगणनादिचतुर, शकुनशास्त्रपटु, लोक-प्रसिद्ध नन्दपुत्र (भट्ट-
ायण) को प्रदान किया।

“उक्त दान भूमिका सीमान्त निम्न प्रकार है—पूर्वमें स्वहारगाड़ी, दक्षिणमें
डकोट-पर्यन्त, पश्चिममें तलकोटा तक और उत्तरमें लघौलतक। इस प्रकार
सीमावद्ध, कोनदेवमें अवस्थित आकर-नदीतट-जंगल, तथा उनकी उपजको
दानपत्र द्वारा (हमने) यावत्-चंद्र-दिवाकर सदा प्रवर्तित रहनेके लिये
दिया।

सभी शक्तिशाली (राजा) जो समय-समयपर मेरे वंशमें पैदा होंगे, तथा
दूसरे भूपति इस (दानकी) सदा रक्षा करें,
श्रीक्राचल्लदेवस्य यावद् अम्भोजिनीपति।
विहरतु भुवि तावत् कीर्तिरस्य नृपकुमुदाकरस्य ॥
[जव तक कमलिनी-पति (सूर्य) हैं, तव तक इस नृपकमलाकर श्री क्राचल्लदेव
की कीर्ति पृथिवीपर विहरे]

सौंदर्य में चंद्र और रतिपति समान, दरिद्रोंके लिए कल्पतरु, वीरता गु
मणिसा, सभामें भवानीपतिसा सर्वगुणोंवाला, धनुर्धरत्वमें स्वयं भीष्म-
न्यायमें धर्म-सुत (युधिष्ठिर) सा क्राचल्ल कलियुगमें शत्रुगजनिपूद
हमारे मित्र मित्रतामें दृढ़ रह पावें समृद्धि,
सदा वर्षभर भूपाल न्याय-शासन करें भूपर।
रहे सदा चतुर्विध राजनीति नववधू सी तुम्हारे साथ।
चापार्धमणिशेखर देव देवें सौभाग्य मानवोंको।
(इति) शक संवत् ११४५ (१२२३ई०) पौष कृष्ण द्वितिया सो
कर्कमें चंद्र, धनुमें सूर्य, शनि उसीका अनुगामी, कन्यामें मंगल, वृ
वृहस्पति और शुक्र, कुम्भमें बुध, मेषमें ascending node और
णपूर्वमें discending node दूलू-समीपस्थ श्रीसंपन्न नगरमें लि
सर्व जगत्का मंगल हो।"

क्राचल्ल जिनिकुलोत्पन्न तथा संभवतः दूलूका निवासी था। वह बौ
किंतु संकीर्ण-साम्प्रदायिकताका शिकार नहीं, इसीलिए वालेश्वर महादे
ब्राह्मण पुरोहितको दान देते उसे संकोच नहीं हुआ। उसके दस सचिवोंमें
जिहलदेव और जयसिंह देव खसिया राजा जीहल और जय मालूम हो
दो राउत्त हरिराज और अनिलादित्य डोमकोटवालों जैसी उपाधि र
श्रीचंद्रदेव, विनयचंद्र और विद्याचंद्र चंद्रनामधारी पीछेके चंद्रवंशके रा
उपनाम धारण किये हैं।

§५. पंवार-वंश

गढ़वाल नाम पड़नेका कारण यही गढ़ थे। कत्यूरियोंके शासनके
होने तथा अशोकचल्ल, क्राचल्लदेवके वाहरी शासनके अस्थिर होनेके का
गढ़ोंमें विभक्त हो केदार-खसमंडल गढ़वाल वन गया। कत्यूरी स्वयं
खस थे और इन वावन गढ़ोंके युगमें भी खशोंकी ही प्रधानता थी। यह
कत्यूरियोंका अन्त और पंवारोंका आरंभ अर्थात् १२००–१४०
ये गढ़वाले ठाकुर आपसमें लड़ते लूटपाट मचाते रहते थे। यही नहीं
मैदान तक धावा वोला करते। जहाँ ऊपरी हिमालयके समीपवाले
पैनखंडा, नागपुर—के सुंगढ़ और वुढेरे निचले पहाड़ोंको लूटते वहां स्वयं
भोटवासियोंका शिकार वनते थे। "एक राजा (ठाकुर) दूसरे

जाको दंड नहीं दे सकता था, न स्वयं अपनी लुटेरू प्रजाको दंड देना पसंद करता ।"[1] यह ठकुराई या वहुराजकता उस समय गढ़वालमें ही नहीं वल्कि पालसे कश्मीर तक सर्वत्र विद्यमान थी।

१. बावन गढ़

यहाँ ५२ गढ़ थे, जिनके कारण केदारखंड (खसमंडल) का वावनी और ढ़वाल नाम पड़ा, जिसे संकल्पमें "गढ़वाल" भी कहते हैं। ५२ गढ़ हैं[2]—

नाम	पर्गना या पट्टी	किस जातिका	विशेष
१. अजमीर	अजमीर	पयाल	
२. इडिया	रवाईं वडकोट	इडिया	रूपचंद द्वारा ध्वस्त, यहां भैरव-मंदिर है
३. उपु	उदयपुर	चौहान	
उल्का	देवलगढ़		
४. एरासू	श्रीनगरके ऊपर		
५. कंडार	नागपुर	कंडारी	अंतिम राजा नरवीरसिंह पंवारोंसे हारकर मंदाकिनीमें डूब मरा
६. कांडा	रावतस्यूँ	रावत	
७. कुइली	कुइली	सजवाण	जौरासीगढ़ भी कहते हैं
८. कुजेगी	कुजेगी	सजवाण	अंतिम थोकदार गोविंद सिंह
९. कोल्लीगढ़	वछ्वाणस्यूँ	वछ्वाणविस्ट	
०. गडताङ्	टकनौर	भोट	वंशका पता नहीं
१. गढ़कोट	मल्ला ढांगू	वगडवाल विस्ट	
२. गुजड़ू	गुजड़ू		
गुरन (देखो श्रीगुरूगढ़)			
घघटीगढ़	तल्ला सलाण		पुराना गढ़

---

[1] गढ़वालका इतिहास, पृ० ३१४

[2] गढ़वालका इतिहास, पृ० ३२३-३०

१३. चम्पा			
१४. चाँदपुर	तेली चाँदपुर	सूर्यवंशी भानुप्रताप	पंवार कनकपालने
१५. चौंडा	शीली चाँदपुर	चौंडाल	
१६. चौंदकोट	चौंदकोट	चौंदकोटी	
१७. जौंट	जौनपुर		
जौरासी (देखो कुहली)			
१८. जौलपुर			
१९. डोडराक्वाँरा	विशेर (महासू)		
ढांगूगढ़	गंगासलाण		
२०. तोप		तोपाल	तुलसिंहने तोप
२१. दशोली	दशोली		मानवर प्रतापी
२२. देवल	देवलगढ़		देवल राजा नि
२३. धौना	इडवालस्यूँ	धौन्याल	
२४. नागपुर	नागपुर	नागवंशी	अंतिम राजा स
२५. नयाल	कटूलस्यूँ	नयाल	अंतिम ठाकुर
२६. नाला	देहरादून		अब नालागढ़ी
पैनखंडा	पैनखंडा		जोशीमठसे ८ नीचे हेलङ्के
२७. फल्याण	फल्दाकोट	फल्याण ब्राह्मण	शमशेरसिंह ठा ब्राह्मणोंको दान
२८. बदलपुर	बदलपुर		
२९. बधाण	बधाण	बधाणी	पिंडार नदीके
३०. बनगढ़	बनगढ़		अलकनंदाके द
३१. बाग	गंगासलाण	बागूडी नेगी	बागडी भी कहते
३२. बागर	बागर	नागवंशी राणा	धिरवाण खसियों अधिकार
३३. बिराल्टा	जौनपुर	रावत	अंतिम थोकदार
३४. भरदार	भरदार		अलकनंदाके

. भरपूर	भरपूर	सजवाण	अंतिम थोकदार गोविंदसिंह
६. भुवना मवागढ़	गंगा-सलाण		
७. मुंगरा	खाईं	रावत	अब भी रौतेले रहते हैं
८. मोल्या	रमोली	रमोला	
९. रतन	कुजणी	धमादा	ब्रह्मपुरीके ऊपर
०. खाड	वदरीनाथमार्गे	खाडी	
१. राणी	राणीगढ़ पट्टी	खाती	
२. रामी	शिमला	राणा	
३. रैंका	रैंका	रमोला	
४. लंगूर	लंगूर पट्टी		भैरवका प्रसिद्ध मंदिर
५. लोद		लोदी	
६. लोदन			
७. लोहवा	लोहवा	लोहवाल नेगी	दिलेवरसिंह और प्रमोदसिंह प्रतापी
८. श्रीगुरु	सलाण	पडियार(परिहार)	अंतिम राजा विनोदसिंह
९. संगेला	तैल चामी	संगेला विस्ट	
०. सांकरी	खाईं	राणा	
१. सावली	सावली खाटली		
२. सिलगढ़	सिलगढ़	सजवाण	अंतिम राजा सवलसिंह

२. वंशावलि

जिस प्रकार अठारहवीं सदीमें नेपालमें वहुराजकताको हटाकर गोरखा- शने एक वड़ा राज्य स्थापित किया, और उससे चार शताब्दियों पूर्व चंदवंशने माऊँको एकतावद्ध किया; वही काम गढ़वालमें पँवार-वंशने किया। इस शका आरंभ चंदोंकी ही भाँति अंधकाराच्छन्न है। हो सकता है, वह नीचेसे ाये हों, यह भी हो सकता है, कि किसी खसिया सरदारने ही सारे गढ़ोंको तोड़- र एक गढ़वाल वना, और अधिक सम्माननीय वंशकी खोजमें पँवारोंके साथ अपना वंध जोड़ना चाहा हो। कुलीनतामें कोई अंतर नहीं पड़ता, आखिर अग्निकुलके ाजपूत पँवार भी शुद्ध शकवंशी हैं, खस भी शकोंकी ही एक पुरातन शाखा है।

इस वंशके इतिहासके वारेमें कुछ और लिखनेसे पहले इसकी वंशावली
अच्छा होगा। सबसे पुरानी वंशावली हार्डविक्ने १७९६ ई०में पा
ब्रेकेटकी वंशावली १८४९की है, विलियम्सने पीछेकी एक वंशावली दी
एक वंशावली अल्मोड़ासे प्राप्त हुई थी। पंडित हरिकृष्ण रतूड़ीकी वं
ब्रेकेटकी ही है। हार्डविक[1]वाली वंशावली (१७९६) सबसे पुरानी
वंशावली होनेपर भी, फतेहशाहसे पहलेके राजाओंके लिये अत्यन्त अवि
है। इस वंशके इतिहासका आरंभ अधिकसे अधिक अजयपालसे हुआ मा
सकता है, कनकपाल या भगदत्तको रखना वंशको अतिप्राचीन सिद्ध क
प्रयत्न मात्र है। हार्डविकके उच्चारण भी वहुत संदिग्ध हैं। रतूड़ी (
विलियम्स और अल्मोड़ासे प्राप्त वंशावलियाँ निम्न प्रकार है—

रतूड़ी और ब्रेकेट	विलियम्स	अल्मोड़ा
		१. भगवानपाल
		२. अभयपाल
		३. विसेषपाल
१. कनकपाल	१. कनकपाल	४. कर्णपाल
२. श्यामपाल	२. विश्वेश्वरपाल	५. क्षेमपाल
	३. सुमतिपाल	६. व्यक्तपाल
३. पांडुपाल	४. पूरनपाल	७. सुरथपाल
४. अभिगतपाल	५. अभिगतपाल	८. जयतिपाल

---

[1] हार्डविककी वंशावलि इस प्रकार हैं—

१. भगदत्त, २. अदयपाल, ३. विजय, ४. लंक, ५. बेहरम, ६. करम, ७.
यनदेव, ८. हर, ९. गोविन, १०. राम, ११. रनजीत, १२. इंदरसेन, १३.
१४. मंगल, १५. चुरामन, १६. चिंता, १७. पूरन, १८. विर्खभान, १९.
२०. सूरे, २१. खरगसिंह, २२. सूरत, २३. महान, २४. अनूप, २५.
२६. हरी, २७. जगरनाथ, २८. विजे, २९. गोकुल, ३०. राम, ३१. गोपी
लछे ३३. प्रेम, ३४. सदानन्द ३५. परमा, ३६. महा, ३७. सुख, ३८.
३९. तारा, ४०. महा, ४१. गुलाब, ४२. रामनरायन, ४३. गोविंद, ४४.
४५. जगत, ४६. महताब, ४७. शिताब, ४८. आनंद, ४९. हरया, ५०.
५१. रनजीत, ५२. रामरू, ५३. चितरू, ५४. झगरू, ५५. हरू, ५६.
५७. दूलभ, ५८. पिरथी।

सीगतपाल	६. भुक्तिपाल	९. पूर्णपाल
रत्नपाल	७. रेतीपाल	१०. अव्यक्तपाल
शालिवाहन	८. शालिवाहन	११. शालिवाहन
		१२. संगितपाल
		१३. मंगितपाल
		१४. रतनपाल
विधिपाल	९. मदनपाल	१५. मदनपाल
मदनपाल	१०. विधिपाल	१६. विधिपाल
भक्लिपाल	११. भगदत्तपाल	१७. भगदत्तपाल
	१२. विभोगपाल	
जयचंद्रपाल	१३. जयचंद्र	१८. जयचंद्रपाल
पृथिवीपाल	१४. हीरतपाल	१९. कीर्तिपाल
मदनपाल	१५. मदनसहायपाल	२०. मदनपाल
अगस्तपाल	१६. अविगतपाल	
सुरतिपाल	१७. सूरजपाल	
जयतपाल	१८. जयतपाल	
सत्त्य (अनन्त) पाल		
आनन्दपाल	१९. अनिरुद्धपाल	२१. अनिरुद्धपाल
विभोगपाल	२०. विभोगपाल	२२. विभोगितपाल
शुभयान (सुभजान) ,,	२१. गुग्यानपाल	२३. सुवधन कोटपाल
विक्रमपाल	२२. विक्रमपाल	२४. विक्रमपाल
विचित्रपाल	२३. विचित्रपाल	२६. विजयपाल
हंसपाल	२४. हंसपाल	२६. हंसपाल
सोन (सोहन) पाल	२५. सोन (सुवर्ण) पाल	२७. सोनपाल
कान्ति (कदिल) ,,	२६. कान्तिकृपापाल	२८. कान्हपाल
कामदेव	२७. कामदेव	२९. संधिपाल
सुलक्षणपाल	२८. सुलक्षणपाल	३०. सुलक्षणदेव
सुदक्षण (लखन) ,,	२९. महालक्षणपाल	३१. लक्षणपाल
		३२. अलक्षणपाल
अनन्तपाल	३०. सतपाल	३३. अनन्तपाल
पूर्वदेवपाल	३१. अपूर्वदेव	३४. अभिपाल

३१. अभयपाल		३५. अभयपाल
		३६. अजयपाल
३२. जयरामपाल	३२. जय	३७. अजेयपाल
३३. आशलपाल		३८. असाप्रतापपा
		३९. जयदेवपाल
३४. जगत्पाल		४०. गनितपाल
३५. जितपाल	३३. जितंगपाल	४१. जितार्थपाल
३६. आनन्दपाल	३४. कल्याणपाल	४२. कल्याणपाल
		४३. अनपाल
		४४. दिपाल
३७. अजयपाल (१५००-१९ ई०)	३५. अजयपाल	४५. (अजयपाल)
३८. कल्याणशाह (१५१९-२९)	३६. अनन्तपाल	४६. प्रियनिहारपा
३९. सुन्दरपाल (१५२९-३९)	३७. सुन्दरपाल	४७. सुन्दरपाल
४०. हंसदेवपाल (१५३९-४७)	३८. सहजपाल	४८. सहजपाल
४१. विजयपाल (१५४९-५५)	३९. विजयपाल	४९. विजयपाल
४२. सहजपाल (१५५५-७५)		
४३. बलभद्र (बहादुर) शाह (१५७५-९१)	४०. बहादुरशाह	५०. बलभद्रशाह
	४१. शीतलशाह	५१. शीतलशाह
४४. मानशाह (१५९१-१६१०)[1]	४२. मानशाह	५२. मानशाह
४५. श्यामशाह (१६१०-२९)	४३. श्यामशाह	५३. श्यामशाह
		५४. दुलारामशाह

---

[1] १५४७–१६०८ ई० "विराट हृदय" (शंभुप्रसाद बहुगुणा) पृ०

महीपतिशाह (१६२९-४६)	४४. महीपतिशाह	५५. महीपतिशाह
पृथिवीपतिशाह (१६४६-७६)	४५. पृथिवीपतिशाह	५६. पृथीशाह
मेदिनीशाह (१६७६-९९)	४६. मेदिनीशाह	५७. मेदिनीशाह
फतेहशाह (१६९९-१७४९)	४७. फतेहशाह	५८. फतेहशाह
उपेन्द्रशाह (१७४९-५०)		५९. उपेन्द्रशाह
प्रदीप(०प्त)शाह (१७५०-८०)		६०. प्रदीप्तशाह
ललितशाह (१७८०-९१)		६१. ललितशाह
जयकृत(जयकीरत)शाह (१७९१-९७)		
प्रद्युम्नशाह (१७९७-१८०४)		६२. प्रद्युम्नशाह
सुदर्शनशाह (१८१५-५९)		६३. सुदर्शनशाह
भवानीशाह (१८५९-७१)		६४. भवानीशाह
प्रतापशाह (१८७१-८६)		
कीर्तिशाह (१८८६-१९१३)		
नरेन्द्रशाह (१९१३-५०)		
मानवेन्द्रशाह (१९५०-...)		

इन सभी वंशावलियोंसे अधिक प्रमाणिक है "मानोदय" काव्यकी (रचयिता त ज्योतिराय), जिसने मानसाहको अजयपालका पौत्र तथा सहजपालका कहा[1] है। कविके मानसाहका समकालीन होनेसे इसमें भ्रमकी गुंजाइश नहीं सकती। इसके अतिरिक्त उन वंशावलियोंमें कई असंगतियाँ हैं : तीनोंमें

---

[1] अजेयपालो नृपतिः स आसीत् नाम्नैव यः शत्रु-मनो-विभेत्ता ।
चन्द्रान्वये जन्म वभूव तस्य युधिष्ठिरस्येव युधिस्थिरस्य ॥१॥
सहजपाल-नृपाल-शिरोमणिः समभवत् तनयोऽस्य महीभुजः ।
यमधिगम्य जना जगतीतले मुमुदिरे मुदिरे विहगा इव ॥४॥
तस्मात् पयोधेरिव शीतभानुर् यशःप्रभा-दीपितदिग्विभागः ।
गुणैकवश्यो जगदेक-दृश्यः स्फुरत्प्रतापोऽजनि मानशाहः ॥१२॥
"मानोदय सर्ग १" "विराट्हृदय (शंभुप्रसाद) से

क्रमशः ७,८,११वाँ राजा शालिवाहन है। कुमाऊँके कत्यूरियोंकी वं शालिवाहन आता है। शालिवाहन वैस राजपूतोंका आदिपुरुष है, न कि का। कत्यूरीवंशज डोटी (नेपाल) वाले अपनेको वैस राजपूत कहते हैं। दय"ने मानशाहके वंशको चंद्रवंशी कहा है, जिससे वह अग्निकुली[1] जाते। इस प्रकार जान पड़ता है, पँवार कल्पना पीछे की है। कोई नहीं यदि अजयपाल कत्यूरी-वंशकी ही किसी शाखाका हो, जिसके का शालिवाहनके साथ जोड़ा गया।

३. वंशकी ऐतिहासिकता

कनकपाल—अजयपालकी ऐतिहासिकतामें सन्देह नहीं है, किन्तु वं कनकपालके वारेमें वहुत सन्देह है। अजयपालके पौत्र[2] मानशाहके ज्योतिषी कवि भरथ ज्योतिराय जहाँगीरके भी दरवारी ज्यो इसलिए अजयपालको सोलहवीं सदीके आरंभमें विद्यमान होना अजयपालके पुत्र सहजपालने देवप्रयागके रघुनाथ-मंदिरमें १५६१ ई० (शाके)में घंटा चढ़ाया था, इससे भी इसकी पुष्टी होती है। अजय या नरेन्द्रशाहकी मृत्यु तक १५००-१९५०के साढ़े चार सौ वर्षोंमें वीस रा फिर कनकपाल तकके लिये साढे तेरह सौ वर्ष चाहिए अर्थात् कनकपा वर्धनका समकालीन और कत्यूरी वंशी ललितशूर आदिसे भी पूर्व था, जो की वात नहीं है। यदि उस समय कनकपाल नामका कोई कत्यूरी हो भी, तो भी उसका संवंध अजयपाल-वंशके साथ जोड़ना आसान नहीं है

चाँदपुरगढ़में प्राप्त एक शिलालेखमें निम्न श्लोकका होना वतलाया जा

“शायकाब्धि-नव-सम्मितवर्षे विक्रमस्य विधुवंशज-पूज्यः।
श्रीनृपः कनकपाल इहाप्तः शौनकर्षिकुलजः प्रमरोयम्॥”

इसमें प्रमर (पँवार) शब्द तथा कनकपालका उत्तराखंडमें ९४५ संव ८८८ई०)में आना पीछेकी गढन्त है।

---

[1] अग्निकुली चार राजपूत हैं—परमार (पंवार), चौहान (चा सोलंकी (चालुक्य) और परिहार (प्रतिहार)।

[2] “मानोदय”के अजयपालको ही ४१ वां राजा विजयपाल बना दि और सहज तथा मानशाहके वीचका बलभद्रशाह भी संदिग्ध है।

पँवार-वंशावलीमें लिखा है—

"राजा वै कनकपालो विधकुलतिलको गुर्जरातात् प्रसिद्धः ,
दैवात् तीर्थप्रदेशान् अवनिलगतान् धूतपापान् प्रपश्यन् ।
गच्छन् शृण्वन् प्रभावं विशदमतिरयं प्रापद् अश्रान्तचेताः ,
वर्षे वाणाब्धिगोत्रे नरहरिकृपया प्राप्य राज्यं शशास ।।"

इसपर टिप्पणी करते हुए रतूड़ीजीने लिखा है—"मालूम होता है कविने ा ठीक जाने हुए केवल प्रचलित किंवदंतीके आधारपर अपनी कविताको इस ार दूषित किया "[1]

हार्डविकने अठारहवीं सदीके अन्तमें सुनी परम्पराओंके आधारपर लिखा "उसका नाम कनकपाल नहीं था, वल्कि भोगदत्त था । वह पँवार-क्षत्रिय । अपने भाई सूजदत्तको साथ लेकर अहमदावाद गुजरातसे पहले पहल वालमें आया था । वह योग्य और साहसी था और चाँदपुरके राजाकी—सब राजाओंमें वड़ा और वलिष्ट था—सेनामें भरती हुआ था ।...भोग- ने वड़ी उन्नति कर सेनामें सवसे वड़ा पद प्राप्त किया अर्थात् सेनापति हुआ । ाने अपनी कन्या उसे विवाह दी थी।...भोगदत्तने...पहले राजाको से उतारा, तव अपने वल-पौरुषसे गढवालके सव राजाओंको अधीन किया ।"

जी० आर० सी० विलियम्सकी राय है[3]—"मैंने स्वयं वड़ी खोजके साथ कीकात की, जो विश्वास-योग्य है । गढवालके राजवंशका मूलपुरुष कनकपाल था । कनकपालने पहिले जिला सहारनपुरमें गंगोह नामक कसवा वसाया । कनकपाल अहमदावाद-गुजरातसे नहीं आया था, क्योंकि अहमदावाद त पीछे[4] वसा है । वह धारानगर या धार-मालवेसे आया था । इसका रा नाम गंग भी था, यह वात सहारनपुरके इतिहाससे मिली है । उसमें लिखा कि कनिष्क या कनकके नामके सिक्के वहाँ पाये जाते हैं ।"

कनकपालको शक-सम्राट् कनिष्कसे मिलाना तथा धाराका पँवार सिद्ध करना मखाहकी खींचातानी है ।

कनकपालके राजजामाता वनकर गद्दी सँभालनेकी वातें भी परस्पर विरोधी लती हैं । किसी राजाश्रित पंडितके एक ग्रंथको रतूड़ीजी उद्धृत करके वतलाते

---

[1] "गढ़वालका इतिहास", पृ० ३५४.

[2] वहीं, पृष्ठ ३५४-५५ [3] वहीं, पृष्ठ ३५५–५६

[4] सुलतान अहमदशाह द्वारा १५५४ ई० (९६१ हिज्री)में वसाया गया ।

हैं, कि कनकपालका वह ससुर भानुप्रताप था[1]. "चाँदपुरगढ मल्ला-
है।...यहीं किला राजा भानुप्रतापके रहनेका था।...भानुप्रताप
राजा[2] इस प्रान्तका था और ५२ गढोंके राजाओंमें यह वलवान्
इसके अतिरिक्त वदरीनाथका राजा कहलाए जानेसे अन्य
धार्मिक दृष्टिसे इसे अपना मुकुट मानते थे।...पृथ्वीराज (चौहान)
पीढ़ीमें भानुप्रताप हुआ। भानुप्रतापका भी कोई पुत्र नहीं था,
कन्यायें थीं। ज्येष्ठ कन्याका विवाह उसने कुमाऊँके राजाके पुत्र राजपाल
कर दिया, कनिष्ठ कन्याका विवाह पँवार-वंशज राजा कनकपालसे
जिससे अव तक गढवालका राजवंश चल रहा है।[3]

दूसरी परम्परा वतलाती है, कि कनकपालने भिलङ्के राजा
कन्यासे व्याह किया, जो कि ऊपरी गढवालके पश्चिमी भागका राजा

---

[1] वहीं, पृ० २५७-५८

[2] आसीत् कश्चिद् हिमाद्रौ सुर-वर-तटिनी नीर-तीरे तिरम्ये,
पुण्ये केदारखंडे सुरुचिरवदरीकाननस्यैकदेशे।
नाम्ना भानुप्रतापो नृपमुकुटमणिश्रेणि-नीराजितांघ्रिः,
सर्वोर्वी-सार्वभौमो विवुध-गणयुतः पालको वै प्रजानाम्।
दैवात् कन्याप्रजोऽसौ कुलविरतिभयात् श्रीविशाले चरन्ते,
भेजे भक्त्या नितान्तं क्रतुभिरपि तपोदानमानव्रताद्यैः।
आगन्ता दर्शनार्थं मम कनकमहीपालसंज्ञो धरेशः।
दत्वा तस्मै सुतां स्वां मम तनय इव त्वं कुलस्यास्य हेतुः,
पश्चाल्लोके मदीये जनि-भृति-भवनं त्यज्य गन्तासि नूनम्॥

[3] वहीं, पृ० ३३७-३९

[4] "In Sambat 755 [A.D. 699] Raja Kanakp
the reigning Chand family of Malva arrived in Gar
Kanakpal on his arrival was adopted successor
Raja named Sonpal, who gave his doughter and
heir, in marriage to Kanakpal. (Sonpal is said to
ruled over the western portion of modern upper
wal. Bhilong now a portion of Garhwal State
his capital....) Sonpal and Katyuris were the over
of the petty states in the North of Garhwal. Kan

चाँदपुरगढ और भिलङ् तथा भानुप्रताप और सोनपालमेंसे किसके कनकपाल ाद थे, यह भी निश्चय नहीं हैं।

इस वंशका इतिहास वस्तुतः अजयपालसे शुरू होता, जो मानशाह (४४)से पीढ़ी पहिले नहीं, वल्कि "मानोदय"के अनुसार मानशाहके पिता सहजपालका ा था, जिसे वंशावलियोंने विजयपाल वना दिया। मानशाहका एक दानपत्र ४७ ई०का प्राप्त है, इसलिए अजयपालका काल १५०० ई० ठीक है।

४. तेमूरका आक्रमण (१३९८ ई०)

तैमूरलंगने राज्यविस्तारके लिए नहीं वल्कि एकत्रित संपत्तिको लूटनेके लिए को और दिल्ली तककी यात्रा की। उसने पहाड़की समृद्धिकी खवर सुनी थी, लिए दिल्लीसे इधरकी ओर चल पड़ा। उस समय गंगा और जमुनाके वीचके ड़ी प्रदेश अर्थात् गढवालका राजा वहरोज था। नस्ख-लिपिमें लिखे गये शब्दसे भरोज, वरोज, वीरदत्त, व्रह्मदत्त आदि कितने ही नाम निकल सकते तेमूरके इतिहास-लेखकोंके कथनानुसार उसके पास वहुत वड़ी सेना थी, ात् अजयपालसे १०० वर्ष पहिले ही सारा गढवाल एक शासकके अधीन हो ा था, यही नहीं प्रायः सारे हिन्दुस्तानके राजाओंमें वह मुख्य स्थान रखता था।[1] रने किसी घाटासे पहाड़ पार करनेका निश्चय किया। पहाड़ी योद्धा अपने संगठित सरदारोंके साथ लड़नेको तैयार थे। मुकावला कड़ा था। के मुंहपर पहुंच तेमूर घोड़ेसे उतर गया। सभी अफसर और सिपाही भी ड़ेसे उतर पड़े, और दृढ निश्चयके साथ लड़नेके लिए आगे वढे। "शैतान हिन्दू कितने ही स्थानोंमें हमारे सिपाहियोंपर छापा मारनेके लिए छिपे बैठे ...लेकिन मुसल्मान वाणवर्षा करते तलवार लेकर उन पर टूट पड़े, और ई चीरते हुए आगे पहुंच गये। वहां नजदीकसे वह खूव लड़े और दुश्मनको वार, खांडा, कटारसे मार कर साफ कर दिया।"—तैमूरने लिखा है। हिंदू

---

tled himself in the midlands, where as Mordhwaj, nduwala and Brahmapur .chiefs ruled over the uthern Garhwal."—"Garhwal" (Patiram)

[1]. "The number of whose forces and whose lofty, gged narrow and strong position made him superior all the chiefs of the hills and indeed of most of industan."—Atkinson, Vol. II.

हारे, कुछ प्राण लेकर पहाड़ोंमें भागे, कुछ वंदी हुये। अपरिमित धन-मा
भैंसें, स्त्री-वच्चे, हाथी-घोड़े हाथ आये। तेमूर उसी रात अपनी छावनी
गया। अगले दिन तेमूर पांच कोस चलकर वहरा और तीसरे दिन सरसाव
शायद तेमूरने हिमालयमें वहुत भीतर तक प्रवेश नहीं किया। उसके लिए
आकर्षण नहीं रहा होगा, जिसके लिए कि वह पर्वतीय युद्धके लिए तैयार

दूनमें नवादाको गढवालकी एक पुरानी राजधानी वतलाया जाता है
पुर, साहसपुर, कल्याणपुर, नागल, राजपुर, भगवतपुर, थानो, अजवपुर
स्थान हैं; किंतु, एक गढवाली जनश्रुति वतलाती है, कि नादिरशाहसे वं
गढवालियोंने असफल लड़ाई की थी। नादिरशाह इधर पहाड़की ओर न
था, इसलिए परंपराने तेमूरके स्थानपर नादिरशाहको रख दिया।
पँवारोंसे पहिले भी राजधानी रहा, ऐतिहासिक इसे मानते हैं। तेमू
अपार संपत्ति मिली, वह वंदरभेलकी कठिन धारको पारकर श्रीनगर प
ही मिलती। नाईमोहनसे नौढाखालकी साढ़े चार मीलकी कड़ी चढ़ाई
पैदल यात्रियोंके लिए दुरारोह है। वंदरभेल हरिद्वारसे ३५ मील आगे
नगरसे ४० मील पीछे रह जाता है, देवप्रयागका प्रसिद्ध तीर्थ इससे २१ मी
है। हम समझते हैं, तेमूरकी लड़ाई वंदरभेलमें हुई थी।

५. पँवार-वंशी राजा

(१) अजयपाल (१५०० ई०)—जहांगीरके दर्वारी ज्योतिषी "ज्यो
पदवी-विभूषित "मानोदय" के कर्त्ता भरतने अजयपालके वारेमें उससे
पीढ़ी वाद लिखा था "युधिष्ठिरकी भांति युद्धमें स्थिर उस अजेयपाल न
जन्म चंद्रवंशमें हुआ था, जो कि अपने नामसे ही शत्रुओंके मनको तोड़
था।"[1] शायद यहां कवि वास्तविकतासे वहुत दूर नहीं है। उत्तरमें
शिखरोंसे दक्खिनमें चंडी-हरद्वार तक और पश्चिममें जमुनासे पूर्वमें

---

[1] "अजेयपालो नृपतिः स आसीत् नाम्नैव यः शत्रुमनो-विभेत्ता।
चंद्रान्वये जन्म बभूव तस्य युधिष्ठिरस्येव युधिस्थिरस्य ॥१॥
दुर्योधनोऽत्यन्तगुणप्रियोऽपि यो भीमसेनो पि गदान्वितेन।
मनुष्यधर्म्मैं विविधैरुपेतो महीमहेन्द्रोऽपि बलप्रियो वै ॥२॥
नृपवरः स शशास धरां इमां सुनयनंदित-देव-पुरोहितः।
वहुदिगंतनिवासिनराधिपैः कृतनतिः कुसुमेषुसमद्युतिः ॥३॥

सारे गढवालका एकीकरण इसीके समय हुआ, शायद केदारखंडका गढ़ नाम इसी समय पड़ा । अजयपालको अपने समकालीन चंपावत (कुमाऊं) राजासे ना पड़ा, जिसमें आरंभिक असफलताके वाद उसे विजय मिली । आगे तो ारकी सुंदर उपत्यकामें स्थित वधाण पर्गनाके लिए दोनों राज्योंमें तव तक ड़ियां होती रहीं, जव तक दोनोंको नेपाल और पीछे अंग्रेजोंने आत्मशात् नहीं कर ा। राजधानी चांदपुर (६९०० फुट) यद्यपि एक दुर्जेय दुर्ग-युक्त नगरी थी, किंतु पूर्वके एक कोनेमें पड़ती थी । अजयपाल उसे १५१२ में देवलगढमें लाया, से और समतल विस्तृत केन्द्रीय स्थान ढूंढते १५१७ ई० में श्रीनगर ले गया । नगरकी भूमि पहिले भी नगरके रूपमें परिणत हुई थी । राजा अजयपाल र उसके वंशजोंके वनवाये महल और दूसरी इमारतों तथा उनके ध्वंसोंको ९४ की वाढ़ने वहा दिया । अजयपालको ही गढवालकी पट्टियों और पर्गनोंका ाजक वतलाया जाता है ।

अजयपालके वाद कल्याणशाह, सुंदरपाल, हंसदेव और विजयपाल केवल वलीको लंवी वनानेके लिए जोड़े गये हैं ।

वस्तुत: अजयपाल-संतानकी गढवाल-राजवंशावलि निम्न प्रकार होनी चाहिए—

		अभिलेख (सन्)
अजयपाल	१५०० ई०	
सहजपाल	१५६१	१५६१
मानशाह		१५४७
श्यामशाह		
दुलारामशाह		१५८०
महीपति शाह		१६२५
पृथिवी "	१६४६-७६	
मेदिनी "	१६७६-९९	
फतेंह "	१६९९-१७४९	१६८५,१७०६,१७१०,१७१६
उपेन्द्र "	१७४९-५०	
प्रदीप "	१७५०-८०	
ललित "	१७८०-९१	
जयकृत "	१७९१-९७	
प्रद्युम्न "	१७९७-१८०४	
सुदर्शन "	१८१५-५९	

९

१६. भवानी " १८५९-७१
१७. प्रताप " १८७१-८६
१८. कीर्ति " १८८६-१९१३
१९. नरेन्द्र " १९१३-५०
२०. मानवेन्द्र १९५०—....

(२) **सहजपाल (१५६१ ई०)**—"मानोदय"[1] काव्यसे मालूम होता सहजपाल अजयपालका पुत्र और उत्तराधिकारी था। यदि ज्योतिषी वात मानी जाये, तो वह राजनीतिमें बड़ा चतुर था। उत्तरमें तिब्बत, कुमाऊं, पश्चिममें साक्षात् दिल्लीके नगर, उत्तर-पश्चिममें विशेर (रा और पश्चिममें सिरमोर (नाहन) जैसे शासकोंके बीचमें अजयपालने भूमिको एकताबद्ध किया। ऐसे राजाको राजनीतिचतुर होना ही सहजपालने देवप्रयागके रघुनाथ-मंदिरमें १५६१ ई० (शाके १४८२) घंटा चढ़ाया था।

---

[1] "मानोदय" में इस राजाके बारेमें लिखा है—

"सहजपालनृपालशिरोमणिः समभवत् तनयोऽस्य महीभुजः।
यमधिगम्य जना जगतीतले मुमुदिरे मुदिरे विहगा इव ॥४॥
सर्वगा जगति यत्र राजनि राजनीतिचतुरे प्रशासति।
क्वापि नापि गुरुधीरमंडले कंडलेश-विभवाद् दरिद्रता ॥५॥
यच्छ्रिया परितुतोष नागरी नागरीयसि गुणोऽनुरागवान्।
संगरे सकलशत्रुतापनस्तापनस्य कर इव प्रतापकः ॥६॥
यो रराज वसुदेवतर्पकः कृष्णवद् गिरिशवद् वृषाश्रितः।
चन्द्रवत् कुवलयैकमोदकृत् शक्रवद् विवुधवृन्दसेवितः ॥७॥
यत्राजिभाजि प्रतिराजराज्ञी पंचत्वमागच्छदसंख्यकाऽपि।
चकर्ष जीवं धनुषो यदासावपासुरासीत् समरेऽसपत्नः ॥८॥
रागावृतांगीव विपक्षिकंठे लग्नाऽथ मातंगचये पतंती।
लोकेन याऽलोकि स युद्धभूमौ तत्रासियष्टावनुरक्तचेताः ॥९॥
कञ्चिज् जनं जातु न मन्यतेऽसौ श्रियं द्विजेभ्यः प्रददाति किञ्च
कूप्तैव कीर्त्तिः प्रययौ दिगंतं तस्मात् प्रभोरस्य विशुद्धवर्णा ॥१०॥
भुक्त्वासुभोगान् अखिलान् नरेंद्रो दत्वा द्विभुजेभ्यो द्रविणं वरेण्यम्।
आराध्य कामं जगतीशरण्यं माहेश्वरं तत्पदमाप्रसादम् ॥११॥

सहजपालके आगे वंशावलीने फिर एक संदिग्ध व्यक्ति बलभद्रशाह या ादुरशाहको रख दिया है। यद्यपि मंगोल भाषाका वगातिर या बहादुर शब्द ं-तैमूर-वंशज मंगोलों—जिन्हें मंगोल कहना गलत है—द्वारा भारतमें तब तक ालित हो चुका था, किंतु “मानोदय” ने सहजपाल और मानशाहके बीचमें सी सहजपुत्र बलभद्रशाहका नाम नहीं दिया है।

(३) मानशाह—मानशाह अकबरके समकालीन थे। इन्हींकी प्रशंसामें त कविने “मानोदय”[1] काव्य लिखा था, जिसका चार सर्ग प्राप्य है। यह चुके हैं, कि भरत कवि जहांगीरके राजज्योतिषी भी थे। मानशाहका १५४७ई० दानपत्र प्राप्य बतलाया जाता है। उनके पिता सहजपालका रघुनाथ-मंदिर ा घंटा १५६१ में चढ़ाया गया था, इसलिए मानशाहका उक्त अभिलेख दग्ध है। भरत कविका जहांगीरका दरबारी होना भी बतलाता है, कि मानह अकबरके तरुण समकालीन थे। मानशाहने उद्योतचंदपर चढाई की थी, सका वर्णन “मानोदय” के तृतीय और चतुर्थ सर्गमें मिलता है[2]। यह युद्ध

---

[1] बहुगुना-उद्धृत “मानोदय” में मानशाह संबंधी कुछ पंक्तियाँ हैं—

“तस्मात् पयोधेरिव शीतभानुर् यशः प्रभादीपितादिग्विभागः।
गुणैकवश्यो जगदेक-दृश्यः स्फुरत्प्रतापोऽजनि मानशाहः॥१२॥
अथार्यगांभीर्यगुणैः समुद्रः शौर्येण भीमः महसा दिनेशः।
ाद् बली निर्जितकर्णकीर्त्तिर् धनुःश्रिया यो विजयप्रभावः॥१३॥
ीतिमान् मानपुरं प्रशास्ति शास्ता रिपूणां अजितेंद्रियाणां॥
क्षषड्वर्गजयैकदक्षो विचक्षणान् रक्षति शुद्धबुद्धीन्॥१९॥
वाद्यपरिनृत्यमंगलैः संकुलं विपणि-कुट्टिमोज्ज्वलम्।
तं विविधसौध-मंडपैर् भाति मानपुरमस्य भूपतेः॥२।१॥
वारि-परितुष्ट-मुकुन्दा फेन-निर्जित मनोहरकुन्दा।
भाति जनबुद्धिरमंदा यत्र तिष्ठति पुरेऽलकनंदा॥२८॥

[2] “अथ रथगजवाहोद्धूतधूली-कदंबैर् गगनतलमवाप्तैर् गुप्तमार्तण्डबिंबः।
निशित-शरौघोद्दंडकोदंड-चंडः, प्रलयशमनभीमो निर्ययौ मानशाहः॥३।१॥
चिद् अवनिपालास् तत्र कूर्माचलस्थाः पटुमतिसचिवौघान् इत्थमूचुः प्रवाचः।
मतिशयदक्षो मानशाहः समक्षः कथय कथमिदानीं दुर्गरक्षा विधेया॥४॥
ानशाहनृपतेरिति सर्वसैन्यं दैन्यं जगाम रिपुराजबलप्रहारैः।
स्य सैन्यपतयस् तरसा निपेतुर् हन्तुं द्विषद्बलमुदग्रतरप्रभावाः॥९॥

रुद्रचंदके पुत्र लक्ष्मीचंदके साथ हुआ था, जिसमें पहिले चंद-सेनाको मिली, किंतु पीछे मानशाहके सेनापति नन्दीने राजधानी चम्पावती (च तक पर अधिकार कर लिया। कुंमाऊंकी भांति पश्चिमी तिब्बतके शास गढ़वालकी ठनी रहती थी। तेरहवींसे पंद्रहवीं सदी तक सारे तिब्बत पश्चिमी तिब्बत (ङ-री) के इलाकेमें भी अलग-अलग ठाकुर राज करते थे। राजा गढवालका प्रतिद्वंद्वी था। शताब्दियोंसे गढवालमें आकर लूटमार वहांके लोगोंका सफल व्यवसाय बन गया था। मानशाहके पिता और पि दापाको सबक सिखलाना चाहा था, किंतु पूरी सफलता नहीं हुई थी। वहांके राजा (काकुवा मोर) को परास्त करनेमें सफल हुए। सुलहकी राजा काकुवामोर प्रतिवर्ष सवासेर सोना और चार सींगवाला एक भे करेगा। उसने गढवालपर लूटमार न करनेका प्रतिज्ञापत्र भी लिखा था। शाहने अपनी सीमा हरद्वारसे आगे मंगलोर (सहारनपुर) तक बढ़ाई थी कहना मुश्किल है, कि मुगलोंके साथ उस समय गढवालका क्या सं पश्चिमी पड़ोसी सिरमोर और बिशैर मानशाहसे छेड़खानी नहीं करते र १९ वर्ष राज्य करके ३४ वर्षकी अवस्थामें मानशाहके मरनेकी बात जाती है।

(४) **श्यामशाह**—मानशाहका उत्तराधिकारी श्यामशाह बहुत अ राजा था। कहावत मशहूर है "शामशाहीको कोलाई। सामी तो साम तो बांगी।" शामशाहने तिब्बत पर चढ़ाई करके पहिली शर्तोंसे एक (गाय) अधिक देनेके लिए मजबूर किया। पागलपन और अत्याचा इसकी कितनी ही कहानियां प्रसिद्ध हैं। इसने एक महलमें आग लगवा कुछ गांवोंको भी जला दिया था। गरमीके दिनोंमें शामशाह अल नौकाविहारके लिए घूमा करता था, वहीं एक दिन नाव उलट गई

नन्दी जगाद मयि तिष्ठति युद्धभूमौ मा गर्वमुद्वह निज हृदय मुधति।
जेष्यामि रुद्र-तनयं चरतेव पक्षात् चम्पावतीं निजवशां सहसा करिष्ये
अथ विधाय बधं बलविद्विषः पयनुदुर्गमिहाधिरुरोध स।
विविधसौधविराजितमद्भुतं हरिणनेत्रवतीगणसंयुतम् ॥२१॥
भृंगारशून्यवपुषोऽश्रुपरीतनेत्राः चीरांवराः कुग्रतृणास्तृतभूमिपृष्ठाः।
तद्वैरिराजवनिता गिरिकंदरेषु कन्दैः फलैर्मुनिजनप्रचरितं वितेनुः ॥२२॥
—चतुर्थसर्गे ("विरा

वर्ष राज्य करके अपने मुसाहिबोंके साथ ३१ वर्षकी आयुमें मर गया। कवि-त्रकार मोलारामने श्यामशाहके समय और उससे आगेके राजाओंके बारेमें ने ग्रंथ "गढराजवंशका इतिहास"में कितनी ही मार्केकी बातें कही हैं, जिनका रण पाठकोंके लिये ज्ञानवर्द्धक होगा। यह स्मरण रखना चाहिए कि यह महान् त्रकार फतेहशाहके समय (१७४०ई०) पैदा हुआ था और अंग्रेजोंके शासनके हवें वर्ष (१८३३ ई०) में मरा था। इस प्रकार बहुतसे राजाओंका वृत्त की समकालीन घटनायें थीं, जिसपर उसने अधिकारपूर्वक लेखनी चलाई।[1]

---

[1] मई १६५८ ई० में दाराशिकोहका अभागा पुत्र सुलेमानशिकोह औरंगजेब-कोपसे बचनेके लिए गढवाल आया। उसके साथ दिल्लीके कुशल चित्रकार ता-पुत्र शामदास और हरदास भी आये। सुलेमान शिकोहके बंदी होकर चले ने पर चित्रकार-द्वय यहीं रह गये। इनका वंश आगे इस तरह चला——

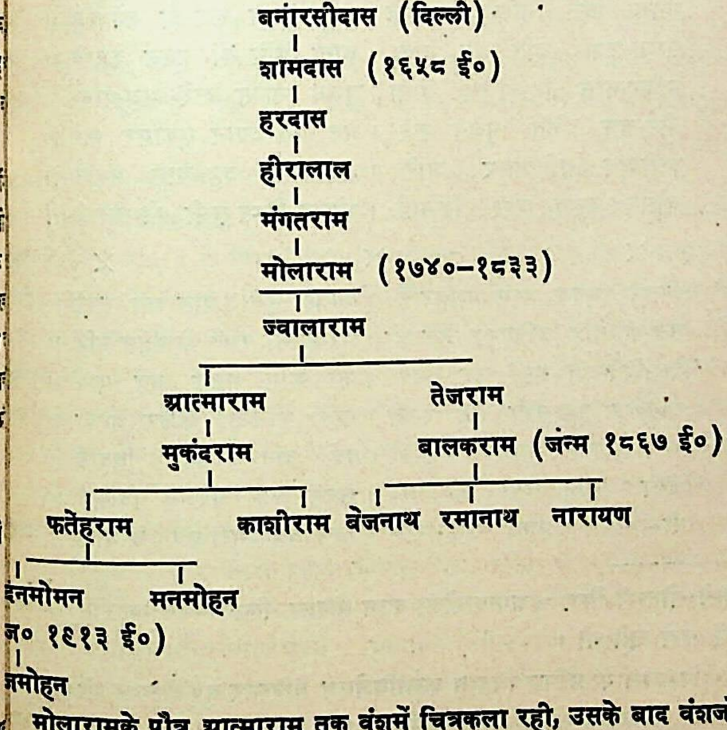
बनारसीदास (दिल्ली)
शामदास (१६५८ ई०)
हरदास
हीरालाल
मंगतराम
मोलाराम (१७४०–१८३३)
ज्वालाराम
आत्माराम
तेजराम
मुकंदराम
बालकराम (जंन्म १८६७ ई०)
फतेहराम
काशीराम
बैजनाथ
रमानाथ
नारायण
नमोमन
मनमोहन
न० १९१२ ई०)
मोहन

मोलारामके पौत्र आत्माराम तक वंशमें चित्रकला रही, उसके बाद वंशजोंने

यशस्वी चित्रकार ने अपने कई समकालीन राजाओं के चित्र भी हैं, अपने इस काव्य में भी उसने व्यक्तियों का सुस्पष्ट चित्रण कि मोलारामने अपने ग्रंथका आरंभ करते हुये श्यामशाहके बारेमें हैं[1]—

क्योंकर भ्रष्ट राज यह भयो। सब पंचन हूं यह मिलि कयो।
तब यह पावन पुस्त सौं, कीनी कथा बखान।
एक एक कर कहत हूं, सुनो पंच पर प्रधान।

× × ×

श्यामशाह नृप वामी भये। प्रकट माँह अतिकामी रहे॥
सुंदर सूरमाह अति दाता। देस-देसमें उनकी ख्याता॥
गुन-ग्राहक गुनिजन को मानै। राग-रागनी सब पहिचानै॥
मगन मस्त निसि-वासर रहे। मधुर वचन सब ही को कहै॥
संध्या-पूजा अति मन भावै। नाना विधि सों हवन करावे॥
मदिर-मांस बहु-व्यंजन नाना। पूजन सक्ति करैं मधु-पाना॥
वीर-चक्र नित पूजन करैं। मन मथि ध्यान एकागर करैं॥
बलीदान महिषासुर मारे। अजा मीन बहु आन संहारे॥
चौसठ कन्या वीर जिमावै। भोजन त्रिप्त सभी को करावै॥

× × ×

वस्तर भूषण शुभ पहिराई। कन्या पूजे अति मन लाई॥
सब को देहि दच्छिणा नित ही। परजा सौं राखै अनहित नहि॥
देस-विदेस के जो नर आवें। जो माँगें सोही वह पावें॥
गुनिजन रहे सभी तहं राजी। पावै कविजन कुंजर, बाजी॥
वस्त्र शस्त्र भूषण पहिराई। दर्ब दान दे करैं विदाई॥
जैसो गुनि वैसो ही पावै। सहस लक्ष परजंत दिलावै॥
रीझ खीझ समता दोइ राखै। बिन विवेक मुख बचन न भाखै॥

पहिले सोनारी फिर दूकानदारीका काम संभाल लिया—चित्रकारीसे नहीं चल रही थी।

[1] गढ़वाल के प्रसिद्ध विद्वान् कलाविशेषज्ञ बैरिस्टर मुकुंदीलाल जीके स्तानी" (प्रयाग) में प्रकाशित लेखों से।

जथा ऽपराध दंड ही देवै । जथा काल प्रवोध ही लेवै ।।
निसि-दिन रहे बोध के माहीं । विना बोध कछु करै जो नांहीं ।।

× × ×

महामत्त वनिता-रस-भोगी । महासिद्ध जोगिन मँह जोगी ।।
भामिनि भौन सुंदर बहुतेरी । वाहर एकसौ एकहि चेरी ।।
गनिका कही भोग को राखी । जमनी कही भोग मँहि थाकी ।।

. . . .

तेलन अति सुंदर तुरकानी । ताके संग भये गलतानी ।।
तेलिन वह वाजार रहावै । (नित) दिन हीं दुफैर तँह जावै ।।
नंगे सिर हाथी पे चढे । प्याला पिवे केश ही विखरे ।।
आग अँगीठी राखी तांहीं । भुनत कवाव फिरे संग माहीं ।।
भर वाजार फिरै दिन मांही । राखै लाज-सरम कछु नाहीं ।।

× × ×

राग रंग नृत सँग महिं आवै । जब तेलन के अंदर जावे ।।
घर महि आय स्नान नित करै । संध्या-पूजा ध्यानहि धरै ।।
पुनि मजलस महिं वैठे जाई । न्याय करै सब ही का आई ।।

. . . .

या विध वहु चिर राजहि कीन्यो । पूर्ण चन्द्र सम सवने चीन्यो ।।

(५) दुलाराम शाह (१५८० ई०)—रतूड़ी-उद्धृत वंशावलीमें इसका नाम नहीं है, किंतु १५८० में दिया इसका एक दानपत्र मिला है। दुलाराम कुमाऊंके राजा रुद्रचंद (१५६५-९७) का समकालीन और प्रदिद्वंद्वी था। रुद्रचंदने सिरा जीतकर गढवालकी ओर वढ़ना चाहा, किंतु कत्यूर (वैजनाथ) में अब भी पुराने कत्यूर-वंशका राजा सुखल देव शासन कर रहा था। रुद्रचंदने पिंडार-उपत्यकामें वधाणको अपना लक्ष्य वतलाकर सुखल देवसे रास्ता मांगा। सुखलदेवने वाहरसे मान लिया, किंतु वह चंदोंके राज्यविस्तारकी लिप्साको जानता था। चंद-सेनाका सेनापति योग्यतम राजनीतिज्ञ और सैनप पुरखू (पुरुषोत्तम) पंत था। सुखलदेवने सेनाके पिंडार-उपत्यकामें पहुंचते ही पीछेसे संवंध काट दिया। दुलारामने पुरखूके शिरपर भारी इनाम घोषित किया था। ग्वालदमके पास लड़ते हुए परखू पंत एक पडियार राजपूतके हाथ मारा गया, जिसके सिरको श्रीनगर हुंचाकर घातकने वहुत इनाम पाया। कुमाऊंनी सेना वधाण छोड़कर पीछे भागी, किंतु रुद्रचंदने कत्यूरमें ही रुककर सुखल देवसे वदला लेनेकी ठानी। गढवालियोंने हाथ खींच लिया था, अतः कत्यूरी राजा लड़ते हुए वंदी बना। १५९७ ई० में

रुद्रचंदके मरनेपर उसके पुत्र लक्ष्मीचंदने वापके कामको जारी रखा
उसका सामना महीपति शाहसे हुआ, जो पंवारोंमें वहुत योग्य और
राजा था ।

"फरिश्ता"ने जो बात कुमाऊंके वारेमें लिखी है, वह जमुना और
स्रोत गढवालमें होनेसे गढवालपर ही लागू हो सकती है। वह लि
"इस राजाका राज्य वहुत विस्तृत है। उसके देशकी मिट्टीको धोनेसे
सोना मिलता है। उसके यहां तांवेकी खानें भी हैं। उसका राज्य
तिव्वतसे दक्षिणमें भारतके भीतर संभलके पास तक है। उसके पास
और सवार सेनाकी संख्या ८०००० है। दिल्लीका वादशाह उसका वहुत
करता है।...जमुना और गंगा दोनोंके उद्गम उसके राज्यमें हैं।" अल
भागीरथी और सोन नदी (पतली दून) से अब भी रेत धोकर सोना नि
जाता है। १७९६ में जेनरल हार्डविकको राजा प्रद्युम्न शाहके इतिहासने
कहा था—"अकबरके समय वादशाहने श्रीनगरके राजासे राजकीय आ
उसके नकशेको मांगा। राजा उस समय शाही दरवारमें थे। उन्होंने वाद
हुकुम की पावंदी करते हुए अपने लेखके साथ एक दुवले पतले ऊंटकी
नकशा पेश करते हुए कहा :

"हमारे देशकी यही सच्ची तस्वीर है—ऊंचा-नीचा वहुत गरीव। वाद
मुस्कराते हुए कर मांगनेका ख्याल छोड़ दिया।"

मोलारामने दुलारामशाहके वारेमें लिखा है—

स्याम साह जू के भये, दुलाराम ही साह
अव तिनकी हौं कहत हूं, दूजी सुनो कथा ॥

दुलोराम-शा राजा भयो। स्यामसाह जव स्वर्गहि गयो ॥
दुलोरामसा राजहिं वैठे। मंत्रि मित्र जो रहे इकैठे ॥
करि स्नान प्रात-कृत सवही। पूजा-हवन करत हैं तवही ॥
मध्यम पूजा मध्यम ध्यानहि। मध्यम जप अरु मध्यम हवनहि ॥
वली छाग इक कन्या पांचहि। कह कछु झूठ कछु भाषै सांचहि ॥
राग रंग अति ही मन भावै। कथा-वारता नाहिं सुहावै ॥
मध्यम दान पुन्य कछु करै। सैल-शिकार माँह वहु फिरै ॥
नाना वस्त्र शस्त्र हू धारैं। वाँक पटाव हु खेल निहारैं ॥
तीर तुपक नित आप चलावै। वन सौं मार मिरग वहु लावैं ॥

भोजन नाना खात खुलावत । कर जो उपमा सो मन भावत ॥
फजर-स्याम मजलस ही करै । कवहूं जल महि तिरतो फिरै ॥
कवहुँ कवूतर वाज उड़ावै । तीतर, काग, चकोर मरावै ॥
रस श्रृंगार लगै वहु नीको । चित वैरागहिं मानत फीको ॥
जस वात वणे ना मन भावै । भानमती वहुतरुण लगावै ॥
राजकाज मंत्रिन को दीन्यो । मन आई सो आपहिं कीन्यो ॥
मधिम कीने काज सव, मधिम कीन्यो राज ।
देहांत जव भई, रहतो सव इत साज ॥

× × ×

चल्यो वही संग जो इत दीन्यो । जस-अपजस जो कुछ कर लीन्यो ॥
हाथी घोरा इते रहाये । संग महि कोई न तिनके धाये ॥

(६) **महीपति शाह (१६२५ ई०)**—महीपतिशाहका एक दानपत्र १६२५ है, इसलिए रतूड़ीका दिया समय १६२९–४६ ठीक नहीं मालूम होता। १६४२ तिव्वतमें वहुराजकता चल रही थी, जव कि मंगोलोंने अपने सरदार गुश्री नके नेतृत्वमें गांव-गांवके राजाओंको ध्वस्त कर सारे तिव्वतको पांचवें दलाई ना लोव्‌जङ् ग्यम्छो (१६१७.८२ ई०)को प्रदान किया। नीती जोत (घाटा) ारका इलाका दापाके राजाके पास था, जिससे पहिले भी संघर्ष होता रहता । सदियोंसे इस इलाकेके भोट (तिव्वती) लोगोंका व्यवसाय वन गया था, ंडा और दसोली पर्गनोंको लूटना। महीपतिने रिखोला लोदीके नेतृत्वमें दापा वा)पर सेना भेजी। रिखोलाकी वीरताका पंवाडा अव भी गढवालमें प्रसिद्ध युद्धका फैसला तड़ाक-फड़ाक होनेवाला नहीं था। अव भी मधेसकी भांति कि क्षत्रिय-ब्राह्मण विना सिले कपड़ेको पहिनकर खाना वनाते-खाते थे। वतकी सरदीमें इसके कारण वड़ी अड़चनें पड़ती थीं। सरोला ब्राह्मणोंके थकी रसोई सभी लोग खा लेते थे। पहिले तो राजाने सरोलोंके १२ थानों[1]

---

[1] सरोलोंके पुराने १२ थान थे

नौटी	४. रतड़ा	७. सेमा	१०. सिरगुरी
मैटवाणा	५. थापली	८. लखेसी (लखेड़ी)	११. कोटी
खंडूडा	६. चमोला	९. सेमल्टा (या गैरोला)	१२. डिम्मर

लोंकी सूची जो आगे दी गई है, उनमेंसे कितने ही महीपतशाहके द्वारा ले बनाये गये

(स्थानों)में ९ और वढाकर २१ किया, फिर संख्या ३२ तक कर दी,
रसोई वनानेवाले अधिक प्राप्त हो सकें। किंतु तिव्वतकी सरदी थी, हार
महीपत शाहने आज्ञा दी कि रोटी शुचि मानी जाये, उसे बिना कपड़ा उता
वर्णोंके हाथसे खाया जावे। तबसे पहाड़में यह प्रथा चल पड़ी, जो आज
नीचेवालोंकी टिप्पणीसे बचनेके लिए यहांवाले कह देते हैं, कि थोड़ा सा
कर हम आटाको शुचि कर लेते हैं। भड (वीर) रिखोला लोदी जोत
सेनाको भगाता तिव्वती मैदानमें चला गया। दापाके राजाकी मृत्यु
वहांका गढ और बौद्ध विहार गढवालियोंके हाथमें आगये। थोलिङ्के पास
सतलज गढवालकी सीमा वनी। गढवालने अब तिव्वतके इस भागपर
शासन स्थापित करनेका निश्चय किया। दापाके गढमें वर्त्वाल (पंवार)
द्वय सेनापति और शासक नियुक्त हुए। राजा रिखोलाको लेकर लौट
गढवाली सेना की भी वही हालत हुई, जो डेढ़ सौ वर्ष पूर्व मध्य-एसिया
सेनाकी हुई थी, और जो उसके दो सौ वर्ष वाद डोगरा-विजेता जेनरल
सिंहके साथ दोहराई गई। पूर्वसे सहायता मिली, ऊपरसे तिव्वतके परम
जेनरल शीतलसिंह (सरदी) ने सहायता की। वर्त्वाल-भ्रातृद्वय लड़ते
गये! उनकी तलवारें दापाके विहारमें विजयोपहारके रूपमें अब भी
और शायद सस्क्य-विहारकी भांति किसी महाकालके मंदिरमें दोनों
कटा सूखा सिर भी हो।

महीपत शाहका दूसरा वहादुर सेनापति तथा अमात्य माधवसिंह था
वारेमें गढवाली कहावत है—

"एक सिंह रणवण एक सिंह गाईका। एक सिंह माधोसिंह और सिंह

माधवसिंहने तिव्वतके सीमान्तपर चबूतरे वनवाये, जिनमें कुछ
मिलते हैं। उसीने मलेयाकी नहरकी सुरंग तैयार कराई थी। माधवसिंह
गढवाली सेना ले संभवतः बाराहाट-हरशिलसे भागीरथी और वस्पाके
पहाड़को पार कर वस्पा (सङ्ला) उपत्यकापर अधिकार किया और आ
हुए चिनी (सतलज तट)पर धावा किया, किन्तु किन्नर-देशमें अब
और अठारह गढके ठाकुरोंका राज्य समाप्त कर रामपुर-सराहन (
राज्य उसी समयके आसपास स्थापित हो चुका था, जब कि अजयपा

---

[1] एक सिंह वह जो गायोंको मारता है, एक सिंह है माधव
अतिरिक्त और सिंह नहीं।

को एककर गढवाल वनाया। राजा केहरसिंहने १५५४ ई०में रामपुर राज- ी वसाई और १५५६में पश्चिमी तिव्वतके राजा गल्दन्-छेवङ्को मित्रता- सन्धि करनेके लिए मजवूर किया, जिसमें लिखा था:[1]—

“हमारा पारस्परिक मैत्रीपूर्ण सम्वन्ध तव तक उभय-पक्ष द्वारा अपरित्यक्त र अपरित्याज्य रहेगा, जव तक कि देवताओंका अनन्त-निवास भूकेन्द्रवर्त्ती ाश हिमविहीन नहीं होगा, मानसरोवरका जल नहीं सूखेगा, काला कौआ द नहीं हो जायेगा और लोकमें प्रलय नहीं हो जायेगी। दोनों राजाओंकी ाकी भलाई और राज्योंकी अक्षुण्णता कायम रखनेके लिए दूत भेजा जायेगा। ाहर प्रति तीसरे वर्ष ङरीके चार प्रान्तों—चपरङ्, स्पुरङ्, दावा (दापा) और क तथा राजधानी गर्तोकमें एक दूत भेजा करेगा।”

यह उस समयकी वात है, जव गढवालपर अजयपालके पौत्र मानशाहका सन था। मानशाहको ङरीके उसी राजा गल्दन्-छेवङ्से भुगतना पड़ा, जिसके र प्रान्तोंमें एक दावा (दापा) भी था। गल्दनकी मृत्युपर पल्-जङ् (श्रीभद्र)ने ज्य अपने हाथमें लिया। महीपतशाहके समय, मालूम नहीं ङरीके चारों तोंका एक शासक था या अनेक। अस्तु, माधवसिंहको चिनी पहुँचकर विशैर ामपुर)के राजा उदयसिंह या विज्जासिंहके प्रतिरोधसे भी अधिक घातक ाका सामना करना पड़ा। अपने सेनापतिके परामर्शानुसार उसकी मृत्युको पाकर “शवको तेलमें भून कपड़ेमें लपेट वक्समें वन्द करके” सैनिकोंने पीछे हरद्वारमें दाह-कर्म किया। कहते हैं महीपतशाहने १७ वर्ष राज्य कर ६५ की अवस्थामें १६४६ ई०में शरीर छोड़ा।

मोलारामने महीपतशाहके शासनके वारेमें लिखा है—

दुलोराम ही शाहके, भये महीपत शाह।
महप्रचंड भुजदंड ही, तापर तिमर अथाह॥

शक्ती महाप्रवल भुज-दंडा। कीने नित अरिजन वहु-खंडा॥
शक्ति अरु धन निसि दिन हरै। धूर्त महा मन में नहिं डरै॥
मदिरा पान करै मदमातो। नेत्र घूर्ण अति वचनहिं तातो॥
रीझ खीझ महि विलंव न लावै। कर्म-अकर्म सवहिं करवावै॥
पाछे सोच करै मन माहीं। “हौं इह वात करी कछु नाहीं”॥

---

[1] देखो मेरा “किन्नरदेश”, पृष्ठ ३६९

तृण वरावर सवको जानै। कही काहुकी कछु नहिं मानै॥
हिंसा जीव-घात वहु कीनी। भली वुरी कछु नाहीं चीनी॥
मन्त्री मानस कई जो मारे। भले वुरे कोउ नहीं विचारे॥
थर-थर काँपै तिनसों सव ही। रहे प्रसन्न नाहिं वह कव ही॥

× × ×

आयो मेला कुंभको, चले आप हरद्वार।
तहाँ चलत जो कुछ भई, कहत हुँ सो विस्तार॥
श्रीनगर सै जव ही चले। सगुन न कोई नीके मिले॥
सनमुख पौन प्रचण्डहि आई। खैंचे म्यान सों तेग चलाई॥
त्रण फणि चर्म दिष्ट महि आये। कागा मिरगा वाँयें छाये॥

× × ×

चले नृपति रिषिकेश सिधारे। ठाढे भये भरतके द्वारे॥
मण्डप भीतर जव हीं गये। दरसन देख क्रोध अति भये॥
कह्यो "भर्थं यह उग्र निहारो। उनके दोऊ नेत्र उखारो॥
हम दरसनको आये याके। इह देखत क्यों हमें रिसाके"॥
नेत्र दुहू विल्लौरके, दीने शीघ्र कढ़ाय।
देखे वह जव हाथ ले, गये वहोत सरमाय॥
दीने वह फिर नेत्र चढ़ाई। चले तहाँ सों आगे धाई॥
आगे मिले गुसाईं नागे। ....॥
सस्त्र सवै धारै तन माहि। सारे अंग विभूत रमाहि॥
महादिगम्वर साधू सूरे। इक वाघंवर-धारी पूरे॥
चले जात हरिद्वार गुसाँई। भई भेंट तिन मारग माँहीं॥
राजा देख तिन्हें जो रिसायो। "करो कतल इनको" फरमायो॥
चली तहाँ तलवार तवै हीं। नाँगे दीने काट सवै ही॥
पड़ी पाँच सौ लोथ गुसाँही। गृहस्थी एक हजार तहाँ ही॥
तिन महि एक सिद्ध भी कूटा। ताके तनसे दूध हि छूटा॥
ठौर-ठौर सौ रक्त वहायो। ताकी तरफ सौ दूध ही आयो॥
इह जस पुन्न कियो तह जाई। गढ-पति ही जो महीपति साईं॥
करि स्नान हरिद्वार सौ, सिरीनगर महि आय।
"हत्या कीनी हम घनी", कह्यो जो विप्र बुलाय॥

× × ×

"याको तुम उद्धार बताओ। किये पाप जो सभी मिटाओ॥
बिन अपराध हम हते गुसाईं। नेत्र भरतके छोड़े नाहीं॥
बिना दोष हम दंर्डहि दीन्हो। पर-दारा बहु धर्षण कीन्यो॥
गनका कोई जो छाड़ी नाहीं। भोग कियो जननी-संग माहीं॥
किनहू हम सौ सुख नहिं पायो। कर्म अकर्म कछू न लखायो॥
तुम सब हमरी जानो बातहि। कहा कहे(अब)तुमरे साथहि॥
याको तुम अब कहो विचारा। जाविध छूटे पाप हमारा॥"

पंडित देस-विदेस के, सुनि के कियो विचार।
कठिन महा दुहू भाँति ही, याको क्रोध अपार॥

....................। .... ॥
तब विप्रनने शास्त्र मँगायो। पढि विधि कर्म वही जो सुनाओ॥
निकसे शास्त्र महि तीन प्रकारा। कटै पाप तबही इह सारा॥

× × ×

"दान हवन बहु द्रव्य लुटावै। अन्नदान गौ-दान करावै॥
क्षुदावन्त अत्यन्त जो कोई। तिरपित कीजे जग महि सोई॥
नाना विंजन वस्तर दीजै। दछिणा देइ बिदा सब कीजे॥
वीर चक्र रचि पूजन करै। मदिरा मांस हवन महि धरै॥
शक्ति ऽरु कन्या पूजन कीजै। .... ॥
वस्तर भूषण सब कुछ दीजै। महा प्रसन्न सबहिं विधि कीजै॥
षट दरसन सब ही जो बुलाइ। कीजै तृप्त सभी मन लाइ॥
'प्रजा कौं भी पास बुलाओ। दुबधा तिनहीं को जो मिटाओ॥
पीपल वृक्ष को ही घर कीजै। तामे बैठि अग्नि जब लीजै॥
पाप भस्म तब ही सब होवै। निर्मल होय स्वर्ग तब जोवै॥
कै तों स्वर्ण गलाय जो लीजै। तातो तातो ही (को) पीजे॥
प्राण जाय तज पाप सबै ही। पावै नर वैकुंठ तबै ही॥
कै तो रण मँहि सनमुख मरै। भव सागर सौं तब ही तरै॥
निर्मल होय स्वर्ग महि जावै। पाप ताप कछ नाहिं रहावै॥"
निकस्यो इहै शास्त्र के माँही। बाँच्यो सब विप्रन जो तहाँ ही॥

× × ×

राजा ने सुनि के कही, "हम क्षत्री जग माहिं।
बनिता जलत है अग्नि यह, धर्म हमारो नाहिं॥

हम हूँ जूझेंगे रण-माहीं। बनिता नाम धरावें नाहीं॥
किये पुन्न जे शास्त्र बताये। हवन यज्ञ सबही जो कराये॥
गऊदान अनधन बहु दीन्यो। विधि-पूर्वक सब ही कछु कीन्यो॥
राजा प्रजा करी सब राजी। कविजन को दीने गज-बाजी॥

× × ×

चढीं फौज तब चले कुमाऊँ। बाजन लागे ढोल दमाऊँ॥
सवा लाख संग फौज तुलानी। तीन ढोल मंगाये सलानी॥
लोभी अरु बधाणी आये। तडा तोमडा संग मँहि लाये॥
सातु मातु कंडी मारा। बटफर काठ पटेल सिधारा॥
खसिया संग और दिसवाली। तूँवर दिल्लीके दिलवाली॥
तूंवर दिल्लीके अत प्यारे। सँग बनवाडी दास सिधारे॥
मंत्री गढके सब संग लागे। खसिया-बामन चले जो आगे॥

× × ×

करि सलाम हजरतकौं धायो। गढसौं अपने कटक मँगायो॥
बटफर....जबर पटैला। तडा तोमडा भडा पटैला॥
खसिया फसिया....धाये। सातू मातू कंडी लाये॥
कंवल-पोस मारछे काछे। घणे तीर ले आयें आछे॥
फरसी फरसा लेकर आये। कोइ डांगरा ही चमकाये॥
यह पाती लिखि जो दे दीनी। "किह कारण..चढिके आये॥

× × ×

जो तुम कहो सो हमहू करिहैं। तुमरे संग न..हम लरिहैं॥
तुमरो दियो राज हम पायो। निमक तुमारो हमने खायो॥
....
वृक्ष हमारो तुमही लाओ। अब क्यों चाहो याहि कटायो॥
....
हुकम करौ तो हम ही आवै। जो कछु कहो सो द्रव्य हि लावै॥

× × ×

"हम धन चाहत ना रजधानी। ....॥
माँगत हैं हम हूँ जो लड़ाई। लड़ो शीघ्र तुम हमसौं आई॥
इह प्रण हमहूँ करिकै आये। क्षत्रिनकौ रणतीर्थ बताये॥
रण महि देह त्याग हम करनी। लख चौरासी पड़ै न परनी॥

......................।
चले महीपत शाह सुजाना। कौसल्या महि दीन्यो थाणा॥
....
मुक्ति हेत..वासो कीन्यो।
दीन्यो वहै वकील लगाई। ताने सवहीं विथा सुनाई॥
और पाप महि वो नहिं आये। रणभूमी महि मरनहिं धाये॥
वह वकील कहि तिनके जाई। उदोतचंद सुनि अति घवराई॥
सुनिकै छाड़ दियो सव काजा। .... ॥
कह्यो "कहा अव हमहूँ करैं। मित्रनके संग कैसे लरैं॥"
....
अन-धन दे..मंत्रि पठायो। गढपति उन वहुविधि समझायो॥
गढपतिके मन महि नहिं भाई। अन-धन सव..दिये हटाई॥

× × ×

गढपति संग सिपाही थोरे। खैंच म्यानसे सब हीं दौरे॥
ज्यों वनमाहिं काष्ट नर काटै। त्यों रणमाहि सूरमा छाटे॥
कुर्माचलकी फौज भगाई। भाजनको कहूँ राह न पाई॥
......................।
लड़े महीपत शाह जहाँ हीं। भयो महा-समसान तहाँ हीं॥
......................।
अजर अमर भये वह जग माहीं। जिनकी कविजन कथा वताँहीं॥
दस हजार रण माहि गिणाये। कुर्माचलि गढवालि गिराये॥
खवर कहैं गढमें गई, गये स्वर्गको नाह।
दये राज बैठाय तव सबने प्रथिपत शाह॥

(७) पृथिवीशाह (१६४६-६० ई०)—महीपतिके बाद उसका पुत्र पृथिवी-त शाह १६४६के आसपास गद्दीपर वैठा। इसने पश्चिमकी ओर अपनी सीमा तलज तक पहुँचानी चाही। विशेर और दूसरे राजाओंने मिलकर लड़ाई की, र पृथिवीपतशाहको पीछे हटना पड़ा। अंतमें संधि हुई, जिसके अनुसार पब्वर ी (टौंसकी शाखा)के दाहिने तटपर अवस्थित हाटकोटी सीमा मानी गई। ीं सीमांतपर भी कुमाऊँसे संघर्ष जारी रहा। इसी समय गढवालके वढ़े हुए तको देखकर दिल्ली (शाहजहाँ)का भी ध्यान इधर गया और १६५४-५५में लीलुल्ला खाँको ८०००सेना देकर गढवाल भेजा गया। गढवालका प्रति-

द्वंद्वी कुमाऊँका राजा वाज-वहादुर भी शाही सेनाके साथ था। दून (
देहरादून)-उपत्यकामें घुसनेमें वहुत कम विरोधका सामना करना
खलीलुल्ला वहाँ लूटपाट मचाकर भीतरी पहाड़में घुसे विना लौट गया।
वहादुरने इसी समय वधाण और लोहबापर आक्रमण कर जुनियागढके
सीमान्त दुर्गको ले लिया। उसके वाद तिव्वत पर वह आक्रमण कर
उसी समय पृथिवीशाहने कुमाऊँनियोंको भगाकर हाथसे गये अपने
लौटा लिया। वाजवहादुरने तिव्वतसे लौटते ही पिंडार पर वधाण और
(लोहवा) दोनोंके रास्ते आक्रमण किया। सवली और वंगारस्यूँपट्टीके
ने कुमाऊँनियोंकी सहायता की, गढवाली सेनाको भागना पड़ा, और
श्रीनगर पहुँचकर पृथिवीशाहको अपनी शर्तोंपर संधि करनेके लिए वाध्य

सुलेमान शिकोह—शाहजहाँको औरंगजेवने कैद कर लिया था,
तख्तके लिए भाइयोंका युद्ध जारी था। शाहजहाँका ज्येष्ठ पुत्र दारा,
लाहौरकी ओर लड़ रहा था। उसके पुत्र सुलेमान शिकोहके विरुद्ध औरं
महाराजा जयसिंहको भेजा था। सुलेमान शिकोह हारकर गढवालकी ओर
उसे पकड़नेके लिए फिदा खाँ हरद्वारकी ओर चला, और मुरादावादके
कासिम खाँने नगीनाकी ओरसे पीछा किया। सुलेमान शिकोह को
रास्ते जल्दी-जल्दी कूच कर रहा था। उसके साथ अव अपने दूधभाई
शाह तथा अपनी स्त्री और कुछ अनुचरों तथा दास-दसियोंके अतिरि
नहीं था। श्रीनगरमें पृथीशाहने शाहजहाँके पोतेका स्वागत किया।
शायद औरंगजेवका भविष्य निश्चित नहीं मालूम हो रहा था, इसलि
"सम्राट्" दाराशिकोहके भावी उत्ताधिकारी सुलेमान शिकोहको राजाने
किसी पुत्रीको व्याह दिया हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। फिदा खाँ और का
शाहजादेको लौटा न पाये। फिर जम्मूके राजा राजस्वरूपको एक
देकर भेजा गया। साल भरके युद्धके वाद भी सफलता नहीं मिली।
शरणागतको लौटानेको तैयार नहीं था। राजाके मंत्रीने प्रलोभनमें
शाहजादेको विष देना चाहा, किन्तु भेद खुल गया और उसे अपने प्राणों
धोना पड़ा। शाही कोपमें पड़कर राज्यको भस्म करना उच्च कर्मचारियों
स्वयं युवराज मेदिनीशाहको भी पसंद नहीं था, किंतु पृथीशाह अडिग
शाही हुकुमसे सिरमोर (नाहन) की सेना पश्चिमसे आक्रमण कर
४५ मील पश्चिम तथा (टेहरीसे ४ मील) तक गंगाके किनारे पहुँच गई
वाली सेना उसे वड़ी मुश्किलसे जमुना पार करा पाई। कुमाऊँकी

ाही हुकुमको अपने सीमान्तपर ही बजाकर छुट्टी ले ली। औरंगजेबकी नाने अब दूनपर आक्रमण किया। सारा दून, और भावर हाथसे जाता रहा। यसिंहने अपने पुत्र कुमार रामसिंहको समझानेके लिए भेजा। पृथीशाहने सका बड़ा सत्कार किया, किंतु सुलेमानको लौटाना स्वीकार नहीं किया। ुमार रामसिंह और युवराज मेदिनीशाह पकड़नेको तुले हुए हैं—यह सुनकर ुलेमान शिकोहने रातको तिव्वतकी ओर भाग जाना चाहा, किंतु रास्तेका ता नहीं था। सुलेमानने भटकते हुए फिर श्रीनगरकी ओर लौटकर एक गुफामें रण ली। किसी ग्वालियेने उसे देख लिया। राजाकी इच्छा न होनेपर भी सुलेनको पकड़कर रामसिंहके हवाले कर दिया गया। औरंगजेबने सुलेमानको छ समय ग्वालियरके किलेमें कैद रखकर मरवा डाला और पृथिवीशाहको नकी सनद दी। दूनमें इस राजाने पृथिवीपुर नगर और एक किला बनवाया ा, जहाँ गढवालका शासक रहता था। माधोसिंह भंडारीके पुत्र गजेसिंहकी ी मथुरा बौराणीका इसीके शासनकालका १६६४ ई० (शाके १५८६) में उत्कीर्ण भिलेख देवप्रयागके रघुनाथ मंदिरके द्वारमें लगा है। ३० वर्ष राज्य करके २ वर्षकी अवस्थामें पृथिवीशाहका देहांत हुआ। उसके बाद उसका पुत्र दिनी शाह गद्दी पर बैठा।

मोलारामने पृथीपतिशाहके बारेमें लिखा है—

महिपतशाह स्वर्ग जब गये। पृथिपतशाह नृपति तब भये॥
पृथिपतशाह भये अवतारा। तिनको जस गावै संसारा॥
धर्म कर्म शुभ यज्ञहिं कीने। बिरती विप्रनको बहु दीने॥
कविजन सुनि कीरति जो गावें। जरी-दुशाला तिन्हें दिलावें॥
गुणग्राहक रह अति गढ माई। राजी किये गुनिनके ताई॥

× × ×

खिलत देहि ऐंधी इहाँ, हजरत दिये पठाय।
.... ॥

ऐंधी लेहि खिलत गढ आयो। किनहूने वह नाहि गिनायो॥
महाराज सुनि चुप ह्वै रहे। ऐंधी लेन आप नहिं गये॥
मंत्रिन सब ही रीति सुनाई। सो राजाके मन नहिं भाई॥
कह्यो "तुरक पै हम नहिं जावैं। हाथ जोर नहिं सीस नवावैं॥
क्यों गुलामको करहिं सलामहि।" .... ॥
"जो तुम अपनी हुरमत चाहो। हुकम मान हमरे संग आओ॥"

कान दावि तव संग मँहि आयो । खिल्लत वादशाहि सव लायो ॥
ऐंधी भाजिके दिल्ली सटक्यो । मजलस जाय दस्त दो पटक्यो ॥
देखि वादशह ताहिको, गढकी बूझी वात ।
"ऐंधी क्यों घवराइयो, कहो हमारे साथ ॥"
ऐंधी कहे "हम प्राण वचायो । आधी रात जो भाजिके आयो ॥
तुम्हें तहाँ कोई नहीं मानै । राजाको सव कोई मानै ॥
राजा भयो वादशह आपे । तासों घर-घर सवही काँपे ॥
पृथिपतशाह आप कहलावे । तुमको हजरत तुरक वतावे ॥
सुनी हकीकत वादशा, कह्यो "पकरिकै लाव ।
मीर मुगल तुम जल्द ही, अवहीं गढको जाव ॥"
गढ पर्वत सव लिये घिराई । दल-वल . . वहु फौजैं आई ॥
इतसौं पृथिपतशाह सिधारे । . . . . ॥
वार-पार फौजैं सव ठाड़ी । विच मैदान चले जहँ गाड़ी ॥
सैल शृंग चहूँ ओरहिं ठाड़े । वृक्ष साणके डारहि वाढे ॥
. . . . ।

× × ×

घोरा चढ़ तुम सनमुख आओ । नाहक क्यों फौजहिं कटवाओ ॥
मीर मुगल चढि घोरा आयो । पृथिपतशाह इधरसौं धायो ॥
घोरा घोरा दिये मिलाई । कर्ण कर्णसों लागे जाई ॥
गल कमान राजाके डाली । राजाने तव सुरत सिंवाली ॥
वाकी काढी वाकोहि दीनी । कमर अलग तहँ ताकी कीन्ही ॥
वीर मुगल धरणीमें ल्यायो । कटक देखि सिगरोहि भगायो ॥
नृपति फौज तहँ पाछे लागी । आगे जात तुरककी भागी ॥

× × ×

कर सलाम सवहीने दीन्यो । सवा लाखको कागज कीन्यो ॥
"राजा कहे न हमें सताओ । वहुधन जो तुमपै तो लुटाओ ॥"
मीर मुगल भाग्यो जवै, भजी फौज अकुलाय ।
दिल्लीमें जहँगीरसों, कही हकीकत जाय ॥
हजरत वहुत भये सुनि राजी । वकस्यो हाथी ग्यारा वाजी
खिलत दुसाला मूँगा-मोती । . . . .

औंर ही ऐंधीं पठायो। श्रीनगर महि लेकै आयो॥
महाराज सब मंत्रि पठायो। अत आदरसों ले वह आयो॥

× × ×

“गनिका ऐंधी माँगन लाग्यो। सो हम दई न उठिके भाग्यो॥
इत कंचनी होत है नाहीं। हिंदू रमजनि है पुर माहीं॥”

× × ×

दिल्ली दाखल ऐंधी भयो। उनहू सब विध नीको कह्यो॥
जहाँगीर खुश सुनिके भये। .... ॥
श्रीनगर महराज नित, रह प्रसन्न मनमाँहि।
ख्याल करे जो आनिकै, खाली जात सो नाहि॥

× × ×

या विधि कविजन कविता कीनी। महाराज सों ही कहि दीनी॥
महाराज सुनिके मुसिकाये। हाथी घोरा ताहि दिलाये॥
नाना वस्त्र सस्त्र पहिराये। सहस रूपया रोक दिलाये॥
जावत जीव सुजस फैलायो। देह..तजि स्वर्गहि पायो॥

८. मेदिनीशाह (१६६०-८४ ई०)—बाजबहादुरके पुत्र उद्योतचंदने गद्दीपर ते ही १६७८में बधाणपर आक्रमण किया, किंतु उसे अपने योग्य सेनापति ा साहुको खोकर लौट जाना पड़ा। दूसरे साल उद्योतचंदने गणाई और पंडवालसे घुसकर लोहबाके रास्ते चाँदपुर तक पहुँच उसे लूटा। कुमाऊँ के साथ ीके परले पारके डोटी(नेपाल)के रैनका-राजाकी खान्दानी दुशमनी थी। वाल और डोटी मिल गये। १६८०में डोटीने कुमाऊँकी पुरानी राजधानी पावतपर अधिकार कर लिया तथा गढवालियोंने दूनागिरि और द्वाराहाटको लिया, किंतु यह सब सफलतायें अस्थायी रहीं। सिरमोर, बिशेर, गढवाल, ाऊँ, डोटीका शक्ति संतुलन शताब्दियों तक ऐसा रहा, कि वह एक दूसरेको ल नहीं सकते थे। मेदिनीशाहने शुरू हीमें औरंगजेबको अपनी खैरखाही लाई थी, इसलिए उधरसे कोई प्रहार नहीं हुआ। २३ वर्ष राज्य कर ६१ की अवस्थामें मेदिनीशाहकी मृत्यु हुई। उसका उत्तराधिकारी तत्पुत्र फतेहशाह ा। मेदिनीशाहके बारेमें मोलारामने लिखा है—

देह तजी जब स्वर्गहि पायो।
मेदिनिशाह भये सुत तिनके। कहूँ सुजस अब सुनियो इनके॥
खबर गई दिल्लीमें जब हीं। भेज्यो ऐंधी[एलची]गढमहिं तबहीं॥

खिल्लत साथ पार्चा दीन्यो। "इत आओ तुम हुकुम हि कीन्यो।
मेदिनिशाह चले संग ताके। फतेहशाह-सुत राजमें राखे।
दिल्ली जाय सलामहि कीन्यो। देखि बादशह हुकमहि दीन्यो।
"तुम क्यूँठलगढ साधो जाई। इतकी फौजें हारके आई।
आकी वह गढ भयो मवासी। हमरी उन कहँ फौज विनासी।
सुनी मेदिनीशाह यह, झुकिके कियो सलाम।
कह्यो "मैं हजरत जात हूँ, यहीं हमारो काम" ॥
करि सलाम हजरतको धायो। गढ सों अपनो कटक मँगायो।

× × ×

संग लोभी बधाणी तिनके। तुपक सिरोही करमहि जिनके।
ऐसी गढसों फौजें धाई। जाय क्यूँठल सबहि घिराई।
मेदिनिशाह मंत्र ठहरायो। सब मंत्रिनको इहै सुनायो।
"पानी रसत बंद करि राखो। भली बुरी तिनसों मत भाखो।
बठफरगढ चहुँ-पास फिरायो। अंदर जान कोई नहिं पायो।
गढ महिं बैठि कतल अरि कीने। पड़े पाय मुख मँह तृण दीने।
मेदिनिशाह दिल्लीमें आये। वहु आदरसे पास बुलाये।
हजरत कह्यो "कुछ अर्जी लाओ। जो तुम माँगो सोही पाओ।
राजा कही "मेहर जो कीजे। दून हमारी हमको दीजे।
वहोत दिननसे छूट रही है। बूझी तुम हम अर्ज कही है"।
पट्टा तुरत लिखाय मँगाया। ठपिकै सही कराय दिलाया।
हुकम भयो "रहु हमरे पासहि। सब विधि पूरैं तुमरी आसहि"।
मेदिनिशाह रहे तब तितही। मजलस जात रहे जो नितही।
कोई दिन दिल्ली रहे, पाछे गढ महिं आय।
सुरगवास तिनको भयो, रह्यो सुजस जग छाय ॥

(९) फतेशाह (१६८४-१७१६)—फतेहशाह १५ वर्षकी गद्दीपर बैठा। उसकी अभिभाविका उसकी माता कांगड़ाके राजाकी लड़ रानीके कृपापात्र भगतसिंह, आलमसिंह, महीपतसिंह, दयालसिंह और पाँच भाई कठोत थे। उनका पिता हरकसिंह संबंधके कारण श्रीनग सेनामें उच्चपदपर नियुक्त था। रानी कठोतोंकी बातपर चलती थीं। कठो तरहके कर लगाये, जिससे प्रजामें अशान्ति फैल गई। लोगोंने उन्हें पकड़कर १०-१२ मील उत्तर (भट्टीसेरा चट्टीसे आगे) एक सूखे पर्वतपर मार

ंच भाई कठोतोंकी चौरी" अब भी वहाँ मौजूद है। रानीके सलाहकार अब हर डोभाल और पुरिया नैथाणी हुए।

फतेहशाहने शासन संभालते ही १६९२में सिरमौरपर चढाई की। राजा प्रकाशसे लड़ाई हुई। पाँवटामें गुरु गोविंदसिंहसे भी झड़प हुई। यहां से ो बढकर सहारनपुरके पुंडीर-गूजरोंपर आक्रमण किया, जहाँ शाही सेनापति द अलीसे मुकाबिला करना पड़ा। फिर नीती घाटा पार हो दावा (भोट)के ाको परास्तकर कर देनेके लिए मज्बूर किया। वहाँ दावाके विहारमें अब भी की पलीतादार वंदूक, तलवार, कवच और टोप रखे हुए हैं। उधर १६९८में ाऊँकी गद्दीपर बैठते ही ज्ञानचंद (१६९८-१७०८ ई०)ने पिंडार-उपत्यका-थराली तक आक्रमण किया। अगले साल उसने रामगंगा पार हो, सावली, ली और साईंधारको लूटा। इसका वदला फतेहशाहने १७०१में चौकोट और ाडको लूटकर लिया। आगे सीमान्तकी पट्टियाँ उजड़ गईं, खेतोंमें जंगल आये। १७०३में गढवालियोंने दुदुली (मेल चौरीसे थोड़ा ऊपर)में कुमाऊं-ोंको हराया। १७०७से—जिस साल कि औरंगजेब मरा—अब शत्रु-की वारी थी। उसने जुनियागढ (विचला चौकोट)पर अधिकार करते वाखाल और देवलीखाल होते चांदपुर तक पहुंच उसे हरा दिया। अगले राजा तचंदने लोहवा लूटकर वहां लोहवागढी (पांडवाखालके सिरेपर)में अपनी रखी। अगले साल वधाण और लोहवा दोनोंके रास्ते आकर कुमाऊंनी यें पिंडार-अलकनंदाके संगम (कर्णप्रयाग)के पास मिल गईं, और नीचे वढ़ नगरपर उन्होंने अधिकार कर लिया। फतेहशाह देहरादून भाग गया। तचंदने श्रीनगरको एक ब्राह्मणको दान दे दिया और लूटके मालको अपने गोंमें वांट दिया। लेकिन यह सफलता स्थायी नहीं थी, १७१०में फिर गढवाली वधाणपर अभियान कर रही थी, यही नहीं फतेहशाहने गड़सार (कत्युर)को र उसे वदरीनाथको दान दे दिया।

गुरु रामराय—सिक्खोंके सातवें गुरु हरराय (मृ० १६६१)के हरिकृष्ण र रामराय दो पुत्र थे। रामराय ज्येष्ठ पुत्र थे, किंतु उनकी माका दर्जा ा था, जिससे उन्हें गुरुकी गद्दीसे वंचित कर दिया गया। हरिकृष्ण गद्दीपर , किंतु तीन वर्ष वाद १६६४में चेचकसे मर गये। अब भी रामरायको वंचित गुरु हररायके भाई गुरु तेगवहादुर (१६६४-७५)को गद्दी मिली। सिक्ख अपने गुरुको सच्चा वादशाह कहा करते थे। कहते हैं, उसीसे चिढकर रंगजेवने गुरु तेगवहादुरको पकड़कर दिल्लीमें जिस जगह मरवा डाला—वहीं

आज शीशगंजका गुरुद्वारा खड़ा है। गुरु तेगवहादुर रामरायके चचा
गुरु गोविंदसिंह चचेरे भाई।

गुरु तेगवहादुरके समय भी गुरु रामरायने अपने दावेको नहीं छोड़
तेगको मरवानेके वाद गुरु रामरायको औरंगजेवने परिचयपत्र देकर
दिया। वह पहिले टौंसके किनारे कांदलीमें ठहरे, फिर खुड़वुड़ामें
राजा फतेहशाहने उन्हें खुड़वुड़ा, राजपुरा, चामासारी गाँव प्रदान किये
फतेहशाहके पौत्र प्रदीपशाहने चार गाँव और—धामावाला, मियांवाला,
वाड़ी और धरतावाला—प्रदान किये। धामावालामें गुरु रामरायने एक
मंदिर वनवाया, जिसे उनकी विधवा पंजाव कुअरने पक्का कराया।
(खरवारा) और धामावाला (धामूवाला) इन्हीं दोनों गाँवोंको लेते आगे
देहरादून नगर वढा। गुरुका डेरा पड़ जानेपर अनुयायी भी वहाँ आ
लगे, और इसे डेरानानककी भांति गुरुका डेरा कहा जाने लगा, जो दून (हि
हिमालयके वीचकी उपत्यका)से मिलकर डेरादून, 7 देरादून वन गया।
राय अंतिम तीन सिक्ख गुरुओंके प्रतिद्वंद्वी रहे, जिनमेंसे गुरु तेगवहा
गुरु गोविंदकी कुर्वानियां असीम थी, इसलिए सिक्ख जन-साधारणको उन
आकृष्ट होना ही चाहिए था। यह अच्छा हुआ, जो गुरु रामरायका
कार उनकी संतानको न जाकर उनके उदासी शिष्य (महंत) हरप्रसादको
हरप्रसादके शिष्य हरकिसन या हरसेवककी मृत्यु १८१८ ई०में हुई।
राय अधिकतर श्रीनगरमें रहते थे, जहां उनके लिए राजाने एक मंदि
दिया था।

राजा फतेहशाहने ५० वर्ष राज्य करके ७६ वर्षकी अवस्थामें
शरीर छोड़ा। उसका पुत्र उपेन्द्रशाह कुछ महीनों राज्य करके ४१ वर्षकी
में १७५०में मर गया, फिर उसका भतीजा दलीप-पुत्र प्रदीपशाह
बैठा।

फतेहशाह और उपेंद्रशाहके वारेमें मोलारामने लिखा है—

> फतेहशाह राजा इत रहे। दिल्ली नौरंगजेवहि भये
> फतेशाह दाता भये ज्ञाता। सुंदर सूरज जग विख्याता
> दिल्ली नौरंगजेव कसाई। पिता-भ्रात सव दिये मराई
>
> × × ×
>
> वही कथा अव फिरकै आई। जो पहिलों हम तुमहि सुनाई

तव हस्ती[1] जू यों कही, "आगे कहो सव हाल ।
फतेहशाह-पाछे भयो, जो राजा गढवाल" ॥

(१०) उपेन्द्रशाह

उपेन्द्रशाह-भये पाछे राजा । तिनहूं किये सवै शुभ काजा ॥
सिंह मृगा एक ठौर वंधायो । एक घाटमें नीर पिलायो ॥
नित्त नीत गढराज चलाई । कहूं अनीत होन नहिं पाई ॥
हवन यज्ञ दान वहु कीने । हय हाथीहि कविनको दीने ॥
कलियुगमें सतयुगहिं चलायो । राज करन..वहुत नहिं पायो ॥
नौ दस मास राजहि कीन्यो । स्वर्ग जाय पुनि वासहि लीन्यो ॥
टीका[2] तिनके कोई न हुआ । जो हुआ सोई तहं मुआ ॥

(मुगल-साम्राज्यका अन्त)——

दिल्लीके साथ गढवालके संबंधके वारेमें पहिले जहां-तहां कहा जा चुका है । लकोंके समय हिमालय पर मुसलमानोंका आक्रमण हुआ था । अकवरके समय न खाँ टुकड़ियाने काफिरोंके धर्मको उखाड़ फेंकनेका प्रवल प्रयत्न किया । ७०७ में औरंगजेवके मरनेके वाद मुगल-साम्राज्यमें जो उथल-पुथल मची, सका प्रभाव शक्तिहीन होते गढवालपर भी तेजीसे पड़ा । यहाँ उसके संबंधमें छ कहना जरूरी है ।

औरंगजेवकी मृत्युके वाद मुगल-शक्तिका ह्रास वड़ी तेजीसे होने ा । पहिलेसे भी मुगल दरवारमें चार दल थे——(१) तूरानी, (२) ईरानी, ३) अफगान (पठान) और (४) हिन्दुस्तानी । औरंगजेवके वाद प्रथम त (तूरानी) का मुखिया कमरुद्दीन था, जो पीछे चिंकिलिच खाँ और तमें निजामुल्मुल्क वना । इसके पूर्वज मध्य-एसियाके तुर्कमान थे । कमरुद्दीन हले गोरखपुरका सूवेदार था । फर्रुखसियरके राजच्युत होनेके समय वह रादावादका[3] फौजदार था, लेकिन वह रुहेलखंडमें नहीं जमा——उसे तो अपनी र्यभूमि दक्खिनको वना हैदरावादका प्रथम निजाम (निजामुल्मुल्क) आसफजाह नना था । सैयद-वंधुओंकी मृत्युके वाद निजामका चचा महामंत्री वना । जिसके रनेपर १७२२ में निजाम भी एक साल महामंत्री रहा । मुगल भी मध्य-एसियाके र्क थे, इसलिए तूरानी दल शाही-दल था । यहां यह वात स्मरण रखनी

---

[1] हस्तिदल गोरखा-शासक, जिसके कहनेपर मोलारामने यह काव्य चा । [2] युवराज [3] यह शाहजहाँके पुत्र मुरादके नामपर बसाया गया था ।

चाहिए कि बाबर तैमूरके पुत्रोंके खानदानका अतएव तुर्क था। रोब लिए ही उसने अपने पैतृक खानदानकी जगह चंगेज-वंशजा माँके खानदान (मंगोल) का नाम अपने साथ जोड़ना शुरू किया।

ईरानी दल एक तरह शीयोंका दल था, जिसमें पीछे मुर्शिदाबाद और होनेवाले नवाब सम्मिलित थे। हिन्दुस्तानी दलके मुखिया अब्दुल्ला हुसेन अली खाँ सैयद-बन्धुओंके नामसे प्रख्यात कितने ही समय तक हर्त्ता-धर्त्ता रहे। इनका मूल स्थान मेरठके पास था। इन्होंने दिल्ली अपने लिए किसी लखनऊ या हैदराबादकी नवाबी नहीं तैयार की। औरंग मृत्युके बाद की डेढ़ दशाब्दियाँ सैयद-बन्धुओंके शासनकी थीं। फर्रुख इन्होंने गद्दीपर बिठाया, और जब पसन्द नहीं आया, तो (१७ फर्वरी १७१ वह उसे उतारकर तब तक दूसरे कितने ही खिलौनोंको शाह बनाते रहे, कि मुहम्मदशाहके जमानेमें दोनों भाइयोंकी समाप्ति नहीं हो गई।

पठानोंने अवधसे पश्चिम गंगाके दोनों पार (प्राचीन कुरु-पंचालमें) लिए भूमि तैयार की—गंगाके दक्खिन फर्रुखाबाद[1] बंगश पठानोंका और गंगासे उत्तरके बड़े भूभागको रुहेलोंने हथियाया था, जो पीछे उन्हींके रुहेलखंड कहा जाने लगा, और जिनका अन्तिम अवशेष रामपुरकी रियास हीमें स्वतंत्र भारतमें विलीन हुई। इन पठानोंके बारेमें "मुताखरीन" का लिखता है "अफगानोंको न दिल होता है, न दिमाग। वह बड़े लालची नमकका हक अदा करना नहीं जानते। अफगानसे झगड़ा करना भिड़के हाथ देना है। अगर कोई अफगान मारा जाये, तो उसका फिरका उस कभी नहीं भूलता, चाहे कितना ही समय क्यों न बीत जाये, मौका मिलने बदला लेकर ही रहता है।"[2]

इसमें शक नहीं, इसमें अतिरंजनसे काम लिया गया है। यह इति स्वयं ऐसे दलका था, जिसका पठानोंसे विरोध था।

अवधके सूबेदार सआदतअली खाँका भांजा और दामाद मंसू सफदर-जंगके नामसे प्रसिद्ध हुआ। १७४८ में निजामुल्मुल्कके मर सफदर जंग[3] दिल्लीका महामंत्री बना, किन्तु दलबंदियोंमें निभ

---

[1] फर्रुखसियरके नाम पर बसा।

[2] "जगत सेठ" (श्री पारसनाथ सिंह) पृष्ठ २०० से।

[3] नई दिल्लीके पास सफदर-जंग मद्रसा इसीने स्थापित किया।

र १७५३ में वगावत करके वह अवध चला आया । अपने स्वार्थोंके लिए ानी और ईरानी दोनों दल विशेष तौरसे मराठोंसे मदद लेना चाहते थे । फदर जंगने मराठोंको बुलाकर फर्रुखावादके वंगश-पठानोंको समाप्त करवा दिया, र द्वाबाको मराठों तथा अपनेमें बाँट लिया । मराठे रुहेलोंकी भूमिमें भी पहुंचने े, थे, किन्तु इसी समय एक विदेशी शक्ति (अंग्रेज) बीचमें आ कूदी । १७५४ सफदर जंगकी मृत्यु हुई और उसका वेटा शुजाउद्दौला अवधका नवाव वना । के दो साल वाद (१७५६) में अलीवर्दी खांके मरनेपर उसका दामाद सिराज-ौला मुर्शिदावादका नवाव वना । अगले ही साल (१७५७) पलासीकी ड़ाईमें छलसे विजय प्राप्त कर अंग्रेजोंने १९० सालोंके लिए देश पर अपना ुत्व जमा लिया । इस अवस्थासे लाभ उठानेमें पश्चिमी पड़ोसी क्यों पीछे रहते? ानके शाहके सेनापति तुर्कमान नादिर कुल्ली या नादिरशाहने १३ फर्वरी ७३९ को कर्नाल पहुंच दिल्लीकी सेनाको करारी हार दी । अवधका सूवेदार ादतअली खाँ घायल हुआ । ९ मार्च १७३९ को नादिर दिल्लीमें दाखिल हो महीने वहां रहा । कत्लआम और लूटका वाजार गर्म हुआ । मुगल शक्तिको ंतिम प्रहार दे तख्तताउस तथा अपार संपत्ति ले नादिर ५ मई १७३९ को दिल्लीसे दा हुआ—वह या उसके आदमी गढवालकी ओर नहीं आये ।

मराठोंको इसी समय उत्तरमें और आगे वढनेका मौका मिला, और जैसा कि र कहा, सफदरजंगने उनकी मददसे द्वावा और रुहेलखंडके पठानोंको दवाया । र्कमान नादिरशाहकी लूटको देख अफगान अहमदशाह अव्दाली (दुर्रानी) क्यों ा रहता ? उस समय उत्तर भारतके एक बड़े इलाके पर उसके पठान भाइयों ंशों और रुहेलोंका अधिकार था । १७४८, १७४९ और १७५१ तक पंजाब और तानपर उसने अधिकार कर लिया । चौथी वार गाजीउद्दीनके महामंत्रित्वके मय १७५६ के अंतमें उसने और आगे कदम वढ़ाया, और पानीपतमें मराठोंकी ाको भी हराकर १७५७ की जनवरीमें वह दिल्लीमें दाखिल हुआ । वहाँ कुछ हाथ लगा, उसे तथा रंगीले मुहम्मद शाहकी दो तरुण विधवाओंको भी वह कावुल लौट गया । दो साल वाद १७५९ में वह फिर दिल्लीकी सूखी ड्डियों को चिचोड़ने वहाँ पहुंचा ।

अहमदशाह अव्दालीके आक्रमणके समय सहारनपुरको एक रुहेले सर्दार ीव खाँ (नजीवुद्दौला)[1] ने अपना गढ़ वना लिया था । पठान होनेसे वह

---

[1] इसीने नजीबाबाद बसाया ।

अब्दालीका कृपापात्र भी था। १७५७ की लड़ाईमें उत्तरमें मराठोंकी वहुत धक्का लगा। १७४२ में जहाँ मुर्शिदावाद मराठोंके आक्रमण-क्षे वहाँ १७५७ में अंग्रेज उसके संरक्षक वन वैठे थे। देशकी यह अवस्था थी, भीतरसे हमें तत्कालीन गढवालको देखना है।

(११) **प्रदीपशाह (१७१७–७२)**——प्रदीपशाहके १७१७ से तकके कई दानपत्र मिले हैं, जिनमें कुछ हैं——

१७२५	जिलासू	जिलेश्वर महादेव
१७३४	श्रीनगर	कपिलमुनि
१७४५	चंद्रपुरी	मुरली-मनोहर
१७५३	श्रीनगर	कमलेश्वर

फतेहशाह और प्रदीपशाहके जमानेमें दूनका भाग्य खुल गया। काटकर कितने ही राजपूत और गूजर वहां आकर वस गये। १७२९ में ४०० गांवोंसे राजाको ९७४६५ रुपयेकी आमदनी होती थी, जिसमेंसे दान-वृत्तियोंमें चला जाता था।

दिल्लीकी शक्ति अव वहुत निर्वल हो गई थी।

यह कह चुके हैं, कि दिल्लीके शक्तिशाली सामन्तोंने मुगल-साम्रा आपसमें वांट लिया था, जिसमें गंगाके दक्षिणमें फर्रुखावाद वंगश पठानों वना और पुराना कटेहर या धौलिया-जौलियावन रुहेले पठानोंके कारण पीछे रुहेलखंड वन गया। अव गढवाल और कुमाऊंके भी दक्षिणमें शाली रुहेले रहते थे। नजीवखां (अमीरुल्-उमरा नजीवुद्दौला) रुहेलोंका सरदार था, जिसके नाम पर नजीवावाद वसा। वह सहारनपुरमें दूनकी समृद्धिको देख नहीं सकता था। १७५७ में (जिस साल पलासीकी जीत अंग्रेजोंने भारतमें अपना पैर जमाया) नजीवुद्दौलाने दूनपर पहिला किया और विना अधिक संघर्षके ही उसपर उसका अधिकार हो गया। द्दौलाके शासन (१७५७–७०) में दूनकी समृद्धि और वढ़ी। उसने कुओंके वनानेपर विशेष ध्यान दिया।

देहरादून यद्यपि प्रदीपशाहके हाथसे निकल गया था, किंतु वधाण वाको उसने कुमाऊंनियोंसे वापस ले लिया था। कत्यूरपर भी उसने किया था, किन्तु रनचूलामें उसे जवर्दस्त हार खानी पड़ी। देवीचंद करते पिता द्वारा दान दिये श्रीनगरको लौटानेकी मांग की। ब्राह्मणने किया, इसपर वलात्कारसे काम लेना चाहा, किंतु हारकर देवीचंदको

ड़ा। उसका उत्तराधिकारी कल्याणचंद रुहेलोंका कोप-भाजन हुआ । हाफिज हमतखांके नेतृत्वमें १७४२–४३ में रुहेलोंने जो ध्वंस-लीला कुमाऊंमें मचाई सके अवशेष अव भी केदारनाथ और वदरीनाथतक गढ़वालमें एवं द्वाराहाट टारमल, वैजनाथ, वागेश्वरके खंडित देवता तथा ध्वस्त या परित्यक्त मंदिर ौजूद हैं। प्रदीपशाह खान्दानी वैरको भूलकर मदद करने आया। दूनागिरि ौर द्वाराहाटमें दोनों सेनायें मिलकर लड़नेके लिए तैयार हुईं । शीशराम कलानीने बड़ी वीरतापूर्वक गढ़वाली सेनाका संचालन किया—इसका पंवाड़ा ाज भी गढ़वालमें मशहूर है—किंतु अंतमें हार हुई। कल्याणचंदने सारे कुमाऊंको टवाकर तीन लाख रुपया दे पिंड छुड़ाया और प्रदीपशाहने ६० हजार कर ना स्वीकार किया, किंतु कुमाऊंकी भांति ही गढ़वाल रुहेलोंकी ध्वंस-लीलासे च नहीं पाया। वह अगस्तमुनि, गुप्तकाशी, उखीमठको लूटते ध्वस्त करते तियोंको तोड़ते, मंदिरोंको भ्रष्ट करतें मालके साथ ढोरों तथा हजारों दास-ासियोंको लेते केदारनाथ, माणा (वदरीनाथ) और नीती तक जाकर ही लौटे।

कुमाऊंकी अवस्था अस्तव्यस्त थी। राजा नामका था। वहांके राजनीतिज्ञ ल महरा और फरतियाल शासनकी वागडोर संभालनेके लिए आपसमें लड़ रहे । प्रदीपशाह फरतियालोंकी सहायता करने गया, किन्तु उसे तंवाधौंध चौकोट) में अपने ४०० आदमियोंको मरवा कर पूरी तौरसे हारना पड़ा। ुमाऊंमें शिवदेव जोशी और मोहनसिंहकी प्रधानता थी। मोहनसिंहने ीपचंदको मारकर अपनेको राजा घोषित किया। कुमाऊंके पूर्व और पश्चिमके ड़ोसी डोटी (ललितशाह) और गढ़वालके राजाओंने मिलकर १७७९ में गवाली-पोखरके मैदानमें मोहनचंद(०सिंह)को करारी हार दी और उसे प्राण ोकर भागना पड़ा। इस समय ललितशाह (प्रदीपशाहके पुत्र) का शासन था। सने कुमाऊंके सिंहासन पर अपने पुत्र प्रद्युम्नशाहको बैठा दिया।

प्रदीपशाहके समय मोलाराम पैदा होकर जवान हो गया था, इसलिये आगे ो उसने लिखा, वह उसके सामने घटित घटनायें थीं—

उपेंद्रशाहको भ्रात इक, छोटो शाह दलीप।
देह-अंत तिनकी भई, तिनको सुत परदीप ।।
प्रदिपशाह वालक भये राजा। मंत्री करें राजको काजा ।।
पांच वरष महि राजहि पायो । राज-काज सव मात चलायो ।।
राणी-राज भयो गढ माही। मंत्री नूतन चक्रि वनाहीं ।।
घोर कली गढ माँहि प्रकाशा। गोति विप्र मंत्री किय नासा ।।

खसिया वहु रजपूत संहारे । पहिले मंत्री सवही मारे॥
नूतन मंत्री नूतन राजा । मंत्री करैं राज को काजा।
राजा जहां वालक न्याय नाहीं । मंत्री कटै आपस मध्य मांहीं॥
जैसे विना अंकुश मत्त दंती । जूझै महायुद्ध कवि यों वदंती॥
जाके रहैं नूतन नित मंत्री । होवै सु कैसे वह राज-तंत्री॥
भली वुरी ते कुछ न लखंती । राजश्री गर्व कवयो वदंती।
जहां ज्ञान सनमानकी वात नहीं । महा अंधकी धुंध कहिये तहांहीं॥
तहां क्या करें पंडितें पंडिताही । जहां खाक वूरा विकै एक सा ही॥
पंडित गुनिजन लोक जे,सवहीं भये उदास ।
जो पामर कुल-हीन नर,मंत्री भयो वो खास ॥
गढ़ महि निरमानुखता भई । इहै खवर चहुं दिस महँ गई॥
कुरमाचल तै विगड़त आई । पुरवा पछुवा पौन भी धाई॥
कुरमांचल सो जोयसी, हरी राम तिहुँ नाँय ।
होय तमीर श्रीनगर मँहि, आयो वह गढ धाय ॥
सिरीनगर महि जोसी आयो । या विधि उलकापात उठायो॥
निरमानुखता गढ मँहि देखी । महाराज सों कीनी सेखी॥
"हे महाराज शरण हौं आयो । राज कुमाऊं तुम्हें चढायो॥
चलो फौज ले राज कुमाऊं । देस मुलक सव तुम्हें मिलाऊं॥
गढ़मँहि अपने पुत्र विठावो । राज कुमाऊं तुमहिं चलावो॥
तुम राजा हम मंत्रि तुहारे । कुर्माचल सों हुए नियारे॥
राज-काज सव हमरे हाथा । सो हम निशि-दिन तुमरे साथा॥
चंद भाजिके देशहि जावें । राज-तख्त मँहि तुम्हें विठावें॥"
प्रदिपशाह नरनाह सुनि, लागे वातन मांहि ।
आयो हाथ न राज वो, अपनो राख्यो नाँहि ॥

× × ×

सवा लाख ले फौज सँग, गये कुमाऊं मांहि ।
डेरा दीन्यों जूनियां,-गढमँहि खोड़ वनाहि ॥
कोई दिन जो तहां रहाये । प्रजा कोई नहिं भेंटन आये॥
हरीराम जोशी हि वुलायो । सवहींने मिल जुलि समझायो॥
ताकी खिदमत ताको दीनी । खातरजमा सवहि कुछ कीनी॥
हरीराम वक्सी कहलायो । इनको साफ जवाव दिलायो॥

× × ×

कुरमांचल सव एक हो, मंत्री लिये मिलाय ।
कह्यो "वेग गढ-भूप को, इत सों देहु उठाय" ॥
इकसठ वरस लौं राजहि कीना । आधा अंग अर्धंगने लीना ॥
जड़ी जंत्र औषधि वहु कीनी । लगी एक नहिं काया लीनी ॥
इकसठ वरसकी उमर ही, मरे जो शाह प्रदीप ।
ललितशाह को राज भयो, खरी लगाई सीप ॥
गढमंत्री यह मसलत दीनी । गुपत महा तँह कौशल कीनी ॥
"लोग तुम्हारे जव चढ़ि आवैं । राजाको हम तवहि उठावैं ॥

× × ×

राजा लियो घेर जव ताहीं । वाप-पूत दो लड़े उहांहीं ॥
वाप-पूत दो भाट भिखारी । उनहूं तहां लड़ाई मारी ॥
राजा तितसों दियो वचाई । वीस-पचीसों लोथ गिराई ॥
तव किनहूं ने गोली दागी । वाप-पूत दोनोंके लागी ॥
निमक हलालीमें सिर दीना । लालच लोभ कछू नहीं कीना ॥

× × ×

भागे गढके लोग सवै ही । सरवसु सवको लुट्यो तवैहीं ॥
कई लाखको द्रव्य लुटायो । सो सव कुर्माचलिने पायो ॥
राजा भाजि नगर मँहि आये । मिल्यो राज नहि आप लुटाये ॥
ऐसे खसिया दुज हैं गढ के । जानत हैं घर हीमें लड़के ॥
एककी एक करैं चुगली,
मुगली, वहु पेचनमें वढ़िकै ।
परकाज विगारत हैं अपनो,
सिर पाप चढावत हैं अड़िकै ॥
याहिते यो गढ़वाल गयो,
कटि आपसमाँहि मरै लड़ि कै ॥
कवि मोलाराम विचार कही,
ऐसे खसिया दुज हैं गढ़ कै ॥
ता दिनतें पर दीप शा, वाहर निकसे नांहि ॥
घरहीमें मजलस करी, मंत्रिनके संग मांहि ॥

विक्रम छाड़ि संधि ही कीनी। देश-विदेश पत्रिका दीनी॥
लिखत पढत सब ही को राखी। वैर करै नहिं सँगमँहि काकी॥

× × ×

फिरैं पचास साठ ही चकना। मदमातें ज्यों हाथी मकना॥
सबहींको पुर महिं घुरकावैं। तिनको देखि सबहिको डरावैं॥
ऐसे चकना[1] जिनके चेरा। तिनके पुर निस-दिनहि अंधेरा॥
विभचारी कौ नाहिं डरावै। गनिका मित्र सौं दंड भरावै॥
परदारा गनिका हितकारी। नीत-रीत परदीप विसारी॥

× × ×

(१२) ललितशाह (१७७२–८०)--प्रदीपशाह ३० वर्ष शासन क
वर्षकी अवस्थामें मरा, और उसके स्थानपर उसका पुत्र ललितशाह गढ़
राजा हुआ। अब नजीबुद्दौला मर चुका था, दूनको फिर गढ़वाली अपना
लगे थे, किंतु अब वह गूजरों और सिखोंकी लूटका शिकार था। सिक्ख
बुगेलसिहने सहारनपुर लूटकर आगे बढ़ना चाहा था, किंतु आगे अवध
आसफुद्दौलाकी तपी थी। सिक्खोंने दूनको खूब लूटा। उसकी सौ वर्षकी
समृद्धि लुप्त हो गई। दून-निवासियोंने गुरुद्वारेमें अपनी सम्पत्ति रखकर
पनाह ली। सिक्ख गुरुद्वारके भीतर लूटमार नहीं करते थे, यह उनको माल
दूनके महन्तका प्रभाव इस समय बहुत बढ़ा-चढ़ा था। सिक्खोंकी लूट-ख
वर्तावको देखकर एक तत्कालीन लेखक फोस्टरने लिखा था "जिस त
साथ सम्मान दिखलाया जाता है, या वह स्वयं अपना सम्मान कराते हैं,
मुझे अक्सर ख्याल आता है, कि कुछ सप्ताहोंके लिए मैं एक सिक्खके शरी
जाता।" सिक्खोंके बाद सहारनपुरके गूजरों-राजपूतोंनें दूनको अपना
बनाया। पुंडीर (राजपूत) राना गुलाबसिंहको ललितशाहने अपनी
बारह गांव दहेज दिये थे, जिसका लड़का बहादुरसिंह १७८७ में दूनका प्र
था। अब पुंडीरोंका प्रभाव कम हो गूजरोंका बढ़ा। उनके सरदार
राजा रामदयालने पाँच गाँव .स्वयं ले लिये और सातको खेरी, सख
रामपुरके राबोंमें बांट दिया।

ललितशाहकी एक रानीसे जयकृतशाह और पराक्रमशाह, तथा
प्रद्युम्नशाह और प्रीतमशाह चार पुत्र थे। उसको सनक थी, कि चारों

---

[1] उचक्के

जा बनाया जाये। बड़े पुत्र जयकृत (जयकीर्ति) शाहके लिये गढ़वालकी गद्दी ही। कुमाऊंकी निर्बलतासे लाभ उठाकर वहां वह अपने दूसरे पुत्र प्रद्युम्न हको भी प्रद्युम्नचंदके नामसे गद्दी पर बैठानेमें सफल हुआ। आगे कहीं और राज्योंको जीतनेका वह मनसूबा रखता था, किंतु कुमाऊंकी सफलतासे लौटते मय मार्गमें दुलड़ीमें मृत्युने उसे आ घेरा, और ११ वर्ष राज्यकर ५७ वर्षकी अमें उसका देहांत हो गया।

ललितशाहके समय १७८६ में एक बार फिर रुहेलोंने उपद्रव मचाया । नजीबुद्दौलाके पुत्र जाबिता खां (१७७०–८५) ने दूनसे छेड़छाड़ नहीं , किंतु जाबिताके पुत्र गुलामकादिर (१७८५–८९)ने हरद्वारकी ओरसे घुसकर नमें आग और खूनकी होली खेली। उसने गुरुद्वारेको भ्रष्ट किया। पीछे पागल हो गया और उसके सहायक तथा प्रबंधक मुनिवरसिंहने उसके मरने- पहिले सिरमौरसे संबंध जोड़ा, पीछे प्रद्युम्नको अपना मुरब्बी बनाया। मोलाराम अब परिपक्ववयस्क था। वह गढ़वालके शासनको भीतरसे रहा था। उसने उसके संबंधमें लिखा है—

बड़ी प्यारी डोटीकी रानी। कहनमें छोटी अत-मनमानी॥
सो तिनके मंत्री बहिकाई। जैसे मात कैकई गाई॥
सोई बात डोटचाली कीनी। नृपताई निज पुत्र सों लीनी॥
रानी कीन्यों मान मन, एक दिन राजा साथ।
राजा रानी सों लगे, हंसि कै बूझन बात॥

× × ×

"राजा, राज मम पुत्रको दीजै। यह विनती हमरी सुन लीजै॥"
काम अंध ह्वै कह दियो, राजा राणी तांहि।
पाछै आयो सोच यहि, भली भई यह नांहि॥

× × ×

"कूर्माचल सिरमौरहिं मारे। राज करैं दोउ पुत्र तुम्हारे"॥
इह राजा मनमैंहि ठहराई। लागे फौजाँ रखन सिपाई॥
प्रथम फौज **सिरमौर** चढाई। चहूं गिरद सैं ताक लगाई॥
गढ **बैराट** फूक सब दीन्यों। हेला धाय **कालसी** कीन्यों॥
तब सिरमौर सों फौजां छूटी। जितकी तित गढ फौजें कूटी॥
कई बार जो पड़ी लड़ाई। फते जो उनसे कधीं न पाई॥
रहे जबर सिरमौरी गढ सौं। खैंच पड़े तलवारें मढ सों॥

गढकी फौजें मार हटाई। कियो मेल नहिं पार वसाई।
तलव पड़ी देनी सब घरसौं। चाँदी सोना वेंच्यो डर सौं।
खबर वरेली यह गई, हर्ष देवके द्वार।
सब जोशी कट्ठे भयें, लागे करन विचार॥

× × ×

हरष देव यह वात सुनाई। जोसी सव हीं पास वुलाई।
"हमहुं कुमाऊं सै इत आये। विन उद्यम सवही अकुलाये।
अव सव मिलि उद्दिम ठैराओ। पाती लिखि गढमें पौछावो।
गढ़पति जो हमरे वस आवैं। सकल काज हमरे वनि जावें"।

× × ×

अरजी लिखि गढमें दई, "मरजी तुमरी होय।
नाहण औ चंपावती, देहि मारि हम दोय"॥
अरजी इह गढमें लिखि दीनी। जोशी सव मिलि मसलत कीनी।
नाहण तुमहूं फौज चढाई। मंत्री परजा कोइ न मिलाई।
हमहुं कुमाऊं सै उठि धाये। जव सौं मोहकमचंद[1] हि आये।
राजा राणी वालक मारे। तव सों हमहूँ भये नियारे।
हम मंत्री जो मंत्र चलावैं। एक पलक महि तिन्हैं उड़ावें।
जो तुम आज्ञा हमकों दैहौ। नाहण सहित कुमाऊं लैहौ।
प्रथम कुमाऊं राजहि मारैं। ता पींछे नाहण पग धारैं।
तीनों ठौर तुम राजहिं पावो। पुत्र आपने जो वैठाओ"।
सुनि अरजी महाराज इह, ललितशाह नरनाह।
मनमें आई वात सब, भये प्रसन्न अथाह॥

× × ×

प्रतिउत्तर तुरतै लिखि दीन्या। ....
"पत्री वांच शींघ्र इत आओ। फौज हमारी सँग ले जाओ
मोहनचंदको देहु उठाई। तुम वैठो कूर्माचल जाई
कुंवर हमारो संग ले जाओ। प्रदुमन साह कौं राज विठायो
"महाराज धन धन्न महापरताप तुम्हारे। मिले आफतैं आफ तुम्हें मंत्री
राज तुम्हारो भयो वात निश्चै इह जानो। ....

---

[1] मोहनचंद

करज फरज सिर पै चढ्यो, वीस पचीस हजार।
आवन देत न ये तहाँ, हमको साहूकार।"

. . . .

हुकम भयो "जल्दी हि वुलायो। वीस-पचीस हजार पठावो॥
दई असरफी कछू रुपैया। कह्यो तुरत आवो दोउ भैया"॥
पत्री संग रुपैया दीने। सो सव जोसी वांटहि लीने॥
वस्तर नये सभीने वनाये। सजि कै जोसी गढ़-मँहि आये॥
"महाराज वलिराजवतारी।" लागे वतियां करन पियारी॥
जयानंद जोसी तह वोले। "महाराज वड़भागी तोले॥
अरिपुरके सव मंत्री आये। अरिपुर भेंट आफकी लाये"॥
ललितशाह राजा तव कही। "कही तुम्हारी ह्वैहै सही॥
तुमहूं श्रीफल अरिपुर लाये। दछिणामें हम पुत्र पठाये॥
पुत्र होत है प्राण सौं प्यारो। सो हमने तुम गोदहि डारो॥
प्रदुमन साह है याको नामहि। सों तुमरे हम भेजें धामहि॥
इनको ले सँगमँहि तुम जावो। कूर्माचलको नृपति वनाओ॥
तुम मंत्री यह राजा तुमरो। देखि प्रसन्न होय चित हमरो"॥

× × ×

"साध सत्रुको राज दवावें। तव गढसों हम कुंवर ले जावें"॥
शुभ दिन नीको छांटके लीनो। राज-तिलक तव कुंवरको कीन्यो॥
प्रदुमंनचंद तंह नाम धरायो। कूर्माचल वनि नृपति ठरायो॥

× × ×

अर्जी लिख श्रीनगर पठाई। "तुम प्रताप जो फत्ते पाई॥
मोहकमचंद काढि हम दीन्यो। राज कुमाऊं तुमरो कीन्यो॥
प्रदुमनचंद अव हमको दीजै। गढपति इह हमरो जस लीजै"॥

× × ×

"नवों राज इह खोटी परजा। मानत नाहि हुकम यह वरजा॥
यातें हम आवें..तहाँही। सबको साध करे बस मांही॥
तव हम राज-पुत्र बैठावें। प्रदुमनचंद हुकुम्म चलावें"॥

× × ×

नाहक क्यों निज चरन दुखाओ। गढको छाड़ि कुमाऊं आओ।
हमहूं इनको आफहि साधैं। राजकाज सर तंत्रहि बावें
पुत्र आपनो शीघ्र पठाओ। तुम क्यों गादी छोड़के आओ।

× × ×

गढको राज करो नित तुमही। राज कुमाऊं करें जो हम हीं
इतके मंत्री इत हीं रहें। तितके मंत्री तित ही लहैं
चढे फौज ले आप हीं, ललितशाह महराज।
जोशी सुनि भयभीत भय, ज्यों तीतर लखि वाज॥
हर्षदेव पालायन कीन्यो। जयानन्द जोशी भय भीन्यो
डेरा दुलड़ी में दियो, खेतसारी देहि छाड़।
वस्यो शहर तहं मध्यमँहि, चार तरफ करि वाड़॥
औषध कछू न लागी काहू। मरे कहीं दुलड़ी में राऊ
राज-प्रेत ले गढ-मँहि आये। जोशी वहु मनमें हर्षावे
सिरीनगर माही गत कीनी। राजश्री जैकीरत दीनी

१३. जयकृतशाह (१७८०-८५)—जयकृतको भी पिताकी
प्रसादमें मिली थी। कहते हैं, शिवजीको सिद्धि करते समय उसकी
हुई। जयकृतने चाहा कि वड़ा भाई होनेसे प्रद्युम्नचंद उसे अपना प्रभु
प्रद्युम्नचंदका कहना था—कुमाऊं सदा स्वतंत्र राज्य रहा है। जयकृत
सिंहासनसे वंचित करनेके लिए मोहनसिंहके साथ साजवाज की।
भी जयकृतको हराकर पराक्रमको गद्दीपर वैठाना चाहता था।
६ वर्ष राज्य करके जयकृत शाहकी मृत्यु हो गई। प्रद्युम्न शाहने
कुमाऊंकी गद्दीपर वैठा श्रीनगर आ पैतृक गद्दी संभाली।

अव गढ़वालको अच्छे दिनोंकी आशा नहीं रह गई थी।
वंशोंका साधारण राजरोग उसे लग गया था। राजा दर्बारियों
खिलौना था। दर्बारी आपसमें एक दूसरेके विरुद्ध सव कुछ करनेको
कृपाराम डोभाल दीवान था, सारा शासन कार्य उसके हाथमें था।
खंडूडी दफ्तरका मुख्याधिकारी था, वह डोभालको फूटी आंखों भी
चाहता था। (मोलारामने इस अवस्थाका अच्छा वर्णन किया है
हर्षदेव जोशीके साथ षड्यंत्र करनेका अभियोग लगाकर डोभालने
वाकर उनमें नील भरवा दिया और उसके अधिकारको छीनकर
देवीदत्तको दे दिया। अव श्रीनगरके सभी उच्च अधिकार

मके लोगोंके हाथोंमें आ गये। कृपारामका बहनोई श्रीविलास राजाका शरीर-क्षक वनाया गया। उसका वड़ा भाई महानन्द कृपारामका सहकारी नियुक्त आ। उधर नित्यानन्दके संवंधी रामा और धरणी खँडूडी दोनों भाई फौजदार सेनानायक) थे। कृपारामको मार डालनेका षड्यंत्र रचा गया। देहरादूनके फौज-र घमंडसिहको यह काम सौंपा गया। एक दिन राजसभामें वात-वातमें विगड़कर मंडसिहने कृपारामका सिर काट दिया। दीवानके संवंधी श्रीविलास, भवानंद, वीदत्त, धनीराम, महानन्द सभी जेलमें डाल दिये गये। अब खंडूडियोंका सितारा मका। सरदार रामा और धरणी उनके मुखिया थे। "इन्होंने राजाको पने हाथका खिलौना वना लिया। सेना, कोष, दफ्तर सभी इनके धिकारमें आ गये।...अत्याचार और चुगलीका वाजार पूर्ववत् गरम हा।" कप्तान हार्डविकने स्वयं उस समयकी अवस्था देखकर लिखा था "मैंने ढ़वालकी यात्रा की। आवादी वहुत कम है। लोग तवाह-तवाह हैं। देशका ड़ा भाग उजाड़ और जंगल हो गया है, आदमियोंकी वस्ती नहीं है। शाहवंशमें क राजा और उसके दो भाई हैं—पराक्रमशाह और प्रीतमशाह।....सेनामें द्ध-शिक्षाका अभाव है। दून-सहित कुमाऊं गढवालकी कुल आमदनी पांच लाख गी। यह आय भूकर, महसूल, सोना तथा खानके करोंसे होती है। माल-जारीमें कुछ नकदी और कुछ जिनस ली जाती है, जो उपजकी प्रायः आधी होती ।"

(क) गढ़राज—

मोलारामने जयकृतके शासनके वारेमें लिखा है—

हस्तीदल[1] सुनिकै इहै, रीझे अत मनमाहिं।
कह्यो "कवी गढराजकी, उत्पति देहु सुनाहि॥
मोलाराम कवी कहु हमसों।
हम पूछत हैं सव कुछ तुमसों"॥
मंत्रि भये डोभाल तव, जयकृतशाह को राज।
कृपाराम डोभाल तहँ, लाग्यो करनहिं काज॥
कृपाराम मुख्त्यार कहायो। गढको उन सव भार उठायो॥
मंत्री सव गढके हिरसाये। सिरीनगर मँहि परव उठाये॥

---

[1] मोलारामने हस्तिदलके कहनेपर यह काव्य लिखा था। हस्तिदल तरिया १८०३–१५ में गढ़वालका राज्यपाल रहा।

नित्यानंद खंडूड़ी डरिकै । बैठ्यो अपने अंदर घरिकै ॥
राज-काज सब दीन्यो छांड़ी । होनहार इह कुमता वाढ़ी ॥

× × ×

पत्री लिखी कुमाऊं दीनी । "कृपाराम गढराजसि लीनी ।
कोई दिन मँहि तहां चढ़ेगो । तुमकों भी भाजनहि पड़ैगो ॥
ताते तुम इत पहिले आओ । याकौं दुत ले कुंवरहि जाओ ॥
गढ़को राज चलावें हमहीं । राज कुमाऊं करो जो तुमहीं ॥
इत उत राजा वालक दोहीं । तुम हम रहे एक जो होहीं ।
कृपारम कौं आपनी, पत्री दई पठाय ।
"ललितसाह जू फौज रखाई । राखै हमहूं छोट सिपाई ।
मोहमकचंद काढि हम दीन्यो । राजकुमार तुमारो कीन्यो ।
तुमहूं इत राजा न पठायो । तलव सिपाही सीर चढाओ ।
अव सिपाह इह मानत नाहीं । हम को सँग ले आवे तांही ।
ताते इत तुम कुंवर पठायो । तलब सिपहकी सब निवटाओ ।
जो सिपाह इह सहरमें आवें । हम कौं तुमकौं नाच नचावें
ताते तुम रस्ता मँहि आवो । अपनी हमरी जान वचाओ" ।
यह सुनि कृपाराम अकुलाये । मंत्री मित्र सवैं हि वुलाये ।
भवानंद औ सिरीविलासहि । दोनों भैया आये पासहि ।
जात नौटचाल विप्र दोइ मित्रहि । वड़ो हेत तिनसौं सुभ सूत्रहि
तिनहूं कह्यो "सव मंत्रि वुलाओ" । नित्यानंद खंडूड़ी धावो ।
तीन टोल नेगीहि वुलाये । नित्यानन्द पास नहिं आये ।
नित्यानन्दने इह कही, "हम राख्यो दुख पाय ॥
नयें नृपति मंत्रीहि तुम, लेव मंत्र ठहराय" ॥
कृपाराम तव संकहि मानी । नित्यानन्द करी चेष्टानी ।
कृपाराम तव गये तहांहीं । नित्यानन्दके वह गृह-मांहीं ।
"कह्यो पुरातन तुम हो मंत्री । हम वालक-राजा के तंत्री ।
वालापन सों टहल हम कीनी । खिजमत काहू की नहिं लीनी ।
दफ़्तर राजको तुमरे पासा । सव कोइ करत है तुमरी आसा ।
मुल्क सलाण कि तुमपै फौजदारी । सवा लाख गढकी मुखत्यारी ।
तुम विन राजकाज नहिं चले । हमसों तो इक पत्र न हिले ।
तुम जो कहो सो हमहूं गहें । राजा कहें सो तुम सों कहें ।

तुमसों कहत नृपति शरमावें । हमसों कहत लाज नहिं लावें ॥
वालापन हम गोद खिलाये । हमसौं रहत हैं मिले मिलाये ॥
जुवा भये जव लौं नृप नाहीं । तव लौं कहें वचन हम ताहीं ॥
जुवा होइ तव तुमसों वोले । राजकाज सव मनमहिं तोले ॥
तुम मंत्री होके रहो, हम हो रहें जो दास ।
हुकुम करें जो कुछ नृपति, कहें तुम्हारे पास" ॥

× × ×

"तुम नृप आज्ञा करो सो करिहैं ।
तुम सों वाहर हम नहिं फिरिहैं" ॥

× × ×

अव तो संचे ना तन मांहीं । चल्यो जात मारग पग नाहीं ॥
संचे होय दरवार तव आवैं । राजकाज जो सरे चलावैं" ॥
या विद कृपाराम सों कह्यो । कृपाराम तव घरको गयो ॥
रहे जो कोइ पाछे जन तांही । नित्यानन्द जू के घर मांही ॥

× × ×

तिनसों नित्यानंद जू कही । "अव गुलामगर्दी गढ भई ॥
कृपाराम यह वांदी-अच्चा । लाग्यो करने हमकौं सिच्छा ॥
हमसों आगे हुआ य चाहै । सर्वोपरि मंत्री ठहराहै" ॥
यह चर्चा पाछे सौं कीनी । किनहूं जाय तहां कहि दीनी ॥
कृपाराम तव लग्यो चेताहीं । "दगा खंडूड़ीके मन मांही ॥
हम मारनको मंत्र उठायो । जयानंद जोशीहि वुलायो ॥
जयानंद जव पहुंचे आई । हमसौं कछू करा नहिं जाई ॥
तातों पहिलो इनको मारूं । और काज सव पाछे सारूं" ॥
इह मनमथिके सार निकाल्यो । प्रथम राज इह तंत्र सिभाल्यो ॥
वक्सी नेगी खान खवासहि । गोलदार फौजदार जो पासहि ॥
लीन्हें सव घर मांहि वुलाई । कह्यो खंडूड़ी कूल उठाई ॥
जैकृतसाहको मारयो चाहै । पराकरम सह राज वैठाहै ॥
प्रदुमनसाह भेजत हैं कुमाऊं । मंत्री आप वने दुऊ ठाऊं ॥
निमक-हलाली होय सो, करो राजकी आस ।
निमक-हरामी होय सो, जाउ खंडूड़ी पास" ॥

सब पंचन मिलिके इह कहीं । "निमक-हरामी हमहूं नहीं ॥
जो तुम कहो सो हमहूं करिहैं । निमकहलाली सें हम तरिहैं ॥
निमकहरामीको जस नाहीं । दूहूं ठौर वह होय गुनाही" ॥
कृपाराम तब धर्म करायो । ऊलीखांडो धोय पिलायो ॥
गुप्त तंत्र निशि लियो ठराई । जितके तित दीने पकराई ॥
पकरै नित्यानंद खंडूड़ी । बाते भूलि गये सव गूढी ॥
वाल, कुंवार, जुवा सव पकरै । वृधा सहित जँजीरमँहि जकरै ॥
वनगढ़ गढ़ दीने पहुँचाई । आंखन माहीं नील फिराई ॥
लूटि लियो घरवार सवेहीं । जपत करीं जागीर-जमीहीं ॥
दफ्तर देवींदत्तकों दीन्यो । कृपाराम फौजदारहि कीन्यो ॥
जयकृतशाह राज वैठाये । मंत्री सकल वहाल कराये ॥
जयानंद पै खवर इह, गई जो मारग माहिं ।
"भये वहाल डोभाल हीं, रहे खंडूड़ी नाहिं" ॥

× × ×

"कौन हेतु तुम आये इतहीं" । बूझे जयानंद जो तिनहीं ॥
दयानंद जोशी तव कहीं । "नई राज श्रीगढ़ मँहि भहीं ।
हमहूँ गढके चाकर रहैं । गढकी सव विधि नीकी चहैं ॥
भेंट करनको हमहूं आये । काहूके हम नाहिं लगाये ॥
कृपाराम जो किरपा करिहैं । गढ कुमाचिल दोनौ तरिहैं ॥
विना राव नगरी कछु नाहीं । विन भरता वनिताहि विलाही ॥
भरता मांगनको हम आये । और काज कछु भी नहिं धाये ॥
कृपाराम सौं काम है, और न हमरो कोय ।
कृपा करें जव वोहि हम, जयानंद तव होय" ॥
इह कहि पाती लेखि पठाई । कृपाराम जूके मन भाई ॥
विंजन नाना रूप पठाये । अन्न अनेक छाग घृत ताये ॥
जागा ठौर नीकी हि दिलाई । आदर-सहित दिये वैठाई ॥
सुदिन छांट राजासों मिलायो । तंत्र कुमाऊंको ठहरायो ॥

(ख) कृपारामका प्रभुत्व—

कृपाराम प्रभुता महिं आए । मंत्री गढके सव घवराए ॥
कृपाराम पै सव कोइ जावैं । राजाको दरसन नहिं पावैं ॥
राजा कहे सो मारचो जाई । भजे कृपाराम करे सहाई ॥

जित तित सों डोभालहि आए । दोत कलम कागज लटकाए ॥
प्रात निशा नित मजलिस लागे । राग रंग सव होय जो आगे ॥
पलँगा ऊपर बैठो रहे । घुरकी-धमकी सव कौं कहे ॥
श्रीविलास ताको वहनोई । राख्यो खास नृपतिपे सोई ॥
महिल दूसरो जान न पावै । श्रीविलास ही तहां रहावे ॥
भवानंदसों हेत महाई । श्रीविलासको जेष्ठ हि भाई ॥

श्रीविलास अंदर रहे, वाहर भंवाहीनंद ।
कृपारामके मंतरी, अत हितकारी रिंद ॥

उथल-पुथल वहु करने लागे । सव मंत्रिनके कानहि जागे ॥
इह काहूकौं छाड़ै नाहीं । भये धूर्त अति ही गढ माहीं ॥
तीन टोलने मता मतायो । घमंडसिंहको लेखि पठायो ॥
"तुमहूं दूणके वासी भये । राज-काज सव छाड़हिं गये ॥
कृपाराम इत भये भवासी । लागे सवकों देनहि फांसी ॥
राजसिरी घरमाँहि चलाई । राजकाज सव दियो डुवाई ॥
जाको चाहें ताको मारें । दया न काहूकी मन धारें ॥
उथल-पुथल सव खिजमत कीनी । अपने पक्षपात मँहि दीनी ॥
स्याले ससुर मंतिरी कीने । विरता सवके खोसहि लीने ॥
कोई दिन महि नृपति कहावे । तुमकौं भी इह तुरत उठावे ॥
केदारसिंह जु तुमरे भाई । तिनको भी हम लेख पठाई ॥
दूहू भ्रात मंत्र ही कीजै । प्रति-उत्तर तव हमको दीजै"॥

घमंडसिंह यह पत्रिका, वांचि भयो भय-त्रास ।
केदारसिंह बैठे जहां, गयो ले तिनके पास ॥

केदारसिंह फौजदार ही बैठे । जमींदार संग मांहि इकैठे ॥
घमंडसिंह तहं सीस नवायो । केदारसिंह तहिं पास बैठायो ॥
कह्यो "घमंडा तुम क्या आये । कागज करमँहि कैसा लाये" ॥
तवै घमंडा कागज दीन्यो । केदारसिंह वांच ही लीन्यो ॥

घमंडसिंह समुझाय यों, दीन्यो शीघ्र लगाय ।
वाकी फौजाँ संग ले, रह्यो उफल्डा[1] आय ॥

---

[1] श्रीनगरसे दो मीलपर एक गांव, जहाँ एक भारी मैदान है ।

वक्सी संग सुखेती[1] आए । जौंणहिपुर[2]से वहीं बुलाए ॥
सिरीनगर महिं मंत्रीं जेतें । कम्वल ओढ रात गये तेंतें ॥
सवसों धर्म-कर्म तहँ कीन्यो । गुपत यहां किनहूं नहीं चीन्यो ॥
मंत्री सवै सहर महिं आए । अपने अपने घर महिं धाए ॥
घमँडसिंह सजि सेनहिं आए । दखणीं वाजा डम्फ वजाए ॥
कृपाराम भीं घरसों निकस्यो । चहूं ओर हीं देखत दृगसों ॥
ढोलक ऊपर ढोलक छाई । चहूं ओरसे सजे सिपाही ॥
अपने गृहसे नरपति द्वारे । गए सिपाहीं फैलहि सारे ॥

हरकारेने आनिके, दई खवर ही ताहिं ।
"खवरदार हो जाव तुम, आज वचत हो नाहिं" ॥

कृपाराम गये मजलिस मांहि । जैकृतशाह वैठे थे जहांहि ॥

कर सलाम वैठ्यो तहां, सौंहीं किरपाराम ।
आसपास मंत्री सवै, मजलिसमें जो आम ॥

पलँगमध्ये महारज वैठे । मंत्रि सव हुइ रहे इकैठे ॥
देवीदत्त दफ्तरीं तांहीं । जूलूपेंचहि दस्तीं माहीं ॥
भवानंद और सिरीविलासहि । महाराजके आसे-पासहि ॥
धनीराम डोभाल हीं वैठो । कृपाराम हींको वह वेटो ॥
खड़ो भगोता तहां खवासहि । जैकृतशाहको चँवर ले पासहि ॥
और अनेकहि कहा गनाऊं । कारण-कारण सवहिं जनाऊं ॥

प्रथम प्रहर दिन चढ्यो, घमंडसिंह गयो ताहिं ।
घुस्यो धाय मजलसहिमें, किनहूं रोक्यो नाहिं ॥

छांटि सूरमा संग सिपाहीं । घेर लई मजलिस सव जाई ॥
करि सलाम सिहा ज्यों सौंहीं । कृपाराम सँग वैठ्यो त्यौंहीं ॥
ज्यों नभमें चंद तारिका-वृन्दहि । घेर्यो घन नहि आन घमंडहि ॥
मुख पीरीं सवके परि आई । महाकालने लिये दवाई ॥
कृपाराम तव तासों वोलो । "घमंडसिंह घर कमरहि खोलो ॥
कमर खोलिके भोजन पावो । चौथे पहर फेर तुम आवो ॥
भई भेट सिरकार तुहारीं । करो दूणकीं तुम फौजदारी ॥

---

[1] सुकेत-राज्य वाले [2] जौनपुर

अरजी जो तुम करों सो माने । तुमैं महाराज अपना जानै ।।
नातेपंथी तुम गढ मांहीं । तुम समान कोउ दूजो नाहीं" ।।
घमंडसिंह सुनिकै इहै, मन महिं कियो विचार ।
इहां दाव फिर हाथ ही, लगै न दूजी वार ।।
घमंडसिंह मनमांहि विचारी । करे खुशामद इहै हमारी ।।
वातन महि यह वखत वचावे । फेर हमारे हाथ न आवे ।।
विन मारे इह छोड़े नाहीं । अव ही मारौं याके ताहीं ।।
इह अपने मन हीमें लह्यो । हाथ जोरिके ठाड़ो भयो ।।
महाराजके सौंही जाई । भर मजलिस महिं अर्ज सुनाई ।।
"महाराज हम दास तुम्हारे । इतै शत्रु हैं वहुत हमारे ।।
भली कहै नहिं कोय हमारी । खोटी कहै सभी नर-नारी ।।
कही काहुकी सुनिए नाहीं । वुरो कहैं सव हमरे ताहीं ।।
जान-माल महाराजको, राजद्रोहि हम नाहिं ।
शत्रुनको छांड़ें नहीं, परें आपके पाहिं" ।।
घमंडसिंह यह अरजी कीनी । महाराज सवहीं सुन लीनी ।।
अरजी कर मजलस मँहि वैठ्यो । महा क्रोध मन भयो इकैठ्यो ।।
तहां सिपाही जै संग मांहीं । दई दृष्टि सव हीके ताहीं ।।
कही तिन्हें "उठि घरकों चलिये । कृपाराम जूके संग मिलिये" ।।
कृपारामकौं रोक रुपैयां । हरीसिंह दे झटकी वैयां ।।
हरीसिंहकै हजुरि सिपाही । भर मजलस महिं पकड़ी वांहीं ।।
कृपारामने भेटहि जानी । दगा कछु वो नहिं पैछानी ।।
भेट लेन जो हाथ उठाओ । हरीसिंहने पकड़ दवाओ ।।
लिपट गये तँह सवै सिपाही । मंत्री सवहीं दिये वंधाही ।।
राजा गोद ले भग्यो खवासा । कूदि पर्यो धरतीके पासा ।।
पाग भागते नृपकी ढरी । ता दिन तैं गढ-राजसि गिरी ।।
नंगे सिर राजा ले भागे । कहीं लोग तहँ संग-मँहि लागे ।।
राजा ले महिलों महिं वाढे । चहूं तरफ दरवाजे चाढे ।।
कृपाराम मजलसहिमें, पकड़ लियो छिन माहिं ।
लाग्यो गाली देन तव, सरी और कछु नाहिं ।।
कृपाराम कहै "सुनो घमंडा । .... ।।
दगा करी तैं मजलिस माहीं । रण महिं तो तू जीत्यो नाहीं ।।

एकवार तू छोड़ दे मोकौं । डूमन पास पिटाऊं तोकौं ॥
किया काम यह तैं नहिं अच्छा । आखर तूं वांदीका वच्चा" ॥
घमंडसिंह सुनि भौंह चढाई । ततकाल हीं..दियो मराई ॥
मजलस हीमें घायल कीन्यो । पेसकवज छाती धर दीन्यो ॥
पाछे धरनी माहिं उतारचो । खडगहिसों सिर काटहि डारचो ॥
चहूं तरफसों महल घिरायो । आफ दिवानहि खाने आयो ॥
मंत्री सब तहँ पकर मँगायो । राजापे दो चार रहाये ॥
वाहरके भीतर नहिं जावें । भीतरके वाहर नहिं आवें ॥
पड़ि हड़ताल सहरके माहीं । वाहर कोई निकसे नाहीं ॥
हाहाकार भयो पुर सारे । राजा परजा द्वारे द्वारे ॥
लाल झरोखे आन तव, राजा वैठे आय ।
घमंडसिहको आपने, सौंही लियो वुलाय ॥
कह्यो "घमँडसिंह यो क्या कीन्यो । राजा-परजाको दुख दीन्यो ॥
अदव हमारो कछु नहिं राख्यो" । जैकृतशाह यह मुखसौं भाख्यो ॥
घमंडसिंह सुनि सौं ही आयो । हाथ जोरिके सीस नवायो ॥
सीस नवाय अर्ज मुख कीनी । "महाराज तुमने नहिं चीनी ॥
कृपाराम कहि काज विगारे । तव हमने मजलिस मँहि मारे ॥
आपहि इह राजा कहिलायो । हुक्म तुहारो कछ्‌ न रहायो ॥
राजकाज सव घर महिं कीन्यो । परजाकौं अति ही दुख दीन्यो ॥
दँड नाहक सव ही पै चलायो । धर्म-कर्म कछहू न रहायो ॥
खिजमत उलट-पुलट कर डारी । गढ-मरजादा सवै विगारी ॥
अपने नाते गोत वधाये । राज नेक सव ही जो उड़ाये ॥
या ते हमने दुष्ट सिंहारो । अव तुम राज करो इहँ सारो ॥
नीत-रीत सों राज चलाओ । परजा अपनी सुवस वसाओ ॥
गउ-विप्रनको पालन कीजे । विरता-गूँठ रोजीना दीजे ॥
हम प्रभु तुमरो हुकम वजावें । जो तुम कहो सोई करि आवें" ॥

(ग) घमंडसिंहकी तपी——

लाल झरोखा राजा वैटे । ओझा गुरु ही संग इकैठे ॥
घमंडसिंह चौक महिं ठाड़ो । महिष समान दंभ मँहि वाड़ो ॥
"जिनको मित्र भ्रात पितु मारचो । उनसों मिले न चित्त हमारो ॥
जो अपना तुम राजहि चाहो । इन्हें वाँध हमपै पकरावो ॥

जयकृत—)
"पाँचनकौं तुम आजहि मारो।
हम सिर दैहि इन्हें नहिं दैहैं। पाप आपने सिर नहिं लैहैं"।।
घमंड—)
"गाँव जागीर वहाली पावें। इह सरकारमें आवें जावें।।
इह सव हीं पंचनकी मरजी। तव हौं करी आपसौं अरजी"।।
महाराज तव धर्म कराई। दीने चारों संग पठाई।।
देवीदत्त घनिराम ही, भवानंद श्री विलास।
पग जंजीर पहिरायके, राखे अपने पास।।
तव लागे सव कार्जहिं माहीं। राजा राख्यो राजहि माहीं।।
प्रात निसा मजलस ही लगावें। मंत्री सवही आवें जावें।।
घमंडसिंह लीनी मुखत्यारी। चक्री फूटी फिरके सारी।।

(अजवरामने घंमड सिंहसे कहा—)

"तुम सव लागे आपहि करने। याते लागे सवहीं डरने।।
इह काहूके मन नहिं भावे। राजा करे सो सव मन आवे।।
तुम्हें दूण[1] दीनी फौजदारी। तहाँ करो तुमहूँ मुखत्यारी।।
इत सव मंत्री राज चलावें। महाराजको हुकम वजावें"।।
घमंडसिंह सुनिकै इहै, कही जो तिनके मांहि।।
"कृपाराम तुमहूं हत्यो, काढो हमरे ताहि।।
पाप हमारे सीस लगावो। तुम वैठे श्रीनगर कमावो।।
वड़े मंतरी तुम गढ माहीं। काहूको तुम राखो नाहीं।।
कृपाराम हमहूँसो मरायो। हमैं दूणको राह वतायो।।
हम काहूंकों छोड़ें नाहीं। महाराजके तुम हो गुनाहीं।।
राज भ्रष्ट तुमहूंने करायो। मजलस माहीं विप्र मरायो।।
तव हम तुमरी करी सहाई।
अव तुम हमको अकल वताओ। हम मूरख तुम चतुर कहाओ।।
इन चारोंको नासो जवहीं। गढकी मिटे कुचाल जो तवहीं।।
धर्म देहि हम नृपसों लाये। अव हमसों नहिं जाइ मराये।।
एक पाप तो प्रथम छुटावो। चार पाप क्यों और कमावो।।

---

[1] देहरादून-उपत्यका

इह इकान्त मंत्रिनने कीन्यो। घमंडसिंह नृपपै कहि दीन्यो॥
ऐसे प्रभु इह मंत्रि तुहारे। अव यह लागू भये हमारे॥
कृपाराम इन हूं ने मरायो। अव हम ऊपर दुंद उठायो"॥

× × ×

अजवराम राजापै आयो। घमंडसिंहकों सँग महिं लायो॥
कह्यो "वहनको व्यांह हमारी। हमरी घरकों भई तयारी"॥
महाराज कछु खर्च दिलायो। अजवराम तव विदा करायो॥
अजवराम कैनूर[1]हि आये। सरंजाम सवहीं जो कराये॥
धन्नू कूर्माचलसे धायो। वनरा ह्वै कैनूरमें आयो॥
"गढ़में गड़वड़ वहुतैं भई। घमंडसिंह मुखत्यारी लई॥
कृपाराम मजलिस महिं मारो। कर्म-कुकर्म कछू न बिचारो॥
तलव हमारी देत हैं नाहीं। देत हैं अपनी फौजके ताहीं"॥
घमंडसिंहपै पत्र पठायो।
"पाँच लाख है तलव[2] हमारी। तुम पाई गढकी मुखत्यारी॥
जल्दी तलव जो देहु पठाई। नातर फौज देखियो आई"॥
घमंडसिंह सुनिके घवरायो। महाराजके पासहिं आयो॥
मंत्री गढके सवहि वुलाए। खत गुल्दारनके दिखलाए॥
प्रतिउत्तर लिखि दियो पठाई। "तुमहूं हमहूं तलव न पाई॥
कृपाराम तव तो हम मार्यो। तुमरो हमरो काज बिगार्यो"॥

× × ×

(अजवराम—)

शीघ्र प्रतिउत्तर लेखि पठायो। "कृपाराम हति तुम सव पायो॥
कृपारामकी गादी पाई। सवा लाख गढ लियो दवाई॥

राज लियो तू चहत है, सवकौं देहि जवाव।
तलव शीघ्र इत भेज दे, नातर करैं खराव॥

---

[1] कुमाऊंका एक परगना जो गढ़वालसे मिला है।

[2] ललितशाहने कुमाऊंको अपने राज्यमें सम्मिलित कर वहां अपनी
सेना रखदी थी। धनु उसी सेनाका नायक था। उसीके सिपाही अपने
तक़ाज़ा करने लगे थे।

पाती बाँच सवैंहि सुनाही । पातीं सुनि सव उठे रिसाई ॥
सिरीनगरकौं फौज चढाई ॥
मंत्रीं गढके जो सव भजाये । अजवरामपै सवहीं आये ॥
घमंडसिंहने वंदसों, दीन्हें सभी छुटाय ।
कीन्हें फेर वहाल वह, राखे पास लगाय ॥
देविदत्त धनिराम डोभाल हीं । श्रीविलास आये नौट्याल हीं ॥
न्हाय धोयके वस्त्र सजाये । घमंडसिंह मियांपै आये ॥
घमंडसिंहने दई दिलासा । "करैं तुम्हारीं पूरन आसा ॥
तुमरे शत्रु गढ मंत्रीं जेते । हतें तुम्हारे आगे तेते" ॥
इह कहि चढ़े घमंडा धाई । वांकीं फौज निसान फहराई ॥
अजवरामपै खवरहि गई । घमंडसिंह आयो सुन लई ॥
धन्नू गद्दींके वल धायो । वलिया लछ्मन हीं सँग आयो ॥
विजयराम सवहींसों आगे । अजवराम नेगीं सँग लागे ॥
गढके मंत्रीं सव सँग माहीं । लाये वांकीं फौजके ताहीं ॥
लियो घमंडसिंह घेरिकै, पीलि फौज चहुं पास ।
उमेदसिंह मियां तवैं, आयो मुख लें घास ॥
बैठे सव गुलदार जहाँसीं । आयो दुहुं करजोर तहाँसीं ॥
सव हीं कौं घुस पत्रीं दीनीं । जुदी जुदी सवहींने लीनीं ॥
ठोणा साहीं मोहरें वांटीं । सवसों मिलिके मसलत छांटीं ॥
"लड़ो भिड़ो अव कोई नाहीं । मिलिके चलो सहरके माहीं ॥
राजा कहें सो सवने करना । इत नाहक क्यों लड़के मरना" ॥
या विध मंत्र-तंत्र ठहराई । घूस असरफीं सभीं पचाई ॥
सिरीनगरमें चलीं अवाई । घमंडसिंहको देइ मराई ॥
"श्रीविलास हम पास तव, आए आधी रात ।
देविदत्त धनिरामकौं, लैकै अपने साथ ॥
हम तिनको वहु आदर कीन्यो । श्रीफल तिनके करसों लीन्यो ॥
गंधाक्षत हम तिन्हें चढाई । तीन मुद्रिका करहि धराई ॥
तव तिनसों हम वातहि वूझी । "किहि कारण तुम आये हो जी" ॥
श्रीविलास कही "हमकौं राखो । केतो हमरे संगहि लागो ॥
तुम प्रवीन हो मित्र हमारे । तव हम आये सरन तुहारे ॥
घमंडसिंहपै वैरी आये । जिन हूं पहिलौं हम पकराये ॥

घमंडसिहने हम नहिं मारे। वह कै तो इह कहि कहि हारे॥
तव वह शत्रु होय फिरि आए। कुर्माचलसों फौजहि लाये॥
घमंडसिहकौं राखें नाहीं। पहिलौं मारें हमरे ताहीं॥
जातैं हमहूं भाजत रातहिं। मिलन तुहारे आये सातहि"॥

मन मथिके हमहूं धर्‍यो, जगदंबेको ध्यान।
परमारथमें करत हूं, जो तुम करो कल्यान॥
हुकुम भयो जगदम्वको, इनकौं रोकहि लेव।
अजवरामको पत्रिका, तुम अपनीं लिखि देव॥
तव हम तिनकौं थामिकैं, दई पत्रिका तांहि।
सिरीनगर खलवल पड़ीं, भाजत हैं सव ह्यांहि॥
धर्मपत्र लिखि देव तो, राखें हमहूं थाम।
जव तुम आवो शहरमें, लगैं तुहारे काम॥
देविदत्त धनिराम हीं, श्रीविलास नौट्याल।
हमहूं राखे रोकि इह, जो तुम देहु सवाल॥
सुनत सार निर्धार हम, धर्मपत्र लिखि दीन।
निर्भय होय गढमें रहो, तुमहूं मानस तीन॥

× × ×

धर्मपत्र इह हमहुं मँगाई। दीन्यो तिनहूंकौं जो दिखाई॥
भये प्रसन तव सिरीविलासहि। देविदत्त धनिराम हुलासहि॥

(घ) अजवरामका विद्रोह—

अजवराम श्रीनगरहिं आये। घमंडसिह वाहरहिं रहाये॥
डेरा कियो उफल्डा मांही। बांध मोरचा वैठ्यो तांहीं॥
अजवरामने सहर दवायो। सवै फौज लै सँगमँहि आयो॥
वोझा वागहि वलिया वैठे। केवल गद्दी संग इकैठे॥
ढुमकीं लछमण जाइ दवाई। घमंडसिहके सौंहीं जाई॥
विजैराम हरवंस हवेलीं। और फौज अव आगे पेलीं॥
वार-पारसैं तुपकैं चटकीं। मनों दामिनीं घन सौं मटकीं॥
तीन पहर निसि (जव) हि विताई। घमंडसिह फिर दियो भजाई॥

अजवरामने तव हमें, लीन्यो पास वुलाय।
श्रीविलास नोट्याल हम, दिये डोभाल मिलाय॥

अजवराम नेगी तव कह्यो। हमहुं तुमरो वदलो लयो॥

तुमसों छीन घमंडा लीने। हम इह सौंप आफपै दीने ॥
इनकी हमरी करो सहाई। अजवराम इह अरज पठाई ॥
मजलसमें सव मंत्रि वुलाये। गोलदार सव हीं संग आये ॥
सकल सिपहको मुजरा लीन्यो। सवने आन सलामहि कीन्यो ॥

× × ×

अजवराम लालच महिं आये। गोलदार सवहीं वहकाये ॥
सव सिपाहने जोरा कीना। धनु गहींका घेरा दीना ॥
अजवराम तव लयो वुलाई। महाराम कौंसल ठहराई ॥

(राजा—)

"जासों राज रहे सो कीजे। जुगत जगत सों सवको दीजे" ॥
अजवराम नेगी कह्यो, "हमको देहु सलाण[1]।
सवा लाख हमरी तलव, तव होवे दरम्यान ॥
सवालाख दो तलव हमारी। औ सलाणकी फौजहिदारी" ॥

(राजा—)

करो दूणकी तुम फौजदारी। इह सलाण तो है सरकारी ॥
याके दाम सिरकारहि आवें। राजाराणी सवहीं पावें ॥
कछु भंडार कछु खाहि खवासिन। कछु वस्तर ही आसन वासनि ॥
इह मरजादा है चलि आई। हमसो यह मेटि नहिं जाई ॥
घमंडसिंह केदारसिंह, तुमहूं दिये निकाल।
तिनकी खायल[2]में तुमें, हमहूं करें वहाल ॥
चालिस कोसकी दून हमारी। सो हम करें सुपुर्द तुमारी ॥
पुस्तांपुस्त लौं बैठे खावो। दुसमन वढे तो मार हटावो" ॥

(अजवरामने राजाके भाई कुंवर पराक्रमको लिखा—)

"तुमको हमहूं राज बैठावें। जो सलाण जागीरहिं पावें" ॥

(फिर अजवराम दरवारमें आकर वोला—)

"तीन दिवसके वीच मंहि, तलव देहु निवटाय।
जो तुम अव चेतो नहीं, राज उलट हो जाय" ॥
महाराज सुनि सोच हिं आये। श्रीविलास भवनन्द वुलाये ॥

(राजाने मोलारामको वुलाया—)

[1-2] जागीर

प्रतिउत्तर कछु देन न आये। हमको तवहीं पास वुलाये॥
"पास वुलाइ हमें फरमायो। कठन महा इह कालहि आयो॥
अजवराम विर्परित ठैराई। राज लेनको वाढ्यो आई॥
मंत्री वाहर निकसत नाहीं। निकसे कोइ तो पकड़े वाहीं॥
तीन दिवस आयुर्वल हमरी। यामें अकल चलें कछु तुमरी॥
तो हमको कछु मंत्र वताओ। अवके हमरो राज वचाओ"॥

(मोलारामने कहा—)

धीरज धरे विपत मंहि, छिमा हि संपद मांहि।
मोलाराम अरजी करे, ता सम दूजो नांहि॥

तीन दिवस जुगती नहिं जानो। महाराज तुम भय मत मानो॥
आमल दोय घड़ीको भारी। उलट-पुलट करि डारे सारी॥
आजहि रात सव काज वनावें। धींग पै धींग दूसरा लावें॥
जान वचे तो माल वतेरो। हमरे कहेसौं माल वखेरो॥
दस हजारकी थैली आवें। तो सब आपस माहि भिड़ावें"॥

(राकर्मचारियोंने—)

उनहूं जाय गुलदार समझाये। आधी रात गुलदार ले आये॥
दस हजार हम तिनको दीने। वातनसें परसन्नहिं कीने॥
कमर वंधाय गुफ़्त हीं लाये। महल नृपतिके आन वैठाये॥
चार तरफ मजवूती कीनी। अजवराम तव पाछे चीनी॥

(राजाने कहा—)

"तुम सलाण फौजदारी चाहो। पाछे पाछे राज दवाओ॥
अपनी तलव ले हमको काढो। ऐसो तुमको गरव ही वाढो"॥

× × ×

राज करन महाराजहि लागे। केवल वलिया रहे जो आगे॥
नेगी सोमनसिंह सिंहारे। उच्छवसिंह दीवानहि मारे॥
भवानंद औ सिरीविलासहि। सर्वोपै भये मंत्री खासहिं॥
फौजाँ ले फिर गढ महिं आये। घमंडसिंह ही फेरि बुलाये॥
महाराज ही जपत जो कीन्ही। अपने गाँव-ठाँव सब लीन्ही॥
अजबराम फौजदार बनाये। घमंडसिंह मुख्तार कहाये॥
बिजेराम गुलदारी लीनी। ...."॥

मुलक बांटि सवहीने लीना । जैकृतसाहको कावू कीना ॥
वस्तर भोजन वैठे खावें । हुकम चलावन कछू न पावें ॥

× × ×

(ङ) सिरमौरकी सहायता

महाराज अति दुःखित भयो । चित्रसाल महिं हमको कह्यो ॥
"मोलाराम, काम तजि जावो । चित्रसाल नाहक हि वनावो ॥
चित्रसाल लिखि तुम क्या पायो । हमको दुष्टन आन दवायो ॥
याको कछु उदिम ठहरावो । हमरी अपनी जान वचावो" ॥
तव हमहूँ विनती करी, "महाराज सुन लेहु ।
हम उदिम याको करें, जो तुम आज्ञा देहु ॥
हुकम होय तो नाहण जावें । राजा-सहित फौज ले आवें" ॥
महाराज तव यह फरमाई । "तुम मत छाड़ो हमरें ताहीं ॥
नाहणको धनिराम पठावै । तुम जो कहो ताहि सिखलावें ॥
याहि समाको छंद वनावो । अक्कलवरिसों ताहि वुलावो" ॥
तव हम कीन्यो इहै सवैया । लगे तीर नहिं लगे रुपैया ॥
"जगप्रकास तुम भानुसम, हमहूं तम कियु ग्रास ।
ग्राह गह्यो ज्यों गजहिकौं, घमंडसिंह दिय त्रास ॥
सूर पै सूर सावंत सावंत पै,
भीरमें वीर पै वीर पधारें ।
साहको साह विसाह करै,
जो गिरे वह काम सौं फेर सुधारैं ॥
रीत सवैं अपने कुलकी,
कवि मोलाराम न कोउ विसारैं ।
कीचके वीचमें हाथी फँसे,
तव हाथीको हाथ दे हाथी निकारैं" ॥
इहै छंद हम दियो वनाई । चित्र-सहित लिखि दियो पठाई ॥
धनीराम ले ताकौ गयो । राजा नाहणको खुश भयो ॥
महावीर रस सुनतहि छायो ।
सकल समाज फौज ले आयो । विजेराम नेगी चढ़ धायो ॥
कपरोली मँहि पड़ी लड़ाई । मार्‌यो विजैराम कौं आई ॥

घमंडसिंह यह सुनत भगायो। पाछे ताके कटक दौड़ायो॥
घेरघार वह दियो मराई। जैकृतसाह जू लियो छुटाई॥
प्रदुमन प्राक्रम कुंवरहि भागे। वहै कुमाऊं जाय हि लागे॥
जगप्रकाश श्रीनगरहिं आये। जैकृतसाह राज वैठाये॥
जैकीरतसह सौं कहीं, जगत प्रकास सलाह।
“चलो हमारे संग तुम, कूर्मांचल दें दाह॥
कूर्माचलि नित तुमैं सतावैं। उनको हमहूं जायं खपावैं॥
चलो फौज ले संग हमारैं। कुर्माचल सव उलटहिं डारैं॥

× × ×

जो हम इत सौं घर को जावैं। प्रदुमन प्राक्रम ले वह आवैं॥
तुम्हें काढि वह राजहि लैहैं। फेरि यहां हम नाहीं अइहैं”॥
जगप्रकास यह कही जवानी। गढ-मंत्रिन हूं ने नहिं मानी॥

(मंत्रियोंने सलाह न पसंद करते जयकृतशाहसे कहा—)

तलव माहि दोहु राजहिं जावैं। फेर तुम्हारे हाथ न आवैं॥
हंसी होय जग माहिं तुहारी। अस मसलत महाराज हमारी॥

(जगतप्रकाशको विदा करते—)

जीगा कलंगी जड़े जड़ाये। भूषण वस्त्र सवहिं पहिराये॥
मुक्तमाल गल डालहि दीनी। माल-जगीर भेंट ही कीनी॥
चालिस कोस की माल[1] दे, विदा करीं सव फौज॥
सवा लाख धन लेइ कैं, करते चले जो मौज॥
जगप्रकाश नाहण महिं आये। गढ़-मंत्रिनने शत्रु वुलाये॥

(जयकृतशाहके अंतिम दिन)—

तहां कुंमाई कुंवर वुलायो। दसमी कौं महाराज भगायो॥
लाखन तहां दर्व ही छूट्यो। कुरमाचलकी फौजने लूट्यो॥
जयकृतसाह जू गये भगाई। मंत्री मिले कुंवर कौं आई॥
कुंवर फौज ले सहर में आयो। सिरीनगर सव सहर लुटायो॥
प्रजा लोक कोई मिले न आई। दीनो अपने महल जलाई॥
तीन बरस गढ माहिं रहाये। पीछे फेर कुमाऊं धाये॥
जयकृत साह जू डोलत रहे। धनीराम फिर नाहण गये॥

---

[1] गढ़वालमें तराईको माल कहते हैं

केती अरज करी तहं रहे । ....।।
जगत परकास तऊ नहिं आये । कह्यो "कुमाऊं तब नहिं धाये ।।
हमहूं तुम सों तवही कही । जो हमने कहि सोई भई ।।
वार वार हम कैसे आवें । सत्रु हमारे संग लखावें ।।
जो हम फौज लेइ गढ धावें । दुसमन हमरो राज दवावें" ।।

धनीरामने आके राजासे कहा)—

विना माल फौज नहिं आवें । वातन सों कोइ नाहिं पत्यावें ।।

धनीरामने विद्रोह किया)—

तीन दिवस लौं कायल कीने । राजा-परजा वहु दुख दीने ।।

राजाने फिर)—

तव जड़ाउ संदूक मंगायो । ताकों दे निज प्राण वचायो ।।

अंतमें—)

अहंकार करिके वौराये । रैंकासे देप्रागहि आये ।।
देवप्राग हरि-दरसन कीन्यो । चौथे दिवस प्राण तहं दीन्यो ।।
सती चार राजा की भईं । श्राप कुंवर मंत्रिन दे गईं ।।
इह कहि नृपके संगहि जलीं । सूरज-मंडल भेदहि चलीं ।।
देवप्राग भंडार लुटायो । जिन पायो तिन ही ने छिपायो ।।

(१४) **प्रद्युम्नशाह (१७९७–१८०४)**—प्रद्युम्नशाह अंतिम स्वतंत्र वाली राजा था, साथ ही वह एक समय जमुनासे काली तक सारे कुमाऊं-गढ़-लका भी राजा रहा। पराक्रमशाह कुमाऊंमें जोशियोंके षड्यंत्रके सामने क नहीं सका। प्रद्युम्नने उसे वुला लिया। दोनों सौतेले भाइयोंमें एक चित्र प्रकारका स्नेह था। पराक्रमको हटा मोहनचंदने फिर कुमाऊंकी ी संभाल ली, किंतु हर्षदेव जोशीने मोहनका काम तमाम कर फिर शासनसूत्र ने हाथमें ले लिया। मोहनचंदके भाई लालसिंह पर पराक्रमका वरदहस्त और उसके प्रतिद्वंद्वी हर्षदेव पर प्रद्युम्नशाहका; जवानी ही नहीं वह सैनिक ायता भी दे रहा था।

गुलाम कादिरके खूनी कांडोंके वाद उम्मेदसिंह (मुनियारसिंह)ने दूनका सनसूत्र संभाला था। पहिले उसने प्रद्युम्न शाहको मालिक वनाया, फिर न वर्ष वाद विगड़कर दूनको सिरमोरसे मिला दिया। सिरमोरवालोंने पृथी-को अपना शासनकेंद्र वनाया। प्रद्युम्नशाहको मरहटोंके प्रतापकी खवर थी, ने उन्हें सहायताके लिये वुलाया। छोटी मोटी लड़ाइयां हुईं, किंतु फल कुछ

नहीं हुआ और उम्मेदसिंहके हाथसे दूनको निकाला नहीं जा सका। ८,९ व
सिरमौरके साथ रहकर उसने फिर करवट बदली, और प्रद्युम्नशाहसे मिल
उम्मेदसिंहके मरनेपर श्रीनगरसे घमंडसिंहको नया सूबेदार बनाकर भेजा

१७९० में कुमाऊंपर गोरखोंका अधिकार हो गया। गोरखोंके
विस्तारके बारेमें हम आगे कहनेवाले हैं, यहाँ प्रद्युम्नके शासनके वर्णनको
करनेके लिए कुछ कहना जरूरी है। कुमाऊं-विजयके बाद अगले साल १
गोरखा-सेनापतिने गढवालपर एकाएक आक्रमण कर दिया और गोरखे श्री
नातिदूर लंगूरगढतक चढ़ आये, लेकिन गढ़वालियोंके प्रतिरोधके सामने उन्हें
महीने वहीं रुका रहना पड़ा। इसी बीच चीनी सेनाके नेपालपर आक्र
सूचना आई। नेपाली सेनाको लंगूरगढ़ ही नहीं अल्मोड़ाको भी छोड़कर
जाना पड़ा।

यद्यपि चीनके खतरेसे गोरखा सेना लंगूरगढ छोड़कर चली गई थी,
गोरखोंका रोब इतना था, कि गढ़वालने २५००० रु० वार्षिक देना स्
कर लिया था। चीनका खतरा दूर हो जानेपर गोरखा जेनरल अम
थापाने पश्चिमकी ओर ध्यान दिया, किंतु उसने कुमाऊंको ले गढ़वालको
मात्र बनाकर ही संतोष किया। नेपाली रेजिडेंट श्रीनगरमें रहता, जिसका
खर्च गढ़वाल देता, यही नहीं तीर्थ-यात्राके बहाने कितने ही और नेपाली
रहते, जिनका भी खर्च राजाको देना पड़ता। प्रद्युम्नशाह भीतरी और
कुचक्रोंसे तंग था। अब वह नेपालके भरोसे चैनकी सांस ले रहा था, उसे न
प्रबंधको व्यवस्थित करनेकी न चिंता थी न सेनाको बढ़ा शिक्षित करके
रखनेकी।

किंतु, अभी खँडूडी और डोभालका झगड़ा भी सुलग रहा था।
मुखियाकी आंखें निकलवाई गई थीं, तो दूसरेका सिर काटा गया था।
धरणी सर्वेसर्वा थे; इसलिए भी सब ओरसे शिकायत होने लगी। उन्होंने
विस्टको नाममात्रका दीवान बना रखा था। षड्यंत्रकारियोंने कुंवर प
शाहको राजगद्दीका लोभ दिया। वह भी फेरमें आगया। रामा, धरणी प
लगाया गया, कि उन्होंने सोनेका सिंहासन चुराकर अल्मोड़ा पहुंचा दि
रामा उस समय पैनखंडा गया था। उसके साथके सैनिकोंको प्रलो
रामाको धूणी-रामणी स्थानमें मरवा डाला गया। श्रीनगरमें धरणी प्रातः
लगा था, उसी समय सेनाने घर घेर लिया और "राजाने बुलाया है"
जबर्दस्ती उसे लेजा नगरके पश्चिम ओर अलकनंदाकी रेतीमें मार डाला।

कहते हैं, रामा, धरणीकी मृत्युके बाद उनके कुटुंबकी स्त्री "वैजूकी बामणी", जो नेपालके राजगुरुकी कन्या थी, रोती-कांदती वहां पहुंची । उधर गढ़वालने दो-तीन वर्ष का कर नहीं चुकाया था। चुकाता भी कैसे? १८०३ में भयंकर भूकंप आया, जिसका केंद्र-बिंदु गढ़वाल था । रेपरने १८०८ में स्वयं देखा था । उसने लिखा है—"श्रीनगरका शहर प्रायः सारा ध्वस्त हो गया, पांचमेंसे एक घरमें कोई रहता था, नहीं तो सारे घर खंडहर हो गये थे । राजाका महल रहने लायक हीं रह गया था । भूकंपके झटके कई महीने तक आते रहे । कहा जाता है, कितनी ही धारायें सूख गईं, और दूसरी जगहोंमें कितने ही नये चश्मे निकल आये।" उस भयानक भूकंपसे पहाड़ टूट-फूटकर कितने ही समूचे गांव दब गये । . . . इसके पश्चात् २० या १५ सैकड़ेसे अधिक लोग नहीं बचे होंगे। जो बचे वह भी रबार-विहीन हो गये । अन्नका अभाव था । जहां देखो तहां हाहाकार । . . . इकावन-बावन संवतमें घोर दुर्भिक्ष पड़ा, जो इकावनी-बावनी नामसे गढ़वालमें व तक प्रख्यात है ।"[1]

नेपालने यही समय आक्रमणके अनुकूल समझा । कुमाऊं उनके हाथमें ा ही । फर्वरी १८०३ को नेपाली सेनाने अमरसिंह थापा और हस्तिदल तरिया (महाराजके चचा) के नेतृत्वमें गढ़वालकी ओर अभियान किया । जो ी अस्तव्यस्त सेना थी, उसे लेकर प्रद्युम्नशाहने सीमापर जाकर मुकाबिला किया, तु नेपालकी शिक्षित सेनाके सामने वह कैसे टिकता? दूसरी सेना भक्ति थापा ौर चंद्रवीर कुंवरके नेतृत्वमें लंगूरगढ़की ओरसे बढती श्रीनगर पहुंच गई, जहां जाको हराती अमरसिंहकी सेना भी आ मिली । बड़ी मुश्किलसे प्रद्युम्नशाहने किलेसे युवराज सुदर्शनशाह, कम-असल लड़के देवीसिंह और छोटे भाई प्रीतम-ाहको तथा किलेके अन्दर जो खवास और दासियां थीं, सबको . . अलकनंदा र कराया । " एकाध झड़प अलकनंदाके वार-पार हुई । गोरखा-सेनाने द्युम्नशाहका पीछा किया । बाराहाट (उत्तरकाशी) में आकर फिर युद्ध हुआ । हांसे भागकर चमुआ पहुंचते-पहुंचते फिर गोरखा सेनाने आक्रमण किया, जहांसे ागकर प्रद्युम्नशाह देहरादून पहुंचा, किंतु पीछा करती गोरखा सेनासे लड़नेके ए साधन नहीं रह गया था । प्रद्युम्नशाह सहारनपुर भागा । वहां अपने जसिंहासन और बहुमूल्य आभूषणोंको बेंचकर लंढौराके गूजर राजा रामदयाल हकी सहायतासे उसने रांगड़-पुंडीर-गूजर राजपूतोंकी १२००० सेना एकत्रित कर,

---

[1] "गढ़वालका इतिहास", पृष्ठ ४१८–१९

देहरादूनमें आ गोरखोंपर आक्रमण किया। खुडवुडाके मैदानमें १४ मई को प्रद्युम्नशाहने अपने सारे कलंकको धोनेके लिए घोड़ेपर चढ़कर सेनाका किया। एक गोली आकर राजाके सिरमें लगी, वह वहीं औंधे मुँह गिर गया। सेना तितर-वितर हो गई। कुंवर प्रीतमशाह वंदी वनकर नेपाल पराक्रमशाह भागकर अपनी ससुराल नालागढ़में जा कुछ समय वाद मर सुदर्शनशाहको देवीसिंहके अनुचरोंने रातों-रात ज्वालापुर पहुंचाया। शाहके शवका गोरखोंने हरद्वारमें लेजाकर वड़े सम्मानसे दाहकर्म कि

मोलारामने प्रद्युम्नशाहके शासनके वारेमें लिखा है——

वड़ो प्यार डोटीकी रानी। कहनमें छोटी अतिमनमानी॥
शुभ दिन नीको छांटिके लीन्यो। राजतिलक तव कुंवरको कीन्यो॥
प्रदुमन चंद तहं नाम धरायो। कुरमाचलको नृप ठैरायो॥
स्वर्गवास जव जयकृत भये। मंत्रिन लिखि चिट्ठी दये॥
प्रद्युमन प्राक्रम सुनतहि आये। हरखदेव जोशी संग लाये॥
प्रद्युमनशाहकौं राज वैठायो। अजवराम नेगीहि मरायो।
गढमंत्री मिलि मंत्र ठैरायो। हरखदेव इह भलो न आयो॥
कुरमाचली छली अन्यायी। सवने मिलिके दयो घपाई॥

गढ़मंत्री आपसहि में, राखन लगे सिपाहि।
प्रद्युमन प्राक्रमसाह कों, दीनो फूट गिराहि॥

कुंवर आपनो हुक्म चलावे। राजा कौं खातिर[1] नहि लावे॥
मंत्री मिले कुंवर-सँग जाई। आपस दीने दुहू भिड़ाई॥
राजमंत्रि राजा को चाहें। कुंवर-मंत्रि राजाकों रिसाहें॥
कुंवर-मंत्रि सकल्याणी भये। राजमंत्रि ह्वै रामा रहे॥
रामा धरणी दोऊ भाई। जात खंडूड़ी उमर जवाई॥
सीसराम सिवराम सहोदर। ज्यों रावणके मंत्रि महोदर॥
राजकाज सव कुंवर कौं दीन्यो। राजा हुकम जपत कर लीन्यो॥
राजमंत्रि तव भये किनारे। गये सु राजपुत्र के द्वारे॥
राजपुत्रको दियो चिताई। "पिता तुम्हारे लिये दवाई॥
तुमहूं अव कुछ होस संभालो। हमरे संग वाहर तुम चालो॥

---

[1] मनमें

वाहर चलि हम करें लड़ाई। तुमकौं राज देंइ बैठाई ॥
साह सुदरसन तिन को नामा। तिनसौं मंत्र कियो इह रामा ॥
कुंवर सुनत इह वाहर आये। रामा पति निज द्वार विठाये ॥
लगे मोरचा सहर में सारे। सिरीनगर और राजहिं द्वारे ॥
भगे लोक सवहीं अकुलाई। चचा भतीजे लगी लड़ाई ॥
राजा कुंवरने कीन्यो कावू। वाहर वेटो भीतर वावू ॥
चहूं गिरद सौं चलें वंदूकें। मानों घन महि केका कूकें ॥
पथरकला वाजें घन गाजें। चमकें ज्वाला विजली लाजें ॥
विचली कल गढ़ पड़ी लड़ाई। निकसे वाहर दोनों भाई ॥

महाराज के कुंवर ही, उतरे गंगा पार ॥
साह सुदरसन फौजले, रहे जो गंगा पार ॥

वार-पार सौं फौजें आवें। करें लड़ाई लड़-भिड़ जावें ॥
केते दिवसहि लड़ते भये। पूरव पाप उदय ह्वै गये ॥
कटे मरे जो लोक हजारों। सिरीनगर औ धारा-धारों ॥

§६. गोरखा-शासन

१. गोरखावंशकी स्थापना

गढवालपर गोरखा-शासन के वारेमें कहनेसे पहिले गोरखा-जातिके वारेमें कुछ कहना आवश्यक है। गोरखा-शासनसे पहिले नेपालका भूभाग वहुत से राज्योंमें वंटा हुआ था। हर एक उपत्यका नहीं, उसके कुछ गांवोंके ठाकुर अपने को स्वतंत्र राजा मानते थे। उनमें कभी-कभी कोई सरकंडेकी आगकी तरह जगा भी, तो उसके वुझनेमें देर न लगी। ऐसे ही एक विजेता क्राचल्ल देवके वारेमें हम कह चुके हैं, जो दूलू (कर्नालीकी एक शाखा लोदी नदीके वायें तटपर अवस्थित आधुनिक दुलू-दैलेख) का शासक था। वस्तुतः गोरखा शासन द्वारा मेची (दोर्जेलिङ् जिलासे) काली नदी तकके हिमाचलीय भूखंडके एकतावद्ध होनेसे पहिले वह मुख्यतः तीन भागोंमें विभक्त था।

(१) गुरुंग-मगर भूमि, जो गंडककी प्रधान शाखा त्रिशूली गंगासे काली नदी तक थी। इसमें भी गुरुंग पश्चिममें थे और मगर पूर्वमें। सीह्लानचौक, अजीरगढ़ आदि गुरुंग प्रदेशमें थे, और ढोर, भीरकोट, शतहू, गरहू आदिमें मगरोंकी प्रधानता थी।

(२) कोसीकी सबसे पश्चिमी शाखासे लेकर वर्तमान दोर्जेलिङ्गे तक किरात-प्रदेश था। राई, याखा, लिम्बू इन किरात-जातियों लिम्बू सबसे अधिक पूरबमें रहते थे।

(३) कोसी और त्रिशूलीके पनढरके बीचका छोटा सा भाग वा नेपाल था।[1]

यद्यपि नेपालमें किरात शब्द पीछेके समयमें राई-याखा-लिम्बूके लि प्रयुक्त होता रहा, किन्तु प्राचीन खसोंको—जो पीछे काली पार गये—तथा पहाड़में आई कुछ और जातियोंको छोड़ कर यहाँकी बाकी सारी जातियाँ कि वंशसे संबंध रखतीं थीं। गुरुंग और मगर तो किरात हैं हीं, स्वयं नेपाल-उप निवासी नेवार भी मूलतः किरातवंशी हैं। इन्होंने हीं इस देश को अपना नाम (ने नेपार>नेपाल दिया। सारे हिमालयकी तराईमें रहनेवाले थारू, पूर्वके पश्चिमके भोगता, अस्कोटके राजी, यहाँ तक कि ऊपरी सतलजके (कनौरे) भी उसी विराट किरात जातिके अंश हैं, जिसके अवशेष आज भी मलाया, (मोन, करेन या थलेङ्), इन्दोचीन (ख्मेर) तकमें मौजूद हैं। खश पश्चिमसे ही पहाड़ पूर्वकी ओर बढ़े, यह हम बतला चुके हैं, किन्तु कालीके पूर्व वह अपे बहुत पीछे पहुँचे। उनकी प्राचीन बस्तियोंके लिए हमें नेपालमें भी क अपनी विशेष समाधियों (कब्रों) का पता लगाना होगा। भिन्न भाषाओंके रहते भी आज खसकुरा (गोरखा-भाषा) कालीसे मेचीके ति तक बोली जाती है।

(क) २४ गढ़—जैसे गढ़वालकी एकताके पहिले यहाँ ठाकुरोंके ५ थे, उसी तरह गोरखों द्वारा एकावद्ध होनेके पहिले वर्तमान नेपालके प भागमें २४ राजा थे, जिनके कारण उसे चौबीसी प्रदेश भी कहा जाता गढ़ोंके नाम पांच स्रोतोंसे निम्न प्रकार हैं—

---

[1] "पूर्वस्यां कौशिकी पुण्या सर्वपापविनाशिनी ।
गंगा त्रिशूलगंगाख्या प्रत्यीच्यां दिशि संस्थिता ॥
उत्तरस्यां दिशि तथा सीमा शिवपुरी मता ।
दक्षिणस्यां दिशि नदी पवित्रा शीतलोदका ॥
एतन्मध्ये महापुण्यं नेपालं क्षेत्रमीरितं ।"
—स्कंदपुराण (नेपाल-माहात्म्य)

कर्कपेट्रिक (१८११)	हेमिल्टन (१८१९)	रिपोर्ट (१८८४)	गुर्खा (१९१८)	नेपालको इतिहास
१. लमजुङ्	०[1]	०	०	०
२. तनहूँ	०	०	०	०
३. गलकोट	०	०	०	०
४. पर्वत	मलेवम	०	०	पर्वत
५. नुवाकोट	नयाकोट	०	०	नुवाकोट
६. पुन	पोइन	पैंन	पयुङ्	पैंय्यूं
७. गरहू	०	०	०	०
८. रीसिङ्	०	०	०	०
९. घीरिङ्	०	०	०	०
०. पाल्पा	०	०	०	०
१. गुल्मी	०	०	०	०
२. मुसीकोट	०	०	०	०
३. प्यूठान	०	०	०	०
४. इस्मा	०	०	०	०
५. भीरकोट	०	०	०	०
६. धुरकोट	०	०	०	०
७. विधा	अर्घा	०	०	०
८. लटहूं	सतहूं	लटहूं	०	सतहूं
९. कास्की	०	पोखरा	कास्की	०
०. खांची	खाची	०	पोखरा	खांची
१. ढोर	०	०	सतहूं	ढोर
२. दाङ्	गोरखा	सतहूँ	वुटौल	खुग्रीकोट
३. झिली	ताकी	वढ़ौल	कैखे	भिग्रीकोट
४. सल्मान	गजरकोट	कैखी	देउराली	गजकोट

श्री सूर्यविक्रम ज्ञवाली[2]के मतसे गोरखा कास्कीके तथा वुटवल पाल्पाके न्तर्गत था, इस प्रकार वस्तुतः इस सूचीके वाईस हीं राज्य[3] थे—

---

[1] (०) का अर्थ है पूर्ववत् । [2] "पृथिवीनारायण शाह", पृ० १९ ।
[3] "उस समय बाईस-चौबीस राज्य जुमलाके अधीन थे"—"रामशाहको िवन-चरित्र", पृ० ६–७

(१) लमजुङ्
(२) तनहूं
(३) गलकोट
(४) पर्वत
(५) नुवाकोट
(६) पुन
(७) गरहू
(८) रीसिङ्
(९) घीरिङ्
(१०) पाल्पा
(११) गुल्मी
(१२) मुसाकोट
(१३) इस्मा
(१४) प्यूठान
(१५) भीरकोट
(१६) धुरकोट
(१७) अर्घा
(१८) सतहूं
(१९) कास्की
(२०) खांची
(२१) ढोर
(२२) सल्याण

इनमें सप्तगंडकी (त्रिशूलीसे बदयार तकके पनढर) में मल्ल, सेन और साही-ठकुरी वंशके राजाओंके राज्य निम्न प्रकार थे—

पर्वत		मल्ल
गलकोट		
तनहूं	तनहूं	सेन-ठकुरी
रीसिङ्		
पाल्पा	पाल्पा	
गुल्मी		
अर्घा		
इस्मा		
ढोर	खान्छा	साही-ठकुरी
भीरकोट		
सतहू		
गरहू		
नुवाकोट	मीचा	
कास्की		
लामजुङ्		

चौबीसी राजाओंमें सरयू (काली-करनाली)की भूमिके जुम्ला, दु डोटी जैसे प्रभावशाली राजाओंको नहीं गिना गया—डोटीके रै पुराने कत्यूरी वंशके थे, दुलूवाले मल्ल और जुम्लाके मल्ल(?) थे।

रनाली भूमिके राज्य सप्तगंडकीकी अपेक्षा कुमाऊँसे ज्यादा संवंध रखते थे। पालके एकीकरणके लिए सप्तगंडकीके चौबीसी राज्योंका ही नहीं वल्कि पूर्वमें प्तकौशिकी (किरात), नेपाल, सप्तगंडकी और काली-कर्नाली तकके छोटे ड़े सभी राज्योंको ध्वस्त करना पड़ा। यह काम साही-ठकुरी वंशने किया।

(ख) **साही-ठकुरी**—दुनियामें सभी जगह प्रभुत्वसम्पन्न होनेपर अपनी शावली "ठीक" करनेकी अवश्यकता होती है, अर्थात् नये राजवंशका संवंध कसी प्राचीन प्रतिष्ठा-प्राप्त राजवंशसे जोड़ना पड़ता है। ईरानके हालके जाशाहको अपने साधारण ईरानी-तुर्क कुलसे संतोष नहीं हुआ और उसने अपने शको पहलवी (प्राचीन पार्थिव-वंशी) वना डाला। इसी तरह पहाड़में भी आ है। रामपुर-विशेरके राजवंशको अपने कनोरवंशको छिपानेके लिए प्रद्युम्न ौर अनिरुद्धके साथ संवंध जोड़नेकी अवश्यकता पड़ी। यही वात नेपालके ाही-ठकुरीवंश (और पीछे जंगवहादुरके राणावंश)के साथ हुई। "खान्छा" ज्येष्ठ) और "मींचा" (कनिष्ठ) वस्तुतः मगर[1] (किरात) भाषाके शब्द हैं, भी उसी तथ्यको वतलाते हैं। पीछेकी वंशावलियोंमें साही-ठकुरी-वंशका र्ता भूपाल तथा उसे चित्तौड़के राणावंशकी उज्जैनमें गयी शाखावाले विक्रम ाजाका कनिष्ठ पुत्र माना गया है। जेठेका नाम ब्राह्मणिक था। "चित्र-वलास"की वंशवलीमें क्रम है—

१. जिल्ल
२. अजिल्ल
३. अटल्ल
४. तुथाराज
५. विमिकिराज
६. ब्रह्मणिक
७. मन्मथ
८. जैनखान
९. सूर्यखान
१०. मींचाखान

ये नाम और खान-उपाधि भी चित्तौड़से संवंधकी वातके वारेमें भारी सन्देह दा करती है। साही-ठकुरीवंश वहुत सम्भव है, एक खशवंश रहा हो, किन्तु उसका विवाह-संवंध मगर लोगोंसे भी होता था। पालपाके सेनवंशी अभयराणाके ारेमें उल्लेख है[1]—

"एतत्सुतो रूपनारायणेत्यादि-महाराजाधिराज-श्रीमदभयराणा। तेनैव... पलपायां वसतिः कृता।...स मकवानपुरवासि-गजलक्ष्मणसिंह-नाम्नो मगरमहीपालस्य कान्तिमतीनाम्नीं कमनीयतमां कन्यां मकवानी-नाम्नीं विधिनोपयेमे।"

---

[1] "पृथिवीनारायण शाह", पृ० १५;

वंशावली जोड़नेवालोंके पुराने शक-संवत् संदिग्ध हैं। उनके सन् १४९५ ई० (शाके १४१७)में भूपाल उज्जैनसे आकर खिलुंगमें भूमि करके वस गया। उसकी सन्तान निम्न प्रकार हुई—

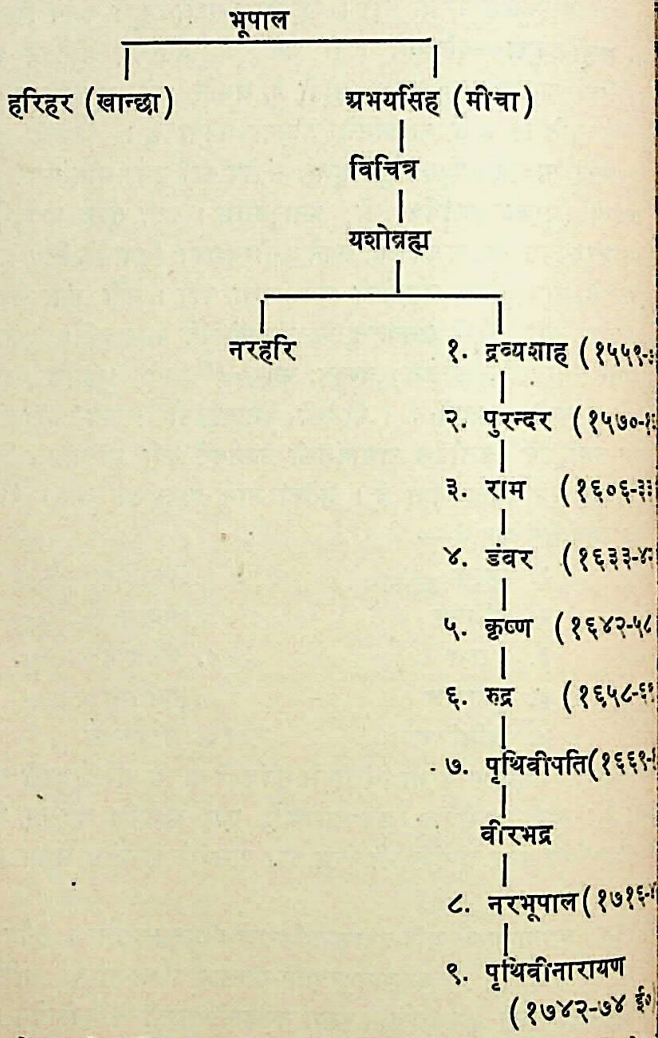
भूपाल
हरिहर (खान्छा)
अभयसिंह (मींचा)
विचित्र
यशोब्रह्म
नरहरि
१. द्रव्यशाह (१५५९-
२. पुरन्दर (१५७०-
३. राम (१६०६-३
४. डंबर (१६३३-४
५. कृष्ण (१६४२-५८
६. रुद्र (१६५८-६
७. पृथिवीपति(१६६१-
वीरभद्र
८. नरभूपाल(१७१६-
९. पृथिवीनारायण (१७४२-७४ ई०

जेठा हरिहरसिंह (खान्छा) ढोर (पश्चिम ३ नंवर), भीरकोट, गरहूं (पश्चिम ४ नम्बर)पर अधिकार कर मगरांत (मगरोंकी भूमि)

ा, और छोटा अजयसिंह (मीचा) नुवाकोटको जीतकर वहाँका। अजयसिंहके विचित्र खानने नुवाकोटसे उत्तर-पूर्वके कास्की प्रदेशको भी अपने राज्यमें ला लिया। विचित्रका पुत्र यशोव्रह्म कास्कीके पूर्वके लमजुङ् प्रदेशका राजा ा। यशोव्रह्मका ज्येष्ठपुत्र नरहरिशाह लमजुङ्की गद्दीपर वैठा। कनिष्ठ नरपतिशाह था। मझले द्रव्यशाहने गोरखापर अधिकार किया। उसके रामशाहने वस्तुतः नेपालके एकीकरणका कार्य आरंभ किया, जिसे सफलता पहुँचानेका श्रेय पृथिवीनारायणशाहको है।

(ग) द्रव्यशाह (१५५९-७०)—उस समयके राज्य दस-पाँच हजार दमियोंकी ठकुराइयाँ थीं, जो आपसमें लड़ते-भिड़ते रहते थे। चौदहवीं सदीमें ाऊँ, पंद्रहवीं सदीमें गढ़वालमें जैसे ठकुराइयोंका जमाना खतम हुआ, वही त सोलहवीं सदीमें हिमाचलके इस अंचलमें शुरू हुई, यद्यपि यह काम पहिले से योजना वनाकर कहीं नहीं हुआ। इन ठकुरी राजाओंका काम केवल राज्यसे ीं चलता था, इसलिए वह पशुपालन और खेती भी करते थे। द्रव्यशाह वचपनमें ठमें गायोंकी चरवाही करता था। कहते हैं, वहीं गुरु गोरखनाथ (?देवपाल-कालीन ९वीं सदीके गोरक्षपा)ने उसे राजा होनेका वरदान दिया। असल दान था, पोखराके खंडका (खस) राजाके प्रति लोगोंका असंतोष। वहाँकी ाधारी (खस) और मतवाली (मद पीनेवाली मगर-गुरुंग) दोनों जातियाँ से असन्तुष्ट थीं। पंडित नारायण अर्ज्याल (कुमाऊँनी ?) और गणेशपांडे लपासे आगत) दोनों गुरु-शिष्योंकी चाणक्यनीति इस काममें सहायक हुई। श पांडेने गोरखा और लमजुङ्को रौंदना शुरू किया। संदेह न होने देनेके ए गणेशने लमजुङ्के तार्कू गाँवके पन्तकी लड़कीसे व्याह कर लिया। मत-ों(मगर)-दल पहिलेसे रुष्ट था, पांडेने तागाधारी (जनेवधारी) दलको खंडकाके विरुद्ध कर दिया। नारायण अर्ज्यालकी लमजुङ्में पहिलेसे ही वड़ी ष्ठा थी। सव ठीकटाक हो जानेपर अर्ज्यालने तागाधारी दलके नेता गणेश और मगरनेता गंगाराम रानाको भेजकर यशोव्रह्मसे द्रव्यशाहको माँग लिया। व्रह्मने भगीरथ पन्त, सर्वेश्वर खनाल, केशव वोहरा और मुरली खवास वासे)के साथ द्रव्यशाहको भेज दिया। इन्होंने गोरखा-राज्यसीमाके पासके छोप्राकमें अपना अड्डा वनाया। गोरखा-नगरके उत्तर-पश्चिम गुरुङ् लोगों-लीग-लीगमें अपना गणराज्य था। ये लोग प्रतिवर्ष एकत्रित हो वलपरीक्षा के सवसे वलीको अपना राजा वनाते थे। इसी कामके लिए विना विशेष यार लिये गरुङ् लोग वहाँ जमा हुए थे। इसी समय द्रव्यशाहके लोगोंने

आक्रमण कर दिया। गुरुङ् हारे और लीगलीग कोटको खाली पा राज्यसिंहासनपर बैठ गया।

खँडका राजासे अब सीधे युद्ध चलने लगा, किन्तु सफलताप्राप्ति समय लगा। एक रात द्रव्यशाहको नारायण अर्ज्याल, गणेशपांडे, भगीर गंगाराम राना(मगर), मुरली खवास, सर्वेश्वर खनाल, गजानन पटरा केशव बोहराने गोरखाके पुराने दरबार तल्लोकोट[1]में राजसिंहासन दिया—गणेश पांडे राजपुरोहित हुए। ऊपर गोरखा नगरको जीतना बाकी रहा, जहाँ खँडका दुर्ग-बद्ध होकर बैठा था। उसे द्वन्द्व-युद्धपर राजी किया द्रव्यशाहने उसे मार डाला। भादौ कृष्णाष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र १४८१ (सन् १५६९ ई०)को द्रव्यशाहका राज्याभिषेक राजगुरु ना अर्ज्यालने कराया। यशोब्रह्मके बाद ज्येष्ठ पुत्र नरहरिशाह लमजुङ्का बना था। उसने छोटा भाई होनेके कारण द्रव्यशाहको अधीनता स्वीकार लिए कहा। इनकार करनेपर लड़ाई शुरू हो गई, जिसके कारण द्रव्यशाह राज्यका अधिक विस्तार नहीं कर सका। तो भी गोरखाकी सुरक्षाके लिए अजीरगढ और सिह्लानचोकपर अधिकार करना आवश्यक था। सिह्लान गोरखा-नगरसे पाँच कोस उत्तर था, जिसे द्रव्यशाहने पहिले दखल किया। गढ़ गोरखासे ७,८ कोस उत्तर दरौंदी-उपत्यकामें पहाड़के ऊपरी भागमें

द्रव्यशाह[2] ११ वर्ष राज्य करके सन् १५७० (शाके १४९२)में द्रव्यशाहके पुत्र पुरन्दर या पूर्णशाहने १५ वर्ष राज्य करके अकबरके साथ

---

[1] गोरखाके पहाड़के ऊपर नीचे उपल्लोकोट और तल्लोकोट दो थे, उपल्लोकोटमें प्राचीन दरबार तथा मनोकामना देवी और गोरख मंदिर हैं। उपल्लोकोटसे पोखरीथोक तक गोरखा नगर है।

[2] चित्रविलास-कृत रामशाहकी राजवंशावलीका कुछ अंश निम्न प्रकार

"इह खलु जगति श्री मेदपाटात् प्रसिद्धाच् छिन्न-मुनिवर-सिद्धाच् चित्र सूकूटात्। मनसिकृत-सुमन्त्रो राजपुत्रः सपुत्रोऽगमद् अधिसुखधामं सहि कश्चित् ॥२॥ तद्गोत्रे जितभिल्ल—देशनियमः श्री जिल्ल-राजोऽभवद्।

राज्ये कार्यदृढः प्रजापरिवृढो जातो जिताख्यस्ततः।
सर्वाशाजिद् अटल्ल—राजनृपतिः तस्मादकस्मादभूत्।
तत्पुत्रः सुकथापृथाश्रुतिरतिस् तूथादिराजस्तथा ॥ (३)
यस्यांग-प्रभवोऽभवद् विविकिराट् सम्राट् प्रणीतिप्रियस्।

में शरीर छोड़ा। उसके बड़े लड़के छत्रशाहके छ ही महीनेमें मर जानेपर टा रामशाह गोरखाकी गद्दीपर बैठा।

२. राज्य-विस्तार

(१) **रामशाह (१६०६-३३)**—गोरखा राज्यको एक ठकुरी-राज्यसे कर वड़ा राज्य वनानेका श्रेय रामशाहको है। रामशाहने अपनी शक्तिको वस्थित करके आगे वढ़ना चाहा। द्रव्यशाहके समयके विश्वसनीय वंश—, पंत, अर्ज्याल, खँदाल, राना, वोहरा—के उसने छ थर(पद)स्थापित किये। काजमें उनकी सम्मति सर्वोपरि मानी गयी। लामजुङ्के साथका वैमनस्य भी चला जा रहा था। रामशाहने तीन-चार लड़ाइयोंके वाद लमजुङ्को लिया। अव गोरखा-राज्यकी पश्चिमी सीमा मरस्याङ् नदी हो गयी। जुङ्वालोंने गोरखा-शहरसे १५ कोस उत्तर वारपाकके राजाको उभाड़ा। पेंच और सीधे लड़ाईमें भी जल्दी सफलताकी आशा न देख राम-ने धोखेसे काम लेना चाहा और वारपाकके घले (गुरुङ्, मगर) राजा चाग्या

तद्गेहे हरिराज-राज्यतिलको भूमिं बुभोजेश्वरः ॥
तस्माद् ब्रह्मणिको वभूव नितरां गोब्राह्मणप्राणपस् ।
तद्भूमन्मथराजभूपतिरसौ यस्मान् नरेशाधिपः ॥४॥ (४)
तस्माद् भूपतिनायकः पतिरिति श्री जैनखानोऽधिपस् ।
तस्मात् सूर्यनिभः प्रभुः समजनि श्रीसूर्यखानाह्वयः ।
तस्यात्मप्रभवः कृतातिविभवो मीचादिखानोऽभवत्
तज्जः सज्जधनुर् धनुर्धरवरः खानो विचित्रो विभुः ॥ (५)
चित्री वैचित्रिरासीत् तदनु मनुजपः श्रीयशोब्रह्मशाहिर् ।
ब्रह्मज्ञानी सुदानी धनद इव धनी तत्सुतो द्रव्यशाहिः ।
तूर्णं चक्रेऽरिचूर्णं तदधिपतनयः पूर्णकृत् पूर्णशाहिः ।
पूर्णांशोऽतोधुना ऽसौ विलसति ससुतो रामवद् रामशाहिः ॥(६)
कृता चित्रविलासेन कारिता रामशाहिना ।
राजवंशावली भूयाद् अभितो वृद्धिगामिनी ॥(७)

यहाँ उदयपुरकी वंशावलीमें राणा कुंभकर्ण (कुंभा) की परम्पराके कुंभकर्ण→ अयुत→ परावर्म→ कविवर्म→ यशवर्म→ उदुंबरराय→ भट्टराय→ जिल्लरायको मिलानेका प्रयत्न किया गया है।

और स्यरतानके राजा सुरतानको मित्रताकी रसम अदा करनेका निमंत्रण सीधे-सादे घले लोग विश्वास करके विना हथियारके आये। रामशाहके छिपे तौरसे हथियारबंद थे। चाग्या और सुरतान निहत्थे थे। राना आदिने चाग्यापर तलवार चलाकर उसे मार डाला और सुरतान नगरके पूर्व ओर गदी-खोलाके पार सरसल्यान भाग गया। रामशाहकी पहिले जाकर वारपाक जीता, फिर स्यारतानको भी। इसके बाद वारपा स्यरतानके घले लोगोंने अपने अठारह सौ खोलों (इलाकों)को भी समभा कर रामशाहके आधीन करवा दिया। इस प्रकार उत्तरमें तिव्वत (भो सीमा तक गोरखा-राज्यका विस्तार हो गया। गोरखोंकी महत्वाकांक्षा बढ़ी, और वह भोटके केरोङ् (-ज़ोङ्)के भीतर घुस गये, किन्तु चाङ् (तिव्बत)की सेनासे हारकर तथा अपने सेनापति भवानी पांडे और पीह खोकर उन्हें रोसी (रसुवा)में भाग आना पड़ा। आज भी इधर भोट नेपालकी वही सीमा है, जिसे रामशाहने स्थापित किया।

पुराना शत्रु सुरतान भागकर सरसल्यानके राज्यमें वसेरी (वस गाँवमें जा वसा था। उसके पीछे पड़ी गोरखा-सेनाको मंत्री गणेशपांडेको सिवा कुछ हाथ नहीं आया। "मंत्री मरवाकर कैसे तुम भाग आये" रामशाहने सेनाको फटकारा, किन्तु उसे मालूम हो गया, कि सरसल्यानसे हँसी-खेल नहीं है। पूरी तैयारीमें कुछ समय लगा, फिर गंदी नदी पा सल्यानियोंसे लड़ाई शुरू हुई। वहाँका घले (गुरुंग) राजा मारा गया सरसल्यानपर गोरखा-ध्वजा फहराने लगी। वस्यारीको हाथमें कठिनाई क्या हो सकती थी? फिर वूढ़ीगंडक पार हो गोरखाके पूर्वमें अवस्थित खरी[1]को भी घले लोगोंसे छीन लिया गया। यहाँसे राम सेनाने दक्षिणमें मैघी (घले)को जीत गोरखासे नुवाकोटके रास्तेमें (घले)को फिर जा दवाया। फिर वूढ़ीगंडक और त्रिशूलीके बीच निवा पर अधिकार कर बीचके इलाकोंको जीतती वह धादिङ् पहुँची। राजा दास मारा गया और धादिङ्पर गोरखोंका अधिकार हुआ। कुछ ही बाद उन्होंने फिरकेप भी ले लिया। रामशाहको आखिरी लड़ाई तनहूंके लिए लड़नी पड़ी। गोरखा-शहरके पश्चिम मर्स्याङ् नदीके पार तनहूं

---

[1] वर्तमान १ नम्बर जिला धादिङ् तहसील नुवाकोटमें।

[2] वही जिला सल्यान तहसील नुवाकोटमें।

और शहर है, जहाँ सेन-ठकुरी राजा तुलासेनका शासन था। राजा हारकर रीसिङ् भाग गया।

रामशाहने २८ वर्ष राज्य कर १६३३ ई०में शरीर छोड़ा। मृत्युके समय उसका राज्य उत्तरमें चेपे और दक्षिणमें मर्स्याङ् नदी तक, गोरखासे पूर्वमें आदिङ् तक और उत्तरमें भोटके रसुवा-स्थान तक था।

पर्वत, पालपा, जुमला तथा नेपालके नेवार-राजाओंसे रामशाहका मैत्री- र्ण संबंध था। जुमला सीआपति, पर्वत (राजमल्ल) और पालपा (मुकुन्दसेन) राजा रामशाहके यहाँ भी आये थे। यह भी कहा जाता है, कि सप्तगंडकीसे श्चिममें जुमलाके राजा सीआपतिकी प्रधानता थी। जुमला काली गंडकी और रनालीके बीचमें था। इसके उत्तरमें हिमालश्रेणी तथा तिब्बत और दक्षिणमें लू-दैलखका राज्य था। बाईसे-चौबीसे राजा उसकी अधीनता स्वीकार करते थे, र भोटके भीतर भी दूर तक उसका राज्य था। धवलागिरि (एवरेस्टके बाद सरा सर्वोच्च तथा नन्दादेवीसे भी ऊँचा शिखर)से दक्षिण, कालीगंडकीसे श्चिम मेयाङ्दीसे पूर्व और गलकोटसे उत्तरवाले भूभागमें उस समय पर्वत- ज्य था, जिसकी राजधानी घोरल मलेबम(बेनी शहर) मेयाङ्दी और काली- डकीके संगमपर बसा था। उस समय पर्वतका राजा राजमल्ल था।

रामशाहके उत्तराधिकारियों——डंबरशाह (१६३३-४२), कृष्ण (१६४२-) और रुद्रशाह (१६५८-६९)के शासनके समय कोई विशेष बात नहीं हुयी, र रुद्रशाहके पुत्र पृथिवीपतिशाह राजा हुए।

(२) **पृथिवीपतिशाह (१६६९–१७१६)**——पिछले तीन शासकोंकी निब- सि लाभ उठाकर गोरखाके पुराने शत्रु लमजुङ्वाले गोरखाको दबाते हुए दीके किनारे तक पहुँच गये। पृथिवीपतिने छलसे काम लिया। उसने अपने लड़के रणदुल्लशाह, एवं गौरेश्वर उपाध्याय और बलि उपाध्याय कडरिया- निकाल दिया। लामजुङ्ने उनपर विश्वास कर गोरखासे जीते प्रदेशपर दुल्लशाहको नियुक्त कर दिया, जिसने उसे अपने बापको दे दिया। उसके भाई तथा उत्तराधिकारीका उसकी नियतपर संदेह हुआ, और रणदुल्लशाहने महत्या कर ली। उत्तराधिकारी वीरभद्र भी पहिले मर गया, और कुछ य बाद पृथिवीपति भी (१७१६) मर गया। उत्तराधिकारके लिए कुछ ड़ा हुआ, किन्तु अन्तमें वीरभद्रके पुत्र नरभूपालको सिंहासनपर बैठा दिया ।

(३) **नरभूपालशाह (१७१६–४२)**——नरभूपालसे भी काम नहीं

संभला। द्रव्यशाहके समयसे मगर लोगोंको दरबारमें जो सम्मान और दा पूर्ण पद मिलते आ रहे थे, नुवाकोटके अभियानमें असफलतासे चिढ़कर सेनाप पद जयन्त राना (मगर)को च्युत कर पंतको दिया गया। यही बात एक मगर क-जी (अमात्य)के साथ हुयी। मतवाली और तागाधारीका झगड़ा उठ खड़ा हुआ। जयन्त रानाने विजेता काठमांडवके राजा जयप्रकाशम शरण ली। दरबारमें लोग पागलसे हो गये। नरभूपालको हटानेकी सोच थे, इसी समय ज्येष्ठा रानी चन्द्रप्रभावतीने नरभूपालको नजरबंद करके काज संभाल लिया।

नरभूपालने १७३७में नुवाकोटपर आक्रमण किया था, जिसमें पा विष्णुमल्लकी सहायता मिल जानेसे काठमांडवके राजा जयप्रकाश गोरखा-सेनाको करारी हार दी। नेपालके तीसरे राजा भादगाँवके रणजित पारस्परिक शत्रुता तथा गोरखोंसे मैत्री होनेके कारण युद्धमें तटस्थता र पाँच वर्ष बाद नरभूपाल मर गया, और बीस वर्षके पृथिवी नारायणको गोर सिंहासन मिला।

३. विजययात्रा

(१) पृथिवीनारायणशाह (१७४२-७४)—रामशाहके मरनेके बाद गोरखाका भाग्य चमका। १७४२में गोरखा-राज्यकी सीमा थी—उत्तरमें दक्षिणमें सेती नदी, पूर्वमें त्रिशूल-गंडकी और पश्चिममें डांडेमें चेपे और मरस्याङ् नदी।

(क) नेपाल-उपत्यका—नेपाल-उपत्यका सदियों तक एक राज इकाई रही। अन्तिम मल्ल-वंशके शासनमें भी १४५७ ई० तक सारे ने एक राजा यक्षमल्ल था। उसने बेवकूफीसे नेपालको अपने तीन लड़कों दिया। (१) जेठे रायमल्लको भादगाँव (भातगाँव) मिला, मझले रण बनेपा तथा सातगाँव और छोटे रत्नमल्लको काठमांडव। पाटन काठ राजाके अधीन था, किन्तु राजा शिवसिंहमल्लके समय (१५८५-१६१४) पुत्र हरिहरसिंहने जाकर वहाँ अपना स्वतंत्र राज्य कायम कर लिया। चलकर बनेपाको भादगाँवने ले लिया और उपत्यकामें भादगाँव, पाट काठमांडवके तीन राजा रहे। १७२२में काठमांडवका राजा महीन्द्रमल्ल का भी राजा था। पहिले विभाजनमें भादगाँवकी प्रधानता थी और तथा काठमांडवका स्थान गौण रहा; किन्तु आगे चलकर काठमांडवकी

स्थापित हो गई। भादगाँव और काठमांडवकी प्रतिद्वन्द्विता तथा शत्रुता वरावर रहीं। पाटन जव स्वतंत्र होता, तो वह भी काठमांडवका विरोध करता। काठमांडव और पाटन अत्यल्पजला वाग्मतीके आरपार हैं। भला ऐसे दो स्वतंत्र प्रतिद्वन्द्वी राज्य कैसे नेपाल-उपत्यकाकी रक्षा कर पाते? वैसे नेपाल ईसवी सन्‌के आरंभसे हीं सारे हिमाचलमें संस्कृति-कलाकौशलका केन्द्र रहा, तिव्वतके सभ्यतामें पदार्पण करते हीं सातवीं सदीके मध्यसे वह तिव्वतके व्यापारका केन्द्र भी वन गया। इस प्रकार नेपाल-उपत्यका एक वहुत हीं समृद्ध प्रदेश था।

नुवाकोटकी लड़ाईके कारण काठमांडवसे गोरखा राजाकी शत्रुता थीं, किन्तु भादगाँव उसका मित्र था, जिसे और दृढ़ करनेके लिए १७३२में नरभूपालने अपने पुत्र पृथिवीनारायण (जन्म २७ दिसंवर १७२२)को १० वर्षकी उम्रमें वहाँ भेज दिया, और भादगाँवसे तीन वरस वाद वह गोरखा लौटा।

(ख) काशीयात्रा---पिताके हारके दागको धोनेके लिए पृथिवीनारायणने उतावलेपनसे काम लिया, और नुवाकोटकी चढ़ाईमें फिर उसे हारना पड़ा। ृथिवीनारायणको पता लग गया, कि जव तक अच्छे हथियार और सैनिक-शिक्षा-ा प्रवंध नहीं होता, तव तक कुछ नहीं हो सकता। रूसके जार पीतरका ४० ाल पहिले यही अनुभव हुआ था और उसने इसके लिए पश्चिमी युरोपकी यात्रा ी थी। पृथिवीनारायणको युरोपका क्या पता था? अभी पलासीके निर्णायक ुद्धमें भी एक दर्जन वरसकी देर थी, इसलिए अंग्रेजोंका महत्त्व उसे पूरी तरह ालूम नहीं था; किन्तु नेपालके तीन वर्षके वासमें उसने रोमन कैथलिक साधुओंको खा था, उनका गुण तो और भी सुना था; इसलिए हथियारके जोगाड़के लिए थिवीनारायणने काशीयात्राका निश्चय किया। उस समय, जव कि रेल-तार-डाक ादिका कोई प्रवंध नहीं था, एक तरुण पहाड़ी राजाके लिए यह कम साहसकी ात नहीं थी; शायद कुछ ऐसा ही भाव मनमें काम कर रहा था, जव कि थिवीनारायणका व्याह वनारस जिलेके वैस-राजपूत अहिमानसिंहकी लड़कीसे ्या गया था। पीछे पृथिवीके दूसरे भाईवंदोंकी भी शादी इन्हीं अहिमानसिंहके रिवारमें हुई---इन्द्रजीतसिंहकी कन्याका कीर्तिमहोद्दामशाहके साथ, शिवदत्त-हकी कन्याका दलमर्दनशाहके साथ (१७४४में) हुआ।

पृथिवीनारायणने तीर्थ-दान कर वंदूक-वारूद खरीदा तथा हथियार और निक शिक्षाके ज्ञाताओंका प्रवंध कर देशका रास्ता लिया। गोमती पार नवाव आदत अली खाँका राज्य था। पृथिवीनारायण जव गोमती पार होने लगे, कर उगाहनेवालोंने रोका। कहासुनी होनेपर जव शुल्कग्राहियोंने आदमियोंसे

घिरवाया, और पृथिवीनारायणके घोड़ेकी लगाम पकड़ी, तो मामला
ही था । पृथिवीनारायणके आदमियोंने उनपर हाथ छोड़ दिया । अव नवा
सेनाका भय लगा और पृथिवीनारायणने भेस वदल लिया । दूसरे भी
तरह छिप-छिपाकर गोरखपुर पहुँचे ।[1] वहाँसे जव वह वुटवल आया, तो
फिर पाल्पाके राजकुमारोंसे झगड़ा कर बैठा "यौवनके उन्मादमें मनुष्य
वुरेका विचार नहीं करता ।"

अव पृथिवीनारायणको विजयाभियान करना था । उसकी अनुपस्थि
रणरुद्रशाह (सौतेले चचा) और गणेश पांडेकी सन्तान कालू पांडेने
ठीकसे संभाला था । पृथिवीनारायणने कालू पांडेको अपना प्रधान-मंत्री (
वनाया । फिरंगी ढंगके हथियारों और गोलावारूदोंके लिए कई का
खोले, जिनमें नीचेके चतुर कारीगर नियुक्त किये । शेख जवर, मुहम्मद
और भैरवसिंह——जो नीचेसे वुलायें गये थे——गोरखा सैनिकोंको वंदूक चला
विद्या सिखलाने लगे ।

(ग) नेपाल-विजय——भोट और भारतका व्यापार नेपालके रास्ते नेपा
द्वारा होता था, जिससे नेपाल वहुत समृद्ध हो गया था । नेपाली (ने
राजाका टंका (रुपया) भोट (तिव्वत) में चलता था । तिव्वत और तद्द्वारा
सहानुभूति नेपालके साथ थी, इसलिए पृथिवीनारायणको वहुत सोचसम
आगे कदम वढ़ाना था। गोरखा-राज्यके पड़ोसी पाल्पा, तनहूं, लामजुङ, का
राजा भी भोटसे अच्छा संवंध रखते थे; इसलिए नेपालके विरुद्ध वह स
देनेको तैयार नहीं थे । किन्तु, अव नेपाल-उपत्यका कई राज्योंमें वंटी
अकवरके समयमें नेपाल-उपत्यका चार राज्योंमें विभक्त हो गयी थीं, पीछे
गाँवने वनेपाको अपने राज्यमें मिला लिया और इस प्रकार पृथिवीनारा
समय वहाँ तीन राजा थे । १७२२में पाटनका राज्य काठमांडवके राजा म
मल्लके हाथमें आ गया । काठमांडव अव भादगाँवकी भाँति ही शक्तिशाली
दोनों राज्योंमें भारी शत्रुता थी। गोरखोंका झगड़ा काठमांडवसे था, इसलिए
का शत्रु मित्र होता है"के न्यायसे गोरखा-भादगाँवमें वड़ी मैत्री थी, जिस
कारण पृथिवीनारायणको उसके पिताने भादगाँवमें शिक्षा-दीक्षाके लिए भेजा

---

[1] नुवाकोट दरबारके शिलालेखमें है——

शंकरीय-नगरीं प्रति याता, शुल्क-हारिषु विधित्सुरनिष्टम् ।
योऽवधीत् पथि तुरुष्कनरेशान तस्य को न कथयेत् गुणचर्चाम् ॥

नुवाकोट काठमांडवसे ९ कोस उत्तर एक छोटी (२॥×१ कोस) उपत्यका है, किन्तु अपनी उर्वरता तथा भोट-व्यापार-मार्गपर होनेके कारण वह बड़ा महत्व रखती थी। १७३७में पृथिवीनारायणका वाप नरभूपाल नुवाकोट जीतनेमें असफल रहा और उसे जगज्जयमल्ल (मृत्यु १७३५)के उत्तराधिकारी जयप्रकाशमल्ल (काठमांडव)से करारी हार खानी पड़ी, जिसके लिए गोरखा-स्वामी द्वारा अपमानित होनेपर मगर-सेनापति कजी जयन्त राना जयप्रकाशके पास चला गया। अरु(पहाड़ी) और मगर योद्धा जयप्रकाशमल्लके पास भी थे, किन्तु नेवार राजाओंकी सबसे भारी निर्वलता थी, आपसी फूट। गद्दीपर वैठते ही जयप्रकाशने अपने भाई राज्यप्रकाशको राज्यसे निकाल दिया। राज्यप्रकाशने जाके पाटनके राजा विष्णुमल्लकी शरण ली और उसके मरनेपर वह कुछ समय पाटनका राजा भी हुआ। जयप्रकाशकी उद्दंडतासे तंग आकर दर्वारियोंने उसे हटाकर उसके छोटे भाई नरेन्द्रप्रकाशको राजा वनाना चाहा, जिसने राज्यके कुछ भागपर चार महीना राज्य भी किया। इस प्रकार जयप्रकाशके शासनमें काठमांडव भीतरी कलहसे और जर्जर हो गया था। ऐसे समय १७४४ ई०में पृथिवीनारायणने अपने नवशिक्षित सैनिकों तथा नये हथियारोंके साथ नुवाकोटपर आक्रमण कर दिया। नुवाकोट-विजयमें वहुत कठिनाईका सामना नहीं करना पड़ा। नेपाल-तिब्वतके व्यापारका ऐसा महत्वपूर्ण स्थानका गोरखोंके हाथमें चला जाना नेपालके लिए भारी क्षति थी। हारके वाद जयप्रकाशमल्लने और भी पागलपन दिखलाना शुरू किया। दरवारियोंने १७६६के आश्विन महीनेमें उसके वालक राजकुमार ज्योतिप्रकाशको राजा घोषित किया। चार वरस तक जयप्रकाश ाण वचाता भादगाँव और पाटनमें छिपता फिरा। १७५०में देवपाटनमें गुह्ये- वरी मंदिरमें जव वह साधुके वेषमें रहता था, इसी समय काठमांडवकी सेनाने से घेर लिया, किन्तु जव सेनाने अपने राजाको उस अवस्थामें देखा, तो उसने क्षमें होकर जयप्रकाशको राजा वनाया।

पृथिवीनारायण काठमांडवके राज्यके इलाकोंको धीरे-धीरे दखल करता जा हा था। आगे वढते वढते उसने देवरालीको ले अेनम् (कुत्ती) होकर तिब्वत जानेवाले मार्गको काट दिया। नेपाल अव भोटके व्यापारसे वंचित गया। अव भादगाँवको भी गोरखा-मैत्री मँहगी मालूम होने लगी। सीधे ाक्रमणका अवसर न पा पृथिवीनारायणने कुटिल नीतिका सहारा लिया। धिके लिए आया प्रतिनिधि-मंडल जव षड्यन्त्र करने लगा, तो जयप्रकाशने भी स प्रतिनिधि-मंडलको सीधे प्राणदंडका हुकम दिया। पृथिवीनारायणके दूतोंने

झूठे पत्र लिखकर कितने ही दरबारियोंको जयप्रकाशकी क्रोधाग्निमें जल सफलता पाई। जयप्रकाशने भी "शठे शाठ्यं" किया और पृथिवीनाराय पुत्र सिंहप्रतापको ब्राह्मणोंकी मददसे पकड़ना चाहा, किन्तु षड्यन्त्रका पता गया जिसपर सात जैसी-प्रमुखोंने प्राणसे हाथ धोया। तबसे जैसियोंको ब्राह्म अधिकारसे वंचित कर दिया गया—उनकी पावलगी नहीं होती, उन्हें रा सलाम करना पड़ता है, वह पुरोहिताई नहीं कर सकते।

१७५५में पृथिवीनारायणने काठमांडवकी ओर हाथ बढ़ाते हुए काठमां २ कोस दक्षिण पहाड़पर बसे कीर्तिपुर पर आक्रमण किया। सेनाका नेतृत्व प्रधान-मन्त्री कालू पांडेने किया, यद्यपि पहिले उसने उसे अच्छा नहीं समझा घामासान युद्ध हुआ। ४०० गोरखोंके साथ कालूपांडे मारा गया। प इस समय काठमांडवसे अलग था। जयप्रकाशके अत्याचारोंसे आतंकित दरबारियोंने पाटनको पृथिवीनारायणको देना चाहा। उसने अपने भाई दल शाहको भेज दिया। पृथिवीनारायणके घेरेसे तबाह नेवार लोग कैसे दलम शासनको बर्दाश्त करते? १७६५ ई०में उसे हटाकर दरबारियोंने तेजनर गद्दीपर बैठाया।

कीर्तिपुरकी हारके बाद पृथिवीनारायण चुप नहीं बैठा। १ शिवपुरी पृथिवीनारायणके हाथमें आई और १७६१में कविलासपुर। साल उसने मकवानपुरके पुराने राज्यको अपने हाथमें किया—मकवा काठमांडवसे दक्षिण-पश्चिम तथा हटौड़ासे ४ कोस पूर्वमें है। मकवान राजा दिग्बंधनसेन पृथिवीनारायणका साला था, किन्तु उससे क्या? प विजयके बाद अंग्रेज अब तराईमें पहुँच गये थे। उनकी सहानुभूति नेवार-रा की ओर थी। मकवानपुर ले लेनेपर उनकी सहायता नेपालको नहीं मिल थी, यही कारण था मकवानपुरपर हाथ साफ करनेका। भादों (१७६२ ई०) लड़ाई हुयी। गोरखा-सेनाके ५०-६० आदमी मारे गये और मकवानी सौं। पलासीके युद्धमें अंग्रेज विजयी हुए थे, तो भी मुर्शिदाबादके नवा कासिमने ऐंठ नहीं छोड़ी थी। मकवानपुरपर गोरखोंका अधिकार उसे नहीं आया और वह सेना ले बेतिया पहुँचा; जहाँसे उसने अपने सेनापति खाँके नेतृत्वमें एक सेना १७६३के आरंभमें मकवानपुर भेजी। पृथिवीना भी खबर पा सहायक-सेना भेजी, जिसके सेनापतियोंमें एक रामकृष्ण कुं था, जिसके वंशमें आगे जंगबहादुर और पीछेके राणा हैं। नवाबकी हार हुयी और पृथिवीनारायणको बहुतसे नये किस्मके हथियार हाथ ल

पृथिवीनारायणकी सफलताओं विशेषकर मकवानपुर-विजयसे उसके पासके पड़ोसी चौबीसी राजा चिन्तित हो उठे, जिनमें गोरखा-वंशका सगोत्रिय लमजुङ्-राजा प्रधान था। पृथिवीनारायणको पहिले इनसे भुगतना आवश्यक जान पड़ा। १७६३में कई युद्धोंमें पृथिवीनारायणने उन्हें परास्त किया। अव फिर पृथिवीनारायणने पूर्वकी ओर मुँह फेरा। इसी साल फरपिंग (कीर्तिपुरसे एक कोस दक्षिणपूर्व)पर भी गोरखोंका अधिकार था। अव पृथिवीनारायण कीर्तिपुरपर प्रहार करनेके लिए तैयार था, किंतु इसी समय फिर चौबीसी युद्धके लिए लौटना पड़ा। कीर्तिपुरपर दुवारा आक्रमण करके भी पृथिवीनारायणको हार खानी पड़ी, किन्तु गोरखोंने अव उसकी घेरावन्दी कर ली थी—उसका वाहरी दुनियासे कोई संबंध नहीं रहने दिया था। अंतमें १७६५के चैत्रमें कीर्तिपुरके लोगोंने पृथिवीनारायणके हाथमें आत्मसमर्पण कर दिया। वीर-शत्रुओंके साथ पृथिवीनारायणने उनकी नाक-कान काटकर वदला लिया—जिसका वजन १७ धरनी था।[१] कपूचिन् साधु जेसपके अनुसार कीर्तिपुरपर अधिकार करनेके दो दिन वाद नुवाकोटसे पृथिवीनारायणकी आज्ञा पाकर सूरप्रतापशाहने वहाँके निवासियोंकी नाक-कान कटवाई।

मकवानपुरपर भी अधिकार हो जानेपर नेपालका व्यापार भारतसे रुक गया। अंग्रेज कम्पनीको यह वर्दाश्त नहीं हुआ। १७६७में जयप्रकाशमल्लने वेतियाके अंग्रेज अफसर गोल्डिंगसे सहायता माँगी। वहाँसे पटना होते वह सूचना गवर्नरके पास पहुँची। गवर्नरने धमकीसे काम न होते देख २१ जुलाई १७६७को अन्तिमेत्थं भेजा और अक्तूवर १७६७में कप्तान किनलक सेना लिये चल भी पड़ा। नेपालमें ईसाई धर्मके प्रचार करनेवाले कपूचिन साधु तथा नेपाल-भारत-भोटके वड़े व्यापारी दसनामी नागा गोसाईं भी आग भड़कानेमें हाथ वँटा रहे थे। किनलक जनकपुर होते पहाड़में सिंधुली गढ़ी पहुँचा। लड़ाईमें अंग्रेजोंकी हार हुई। किनलक किसी तरह जान वचाकर भागनेमें सफल हुआ। फिर भी दो वर्ष तक मकवानपुरकी तराईको अंग्रेजोंने अपने हाथमें रखा,

---

[१] "पृथिवीन्द्रवर्णनोदय" काव्यमें लिखा है—

सर्वान् दुर्गवरान् स भूपतिवरो भित्वा चतुर्दिक्-स्थितान्,
रम्यं कीर्तिपुरेति विश्रुतपुरं जग्राह भूरिश्रवाः।
हत्वा शत्रुमनस्विनः कति पुनः प्रच्छिद्य नासादिकं,
कृत्वा कांश्च विरूपिणः कुरुषान् कीर्तिस्वरूपं द्विषः॥"

पीछे पृथिवी-नारायणके साथ झगड़ा न मोल लेनेमें ही खैरियत लौटा दिया।

१७६८के भादोंकी अनन्त चतुर्दशी नेवार(नेपाल-उपत्यकावासी) कालरात्रि है। इस दिन उनकी इन्द्रयात्राका त्यौहार था। आठ दिन तक प्रजा नाच-शराबमें ही विताते थे। १५ सितंबर (अनन्तचतुर्दशी) आधी रात तक सारा काठमांडव राजासे रंक तक शरावमें वेसुध नाचगान रहा था। इसी समय गोरखाली सेनाने तीन तरफसे हमला कर दिया। नारायण स्वयं एक टुकड़ीके साथ हनुमान-ढोका पहुँचा। लोगोंमें भगदड़ गई। जयप्रकाशने भागकर पाटनमें शरण ली। हनुमान-ढोकामें वैठनेका सिंहासन सजाया हुआ था और पृथिवीनारायण जाकर सिंहासन गया। १७६८के पौषमें पृथिवीनारायणने पाटनमें भी सदलवल प्रवेशकर यात्रा (उत्सव) कराई। पाटनपर अधिकार कर पृथिवीनारायणने मंदिरके पास वसे कपूचिन साधुओंको उनके नेवार-अनुयायियोंके साथ निकल जानेकी आज्ञा दी। वह आकर वेतियामें वस गये, जहाँ अब भी संतानें रहती हैं।[1]

अव जयप्रकाशमल्ल और तेजनरसिंह (पाटन) भागकर भादगाँवमें थे। १७७१के कार्तिक महीनेमें पृथिवीनारायणने भादगाँवपर आक्रमण कर मामूली प्रतिरोधके वाद गोरखा-सेना नगरमें घुस गई। तीनों राजा वंदी कुछ दिनों वाद आहत जयप्रकाशमल्ल मर गया, तेजनरसिंह कैदमें रहा,

---

[1] १६५८ में साधु गब्रीलने धर्मप्रचारार्थ सवसे पहिले नेपालमें प्रवेश १६६१से ईसाई धर्मका प्रचार होने लगा, जब कि चीनसे ल्हासा होकर और दोरविल दो ईसाई साधु ग्रेनम् (कुत्ती) से होते नेपाल पहुँचे, किन्तु मिशनकी स्थापना अठारहवीं सदीके आरंभसे हुई। उस समय कपूचिन लिक) साधुओंका अड्डा पटनामें था। यहींसे दिसम्बर १७१४ में जाते साधु होरस अपने दो साथियोंके साथ नेपालमें अगस्त १७३२ तक नेवार-राजाओंकी पादरियोंकी ओर सहानुभूतिका कारण योरपके श्रेष्ठता थी। १८ नवंबर १७६७ तक ५९ नेपाली ईसाई हुए थे, कृस्तान माता-पिताकी सन्तान थे। १० फर्वरी १७६९ को ईसाई अपने अनुयायियोंके साथ नेपाल छोड़ा। इससे पहिले १७४५ साधुओंको राजाज्ञासे मजवूर होकर ल्हासा छोड़ना पड़ा था।

जा रणजितमल्लके अपने पुराने संबंधको स्मरणकर पृथिवीनारायणने उसे र्थवास करनेकी अनुमति दे दी, जहाँ ही उसकी मृत्यु हुई ।

अब समृद्ध, संस्कृत, सम्पन्न प्राचीन नेपाल-उपत्यका पृथिवीनारायणके मोंमें थी । हनूमान-ढोकाके हातेमें पृथिवीनारायणने वसन्तपुर-दरवार नामक तलेका महल वनवाया ।

(घ) सप्तगंडकी विजय—

सप्तगंडकी प्रदेशके लमजुङ्, पर्वत आदि चौबीसी राज्योंके साथ अभी र्ष हो रहा था । नेपाल-विजयके वाद १७७०में पृथिवीनारायणने गोरखासे चमके इस भूभागकी ओर अपने राज्यका विस्तार करना चाहा । एकके वाद रीसिङ्, धीरिङ्, भीरकोटको जीतकर उसने गृहकोटमें तनहूंके राजाको या । फिर गरहूं, पैयूं, धुवाँकोटको जीतनेके वाद उसे अपने चिरशत्रु लमजुङ्से टना पड़ा और उसे हरा वहाँके राजकुमारको पकड़कर नेपाल भेजा——काठ-ड्व (नेपाल) अब गोरखा-राजधानी वन चुका था । चौबीसी राजाओंको अब ल आई और उन्होंने मिलकर गोरखोंसे लोहा लिया । गोरखा-जेनरल ार कहर्सिह वस्नेत खेत आया, और काजी वंशराज पांडे घायल होकर वना । पृथिवीनारायण सप्तगंडकी जीतनेमें असफल रहा ।

पश्चिममें हार खाकर पृथिवीनारायणने पूर्वमें सप्तकौशिकी या किरात-की ओर १७७०में सेना भेजी । किरातोंके साथ अंतिम लड़ाई अरुण नदीके ारे हुयी, जिसकी सफलताके वाद १७७३में अरुण नदी तक गोरखा-राज्यकी ा वढ गई । अब लगते हाथों उदयपुरगढ़ीके चौदंडी राजा कर्णसेनको हराकर मोरंग भागनेके लिए मजबूर किया । आगे अरुण और तमोर नदियोंके बीच किरातदेशसे उत्तर लिवुआन (लिंबू लोगोंका देश) गोरखा सेनाका लक्ष्य । यह छोटासा प्रदेश दस सरदारियोंमें बँटा था, जिसके कारण इसका नाम लिवू भी था । यहाँके शासकोंने अधीनता स्वीकार की, जिसका एक कारण सिकिम-राजाका उनपर होता रहता प्रहार भी था । अब गोरखा-राज्य तमोर नदीके दाहिने तटपर पहुँचकर सिक्किमकी सीमासे मिल गया ।

सेनोंका राज्य मकवानपुरसे तिस्ता तक था । शुभसेनकी मृत्युके वाद उसका दो पुत्रों मानिकसेन और महीपतिसेनमें बँट गया, जिसमें कमला नदीसे मका भाग मानिकसेनको मिला था, और उसे पृथिवीनारायण जीत चुका चौदंडी राजा कर्णसेन भागकर महीपतिसेनके राज्य (मोरंग)में शरणागत जहाँ उसने राजाको मरवाकर गद्दी सँभाल ली । मोरंगकी अपने उत्तरी

पड़ोसी सिक्किमसे भी अनबन थी। उधर महीपतिसेनके मारे जानेपर नारायणने २७ मई १७७३के अपने पत्रमें वारन हेस्टिंगजको लिखा मोरंगका राजा हमारा संवंधी था, जिसके राज्यको हड़पनेवाले कर्ण देनेके लिए हम मजबूर हैं। मोरंग-विजय करनेके वाद अभिमानसिंह वहाँका शासक वनाया गया। मोरंगकी आपसी फूटसे लाभ उठाकर सिक्किमने कनकाई और तिस्ताके वीचका भाग हाथमें करके तराई त सीमा वढ़ा ली। सिक्किम भी अव पृथिवीरानायणकी आँखोंमें काँटासा था। युद्धकी तैयारी भी हो गई थी, किन्तु १७७४के आरंभमें पृथिवीन मृत्युके कारण वह नहीं हो सका। सिक्किमकी पीठपर तिव्वत भी था पृथिवीनारायण जल्दी युद्धारंभ करनेका साहस नहीं कर सकता था।

पृथिवीनारायण एक दूरदर्शी योद्धा था, यद्यपि वह अवश्यकता क्रूर तथा कलछलमें वहुत नीचे तक उतरनेको तैयार रहता था। चौवीसी और पूर्वमें सिक्किमको जीतनेका उसका संकल्प पूरा नहीं हु उसने अपने पैतृक राज्यको पश्चिममें मरस्याङ् नदीसे पूर्वमें कनका तट तक, एवं उत्तरमें हिमालसे दक्षिणमें तराई तक फैला दिया। वंधनोंकी परवाह नहीं करता था। कपूचिन साधुओंको नेपालसे निकाल धार्मिक असहिष्णुताके कारण नहीं हुआ, वल्कि युरोपीय साधुओंके दखल देनेके कारण। उस समय संन्यासी अखाड़ेके गोसाईं सारे हिमालके पार तकके सफल व्यापारी थे। ल्हासामें उनका वहुत मान था भी उनका घनिष्ट संवंध था। इसके कारण वह भी पृथिवीनाराय भाजन हुए थे। इतने युद्धोंको चौके-चूल्हेकी पावंदीके साथ जीता नहीं था, इसलिए पृथिवीनारायणने व्यवस्था दी, कि कपड़ा पहिने भात प जा सकता है।

(२) रणबहादुर शाह (१७७७-१७९९ ई०) -

(क) पश्चिमकी विजय-यात्रा—पृथिवीनारायणकी मृत्युके जनवरी १७७५ को उसका ज्येष्ठ पुत्र सिंहप्रताप गद्दीपर बैठ वर्ष दस महीना राज्य करके मर गया। इसके शासनमें दक्षिणका भूभाग —कविलास—गोरखा-राज्यमें मिलाया गया मरनेके बाद उसका ढाई वर्षका पुत्र रणवहादुर शाह गद्दी पर बैठ सिंहप्रतापको हटाकर स्वयं गद्दी संभालनेका षडयन्त्र करने

ई वहादुर शाह देशसे निर्वासित हो वेतियामें रहता था। वह तुरंत नेपाल ा, और अभिभावकताके लिये उससे और सिंहप्रतापकी रानी राजेंद्र लक्ष्मीसे ड़ा हुआ, जिसमें दरवारियोंकी सहायतासे राजेन्द्रलक्ष्मीका पल्ला भारी । इस घरू झगड़ेसे फायदा उठानेके लिए १७७९ में चौवीसी राजाओंने क्रमण कर दिया, लेकिन गोरखा-शासक सजग थे। शत्रुओंसे मुकाविला नेके लिए ३१ वर्षके तरुण अमरसिंह थापाके नेतृत्वमें सेना भेजी गयी। उस य किसे मालूम था, कि यह रक्षात्मक सैनिक यात्रा गोरखा-राज्यको कांगड़ा पहुँचानेका महाभियान सिद्ध होगी, और अमरसिंह[1] गोरखोंका सवसे बड़ा रल। चौवीसी राजाओंके सरगना लमजुङ्, पर्वत और तनहूं थे। तार्कूघाटमें त और लमजुङ्की सम्मिलित सेनाकी हार हुयी, जिसमें लमजुङ्के सेनापति भंजन और भक्ति थापा वन्दी हुए। वलिभंजन कैदमें मर गया, किन्तु भक्ति ा पश्चिमके दिग्‌विजयमें अमरसिंहका दाहिना हाथ वना। १७८२ में लमजुङ्, खा-राज्यमें मिला लिया गया। १७८५ में पश्चिमी नुवाकोट हाथमें कर कोटके युद्धमें हराकर पैयूंको भी ले लिया। पाल्पासे लड़ाई करते नेपाल ने सतहूं, भीरकोट और रीसिङ्को जीत लिया। इसी समय (१७८५ या ८६) में रानी राजेन्द्रलक्ष्मीकी मृत्यु हो गयी। मैदान साफ देख वेतियासे कर वहादुरशाह ने वालक रणवहादुरकी अभिभावकता संभाली। राजेन्द्र मी द्वारा आरब्ध अभियानको वहादुरशाहने आगे वढ़ाया। इस्मा, वाङ्लुङ्, त, प्युठान सर करनेके वाद अमरसिंहके नेतृत्वमें नेपाली सेनाने दैलख (दुलू) आक्रमण किया, और सुरखेतकी विजय द्वारा गोरखा-सेना करनालीके किनारे पहुंच गई। वहाँसे दक्षिण-पश्चिममें वढ़ते उसने डुमराकोट और तारिमघाटकी ाईमें हराकर आछाम और डोटी ले लिए। इस प्रकार १७८९ या १७९० में खा-सीमा आजकी भाँति काली नदी तक पहुँच गई।

काली पार कुमाऊँमें "घरका भेदिया" हर्षदेव गोरखोंको वुलानेके लिए ार था। १७९० में गोरखोंने अलमोड़ापर अधिकार किया, और आगे गढ़-ल पर हाथ साफ करना रह गया।

. रणवहादुरशाहको वहादुरशाहकी अभिभावकता अव पसंद नहीं थी। उससे

---

[1] पृथिवीनारायणके सेनापतियोंमें सिह्लानचौकके एक किसान रंजेका पुत्र मसेन थापा भी था, जो पीछे सिह्लान चौकका शासक बनाया गया। इसीका अमरसिंह था, जिसका जन्म १७९४ ई० में० और मृत्यु १८१६ ई० में हुई।

छुटकारा पानेके लिये उसने एक दिन चचाको पकड़कर जेलमें डाल दि वह १७९५ में मर गया। इसी साल एक मैथिल ब्राह्मणी कान्तवतीसे[1] रण एक पुत्र हुआ, जिसका नाम गीर्वाण युद्ध विक्रम शाह पड़ा। रणव इस ब्राह्मणीपुत्रको गद्दी पर बैठानेके लिए उतावला था, क्योंकि वह सम कि पीछे लोग इसमें बाधक होंगे। १७९९ में रणवहादुरने गद्दी त्याग पर गीर्वाण (१७९९-१८१६) को बिठाया और वह स्वयं स्वामी निर्गु संन्यास धारण कर पाटनमें रहने लगा। ब्राह्मणी रानी थोड़े समय बाद जिससे निर्गुणानन्द विक्षिप्त सा हो गया, और जिन देवी-देवताओंने स वंचानेमें सहायता नहीं की, उनके मंदिरोंको नष्ट-भ्रष्ट करने लगा। आगे उसने राज्यको फिर लौटा पानेका प्रयत्न किया, जिसपर अधिका पकड़कर वन्द करना चाहा। रणबहादुर नेपालसे भागकर १८ अप्रेल वनारस पहुंचा। गीर्वाणयुद्धकी अभिभाविका रानी सुवर्णप्रभा हुई। दामोदर पांडेकी नई सरकारने कंपनीकी सहायतासे रणवहादुरको वना रखनेके लिए अक्तूबर १८०१ में अंग्रेजोंसे मित्रता और व्यापारकी सं अप्रेल १८०२ में कप्तान् नाक्स अंग्रेजी दूत बनकर नेपाल पहुंचा, किन् संधिका विरोध कर रहे थे, जिसके कारण नाक्सको मार्च १८०३ में नेपाल चला जाना पड़ा। साल भर बाद जनवरी १८०४ में लार्ड वेलेस्लीने नामंजूर कर दिया। अब रणवहादुरका रास्ता खुल गया। रणवहादुरसे करनेके लिए दामोदर पांडे थानकोटमें सेना लेकर वैठा था, किन्तु पृथिवी पौत्र अपने राजाको सामने देखकर सेना उसीकी तरफ हो गयी। दाम और उसके वड़े लड़केने कैद होकर प्राण गँवाये। प्रधान-मंत्रीका पद थापाको मिला। चौतरिया (राजवंशीय) दल च्युत हुआ और शक्ति हाथमें चली गई। अमरसिंह थापाका ज्येष्ठपुत्र रणध्वज भी भीमसेनका वना। पगला रणवहादुर और भी क्या क्या करता, किन्तु १८०५ में दरवारमें ही रणवहादुरको उसके सौतेले भाई शेरवहादुरने मार डा वहादुर भी वहीं मार डाला गया। ऐसा अच्छा अवसर हाथसे न जाने

---

[1] सन् १७९७ ई० (शाके १७१९) विभवनाम संवत्सर माघ कृष्ण १४ में लिखित ताम्रपत्र द्वारा "रणवहादुरशाह . . कनिष्ठपत्न्या श्री कान्तव निज भर्तृ विक्रमार्जित कूर्माचल शतौली" में केदारनाथको भूमिदान लि ताम्रपत्र ऊखीमठमें अब भी मौजूद है।

थापाने अपने प्रतिद्वन्द्वी चौतरिया दलवाले विदुर शाही, नरसिंह काजी, वन काजी आदि को मार डाला। रणवहादुरकी छोटी रानी ललित त्रिपुर-री अव वालक राजा (गीर्वाण युद्ध) की अभिभाविका वनी।

(ख) कांगड़ा तक—

थापादलने स्थगित विजययात्राको फिरसे आरंभ किया। गढ़वाल-विजयके १८०४ में देहरादूनतक नेपालका शासन स्थापित हो चुका था। नेपाल-की सीमा वहां यमुना और टौंस थीं। साल भरके भीतर नेपाली-सीमा में सतलजके किनारे पहुंच गई। सतलज पार कांगड़ाका राज्य था। उसका संसारचंद रणकुशल और चतुर राजनीतिज्ञ था। इसी समय पंजावमें ीतसिंह कदम जमा रहा था, किन्तु १८०४ ई० में अभी वह मैदानी प्रदेश ही प्रभुत्व रखता था।

गढ़वालके पड़ोसी राज्य सिरमौर (नाहन) का राजा कर्मप्रकाश नेपालका था, इसलिए सतलजकी ओर वढ़नेमें उसकी ओरसे रुकावट नहीं हुई। ौरसे उत्तर जुव्वल भी उसके अधीन था, इसलिए वहां भी स्वागत ही त था। क्यूंठल, वघाट, कूथर, कनियां, भज्जी, धामी, वघाट, महलोग, , कियारी, कोटीगुरु और ठियोक छोटी छोटी ठकुराइयाँ थीं, जिनको हस्तगत में गोरखोंको कठिनाई नहीं पड़ी। विशेर (रामपुर) के राजाने कुछ विरोध , किन्तु अन्तमें उसे भाग कर कनौरमें शरण लेनी पड़ी। संसारचंद भी विस्तारका कम मंसूवा नहीं रखता था। १८०३ में उसने जलंधर द्वाव आक्रमण किया, किंतु उसे सिक्खोंसे हारकर भागना पड़ा। फिर उसने सत- के दाहिने तटपर अवस्थित सुकेत, मंडी, चंवा, आदि पर हाथ साफ किया। पर वहांके वहुतसे राजाओंने विलासपुर (कहलूर) के राजा महाँचंदको सिंह थापाके पास सहायता मांगनेके लिये भेजा। ये राजा थे—

१. राजा भूपसिंह (गुलेर)
२. राजा उम्मेदसिंह (जसवन)
३. राजा गोविन्दचन्द (दातारपुर)
४. राजा गोविन्दसिंह (सीबा)
५. राजा जीतसिंह (चंवा)
६. राजा विक्रमसिंह (सुकेत)
७. राजाविक्रमसिंह (कुल्लू)
८. राजा वीरसिंह (नूरपुर)
९. राजा महेन्द्रसिंह (विसौली)
१०. राजा . . (कटलेहर)
११. राजा महाँचंद (कहलूर)

कालीके पश्चिम अमरसिंह थापाका शासन था। कांगड़ाकी ओर वढ़ते कुमाऊँको अमरसिंहने अपने पुत्र रणजोरसिंह और वीरभद्र कुँवरके हाथमें

छोड़ा। गढ़वालके हर्ताकर्ता वीरभद्रका पिता चंद्रवीर कुँवर और सुब्बा खत्री नियुक्त हुए। नेपालसे काजी नयनसिंह थापा सेना लेकर क्यूँठल हिंडूर (नालागढ़) होते विलासपुरमें अमरसिंहसे जा मिला। १८० जाड़ोंमें गोरखावाहिनी जिवरी (सुकेत) और विलासपुर (कहलूर) में पार हुयी, जहां उधरके राजा सदलबल आ मिले। सतलजके किनारे मह पहिली भिड़न्त हुई, जिसमें संसारचंदकी हार हुई। आगे बढ़ती गोरखा नदांवमें १२ वर्षसे संसारचंदके बंदी मंडीके राजा ईश्वरीसेनको मुक्त अपना सहायक बनाया। इसी तरह सतलज पारके राज्य कटलेहरको राजाको देकर अमरसिंहने अपनी ओर किया। संसारचंदने तिरा-सुर्जनपुर विला करना चाहा, किन्तु वहां भी उसे हार खानी पड़ी। फिर उसने अजेय दुर्गका सहारा लिया। सचमुच ही प्रकृति और मानवी हाथोंने इ दुर्जेय बना दिया था। किन्तु, पासकी ज्वालामुखी नगरी (नगर कोट) हाथमें चली गई। यहां आकर इधरके उपरोक्त राजाओंने अमरसिंहके हाजिरी दे नेपालकी अधीनता स्वीकार की। गोरखा-सेनाने कांगड़ा जीतनेका बहुत प्रयत्न किया, किन्तु परिणाम प्रधानमंत्री भीमसेन भतीजे नयनसिंह तथा और सैनिकोंकी बलि चढ़ानेके अतरिक्त कुछ न अब गोरखोंने घेराबंदी करनेका रास्ता लिया। १८०६ में रणजी ज्वालामाईके दर्शन को आया। संसारचंदने पांच लाख रुपया देनेकी बा उसे अपनी ओर करना चाहा; किंतु अमरसिंहने उतना रुपया देकर रणजी उधर जाने नहीं दिया। कांगड़ाका सारा राज्य नेपालियोंके हाथमें काँगड़ा दुर्गमें संसारचंद अब भी आत्मसमर्पण करनेको तैयार नहीं था। नेपाली सेनाकी धाक कम होने लगी, और अधीन राजा सिर उठानेके लि दीखने लगे। सिरमौरके राजाको इसके लिए अपने राज्यसे हाथ धोना

अगले तीन सालोंमें रणजीतसिंहकी शक्ति और बढ़ी। सत लजके किनारे अंग्रेजी सीमाके पास आजानेसे झगड़ेका डर मालूम हु जो अप्रेल १८०९ की अमृतसरकी संधि द्वारा हट गया—दोनोंने सीमा मान लिया। अब रणजीतसिंहको पूर्वकी ओर राज्यविस्तारका रह गया और उसने पहाड़की ओर मुंह किया। संसारचंदने कुछ वाद कांगड़ा-किलाको रणजीतसिंहको देना स्वीकार किया। पश्चिमके राजाओंकी भी आँखें खुलीं और उन्होंने भी रणजीतसिंहकी शरणमें जा समझा। संसारचंद कौशलपूर्वक अब किलेसे वाहर चला गया था

ने कांगड़ामें अवस्थित नेपालियोंपर आक्रमण किया। दोनों ओरसे बहुतसे क हताहत हुए, अन्तमें गोरखोंको २४ अगस्त १८०९ को कांगड़ा छोड़ जाना पड़ा। नेपालके पश्चिमाभिमुख प्रसारका रास्ता रुक गया—रणजीत-पत्थरकी चट्टान बनकर उनके रास्तोंमें खड़ा हो गया। इसके कारण गोरखा का रोब बहुत कम हो गया। अब भी मौकेकी ताकमें अमरसिंह सतलज और के बीच के इलाकोंमें तैयारी कर रहा था। उसने अर्कीमें अपनी छावनी वहाँसे कुमाऊं तक रास्ता तैयार कर जगह-जगह रक्षा-दुर्ग बनवाये। १८११ बदी ३ संवत् १८६८) में अमरसिंको क-ज्ञी (मंत्री) की पदवी मिली।

(ग) कुमाऊँ-गढ़वाल-विजय—

यह कह आये हैं कि १७७७ में पिताके मरनेपर रणबहादुरशाह (१७७७-५) गोरखाली राजा हुआ; किन्तु राजमाता इन्द्रलक्ष्मीने अभिभाविकाके तौर-सनकी बागडोर अपने हाथमें रखी। रणबहादुरके चचा बहादुरशाहने १७७९ में क्ष्मीको मरवाकर स्वयं अभिभावक पदको संभाला था। पृथिवी नारायणका कनिष्ठ पुत्र ठीक अर्थोंमें अपने पिताका उत्तराधिकारी था। उसने पिताके कामको बहुत आगे तक बढ़ाया। थोड़े ही समयमें लमजुङ् और तनहूंको क्रमशः उसने चौबीसी राजाओं (कस्की, पर्वत, रीसिंग, सतहू, इस्मा, ट, दरकोट, उरगा, गुटिमा जुमला, रघान, दरमा-जोहार, प्यूठन, धानी, कोट, चीली, गोलाम, अचाम, धुलेक, दुलू) और डोटीको आत्मसात् कर ममें अपनी सीमा काली और उसकी शाखा तक पहुँचा दिया।

गोरखोंसे कुमाऊँकी कमजोरियाँ छिपी नहीं थीं। उधर हर्षदेव जोशी घरका विभीषण अपनी वैयक्तिक महत्वाकांक्षाकी पूर्तिके लिये गोरखोंको ता देनेके लिए तैयार था। १७९० ई० में गोरखा-सेनाने चौतरिया बहादुर क-जी जगजीत पांडे, अमरसिंह थापा और सूरबीर थापाके अधीन कुमाऊँपर ई कर दी। महेन्द्रचंद और उसके चचा लालसिंह इस टिड्डी दलका मुकाबिला कर सकते थे, और १७९० के आरंभ (चैत) में अलमोड़ा पर गोरखा ध्वजा ने लगी। हर्षदेव अब अलमोड़ामें था।

कुमाऊँको लेकर ही गोरखोंको संतोष नहीं हुआ। अगले साल (१७९१) लपर भी उनका अभियान हुआ, किन्तु गोरखा लंगूरगढ़के आगे नहीं सके। लंगूरगढ़की गढ़वाली सेनाने सालभर तक मुकाबिला किया। आखिरी की तैयारी होने ही लगी थी, कि नेपाल पर चीनी आक्रमणकी खबर आई। १ में चेचकसे पण्छेन् लामाके पेकिंगमें मर जानेपर टशील्हुन्पो विहारमें

आपसी झगड़े शुरू हुए, जिसमें एक पक्षने नेपालको निमंत्रित किया,
१५००० टंका वार्षिक भेंट देनेकी बात करके उन्हें भीतर आनेसे विरत
गया। प्रतिज्ञात रकम जब नहीं आई, तो १७९१ में गोरखा-सेनाने
भीतर घुसकर टशील्हुन्पो तथा दूसरे कितने ही विहारों और नगरों
यह खबर चीन गई। वहांसे एक बड़ी सेना नेपालकी गोशमालीके लि
गई। चीनी सेना दुर्गम पहाड़ों तथा सुदीर्घ मार्गको पार करती काठमां
पहुँच गई। गोरखा सरकारको हर्जाना तथा लूटी चीजोंको लौटाकर सं
पड़ी; जिसके अनुसार तबसे नेपाल बराबर चीनके पास अपना कर भेज
चीनके इसी आक्रमणकी खबर पा कर गोरखा-सेनाने लंगूरगढका घेरा
और अलमोड़ाको भी छोड़ना जरूरी समझा। गोरखोंने हर्षदेवको भी
जाना चाहा, किन्तु हर्षदेव उ.की आंख बंचाकर जोहार पहुंच गया। जो
अपने फरतियाल दलके शत्रुको पकड़कर महेन्द्रसिंह-लालसिंहके हा
चाहा, किन्तु हर्षदेवने पकड़कर ले जानेवाले पदमसिंहको सिंहासन
दिखलाकर श्रीनगर पहुंचनेमें सफलता पाई।

चीनके साथ संधि हो जानेके बाद गोरखा-सेना अलमोड़ा लौट
गढ़वालको भी उनका डर था। हर्षदेव इस समय गढ़वाली राजाका
बना हुआ था। महेन्द्रचंदने दो बार कुमाऊँको लौटानेका प्रयत्न किया
महरा और हर्षदेव उसके विरुद्ध गोरखोंकी सहायता कर रहे थे, फिर स
क्या आशा हो सकती थी?

१७९२ में गोरखा-सेनाने लंगूरगढ़का घेरा उठा लिया था, किन्तु
भी गढ़वालमें लूटपाट से बाज नहीं आती थी। गाँवों और नगरोंके लू
जलानेके साथ साथ वह वहांसे पकड़कर लाये बंदियोंको दास बनाकर
थी। १८०३ में गोरखा सेनाने गढ़वालको पूरीतौरसे अपने हाथमें करने
आक्रमण कर दिया। श्रीनगर भादो अनन्तचतुर्दशी संवत् १८६० (१८
के भूकम्पसे भारी क्षतिग्रस्त हुआ था, इसलिए प्रद्युम्नशाहने उसे छो
हाट (उत्तरकाशी) में मुकाबिला करना चाहा। किन्तु उसे हारकर देह
ओर भागना पड़ा। गोरखोंने पीछा करते अक्तूबर १९०९ में
गुरुद्वारापर अधिकार किया। प्रद्युम्नशाहने लंढौराके गूजर राजा रा
सिंहकी मददसे एक बार फिर गढ़वालको लौटानेका प्रयत्न किया, और
पास खुड़बुड़ामें लड़ते हुए जनवरी १८०४ में प्राण दिया, यह कह आये
प्रकार १८०४ के आरंभमें गढ़वाल गोरखोंका हो गया। मोलारामने लि

(घ) गढ़वालपर आक्रमण—

साठ साल[1] भूकंपहि भयो । सहर वजार महल सव ढयो ॥
भार पाप को पड़्यो महाई । परजा-पीड़न ब्रह्म हत्याई ॥
मरे हजारों गढ़के माहीं । खवर गई काँतिपुर[2] तांई ॥
"साठ साल भूकंप चिताये । इकसठ में अव तुमहूं आये ॥
उपत खपत गढ़की सव येती । तुम पै हमहुं कही यो जेती ॥
सत्त नाथ गढ उतपत कीन्यो । सो तुम आन गोरखा लीन्यो" ॥
इह सुनि भारादार सव, हस्ती दल वल-वीर ।
भये प्रसन्न हमकों कह्यो, "तुम सांचे हो कवीर ॥
कांतीपुर महिं किरत तुहारी । सुनत रहे अव आँख निहारी ॥
चित्र विचित्र तुहारे देखे । आगम निगमहिं कवित परेखे ॥
नाहक दुख तुमहू कौं दीन्यो । सो सव ही इन हूं भर लीन्यो ॥
अव आई गढ़ हमरी वारी । तुम निस दिन हीं करो वहारी ॥
अपने गांउ जगीरें खाओ । रोजीना अपना तुम पाओ ॥
तुम गनिका वह देहु वताई । कुंवर पराक्रम ने जो छिनाई ॥
हमहूं ताको वांधि मंगावें । तुमरे पग महि ताहि गिरावें ॥
लछमी ताको नाम कहत हैं । वह गनिका अव कहां रहत है ॥
सो तुम हमकौं देहु वताई । जहां कुंवर लछमीहि छिपाई" ॥
अमरसिंह काजी कहीं, जव यह हमसों वात ।
दयो प्रतिउत्तर इह तवैं, हमहूं तिनके सात ॥
"कवि लोगन के संग वैर कियो, गनिकानि के संगत नेही भये ॥
अपकीरतसौं जग में न डरे, गुन धर्म सुकर्म कछू न रहे ॥
जगदंव तवै अत कोप भई, गढ़ गोरखिया चढ़ राज लये ॥
लछमी न रहीं पछमी न रहीं, लछमीं पुरुषै प्राकर्म गये ॥
इहै अलछमी हमहि न चहिये । वहै लच्छमी हमैं दिलैये ॥
जांसों सव कुछ कारज होवैं । राजा रंक जाहि कौं जोहैं ॥
इह गनिका धनिका धन खावै । विन धन पल छिन नाहिं रहावै" ॥
इह सुनि भारादार हंसाये । हमरे गांउ सवैहि दिलाये ॥
अमरसिंह काजी भये राजी । इह सुनि हमकौं वकस्यो वाजी ॥

---

[1] १८६० संवत् (१८०३ ई०)

[2] नेपालका नगर

अंदर मंदर बैठे जाई। अपने राज की बात सुनाई।
.........................॥
उपजे तिनके विदुसौं, श्रीरणवादुर शाह।
गिरवाण जुद्ध तिनके भये, विक्रमशा नरनाह॥

४. प्रशासन

(१) **व्यवहार**—नेपाल दरवारमें दो दल राजशक्तिको हाथमें लेनेकी
किया करते थे—(१) चौतारा (चौतरिया) दल जो अपने नामानुसार (
सिंहासन) राजपुत्रों तथा राजसंवंधियोंका दल था, (२) थापा दल अमर
सफलताओंके कारण आगे आया था। कुमाऊँका शासन पहिले जोगाम
(१७९१–९२) के हाथमें रहा, फिर १७९३ में काजी[1] नरशाहीका अ
शासन आरंभ हुआ। नरशाहीके अत्याचारोंकी खवर काठमांडव त
और उसे हटाकर अजवसिंह खवास थापा उसकी जगह भेजा गया। व
१७७९ से अधिकारारूढ था, किन्तु १७९५ में उसे उसके आधीनस्थ प्रवल
पदच्युत कर दिया। इसी समय उक्त चौतरिया और थापा दलका ज
गोरखा-विजयमें थापोंका प्रमुख हाथ था, इसलिए राजशासनसे कव त
राजपुत्र और राज संवंधी वंचित रखते ? १७९५ में थापा-दलके अमर
उसके सहायक गोविंद उपाध्याय और सेनानायक भक्ति थापा कुमाऊँ
वन कर आये। १७९७ में चौतरिया वम (भीम) शाह और उसका भा
शाह कुमाऊँके शासक थे। १८०३ से १८१५ तक हस्तिदल शाह कु
साथ और सरदार भक्ति थापा का कुमाऊँके शासनसे संवंध रहा। १
गोरखा शासनके अन्त तक वमशाह कुमाऊँका राज्यपाल रहा। अव त
शासन लूटखसूटका शासन था। वमशाहने देखा, कि इस तरहका शासन
और शासित दोनोंके स्वार्थोंके विरुद्ध है। पिछले १५ सालोंके गोरखा
गावोंको उजाड़कर जंगल वना दिया था। उसने विश्वास पैदा कर
सरकारी नौकरियों तथा सेनामें गढवालियोंको लेना शुरू किया। १८
तिहाई गोरखा-सेना कुमाऊँनियों-गढवालियोंकी थीं, यद्यपि उनकी गणना
सेनामें नहीं वल्कि स्थानीय मिलिसियामें थीं। कुछ कुमाऊँनी सैनि

---

[1] समकालीन कवि गुमानीकी कवितासे गोरखोंकी करनीतिपर का
पड़ता है।

भी बनाये गये थे। बमशाहने अपनी जागीरोंमें गोरखा-अफसरों द्वारा होती धांधली और निष्ठुर शोषण को भी बंद करनेका प्रयत्न किया।

वह दासताका युग था। गोरखा-शासकोंकी आमदनीका एक अच्छा साधन कुमाऊँनी-गढ़वाली दास-दासियोंका क्रय-विक्रय था। हरद्वारमें उन्होंने एक बड़ा दास-बाजार कायम कर रखा था, जिसके बारेमें एक प्रत्यक्षदर्शी अंग्रेज रैपरने १८०८में लिखा था। "हरकी पौड़ीकी ओर जानेवाले घाटकी जड़में गोरखा-चौकी है, जहाँपर पहाड़से दासोंको लाकर बेंचनेके लिये प्रदर्शित किया जाता है। तीनसे तीस वर्षके ये बेचारे अभागे स्त्री-पुरुष सैकड़ोंकी संख्यामें प्रतिवर्ष बाज़ारमें बेंच दिये जाते हैं। यह दास पहाड़के भीतरी सभी भागोंसे लाये जाकर हरद्वारमें दससे डेढ़ सौ रुपयेकी दरसे बेंचे जाते हैं।" सात वर्ष बाद गोरखा-शासनके अन्तके समय यात्रा करते ज० ब० फ़्रेजरने अन्दाज लगाया था, कि गोरखा-शासनकालमें दो लाख दास बेंचे गये। यह ठीक है, कि दासताके लिए हम केवल गोरखोंको दोषी नहीं ठहरा सकते। अभी तो भारतमें अंग्रेजों द्वारा दासप्रथाको निषिद्ध करनेमें भी तीन दशाब्दियोंकी देर थी।

(ख) कर-भार—समकालीन कवि गुमानीने गोरखोंकी करनीतिके बारेमें लिखा था—

"दिन दिन खजनाका भारका बोकनाले,
शिव-शिव चुलिमें बाल नै एक कैका।
तदपि मुलुक तेरो छोड़ि नै कोइ भाजा।
इति वदति गुमानी धन्य गोरखालि राजा॥"

(ग) शासन और उत्पीडन—१८०३से १८१५ तक हस्तिदलशाह चौतरिया और भक्ति थापाके हाथमें गढ़वालका शासन रहा। पुराने अभिलेखोंसे निम्न गोरखा अधिकारियोंका पता लगता है—

१८०४ काजी रनधीरसिंह, काजी अमरसिंह थापा, रनजीतसिंह कुँवर, गद सरदार, परसुराम थापा

१८०५ चंद्रवीर थापा, विजयानंद उपाध्याय, गजेंसिह

१८०६ हस्तिदल थापा, रुद्रवीरशाह, काजी रामाधीन, परसुराम थापा

१८०७-९ छन्नू भंडारी, परसुराम थापा, भैरव थापा

१८१० काजी वहादुर भंडारी, वख्शी दशरथ खत्री, सुवादार सिंह वीर

१८११-१५ अमरसिंह थापा, परमाराम फौजदार।

श्रीनगर अब भी गढ़वालकी राजधानी था। देशको तीन भागों
८४ पर्गनोंमें बाँटा गया था। प्रधान शासक, जो सैनिक अफसर भी थे,
चाँदपुरगढी और लंगूरगढ़ीमें रहते थे। पर्गनोंमें फौजदार नामधारी
अधिकारी शासन करते थे। कर सरकारके पास जाता था और जुर्माना
कारियोंकी जेवमें। एक तरह अपने-अपने पर्गनेमें ये छोटे अफसर भी
थे और कभी कभी तो अपने अधिकारको किसी दूसरे "वेचारी" (अधीन)
दे देते थे। इतना भयंकर शोषण और अत्याचार हो रहा था, कि कितने
उजाड़ पड़ गये थे। प्रजाकी पुकार सुननेके लिए जब नेपालसे पंच आये,
मर्ज वहुत आगे वढ़ गया था—विशेषकर वमसिंह चौतरियासे भी
शासन गढवालमें वडा ही क्रूर था। रणजोरसिंह थापाने अपने शासनमें
मलहम लगानेकी कुछ कोशिश अवश्य की। गोरखा-शासनकी कीर्ति केवल
या सदावरतके गाँव हैं, जिन्हें उन्होंने भिन्न-भिन्न मंदिरोंको दान दिया।
शासनके प्रायः अंत (१८०८ ई०)में रेपरने गढ़वालकी यात्रा करते लिखा
"गोरखोंके विरुद्ध शिकायत करनेमें लोग वड़े कठोर हैं, किन्तु उनसे वहुत
जो दास-मनोवृत्ति इन्होंने स्वीकार कर ली है, उससे यह संदिग्ध है, कि
स्वतंत्रता और प्रतिरोधका भाव भरा जा सकता है। गोरखा-शासन द्वारा
लीला मची है, उसके जीवित उदाहरण हैं पड़ती पड़े खेत, ध्वस्त जनशून्य
जो यहाँ चारों ओर दिखाई पड़ते हैं। मंदिरोंके खेत ही केवल ऐसे हैं,
तरह बोये-जोते जाते हैं।" अंग्रेजोंके शासनके आरंभ हीमें वल्कि
साथ ही जे० वी० फ़्रेजर गढ़वालमें पहुँचा था। उसने लिखा है
लोहदंडसे गढवालका शासन किया, जिससे यह देश वहुत शोचनीय
पहुँच गया। यहाँके गाँव जनशून्य हो गये, कृषि नष्ट हो गई, और
अप्रत्याशित रूपमें कम हो गई। कहा जाता है, दो लाख गढ़वाली
वेंच दिये गये।....विजेताके तौरपर उनका वर्ताव वड़ा रूखा था।
विजितोंको वड़ी नीची दृष्टिसे देखते थे। राजधानीसे कुछ ही दूरपर
जारी थीं, अपमान और वलात्कारके दृश्य लगातार होते रहते थे।
शासकोंके प्रति लोगोंकी घृणा दृढ़ हो गई थी। देशको उन्होंने
चूर्ण कर दिया, किंतु लोगोंको मेलमिलाप या शासनके जूयेको
लिए तैयार करनेका कोई कार्य नहीं किया।"

(२) गोरखा-शासनपर मोलाराम—

(क) श्रीनगर दुर्दशा—१८१४ तक हरिद्वारमें हरिकीपौड़ीके पास ग्रेजी गोरखा चौकीके निकट हीं दास-दासियोंका हाट लगता था। दास ०से १५० रुपये तक विकते थे, यह कह आये हैं। उसी समय महान् त्रकार और कवि मोलारामने "श्रीनगर दुर्दशा"का चित्र उस आवेदन-त्रमें खींचा है, जिसे उसने नेपालके प्रधान-मंत्री भीमसेन थापाके पास भेजा —

मालिक रहा नगद् नै, मुल्क ख्वार हो गया।
साहेव गुलाम पाजी सव इकसार हो गया॥
रैयत पै जुल्म और वसियार हो गया।
क्या खूव श्रीनगर था कैसा उजाड़ हो गया॥
गुलजार था यो सैहर जवानीके वखतमें।
वैठे थे महाराज फतेहशाह तखतमें॥
करते थे गौर सवका इन्साफ जुगतमें।
राजी थीं दीन दुनिया रहतीं थीं भगतिमें॥
विरता-जगीर-गूँठ सभीके वहाल थे।
मिलता था रोजीना सभी रंगलाल थे॥
घरघरमें लोग सव हीं साहेव-कमाल थे।
करते थे राग-रंग सहरमें खुस्याल थे॥
वसता था सहर सारा, क्या खूव थी वहार।
राजी थे लोक सव हीं हजारान देह हजार॥
करते थे रोजमर्रे सब लोग रोजगार।
साहू रिणी थे राजी चलता था सव व्योहार॥
चलती थीं रविश रंगीं गुलज़ार चमन था।
गुल गुल शिगुफ्ते गुंचे वुलवुलको अमन था॥
महवूबकी ज़वाँ लव शीरीने-सुखुन था।
अलमस्त मौलाराम जन संग मगन था॥
ऊजड़ पड़ा है जवसौं नहिं सहरमें अमाली।
हाटैं पचास-साठ वसैं और सवै खाली॥

तिनकौं वी नहीं चैन तिलंगा हि देइँ गाली।
करते हैं नाहक सिजतस वाही सौं गोरखाली॥
सुनता न कोई दाद ही फरियाद किसूकी।
कहिते न भली बात कोई सात किसूकी॥
राजी है चुगल चोर नहीं दाद किसूकी।
असराफ फिरै ख्वार नहीं याद किसूकी॥
चलती न लाल-मोहर महाराजकी रकम।
देता न रोजी हाकिम नहीं मानता हुकुम॥
मलते हैं दोउ दस्त खिरदमंद भरे गम।
पड़ता है कोई दिनमें सितमगर पै क्या जुलुम॥
करते हैं जो तैहसील वो धरतें हैं फाँट ड्योढी।
वरवाद हुआ मुल्क जो सवहीने आस छोड़ी॥
किसानके न बीज वयल पास नहीं कौड़ी।
भाजे सभी मधेसकौं रैयत भई कनौड़ी॥
करते हैं जन ज़िनाह जवरदस्त घर पराये।
सुनते नहीं इन्साफ अमाली जो गढमें आये॥
करते जो चोर चोरी किसूनै न वो बँधाये।
साहूके दाम खाय रिणीने सभी हराये॥
विरता, जगीर, गूँठ, रोजीना हि हर लये।
मासंत खर्च भत्तामें सभ भंग ही भये॥
मिलता नहीं रोजीना सभ वंद कर दये।
नैपालमें महराज मौलाराम गढ़ रहे॥
चाहौ मुलुक वसाया तो जल्दी खवर करो।
जर्नैल भीमसेन साहेव तुमही नजर धरो॥
आमल रहा न कोई इहाँ पाप मत भरो।
तुम धर्मकौ प्रकास भीमसेन दुख हरो॥
विरता, जगीर, गूँठ, रोजीना हि थाम दीजै।
देगी दुआ कुल आलम जर्नैल नाम लीजै॥
भेजो सहरमें जूद अमाली मुदाम कीजै।
इन्साफ करै साफ सभीको अराम दीजै॥

साहेब हो मेहरबान कदरदान दरजहाँ।
जर्नैल भीमसेन तुम नैपाल हम यहाँ॥
अर्जी दई पठाय पौंछेगि जो तहाँ।
सब ही जो मतालब इहे कहि देइगी ज़बाँ॥

घर-घरमें अकल सबकी हैरान हो रही है।
खलकत तमाम सारी वीरान हो रही है॥
कोई न खिरदमंद कुफरगान हो रही है।
रैयत यहाँकी सब ही परेशान हो रही है॥

रैयतके घर न पैसा कंगाल सब भये।
ताँबा रहा न काँसा माटीके चढ़ गये॥
टुकड़ेका पड़ा साँसा मधेस बड़ गये।
कपड़ा रहा न तनमें भँगेले भी सड़ गये॥

आम है यों बात मौलाराम मुलक रबका।
रैयतकौं करो राजी अहवाल सुनो सबका॥
चहता है मुलक लीया फिरंगी पड़ा है कबका।
होता है कोई दिनमें हुकुम कंपनी साहेबका॥

जीवैगा जौं न तबलौं सुनते हो तब बात कानो।
काज़ी हो अमरसिंह मानो या मती मानो॥

(ख) कांगड़ा पर प्रथम आक्रमण

"किला कांगड़े हमहूँ जैहें। फते तहाँ हम कैसे पैहें॥
सो तुम हमको भेद बताओ। चित्र तहाँको लिखि दिखलाओ"॥
तब हौं चित्र लेखि दिखलायो। बुद्धि अनुमान भेद बतायो॥

× × ×

एक एक ग्यारा करे, ग्यारा ग्यारा एक।
वह जीते गढ़ कांगड़ो, जो याको करे विवेक॥

……

परजा कौं जो नर परचावे। मुल्क परायो सो नर पावे॥
धींग-धांग जो करत है नाई। ताके सब होवें बस भाई॥

धींग-धांग जो कोई करते । तिनके ग्रामहि ऊजड़ पड़तें ॥
विरता गूँठ जगीर जो हरिहैं । कुम्भी नरक नृपति सो भरहैं ॥
तिनको राज भ्रष्ट सब होई । बंस चले तिनको नहिं कोई ॥
अपकीरत तिनकी जग माँही । मरिके अति तिनकी कछु नाही ॥
जो काजो तुम पच्छिम जाओ । एक एक करि राज दवाओ ॥
परजाको आस्वासन दीजो । विरता सब वहाल ही कीजो ॥
गाँउ जगीर तगीर न कीजै । रोजीना सब हींका दीजै ॥
परजाकों परचायके रखिये । भली-बुरी काहू नहिं वकिये ॥
नीत न्याय सब हीका कीजै । जथापराध दंड ही दीजै ॥
सबकौं होय तुहारी आसा । सुनै सुजस सब आवें पासा ॥
या विध सब हीं राज दवाओ । किला कांगड़ा तब तुम पाओ" ॥
"हमें हुकम महाराजको, सरासरी तुम जाव ।
पूरवसौं पच्छिमहि लौं, हमरो हुकम चलाव ॥
मिले जो कोई ताहि मिलाओ । लड़े जो कोई मार हटाओ ॥
चांडे किला **कांगड़ा** हाणो । पुन **लाहौर दिल्ली** हम जाणो ॥
इह आज्ञा स्वामीनैं दीनी । तब हम बाट पछमकी लीनी ॥
अब हम दूण[1] छुड़ावें जाई । गढके राजा संग लड़ाई ॥
फौज लेइ गढ़ राजा आयो । हेड़ी-खेड़ीके संग लायो ॥
तिनकी जातहि सारध पावैं । पुनि **नाहण** हम जाय छुटावैं ॥

× × ×

तुमरे मुख मँहि सरसुति जो है । तुम जो कहो सोई कछु होवै ॥
तुम कवि हो हमकौं वर दीजै । फते होय यह किरपा कीजै" ॥
.... ॥
इह काजी जब कविसों बोली । कविजन तवैं सारदा तोली ॥
कहै सारदा "सतलुज ताहीं । तुमको कोई रोके नाहीं ॥
आगे आगे गोरख भागे । ताके पाछे मनमथ लागे ॥
मनमथके जो पंथ चलैगो । ताकों दिल्ली तखत मिलैगो ॥
आपा पंथी सब जग माहीं । मनमथ पंथी कोऊ नाहीं ॥
आपा पंथी सिंह फिरंगी । तुमहूँ गोर्खा संग तिलंगी ॥

---

[1] देहरादून

तुम दस ग्यारह बर्सहि ताहीं। काज़ी रहोगे पच्छम माहीं ॥
किला कांगड़ा सिंह[1] दबावैं। तुमकौं सतलज पार धपावैं ॥
तुमहूँ मिलौ फिरंगी संगा। निमकहरामी करें तिलंगा ॥
तुमें फिरंगी संग ले जावै। सतलुज कुरमांचलहिं दवावै ॥
आगे आगम कहत है, जमनी-भाषा[2] माहिं।
नींच महत्त अव होत हैं, दीनी तुम्हें सुनाहिं ॥
उत्तर औ दखण पूरब पच्छम सबका।
पहाड़ देख जंगल खलकत तमाम सवका ॥
होता है साहेव मालक लेना सलाम सवका।
घर-घरमें अदल करना आलस तमाम सवका।
होता है कोई दिनमें हुकम कम्पनी साहेबका ॥
.... ॥
जुलमी जुलम जे करते उनकों कतल करैगा।
इनसाफ साफ होगा घर-घर सदल फिरैगा ॥
रैयत रहैगी राजी कुनवा जवी भरैगा।
गुलजार जमी होगी सव कार ही चलैगा ॥
ले फौज तोफखाने साहेव जिधर पिलैंगे ॥
भाजैंगे सव गनीम जमींदार सव मिलैंगे ॥
हिन्दू क्या मुसलमान सव ईमानसों चलैंगे।
बाढैगा धरम दुनिया पापी सभी गलैंगे ॥
....
....
भूले थे हिंदू जवहीं मुसलमान तवहीं आया।
भूला मुसलमान जवहीं, फिरंगान तव पठाया ॥
फिरंगीने आन धूम इस आलममें मचाया।
विरता जगीर सवका रोजीना छिनाया" ॥

× × ×

कह्यो "कवी तुम हमहुँ डराये। केतें राज मारि हम आये ॥

---

[1] रनजीतसिंह [2] उर्दू, किन्तु यह तुकबंदी अंग्रेजोंके शासनके स्थापित हो
पर की गई मालूम होती है।

हम काहू सेती नहिं डरिहैं। स्वामि कही सो हमहीं करिहैं॥

. . . .

हमहूँ दिल्ली तखत दवावें। हिन्दू राज हिन्द वैठावें॥

. . . .

तुम हमरी जयवृद्धि मनाग्रो। वैठे गाँव रोजीना खाग्रो॥
सुजस करो स्वामीका हमरे। सकल काज वनि ग्रावैं तुमरे"॥

× × ×

समझै जो समझाये नाहीं। पाछे पछतावैं मन माहीं॥
हँसै लोक सव हाँसी होवै। विनसै काज राज सव रोवै॥
प्रदीप साहजूने नहिं मानी। लग्यो रोग तन महिं पैछानी॥
ललितसाह लालची भये। सिगरो गढ लुंठन करि गये॥
पड़ी न पूरी फौज रखाई। चढी जिधरकौं भजिकै ग्राई॥
ताके क्लेश प्राण धन गयो। सुजस कछू जगमें नहिं भयो॥
संततिको वह पापहि लाग्यो। जैकृतिसाहजु गढ़सौं भाग्यो॥
राज खोय प्रद्युम्नहि लीन्यो। ताके पाप पराक्रम कीन्यो॥
प्रद्युमन प्राक्रम दुहूँ लड़ाये। तिनपै काजी तुमहूँ ग्राये॥
तुमहूँ बूझी मसलत हमकौं। जथा बुद्धि हम दीनी तुमकौं॥
हमरे मित्र फिरंगी नाहीं। हमरो बैर न तुमरे माहीं॥
हमरो सिंह न तहाँ पठायो। हमने तुमकौं नाहिं बुलायो॥
हम तुमकौं ग्रटकावत नाहीं। जित मन ग्रावै जाव तहाँही॥
जाको हमहूँ निमकहि खावैं। ताको निशि दिन भलीं हि चावैं॥

(ग) कांगड़ा पर द्वितीय ग्राक्रमण—

नैनसिंह सिंहा ज्यों ग्राये। देखि कांगड़ा लोक डरायें॥
नैनसिंह काजी जवैं, पहुँचे पच्छिम जाय।
महा त्रास सवकौं भयो, भाजे लोक डराय॥
चल्यो सिंह ज्यों नैनसिंहाहि काजी।रहे ग्रौर पाछे फते माहिं साझी॥

. . . . ।

कई मोरचा मारिकै तोरि डारे। परी लोथ पै लोथ ही भौत सारे॥
धरे पैर ग्रागे परे नाहिं पाछे। निमक्के हलाली तिलंगाहि ग्राछे॥
लड़ी खूब पलटन पलट शत्रु दीन्यो। रहे देख सब ही किनाराहि लीन्यो।

मनो इंद्र चढ़ि स्वर्गतैं आप आयो। चहूँ ओरतैं घोर घनसार छायो ॥
किलासें छुटें तोप ही कोप सेती। परे वज्र ज्यों इंद्रके रोप सेती ॥
मनो इंद्र गोपालको जुद्ध लाग्यो। चढ्यो वीर नैपाल कट्टोच भाग्यो ॥
महासिंह ज्यों नैर्नसिंहाहि गाजैं। चले भाजि कट्टोच ज्यों मृगराजैं ॥
दयो भीतरैं वाढ़ ताकों किलाके। दये सिद्रही पाठ मानो सिलाके ॥
फिरैं झूमते घूमते वीर वाँके। खुले काहुसे नाहिं जो पाठ वाँके ॥
धसे आपही वीर नहिं फौज जागी। अकसमात गोली तहाँ आन लागी ॥
(नैर्नसिंहकी मृत्यु––)
पड़्यो मत्त मातंग ज्यों भूमि माहीं। कहे जाओ आगे थमो कोउ नाहीं ॥
महासिंह ज्यों नैर्नसिंहा हि गाजै। सबैं फौज कट्टोच हींकी जो भाजै ॥
करै मार ही मार ललकार सेती। करै हाय तोबाहि संसार जेती ॥
न ऐसो कोई वीर वांको निहारयो। महासूर सावंत दिलको करारो ॥
महा मौज दरिया वही दान दाता। कवीकौं सवीकौं जगतमाहिं ख्याता ॥
किधौं तारिका वृंदसों चंद छुट्यो। किधौं इंद्र इद्रासने इंद्र छट्यो ॥
किधौं राहु नव जायके युद्ध लायो। गिरयो भानु वेवानसौं भूमि आयो ॥
परयो खेत महिं चेत नहिं प्रेत लागे। लखै नैनसो नैनहीं भूक भागै ॥
खरे जार ही जार सरदार रोवैं। सबैं आपनो आपनो मूँह धोवैं ॥
मनो आज वर्षा हि रितु रीत लागी। झरैं नैनसों नीर झरना झरागी ॥
भयो भूमिका पै सवै त्रास भारी। रही वीरके चित्तकी चित्त धारी ॥
चढ़े व्योम वेवान सव देव आये। लखे नैन ही सिंह नैना भराये ॥
अचंभा इहै देखि रम्भाऽऽकुलानी। इतै शत्रुकी फौज सव ही पलानी ॥
किला होन खाली लग्यो कांगड़ाई। इतें जाय किनहूँ हकीकत सुनाई ॥
"काजीकौं गोली लगी, तुम क्यों भाजी जाय"।
खवरदारने खवर दी, राखो फौज थमाय ॥

. . . .

नैर्नसिंह जव ही हते, पाई फतह कटोच।
अमरसिंह काजी कियो, हर्ष सोक ही सोच ॥
हर्ष इहै मन माहिं को कीन्यो। नैर्नसिंहने किला न छीन्यो ॥
इह जस जो अव हमही पावैं। इक दिन किला इहै जो छिनावैं ॥
शोक इहै कीन्यो मन माहीं। गोत घाव लाग्यो तन पाहीं ॥
सोच भई जो नृप सुन पावैं। निमकहराम हमहिं ठहरावैं ॥

गई खवर नैपाल यह, कांतीपुर दरवार।
"नैनसिंह काजी गिर्यो, करी खूव तलवार।।
प्राण दये पर खेत न छाड़्यो। खेत दये अरि जस जग वाढ्यो"।।
महाराज सुनि उत्तर दीन्यो। "जो इत कहि गयो सो उत कीन्यो।।
नैनसिंहसे वीर कहाँ अव। जो मुख कहैं करैं सोई सव।।
सीस दियो पर पीठ न दीनी। निमक-हलाली जग महिं कीनी"।।
भीमसेन सेती कह्यो, महाराज भरि स्वास।
"जो तुम जाओ कांगड़े, कौन हमारे पास।।
तुम विन इत कैसे निभै, तुमरे सिर सव भार।
निमक-हलालीमें रहो, निसि दिन ही दरवार"।।

(घ) कांगड़ा पर तृतीय आक्रमण

रुद्रवीर चौतरिया आये। दलभंजन सँग माहि पठाये।।
लियो कांगड़ा तिनहुं घिराई। चहूं तरफ फौजहिं पिलाई।

....

फिरैं तिलंगा चहुं तरफ, आठों जाम अथाह।
देखि पेखि संसार कौं, भयो महाभय त्रास।।
संसार चंद्र तव ही मिल्यो, आन दुहुनके पास।
पांच लाख धन-पुत्रिका, कीनी आन कवूल।
किला कांगड़ा सहित ही, लेहो मुलक मसूल।।
संसार चंद्रने इह कही, वैठ एकांतहि माहिं।
दलभंजन पांडेहि से, और चौतरा ताहिं।।

× × ×

"संसारचंद्र वहु घूसहि दीनी। दलभंजन चौतरिया लीनी।।
किला छाड़ि मिलि वैठे दोई। करी हमारी सवही खोई।।
जो इह पलटि तहां को जावैं। किला कांगड़ा हमहुं छुटावैं"।।

....

अमरसिंह ने तंत्र इह, लिखि भेज्यो दरवार।
महाराज ने सुनत ही, भेज्यो भारादार।।

....

(ङ) कांगड़ापर गोर्खोंका अन्तिम आक्रमण—

दलभंजन और चौतरा, दोनों लये वुलाय।
कुंवर वीर हीं भद्र जो, दीन्यो सीघ्र पठाय ॥
"वीरभद्र तुम वीर हो, करो काज इहि आज।
किला कांगड़ा फौज ले, जाव" कह्या महाराज ॥

× × ×

कियो प्रवेश वीर ने, श्रीनग्र याहि भांत सौं।
सिघ्रता वुला हमें, दई जो म्हौर हाथ सौं ॥
अनेक भांतकी कृपा, हमैं जो भूप की भई।
धाम ग्राम वाग हीं, जागीर थाम सव दई ॥

× × ×

राग रंग नृत्य फाग, सह्लमें मचाइयो।
अवीर औ गुलाल बीर, वहुत ही उड़ाइयो ॥
मृदंग खंजरी झंजाल, और बीन वाजती।
सरंग हि सितारतार, बांसुरी हि गाजती ॥
नचें नरी परीहि ज्यों, वरांगनाहि रंग में ॥
अवीर आस-पास बीर ही सबैं तरंग में ॥
महराज गीरवाण जुद्ध, को प्रताप गावते।
वीरभद्र ध्यान धर प्रेम सौं लड़ावते ॥
देत रोज मौज दर्व सबे ही गुनीन कौं।
प्रसन्न होई के वुलाय देत विप्र दीन कौं ॥

× × ×

अमरसिंह काजी कह्यो, जो दूहूं सिरमौर।
प्रथम मोरनी तोड़नी, बीर भद्र रणजोर ॥
चली वीर रणजोर सज सेन आये। कुंवर वीरभद्रैं हि सँग में पठाये ॥
घटा घूमि के भूमि के ज्यों भराई। मिली दामनी सामनी सेन आई ॥
. . . . ।
लड़ैं गोरखे वीर वांके तिरंगी। लगीं वाजनें गाजनें तोप जंगी ॥
धरीं सामनें तोप छूटैं कराल। दुहुं ठौर सेती मनों ज्वाल-माल ॥
. . . . ।

धस्यौ फौज कौं चीर कै बीरभद्रै । गये खाषिया भाजिकैं ढांट छुद्रै ॥
खड़े खेतमें खैंच तलवार पुंडा । दये काटि ही कूटि अरि-रुंडमुंडा ॥
कहूं खूंखरी पुंड तलवार गाजैं । मनो भूमि भूकंप आकास गाजैं ॥
करैं मोर ज्यों सोर चहुं ओर सेती । लई मोरनी मारिकै जोर सेती ॥
अटाकी छटा पै खड़ी नार देखैं । कहूं भाजने कौं नहीं राह देखैं ॥
भजैं जा दिसा वांह ऐंचें तहाहीं । कहूं भाजने कौं मिली वाट नहीं ॥

× × ×

जितैं बीर रणजोर काजी हि जोहैं । जो देखे छवी वाहि को चित्त मौहें
भई आन कै नार सब पास ठाड़ी । मिट्यो त्रास तिनको महानंद वाड़ी
लगी टकटकी धकधकी मूर्च्छाई । मनों गोपिनैं भेंट पायो कन्हाई

× × ×

सबैं बीर मैं धीर बलि बीरभद्रैं । किधौं दक्षप्राजापती हेत रुद्रैं ॥
लड़्यो एकलो जंगमहि दंग कीन्यों । महा मोरनी दुर्ग गढ़ तोड़ दीन्ह
इहै भांत सब ही भये तहं प्रहारी । पड़्यो सल्ह सिरमौर आतंक भा
सबैं बीर महि वीरभद्रैं महाई । धँस्यो आप ही मोरनी जा छुटा
भजो कर्म परकास भी कर्मनासा । रही रत्नपरकास[1] को नाहि आन
लड़ैं आपनी भूमि पै भूपती जो । मरै तो तरै होय ताकी गती तो
इहै साह प्रद्युम्न गढराज कीनी । दये आपने प्राण नहिं लाज दीन
भयो भ्रष्ट सिरमौरिया राज वाको । वचे प्राण उपहास भ्यो लोक ता

× × ×

मिट्यो त्रास तिनको भयो जी हुलासा चल्यो पंथ मन्मथ्य सरवत्र खास
सवै मुल्क वाजार गुल्जार कीन्यो । महादान सन्मान सौं विप्र दीन्ह
महादुंदुभी भेर झंकार वाजी । वजै मारफा तास बंदूक गा
सबैं सल्ह सिरमौर नाहण बसाई । फिरी साह गिर्वाण जूकी दुहा

× × ×

रची तहैं सभामंडली सुद्ध सारी । महातंत्र ही जंत्र मंत्राधिकारी
लहैं नैन ही ऐंन कहैं मधुर वानी । करै दूधको दूध पानी कौ पानी
विचारी अचारी रची नीत सारी । रहैं सिंह ही मृग सभा एक सारी
रहैं बैठ वारादरी[2] न्याय माहीं । रहै चारों ही वर्ण नीके तहां हीं

× × ×

---

[1] सिरमौरका राजा [2] सरदार, अफसर

किला कांगड़ा घेरि कै, कीन्यो सब मजबूत।
अकुलाये तब हीं तहां, सब रांडीके पूत॥

रस्त बंद सब करी तहां हीं। खलबल पड़ी किलेके मांहीं॥
खाली भये भँडार कुठारा। बाहर सों अन्न न आवे भारा॥
त्राहि त्राहि गढ भीतर भई। नर नारी सब मूच्छित रहीं॥
घास फूस सब खानहि लागे। एक एक कर जात हैं भागे॥
"जो कोई दिन जीया चाहो। काजी सैं कछु सूत्र मिलाओ॥

× × ×

प्रान काहु विध सौं रख लीजै।
प्रान रहे जो घट के मठ हीं। फेर करैं हम हूं नटखट हीं॥
सौ परतीत शत्रु कौं दीजै। अपनो काम काढि सब लीजै"॥
कह्यो वचन मृदु मधुर महाई। हौं राजा ने दियो पठाई॥
कायल हो नृप विनती कीनी। "इह अरजी करि तुमसौं दीनी॥
किला कांगड़ा हम हूं छाड़्यो। अब हम कौं तुम बाहर काढ़्यो॥
अपना करि कै हम कौं राखो। वचन यहै नौरंगा[1] भाखो"॥

"किला कांगड़ा छाड़ि कै, आओ हमरे पास।
रहो चाकरी मांहि तुम, पूर्न होय सब आस॥

किला गोरखा जो इह पावैं। धुर काशी कस्मीर दबावैं॥
पुनि लहौर में लगे न बारा। लेहि पिसौर हिंद इह सारा॥
तातें तुम जो किला बचाओ। रणजितसिंह को सिघ्र बुलाओ॥
किला सौंपि पालायन कीजै। अपनो बोझ ताहि सिर दीजै॥
किला कांगड़ा सिंह दबावैं। तो कोई दिन में हम पावैं"॥
इह मसलत सबके मन भाई। पाती सिंह पै सिघ्र पठाई॥
पाती महिं हाथी लिखि दीन्यो। आसपास हीं कीचर कीन्यों॥
"कीचहिं बीच फंसे जब हाथी। काढ़े गधा न काढै साथी॥
सिंह सिंह को काज सुधारैं। सूर सूर सौंहीं ललकारैं॥
साह साहको काज चलावैं। राजा राजा मदत को आवैं॥
हमहूं बहोत आज लौं थामी। पूरब बेरी पश्चिम-जामी॥

---

[1] संसारचंदका मुख्यमंत्री

तातै याको करो विचारा। पाती बांचि लगै नहिं वारा॥
किला कांगड़ा तुम को दीन्यो। नातर इहै गोरखा लीन्यो"॥

× × ×

तुपक तीर तलवार सिरोही। लीने चक्र चढे सब कोई॥
तोफन की गिनती कछु नाई। अंधाधुंध सरवत्रहि छाई॥
फौजनको कछु नाहिं सुमारा। जित कित सिंह फिरे असवारा॥

× × ×

तवैं गोरखा वात चिताई। फौजें जव सिर पैं चढ़ि आई॥
दल वादल चहुं दिस चढि आये। वरषा रितु ज्यों नभ घन छाये॥
सिंह कहै "उठि घर कौं जाओ। कै तो लड़ने सनमुख आओ"॥
रस्त वन्द चहुं गिरद सों कीनी। पौन सरीखी जान न दीनी॥
जल विन सव ही अत अकुलावैं। अन्न मिलै नहिं घासहि खावैं॥
सवै गोरखा अत अकुलाये। काजी सहित मिलन तव आये॥
रणजितसिंह को सीस नवायो। जीवनदान तव सव ही पायो॥

× × ×

अमरसिंह तव सीस नवायो। कर सलाम सतलज को आयो॥
सूखी ठौर में वैठ्यो जाई। कांतीपुर इह खवर पौंछाई॥
"किला कांगड़ा सिंह ने लीन्यो। हम को सतलज वारहि दीन्यो॥
हम सूखे अव ठौरहि आये। सतलज वार सव राज दवाये॥
रणजितसिंह सिरमौरके मांहीं। वलभद्र गयो दूणके ताहीं॥
श्रीनगर वहादुर भंडारी। दसरथ खत्री संग तिन हारी॥
हमैं हुक्म अव जो कछु होई। करैं चाकरी हम हूं सोई॥
रणजितसिंह संग फौज घनेरी। थकै आंख वा तर्फ जो हेरी॥
लीनी जिन कसमीरहि सारी। खुरासान मुलतानहि भारी॥
इह अरजी नैपाल पठाई। भीमसैन जर्नैल वंचाई॥
महाराज सुनि के जो रिसाये। वखतावर वसन्यात पठाये॥
कह्यो "जावो श्रीनग्रके मांहीं। वैठ करो तुम काज तहां ही॥

५. गोरखा-अंग्रेज-युद्ध (१८१४-१५ ई०)

नेपाल और मकवानपुरको लेकर अंग्रेज गोरखोंसे लड़ चुके थे, किन्तु

दाके लिये हार नहीं मानी थी। वह तैयारी और अवसरकी प्रतीक्षामें थे। १८१४
ं अंग्रेजोंकी शक्ति वही नहीं थी, जो १७६७ में सिंधुली गढ़ीमें कप्तान किन-
कके हार खाकर भागते समय। वहानेके लिये कारण मिलने मुश्किल न थे।
८०१ से "वरेली (रुहेलखंड) के हमारे पांच इलाके नेपालने दखल किया है,"
हकर कंपनीका कागजी झगड़ा चल रहा था, जिसके वारेमें गवर्नर-जेनरलने
नमेंसे दो को लौटानेकी मांग की, किंतु वह युद्धके समय तक वैसा ही रहा। इसी
कार हिंदूर जीतनेके वाद उसकी तराईके चार गांव गोरखोंने दखल कर लिए,
न्हें कर्नल अक्टरलोनीके वहुत लिखा-पढ़ी करनेपर अमरसिंहने लौटाया। युद्ध-
ा सवसे वड़ा करण वतलाया जाता है—शिवराजपुर और वुटवलपर गोरखोंका
वर्दस्ती अधिकार। १८०५ में भीमसेनके हत्याकाण्डमें पल्पाका राजा पृथ्वी-
ल सेन भी मारा गया, और पाल्पा राज्य नेपालमें मिला लिया गया। प्रधान-
त्री भीमसेन थापाका वाप अमरसिंह वहांका शासक नियुक्त हुआ, जिसने पल्पाके
राईवाले इलाके वुटवलपर भी पैर फैलाया। पालपा राजा लखनऊके नवावके
धीन था, और वुटवल तराई—जिसमें वुद्धका जन्मस्थान लुंविनी (रुम्मिदेई) भी
—पर इसका ही शासन था। पाल्पा राजा अभी नेपालमें कैद था। उसी समय
के उत्तराधिकारियोंने वुटवल तराई कंपनीके हाथमें दे दिया, और स्वयं पेंशन
गोरखपुरमें जा वसे। वुटवलपर गोरखोंका अधिकार होना सुन गवर्नरजेनरल
र जार्ज वार्लोने उसे तुरंत छोड़ देनेके लिये नेपालको लिखा (१८०५) और
ह भी कहा कि लखनऊ नवावके राजसे मिला शिवराजपुरको हम नेपालको
को तैयार हैं, यदि वुटवल छोड़ दिया जाये। गोरखोंने इसे नहीं माना और
वराजपुर और वुटवल दोनोंकी तराईमें वह आगे वढ़ते रहे। १८१२ में लार्ड
टो ने वार्लोकी वातको फिर दुहराया, किंतु अमरसिंहने 'सारी तराईपर नेपालका
धिकार है,' कहकर वात माननेसे इन्कार कर दिया। उस समय चम्पारन भी
रन जिलेमें था, जहांका बेतिया-राजा कंपनीके अधीन एक जमींदार था।
राईमें रौतहट इलाकेमें ८,९ विवाद-ग्रस्त गाँव थे। नेपाली हाकिम लछनगिरि
मरोनगढ़के दक्षिणके इन गांवोंमें मालगुजारी वसूल करने गया, जिसमें बेतियाके
दमियोंसे १९ जून १८११ को झगड़ा हो गया और लछमन गिरि मारा गया।
वानपुरवाली लड़ाईमें कप्तान किनलकके हारनेपर कंपनीने मकवानपुर तराई,
ा, परसा, रौतहटको दो साल तक हर्जानामें अपने अधिकार में रखा था,
तु पीछे उसे पृथिवी नारायणको लौटा दिया। अक्तूबर १८१३ में हेस्टिंग्ज
रतका गवर्नर-जेनरल वनकर आया। उसकी प्रेरणासे वुटवल, शिवराजपुर,

सारनके झगड़ोंको निवटानेका प्रयत्न किया जाने लगा। सारन (चम्पार गांव नेपालियोंने लौटा दिये। आगे कोई बात तै न होती देख हेस्टिंग्जने और शिवराजपुरको तुरंत लौटा देनेके लिए पत्र लिखा। अस्वीकृति २५ दिनकी अवधि देकर विवादग्रस्त इलाकोंको खाली कर देनेको लिखा वैसा न करनेपर कंपनीने अप्रेल १८१४ में सेना भेज तराई दखलकर बुटवलमें और शिवराजपुरमें एक थाना स्थापित कर दिया। सेना लौट आई। फिर से नेपाली-सेनाने २९ मई १८१४ को आकर बुटवलके थानोंको ले लिया वहांके अफसरोंको मार डाला। शिवराजपुरको कंपनीके अफसर विना छोड़कर चले गये। बुटवल और शिवराजपुरकी मालगुजारी उन दिनों एक रुपयेसे कम नहीं थी। अब लड़ाईके सिवा कोई रास्ता नहीं रह गया था, लिए दोनों ओरसे तैयारी होने लगी।

अमरसिंह थापा और उसके सहयोगी बमशाह चौतरिया (कुमाऊं) हस्तिदल (गढ़वाल) की सम्मति पूछी गई। तीनों लड़ाईके विरुद्ध थे, नये जीते राज्योंमें विद्रोह होनेका डर था। उन्हें पिछले चौबीस दखल किया गया था, जैसे—

१७९०	डोटीपर अधिकार
१७९४	कुमाऊंपर "
१८०४	गढवालपर "
१८०५	पाल्पापर "

प्रभावशाली राजनीतिज्ञ राजगुरु पंडित रंगनाथ, काजी दलमंजन पांडे, रणध्वज थापा भी युद्धके पक्षमें न थे, किंतु भीमसेन थापाका कहना था—

"अंग्रेज पहाड़के भीतर नहीं घुस सकते। हुजूर महाराजके प्रतापसे लाख सिपाही उनके साथ लड़ाई करेंगे और उनको अपने देशके भीतर से फेंकेंगे। मानुषका बनाया भरतपुरका छोटा किला है, किंतु उसे भी अंग्रेज ले सके, और उसको जीतनेकी आशा उनको छोड़नी पड़ी। हमारे पहाड़ ईश्वरने स्वयं अपने हाथसे बनाया है, इसे कोई जीत नहीं सकता। लड़ाई करनी चाहिये यही मेरी सम्मति है। पीछे हमारे अनुकूल होनेपर भी करनी होगी।"

(१) **आक्रमण**—दोर्जेलिङ्से कांगडा तक पहाड़ और कुछ भाग भी नेपाल राज्यमें था। उधर दक्षिणसे अंग्रेज भी बढ़ते बढ़ते हिमालयकी पहुँच गये थे, और उनकी भूख तृप्त होनेवाली नहीं थी—विशेषकर

विलायत जैसे ठंडे स्थानों और वहांकी सुननेमें आती बहुमूल्य खनिज राशि (सोना-ांदी) भी उनके लोभको बढ़ा रही थी। ऐसी अवस्थामें अंग्रेजोंको बहाना भर ाहिए था। वह नेपालसे हिमालयके अधिकसे अधिक भागको छीन लेनेपर ले हुए थे। अंग्रेजोंने युद्धका कारण बतलाया था[1]—"१८१४ में नेपाल युद्धके ारंभ होनेसे पूर्व कितने ही वर्षोंसे गोरखालियोंने हिमालयकी जड़में अवस्थित टिश भूभाग पर छोटे मोटे कितने ही हस्तक्षेप किये थे।....सबसे अधिक ौर हस्तक्षेप गोरखपुर जिलेके बुटवल पर्गनेमें हुए। १८०४ में बुटवलपर ोरखालियोंने यह कहकर कब्जा कर लिया, कि यह तो पाल्पा राजाका है, जिसका ाज्य अब नेपालमें चला आया है। मामूली विरोध करनेके सिवाय हमारी तरफसे द्ध नहीं किया गया।....१८१२ में वहीं और भी हस्तक्षेप गोरखालियोंकी ोरसे हुए, जिसपर हमारी सरकारका ध्यान उधर गया।....लिखा-पढ़ी ी, किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। इस पर गवर्नर-जनरल लार्ड हेस्टिंने अप्रेल १८१४ में विवादास्पद भूभागपर अधिकार करनेका हुकम दिया, र वह काम निर्विरोध पूरा हो गया।"

और दूसरे कारणोंको अंग्रेजोंके [2] नवंबर १८१४के युद्ध-घोषणापत्रमें इस ह बतलाया गया है[3]—"

"...जब कि बृटिश सरकारका आचरण नेपालके साथ सदा न्याय और हिष्णुताके सिद्धान्तके अनुसार रहा, वहाँ सारी विश्वस्त सीमा[4]पर बृटिश हदके भीतर एक भी ऐसा जिला नहीं है, जिसमें माननीय कंपनीके राज्यके ारकी निश्चित किसी भूमिको गोरखालियोंने हड़पा और कब्जा न कर लिया । नेपालियोंका ऐसा अनुचित दखल पूर्णिया, तिरहुत, सारन,[5] गोरखपुर र बरेलीके जिलों एवं जमुना तथा सतलजके बीचके संरक्षित भूभागमें हुआ । वहाँकी हर एक घटना बृटिश सरकारकी नरमी तथा सहिष्णुता एवं नेपायोंकी उद्दंडता तथा आक्रमण-नीतिका प्रमाण है।"[6]

हेस्टिंसकी आज्ञासे १८१४के अप्रेलमें अंग्रेजी सेनाने जब बुटवलपर अधिकार

---

[1] Atkinson Vol. II pp. 629-30,

[2] वहीं pp. 630-31. दोर्जेलिंगसे शिमला तक। [3]. औबरके अनुसार

[4] १७८७ से १८१२ के बीच गोरखोंने ऐसे दो सौ गांव दखल कर लिये।

[5] उस समय चम्पारण जिला सारनके ही भीतर था।

[6] At. Vol. II. p. 625.

कर लिया। उस वक्त नेपाली चुप रहे, किन्तु २९ मई १८१४को उन्होंने अं
अधिकारियोंको मार भगाया।

इसपर अंग्रेजोंने १ नवंबरको युद्ध-घोषणा कर दी।

नेपाली सेनाके बारेमें अंग्रेजोंकी क्या राय थी, इसका निदर्शन नेपाल-
एक अंग्रेज कप्तान हियरसीका यह पत्र है[५]—"गोरखाली कमान्डर अज्ञ, क
धोखेबाज, अविश्वसनीय और अत्यन्त हठधर्मी होते हैं। वह विजय और
सफलताके बाद खूनके प्यासे तथा क्रूर एवं पराजयके बाद नीच तथा घृ
बन जाते हैं। उनकी किसी संधि या शर्तपर विश्वास नहीं किया जा स
अपने सैनिकोंको लाल वर्दी पहिना पथरकलासे हथियार-बंद कर वह हमारे
अफसरोंके नामोंकी नकल करते अपनेको हमारी सरकारका अंश बतलाते
सरकारको आँख दिखाते हैं। हमारी सरकारके सामने वह चीनी रीतिनी
नकल करते हमारे हृदयमें यह भाव बैठाना चाहते हैं, कि मानो वह चीनके
हैं। उनके सैनिकोंके हथियार निर्बल हैं, शिंदे तथा होलकरके सैनिकोंसे
तुलना नहीं हो सकती।"

अंग्रेजी सेनाने चार स्थानोंसे नेपाली राज्यके ऊपर आक्रमण किया।
अधिक सेना (पहले ८००० फिर १३०००) मेजर जेनरल मार्लेकी कमान्डमें कि
राजधानी काठमांडवकी ओर रवाना हुई। गोरखपुरसे आगे बढ़नेवाली
सेनाका संचालक मेजर-जनरल वूड था। मेजर-जेनरल गिलेस्पीको ३५०
ले देहरादूनपर अधिकार करनेका काम सौंपा गया था। पश्चिमी
सतलज-जमुनाके बीच मेजर-जेनरल अक्टरलोनीने चढ़ाई की। जेनरल गि
की सेना पश्चिमी गोरखा-सेनाके बीचमें घुसकर गोरखा-राज्यके दो टुकड़े क
चाहती थी। युद्धमें गोरखोंने दिखला दिया कि कप्तान हियरसीकी राय
बारेमें गलत थी। यहाँके अंग्रेज सेनानायकके कौशलके बारेमें एक अंग्रेज
को स्वीकार करना पड़ा।[१]—"जेनरल गिलेस्पीकी सैनिक कार्रवाई
दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुयी, किन्तु वह अपमानजनक नहीं थी, क्योंकि जेनरलने
कम अपनेको निर्भीक तथा उत्साही सैनिक साबित किया।"

---

[1] At Vol. II p. 635" The operations of General G
pie were most unfortunate but they were not disg
ful, for he showed himself to be at heart a brave
zealous soldier."

१९ अक्तूबर १८१४को गिलेस्पीकी सेना सहारनपुरसे रवाना हुई। तिमली और मोहनके घाटोंसे सिवालक पार हो दोनों सेनायें २४ अक्तूबरको देहरादूनमें आकर मिल गईं। यहाँ आनेमें उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुयी, किन्तु, देहरादूनसे साढ़े तीन मील उत्तरपूर्वमें अवस्थित खलंगा[1] (नालापानी)के मामूलीसे दुर्गमें स्थित तीन-चार सौ नेपाली सैनिकोंने वीर बलभद्र थापाके नेतृत्वमें अंग्रेजोंको महीने भर नाकों चने चबवाते दिखला दिया, कि हिमाचल वीरविहीन नहीं है। २५ अक्तूबरको कर्नल मावीने कुछ छ-पौंडी तथा दो हवाइजर तोपोंसे कलंगा दुर्गको सर करना चाहा, किन्तु कुछ ही गोलोंके चलानेपर प्रयत्न व्यर्थ मालूम हुआ, और सेना देहरादून लौट आयी। २६ अक्तूबरको जेनरल गिलेस्पीने सेना-संचालन अपने हाथमें लिया, किन्तु वह बलभद्रके बहादुरोंका कुछ न बिगाड़ सका। ३१ अक्तूबरको बड़ी जबरदस्त तैयारीके साथ गिलेस्पीने आक्रमण किया। "वहाँ जब कि वह एक हाथमें टोपको हिलाते दूसरेमें तलवार ले अपने आदमियोंको प्रोत्साहन दे रहा था, इसी समय उसकी छातीमें एक गोला लगा, और वह वहीं मरकर गिर पड़ा, उसके साथ ही उसका प्रतिहार ओहारा मारा तथा कितने ही अफसर घायल हुए।"[2]

(२) **गोरखा-वीरता**—अंग्रेजी सेनाने दिल्लीसे सहायता आ जाने तकके लिए आक्रमणको रोक दिया। प्रायः एक मास बाद २४ नवंबरसे दुबारा आक्रमण शुरू हुआ, किन्तु उन्हें तब तक सफलताकी आशा नहीं हुई, जब तक कि किलेके बाहरसे मिलनेवाले पानीके झरनेसे दुर्गरक्षकोंको वंचित नहीं कर दिया गया। प्यासकी मार गोलोंसे भी बुरी थी। बलभद्र ३० नवंबरकी रातको अपने ७० साथियोंके साथ अंग्रेजोंकी सैन्यपंक्तिको चीरते निकल गया। आगे बलभद्र और उसके साथियोंने जौनागढ़में जाकर अंग्रेजोंको नाकों दम किया, फिर वह जेठकमें लड़ा। उसके भी हाथसे निकल जानेपर ये स्वतंत्रताप्रेमी बहादुर रणजीतसिंहकी सेनामें सम्मिलित हो गये। अन्तमें अफगानोंके साथ लड़ते बलभद्र और उसके साथी वीरगतिको प्राप्त हुए। हिमाचलके इन वीर-पुत्रोंका सम्मान उनके शत्रुओंने भी किया। कलंगामें आज भी दो स्मारक खड़े हैं, जिनमेंसे

---

[1] खलंगा नेपालीभाषामें सैनिक केम्पको कहते हैं, जिसको अंग्रेजोंने कलंगा बना दिया।

[2] वहीं पृष्ठ ६३७—

एक जेनरल गिलेस्पीका है, और दूसरा वीर वलभद्र और उसके साथियों जिसपर लिखा है[1]—

“हमारे वीर विरोधी दुर्गपाल वलभद्र और उसके वीर गोरखोंके सम्मा यह उत्कीर्ण है, जो कि पीछे रणजीतसिंहकी नौकरीमें रहते अफगान तोपखा सामने एक-एक करके मर गये।”

इसी स्मारक स्तम्भकी दूसरी ओर लिखा है—

“इस कब्रके ऊपरी ओर पर्वतके सर्वोच्च स्थानपर खलंगा (कलंगा) खड़ा था, जिसे ३१ अक्तूबर तथा २७ नवंबरके दो आक्रमणोंके वाद वृटिश ने १८१४में कब्जा करके पूर्णतया भूमिसात् कर दिया।”

प्रत्यक्षदर्शी अंग्रेज ज० व० फ़्रेजरने कलंगा दुर्गका उस दिनका रोमांच दृश्य निम्न प्रकार वर्णित किया है—[2]

“उस दिन (३० नवंबर १८१४) सवेरे मेजर केलीने किलेमें घुसकर उ अधिकार कर लिया।...दुर्गका सारा भूभाग कसाईखाना वना हुआ था, ज हत और आहत, एवं फटते गोलों द्वारा छिन्न-भिन्न अंग विखरे पड़े थे। जो भी जीवित थे, वे वड़े हृदयद्रावक स्वरमें पानी माँग रहे थे। उनके मुँहमें दिनोंसे एक वूँद भी पानी नहीं गया था। वहाँ भयंकर दुर्गन्ध थी। पहिले गयोंमें कितनोंके शरीर अच्छी तरह दफनाये नहीं गये थे।...हमारे अफ ध्वंसावशेषोंके भीतर अंशतः आच्छादित कितने ही मुर्दोंके अवशेष तथा पाये।...गोले-गोलियोंसे मारी गई वहुतसी स्त्रियोंके शरीर मिले; भुरता गये, तो भी जीवित लड़के भी पाये गये। एक स्त्रीका एक पैर उड़ गया था, अस्पताल भेजा गया, जहाँ वह वच गई। एक छोटा वच्चा मिला, जिसकी जाँघोंसे गोली पार हो गयी थी, वह पूर्णतया स्वस्थ हो गया। एक तीन वर्षका सुंदर लड़का अक्षत मिला, जिसका वाप सूवेदार मारा गया था, और दुर्गमें ही गाड़ दिया गया था।...९०से अधिक मुर्दोंको हमारे देशी सैनि जलाया।...जिस दृढसंकल्पताके साथ एक छोटीसी टुकड़ीने इस छो चोटीको अपेक्षाकृत इतनी वड़ी सेनाके सामने एक महीनेसे अधिक हाथसे

---

[1] “This is inscribed as a tribute of respect for gallant adversary Bulbuder, commander of the fort his brave gurkhas, who were afterwards while in service of Ranjit Singh, shot down in their ranks to last man by Afghan artillery.” [2] At. Vol II pp. 638, 6

नहीं दिया, इसकी प्रशंसा कोई आदमी करे विना नहीं रहेगा—विशेषकर जव कि पिछले दिनोंके भीषण दृश्योंको सामने रखके देखेगा। उनके निहत साथियोंका हृदयवेधक दृश्य, उनकी स्त्रियों और वच्चोंकी यातना, सहायताकी सव ओरसे निराशा, जिसके कारण इस प्रकार दृढ़तासे लड़नेका कारण इसके विना और कोई नहीं हो सकता था, कि वह अपने कर्तव्यके प्रति अत्यन्त अनुरक्त थे। मुहासिरेके समय कलंगाके सैनिकोंने अपने उच्च चरित्रको प्रकट किया। दूसरी जगह गोरखोंका चाहे कोई रूप देखा गया हो, किन्तु यहाँ घायलों तथा वन्दियोंके साथ क्रूरता नहीं की गयी, जहरीले वाण नहीं इस्तेमाल किये गये, कूयें या पानीमें विष नहीं डाला गया, वदलेकी निकृष्ट भावना उन्हें प्रभावित करती नहीं देखी गई। उन्होंने मनुष्यकी भाँति हमारे साथ न्यायोचित ढंगसे लड़ाई की, और लड़नेके वीचवाले विश्रामके वक्त ऐसी उदार नम्रता दिखलाई, जो कि अधिक प्रवुद्ध जातिके अनुरूप हो सकती है। हत या आहत शरीरको अपमानित करनेकी वात ही क्या, उन्होंने तो तव तक वहीं चुपचाप पड़ा रहने दिया, जव तक कि उसे वहाँसे उठा नहीं लाया गया। उन्होंने किसी लाशकी चीजें छीनकर, जैसा कि आमतौरसे होता है, उसे नंगा नहीं किया।...तोपें चल रही थीं, इसी समय एक आदमी दुर्गकी टूटी जगहसे हाथ हिलाते आगे वढ़ता दिखाई पड़ा। तोप थोड़ी देरके लिए रोक दी गयी, और वह आदमी हमारे पास आया। वह एक गोरखा सैनिक था, जिसका निचला जवड़ा गोलेसे चूर हो गया था, और वह साफतौरसे अपने शत्रुसे (चिकित्सा-संवंधी) सहायता माँगने आया था। उसे तुरंत सहायता दी गई और जव उसे अस्पतालसे छोड़ दिया गया, तो फिर उसने अपनी सेनामें जाकर हमसे लड़नेकी इच्छा प्रकट की।”

जिस समय फ़्रेजरने यह पंक्तियाँ लिख रहा था, तव तक गोरखा सैनिक अंग्रेजी साम्राज्यके महत्त्वपूर्ण सेनांग नहीं वन पाये थे। इस युद्धने अंग्रेजोंको समझनेका मौका दिया, और उन्होंने हमारे ही रक्तमांस इन हिमाचलपुत्रोंको भारी हथकड़ियोंको मजवूत करनेका साधन वनाया।

(३) **वीर वलभद्र**—वलभद्रके परदादा अहिराम कुँवर कस्कीका रहनेवाला एक संभ्रांत व्यक्ति था। उसकी रूपवती कन्या ताराको कस्कीके राजाने विना विधि-पूर्वक व्याहके रखना चाहा, क्योंकि खसोंको अभी राजपूत नीची निगाहसे देखते थे। अहिरामने इसे पसंद नहीं किया, और पृथिवीनारायणके पिता नरभूपालके समय वह गोरखामें चला आया। अहिरामके दो पुत्रोंमें जेठे जयकृष्णके पुत्र चन्द्रवीर कुँवरका पुत्र वलभद्र था और कनिष्ठ रामकृष्णका प्रपौत्र जंगवहादुर

(१८४६-७७), जिसने १४ सितंबर १८४६को घोर हत्याकाण्डके वाद पृ नारायणकी संतानको नाममात्रका महाराजाधिराज रख शासन अपने तथा वंशजोंके हाथमें हाल तक के लिये ले लिया। जयकृष्ण एक प्रसिद्ध था। उसका पुत्र चंद्रवीर कुंवर पश्चिम-विजयका एक सेनापति तथा वालका शासक रहा। अंग्रेजोंके आक्रमणके समय वलभद्र कुंवर देहरा ढाई कोस आगे मसूरीके रास्तेमें नालापानीकी पहाड़ी टेकरीपर छावनी डा वैठा था। छावनीको गोरखा भाषामें "खलंगा" कहा जाता है, जिसे लेखकोंने स्थानका नाम दे दिया। वलभद्रका वड़ा भाई वीरभद्र (सिरमौर)में अमरसिंहके पुत्र काजी रनजोरसिंहका सहायक सेनापति नेपाल-पराजयके वाद वलभद्र रणजीतसिंहकी सेनामें अफसर हुआ। १ ई०में सिक्खोंकी कावुलसे लड़ाई हुई। पेशावरका शासक यार मुहम्मद खाँ कर युसुफजई इलाकेमें घुस गया। १४ मार्चको रणजीतसिंहकी सेनाने पर आक्रमण किया, किन्तु उसे असफल होकर लौटना पड़ा। अंतमें सेना भेजी गई, और लड़ाई करते करते वलभद्र और उसके साथी वीर प्राप्त हुए। वलभद्रके पुत्र शरणभद्रको रणजीतसिंहने वृत्ति देकर रखना किंतु उसे स्वीकार न कर वह नेपाल लौट गया। १८४६में जव वलभद्रके वंशने राणा उपाधि ले नेपालका शासन संभाला, तो जंगवहादुरने शरण विधवा वदनकुमारीको चापा गाँव और फर्पिङ्के कुछ खेत जागीरमें दिये, अभिलेखमें "श्रीमद्राजकुमार कुमारात्मज वलभद्र कुँवर राणाजी. . .श्री कुमार कुमारात्म्ज शरणभद्र कुँवर राणाजी"[1] लिखा है।

अंग्रेजोंने जहाँ सैनिक वलसे नेपालको परास्त करना चाहा, वहाँ सेनापतियोंको रिश्वत देकर फोड़नेकी भी कोशिश की। कुमाऊँके शासक व उन्हें आशा थी, इसलिए पहिले कुमाऊँपर आक्रमण नहीं किया। जैसा कि कहा, मेजरजेनरल मोलेने ८००० सेनाके साथ विहारसे सीधे काठमांडवकी प्रस्थान किया, और मेजर-जेनरल वूड गोरखपुरसे ४००० सेना ले वुटवलकी वढ़ा। जेनरल गिलेस्पी ३५०० सेनाके साथ देहरादूनपर चढ़ा। पश्चिममें अम थापाके मुकाविलेमें जेनरल-अकटरलोनी ३१ अक्तूबर १८१४को लुधिया ६००० सेनाके साथ प्रस्थान कर पलसियामें पहुँचा। विहार और गोरख प्रस्थान करनेवाली सेनाओंको सफलता नहीं मिली। कुमाऊँके शासक व

---

[1] "वीर वलभद्र" (सूर्य विक्रम ज्ञवाली, संवत् २००४) पृष्ठ १५

को फोड़नेके लिये अंग्रेज उसे डोटीका राजा माननेके लिए तैयार थे, इसीलिए हिले कुमाऊँपर सेना भेजनेकी अवश्यकता नहीं समझी गई। मुख्य संग्राम क्टरलोनी और गिलेस्पीको लड़ना पड़ा, जहाँ अमरसिंह कई दुर्गोंमें तैयारी रके बैठा हुआ था। नालागढ़के पास अंग्रेजी सेना २ नवंबरको पहुँची। तारीखको गोलावारी आरंभ कर २४ घंटेमें किलेको तोड़ दिया गया, र किलेका जीतना आसान था। इसके वाद एकके वाद एक नेपाली दुर्ग क्तिशाली तोपोंके सामने गिरने लगे। अमरसिंहने अंतमें मलांवके प्राकृ-क पहाड़ी दुर्गमें रुकनेका निश्चय किया। मलाँवके किलेके दाहिने रगढ़का किला था, जिसका सेनापति भक्ति थापा था। शत्रुको भया-क तौरसे नजदीक आया देख १६ अप्रेलको भक्ति थापाने २००० सैनिकोंके साथ बल पहाड़पर पहुँची अंग्रेजी सेनापर आक्रमण किया। अंग्रेजी सेनाने भी वाब दिया। आधुनिक तोपोंके सामने गोरखावीरता कहाँ तक सफल होती? क्ति थापा अपने ७०० सैनिकोंके साथ धराशायी हुआ। ७० वर्षका बूढ़ा सेना-ति अपनी वीरता और सूझके लिए प्रसिद्ध था। अक्टर लोनीने अपने वीर तिद्वंद्वीको बड़े सत्कार-पूर्वक नेपाली सैनिकोंके हाथमें सपुर्द किया। दूसरे दिन नापतिके शवके साथ उसकी दो पत्नियाँ सती हुईं। भक्ति पहिले लमजुङ्के जा केहरिनारायण शाहका सेनापति था, पीछे गोरखा-सेनामें सम्मिलित हो चम-विजयमें अमरसिंहका दाहिना हाथ, तथा कितने ही समय तक माऊँका शासक भी रहा। अंग्रेजोंके लिए भक्तिका मरना कितना महत्त्व ता था, यह एक अंग्रेज लेखकके निम्न वाक्योंसे मालूम होगा—

"इस युद्धमें शत्रुने वार-वार सफलता प्राप्त की, इसके साथ भारतसे बृटिश नको हटा देनेकी इच्छासे राजाओंमें हुए पारस्परिक मेल और विद्रोहकी देखते हुए पलासीके युद्धके वाद अंग्रेजी शासनकी दृष्टिसे इस युद्ध जैसा त्वपूर्ण कोई दूसरा युद्ध नहीं हुआ।"

इस विजयके उपलक्षमें अक्टर लोनीको वैरोनेटकी उपाधि मिली।

मईके प्रथम सप्ताहमें अंग्रेजी तोपें मलाँव दुर्गपर प्रहार करनेके लिए तैयार ८ तारीखको दो दिनका अवसर देते अक्टरलोनीने अल्टीमेटम दिया। तारीखसे गोलावारी शुरू हुई। १५ मईको मलाँवने आत्मसमर्पण किया। १८ दिन पहिले २७ अप्रेल १८१५को कुमाऊँका शासक बमशाह आत्म-ण कर चुका था। अमरसिंहकी आज्ञासे अर्की, सबाथू, जैठक, जगतगढ़, आदि यमुना-सतलजके बीचके सारे किलोंको अंग्रेजोंके हाथमें दे दिया

गया । गढ़वालके किलोंको भी अंग्रेजोंके हाथमें दे देनेकेलिये उसने काजी
वर सिंहको लिख दिया ।

यद्यपि युद्धका फैसला अमरसिंहकी हार और मलाँव-दुर्गके पतनके
हुआ, किंतु जहाँ तक गढ़वालमें युद्धका संवंध है, वहाँ जेनरल गिलेस्पीकी
देहरादूनपर आक्रमण विशेष महत्त्व रखता है ।

(४) **चीनसे सहायता याचना**--१८१५में अव भी चीनकी
उतना ह्रास नहीं हुआ था । अंग्रेजोंके प्रहारसे संत्रस्त नेपाल (राजा)
समय चीन-सम्राट्के पास निम्न आवेदनपत्र भेजा था--

“मैं चीन-सम्राट्के आधीन हूँ । मेरे राज्यपर आक्रमण करनेका कोई
नहीं कर सकता । जव किसीने मेरे राज्यमें घुसनेकी कोशिश की, तो
दया और संरक्षणसे मैं उसे दुर्गत करके भगानेमें सफल हुआ । लेकिन
एक शक्तिशाली भयंकर शत्रुने मुझपर आक्रमण किया है । मैं आपके
हूँ, और आपकी रक्षा और सहायताका भरोसा रखता हूँ । कंकासे सतल
सौ कोसमें हमारे वीच युद्ध हो रहा है । भोट (तिव्वत) ले लेनेके मंसूबे
नेपालको लेना चाहता है, इसीलिए झगड़ा खड़ा करके उसने युद्ध घोषि
दिया । पाँच या सात वड़े वड़े युद्ध हो चुके हैं, किन्तु सौभाग्यतया मह
सम्राट्की महिमासे २०००० शत्रुओंको नष्ट करनेमें सफल हुआ हूँ, तो भी
पास सम्पत्ति और साधन वड़े हैं । उसने एक कदम भी पीछे हटे विना
नुकसान सह लिये हैं । उसे वहुतसी कुमक लगातार पहुँच रही है, तथा
सभी ओरसे मेरे देशपर आक्रमण कर रखा है । यद्यपि मैं पहाड़ और मै
एक लाख सैनिक प्राप्त कर सकता हूँ, किन्तु वेतन दिये विना उन्हें रख नहीं स
वेतन देनेकी पूरी इच्छा रखता हूँ, किन्तु वैसा करनेके लिए मेरे पास साध
है । विना सिपाहियोंके मैं शत्रुओंको भगा नहीं सकता । गोरखालियोंको
करद समझिये, सोचिये कि अंग्रेज नेपाल और भोटको जीतना चाहते हैं
कारणोंसे इतने रुपयोंसे मदद कीजिये, कि हम सेना भरती कर आक्रमणका
भगा सकें, और यदि आप रुपयेकी सहायता नहीं देना चाहते, और हमारी सह
के लिए सेना भेजना पसंद करते हैं, तो यह भी अच्छा है । दरमाका
अच्छा है । आप दरमाके रास्ते आसानीसे दो-तीन लाख सेना बंगाल
कलकत्ता तक अंग्रेजोंके भीतर भय और भगदड़ पैदा कर सकते हैं । शत्रुने
सभी राजाओंको अपने अधीन कर लिया है, और देहलीके वादशाहके
भी हड़प लिया है । अतएव ऐसी आशा है, कि सभी मिलकर गोरोंको

काल बाहर करनेके लिए एक हो जायेंगे। इस बातसे आपका नाम सारे जंबू-पमें प्रसिद्ध हो जायगा, और आपकी जहाँ भी आज्ञा होगी, यहाँके निवासी नेके लिए तैयार मिलेंगे। यदि आप समझते हैं, कि नेपालपर विजय और रखालियोंका चीन-सम्राट्की छत्रछायासे जबर्दस्ती अलग किया जाना परम-ारकके स्वार्थोंको कोई खास हानि नहीं पहुँचावेगा, तो मैं आपको यह सोचनेके ए प्रार्थना करता हूँ : बिना आपकी सहायताके मैं अंग्रेजोंको भगा नहीं सकता। वही लोग हैं, जो हमारे भारतको जीत चुके हैं, और देहलीके तख्तको प चुके हैं, और यह कि अपनी सेना और साधनोंसे उनके विरुद्ध मैं कोई सफलता त नहीं कर सकता, और आगे दुनिया कहेगी, कि चीन-सम्राट्ने अपने अधीन ा करद (राजा) को उसके भाग्यपर छोड़ दिया। मैं संसारके दूसरे सारे सत्ता-रियोंके ऊपर चीन-सम्राट्को स्वीकार करता हूँ। अंग्रेज नेपाल पर अधिकार कर रीनाथ, मानसरोवर तथा दिगरचा (शिगर्चे) के रास्ते ल्हासा जीतनेके लिए आगे गे। इसलिए प्रार्थना करता हूँ, कि आप अंग्रेजोंको लिखकर कहें, कि वह आपके ीन तथा करद गोरखा-राज्यकी भूमिसे अपनी सेनाओंको हटा लें, अन्यथा हम यताके लिए सेना भेजेंगे। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कि धन या सेनाके रूपमें यता भेजनेमें देर न करें, जिसमें कि मैं शत्रुको हटाकर पहाड़ोंपर अधिकार सकूँ; नहीं तो कुछ ही वर्षोंमें वह ल्हासाका भी स्वामी बन जायेगा।"

लेकिन चीनमें तो १८१३से ही भयंकर गृहकलह आरंभ हो गयी थी, देवपुत्र भट्टारक मदद कहाँसे करते ?

(५) संधि—

रामशाहके समयसे राजगुरु चले आते परिवारके गजराज मिश्र चंद्रशेखर ध्यायके साथ संधिवार्त्ताके लिए भेजे गये। अंग्रेजोंने निम्न इलाकोंको नेकी शर्त्त रखी—

लड़ाईके पूर्व झगड़ेका इलाका,
काली-रापतीके बीचकी तराई,
बूटवल छोड़ रापती और गंडकके बीचकी तराई,
गंडक-कोशीके बीचकी तराई,
मेची-तिस्ताके बीचकी तराई,
मेची तिस्ताके बीचका पहाड़ी इलाका,
कालीके पश्चिमका सारा गोरखा-राज्य।

नेपालियोंने शर्तें नहीं मानी, विशेषकर कालीसे पूर्वकी तराईको वह देना

नहीं चाहते थे। इसपर फिर लड़ाई शुरू हो गई। अक्टरलोनी १० १८१६को काठमांडवके रास्तेपर भिछाखोरी-अमलेखगंज पहुँच गया। जब के अंत तक मकवानपुरमें भी हार खानी पड़ी, तो नेपालने संधिकी शर्तें स्वीकार कर लीं, और सुगोलीके संधिपत्रपर हस्ताक्षर कर दिया।

§७. अंग्रेजी शासन

१. अंग्रेज शासक—

३० नवंबर १८१५को खलंगाके पतनके साथ गढ़वालका स्वामित्व हाथमें चला गया। गढ़वालके राजा सुदर्शनशाहने पहिले ही मेजर देहरादून और (चंडी, बिजनौर जिलेमें) को कंपनीके हवाले करनेको कह किन्तु जीतनेके वाद अंग्रेजोंने गढ़वालके भी दो टुकड़े करके सबसे भागको जिसमें राजधानी श्रीनगर थी अपने हाथमें रखा, और वि० जुलाई १८१५में घोषणा की, कि अलकनंदा और मंदाकिनीके पूर्वके को अब कंपनीकी प्रजा समझना चाहिए। गार्डनर कुमाऊँ-गढ़वालका कमिश्नर थोड़े समयके लिए हुआ और उस समय भी ट्रेल उसका तवसे १८३५ तक इस भूभागका भाग्यविधाता ट्रेल रहा। कंपनी शायद रुपया लेकर सारे गढ़वालको देनेको तैयार थी, किन्तु उस समय उतना देना सुदर्शनकी शक्तिके वाहर था। ४ मार्च १८२०की संधिके अनुसार शाहका टेहरी जिलेपर अधिकार मान लिया गया। पुरानी सुदर्शनशाहने टेहरी (२२७८ फुट) को अपनी राजधानी वनाई, जो समय एक गाँव था। १८४०में अंग्रेजोंने श्रीनगरको अधिक गढ़वालका शासन-केन्द्र पौड़ीमें वदल दिया।

२. अंग्रेजी शासनपर मोलाराम—

चित्रकार मोलारामने अंग्रेजी शासनके परिणामका चित्र खींचते हुए

घँसा जवसौं हिन्दोस्ताँमें फिरंगी सैर करता है।
ज़मी, जागीर, रोजीना[2] सभीका फैर[3] करता है॥

---

[1] पृथिवी नरायणके बाद निम्न नेपाल राजा हुये—१०. सिंह प्रताप, ७७) ११. रणबहादुर (१७७७-९९), १२. गीर्वाण युद्ध, (१७९९- राजेन्द्र विक्रम (१८४७-८१), त्रैलोक्यवीर, १५. पृथिवी, (१८८१- १६. त्रिभुवन वीर (१९११—)

[2] पेंशन

[3] खतम

भई जागीर तागीरें[1] मिलक[2] वरवाद सवही की।
मलिकको[3] कैदमें दीया मुलकपै कैह्ल[4] करता है॥
किसीका आशना नाहीं भरा रहता है गरेंमें[5]।
कलम ले दस्त जुज खूँवाद (वह) ना मेह्ल करतां है॥
छुड़ा सव फारसी-हिन्दी अंग्रेजी जवाँ पढ़ता।
करै यह चाकरी जिसका उसीको ज़ेर[6] करता है॥...
कमीना पास रखता है खिरद-मन्दाँ[7]का दुश्मन है।
मायल[8] है नाज़नीं[9]-ऊपर चुँ चश्मे सैर करता है॥...
सिरकी उतार कन्धे कन्धेकी ज़मीं पै।
लेता है मुल्क खोसकै रिन्देकी थमी पै॥
देता है फिर सलीना नहिं और कुछ रकम।
रखता है मुल्क कब्जेमें कम्पनी हुकम॥...
इन्साफ नहीं साफ फिरंगीके ऐन[10]में।
फिरते हैं सभी साहेव रंडीके रैनमें॥
चहती है जिसे रंडी करती है उसे प्यार।
मालिकको मिले धक्के होते हैं खुशी यार॥
इन्साफकी अदालत आलम सौं उठ गई।
वैठी है, पुलिस आनकै सव रीत छुट गई॥...
हिन्दू या मुसलमान सव तगीर[1] हो गये।
अंग्रेज वर-ज़मीं ले अमीर हो गये॥
अमीर थे जो कोई सो हो गये फकीर।
विरता, जगीर उन सवका हो गया तगीर[1]॥
मिलता नहीं रोज़ीना सुनता न कोई दाद[11]।
गरीव इल्मदार करै किसपै जा फरियाद॥
मुसकिल पड़ी सभीकौ कुछ जात ना कही।
गुलामको सलाम मोलाराम हो रहीं॥...[12]
लेते नहीं सलाम न सुनते हैं किसूकी।

---

[1]खतम, [2]संपत्ति, [3]स्वामी, [4]जुल्म, [5]अभिमान, [6]नीचा दिखाता, [7]विद्वानों [8]मोहित, [9]सुंदरी, [10]आईन, कानून, [11]न्याय।

[12]"विराट हृदय" (शंभुप्रसाद बहुगुणा) १९५० पृष्ठ ३८ ४२

बामनकौ न परनाम राम-राम किसूकी ॥
अर्जी करै जो कोय वो पहिलों ही घुरकते ।
मजलसके बीच कायद आपसमें चुरगते ॥
रहते हैं घुसे साहेव खानेके बीचमें ।
होते हैं खफा अंदर आनेके बीचमें ॥
ताकत नहीं किसूकी विन वुलाये कोई जा ।
रहते हैं पड़े ऐशमें करते हैं नित मज़ा ॥
शर्राव रंगारंग जो हरदम ही पीवते ।
खाते हैं गोश्त सबका डरते न जीवते ॥
हल्लाल और हराम कछू जानते नहीं ।
खाते हैं ढोर वो सूवर कछू मानते नहीं ॥
हिन्दू न मुसल्मान है हैवान फिरंगी ।
करते हैं मचामच्च हो आलममें तरंगी ॥...
मतलवका सभी अपने आईन वनाया ।
हिन्दू व मुसल्मानका सव राह उड़ाया ॥...
अव्वल बने सिपाही गरीवी ही चालकी ।
लेते हैं मुल्क खोस फिर करते हैं मालकी ॥...
साहब इसम वसियार था दिल तंग क्यों किया ।
विरता, जगीर, गूंठ सभीका क्यों हरलिया ॥
छोटा था राज गढका देता सो वी रहा ।
मोटा था गोरख्याली उन ढेर जस लिया ॥
खोटा था अमरसिंह जड—मूलसों गया ।
अपने ही दस्तसेंती जहर घोल कै पिया ॥...
आम है यो बात मोलारामकी जहाँ ।
माने तो वाह-वाह है यह ऐन कहि दिया ॥

अंग्रेजोंके आते ही श्रीनगरकी जो दुर्दशा है, उसपर मोलाराम लिखता है—

श्रीनग्र वहै अव नाहि रह्यो, अति विग्र भयौ कवलौं लहिना ।
गढवालमें हाल रह्यो न कछू, दुख सुक्ख परै कवलौं सहिना ।
निरमानुषता पुर होय रही, इन नीचनके सँग क्या कहिना ।
रहिना क्यों कीमत नाहि जहाँ, गुनिकौ न उचित्त तहाँ रहिना ।
गुणग्राहक ते नरनाह कितै, गुण-चाह जितै तहहीं रहिना ।

निज देस हिं ते परदेस भलो, अपनो जहं जाय भिड़ै दहिना ॥
लहना जंह चार अचार भलो, उनके दरवारहिं कौ गहिना ।
रेहना क्यों कीमत नाहीं जहां, गुनिको न उचित्त तहां रहिना ॥२॥
कविकी कविता न सुनै ये विथा, अपनी प्रभुता मैं करै कहिना ।
कवहूँ कवि होय कै छंद पढ़ै, कवहूँ सुरताल करै गहिना ॥
जस-कीरत जानत नाहिं कछू, उनके सँगमैं जो कहा लहिना ।
रहिना क्यों कीमत नाहिं जहाँ, गुनिको न उचित्त तहाँ रहिना ॥३॥

३. पर्गने और पट्टियां—

गढ़वाल अब टेहरी और गढ़वाल दो जिलोंमें विभक्त है ।

(१) गढ़वाल जिलेमें निम्न तीन तहसीलें और वारह पर्गने हैं ।

तहसील	पर्गने
चमोली	५—चांदपुर(८),दशौली (३),नागपुर(९), पैनखंडा(२),वधाण(६)·
पौड़ी	२—देवलगढ (७), वारहस्यूं (१४)
लैंसडौन	५—चौंदकोट (७), भावर (४), सलाण-गंगा(९), सलाण-तल्ला, (१०) सलाण-मल्ला

गढवाल जिलेके वारह पर्गनोंमें निम्न ८९ पट्टियां हैं

पट्टी	पर्गना
अजमेर	गंगा-सलाण
असवालस्यूँ	वारहस्यूं
इडवालस्यूं	"
इडियाकोट (तल्ला, मल्ला)	मल्ला-सलाण
उदयपुर तल्ला	गंगा-सलाण
" पल्ला	"
" वल्ला	"
उरगम्	नागपुर
कटूलस्यूं	देवलगढ़
कडाकोट	वधाण
कंडवाल स्यूं	वारहस्यूँ
कंडाल स्यूँ	देवलगढ़

१३. कपिरी	वधाण
१४. कफोलस्यूं	वारहस्यूं
१५. करंदू पल्ला	गंगा-सलाण
१६. " वल्ला	"
१७. कालीफाट तल्ली	नागपुर
१८. " मल्ली	"
१९. किमाडी (किमगाडी) गढ	चौंदकोट
२०. कोलागढ़	मल्ला-सलाण
२१. कौडिया पल्ला	तल्ला-सलाण
२२. कौड़िया वल्ला	तल्ला सलाण
२३. खनसर	वधाण
२४. खाटली (खाल्टी)	मल्ला-सलाण
२५. खातस्यूं	वारहस्यूं
२६. गगवाड़स्यूं	"
२७. गुजड़ू	मल्ला-सलाण
२८. गुराड़स्यूं	चौंदकोट
२९. घुड़दुड़स्यूं	देवलगढ़
३०. चलणस्यूं	"
३१. चोपड़ाकोट	"
३२. चौथान	"
३३. जेंतोलस्यूं	चौंकोट
३४. ढाईज्यूली	चांदपुर
३५. ढांगू तल्ला	गंगासलाण
३६. " मल्ला	"
३७. ढ़ौंड़्यालस्यूं	मल्ला-सलाण
३८. तलाईं	"
३९. तैली	चांदपुर
४०. दशोली तल्ली	दशोली
४१. " मल्ली	"
४२. धनपुर	देवलगढ़
४३. नन्दाक	वधाण

४. नागपुर तल्ला	नागपुर
५. " विचल्ला	"
६. " मल्ला	"
७. नाँदलस्यूँ	वारहस्यूँ
८. पटवालस्यूँ	"
९. पारकंडी	नागपुर
०. पिंगली पाखा	चौंदकोट
१. पिंडरवार (पिंडरयार)	वधाण
२. पैडुलस्यूँ	वारहस्यूँ
३. पैनों	तल्ला-सलाण
४. पैनखंडा तल्ला	पैनखंडा
५. " मल्ला	"
६. वंगारस्यूँ	मल्ला-सलाण
७. वणस्यूँ	देवलगढ़
८. वणेलस्यूँ	वारहस्यूँ
. वंड	दशोली
. वदलपुर तल्ला	तल्ला-सलाण
. " पल्ला	"
. " मल्ला	"
. वनगढस्यूं	वारहस्यूँ
. वामसू	नागपुर
. विजलोट तल्ला	मल्ला-सलाण
. " वल्ला	"
. विडोलस्यूँ	देवलगढ़
. वूंगी	तल्ला-सलाण
. मनियारस्यूँ (पश्चिमी, पूर्वी)	वारहस्यूँ
. मवालस्यूँ	चौंदकोट
. मेलधारस्यूँ	मल्ला-सलाण
. मैखंडा	नागपुर
. मोटा ढाँक	भावर
. मौंदाड़स्यूं	चौंदकोट

७५. रानीगढ़	चांदपुर
७६. रावतस्यूं	बारहस्यूँ
७७. रिंगवाड़	चौंदकोट
७८. लंगूर	गंगासलाण
७९. लोहवा	चांदपुर
८०. सनेह	भावर
८१. सावली	मल्ला-सलाण
८२. सितोनस्यूं	बारहस्यूँ
८३. सिरगुर	चांदपुर
८४. सिली	"
८५. सीला-तल्ला	तल्ला-सलाण
८६. " -मल्ला	"
८७. सुकरौ	भावर
८८. सैंधार	मल्ला-सलाण
८९. हलदूखाता	भावर

(२) टेहरी जिलेमें निम्न पर्गने और पट्टियाँ हैं—

पर्गना	पट्टी
१. उत्तरकाशी (वाड़ाहाट)	गमीरी
	टकनौर
	धनारी
	नाल्डकठूर
	वाड़ागढ़ी
	वाड़ाहाट
२. उदयपुर	अठूर
	उदकोट
	गुंसाईं पट्टी
	जुम्मापट्टी
	विष्टपट्टी
	मन्यार
	सारज्यूला
३. कीर्तिनगर	कड़ाकोट+ढुढसिर

	चौरास+फुटगढ	
	डाँगर	
	वड्यारगढ+विलेड़ी	
	वारहज्यूला+अकरी	
	मलेथा	
	लोस्तु	
४. चंद्रवदनी	वनगढ़	पल्ला
	,,	विचल्ला
	,,	वल्ला
५. चिल्ला	आरगढ़	
	केमर	
	कोटीफेंगुल	
	गोनगढ़	
	थातीं-कठूर	
	वासर	
६. जौनपुर	इन्डवालस्यूँ	
	खाटल	
	गोडर	
	छज्यूला	
	दसगी+हातड़	
	दसज्यूला	
	पालीगाढ	
	लालूर	
	सिलवाड़+कोढी	
७. नरेन्द्रनगर	कुंजणी+भगद्वार	
	क्वैली	
	दोगी	
	धार अकरिया	
	पालकोट	
	बमूंड़	

	भरपुर
	मखलोगी
	सकलाना
८. प्रतापनगर	ओमा
	गाजणाकठूर
	धरामंडल
	भदुरा
	रमोली तल्ली
	रमोली मल्ली
	रैका
९. भरदार	बड़मा+फुटगड़
	बांगर
	भरदार
	लस्था
	सिलगढ़
१०. भिलङ्	नैलचामी
	भिलङ्
	सांकरी
	हिदाऊ+ग्यारह गांव
११. रवांई	अढ़ोर+वड़ासू
	गड़गाढ+ओरे
	गींट
	ठकराल
	पंचगाई
	फतेपर्वत
	वंगान
	वजरी
	वड़कोट+पौंड़ी
	वड्याल
	वनाल
	भंडारस्यूं

मुंगरसंती
रामासिराई तल्लीं
" मल्लों
सिंगलूर

४. गढ़वाल-शासन

१८१५ से १८२९ तक कमिश्नर ट्रेल कुमाऊं, गढ़वालका सर्वेसर्वा था। ८१९ में पटवारी-प्रथा कायम हुई। १८३९ में गढवाल कुमाऊंसे स्वतंत्र जिला ना, जिसका अधिकारी पहिले असिस्टेंट कमिश्नर कहा जाता था, पीछे डिपुटी-मिश्नर कहा जाने लगा। वह, जिला अफसर, जिला दंडनायक (मेजिस्ट्रेट), ला कलेक्टर (कर-संग्राहक) और जिला-न्यायाधीश भी था। ८४ पटवारी , जो प्रायः एक-एक पट्टीके होते, जिनके ऊपर छ कानूनगो रहते हैं। ड़के पटवारी मैदानी पटवारियोंसे अधिक अधिकार रखते हैं—वह अपने ाकेके पुलिस-सवइन्सपेक्टर भी हैं। हरएक गांवमें एक प्रधान होता, जो लगुजारी जमा करनेमें नीचेके लंवरदार या मुखियाका काम करता था। ानके ऊपर थोकदार थे, जिनका अधिकार पीछे कम करके उन्हें शोभाके लिये छोड़ा गया।

अपराधोंकी कमी तथा उत्तरी सीमापर किसी शक्तिशाली राज्यशक्तिके होनेसे गढ़वालमें पुलिसकी अधिक अवश्यकता नहीं थी, और जैसा कि ऊपर हा गया, यहांके पटवारीको ही सवइन्सपेक्टरके अधिकार प्राप्त हैं। १९३१ में थाने और सात चौकियां थीं।

थाने—ऊखीमठ, कोटद्वारा, जोशीमठ लैंसडौन, श्रीनगर, कर्णप्रयाग और माणा तथा वम्पा (नीती) में भी।

चौकियां—कणप्रयाग, चमोली, दुगड्डा, देवप्रयाग, पौड़ी, वदरीनाथ, मेहलचौरी

(१) गढ़वाल-जिलाबोर्ड—

देहातकी शिक्षा, स्वास्थ्य और यातायातका प्रबंध जिलाबोर्डके हाथमें है। ३१ के पहिलेके कुछ वर्षोंका इसका आय-व्यय निम्न प्रकार था—

	आय	व्यय
२५-२६	४,९४,७०१ रुपया	५,२४,३६३
२८-२९	३,४६,१५५	३,३०,८४१
३०-३१	३,०१,९४५	२,९८,६२८

कुछ विषयोंका आय-व्यय—

	शिक्षा		स्वास्थ्य		लोक
	आय	व्यय	आय	व्यय	व्यय
१९२५-२६	१,५५,८३९	१,८६,३९७	३०,९५१	२५,९८४	२,६८,
१९२८-२९	२,१७,७९७	२,२९,७२०	३०,६८४	२१,६१७	४४,३
१९३०-३१	१,६७,०५४	१,८६,४३८	२५,४३८	२५,०३९	५७,४

(२) मालगुजारी—जिलेका भूकर १८२१में ५४,३८९ रुपया था, १९३०में २,५५,१६१ हो गया, जिसका विभाजन निम्न प्रकार है—

खालसा (सरकारी)	२,३०,४४२
गूंठ (देवोत्तर)	१६,३८२
सदाव्रत	७,६१६
माफी	७२१

पर्गनोंकी आबादीके अनुसार मालगुजारी+सेस निम्न प्रकार थी—

१. चांदपुर	२२,४२६
२. चौंदकोट	१६,७८७
३. दसौली	३६६
४. देवलगढ़	२०,५८१
५. नागपुर	२३,०२३
६. पैनखंडा	२,५३४
७. वधाण	१५,५१०
८. बारहस्यूं	४५,८३२
९. भावर	२२८
१०. सलाण गंगा	३३,५८४
११. सलाण तल्ला	२६,८३४
१२. सलाण मल्ला	३०,८६४

५. टेहरी-शासन

(१) सुदर्शनशाह (१८१५-५९)—गोरखा राज्यके वाद गढ़ एक भाग सुदर्शनशाहको मिला, यह कह आये हैं। सुदर्शनशाहने भिलंगना भागीरथीके संगमपर टिहरी (अक्षांश ३०°.२२″.५४′×७८°.३१′.१८

अपनी राजधानी वनाया। धीरे-धीरे उसने एक नगरका रूप लिया। १८५७के विद्रोहमें भारतके और राजाओंकी भाँति सुदर्शनशाहने भी अपनी अंग्रेज-भक्ति दिखलाई थी। टेहरीके एक भूतपूर्व-दीवानके अनुसार[1] "राजाने दो सौ सिपाही हथियारबंद राजपुरकी पहाड़ीपर मसूरीकी रक्षाके लिए रखे, जो शहरके शान्त होने तक वहीं पहरा देते रहे। टिहरीमें और अन्य स्थानोंमें यह प्रवन्ध कर दिया, कि अंग्रेज जिस समय जहाँ जावे, उसका तत्काल उचित आतिथ्य किया जाये, जिस प्रकारकी सहायताकी उसे अवश्यकता हो, तुरन्त दी जाये। टिहरीमें स्वयं महाराज उन अंग्रेजोंको आश्वासन और सहायता देते थे, जो प्रायः शिमला मसूरीसे पौड़ी, नैनीताल...जाया करते थे।...नजीवावादके नवावने एक पत्र...महाराज सुदर्शनशाहके पास इस अभिप्रायसे भेजा, कि वह उसका साथ दे,...ताकि उनका पूरा राज्य उनके हाथ आ जाये।...महाराज सुदर्शनशाह...ने लिखा।...तुम अंग्रेजोंकी शरण लेकर क्षमा माँगो।...(टेहरीकी) सहायताके वदले बृटिश-सरकार...विजनौरका कुछ इलाका देना चाहती थी, परन्तु महाराज...देहरादून और बृटिश गढ़वाल चाहते थे। मामला चल ही रहा था, कि सन् १८५९के ७ जूनको उनका स्वर्गवास हो गया।"

(२) भवानीशाह (१८५९-७१)—उत्तराधिकारके लिए भवानीशाह और शेरशाहमें कुछ झगड़ा हुआ, किन्तु कुमाऊँके कमिश्नर रामजेका वरद-हस्त भवानीशाहपर पड़ा और वही गद्दीपर वैठाये गये। शेरशाह पकड़कर देहरादूनमें नजरवंद कर दिये गये। १२ वर्ष शासन करनेके वाद ४५ वर्षकी आयुमें भवानीशाह मरे।

(३) प्रतापशाह (१८७१–८६)—तत्स्थाने तत्पुत्र २१ वर्षकी आयुमें गद्दीपर वैठे और १५ वर्ष वाद ३५ वर्षकी अवस्थामें मर गये। इन्होंने प्रतापनगर वसाकर अपने उत्तराधिकारियोंमें अपने नामसे नगर वसानेकी चाट लगा दी, जिससे टिहरी नगरको क्षति हुई।

(४) कीर्त्तिशाह (१८८६ अप्रेल १९१३) तत्पुत्र १२ वर्षकी आयुमें गद्दीपर वैठे। इन्होंने कीर्त्तिनगर अपने नामसे वसाया। यह ४० वर्षकी आयुमें मर गये।

(५) नरेन्द्रशाह (१९१३–५० ई०)—तत्स्थाने तत्पुत्र नरेन्द्रशाह गद्दीपर वैठे। प्रथम विश्वयुद्धके वाद भारतमें जो नवजागृति हुई, उससे टिहरी भी

---

[1] "गढ़वालका इतिहास" (हरिकृष्ण रतूड़ी) पृष्ठ ४६५–६६

अछूता नहीं रह पाया। श्रीदेव सुमन और उनके साथियोंने यहाँ भी स्वतं ज्योति जगानी चाही। "सुमन"को वलि चढ़ना पड़ा। अंतमें भारत हुआ, जिससे पहिले ही नरेन्द्रशाहने सिंहासन छोड़ दिया था। फिर टिहरी प्रदेशका एक जिला वन गया। १९५०में पहाड़से मोटर गिर जानेसे शाहकी मृत्यु हो गई। अव तत्पुत्र मानवेन्द्रशाह टेहरीके राजा के तौर सरकारसे पेंशन पाते हैं।

९८. गणराज्य

१५ अगस्त १९४७को अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये। किन्तु खुशीसे भारत नहीं छोड़ा। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियोंने मजवूर किया, कि भारतसे अपने शासनको हटा लें; तो भी उन्होंने इस पूरी कोशिश की, कि भारत सव तरहसे कमजोर और इंग्लैंडका अनुचर रहे। उन्होंने पाकिस्तान और हिंदुस्तानके दो राज्योंमें ही भारतको वाँट दिया, वल्कि इसका भी पूरा प्रवंध कर दिया, कि भारत कमसे कम और स्वतंत्र राज्योंमें विभक्त हो जाय। इसीलिए उन्होंने देशी चलते वक्त भारतमें न मिलाकर स्वतंत्र छोड़ दिया, साथ ही उनके एजंटोंने सतोंको इस वातके लिए उकसाया, कि वह अपनेको स्वतंत्र घोषित कर दश-दश पाँच-पाँच गाँवोंकी रियासतोंके लिए यह सम्भव नहीं था, कि वह स्वतंत्र सत्ताको कायम रख सकें। तो भी शिमलाके पास दो-तीन गाँवोंकी ठियोगके राणाने अपनेको एक दिनके लिए विल्कुल स्वतंत्र घोषित कर दिया ट्रावनकोर, इन्दौर, वड़ोदा, आदिने कितने ही महीनों तक पैंतरेवाजी जारी टेहरीके राजाकी तानाशाही कितने ही सालोंसे चली आती थी। उसके सुमनको अपने तरुण प्राणोंकी आहुति देनी पड़ी, और कितने ही देशभक्तोंको संघर्ष करते प्राणोंकी वलि चढ़ानी पड़ी। अंग्रेज शायद यह भूल रहे थे, कि सहयोग और समर्थनके विना रियासतोंकी सत्ताको वनाये नहीं रखा जा जनताने राजाओंके विरुद्ध कभी कभी विद्रोह भी किये, किन्तु अंग्रेजी सामने उन्हें झुकना पड़ा। अंग्रेजोंके हाथके खिलौने ये राजे उन्हींके तक जीते आये थे। अव उनके वरदहस्तके उठ जानेपर रियासती और चल नहीं सकती थी। कांग्रेसके कुछ नेताओंने रियासतोंके विलीनीकर एकीकरणका वहुतसा श्रेय राजाओंको देना चाहा, और रियासती प्रजाके

र सहायताको भुला देनेकी कोशिश की, लेकिन, हमें अच्छी तरह मालूम है, यदि किसी राजाको प्रजाकी जरा भी शह मिलती, तो वह अपनेको स्वतंत्र पित किये विना अथवा कमसे कम संघर्ष किये विना नहीं रहता। राजाओंने ा, कि प्रजाके विरोधके कारण उनका कोई संघर्ष सफल नहीं हो सकता, उलटे टी-मोटी पेंशन मिलनेकी जो आशा है, वह भी हाथसे चली जायेगी। यही रण था, जो कि टेहरीके राजा और उनके भाई-बन्धोंने भवितव्यताके मने शिर झुकाना अच्छा समझा। कांग्रेसी नेताओंने जितना भी हो सका की आर्थिक, सामाजिक ही नहीं राजनीतिक स्थितिको भी वरकरार रखनेकी शिश की, जिसका फल मिला टेहरीमें निर्वाचनमें कांग्रेसियोंकी पूर्ण पराजय।

१५ अगस्त १९४७को अंग्रेजी शासनकी काली छाया भारतसे हटी, र २६ जनवरी १९५०से भारतको गणराज्य भी घोषित कर दिया गया, तो भारत अभी तक राजनीतिक और आर्थिक तौरसे वृटिश साम्राज्यका अभिन्न है। हमारे नेताओंने इसे सुनहला संबंध कहकर भूरि भूरि प्रशंसा की, किन्तु ई कोई धोखेमें नहीं पड़ सकता। अपने उत्तरी पड़ोसीको लाल वनते देखकर रे कुछ नेताओंकी नींद उतनी ही हराम हो गई है, जितना कि एंग्लो-रिकन साम्राज्यवादियोंकी। पिछले चार सालोंमें गढ़वाली लोगोंकी जिस ह उपेक्षा की गई है, उसे देखते उनके भाव यदि अधिक कड़वे हो जायें, तो र्य नहीं। उन्हें स्वदेशी राज्यसे वड़ी आशा थी, किन्तु हर जगह निराश पड़ा। यातायातका सुधार और सिंचाईकी नहरें यहाँकी प्रथम अवश्यकतायें सरकारके मंत्री, तो जान पड़ता है मिट्टीकी मूरत हैं, और पुराना नौकर-यंत्र प्रजाकी गाढ़ी कमाईमें आग लगानेमें पहले ही जैसा चला जा रहा है। ी थैली और भविष्यको देखे विना वड़ी वड़ी योजनायें हाथमें ले ली जाती र दस-बीस लाख रुपया वर्वाद करके उन्हें छोड़ दिया जाता है। चमोलीसे मठ तक २७ मील मोटरकी सड़क वनानेकी योजना स्वीकृत की गई। प्रतिवर्ष पाँच-पाँच छ-छ मीलकी सड़क वनानेका प्रोग्राम रहता, तो आजकी शा न होती। औंधी खोपड़ीवालोंने एक साथ ही २५ मीलकी सड़क वनानेमें लगा दिया। नदियोंके वड़े पुलोंको छोड़कर छोटे पुल और पुलियाँ भी र की जाने लगीं। चमोलीके पासमें अलकनंदासे मिलनेवाली, विड़ही-गंगाके के लिए लोहा भी तैयार कर लिया गया। एकाएक तार आया, कि वजटमें के अभावके कारण काम रोक दो। साल भरसे ऊपर सड़कका काम वंद रहा। २४ लाख रुपया लगाकर जो सड़क तैयार की गई, उसे वर्षा वहा ले जानेके

लिए तैयार थीं। जनताकी कमाईके लाखों रुपयोंकी होली जलानेका अ कौन है ? यदि पाँच-पाँच छ-छ मीलकी सड़क साल-साल बनती, तो ए पैसा बर्बाद न होता। उत्तर-प्रदेशमें बहुतसे जिलों और स्थानोंमें आज स बसें (रोडवेज) चल रही हैं। उनमें यात्रियोंको अधिक आराम रहता है कहनेकी अवश्यकता नहीं। कोटद्वारासे श्रीनगर होते चमोली तक मे सड़क है। बदरी-केदारका यात्रा-मार्ग होनेके कारण यहाँ यात्रियोंकी बड़ी रहती है। लोगों और सार्वजनिक संस्थाओंने बहुत कोशिश की, प्रस्ताव किये, कि इस सड़कपर रोडवेजकी बसें चलाई जायें, लेकिन लखनऊके प्राइवेट-बस मालिकोंसे इतने प्रभावित हैं, कि कोई सुनवाई नहीं होती। कीर्ति कीर्तिनगरकी बसोंमें तो पूरी अंधेरगरदी चल रही है।

शिक्षा, स्वास्थ्यरक्षा आदि जिस चीजपर दृष्टि डालें, सभी जगह आँख का प्रयत्न किया जा रहा है। कहीं कहीं सिंचाईकी नहरोंका आरंभ ऐसा ही है। हिंदीमें कचहरियों और सरकारी कार्यालयोंका काम होनेसे जनताको सुविधा थी, लेकिन हमारा राज्य आज भी जनताके लिए नहीं बल्कि नौकर सुविधेके लिए हो रहा है। टेहरी राज्य जब विलीन नहीं हुआ था, तो रियासती सरकारका सारा कारबार हिंदीमें होता था, अब जब टेहरी ए हो गया, तो वहाँके काले साहबबहादुरोंके सुविधेके लिए अंग्रेजीको अपना गया। इसे पतन कहेंगे या उत्थान। लेकिन, जब दिल्लीके देवता अंग्रे भक्त हैं, तो यह छोड़ और आशा ही क्या हो सकती है ?

यह तो प्रत्यक्ष है कि गढ़वालके लोगोंकी आर्थिक स्थिति दिन शोचनीय होती जा रही है। नये शासनका यदि कोई फल मिला है, कि रिश्वतखोरी और चोरबाजारीका चारों ओर उन्मुक्त शासन है, जि जनता पिसी जा रही है, उसे आशाकी किरण कहींसे दिखलाई नहीं वह कान उठाकर बड़े ध्यानसे सुनती है, जब उसे बतलाया जाता है, कि दिखते हिमशिखर-श्रेणियोंके ऊपर तक लाल भवानी आ चुकी है, जि शासनाधीन देशसे बेकारी और भुखमरी, चोरबाजारी और रिश्वत देशनिकाला दे दिया है।

अध्याय ३

भोटान्त

§१. प्रदेश

हिमालयके और भागोंकी तरह तिव्वतकी सीमाके पास यहाँ भी मंगोल-मुद्रावाले भोटांतिक लोगोंका प्रदेश है। गढ़वालमें नीती, माणा और नेलङ्-बस्तियाँ इन्हीं लोगोंकी हैं। इनमें नीती-उपत्यकामें मलारी, गमशाली, पा, नीती आदि कई गाँव काफी जन-संकुल हैं। माणा गाँव भी टांतिक लोगोंका है। माणा और नीती घाटोंकी वस्तियोंको मल्ला-पैनखंडा जाता है। भागीरथीकी बड़ी वहिन जाह्नवीके ऊपरी भागमें नेलङ् अवस्थित माणामें अकेला गाँव तथा कुछ छिटफुट घर वसे हुए हैं। १९३१में मल्ला-खंडाकी जनसंख्या ३८९३ थी आज वह ५०००से अधिक होगी। माणामें ०के करीव घर हैं। नेलङ् भी सौसे अधिक घरोंका गाँव है। इन तीनों टांतिक भूभागोंके गाँव ११००० फुटसे ऊपर तक वसते चले गये हैं, जिसके रण लोग पाँच महीनेंसे अधिक अपने गाँवोंमें नहीं रह सकते। अक्तूवरमें उन्हें अपना गाँव छोड़नेके लिए मजवूर होना पड़ता है। माणा और नीतीके अपने गाय-वैलों, भेड़-वकरियोंको लिये नीचे चमोली, नन्दप्रयाग तक जहाँ-अपने अड्डे ही नहीं जमाते, वल्कि उनमेंसे कितने ही कोटद्वारा और रामनगर पहुँचते हैं। नेलङ्वाले वागौरी, हरसिल और डुंडा (उत्तरकाशी)में आकर का दिन काटते हैं, और उनमेंसे कितने ही अपने पशुओंको लेकर ऋषिकेश र देहरादूनके आसपास भी डेरा डालते हैं। इस प्रवाससे जहाँ वह और के पशु ऊपरके कठोर जाड़ेसे वच जाते हैं, उन्हें हरे पत्ते और चारा भी सुलभ जाते हैं, वहाँ वह अपनी भेड़-वकरियोंपर माल ढोते कुछ मजूरी भी कर लिया ते थे। आज नीचेके स्थानोंमें मोटरें और लारियाँ चलने लगी हैं। धरासू, नगर, चमोली तक लारियाँ पहुँच गई हैं, इसलिए भोटांतिक लोगोंके लिए ों लादकर मजूरी करनेका अवसर नहीं रहा। प्राग्-ऐतिहासिक कालसे आते हिमालयके अज-पथ अव मोटरपथ वन गये हैं। उस दिन पांडुकेश्वरके

पास कुछ माणाके लोग मिले। वह वहुत आग्रहपूर्वक कह रहे थे, कि अव
हमारा नीचे जाना केवल पशुओं और प्राणियोंको कष्टभर देनेके लिए रह
वहाँ हम कोई जीविका नहीं कर सकते। जंगल-विभाग यदि हमें पांडुके
पास केवल वसने भरकी जगह दे दे, तो हम यहीं जाड़ोंमें रह जाया करें।
केश्वर और उसके चार-पाँच मील ऊपर तकके गाँवके लोग जाड़ोंमें भी
घरोंको नहीं छोड़ते। माणावालोंकी माँग विल्कुल उचित है। घर
रहनेके लिए १०-२० एकड़ जमीन छोड़ देनेसे जंगल-विभागकी कोई क्षति
हो सकती। जिस जगहको वह दिखला रहे थे, वहाँ कोई देवदार जैसा
वृक्ष भी नहीं था।

§२. लोग

भोटांतिक लोगोंकी मुखमुद्रा यद्यपि मंगोलायित है, किन्तु अव उनमें
केवल नेलङ्में रह गये हैं। तीनों जगहोंके लोग तिव्वतके साथ व्यापार
और तिव्वत जानेपर तिव्वती लोगोंके साथ खानपान भी रखते हैं। माणा
वालोंकी वातोंसे तो मालूम होता है, कि उनके पूर्वज कभी वौद्ध धर्मसे संवं
रखते थे। लेकिन, आज भी वह विश्वास रखते हैं, कि लामा लोगोंका
और पूजापाठ भूत और वीमारी भगानेके लिए जितना अमोघ सिद्ध होता है,
ब्राह्मणोंका नहीं। इसीलिए जव कोई लामा उनके गाँवोंमें आ जाता है, तो
सेवाओंसे लाभ उठाये विना नहीं रहते। नीतीमें तोल्छा और मार्छा दोनों
मिलती हैं, किन्तु माणामें केवल मार्छा हैं। तोल्छा अपनेको अधिक ऊँचा सम
उनकी भाषा पहाड़ी है। मार्छा लोग द्विभाषीय हैं, पहाड़ीके अतिरिक्त वह
भाषा भी वोलते हैं, जिसमें यद्यपि पहाड़ी हिंदी शव्द काफी हैं, किन्तु
और एक तीसरी भाषाके शव्द इस वातका संकेत करते हैं, कि तिव्
और किरातोंका भी उनसे संवंध रहा है। उनके गिनतीके शव्दोंको लीजि

तिग	भोटिया (चिक)	१
निस्	" (निस्)	२
सुम्	" (सुम्)	३
पी	" (ज़ी)	४
ङे	" (ङ)	५
छै	हिंदी	६
सात	"	७

,,	८
,,	९
,,	१०
,,	११
भोट (ग्य)	१००

भूतोंके नामोंमें भी इसी तरह किरात, तिब्वती और हिंदी शब्द पाये जाते जैसे :

किरात	पानी
भोट	आग
हिंदी (वात)	हवा
हिंदी	मिट्टी

भाषाके कुछ और शब्दोंको देखिए :

भोट	माता
भोट (यव्)	बाप
किरात	बहेन
	भाई
	स्त्री
(भोट, खेवका)	पति
	बेटी
हिंदी	देवता
	नदी
	गेहूँ
	चावल
	फापड़
	भाभी
भोट	बहू
,,	हाथ
	पैर
भोट	आँख
	कान
	मुँह

ख		वाल
स्या	भोट (शा)	मांस
नङ्	हिंदी	नख
नङ्गी		अंगूली
नम	किरात	गाँव
वियम्	भोट (खिम्, खम्)	घर
मरग		कपाट
विडी		दिवार
ह्रास		घोड़ा
खुई	किरात	कुत्ता
भलङ्	भोट (वलङ्)	वैल
न्हमा		वकरी
भासी		भेड़
वर		लाओ
ग्या		यहाँ
दिवङ्		चलना
ववङ्		लाना
जपङ्	भोट (ज़. वा)	खाना
तुङ्वङ्	" (थुङ्-वा)	पीना
कन		देखो
यन (यमवङ्)	भोट (ञन्-पा)	सुनो
तद		मारो
सद्दे	भोट (सद्)	मारो
दू		यहाँ
दी	भोट	यह
दे	भोट	वह
दो		वहाँ
गन,		तु, तुम
ग्ये, इन्		मैं, हम

मार्छा-भाषाके कितने ही शब्द कनोरी और राजी भाषामें मिलते हैं पता लगता है, कि उनका मूल आधार, किरात-किन्नर-नाग जाति है।

मान्तपर रहने तथा हजार वर्षसे अधिकसे राजनीतिक और धार्मिक तौरसे अपने तरके पड़ोसियोंके साथ घनिष्टताके कारण यदि गिनती, पंचभूतों तथा रक्त-बंधियोंके वाचक शब्दों तकमें तिब्बती भाषा घुस आये, तो कोई आश्चर्य नहीं। स्तुतः अभी हाल तक तिब्बती शासक माणा आदिको अपनी प्रजा मानते आये । नेलङ्वालोंपर तो उनका दावा अब भी वहुत कड़ा है और वह नेलङ्से १७—१८ ल नीचे तकके जंगल और भूभागको अपने राज्यके भीतर मानते हैं।

ब्राह्मणधर्मकी छाप तीनों जगहोंके भोटांतिक लोगोंपर पड़ी है। सभी अपनेको ी कहते हैं और कितनों हीने जनेऊ पहिन लिया है। इस वातमें माणा और तीवालोंकी अवस्था विल्कुल जोहारियों जैसी है। नेलङ्वाले अब भी वौद्धधर्मसे ंध रखते हैं और उसे छिपानेकी कोशिश नहीं करते। मार्छा लोगोंका हारी तथा दूसरे भूटांतिकोंसे शादी-व्याह होता है। उनमें वादरजी, वुडवाल वाल, कनारी, मोल्पा, डल्ड्या, जित्वान, धाखोली आदि कितनी ही उपजातियाँ गोत्र हैं। वह व्याह-शादी अपने गोत्रमें नहीं करते। लड़कियाँ आम तौरसे चौदह-ह सालकी उम्रमें शादी योग्य मानी जाती हैं। माता-पिता कन्या-शुल्क लेते हैं र इसके लिए कभी कभी लड़केवालेको हजार रुपया तक देना पड़ता है। कुछ ग दूसरे राजपूतोंकी तरह तिलक-दहेज देकर कन्यादान भी करते हैं। गरब्याङ् व्यांसमें अब भी चली आती कितनी ही प्राचीन किरात-प्रथाओंको ये लोग ड़ चुके हैं।

भोटांतिक लोगोंकी वस्तियां ९००० फुटसे नीचे कहीं नहीं है, इसलिए उनके ां नंगा जौ, फापड़ और सर्द जगहोंका गेहूं ही अच्छी तरह हो सकता है। इनकी ि आलूके लिए वहुत अनुकूल है। वहाँ वह पैदावार और आकार दोनोंमें ा होता है।

§३. स्त्रियां

भोटांतिक स्त्रियोंका समाजमें स्थान अपनी पहाड़ी वहिनोंसे कहीं अधिक ा है। वह घरके काममें वहुत कुछ स्वायत्त-शासन रखती हैं। इसका कारण भी है, कि जव उनके पुरुष व्यापारके लिए महीनों तिब्वतमें अटक जाते हैं, घरके प्रवंध तथा खेतीवारीके हरेक काममें उन्हें स्वयं निर्णय करना पड़ता है। शीत स्थानके निवासी होनेके कारण यहांके स्त्री-पुरुषोंकी पोशाक ऊनी कपड़ोंकी ी है, जिन्हें वह स्वयं वनाते हैं। इनके रंगदार धारीवाले कपड़े वड़े सुंदर और ायम होते हैं, जिनका उपयोग स्त्रियां अपने लिये पोशाक वनानेमें करती हैं।

मार्छानियां अपने सिरपर एक घोघीकी तरहका लंबा कपड़ा रखती हैं, जो छोड़कर सिरको ढाँके एड़ी तक पहुंचता है। इसके ललाटके ऊपरवाले कमख्वावकी तरह रंगविरंगे फूलपत्तियोंसे अलंकृत किया जाता है। यह कपड़ा केवल शोभार्थ ही पहना जाता है, इससे न जाड़ेसे वचाव हो सकता है न और न कोई चीज ही इसमें रखी जा सकती है। शायद मध्य-एसियाके कजाक आदि जातियोंमें भी ऐसी अलंकारिक पोशाक का रवाज है। हो है यह कत्यूरी-कालका अवशेष हो। कत्यूरी रानियां और राजकुमारियां लिए ऐसे ही अवगुंठनको इस्तेमाल करती हों, जो आज भी इनमें चला आ र माणाके मार्छा ही नहीं, बल्कि नीतीके तोल्छा भी ऐसी घोघी इस्तेमाल क माणाके नीचे दुर्याल लोगोंके गांव हैं। इनपर मंगोलमुखमुद्राका प्रभाव न देखा जाता, लेकिन इनकी स्त्रियां भी ऐसी घोघी इस्तेमाल करती ह दुर्यालोंके नीचे जोशी मठके इलाकेमें जोशियाल रहते हैं। दुर्याल और जो खस-जातियाँ हैं, यद्यपि अब वह अपनेको राजपूत कहते हैं।

§४. तिब्वती व्यापार

गढ़वालके भोटांतिक लोगोंकी जीविकाका वहुत वड़ा सहारा तिब्वतके का व्यापार है। कुमाऊँके परिचयमें हमने वतलाया है, कि किस तरह भोटांति अपनी व्यापार-यात्रायें करते हैं और किस तरह वह मानसरोवर प्रदेशसे दिल्ली, कलकत्ता, वम्वईतक अपना व्यापारिक संवंध कायम किये हुए हैं। किसी समय तिब्वत या जौनसारकी भांति भोटांतमें भी सभी भाइयों विवाह होता रहा होगा, किंतु इस प्रथाको हटे वहुत समय हो गया। वहुपति-वि एक वहुत वड़ा लाभ है जनसंख्याको वढ़ने न देना। भोटांतिक लोगोंमें वहुत हुई है, किंतु उसके कारण उसी मात्रामें दरिद्रता न वढ़नेका एक प्रधान था, तिब्वतके व्यापारमें वृद्धि। किसी समय माणावालोंका इस व्यापारमें भाग रहा, किंतु आजकल नेलङ्वाले भी उनसे आगे वढ़े हैं। नीतीमें तो क सेठ भी हैं। १९५१ई०में सारे भोटांतकी तरह गढ़वालके भोटांतिक रियोंमें भी वड़ी घवड़ाहट पैदा हुई थी, जब कि उन्होंने सुना, कि तिब्वतमें निस्ट आ रहे हैं। वस्तुतः उनके व्यापारको खतरा दूसरी जगहसे पैदा हो ग राजधानी ल्हासासे दूर होनेके कारण पश्चिमी तिब्वत शांति और सुरक्षा प्रदेश है, जिसके कारण हमारे व्यापारियोंको हमेशा वहां डाकुओंसे खतर रहता है और उन्हें अपनी रक्षाका इन्तिजाम करके कारवांके रूपमें जाना

है। साधारण स्थितिमें भी पश्चिमी तिव्वतके अधिकारी ज़ोङ्पोन, गर्पोन डाकुओं-
की रोक-थाम नहीं कर सकते। उस साल जव उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट सेनाके
ब्वतपर अभियानकी वात सुनी, तो उनकी नींद हराम हो गई। कितने ही
ब्वती अफ़सरोंने तो अपने परिवारोंको सुरक्षित समझकर भारत भेज दिया
ौर स्वयं भी एक पैर रिकाव पर रखे खड़े थे। ऐसी अवस्थामें यदि पश्चिमी
ब्वतमें डाकुओंका वल अधिक वढ़ता तो कोई आश्चर्यकी वात नहीं, इसी लिये
ौर भी अधिक तैयारीके साथ जानेकी अवश्यकता थी।

६५. तिब्बत-चीन समझौता और भोटान्त

तिव्वत और चीनके वीच शांतिपूर्ण समझौता होनेका महत्त्व और प्रभाव ना तिव्वत और चीनके लिए है, उससे कम भारतके लिए नहीं है। हमारी री सीमापर आसामसे लेकर लदाख तक तिव्वत अवस्थित है, और हमारी ाके भीतर भी लाखसे अधिक ऐसे भारतीय नागरिक हैं, जो भाषा, जाति, ृति या धर्मसे तिव्वतके साथ घनिष्ठ संवंध रखते हैं, साथ ही उनकी जीविका- वहुत कुछ अवलंव तिव्वतके साथ होता व्यापार है—वैसे तो तिव्वत सांस्कृतिक तौरसे भारतका एक अविभाज्य अंग है। सैकड़ों वर्षोंसे तिव्वत वके प्रगति प्रवाहसे अलग-थलग रहकर नदीकी छाड़नकी तरह अवरुद्ध- हो गया था, जिसके कारण जहाँ वह ज्ञानविज्ञानमें पिछली कई शताब्दियोंमें नहीं वढ़ सका, वहां उसके दक्षिणमें अवस्थित भारतके सर्वेसर्वा ब्रिटिश ाज्यवादी उसकी ओर लालचभरी नज़र से देखते रहे। यही नहीं, वल्कि ८३ और १९०४ ई० में दो वार अंग्रेजोंने तिव्वतपर आक्रमणकर उसे अपने ाज्यका अंग वनानेकी कोशिश भी की, जिसमें उन्हें असफलता इसीलिए हुई, स मार्गमें वाधक था; तो भी ल्हासा (राजधानी) से चार दिनके रास्ते ानूचीं) तकका दक्षिणी वाणिज्य-मार्ग अंग्रेजोंने अपने अधीन कर रखा। े कुछ सालोंमें, जव चीन और तिव्वतकी तनातनी रही, अंग्रेजोंने हर तरहसे वको अपनी मुट्ठीमें करनेकी कोशिश की। जव वह हिन्दुस्तान छोड़कर ये, तो उन्होंने अपना काम भारतसे निकलवाना चाहा। वह भारतको मन देते रहे, कि ब्रिटिश शासनने जो वहुतसे विशेषाधिकार तिव्वतमें प्राप्त हैं, वह भारतके उचित अधिकार हैं। दुर्भाग्यसे हमारे शासकोंकी अदूर- ासे उन्हें लाभ उठानेका मौका मिला। हमने अंग्रेज साम्राज्यवादी एक पुराने नीतिक अफसरको ही अपना प्रतिनिधि वनाकर तिव्वतमें वहुत समय तक

रखा। उसने तथा दूसरे अंग्रेज और अमेरिकन एजन्टोंने चीनके विरुद्ध ति
भड़कानेमें कोई कोर-कसर उठा नहीं रखी। यद्यपि कहनेको तो हम भा
परराष्ट्र नीतिको स्वतंत्र वतलाते हैं, किन्तु अब भी हमारे गुरु वही साम्रा
अंग्रेज हैं। सरकारी विशेषज्ञोंके लिए ही नहीं, वल्कि "हिन्दुस्तान टा
जैसे पत्रोंकी पंक्तियोंसे भी इसकी सत्यता सिद्ध होती है। २९ मई १९
"हिन्दुस्तान टाइम्स"(डाक-संस्करण)को उठाकर देखिए, प्रेस-ट्रस्ट-आफ इं
समाचारमें यही भाव काम करता दिखाई पड़ता है। वहां छपे समाचा
देखनेसे मालूम हो जाता है, कि कोई भारतीय नहीं, वल्कि अंग्रेज साम्रा
इन पंक्तियोंको लिखते तिव्वतमें चरम-स्वायत्तशासन स्थापित न
लिए आँसू वहा रहा है। चरम स्वायत्तशासनका अर्थ था—तिव्वतमें
युगीन सामन्तवाद कायम रहे, और वहाँकी साधारण जनता अब भी साम
अर्धदासताके नीचे कराहती रहे। क्या साम्यवादी चीन इसे स्वीकार कर अ
कलंकित करनेको तैयार हो सकता था ?

तिव्वतके शासकोंने समझौतेपर हस्ताक्षर आसानीसे नहीं कि
भारतीय प्रतिनिधि अंग्रेज तथा दूसरे पश्चिमी साम्राज्यवादियोंके वहकावेमें
पिछले दो-तीन वर्षोंसे उन्होंने भरसक कोशिश की, कि चीनी गणराज्यसे
समझौता न हो, और उनका निरंकुश शासन-शोषण वैसा ही वना रहे।
मिशनके वहाने उनके आदमियोंने अमेरिका और इंगलैड तक की खाक
उन्हें भरोसा था, कि जिस तरह दुनियाके हर कोनेमें जनताके आर्थिक औ
नीतिक स्वतंत्रता-संघर्षके विरुद्ध अमेरिका जनधनसे सहायता करनेको
रहता है, वैसे ही वह तिव्वतमें भी करेगा। लेकिन समुद्रतटसे दूर १७-१८
फुटके डांड़ोंको पारकर तिव्वतमें हस्तक्षेप करना अमेरिकाके लिए आसा
नहीं था, विशेष कर जव कि अमेरिकाके सव कुछ करने पर भी चीनसे च
शेककी पतंग कट गई। भारत अपनी भूमिको अमेरिकाके रणप्रया
देनेको तैयार नहीं था। ऐंग्लो-अमेरिकन साम्राज्यवादने इसकी भी भरपूर
की, कि भारत तिव्वतकी पीठ ठोके। भारतको प्रलोभन देते हुए कहा
अंग्रेजोंने पिछले डेढ़ सौ सालोंके प्रयत्नसे जो विशेषाधिकार तिव्वतमें पाये हैं
उत्तराधिकारी अब भारत है। इस विशेषाधिकारमें एक है—क
ल्हासा जानेवाले मार्गमें भारत-सीमासे ग्यान्ची तकके मार्गका भारत-
हाथमें होना। १९०४ में अंग्रेजी सेनाने ल्हासा तकको अपने अधिका
लिया; लेकिन अंतमें रूसके साथ समझौता करनेके वाद उसे वहांसे ह

तो भी हमारे सीमान्तसे ग्यान्ची तककी सड़क, किनारेके पड़ावों, डाकवंगलों तथा तार-लाइन और डाकखानोंपर अंग्रेजोंने अपना अधिकार रखा, जो कि उनके जानेके वाद अव भारतके अधिकारमें हैं। यही नहीं, ग्यान्चीमें उन्होंने काफी भूमि लेकर वहाँ एक छोटा-मोटा किला खड़ा कर लिया, जिसमें सौ के करीव हमारे सैनिक रहते आये हैं। किसी भी स्वतंत्र देशके भीतर ऐसा अधिकार नहीं प्राप्त किया जा सकता, यह कहनेकी अवश्यकता नहीं है। किन्तु आगे वढ़नेकी नीतिसे अंधे अंग्रेज ऐसा करनेके लिए वाध्य थे। अंग्रेजोंकी नीतिके अन्धानुसरण करनेवाले भारतीय सरकारके कर्णधार आज उन सव अधिकारोंको अपने हाथमें रखे हुए हैं। किन्तु यह निश्चित है, कि नवीन चीनके अभिन्न अंग तिव्वतमें ये अधिकार अव कायम नहीं रखे जा सकते।

तिव्वत और चीनके वीचमें जो समझौता हुआ है, उसमें तीन चीजें मुख्य हैं—(१) तिव्वत और चीनके वीच एक मैत्रीपूर्ण संधि, (२) तिव्वतका चीनी अधिकारियोंके साथ सहयोग और (३) दलाई लामा और पण्-छेन् लामाका मिलकर काम करना। यह आशा मुश्किलसे की जा सकती थी, कि तिव्वतके शासक जिस निरंकुशताके साथ प्रजाका शोषण और उत्पीड़न करते चले आये थे, और जिस तरह वहांके उपजके साधन—भूमि और पशु—का स्वामित्व प्रायः सारा अपने हाथोंमें रखे हुये थे, वैसी अवस्थामें वह चीनके साथ समझौता करनेके लिए नहीं तैयार होंगे। लेकिन उनके अपने परिवारके व्यक्ति जव अमेरिका और इंगलैंड तककी खाक छान आये, और देखा कि चीनसे लड़नेके लिए कोई विदेशी शक्ति अपनी सेना और सामग्री तिव्वतमें भेजनेके लिए तैयार नहीं है, भारत भी इसके लिए ऐंग्लो-अमेरिकन साम्राज्यवादियोंके इशारे पर नाचनेके लिए तैयार नहीं है, तो उन्हें साफ दिखाई पड़ा, कि तिव्वतका चीनसे खटपट करनेका परिणाम यही होगा, कि हमें दूसरे क्रान्तिविरोधी शरणार्थियोंकी तरह दर-दर मारा-मारा फिरना पड़ेगा। मेरे चिरपरिचित तिव्वतके एक प्रभावशाली मंत्रीके अनुजने—जो कि स्वयं जेनरल हैं—सारी दुनिया देखनेके वाद विचार प्रकट किया था: “हमें समझौता कर लेना चाहिए। भवितव्यताके सामने शिर नवाना ही वुद्धिमत्ता है। देश छोड़कर भागे क्रान्ति-विरोधी रूसियों तथा दूसरोंकी दयनीय दशा देखकर वैसी गलती नहीं करनी चाहिए। अव तक जो कुछ शोषण और उत्पीड़न करके आनंद मौज कर लिया, सो कर लिया; अव अपनी विद्या-वुद्धिसे हमें अपनी जातिकी सेवा करनेके लिए तैयार होना चाहिए, यदि चीनी कम्यूनिस्त हमें इसका अवसर देवें। यदि यह अवसर न भी मिले, तो भी मैं कहूंगा, कि वाहर दर-दर मारे-मारे फिरनेसे

देशमें मर जाना अच्छा होगा।" तिव्वती जेनरलकी यह वात तिव्वतके साम
शासकोंके एक प्रभावशाली भागके भावोंको प्रगट करती थी।

तिव्वतमें वहुत प्राचीनकालसे चीनके समर्थक होते आये हैं। पिछली शता
चीन-समर्थक, रूस-समर्थक और अंग्रेज-समर्थक तीन दलोंका प्रादुर्भाव
वल्कि यह कहना चाहिए कि जव दक्षिणसे अंग्रेजोंका दवाव पड़ता, तो ति
उसकी प्रतिक्रिया रूसके साथ सहानुभूतिके रूपमें होती। पिछले (१३ वें)
लामा रूसके साथ घनिष्ट संबंध स्थापित करनेके लिए तैयार हो गये थे, जि
कारण १९०४ ई० में अंग्रेजोंने अपनी सेना तिव्वतमें भेजी। पीछे जव चीनी
कारियोंने ल्हासा सरकारकी वागडोर पूरी तौरसे अपने हाथमें लेनी चाही, तो
लामा भागकर दोर्जेलिङ् चले आये, और चीनमें प्रथम गणराज्य काय
(१९११) के वाद ही तिव्वत लौट सके। तवसे मरनेके समय तक वह सदा
कुछ अंग्रेजोंके पक्षपाती रहे। तो भी चीन-समर्थकों एवं रूस-समर्थकोंका वि
अभाव नहीं होने पाया। १७ वीं सदीके मध्यमें, जव कि भारतपर शाह
शासन था, मंगोलोंने खंड-खंडमें विभक्त तिव्वतको जीतकर उसे पांचवें
लामाके हाथमें दे दिया। तवसे दलाई लामोंका शासन शुरू होता है।
दलाई लामाके विद्या और दीक्षा-गुरु टशी-ल्हुन्पो मठके एक महापंडित (प
थे। शासनसूत्र प्राप्त करनेके वाद पण्-छेन् और उनके उत्तराधिकरियों
वढ़ गया, जिसे विदेशी लोगोंकी भाषामें कहा जाने लगा कि शासनके राजा
लामा हैं, और धर्मके राजा पण्-छेन् (टशी) लामा। १३वें दलाई लामा और
समकालीन छठें पण्-छेन् लामामें मनमुटाव हो गया। अन्तमें पण-छेन्
टशी-ल्हुन्पोसे वड़ी मुश्किलसे प्राण वचाकर चीनमें शरण लेनी पड़ी। यह
१९२३ की है। तवसे पहिले तीनों दलोंके अतिरिक्त एक चौथा दल
लामाका भी तैयार हो गया। यह दल ऐसे राजनीतिक दल नहीं थे,
एक आदमीको किसी एक दलसे वंध जानेकी अवश्यकता हो।

दलाई लामाके जीवित रहते समय इसकी वहुत कोशिश की गई, कि
लामा देशमें लौट आवें। शायद मरनेके समय (दिसंवर १९३३) से पहि
लामाकी इच्छा हो भी गई थी, किन्तु वह कार्यरूपमें परिणत न हो सकी।
लामाके मरनेके वाद भी पण्-छेन् लामा कुछ वर्षों तक जीते रहे। उन्हों
१३वें दलाई लामाके नये अवतारवाले लड़केको भी चुन लिया था। अ
वातका निर्णय नहीं हो सका था, कि पण्-छेन् लामा चीनहीमें मर गये, औ
अवतारके तौरपर चीनने एक लड़केको, स्वीकार कर लिया गया, जो अ

लामा है, और नये समझौतेके अनुसार वह २९ वर्षों बाद टशी-ल्हुन्पोके सिंहासनपर आकर बैठा। यह विचित्र बात है, कि वर्तमान दलाई लामा और टशी (पण्-छेन्) लामा दोनों ही मुख्य-तिब्बती नहीं, बल्कि चीनके भीतर रहनेवाली अम्दो (तंगुत) जातिके हैं। यद्यपि भाषा, धर्म आदिकी दृष्टिसे अम्दो और तिब्बती सगे भाई हैं, किन्तु सातवीं सदीमें तिब्बतके बौद्धधर्मी होनेसे बहुत पहिलेसे अम्दो लोग बौद्ध और सुसंस्कृत हो चुके थे, वह कुछ समय तक चीनके शासक रहे। आजकल तो तिब्बतमें यह सर्वमान्य सा विश्वास है, कि विद्यामें अम्दो विद्वानोंका समकक्ष कोई नहीं हो सकता। तेरहवें दलाई लामा और पिछले पण्छेन् लामाने अम्दोसे बड़े बड़े विद्वानोंको लाकर अपने यहां सम्मानसे रखा था। दलाई लामाके सम्मानित विद्वान् गेशे शे-रब् अद्भुत विद्वान हैं। वह पीछे नानकिङ् चले गये, किन्तु कम्यूनिस्त नाके आनेके बाद उनके साथ काम करने लगे। जब अंग्रेजोंने अपने प्रोपेगण्डाके लिये ल्हासामें रेडियो स्टेशन खोला, तो गेशे-शे-रब् अम्दोके एक रेडियो स्टेशनसे सिंहगर्जन करने लगे। तिब्बतमें रेडियो बहुत कम लोगोंके पास हैं, तो भी भाड़ेके टट्टुओंके मुकाबलेमें अपने देशके सर्वश्रेष्ठ विद्वान्की वाणीका कितना उनपर प्रभाव होगा, इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं। ल्हासामें उनके शिष्य बहुतसे मौजूद हैं। गेशे शे-रब् की देखरेखमें बने एक सौ तीन पोथियोंके महान् संग्रह कन्-जुरका फलक अभी भी वहाँ मौजूद है। १९३४ में जब मैं दूसरी बार तिब्बत गया था, उनसे बराबर शास्त्रचर्चा होती रहती थी। वह बड़े मिलनसार और जिज्ञासु पुरुष हैं। उनके शिष्य गेशे गेन्-दुन-छोम्-फेल् (पंडित संघधर्मवर्धन) एक सुन्दर कवि, अच्छे चित्रकार तथा प्रौढ़ दार्शनिक थे। वह १९३४ में मेरे साथ पहिले पहिले भारत आये, और तबसे १२ वर्ष तक अधिकांश भारत ही में रहे। यहाँ रहनेपर उन्होंने अंग्रेजीका ज्ञान भी प्राप्त कर लिया, और आधुनिक अनुसन्धानके ढंगको सीखते हुए साम्यवादके प्रभावमें भी आ गये। जब वह स्वदेश (अम्दो) लौटनेके ख्यालसे ल्हासा गये, तो उदारविचारोंके लिए उन्हें पकड़कर जेलमें डाल दिया गया, और कष्ट भी दिया गया। उस वक्त मैंने तिब्बतके प्रभावशाली व्यक्तियोंसे कहा था, कि ऐसे विद्वान्के साथ ऐसा बर्ताव आपके अपने हितोंके लिये भी अच्छा नहीं है। खैर, गेशे धर्मवर्धन जेलसे बाहर निकाल दिये गये, और उन्हें ल्हासामें नजरबन्द रखके तिब्बती इतिहासके लिखनेमें लगा दिया गया। अफसोस, वह विद्वान् कम्युनिस्त ल्हासामें कुछ महीने ही रहकर चल बसा। यह कहनेका अभिप्राय यही है, कि तिब्बत नवीन विचारके मनिषियोंसे सर्वथा शून्य नहीं है। नये समझौतेके हो जानेपर सेनापति चू-ते के कथनानुसार तिब्बतकी शांतिपूर्ण स्वतंत्रता

एक वास्तविक वस्तु-सत्य है, और इस स्वतंत्रताके वाद तिव्वतको क्षेत्रमें आगे वढ़नेका मौका मिलेगा।

× × ×

चीन तिव्वतके समझौतेसे एक और भारी भय हमारे देशके सिरे गया। कह चुके कि आसामसे लदाखतक हमारी सीमाके भीतर हमारे तिव्वती-भाषाभाषी या द्विभाषी एक लाखके करीव नरनारी रहते हैं। कुमाऊँ, गढ़वाल, टेहरी, और कनोर (हिमाचल प्रदेश) के वन्धुओंपर तो भारी आ गया था। ये लोग तिव्वतके साथ सदासे व्यापार करते चले आ इनकी जीविका और समृद्धिका आधार वहीं व्यापार था। हमारी आग्रहपर जव चीनने तिव्वतमें सेना भेजनेका ख्याल छोड़ दिया, तो तिव्वतके हमारे व्यापारकी अवस्था अनिश्चित हो गई। ल्हासा जो अधिकारी इस भागमें रहते थे, वह अपनी स्थितिको विल्कुल डावांडोल थे, इसलिए उनमेंसे कितनोंने तो अपने परिवारको भारत भेज रखा था। तिव्वतमें वैसे भी हमारे व्यापारियोंको सदा डाकुओंका भय वना रहता था, अव और भी वृद्धि हो गई, जव स्थानीय अधिकारियोंकी यह मनोदशा लगी। जूनका महीना हमारे व्यापारियोंके तिव्वतप्रयाणका है। मैं मई के अंतमें माणा (वदरीनाथसे दो मील आगे) गया था, और नीतीके भी व्यापारियोंसे मिला। करोड़ों रुपये ऊन और दूसरी चीजोंके अग्रिमके होनेसे हमारे व्यापारी अपनी व्यापार-यात्राको स्थगित नहीं कर किन्तु, साथ ही अनिश्चित अवस्थासे वह वड़े व्याकुल थे। वह जानते थे, डाकुओंका उपद्रव वहुत अधिक होगा, जिससे वह केवल अपने वलपर पा सकते हैं। भारत-सरकारसे जव उन्होंने वन्दूकोंके लाइसन्स माँगे, पुरानी नौकरशाही मनोवृत्तिका परिचय दिया गया। माणाके तीन सौ लिए तीन वन्दूकें मिलीं, जिसे भी उन्हें पहाड़में नहीं वरेलीसे जाकर छ महीनेके लिए एक वन्दूकके वास्ते ५० कारतूस दिये गये। वन्दूकें सात सेरकी इतालियन थीं, जिनके कारतूस आसानीसे नहीं मिल कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि जिस देशमें माल वकरियोंपर ढोया वहाँके लिए यह सात सेरकी वन्दूकें उपयुक्त नहीं हो सकतीं। कह रहे थे, कि कमसे कम हमें १५ वन्दूकें मिलनी चाहिएं, तव हम करनेमें समर्थ हो सकेंगे। मैंने इसके वारेमें दिल्ली लिखनेका ख्याल लेकिन इसमें सन्देह था, कि जूनमें यात्रा शुरू करनेसे पहिले उनके

पहुँच सकेंगी। अंग्रेजोंने हथियारोंका कानून इसलिए बनाया था, कि परतंत्र भारतको पूरी तौरसे निहत्था रखा जाये। न मालूम, आजकलकी हमारी सरकार किसलिए हथियारोंके कानूनको पहिले ही की तरह कायम रखे हुए हैं ? कांग्रेस—नरमदलियोंकी कांग्रेस भी—प्रस्ताव पास करती आई थी, कि हथियारोंका कानून उठा दिया जाये, और भारतके हरएक व्यक्तिको स्वतंत्र नागरिकके तौरपर हथियार बाँधनेका अधिकार हो। लेकिन, अधिकार मिलते ही हमारे शासक इस प्रस्तावको घोलकर पी गये। जान पड़ता है, वह भी अपनी जनताको अंग्रेजोंकी भाँति ही शंकाकी दृष्टिसे देखते हैं। अस्तु। यहाँ तो अपने व्यापारियोंकी रक्षाके लिए उनके बीचमें बन्दूकोंको मुफ्त बाँटना चाहिए था, किन्तु वही नौकरशाही चालें और बाधाएँ रास्तेमें डाली गईं। तिब्बतमें चीनके प्रभावके आनेसे माणा और बम्पा (नीती)में नये थाने कायम किये गये हैं, उनके द्वारा सुरक्षित बन्दूकें आसानीसे और जल्दी भेजी जा सकती थीं। हालके समझौतेका प्रभाव यदि पश्चिमी तिब्बतमें जल्दी नहीं पहुँचा होता, तो अभी भी हमारे व्यापारियोंको डाकुओंका भय रहता। ऐसी अनिश्चित अवस्था पैदा करनेकी काफी जिम्मेवारी हमारी सरकारपर भी थी, क्योंकि उसीने चीनको सेना न भेजनेके लिए आग्रह किया था। डाकुओंसे हमारे व्यापारियोंको अपनी रक्षा करनेके लिए उन्हें बन्दूकें भेजनेमें बहानेबाजी नहीं करनी चाहिए थी और नीतीवालोंको सौ तथा माणावालोंको पंद्रह इसी तरह जोहार, व्यांस, गरब्याङ्, नेलङ् और कनौर आदिके व्यापारियोंको भी पूलिस-थानोंके द्वारा काफी बन्दूकें पर्याप्त कारतूसोंके साथ भेज देनी चाहिये थीं। यह स्मरण रहे, कि यह व्यापारी उनका दाम देना चाहते थे। अगर हमें अपने सीमान्तके नागरिकोंका सर्वनाश करना अभिप्रेत नहीं है, तो नवीन तिब्बतके साथ हमारा घनिष्ठ मैत्री संबंध स्थापित होना चाहिए। तिब्बत-चीन समझौतेके हो जानेसे अब हमारे व्यापारी संतोषकी साँस ले रहें हैं। और उनकी सर्वनाशकी आशंका दूर हो रही है। भारतका नवीन तिब्बत और नवीन चीनसे सुन्दर संबंध कायम हो, हमको यही कामना करनी चाहिए।

अध्याय ४

निवासी

§१. लोग

(१) **गाँव**—गढ़वालके गाँव पानीकी सुविधाके अनुसार तथा यह करके भी ऐसे स्थानोंपर वसे हैं, जहाँ गाँवके ऊपर और नीचे उसके खेत हों। प्रायः एक पतली गलीके दोनों ओर वने होते हैं। ऐसा वहुत कम होता है गलीके ऊपर या नीचे दूसरी भी समानांतर गलियाँ हों। बीठ और डोम वर्गोंके टोले अलग-अलग होते हैं। वीठमें सभी वड़ी जातिवाले हैं। यह शिमलासे नेपालतक इसी अर्थमें इस्तेमाल होता है। डोम अछूत हैं, जि आत्मचेतना आनेके साथ अपनेको शिल्पकार कहना शुरू किया है। घरके सामने पत्थर-पटा आँगन होता है। पहिले दो-तल्ले मकानोंके नि तल्लेमें पशु रखे जाते थे, किन्तु किसी कमिश्नरने मना कर दिया, जिसके ढोरोंके मकान अलग वनने लगे। आम तौरसे दोनों तल्लोंपर दो दो को होती हैं। अच्छे घरोंमें ऊपरी तलकी कोठरियोंके आगे डंडियाला (वरां होता है। आँगनमें प्रायः नारंगी, आडू और केले लगे रहते हैं। दूरसे देख गढ़वालके ग्राम गंधर्वनगरसे सुंदर दीख पड़ते हैं।

गढ़वाल जिले और टिहरीमें २४५६ गाँव हैं।

(२) **जनसंख्या**—गढ़वाल और टिहरी जिलोंकी जनसंख्या निम्न प्रकार

	गढ़वाल	टिहरी
१८२१	१२५०००	..
१८४१	१३१९१६	..
१८५३	२,३५,७८८	..
१८७२	३,१०,२८२	..
१८८१	३,४५,६२९	१,९९,८३६
१९०१	४,२९,९००	२,६८,८८५
१९३१	५,३३,८८५	

अर्थात् पिछले ११० वर्षोंमें गढ़वालकी जनसंख्या चौगुनी हो गई, टिहरी उससे पीछे नहीं रहा। १९५०में इसकी जनसंख्या ४ लाख आँकी गई है। तहसीलोंके अनुसार १९३१में गढ़वाल जिलेकी जनसंख्या निम्न प्रकार थी :—

सील	कुल	मुस्लिम	ईसाई आदि
मोली	१,७७,३०५	७८९	४१
ड़ी	१,३३,१६५	३७२	८३८
सडौन	२,२३,४१५	३४११	१११९

(३) घनता—५६२९ वर्गमीलमें १९३१में ५३३००० आदमी बसते थे, र्थात् प्रति-वर्गमील ९५से ऊपर। टिहरीके ४२०० वर्गमीलमें आजकल ४ लाख दमी बसते हैं, अर्थात् इस जिलेमें भी आबादी प्रति वर्ग-मील ९५से अधिक हैं।

§२. भाषा

सारे गढ़वालमें गढ़वाली भाषा बोली जाती है, जो केन्द्रीय पहाड़ीकी एक खा तथा प्राचीन खस-भाषासे उद्भूत है। वैसे तो पट्टी-पट्टीमें भाषामें कुछ हो जाते हैं, किन्तु जौनपुर (टेहरी) पर्गनेकी भाषा जौनसारकी भाषासे दा मिलती है—गढ़वाली भाषाके नमूने ग्यारहवें अध्यायमें दिये गये हैं। मौर और गढवालकी सीमाके पासवाले एक मिश्रित भाषा बोलते हैं, जिसे माली कहते हैं। वैसे सारे गढ़वालमें शिक्षाका माध्यम हिंदी होनेसे सभी हिंदी बोली, समझी जाती है।

§३. जातियां

१. बीठ—

सारे पहाड़में पहिलेसे ही बीठ (बिस्ट) और डोम दो जातिभेद हैं। बीठमें ण और राजपूत सम्मिलित हैं। बीठ भी खस और अखस दो भागोंमें विभक्त अखस ब्राह्मण और राजपूत अपनेको कुलीन समझकर दूसरोंको अपनेसे हीन मझते हैं। पीछे लोगोंने अपनेको खस कहना ही छोड़ दिया।

१९०१की जनसंख्यामें ब्राह्मण, राजपूत और शिल्पकारकी संख्या दोनों ज्योंमें निम्न प्रकार थी :

	गढवाल	टिहरी	कुल
ह्मण	१,००,०००	५५०००	१,५५,०००

राजपूत	२,४५,०००	१,६१०००	४,०६,०००
शिल्पकार (डोम)	६७,०००	४८०००	१,१५,०००

(१) **ब्राह्मण** : ब्राह्मणोंमें भी खस और देशी दो तरहके ब्राह्म यद्यपि आजकल कोई अपनेको खस कहनेको तैयार नहीं है। कोटचाल, खं गैरोला, डोभाल, वहुगुना राजाओंके समय उच्च पदों पर नियुक्त थे।

गढ़वालके ब्राह्मण चार श्रेणियोंमें विभक्त हैं: १. सरोला, २. गंगाड़ दुमागी और ४. देवप्रयागी। इनकी सूची निम्नप्रकार है——

नाम	वर्ग	पूर्वजाति	प्रथम गांव	विशेष
अणथ्वाल	गंगाड़ी	सारस्वत	अणेथ	रामदेव-वंशज
अर्जुन्यां	देवप्रयागी			
अलखणिया	"			
उन्याल	गंगाड़ी	मैथिल	वोणीगांव	जयानंद, विजया पीछेके सरोला
कंडवाल	सरोला			
कर्नाटक	देवप्रयागी			
कलसी	गंगाड़ी	भट		गुजरातसे
कवि	"	कनौंजिया		१६७९ ई० में
काला	"	गौड़		काली-कुमाऊंसे
किमोटी	"	"	किमोटा	१२६० में राम
कुकरेती	"	द्रविड	कुकुरकाटा	गुरुपति १३५२ में
कुडियाल	गंगाड़ी	गौड़	कुड़ी	१५४३ में आये
कैंथोला	"	भट	कैंथोली	रामवितल गु १६१३ में आये
कैलखोरा	सरोला			पीछेसे सरोला
कोटताला	गंगाड़ी	गौड़	कोटीगांव	१६८६ में आये
कोटियाल	देवप्रयागी			
कोट्वाल	गंगाड़ी		कोटगांव	
कोठारी	"	शुक्ल	कोठार	१७३४ में वंगाल
कौटचाल	सरोला	गौड़	कोटीगांव	
कौस्वाल	गंगाड़ी	"		काली-कुमाऊंसे
खंडूड़ी	सरोला	"	खंडूड़ा	सारंगधर मतहस भूमि से आये

जराती	देवप्रयागी			नौटियाल
रोला	सरोला	आदि-गौड़	गैरोली	जयानंद, विजयानंद
डूड़ा	गंगाड़ी	भट		१६६१ में गोदू दक्षिणसे
नसाला	"	गौड़	घणसाली	१५४३ मग्नदेव आये
समाणा	"	"	घसमाण	१६६६ में हरदेव, वीरदेव उज्जैनसे
ल्डियाल	"	आदि-गौड़	घिल्डी	१०४३ में लुत्यमदेव गंगदेव आये
दोला	"	सारस्वत	चंदोसी	लूथराज पंजावी १५७६ में आये
मोल	सरोला	द्रविड़	चमोला	धरणीधर
दपुरी	"			नौटियाल
श्याल	"			पीछेसे मिले
नोला	"			"
डाण	गंगाड़ी	पांडे	जुगडी	१६४३ में कुमाऊंसे
याल	"	महाराष्ट्र	जूया	१६४३ में वसुदेव, विजयानंद
स्वाल	सरोला			पीछेसे मिले
ज्ञी	गंगाड़ी	द्रविड़		१६४३ में कुमाऊंसे आये
ोनी	देवप्रयागी			
वाल	गंगाड़ी	द्रविड़	डांग	धरणीधर संतोली कर्नाटकसे
बराल	"	महाराष्ट्र	डावर	१३७६ रघुनाथ, विश्वनाथ
मरी	सरोला	द्रविड़	डिम्मर	राजेन्द्र, वलभद्र कर्नाटकसे
भाल	गंगाड़ी	कनौजिया	डोभी	कर्णजित
चोंडी	सरोला		डचोंड	
नाप	"			नौटियाल
डियाल	गंगाड़ी	गौड़	ढौंड	१६५६ में राजस्थानसे रूपचंद
वाड़ी	देवप्रयागी			
वाड़ी	गंगाड़ी	त्रिपाठी		कुमाऊंसे
गू	देवप्रयागी			
स्याल	सरोला	आदि-गौड़		थापलीचांदपुर जयचंद, मयचंद

देवराणी	गंगाड़ी	भट		१५४३ में आये
द्रविड़	देवप्रयागी			
धम्मवाण	सरोला			पीछे मिले
धयाण	देवप्रयागी			
नऊनी	सरोला	सत्ती	नऊन	गुजरातसे
नैथाणी	गंगाड़ी	कनौजिया	नैथाणा	१०४३ में कर्णदेव, पाल आये
नैन्याल	सरोला			पीछेसे मिले
नौटियाल	”	गौड़	नौटी (चांदपुर)	देवीदास, नीलकंठ कनकपालके गुरु
नौड़ियाल[1]	गंगाड़ी	”	नौड़ी	१५४३ शशिधर आये
पल्याल[1]	देवप्रयागी			
”	सरोला			नौटियालकी शाखा
पान्थरी	गंगाड़ी	सारस्वत	पान्थर	१५४३ में अंथ पंथरा जलंधरसे
पुज्यारी	सरोला	भट		१६६५ में दक्षिणसे
पुरोहित	गंगाड़ी	खजीरी		१७५६ में जम्मूसे
”	देवप्रयागी			
पूर्विया[2]	गंगाड़ी	कनौजिया		१६७९ में कुमाऊंसे
पैन्यूली	”	गौड़	पन्याला (रसोली)	११५० में ब्रह्मनाथ दक्षिणसे
पोखरियाल	”	विल्वल	पोखरी	गुरुसेन १६२१ में विलहितसे
फरासी	”	द्रविड़	फरासू	१७३४ में दक्षिण
वंगवाल	”	गौड़	वांगा	१६६८ में मध्यदे

---

[1] ये राजगुरु छ जातोंमें विभक्त हुए—डंगाण, पल्याल, मंजखोला, चांदपुरी और बौसोली ।

[2] पांडे, पन्त, मिश्र, तिवाड़ी, जोशी, जोगड़ी पूर्विया कहे जाते टेहरीमें इनके मुहल्लेको पूर्व्याण कहते हैं ।—(रतूड़ी, पृष्ठ १६२)

डुख्वाल	”	”	वड़ेथ	१४४३ में सूर्यकमल, मुरारी गुजरातसे
डोनी	”	गौड़	वड़ोन	१४४३ में वंगालसे
डोला	”	”	वड़ोली	१७४१ में उज्वल उज्जैनसे
दा ां	”	कनौजिया	वधाण पर्गना	१६६५ में कन्नौजसे आये
तोडी	गंगाड़ी	द्रविड़	वलोद	१३४३ में दक्षिणसे
ड़ोड़ी	”	सारस्वत	वलोण	१७१९ मेंजीवरामजलंधरसे
डूणा	”	वनारस	वुघाणी	
वलिया	देवप्रयागी			
ल्वाण	सरोला	गौड़		विज्ज मूलपुरुष
वोला	गंगाड़ी	द्रविड़		
णा	”	आदिगौड़	वुधाणी	कृष्णानंद गौड़ वंगालसे
रागी	”	गौड़		गृहस्थी वैरागी
वंडी	”	महाराष्ट्र		१६४३ में भुकुंडकवि विलाहेतसे
राई	”	गौड़	वौघर (वौर)	१४४३ में
ोली		सरोला		नौटियालोंमें
नुड़ी	गंगाड़ी	भट		व्यास १५४३ में दक्षिणसे
	”	”		दक्षिणसे
	देवप्रयागी			
	सरोला			पीछेसे सरोले
ला	गंगाड़ी	द्रविड़		
वाल	सरोला			पीछेसे
तोला	”			नौटियालोंमेंसे
वाल	गंगाड़ी	गौड़	महड	१६४३ में राजदास द्वाराहाटसे
नाई	”		”	उज्जैनसे
ड्डूड़ी	सरोला		मडूंड़	खंडूडी-शाखा
ासी	गंगाड़ी	गौड़	मलासू	
राष्ट्र	देवप्रयागी			
कोटी	गंगाड़ी	गौड़	मालकोट	१६४३ में वालकदास

मालगुड़ी	सरोला			पीछेसे
मालिया	देवप्रयागी			
मालीवाल	सरोला			पीछेसे
मिस्सर	गंगाड़ी	मिश्र		कुमाऊंसे
मुलचुली	"			
मुसड़ा(मुसुड़ा)	"	गौड़	मुसड़	भागदेव बंगालसे
मैकोटी	"	कनौजिया	मैकोट	१५६५ में कन्नौज
मैट्वाणी	सरोला	आदिगौड़	मैट्वाणा (चांदपुर)	रूपचंद त्र्यंवकसे
मैरावजोशी	"	कनौजिया		१७५५ में कुमाऊं
रतूड़ी	"	आदिगौड़	रतूड़ा	सत्यानंद राजवल
रनडोला	गंगाड़ी	तैलंग		
रैवानी	देवप्रयागी			
लखेड़ा	सरोला	आदि-गौड़	लखेड़ी	१०६० में नारद, वीरभूमसे
सकल्याणी	गंगाड़ी	कनौजिया	सकलाना	१६४३ में नागदे डौंडियाखेड़ा (अव
सत्ति	सरोला	सत्ति		गुजरातसे
सिरिगुरु	"			वीरसेन भडासन
सिलौड़ा	सरोला			पीछे
सिल्वाल	गंगाड़ी	द्रविड़	सिल्ला	वनारससे
सुन्दरियाल	"	कर्नाटक	सुन्दरोली	१६०४ में आये
सुयाल	"	भट	सुई	दजल, वाजनाराय
सेमल्टी	सरोला	आदि-गौड़	सेमल्टा	गणपति वीरभूम(
सेमवाल	"	"	सेमगांव	प्रभाकर निरंजन
सैल्वाल	गंगाड़ी		सैल	
सोन्याल(सुन्याल)	"		सोनी	
हटवाल[1]	सरोला	गौड़	हाटगांव	सुदर्शन विश्वेश्वर

---

[1] हाट राजधानीको कहते थे जैसे द्वाराहाट। हाटों (नगारियों) के हटवाल अल्मोड़ामें भी कहे जाते हैं, देखो कुमाऊं।

में हाट गांवमें वसे

डरिया देवप्रयागी

रोला—सरोले पहिले ग्यारह थानों (मूलस्थानों) के नामसे ग्यारह माने जाते । ये थान निम्न थे——

१. कोटी
२. खंडूडा
३. चमौला
४. डिम्मर
५. थापली
६. नौटी
७. मैटवाण
८. रतूड़ा
९. लखेड़ी (लखेसी)
१०. सिरगुरी
११. सेमा

फिर २१ और अंतमें उनकी संख्या ३३ हो गई।

गंगाड़ियोंके मुख्य कुल हैं:—घिल्डियाल, डंगवाल, और मलासी। गंगा त्यकाके निवासी होनेसे इनका यह नाम पड़ा। केदारनाथ और तुंगनाथके पुजारी प्राचीन ब्राह्मण हैं, जिन्हें नवागंतुक लोक खस-ब्राह्मण कहते हैं। दुमागी पुर पर्गनेंमें मिलते हैं, यह सरोले, गंगाड़ी और शायद प्राचीन ब्राह्मणोंसे भी ह संबंध करते थे, इस लिये दोमार्गी कहे गये।

(२) राजपूत——गढ़वालमें खस, राजपूतका भेद विल्कुल उठसा गया है, पि राजपूतोंमें ८०%से अधिक वही हैं। इनमें मुख्य राजपूत हैं——

१. कटोच
२. कत्यूर
३. कुरुवंशी
४. खत्री
५. गूजर
६. चौहान, चूहान
७. जाट
८. तंवर
९. नागवंशी
१०. पंडीर
११. पंवार
१२. परिहार (प्रतिहार)
१३. पुंडीर
१४. वेदी
१५. मियां
१६. यदुवंशी
१७. हूण

जाट, गूजर, हूण नाम बतलातें हैं, कि शक-जातियाँ पहाड़में सम्मानित स्थान नीं हैं। खस और शक एक ही जातिकी दो शाखाएँ थीं, यह पहिले कह े हैं। यहाँके राजपूतोंके कितने ही मुख्य कुल निम्न प्रकार हैं:

नाम	वंश	निर्गम	प्रथम गाँव	विशेष
वाल	नाग[1]	रणथंभौर		सवार होनेसे नाम
वाल (विस्ट)	परिहार		ईड	

---

[1] चौहान भी

उनाल	.	.	ऊन	.
कटैत	कटोच	कांगड़ा	.	.
कडवाल (रावत)	.	.	.	.
कंडियाल	.	.	कांडी	.
कंडी गुसाईं[1]	.	मथुरा-समीप	कंडारीगढ़	ठकुरी
कनेत	.	.	.	.
कफोला (विस्ट)	यदुवंशी	कंपिला	.	.
कफोला (रावत)	.	.	.	.
कमीण	.	.	.	असैनिक
कयाडा (रावत)	पँवार	.	.	१३९६ में
कलूडा	.	.	.	कलू-संतान
काला (भंडारी)	.	कालीकुमाऊँ	.	.
कुरमणी	.	.	.	कुर्म-संतान
कुँवर	परमार	धार	.	पँवार-शाखा
कैत्युरा[2]	कैत्यूर	कुमाऊँ	.	.
कोल्या (नेगी)	.	"	कोल्ली	.
कोल्ला (रावत)	.	.	.	.
खड़काड़ी (नेगी)	.	मायापुर	.	.
खड़खोला (नेगी)	कैत्यूरा	कुमाऊँ	खड़खोली	१११२ में
खत्री (नेगी)	.	.	.	.
खाती (गुसाईं)	.	.	.	.
खूटी (नेगी)	मियाँ	नगरकोट	खूँटी	१०५६ में
गगवाड़ी (नेगी)	.	मथुरासमीप	गगवाड़ी	१४१९
गुराडी (रावत)	.	.	.	.
गुसाईं	.	.	.	.
गूजर	.	लंढ़ौरा	.	महरा या
गोखी (रावत)	पँवार	गुजरात	गुराड	१७६० में
गोविण (रावत)	"	.	गोवनीगढ	.

---

[1] गुसाईं या गोसाईं राजकुमारका पर्याय है।

[2] इनके भेद खडखोला, बुलसाडा, मुलाणी, रजवार और रिंगवाड़ा-रावत।

नाम	वंश	निर्गम	प्रथम गाँव	विशेष
ंडियाली (रावत)	.	.	.	.
रदुड़ा (गुसाईं)	.	.	.	.
द	.	कुमाऊँ	.	१५६५ में कुमाऊँ चंद्रवंशके
ोला (विस्ट)	पँवार	उज्जैन	चमोली	१३८६ में आये
्हान (देखो चौहान)	.	.	.	.
तोला (नेगी)	.	चितोलगढ	.	.
ाड़िया (नेगी)	.	हस्तिनापुर	चोपड़ा	१३८५ में
हान	चौहान	मैनपुरी	.	ठकुरी-संतान
्वाल (नेगी)	मियाँ	जम्मू	.	.
ाड़ा (रावत)	.	दिल्लीसमीप	जयाड़गढ	.
ारी (नेगी)	.	.	.	.
ाड़ी (रावत)	.	.	जवाड़ी	.
कोटी	.	सहारनपुर	जस्कोट	.
ा (रावत)	.	.	.	.
्याल	वदरीनाथी	.	जोशीमठ	.
्वासा (रावत)	.	.	.	. .
ूर[1]	.	.	.	सैनिक अफसर
ाल	.	.	डांग	.
ाल (ठाकुर)	.	.	तर्डी	.
ा (विस्ट)	.	चित्तौड़	.	.
ा (रावत)	.	.	.	.
(भंडारी)	.	.	.	.
ड़ा (रावत)	.	कुमाऊँ	.	.
्याल	.	.	थापली	.
ोला (रावत)	मरहटा	महाराष्ट्र	दिकोली	.
ान	वदरीनाथी	.	पांडुकेश्वर	.
्याल	.	द्वाराहाट	.	.

---

[1] इनके भेद हैं—सजवाण, मखलोगा, तड़ियाल और पयाल।

नाम	वंश	निर्गम	प्रथम गाँव	विशेष
धमादा	.	.	.	गढपति-सं
धम्मादा (विस्ट)	चह्वान	दिल्ली	.	.
नकोटी	नगरकोटी	कांगड़ा	नकोट	.
नायक	.	.	.	.
नीलकंठी (नेगी)	.	.	.	.
नेकी (नेगी)	.	.	.	.
नेगी	.	.	.	असैनिक
पजाई	.	कुमाऊँ	.	.
पटवाल (गुसाई)	.	प्रयाग	पाटा	११५५ में
पटूडा (नेगी)	.	.	पटूडी	.
पडियार (नेगी)	परिहार	दिल्ली	.	१८०३ में
पडियार (विस्ट)	"	धार	.	१२४३ में
पंडीर (नेगी)	पंडीर	सहारनपुर	.	१६६५ में
पंडीर (भंडारी)	"	मायापुर	.	१६४३ में
पयाल (ठाकुर)	कुरु	हस्तिनापुर	पयाल	.
परसारा (रावत)	चूहान	ज्वालापुर	परसारी	१०४५
पँवार	परमार	धार	.	गढवाल-
पुंडीर	.	.	.	मखलोगा
फरसूडा (रावत)	.	.	.	.
फरस्वाण (रावत)	.	मथुरा	फरासू	.
वगड़वाल (विस्ट)	.	सिरमोर	वगोड़ी	१४६२
वगलाण (नेगी)	.	बागल	.	१६४६
बंगारी (रावत)	.	बांगर	.	१६०५
बछवाण (विस्ट)	.	.	.	.
वरवाणी (रावत)	तँवर	मासीगढ	.	१४२२ (नैभंर्णी
वर्त्वाल	पँवार	उज्जैन	बडेत	.
वागर्डी	गूजर	मायापुर	.	१३६०
विस्ट	.	.	.	असैनिक
वुटोला (रावत)	तँवर	दिल्ली	.	.

साड़ा (नेगी)	कैत्यूर	कुमाऊँ	.	.
ही	खत्री	नेपाल	.	१६४३ में
ाल (विस्ट)	.	.	.	.
ोंगा	.	.	वैड़ोगी	.
ूरा	.	.	.	.
ारी	.	.	.	असैनिक अफसर
ड़ा	.	.	.	.
ा	.	पटना	.	.
ट्या (नेगी)	हूण	हूणदेश	.	.
ोगा (ठाकुर)	पुंडीर	मायापुर	मखलोगी	१३४६ में
ाल	कैत्यूरा	कुमाऊँ	.	१६५४
ारी (रावत) .	.	.	मन्यारपट्टी	.
ा	.	कुमाऊँ	.	.
्या (रावत)	.	द्वाराहाट	.	.
ा (नेगी)	गूजर	लंढ़ौरा	.	.
(नेगी)	.	पटना	.	.
ीं	.	सुकेत	.	.
ाल	.	.	मुखवा (मुखेम)	.
ीं (विस्ट)	कैत्यूरा	कुमाऊँ	मुलाणी	१३४६ में
ा	जैनी	पानीपत	.	१५३३ में
ा (नेगी)	.	.	.	.
ा (रावत)	पँवार	.	मौंदाड़ी	.
ा (रावत)	.	.	.	.
ार	कैत्यूरा	कुमाऊँ	.	.
ा	रणावत	राजस्थान	.	सिसोदिया
ा	चह्वान	मैनपुरी	रमोली	ठकुरी-संतान
	रांगड़	सहारनपुर	.	.
	नागवंशी	हूणदेश	.	.
	सूर्यवंशी	चित्तौड़	.	१३४८ में

ढ़वाल राजवंशके संबंधसे सुकेत या जम्मूसे आये

राणा	सौन्दनेगी	कैलाखुरी	सौंदाड़ी	.
रावत	.	.	.	.
रिखोला (नेगी)	.	.	.	.
रिंगवाड़ा (रावत)	कैत्यूरा	कुमाऊँ	रिंगवाड़ा	१३५४ में
रौछेला	तँवर	दिल्ली	.	.
रौतेला	परमार	धार	.	पँवार-उ
रौथाण (गुसाइँ)	.	रणथंभौर	.	८८८ में
लोहवान (नेगी)	चह्वान	दिल्ली	लोहवा	९७८
संगेला (नेगी)	जाट	सहारनपुर	.	१७१२
संगेला (विस्ट)	.	गुजरात	.	१३४३
सजवाण (ठाकुर)	मरहटा	महाराष्ट्र	.	प्राचीन संतान
सरवाल (नेगी)	.	पंजाब	.	१५४३
सिपाही (नेगी)	मियाँ	कांगड़ा	. .	.
सिंह (नेगी)	वेदी	पंजाव	.	१६४३
सुनार	.	.	.	.
सोन (भंडारी)	.	.	.	.
सौत्याल (नेगी)	.	डोटी[1]	सौती	.
सौन्द (नेगी)	राणा	कौलाखुरी	सौदाड़ी	.
हाथी (नेगी)	.	.	.	

नेगी, विस्ट और रावत प्राचीन खसोंकी मुख्य जातियाँ थीं। इनमें
रावत, बागली-नेगी, कफोला-विस्ट उच्च समझे जाते थे। सजवान,
घुरदुडा बड़े राजपूतोंमें गिने जाते हैं—घुरदुडा टिहरी राजवंशके हैं।

२. शिल्पकार—

कुमाऊँकी भाँति यहाँ भी शिल्पकार-जातियोंको डोम कहते हैं, जिन
आये शिल्पकार सम्मिलित नहीं हैं। शिल्पकार जातियाँ निम्न हैं—

नाम	शिल्प
अगारी	लोहार

---

[1] पश्चिमी नेपाल

नगाड़ची
वढ़ई, राज
वादक, दरजी
शौंडिक
कुम्हार
तेली
पटकार
हाली
चमड़ा
काठका वर्तन वनानेवाले
रंगरेज

कहार
नर्तक
„
कसेरा
ठठेरा

मछुवा
न्यारिया

गोराइत, चौकीदार
साईस
वादक
मोची
नर्तक, गायक
नर्तक, गायक

तेली

मोची (वाड़ी)	
रुडिया	बसोर
लोहार	
बोड़	बढ़ई
सुनार	
हलिया	हलवाहा
हुडकिया	वादक, गायक

§४. धर्म

गढवालमें हिन्दू-धर्मकी प्रधानता है, वैसे बौद्ध, मुसल्मान, ईसाई आदि अनुयायी भी थोड़े बहुत मिलते हैं।

१. बौद्ध—

किसी समय हिमवत्-खंडमें बौद्ध धर्मकी प्रधानता थी। उस समयके अधिकतर बौद्ध धर्मके अनुयायी रहे होंगे। तिब्बती शासन-कालमें प्र बौद्धोंकी थी। उसके बादसे ब्राह्मण धर्मका पल्ला भारी हुआ। क अभिलेखोंसे पता लगता है, कि ९वीं-१०वीं शताब्दीमें ही ब्राह्मणधर्मकी प्र हो चली थी। कत्यूरी राजा भूदेव (ललितशूर-पुत्र) बौद्ध-द्वेषी[1] होनेका करता है। आठवीं शताब्दीके अन्तमें शंकराचार्यके कारण बौद्ध-धर्म यह हुआ, यह भ्रम मात्र है। कत्यूरी राजाओंके किसी लेखसे शंकर या शं गढ़वालमें उपस्थितिका पता नहीं लगता। उनके समयके मुखलिंग, हरगौरी की प्रचुरता बतलाती है, कि गुर्जर-प्रतिहार समकालीन इस राजवं हिमालयका यह प्रदेश भी लकुलीश शैवोंका गढ़ था। कुमाऊँके जोहारी लोगोंकी भाँति मंगोल-मुखमुद्रा रखते भी नीती और माणाके भोटांतिक और मारछा अब बौद्ध धर्मी नहीं रहे। तोल्छा अपनी भोटवंशीय छोड़ चुके हैं। यद्यपि तिब्बतके साथ व्यापारिक संबंध रखनेके कारण भाषा भी उनमें कुछ प्रचलित है, तथा कुछ बौद्ध-धर्मका हलकासा सं उनपर दिखाई पड़ता है। वर्तमान शताब्दीमें वह अपनेको राज जनेऊ पहिनने लगे और अपनेसे दक्खिनके राजपूतोंसे ब्याह करने लगे। हाँ, नेलङ्के भोटांतिक (जाड़) राजपूत कहलाते भी

---

[1] बागेश्वर-शिलालेख, पृष्ठ ८२

के अनुयायी हैं। वैसे आसामसे लदाखतक सारे हिमाचलकी मंगोल-मुखमुद्रा-ती जातियोंमें बौद्ध धर्म जातीय धर्मसा पाया जाता है। हालमें, जबसे तिब्बतके थ कम्यूनिस्त चीनका घनिष्ट संबंध स्थापित होने लगा, और हमारी सरकारको रसे कम्यूनिज्मकी महामारी आनेका भय होने लगा, और उसने सीमान्तपर ं पुलिस-चौकियाँ ही नहीं बढ़ाईं, बल्कि हर एक तिब्बतीसे दीखनेवाले नरनारीको की पुलीस जबर्दस्ती तिब्बती नागरिक होनेका परिचय-पत्र देने लगी। मसूरी ड़ोर)के किशनसिंहका जन्म कनम गाँव (जिला महासू, हिमाचल)में हुआ । मसूरीमें वह १५-१६ सालसे रह रहे हैं। मार्च १९५१में अपने सौदे-के क्रय-विक्रयके संबंधमें वह दिल्ली गये। दिल्लीकी पुलीस पीछे पड़ी र उन्हें फोटोके साथ भोटिया-प्रजा होनेका परिचय-पत्र देकर छोड़ा। कह े थे—यही बात एक लदाखीके साथ भी हुई। क्या हम मंगोल-मुखमुद्रा-भिन्न को भारतीय नागरिक होनेका लक्षण मानते हैं? ऐसा होनेपर प्रायः हर ह हिमशिखर-श्रेणियाँ भारतकी उत्तरी सीमा नहीं रह जायेंगी और हिमा-के प्राकृतिक सीमाके इस पार काफी दूरतक चीनी गणराज्यकी सीमा चली येगी।

माणा और नीतीके भोटांतिक तोलछा और मारछा दो जातियोंमें विभक्त । तोलछा अपनेको ऊँचा समझते हैं। दोनोंकी मुखमुद्रा पूर्णतया मंगोलीय है। णाके लोग अपने मुर्दोंको गंगा-तटपर नहीं बल्कि सतोपंथ सरोवरपर ले जाकर ते हैं।

हिन्दू (ब्राह्मण) धर्म—

(१) **संप्रदाय**—कुमाऊँ और गढ़वालमें हिंदू-धर्मके एकसे ही रूप मिलते । दोनों ही प्रदेशोंमें शैव-शाक्त संप्रदायकी प्रधानता है। नन्दा भगवती र्वती)का पितृगृह होनेसे ऐसा होना ही चाहिये। भिन्न-भिन्न संप्रदायोंके नुओंसे हिंदू-संप्रदायोंकी स्थितिका पता लग सकता है।

(क) **जोगी (नाथ)**—गोरखनाथका चौरासी सिद्धोंमें होना बौद्ध धर्मके न उनके संबंधको बतलाता है। चाहे मूलतः गोरखपंथ सिद्धोंकी शाखा या नमार्गी संप्रदाय रहा हो, किंतु अब वह ब्राह्मण-धर्मकी शाखा है। शिव र शंकरका वेदान्त उनके लिए मान्य है। कनफटे और बिना कनफटे दोनों रके नाथ मिलते हैं। इनमें कुछ ही नाथपंथी अब साधु हैं, बाकी खेती-किसानी नेवाले गृहस्थ हैं। गढ़वालसे नेपाल तक नाथपंथी जोगी मिलते हैं, बल्कि

नेपालमें गोरखनाथके नामपर गोरखा-नगर बसा, जिसने प्रथम राजधानी कारण नेपालके राजवंशको ही गोरखावंश नाम दे दिया।

(ख) वैष्णव-वैरागी—यहाँ बहुत थोड़ी संख्यामें गृहस्थ और विरक्त वैरागी मिलते हैं, जिनमें अधिकतर रामानंदी हैं। गृहस्थ वैष्णव विरक्त ही वंशज हैं, किंतु यहाँ व्याह-शादी करके प्रायः साधारण ब्राह्मणोंमें मिल यह अच्छे संपन्न हैं और यात्राके समय नंदप्रयागसे बदरीनाथ तक उनकी वैष्णव-साधुओंके लिए सदाव्रत चलती है।

(ग) संन्यासी—शंकराचार्यके अनुयायी दशनामी संन्यासियोंका किसी यहाँ अच्छा प्रभाव था। पर्वतके स्वच्छन्द वातावरणमें विरक्त रहना मुश्किल है, इसीलिए वह गृहस्थ बनते गये। शंकराचार्यके चार प्रधान एक प्रमुख पीठ जोशीमठ भी सैकड़ों वर्षों तक उजाड़ रहा, और हाल हीमें उद्धार किया गया। गढ़वाली स्त्रियाँ भी काफी संन्यासिनी मिलती हैं, अपने अलग मठ होते हैं।

संन्यासी परंपरामें ही ब्रह्मचारी भी हैं, किंतु ये शिखासूत्रधारी होते हैं

(२) देवता—

बदरीनाथ (विष्णु), केदारनाथ (शिव), गंगा (गंगोत्री), जमुना नोत्री) और नन्दादेवी (पार्वती) गढ़वालके प्रधान देवता-तीर्थ सारे मान्य हैं। इनके अतिरिक्त कितने ही स्थानीय देवता हैं, जैसे—

(क) काली, दुर्गा—कुमाऊँकी भाँति गढ़वालमें भी शक्ति-साधन जोर है, काली, अंशी, कंसमर्दनी आदिके नामसे कालीकी बलि-पूजा कालीमठमें गढ़वालकी बड़ी जागता देवी है। महामारीके समय इन पूजा होती है।

(ख) ग्राम-देवता—गोरिल, नरसिंह आदि छोटे देवताओंपर बहुत किया जाता है। जौनपुर, रवाईं जैसे कुछ इलाकोंके अतिरिक्त विमान देवताओंका यहाँ प्रचार नहीं है। यहाँके देवता आदमियों (गंतुआ या शिरपर आकर बोलते हैं।

(ग) पांडव देवता—पांडवोंकी महिमा वैसे तो सारा भारत जानता है पांडवोंने पूज्य देवताओंका रूप गढ़वाल हीमें लिया है। "गढ़वालकी पांडवोंपर भी बड़ा प्रेम है। ऐसा कोई ग्राम नहीं होगा, जिसमें बार पांडव नहीं नचाये जाते। उन लोगोंका विश्वास है, कि

ानेसे ग्राममें सुभिक्ष रहता है, किसी संक्रामक रोगके आक्रमणका भय नहीं ता।"[1]

(घ) नाग—नाग देवता भी बहुत स्थानोंमें पूजे जाते हैं, नागपुर पर्गना ोपकर इनके लिए प्रसिद्ध है।

(३) लिंगवास—

मृतक श्राद्धकी यह विशेष विधि गढ़वालकी अपनी चीज है। "मनुष्यकी ुके ठीक एक महीनेपर उसी तिथिको यह कृत्य होता है।...श्राद्ध-कर्त्ता पत्थर(लिंग) ले जाकर उस स्थानपर रख देता है, जहाँ प्रत्येक जातिका छोटासा घर बना रहता है, जिसको पितृकुडा कहते हैं। उस लिंगका पूजन के पितृकुडाके अन्दर रख...उसका दरवाजा बन्द कर देता है। जातिके न वहाँ एकत्रित होतें हैं। बकरा मारा जाता है और ब्राह्मणों और जातिके ोंको भोजन कराया जाता है। यह देश केदारनाथकी भूमि कहा जाता है, लिए मृतकको शिव-लिंगके रूपमें बना दिया जाता है।"[2]

(४) गुंठ—

गढ़वालके राजाओंके समयसे और कुछ उससे पहिलेसे भी देवोत्तरसंपत्ति- ं गाँव चले आतें हैं। ऐसी संपत्तिको गुंठ कहतें हैं। गोरखों और उनके बाद जोंने भी गुंठोंको वैसे ही रहने दिया, हाँ, अंग्रेजी शासनने "गुंठका अर्थ गाँवकी गुजारी भर पानेका हक" माना और उसे जमींदारी या जागीरदारी नहीं ने दिया। गढ़वाल जिलेमें १०६५१ रुपये वार्षिक आमदनीवाले गुंठ-ग्राम हैं।

(५) सदावर्त—

ऐसी धर्मोत्तर-संपत्ति है, जिसकी आमदनीसे बदरीनाथ, केदारनाथके यात्रियों- सदावर्त (भोजन) दी जाती है। श्रीनगरके राजाओंने इसके लिए खोलिया ादारी प्रदान की थी। नेपालके राजाने १८१३ ई०में दसोली, परकंदै, बामसू र मैखंडाकी पट्टियोंमें इसके लिए भूमि प्रदान की। अंग्रेजी शासनमें सदावर्त- आमदनीका व्यय भोजन-दान तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि इसीसे त्रियोंके उपयोगके रास्तों, पुलों और धर्मशालाओंका निर्माण या मरम्मत की ै। पीछे सदावर्तकी आमदनी चिकित्सालयोंकी स्थापना और संचालनमें ा दी गई।

---

[1] "गढ़वालका इतिहास", पृष्ठ २१०

[2] "गढ़वालका इतिहास", पृष्ठ २११

३. सिक्ख—

गढ़वालमें सिक्खोंकी संख्या नाम मात्र है, और जो हैं वह भी केश नहीं हाँ, तमाखू नहीं पीते। यह अपनेको नेगी कहते हैं। बदरीनाथके पास एक सरोवर (हेमकुंड या लोकपाल)पर गुरु गोविंदसिंहके पूर्व-जन्मकी तपस्या का पता लगा है, जिससे वहाँ एक सिक्ख महतीर्थके विकासकी संभाव गई है; किंतु तीर्थ-स्थानमें मल-मूत्र-त्यागकी मनाही कर दी गई है, स्थायी तीर्थपुरी बसनेकी उम्मेद नहीं है। गढ़वाली सिक्ख निम्न स्था पाये जाते हैं:

स्थान	पट्टी	स्थान	पट्टी
श्रीनगर	.	गुम	लंगूर
पिपली	मवालस्यून	बिजोली	गूरारस्यून
जैगाँव	अजमीर	होलयूनी	गूरारस्यून

टेहरी जिलेमें टेहरी तथा एकाध और स्थानोंपर थोड़ेसे सिक्ख रहते

४. जैन—

जैन कोटद्वार, लेन्सडौन, श्रीनगर, पौड़ी जैसे व्यापारिक स्थानोंमें हैं, और बाहरसे आये हुए हैं।

५. आर्य—

पिछले तीस सालोंमें आर्य समाजका प्रचार शिल्पकारोंमें अच्छा हु जिससे वह बहुतसे स्थानोंमें मिलते हैं।

६. मुसल्मान

मुसल्मान गढ़वालमें व्यापारिक स्थानोंमें ही मिलते हैं, और प्राय: नीचेसे आये हुए हैं। धनाई (तैली चाँदपुर) और भैरगाँव (अजमीर) गढ़वाली मुसल्मान हैं, जो मनिहारी (चूड़िहारी)का काम करते हैं। पास भी एकाध गाँवोंमें मुसल्मान रहते हैं, जो गर्मियोंमें मसूरी जा बैरा-खा का काम करते हैं। गढ़वालके राजाओंने दिल्लीके संबंधके समय मुसल्मान परिवार लाकर बसाये, जिनका काम आगत मुसल्मान अति भोजन तैयार करना तथा बहेलिया-पेशा था।

७. ईसाई—

पहिला ईसाई मिशन १८६५ ई०में पौड़ीमें कमिश्नर हेनरी रामजे कतामें स्थापित हुआ। धीरे-धीरे श्रीनगर, देखवाली, कैल्यूर, भवाई, दोगड्डा, लेन्सडौन, थानसंगला, कोटी, लोहबा, बेनीताल, रमनी तथा

ी कितने ही स्थानोंमें प्रचारकेंद्र कायम होतें गये। अधिकतर मिशनरी अमेरिकन मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्चके हैं। आरंभमें शिक्षाप्रचारका काम ईसाई चारकोंने काफी किया।

§५. आकृति, वेशभूषा और भाषा

१. आकृति

निचले गढ़वालके लोग प्रायः लंबे और छरहरे होतें हैं। उनका रंग गोरा ये हुए तथा रग-पट्ठे पतले होते हैं। ऊपरी गढ़वालके लोग गेहुँआ रंगके कदमें टे किंतु वड़े हट्टे-कट्टे होते हैं। एक समय था, जव इनका सीधासादापन और मानदारी हरेक यात्रीको विदित थी। घरोंमें वह ताला नहीं लगाते थे। घर तना प्रिय था, कि वह वाहर जाना नहीं चाहते थे। युद्धमें गढ़वाली अपनी रता और निर्भीकताके लिए सदा प्रसिद्ध थे। यह उन्हें अपने खस-पूर्वजोंके क्तसे मिली थी, जिनके स्ववंशी पुराने शक, पार्थिव और आजके रूसी भी इस तमें कभी कम नहीं उतरे। हाँ, वीमारी, विशेषकर महामारियोंमें वह वहुत यर सावित होते हैं। गढ़वालके टिहरी जिलेके लोगोंकी भी वात वही है, हाँ, वाई और जौनपुर पर्गनोंके लोग पिछड़े होनेसे वहुत सीधे-सादे हैं।

तिव्वती सीमान्त (नीती, माणा, नेलङ्)के गढ़वाली जिन्हें भोटिया भोटांतिक) और जाड़ (नेलङ्पा) कहा जाता है, नाटे और शरीरसे मजवूत ते हैं। उनकी आँखों और चेहरोंपर—स्त्रियोंमें विशेषतः—मंगोलमुद्रा स्पष्ट खाई पड़ती है।

२. स्वभाव—

मनुष्यके स्वभावपर प्राकृतिक और आर्थिक परिस्थितिका भारी प्रभाव ता है। पिछले सौ—खासतौरसे गत पचास—वर्षोंमें जनसंख्या वहुत वढ़ ई है, जिसके साथ जंगलोंको काटकर इतने खेत वन गये, कि अव अत्यावश्यक गलोंके नाशसे ही और खेत वन सकते हैं। खनिज-फल-ऊन-बिजलीकी जके वढ़ानेकी भारी क्षमता होनेपर भी उसके लिये पहिले कुछ भी नहीं किया या, और न आज ही कुछ करने-धरनेका रंगढंग मालूम होता है। लोगोंमें वी वेहद वढ़ गई है, जिसका प्रभाव उनपर पड़ना जरूरी है। वैसे कुमाऊँकी रह गढ़वालमें भी पुरुषोंसे स्त्रियाँ अधिक परिश्रमी होती हैं, घरके भीतरका ी नहीं खेतीका भी काम उन्हींके ऊपर है। गढ़वालियोंकी प्रसिद्ध ईमानदारी व भी सर्वथा लुप्त नहीं हुई है।

३. वेष-भूषा—

सभी देशोंकी भाँति गढ़वालके लोगोंकी भी पोशाक ऋतु और ऊँ अनुसार घटते-बढ़ते तापमानके अनुकूल है। दक्षिणी भाग गरम है। व लोग सूती कपड़े पहनते हैं, जो अपने मैदानी पड़ोसियोंसे बहुत भेद नहीं र गढ़वाली टोपी गांधी-टोपीसे इतना भेद रखती है, कि वह किसी रंग और कपड़ेकी हो सकती है, हाँ, उसके उठे किनारोंपर सींवनकी तिरछी रे पड़ी रहनी चाहिएं; साथमें पायजामा यही गढवाली पुरुषोंकी साधारण पो है। पहिले मिरजई पहिनी जाती थी, जिसका स्थान अब कोटने लिया जाड़ोंमें ऊनी या रुई-भरा कपड़ा इस्तेमाल करते हैं। मध्य तापमानवाले भू हीं अधिक आबादी है। आज यहाँपर भी पुरानी पोशाकका स्थान कोट-पाय लेता जा रहा है। पहिले यहाँके लोग कुठा-गाती पहिनते थे—ऊनी या भंगे चादरको गातीकी तरह लपेटते थे, जिसके नीचे एक मिर्जई भी प्रायः प जाती थी। भोटांतिक लोग पट्टूका पायजामा और सूती मिर्जई पहिनते मिर्जईके ऊपर ऊनी चपकन रहता, जिसपर बकरीके बालोंकी रस्सी 'ब कमरबंदकी तरह बाँधी जाती।

दक्षिणी भागमें स्त्रियाँ सूती साड़ी या छींटकी अँगिया पहिनती हैं। ठं वाले भागमें ऊनी चादर "लावा"को विशेष तौरसे लपेटकर दाहिने कंधेपर गा तरह चाँदी-कांसेके काँटेसे बाँध लेती हैं। कमरमें सूती कपड़ेका कमरबंद सिर ढाँकनेके लिए एक चादर (झुल्का) रहता है। भोटांतिक स्त्रियाँ ला ऊपर छींटका लहँगा पहिनती हैं। ऊनी या दूसरे कपड़ेकी अँगिया और (कंचुकी) भी उनके परिधानोंमें है। ऊपरसे सूती घोघी शोभावर्धक माना जाता है।

ठंडे भागोंमें वर्षा और जाड़ेसे रक्षाके लिए भेड़के बालोंका बना ए जैसा कोट पहिना जाता है, जिसे दौखी कहते हैं।

४. स्त्रियाँ—

गढ़वालकी स्त्रियोंकी आकृति आदिके बारेमें डाक्टर पातीरामने है :[1] "उच्च वर्गकी स्त्रियाँ आर्य आकृति, गोरा रंग और मझोले कदकी हैं। उनके केश साधारणतया लंबे और काले होते हैं। उनमेंसे अधिकांश दे

---

[1] 'Garhwal Ancient and Modern (Rai Pati R Bahadur, Army Press Simla 1917), pp 130-31

सुंदरी, स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट होती हैं। मध्यम-वर्ग अर्थात् किसानोंकी स्त्रियाँ रंग-ढंगमें भेद रखती हैं। खुलेमें काम करनेके कारण जल्दी ही उनका सौंदर्य नष्ट हो जाता है। निम्न-वर्ग अर्थात् डोम-जातिकी स्त्रियाँ पहिले दोनोंसे हर बातमें भेद रखती हैं। उनका कद प्रायः नाटा, गठन मजबूत, केश प्रायः ऊन जैसे तथा काले होते हैं।...भोटिया (भोटांतिक) स्त्रियाँ मझोले कद तथा मजबूत शरीरकी होती हैं। उनकी मुखाकृति मंगोलीय है। वह वहुत परिश्रमी होती है।...

५. आभूषण—

नाकके आभूषण नथ और वुलाक यहाँ सर्वत्र पहिने जाते हैं। कानोंमें सोने या चाँदीके मुरखाले होते हैं। चूड़ी, कड़े, हाथके तथा ३०-४० तोले तकके चाँदीके पाजेव पैरके जेवर हैं। हाथकी अँगुलियोंमें मुँदरी तथा पैरोंकीमें पोल्या होती हैं। गलेकी हँसेली ४०-५० तोला चाँदीकी होती है। इनके अतिरिक्त रुपयेकी माला भी गलेका आभूषण है।

६. खानपान—

इसके वारेमें पंडित हरिकृष्ण रतूड़ीने लिखा है—[1]

"गढ़वालमें...दाल, भात, खीर इत्यादि सिक्तान्नके खानेमें विशेष भेद पाया जाता है। रोटी, पूरी, प्रसादका खाना केवल अछूत जातिको छोड़कर अन्य चारों वर्णोंमें...समान भावसे प्रचलित है। सिक्तान्न...सरोला ब्राह्मणोंके हाथसे पका हुआ चौकेके अंदर सव लोग खा लेतें हैं। कुछ ब्राह्मणों और क्षत्रियोंकी ऐसी भी जातियाँ हैं, जो सरोला-ब्राह्मणोंके हाथसे भी दाल-भात नहीं खाते। गंगाड़ी ब्राह्मणोंके वीच दाल-भात नातेदारोंमें चलता है।...खसिया लोगोंमें दाल-भात केवल नातेंदारोंके साथ चलता है। अछूत जातियाँ अन्य सव जातियोंका पकाया खा लेती हैं, उनमें चौकेका रावज नहीं। वे ...आपसमें एक दूसरेका हुक्का नहीं पीतीं, भात रोटी नहीं खातीं, जव तक कि नातेंदारी न हो।...अछूत जातियोंका छुआ हुआ जल या कोई तरल पदार्थ तेल, घृत, शहदके अतिरिक्त, और पका हुआ अन्न...कोई...नहीं खाता।...गढ़वालमें जातिके दो संकेत माने जाते हैं, एक डोम अछूत जाति दूसरा विठ जिसकी छूत नहीं मानी जाती।...

---

[1] "गढ़वालका इतिहास" (पं० हरिकृष्ण रतूड़ी, देहरादून १९२९ ई०), पृष्ठ २०५–२०८

वीठोंका वर्ताव अन्य अ-वीठोंसे बहुत बुरा है। पहाड़में आर्यसमाजने
आत्मसम्मान लानेकी कोशिश की। इसे वीठ किस दृष्टिसे देखते हैं,
लिए निम्न गीत देखिये—

[१]"मीन[२] खौणी[३] मीन, मीनखौणी मीन। डोमो जंदेउ[४] पैर लिने,
का दिन।
किनगोडीकी कांडी,[६] किनगोडीकी कांडी। डोम जंदेउ पैर लिने
डाँडी[८]।
वाह् रे डोम, वाह् रे डोम !
बांटी जाला[९] मेवा, बांटी जाला मेवा। डोम करला[१०] संध्या, विठ[११]
सेवा। वाह् रे डोम, वाह् रे डोम।
पैटी जाली बरात[१२] पैटी जाली बरात। डोम संध्या करन खोजत
मारी जाली[१४] बरछी, मारी जाली बरछी। आचमनी भी कनी छ[१५],
खोजा करछी।
वाह् रे डोम, वाह् रे डोम।"
घोटी जाली रैंठी,[१६] घोटी जाली रैंठी। डोम संध्या करन कू कूडा[१७]
वाह् रे डोम, वाह् रे डोम।
काटी जाली तूण,[१८] काटी जाली तूण। नि बोलन,[१९] विट्ट तुम ने
डोम लोण !
कांगलीका[२०] घाँघाँ, काँगलीका घाँघाँ। डोम करला हवन, विट्ट करला
वाह् रे डोम, वाह् रे डोम।"

७. रीति-रवाज—

विठ और डोमका भेद अभी भी इधर भयंकर है। जिस तरह खस
खस नहीं राजपूत कहते हैं, वैसे ही डोम अब अपनेको शिल्पकार
वीठका अर्थ है, जिसके हाथमें धन और शक्तिके सारे स्रोत केंद्रित हों।

---

[१] "विराट हृदय" (श्री शंभुप्रसाद बहुगुणा), पृष्ठ २२३-२४
[२] पौधोंके पासकी मिट्टी [३] खोदी गई [४] जनेऊ [५] नष्ट
[६] किनगोडीका काँटा [७] जल-शून्य, शुष्क [८] पहाड़ [९] बाँटेंगे, [१०]
[११] विस्ट, ब्राह्मण-क्षत्रिय [१२] चलनेको तैयार बरात [१३] बारात [१४]
जावेगी [१५] कैसी है [१६] रायता [१७] कूड़ेके ऊपर [१८] काटा जाये
वृक्ष [१९] नहीं बोलना [२०] कंघी

वके वीठोंमें थोकदार, पधान और हिस्सेदार (या खैकार) एकके नीचे एक म अधिकारी होते थे, किंतु धीरे-धीरे उनकी शक्ति पटवारी आदि सरकारके नभोगी नौकरोंके हाथमें चली गई। भिन्न-भिन्न रीति-रवाज सभी जातियों वर्गोंमें एकसे नहीं है।

(१) **स्त्रियोंका स्थान**––उच्चवर्गकी स्त्रियोंमें वही रीतिरवाज देखनेमें ता है, जो कि मैदानी इलाकेके उस वर्गमें। किसान स्त्रियोंके बारेमें कहा जा ता है, कि यहाँकी सारी खेती उन्हींके श्रमपर खड़ी है। इसीलिए जो समर्थ वह एकसे अधिक स्त्रियाँ रखना चाहते हैं। मैदानमें जैसे लड़केका मोल तिलकके में होता है, वैसे ही यहाँ इस वर्गके लोगोंमें लड़कीका मोल है। टेहरीमें तो हाल तक इस मोलमेंसे कुछ सरकारको भी मिलता था। चिरकालसे चले खस-रवाजके अनुसार विधवा अपनी जातिके किसी पुरुषको घर-जमाईकी टेकुआ बैठा सकती है। पुत्रोंमें हिस्सा बाँटनेके समय पुत्रोंकी संख्यापर नहीं सौतोंकी संख्याके अनुसार बाँट (सौतिया-बाँट) होता है, जिससे स्त्रियोंका महत्त्व तो अवश्य मालूम होता है।

(२) **विवाह**––"खस-राजपूतों और खस-ब्राह्मणोंमें विवाह संस्था केवल ुरी रीतिपर है। उनके बीच सैकड़ों रुपये कन्याशुल्क देकर विवाह होते हैं। ल्प, पाणिग्रहण, सप्तपदी आदि कोई रीति काममें नहीं लाई जाती।... रीति डोम-जातिमें भी है।...उनके बीच भाईकी विधवाको घरमें रखने उससे सन्तति पैदा करनेका भी रवाज प्रकट रूपसे है। ब्राह्मण-क्षत्रियोंमें पुनर्विवाहका रवाज नहीं है...। कन्या-शुल्क लेनेसे कन्याकी हैसियत होती है। परन्तु असवर्ण विवाहका रवाज प्रायः इनमें भी है।... ण केवल कन्या-शुल्क देकर किसी खसिया या खस-ब्राह्मणकी बेटी, ऐसे ही पूत किसी खसिया या खस-राजपूतकी बेटी घरमें डाल लेते हैं और उसके भोजन-संबंध भी नहीं रखते"––[1]

पिछली शताब्दीके आरंभ तक राक्षस-विवाह भी खसिया और डोम प्रचलित था। सयानी लड़कीको जबर्दस्ती ले जाकर व्याह कर लिया ता, और लड़कीके बापको कन्या-शुल्क देकर छुट्टी मिल जाती थी। अंग्रेजी-नकी कड़ाईके कारण इस प्रथापर रोक लग गई। १९४८के अगस्तमें ने कनौरमें एक जगह इसी तरह कन्या-अपहरणकी एक घटना देखी।

---

[1] "गढ़वालका इतिहास", पृष्ठ २०३-२०४

वहाँवाले ख्याल करने लगे, कि अंग्रेजोंके शासनके हट जानेपर उनका अधिकार फिर लौट आया है।

जौनपुर (टेहरी) पट्टीके लोग वस्तुतः गढ़वालकी और जातियोंकी जौनसारियोंसे अधिक संबंध रखते हैं। दोनोंके रीति-रवाजों और वे बहुत समानता है। बहु-पतिविवाहका वहाँ अब भी रवाज है, जिसके सभी भाइयोंकी एक पत्नी होती है।

८. भाषा—

गढ़वाली भाषाकी मुख्यतः तीन बोलियाँ हैं, जिनका नमूना श्री टी जी शर्मा "कुंज"[1]के अनुसार निम्नप्रकार है—

(हिन्दी—एक समयमें दो विख्यात शूरवीर थे। एक पूर्व दिशाके दूसरा पश्चिम दिशाके कोनेमें रहता था। एकका नाम सुनकर, दूसरा जाता था। एकके घरसे दूसरेके घर जानेमें बारह वर्षका मार्ग चलना पड़ता

(१) टिहरी-श्रीनगरी बोली—

एक वगतमा दुइ नामीं जोधा छा। एक पूरवका कोणामा, अर पच्छिमका कोणामा रन्दो छौ। एकको नाउँ सुणकि, दोसरा धर जनि जान्दी छुई। एकका डेरासे दोसराका डेरा जाणामा बारह वरसको बाटो पड़दो छौ।

(२) रवाईं-जौनपुरी बोली

यक्क समय मु दू वेग्या वांक्का बीर हाँ। यक्क पूरव छोड़ु हैक्क छोड़ु रौं। यक्का कु नौं सुणी, हैक्कु जली फुक्की जाउं। यक्काका हैक्काका दार जाण मु यक्क जुग कु वाट्ट हिटण पड़ो।

(३) चौंदकोट-सलाणी बोली

एक वैनमा दुइ भारी नामी भैड़ छया। एक पूरवमा, हैक पच्छिममा छयो। एकको नाउँ सुणी, हैक फुकेइ जान्द छयो। एकका घार ना हैक जाणमा वारा साल को वाट हिटण पड़दु छयो।

---

[1] गढ़वालकी सारी बोलियाँ लगभग इन्हीं बोलियोंके अन्तर्गत आ हैं। केवल कहीं कहीं कुछ शब्दोंका साधारण हेर-फेर और उच्चारण पाया जाता है। सीमावर्ती प्रदेशोंकी बोलियाँ मिश्रित पाई जाती हैं। गढ़ मुख्य बोली "गढ़वाली" है, जो श्रीनगर-टिहरीके आसपास बोली जा इसी बोलीमें गढ़वाली भाषाका साहित्य भी मिलता है।—टीकाराम शर्मा

अध्याय ५

आजीविका

गढ़वालमें उद्योगीकरणकी सारी संभावनायें हैं, किंतु अभी भारतके और ोंकी तरह वह केवल कृषि-प्रधान देश है।

§ १. कृषि

१. कृषिका ढंग—

टेहरी जिलेके ४२ सौ वर्गमीलमें २५० वर्गमील कृषिकी भूमि है। गढ़वाल में इससे और भी अधिक भूमि खेतोंके रूपमें परिणत कर दी गई है। वहुतसी ांपर तो जंगलोंको काटकर सारे पहाड़को खेतोंकी सीढियोंसे ढाँक दिया गया जिसके कारण एक ओर पहाड़ सूखे हो गये और दूसरी ओर वहाँ भूमि- ज्यादा होता है। जंगलोंके अभावके कारण खेतोंकी उर्वरता भी वहुत कम गयी है। मल्ला-पैनखंडा गढ़वाल जिलेमें और नेलङ् टेहरीमें ऐसे इलाके हाँपर वहुत कम जमीनमें खेती होती है। मल्ला-पैनखंडा माणा और नीतीके ाले भोटांतिक गाँवोंका इलाका है। इधर मध्य-हिमालयमें दो हिमाल- याँ हैं, जिनमें असली पंक्ति पहले आती है। इसके उत्तरमें तिव्वतके साथ ी सीमा वनानेवाली दूसरी पंक्ति है। कुमाऊँसे गढ़वालतकके भोंटांतिक के मुख्य हिमाल-श्रेणीसे उत्तरमें हैं, जिसके कारण वादल वहाँ हिमालमें ों द्वारा काटे छिद्रोंसे मुश्किलसे पहुँच पाते हैं। ऐसे छिद्रोंमेंसे एकका "क्रौंच- " नाम वतलाता है, कि भूमिकी इस स्थितिका कुछ-कुछ परिचय प्राचीनोंको ा। वादलोंके मार्गमें यह कठिनाई माणा, नीती, नेलङ्के इलाकोंको वर्षासे कुछ वंचित कर देती है। ऊपरसे १००००से अधिक फुट ऊँचाईवाली ूमि नवंवरसे मईतक वर्फसे ढँकी रहती है, जिसके कारण यहाँ केवल एक सल पैदा की जा सकती है। तिव्वतके साथ व्यापार यहाँके लोगोंकी मुख्य का है, यह कह आये हैं। माणावालोंको एक लाभ यह भी है, कि वह वदरी- के यात्रियोंसे लाभ उठा सकते हैं। यद्यपि दूकानें उन्होंने अभी वहुत कम ी हैं, किंतु उनका आलू और दूसरी चीजें अच्छे दामोंमें विक जाती हैं।

गढ़वालके इस इलाकेमें रिणी (६५०० फुट)से नीती (११५०० फुट)त गाँव हैं, जिनके पास सारे खेत केवल १००० एकड़ हैं। खेत कहीं-कहीं सी तरह वनाये हुए हैं और कहीं-कहीं काटकर जंगलोंके बीचमें ही खेती की हैं। वर्षाकी कमीके कारण सीढ़ी और वेसीढ़ी दोनों तरहके खेतोंकी उप जैसी होती है। माणा-घाटीमें आलूके अतिरिक्त छुवा और फा वोया जाता है। नीती-घाटामें इनके अतिरिक्त गेहूँ, जौ और सरसों भी वाले खेतोंमें पैदा होती है। मल्ला-पैनखंडाके वारेमें प्रथम कमिश्नर ट्रेलने सौ वर्ष पहले लिखा था: मूलतः यह भूमि तिव्वती वाशिन्दोंकी थी, " सूरत, भाषा, धर्म, रीति-रवाज सभी वतलाते हैं, कि यहाँके वर्तमान निवा मूल-स्थान पड़ोसका तातारी प्रदेश (तिव्वत) है। . . ."मल्ला-पैनखंडाको चार शताब्दी पहले गढ़वालियोंने जीता। किंतु "दक्षिणी हिमालयके प्रजा होनेके वाद भोटिया (भोटांतिक) लोगोंने अपने पैतृक राज्यकी अनु को विल्कुल छोड़ नहीं दिया, वल्कि आज भी वह दोनोंकी प्रभुताको करते हैं। यह वड़ी विचित्रसी अधीनता है, लेकिन तिव्वत और हिंदु वीच व्यापारिक संवंधके विचवई वने रहनेके अपने स्थायी स्वार्थके नि ऐसा ही चलता रहेगा, ऐसा मालूम होता है।"

२. भूमिके भेद—

गढ़वालमें समतल भूमि भावर छोड़कर और कहीं नहीं है। ए कहा जा सकता है कि यहाँकी सारी भूमि पहाड़ोंसे ढँकी है, इसलिए पर्वतगात्रपर सीढियोंकी तरह वनाया जाता है। चट्टानोंके ऊपर मिट्टी वहुत पतली होती है, जिसके कारण खेतोंको अधिक मिट्टीसे ढाँकना होता है। कहीं-कहीं तो मिट्टी दूरसे लाकर डाली जाती है, किंतु इस त खेत नहीं वनाये जा सकते। खेत वनानेका कायदा है: थोड़ा नीचे पत्थरोंकी दीवारसी खड़ी कर देना, फिर चार-पाँच हाथ ऊपरसे मिट्टीको दीवारको जड़से ऊपर तक लगाकर उसे जमा कर देना। खेतोंकी दीवा एक ही साल नहीं वना दी जाती, वल्कि थोड़ा-थोड़ा करके कई सालोंमें होता है। कहा जा सकता है, कि यहाँके खेत पीढ़ियोंके परिश्र हैं। एकके ऊपर एक इस तरहके वने खेत दूरसे देखनेपर ठीक सीढियों होते हैं। खेतोंकी इन दीवारोंको एक वार वनाकर निश्चिन्त नहीं सकता। वर्षामें दीवारें टूटती-फूटती रहती हैं, जिनकी वरावर मरम्म पड़ती है। सिंचाईवाले खेतोंको सीढ़ीदार वनाया जाता है। वहाँ उपज

ती है, इसलिए इतना परिश्रम वेकार नहीं होता। विना सीढ़ीकी खेतीकी को कटील कहते हैं। यह रामभरोसे खेती है। आमतौरसे गाँव ऐसी जगह ता है, जिसके ऊपर और नीचे खेती लायक भूमि हो।

खेतीकी ऊपजके लिए तीन चीजोंकी अवश्यकता होती है: (१) खेतकी ति अर्थात् समुद्रतलसे उसकी ऊँचाई, (२) भूमिकी वनावट अर्थात् पत्थर र मिट्टीकी मात्रा, (३) सिंचाईका सुभीता। आमतौरसे ६५०० फुटतक की जा सकती है। छोवा, वत्थू ८००० फुटतक पैदा हो सकते हैं और १००० फुटतक। अगर खेत पहाड़के छायादार पार्श्वपर है और उसके पास त है, तो वहाँ नमी काफी वनी रहती है और मिट्टीकी तह भी अधिक मोटी उर्वर होती है। ऐसी भूमि पहाड़ोंके दक्षिणी पार्श्वपर मिलती हैं। लर वैटनने लगान ठीक करते वक्त यहाँकी कृषि-भूमिके छ विभाग किये जिनमें सिंचाईके भूमिका प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी और वेसिंचाईकी भूमिकी सी ही तीन श्रेणियाँ मानी थीं। इनके अतिरिक्त ईजरान या कटीलकी वीं श्रेणी भी थी, जिसमें हर तीसरे या चौथे साल ही खेती की जाती है।

अच्छी खेती और उपजके लिए पहाड़में सिंचाईकी आवश्यकता मैदानसे भी क है, क्योंकि यहाँका पानी धर्तीके ऊपर और नीचे दोनों ही जगह जल्दी जाता है। जंगलोंका यह भी एक उपयोग है, कि वह पानीके एक भागको नीचेकी धर्तीमें रोक रखते हैं, और सूर्यकी किरणोंको भी काफी समय तक को नहीं सोखने देते। सिंचाईके लिए जल यहाँ वहुत जगहोंपर प्राप्य है, क सभी उपत्यकाओंमें अलकनंदा, भागीरथी जैसी वड़ी नदियाँ तथा उनकी नी ही शाखायें वहती हैं। इनमेंसे वहुतेरी तो सनातन-हिमानियोंसे निकलती इसके कारण वह सदानीरा होती हैं। पुराने जमानेसे लोग छोटी-छोटी —जिन्हें यहाँकी भाषामें गुल कहा जाता है—वनाकर खेतोंकी सिंचाई करते हे हैं। आरंभिक समयमें तो पहाड़के ऐसे स्थानोंमें खेत ही नहीं वनाये गये हाँ नहरको वहुत मुश्किलसे तथा वहुत दूरसे लाना पड़े। आजकल आवादीके वढ़नेके अनुसार खेतोंको, जहाँ कहीं भी भूमि मिली, वहाँ तैयार किया गया, जहाँ गुल (कूल, कुल्या) निकालना आसान काम नहीं है। एक शताब्दीमें भारतके और जगहोंकी तरह, यहाँ भी सामूहिक जीवनका हुआ, और लोग मिलकर सवके लाभके लिए काम करनेकी जगह अपना अलग-अलग करना ही पसंद करते हैं। पहले जमानेमें राज्यकी ओरसे पंचायतोंके कारण भी मिलकर गुल या मार्ग वनानेके लिए लोग मजबूर

किये जाते थे, किंतु इधर वह मजबूरी उतनी नहीं रही। वस्तुतः मजबूर भी वह अपने वूते आजकी सिंचाईकी समस्या हल नहीं कर सकते। दूरसे को लानेके लिए इंजीनियरकी सहायता आवश्यक है, तथा रास्तेमें बरसाती नालों आदिके ऊपरसे नहरको पार करानेके लिए पुलों और मोटे की जरूरत पड़ती है। जगह-जगह नहरोंको स्थायित्व देने तथा पानी जानेसे वचानेके लिए सीमेंटकी भी काफी अवश्यकता पड़ेगी। नजदीक छोटी नहरोंको निकालने और चालू रखनेका काम तो अपने थोड़ेसे गाँववाले करते ही आये हैं, अब तो दूरसे निकलनेवाली बड़ी-बड़ी नहरें लिए रह गई हैं। अंग्रेजी सरकारने इस ओर वहुत कम ध्यान दिया। चार वर्षके भारतीय शासनमें भी जो काम इस दिशामें हुआ है, उसे केवल पोंछना ही कहा जा सकता है। पहाड़की आवादी भी प्रतिवर्ष हजारपर हिसावसे वढ़ रही है अर्थात् सारे गढ़वालमें प्रतिवर्ष पन्द्रह हजार नये मुंह लिए तैयार हो जाते हैं, जिनके लिए प्रायः एक लाख मन अनाजकी आव वढ़ जाती है। यह काम आँख पोंछनेसे नहीं हो सकता।

३. खाद—

भूमिकी स्वाभाविक उर्वरता सैकड़ों वर्षोंकी खेतीसे वहुत कुछ चुकी है। लोग उर्वरता वढ़ानके लिए पशुओंके गोवर और गौशालाओंमें पत्तियोंको ही इस्तेमाल करते हैं। कटील भूमिमें झाड़ियोंको काट और राख विखेरना भर काफी समझा जाता है। आमतौरसे खाद वोवाई पहिले खेतमें डाली जाती है। गर्मीके दिनोंमें कहीं-कहीं खेतोंमें ही वाँधा जाता है, जिसमें उनका गोवर और पेशाव खेतमें पड़े।

४. फसलें—

खरीफ और रव्वी दो प्रकारकी फसलें आमतौरसे होती हैं, किंतु पहिले वतलाया, वहुत ऊँचाईके स्थानोंमें केवल एक फसल होती है। फसल वोनेसे पहिले एक वार खेतको जोत लिया जाता है, फिर झंगोरा (कोदा) कांगुन, मक्का जैसे वर्साती अनाजोंको वो दिया जाता है। गेहूँ और खेतोंको ज्यादा जोतनेकी अवश्यकता पड़ती है। वहाँके पत्थरोंको चुन ढेलोंको तोड़ना भी आवश्यक होता है। फसलके काफी वड़ी हो जानेपर की अवश्यकता पड़ती है। पहाड़में हल जोतना छोड़कर वाकी खेती काम स्त्रियाँ सँभालती हैं। जहाँ दो फसलें होती हैं, वहाँ खरीफकी कटाई होती है और रवीकी अप्रेलमें। खरीफकी फसलमें मँडुवा (रागी) झंगो

नी, छुवा, तिल, मक्का, चीना, उड़द, गहत, भट्ट (भटमास), मिर्च, हल्दी, रक और कहीं-कहीं गन्ना भी है। कँगुनी, मक्का, मँडुवा और चीना पहिले र हो जाते हैं। अरहर (तूर) वहुत कम ही जगह वोई जाती है।

रवीके फसलके मुख्य धान्य हैं : जौ, गेहूँ और सरसों। ऊँचे उन्नतांशोंमें फसल देरसे तैयार होती है, जैसे कि ६००० फुटकी ऊँचाईपर रवी मईके ले नहीं पकती, इसी तरह ७०००पर जून और ८०००पर जुलाई कटाईका है। जोशीमठसे ऊपर अमलीमें—जो ९००० फुट ऊँचाईपर है—तो रवीकी अगस्तमें कटती है। इससे अधिक ऊँचाईपर खेत जूनमें बोया जाता है, कि वर्फ पिघलती है और सितंवरके महीनेमें काटी जाती है।

चार-पाँच हजार फुटकी ऊँचाईतक उपत्यकाओंके निचले भाग और सुभीता र ऊपर भी चावलकी खेती होती है। कोशिश करनेपर यहाँ अच्छा चावल हो सकता है—अपने श्रेष्ठ वासमती चावलके लिए प्रसिद्ध देहरादूनका जिला लका ही एक भाग माना जाना चाहिये। धान अप्रेलमें वोया-रोपा जाता र सितंवरमें काटा जाता है। फिर अक्तूवरमें उसी खेतमें गेहूँ वोकर अप्रेलमें लिया जाता है। तव अप्रेलमें मँडुवा बोकर अक्तूवरमें काटा जाता है। वाद खेतको अगले अप्रेल तकके लिए खाली छोड़ दिया जाता है। मँडुवा चावल कभी-कभी आधे-आधे खेतमें वोये जाते हैं। चावलवाले भागको रा (साठी चावल)कहते हैं और मँडुवावाले भागको कोदारा—पहाड़में मँडुवा)को कोदा कहते हैं, जो नीचेका कोदो नहीं है। जाड़ोंमें कोदारा खेत खाली दिया जाता है, लेकिन सठियारेमें गेहूँ वोया जाता है, जिसके कारण उसका यूंवारा हो जाता है। वही खेत पीछे मँडुवा वोनेपर कोदारा वन जाता पिछले सालका कोदारा इस सालका सठियारा हो जाता है। गाँववाले मयमें अपने एक ओरके सारे खेतोंको परती छोड़ देते हैं। इसके कारण ढोरोंके टोंक चरनेमें सुविधा होती है। जाड़ोंमें इस तरह गाँवके आधे खेत खाली रहते हैं। ऊँचाईके अनुसार एक ही अन्नकी फसल पहाड़में आगे-पीछे होती है। चावलकी फसलकी कटाई सवसे पहिले पहाड़के ऊपरी भागोंमें है, फिर वह नीचेकी ओर जाती है; इससे उलटे रव्वीकी फसल पहिले भागसे शुरू होकर ऊपरकी ओर तैयार होती है। अधिक ऊँचे स्थानोंमें फसल होती है और उसमें भी फाफड़, ओगल, छोटी मटर, नंगा-जौ और पकता है।। भोटांतिक गाँवोंमें, जहाँ मई और जूनतक वर्फ पिघलती फसल काटना संभव नहीं है।

भावरमें आवोहवा और भूमि देश जैसी है, इसलिए वहाँ फसलोंका
नीचे जैसा होता है—चावलके बाद गेहूँ भी वोया जाता है, लेकिन अगले
उसमें चावंल न वोकर मक्काकी फसल उगाई जाती है, जिसके पकनेमें
लगते हैं। फिर उसी खेतमें सरसो बो दी जाती है, जो दिसंवरमें तैयार
है ; तव जनेरा वोकर अप्रेलमें काट लिया जाता है। इस प्रकार, दो
वहाँ पाँच फसलें होती हैं। भावरके कितने ही पूर्वी गाँवोंमें चावलके
तंवाकू और कपासकी खेती ज्यादा होती है। ढोरोंके गोष्ठ जहाँ पड़े
हैं, वहाँकी भूमि अधिक उर्वर हो जाती है। ऐसी भूमिमें तीन वर्षतक वारी
तंवाकू और मक्काकी खेती की जाती है। जव खेतकी उर्वरता कम हो
है, तो गेहूँ और कपास वोये जाते हैं। यदि सिंचाईका सुभीता हुआ, तो
फसलके वाद गेहूँ वोया जाता है।

५. तर्कारियाँ—

गढ़वाल अपने अदरक, मिर्च और हल्दीके लिए वहुत मशहूर है।
जिलेके दक्षिणी भागमें पैदा की जाती हैं, जहाँसे मैदानी वाजार नजदीक
आलूकी खेती उतनी अधिक नहीं होती। हाँ, नीती और माणाके गाँवोंमें
किस्मका आलू होता है। प्याज, लहसुन, पालक, वैगन, भिंडी, तुरई,
कद्दू, लौकी, मूली, सलगम आदि तर्कारियाँ अच्छी तरह हो सकती
जीवनतलके अत्यन्त निम्न होने और उनकी माँग कम होनेसे उधर
ध्यान नहीं दिया जाता।

§२. शिल्प-उद्योग

जैसा कि पहले कहा, गढ़वालमें शिल्प और उद्योगका अभाव सा
जो कुछ शिल्प-व्यवसाय पहले था भी, पिछले सौ सालोंमें वह विल्कुल
रह गया। किसी समय गढ़वालके वढ़इयोंका कलापूर्ण कारुकार्य वहुत
था। उसी तरह श्रीनगरके पाषाण-शिल्पी भी वड़े दक्ष मूर्तिकार थे।
कारोंका नाम शेष रह गया है और गुणग्राहकताके अभावके कारण
शिल्प भी खतम सा हो चुका है। मोलारामकी चित्रकलाने गढ़वाल
कला-जगतमें अमर कर दिया है, किंतु उनके पोतेको जव मालूम हुआ,
वनाकर जीविका नहीं चला सकते, तो उसने पहले सुनारीका और फिर
का काम शुरू किया। आज उनके परपोते वालकराम श्रीनगरके एक
भर रह गये हैं।

१. भंगेला—

उत्तरी उत्तर-प्रदेशमें गंगासे लेकर उत्तरी विहारतक भाँग एक जंगली पौधा है। वह इतना अधिक पैदा होती है, कि वहुत जगह उससे खेतोंकी रक्षा करना कठिन हो जाता है। पहाड़में भी जंगली भाँग होती है, किंतु जिसकी छाल या जिससे भंगेला तैयार किया जाता है, वह खेतोंमें वोया जाता है। पहाड़में ४५०० फुटकी ऊँचाईतक ऐसे गाँवोंमें भांगकी खेती होती है, जहाँ पाविल और शिल्पकार (डोम) लोग रहते हैं। यही लोग भंगेला वनाते हैं। भाँगके पौधे दो प्रकारके होते हैं एकको फुलंगा या नर पौधा कहते हैं। इसकी छालके तंतु वहुत वारीक होते हैं, जिनसे भंगेला कपड़ा वनाया जाता है। मादा पौधेको कलंगा कहते हैं। इसकी छालके तंतु मोटे होते हैं, जिससे वोरे या थैलेवाला भंगेला वनाया जा सकता है। फुलंगासे वना हुआ कपड़ा हालतक गढ़वालके गरीव लोग पहनते रहे हैं। कोरियाके गरीव लोगोंकी भी यही वात थी—युद्धके समय भारतमें भांगका कपड़ा वहुत वनता था। कलंगाकी पत्तियोंसे रस निकालकर चरस वनाया जाता था। पीछे चरस चीनी तुर्किस्तानसे मंगाया जाने लगा और आवकारी-कानून द्वारा यहाँ चरस वनाना रोक दिया गया। भांगके पौधे सितंवर, अक्तूवर और नवंवरमें काटने लायक हो जाते हैं। फिर सुखाकर पाट या सनके पौधोंकी तरह मुट्ठे वाँधकर पानीमें डुवाके रख दिये जाते हैं। दस-वारह दिनमें छालका ऊपरी भाग सड़ जाता है। पानीसे निकाल मुँगरीसे पीट-पीट कर उनको अलग किया जाता है। फिर उसे और पीट कर सनमें लिपटी गंदगीको निकाल दिया जाता है। फिर तकलेपर उसका सूत कातकर कपड़ा वुना जाता है। फुलंगा और कलंगा दोनोंके ही वने कपड़े भंगेला कहे जाते हैं, जो काफी मजबूत होते हैं, किंतु आदमीके पहनने लायक कपड़ा फुलंगाके सनसे ही वनता है। अनुमान किया जाता है, कि गढ़वाल जिलेमें ६०० एकड़ खेतमें भांगकी खेती होती है, जिससे २४०० मन डंठल या १५३ मन भांगका सन निकलता है। एक आदमी एक दिनमें चार छटांक सूत कात सकता है। कताई और वुनाई साथ-साथ की जाती है। भंगेलेका कपड़ा अर्ज़में १४-१५ इंच और लंवाईमें ढाई गजका होता है। तीन टुकड़ोंके जोड़नेपर एक वयस्क स्त्री या पुरुषके लिए पूरा कपड़ा वन जाता है। पचीस-तीस वर्ष पहले एक टुकड़ेका दाम डेढ़से ढाई रुपयेतक था। काशीपुरके लोग इस कपड़ेका ज्यादा व्यवहार करते थे। पहले उसमेंसे कुछ कोटद्वार और रामनगरके वाजारोंमें भेजा जाता था। भंगेलेका काम वहुत जगह पाविलोंने छोड़ दिया है। पाविला खस जातिके हैं, जिन्होंने खस नाम छोड़कर

अपनेको राजपूत कहना शुरू कर दिया है। भंगेला वनानेके कारण पानि नीची निगाहसे देखा जाता था, फिर वह कैसे इस व्यवसायको आगे जा सकते थे ?

२. चाय-वगान—

चीनमें चाय आठवीं नवीं शताब्दीसे ही पी जाने लगी थी। वहांसे प्रचार कोरिया और जापानमें हुआ। अठारहवीं सदीमें पूर्वी और प लोग भी इससे परिचित होने लगे। आगे तो चायने उन्हें मुग्ध कर दि सभी देशोंमें चाय एक तरहसे नहीं पी जाती। चीन, जापान, कोरिया, मंगो में केवल पत्तीका गरम रस पिया जाता है। तिब्बतवाले उसमें नमक, सोडा मक्खन मिला और मथ कर बड़े पुष्टिकारक रूपमें पीते हैं। रूसी लोग मिलाना तो आवश्यक समझते हैं, किंतु दूधका उपयोग नहीं करते, हाँ, यदि का रुपये जैसा एक गोल टुकड़ा मिल जाय, तो वड़े शौकसे उसे खटमिट्ठा पीते हैं। वाकी यूरोप और उसके द्वारा प्रभावित देशोंमें दूध और चीनीको का अभिन्न अंग मानां जाता है। आजकल भारत चाय पैदा करनेका सबसे देश है, लेकिन १८३५ से पहले यहां एक भी चायका वाग नहीं था। अंग्रे अनुकूल स्थानोंपर पहलेपहल चाय-वगान लगाये, उन्हें वहुत वढ़ाया, और भा स्वतंत्र होनेके वाद आज भी प्रायः सभी चाय-वगान अंग्रेजोंके हाथमें है।

डाक्टर रायलने १८२७ ई०में तत्कालीन गवर्नर-जेनरल लार्ड एम्ह सुझाया, कि कुमाऊँके पहाड़ोंमें चाय अच्छी तरह पैदा की जा सकती है। डाक् १८३४में प्रकाशित अपनी पुस्तक "हिमालीय वनस्पति-शास्त्रके उदाहर इसके कारण दिये हैं। जोजफ वेंक्स, डाक्टर गोवन, डाक्टर वालिच और डा फाकोनरने भी चाय-वगानकी ओर सरकारका ध्यान आकृष्ट किया लार्ड विलियम वेंटिकने १८३४में इसकी जाँचके लिए एक समिति वनाई, अध्यक्ष डाक्टर वालिच थे। १८३५में चीनसे चायके वीज मँगवाकर कल पौध लगाई गई, जिसे रोपनेके लिए आसाम, कुमाऊँ और गढ़वाल भेजा कुमाऊँ और गढ़वालमें सरकारने चायकी पौधवारी स्थापित की, जिसके नि सहारनपुरके वनस्पति-उद्यानके अफसर डाक्टर फाकोनर बनाये गये। १८४१में चायकी खेतीके भविष्यके वारेमें वहुत अच्छी रिपोर्ट दी। फाकोनरने केवल पौधेकी वृद्धि और हरी भरी पत्तियोंको ही पैदा कर पाया पत्तियोंको पीनेकी पत्तीके रूपमें परिणत करना उनके वसकी वात नहीं उनके लिखनेपर चीनसे चाय वनानेवाले दक्ष कारीगर वुलाये गये, जो

८४२में भारत पहुँचे। लेकिन, स्वास्थ्य खराब हो जानेके कारण उसी साल संबरमें फाकोनर भारत छोड़नेके लिए मजबूर हुए। जून १८४७में वह पत्तियोंका ूना लिये इंगलैंड पहुँचे। पहले पत्तियोंके नमूनेको वहुत पसंद किया गया। ट इंडिया कंपनीका ध्यान इस ओर आकृष्ट हो चुका था।

फाकोनरके उत्तराधिकारी डाक्टर जेम्सनने चायके वागको और वढ़ाया, ़िन इसी समय यह मालूम हुआ, कि १८३५में जिस वीजको मँगाया गया था, उसे नमें वहुत अच्छा नहीं समझा जाता। इसपर सरकारने १८४८में मिस्टर फार्चूनको न भेजा। उनका अभियान सफल रहा और मध्य-चीनके वागोंसे वीज लाकर ली और हरी पत्तियोंवाले २०००० सर्वोत्तम पौधे हिमालयमें लगाये गये। समय चीनके छ प्रथम श्रेणीके दक्ष कारीगर, दो मुखिया और वहुत प्रकारके ार हूइचाव जिलेसे मँगाये गये, जो अपनी चायके लिए मशहूर है। १८५१ में यहाँकी चायका भविष्य वहुत उज्ज्वल माना जाता था, लेकिन आगे वह ा सफल नहीं हुई। लोहवामें असफलताका मुँह देखना पड़ा। फिर ारने पौड़ीके पास गदोलीमें तीन चीनी और दस भारतीय चाय-वनानेवालोंके एक कारखाना खोला। यह आशा की जाती थी, कि इधरके जमींदार लोग चाय-वगानोंको लगायें और वढ़ायेंगे और पत्तियाँ पासके कारखानेमें ले जाकर र कर ली जायँगी। लेकिन गढ़वाली जमींदार खतरा समझकर रुपयेको व्यवसायमें लगाना नहीं चाहते थे। वैसे गढ़वालमें इतनी अधिक जमीन नहीं थी, जिसे कि केवल चायके लिए दिया जा सकता। तिव्वतमें चीनकी सीधे पहुँच जाती थी। कुमाऊँ-गढ़वालकी चाय मध्य-एसियाके वाजारोंको दखल कर पायी, इसलिए चाय-उद्योगके लिए कोई भविष्य नहीं रह गया। अें गढ़वाल-जिलेमें ७९००० पौंड चाय पैदा हुई, जो १९०७में ५२००० रह गयी। उस समय ग्वाल्दममें चायका सवसे वड़ा वाग था और छोटे-वाग मूसेटी, वेनीताल और सिलकोटमें भी थे। १९२४ ई०में प्रकाशित री औद्योगिक सर्वे रिपोर्टके कथनानुसार १९२२में पाँच चाय-वगीचे थे। १९२१में उनका क्षेत्रफल ५६५ एकड़ था और उसी साल २७५ वाग उजड़ गया। १९२२में केवल ३३० एकड़में चायके वाग थे, जिनके १५८६ एकड़ और भी जमीन वागवालोंके पास थीं। उस साल ३१० से पत्तियाँ चिनी गईं और ३९२० पौंड काली तथा ९००० पौंड हरी चाय र की गई थी।

गढ़वालमें उस साल निम्न पाँच चाय-वगान थे :

(१) वेनीताल चाय-वगान,
(२) सिलकोट चायवगान, डाकघर लोहवा, तारघर कर्णप्रयाग
(३) गदोली चायवगान, पौड़ी
(४) ग्वाल्दम चायवगान (१९१९में सरकारने खरीद लिया)
(५) तलवरी चायवगान

३. टोकरी आदि बनाना—

ऊपरी उन्नतांशोंमें एक तरहका नरकट जैसा छोटा वाँस होता है, जि रिंगाल कहते हैं। लोहवा, चाँदपुर और बधारण जैसे कितने ही इलाकोंमें की टोकरियाँ और चटाइयाँ वनाई जाती हैं। यात्रा-मार्गोंपर जाते सम डलियाँ अपने साथ ले जाते हैं, नहीं तो इनका उपयोग स्थानीय लोग ही करते हैं। पानीसे चलते हुए खरादोंपर लकड़ीके वर्तन भी कहीं-कहीं जाते हैं, किंतु उसमें यह ध्यान नहीं दिया जाता, कि कैसे लोग काठके पसंद करेंगे। वहुत जगह तो वर्तन वनानेवाले तीर्थ-यात्रियोंको केव भर हैं। आसानीसे खरादे जानेके ख्यालसे कच्ची ओदी लकड़ीका देखने वर्तन वना दिया जाता है, जो दो ही दिन वाद सूख कर फट जाता है। कारण वहुत कम लोग वर्तनोंको खरीदते हैं। यदि पक्की सूखी लकड़ी कर खरादी जाय, तो वर्तन मजवूत रहेंगे और हर सालके आधे लाख अधिकांश उन्हें खरीदेंगे।

धयज्यूली पट्टीमें दरपति और सलोड् गाँव किसी समय हाथके कागज लिए मशहूर थे। वह वहाँ पाई जाती सत्पूराकी झाड़ियोंसे वनाया जा पेड़की छालको निकालकर पहले उवाला जाता, फिर उसे मथकर लेई वना दिया जाता। इस लेईको दो कपड़ोंके भीतर फैला और दवाकर तैयार किया जाता, जिसे सुखा लेनेपर वह कागजका ताव हो जाता वनानेके लिए दो-तीन पतले कागजोंको साटकर घोट दिया जाता है। कागज यद्यपि वहुत मजवूत होता था, किंतु तिगुने-चौगुने दामपर मजवू लेनेके लिए कितने लोग तैयार थे? धीरे-धीरे नीचेकी फेक्टरियोंके वने आकर यहाँके कागजके रोजगारको खतम कर दिया।

४. ऊन कताई-बुनाई—

ऊन गढ़वलामें भी काफी पैदा होती है। १९२२में गढ़वाल जिलेमें मन, टेहरीमें १५०० मन ऊन पैदा हुई थी और ३२२३ मन तिब्बतसे गढ़वाल जिलेमें २३७६२१ और टेहरीमें ३५९७७४ वकरियाँ थीं।

ऊन उतनी अच्छी नहीं होती, इसलिए उससे अच्छी प्रकारके मुलायम कपड़े नहीं वन सकते। यदि अच्छे भेड़ोंको लाकर संकरीकरण किया जाय, तो भेड़ोंकी नसल सुधार कर ऊनको अच्छा वनाया जा सकता है। जो ऊन यहाँ पैदा होती है, उसमेंसे भी २२७० मनको हीं काता-बुना जाता है, वाकी कानपुर, अमृतसर, नजीवावाद तथा दूसरी जगहोंमें भेज दी जाती है । ३० वर्ष पहले १३४५ आदमी कताईमें लगे हुए थे। एक दिनमें एक आदमी दो-तीन छटाँक वारीक या पाँच-छ छटाँक मोटा सूत कात सकता है। उस समय हर साल २२७० मन के सूतका कपड़ा वनता था। गढ़वालके सभी स्थानोंमें वारो महीने ऊनी कपड़े-की अवश्यकता नहीं होती। ठंडी जगहोंमें ऊन कातने-वुननेका आम रवाज है। ऊनके व्यवसायको तव तक आगे वढ़ाया नहीं जा सकता, जव तक कि पन-विजली और उसके द्वारा चालित चर्खों-कर्घोंका अधिक उपयोग नहीं होता।

५. धातु-शिल्प——

गढ़वाल अपने धातुओंकी खानोंके लिए वहुत प्राचीन कालसे प्रसिद्ध रहा है, किंतु अंग्रेजोंके शासनकालमें खनिज उद्योग नष्ट हो गया, यह कह आये हैं। धातु-शिल्पमें लोहार और तमोटा लोगोंका काम अव भी जैसे-तैसे चला जाता है, यद्यपि उसके लिए लोहा और ताँवा नीचेसे मँगाया जाता है। लोहा तो खैर हमारे देशमें तैयार होता है, किंतु ताँवेके लिए हम अव भी अधिकतर परमुखापेक्षी हैं। अंदाज लगाया गया है, कि हर साल दिल्ली और वंवईसे प्रायः २५०० मन ताँवेकी चादरें मँगाई जाती हैं, जिनका दाम तीन-चार लाख होता है। यह सौभाग्यकी वात है कि गढ़वालमें अभी धातुके वर्तनोंका ही रवाज है और चीनीके वर्तन कम इस्तेमाल किये जाते हैं। चायके लिए भी धातुकी गिलासें ही इस्तेमाल होती हैं। ताँवेका वर्तन वनानेवाले तमोता लोग अधिकतर गाँवोंमें रहते हैं और अपने पुराने हथियारोंसे पुराने ही ढंगसे वर्तनोंको वनाते हैं। श्रीनगर और टेहरीमें इनकी संख्या अधिक है। पुराने ढंगसे वर्तन वनानेमें एक खतरा यह है, कि क्योंकि वर्तनोंके ढंगपर यंत्रोंके सहायतासे वने पात्र अधिक सस्ते पड़ सकते हैं, जिसकी प्रतियोगिता करना पहाड़के तमोतोंके लिए वहुत मुश्किल होगा। कुमाऊँ और गढ़वाल तथा और कुछ पहाड़ी प्रदेशोंमें भी एक ही ढंगके गगरा, पतीली, परात, लोटा, कटोरा आदि वनते हैं। अपने कामके अतिरिक्त यहाँके वने वर्तन नेपाल और तिव्वत तक जाते हैं। तमोता लोग वहुत धनी नहीं हैं और उन्हें दूसरे व्यापारियों द्वारा ताँवेकी चादरें खरीदनी पड़ती हैं। यदि वह अपनी सहयोग समितियाँ संगठित कर लें, जिसे श्रीनगरके आस-पासवाले आसानीसे कर सकते

हैं, तो वह सीधे माल खरीद सकते हैं और अपने मालको भी सीधे वेंच सक
सुविधा और सफाईके लिए कुछ यंत्रोंको भी ले सकते हैं।

कृषिके औजारोंके अतिरिक्त दाव और खुकड़ी भी यहाँ वनाई जाती
कितनी ही जगहोंमें नेपाली रहते हैं और नेपाल भी खुकुरी यहाँसे कुछ
जाती है। लोहेके लिए रेलके डव्वोंके स्प्रिंगके टुकड़े तथा पुरानी रेतियाँ
मानी जाती हैं। इसके लिए ११-१२ मन फौलादका वार्षिक खर्च है।
आदमी वर्ष भरमें ३६ खुकुरी या ७२ दाव वना सकता है।

६. चमड़ा——

प्रतिवर्ष इस जिलेमें १६००० चमड़े और ६०००० छाले मिल सक
जिनमें अधिकांश मुर्दे जानवरोंके होते हैं। इनका अधिक भाग जिलेके
ही खर्च हो जाता है। शिक्षा और नये प्रभावके कारण लोग अच्छे चमड़े
को अधिक पसंद करने लगे हैं, जिसके लिए कानपुर और दूसरी जगहोंके
चमड़ेपर भी काफी खर्च होता है। श्रीनगरमें सरकारने चमड़ेका काम
लानेके लिए एक स्कूल खोला है, जिसमें सीखनेवालोंको कुछ छात्रवृत्ति
जाती है। लेकिन स्कूल छात्रोंको आकृष्ट करनेमें सफल नहीं हो रहा है।
तव तक सफलता नहीं होगी, जव तक कि अच्छे किसिमके चमड़ेके सिझ
प्रचार नहीं हो जाता। यह वड़ी अच्छी वात है कि गढ़वालमें सिझाई
अधिक अच्छा है। यहाँ चमड़ेको थैलेकी तरह वनाकर उसमें मसाला
सिझाई नहीं की जाती, वल्कि गढ़ा खोदकर चमड़ेको मसालेमें डुवा दिया
है, जिससे मसाला चमड़ेमें चारों ओरसे प्रवेश करता है। लेकिन मसाले
अच्छे नहीं हैं। केवल पत्तियों और छालोंके सहारे सिझानेसे अच्छे
चमड़ा तैयार नहीं होता। चूना और काफलका छिलका ही सिझानेके
हैं, चमड़ेको पीला करनेके लिए लोदकी पत्तियाँ डाल दी जाती हैं। यदि गढ़
३०-३२ हजार चमड़ोंको कुटीर-शिल्पके रूपमें ही अच्छे मसालोंसे
जाय, तो यहाँ भी अच्छे किसमका चमड़ा तैयार हो सकता है। वाहरसे
चमड़ेसे १० रुपयेका जूता वनानेमें ७ रुपया चमड़ेपर लग जाता है,
मोचीके लिए मजूरी वहुत कम रह जाती है। यदि कुछ रसायनिक मसाले
मँगा लिये जायँ और कुछ स्थानीय मसालोंको रसायनिक ढंगसे तैयार कर
तेज और प्रभावशाली वना दिया जाय, तो वाहरसे चमड़ेके मँगानेकी
नहीं होगी। श्रीनगरके स्कूलमें अधिकतर चप्पल, वूट आदि वनानेका
सिखलाया जाता है, जिसको मोची तरुण अपने आसपासके दक्ष कारीगरों

सीख सकते हैं। जब वाहरसे मँगाये चमड़ेकी वनी चीजोंमें उनके लिए मजूरी कम रह जाती है, तो उन्हें सीखनेका आकर्षण कैसे हो सकता है? पैनखंडा (केदारनाथके रास्ते) के जूतेके कारीगरोंने वड़ी इच्छा प्रकट की, कि यदि वढ़िया चमड़ेकी सिझाई सिखाई जाय, तो हम अपने यहाँसे लड़कोंको भेज सकते हैं। कानपुर और आगरेकी वड़ी वड़ी चमड़ा-फेक्टरियोंमें जिस तरह आधुनिक साधनोंके साथ नये ढंगसे सिझाई की जा सकती है, उसे गढ़वालके गाँवोंमें नहीं किया जा सकता। कुटीर-शिल्पके तौरपर नये ढंगसे चमड़ा कैसे सिझाया जा सकता है, इसका सफल प्रयोग कलकत्ता आदिके चीनी मोची कर रहे हैं। हालमें कलकत्तेके दो सौ चीनी मोचियोंने सिझानेकी अपनी सहयोग समिति संगठित की है। यदि श्रीनगर और टेहरीमें क्रोम और वानस्पतिक मसालोंसे चमड़ा सिझानेका काम सिखलाया जाय, तो यहाँके मोचियोंको वहुत लाभ होगा और वाहरसे सीझे चमड़ेके मँगाने तथा प्रतिवर्ष ६००० चमड़े और ०००० छालेको कच्चा ही कानपुर, आगरा, वरेली और दिल्ली न भेजना पड़ेगा।

जूते वनानेके केंद्र श्रीनगर और टेहरी हैं। वैसे गाँवोंमें भी जगह-जगह मोची मिलते हैं। लैन्सडौन और दोगड्डामें कितने ही नेपाली और पंजावी मोची भी काम करते हैं। श्रीनगरके मोची सावरके चमड़ेके जूते भी वनाते हैं। पहाड़में पीला रंग पसंद किया जाता है। यहाँ सिझाई, सफाई और काटनेका काम पुरुष करते हैं, किंतु सिलाईके काममें स्त्रियोंका भी काफी हाथ होता है।

७. पनचक्की—

१९२२में गढ़वाल जिलेमें २९५६ पनचक्कियाँ थीं। इनके खड़ा करनेमें ३५६०० रुपयेकी पूँजी लगी थी। पनचक्कीकी देखभालमें २९५६ स्त्री-पुरुष और वच्चे काम कर रहे थे और प्रतिवर्ष १० लाख मन आटा पीसा जाता था। पहाड़में प्राचीन कालसे ही जलशक्तिसे पीसनेका काम लिया जा रहा है। कहीं कहीं उससे काठके वर्तन वनानेके खराद भी चलते हैं। सरकार हर पनचक्की-पर कुछ वार्षिक कर लेती है, जिसके वदलेमें पनचक्कीवालोंका पानीपर अधिकार मान लिया गया है। इसके कारण सिंचाईके लिए पानी लेनेमें कभी-कभी झगड़ा कुछ खड़ा होता है। वैसे पानीसे विजली वनाकर उससे चक्की, ओखल, कोलू, खराद, चर्खा, कर्घा आदि वहुतसे यंत्रोंको चलाया जा सकता है, लेकिन तव सभी चीजोंको नीचेसे मँगाना होगा। पनचक्कीके खड़ा करनेमें थोड़ेसे लोहेको छोड़कर सभी कच्चा माल और कारीगर घरमें मौजूद हैं।

८. बिजली—

कुमाऊं गढ़वालमें बिजली इतने परिमाणमें मौजूद है, कि उससे आवे प्रदेशका विद्युतीकरण हो सकता है, लेकिन अभी तो इसकी तरफ ध्यान भी गया है। अंग्रेज शासक जब कभी पनबिजलीका ख्याल करते थे, तो उनके करोड़ोंकी योजना आन उपस्थित होती थी। वही बात आज हमारे और इंजीनियरोंकी है। हमारे लोग कभी ख्याल भी नहीं कर सकते, कि बिजली मिल जानेपर जापानकी तरह हमारे यहाँ भी बाईसिकलें कुटीर तौरपर बन सकती हैं। जब कभी हिमाचलकी अपार विद्युत्-निधिका दिमागमें आता है, तो हम यह सोच ही नहीं सकते, कि हर बड़े गाँवमें पास नदीसे थोड़ा ऊपर निकाली हुई नहरके द्वारा सस्ते साधनोंसे बिजली तैयार जा सकती है। इसके लिए छोटी-छोटी टरबाईनोंकी अवश्यकता होगी, हमारे देशके कारखाने आसानीसे बना सकते हैं। महासू जिले (हिमाचल प्र में रामपुरके पास नोगढ़ीमें एक उद्योगी अल्पशिक्षित पुरुष (ला० खुशीरा बहुत थोड़ीसी मशीनोंके सहारे पानीसे बिजली उत्पादित कर ली है। उस लोहेकी टरबाईन भी न ले गाँवके लोहार-बढ़ई द्वारा बनाये चक्केका ही इस्ते किया है। अभी इस साल बदरीनाथमें बिजली लगाई गई है, लेकिन वह अ नंदाके पानीकी बिजली नहीं बल्कि बाहरसे मँगाये डीजल इंजन और उसमें ज वाले तेल द्वारा तैयार की जाती है, जो कि दोनों ही विदेशी-विनिमय द्वारा खरीदे जा सकते हैं। क्या इसकी जगह छोटासा पनबिजली-स्टेशन नहीं सकता था? लेकिन तब हमारे इंजीनियरोंको थोड़ा दिमागी श्रम करना प पैसा लगानेवालोंको थोड़ा जोखिमके लिए तैयार होना पड़ता, और कुछको मोटे कमीशनोंसे वंचित होना पड़ता। कहा जाता है, आगे हम बदरीना लिए पनबिजली तैयार करेंगे। तो फिर इस समय डीजल इंजनपर इतना लगानेकी क्या जरूरत थी? गढ़वाल या हिमाचलकी गरीबीको उद्योगी बिना दूर नहीं किया जा सकता। उद्योगीकरणका श्रीगणेश तब तक नहीं सकता, जब तक कि सस्ती पनबिजली नहीं तैयार की जाती। सिंचाईकी नह बारेमें हम कह चुके हैं, कि अभी उनका निर्माण आँख पोंछने भरके लिए हो है, और उसमें भी यह ध्यान नहीं दिया जा रहा है, कि सिंचाईके साथ बिजली-उत्पादनको भी जोड़ा जा सकता है। यदि हम यहाँ पनबिजली जगहसे पैदा कर सकें, तो गढ़वालका हरेक बड़ा गाँव छोटा-मोटा केन्द्र बन सकता है।

१. भविष्य—

पनबिजलीके अतिरिक्त ऊनकी कताई-बुनाई, भंगेलेकी कताई-बुनाई, यासलाई-निर्माण, जड़ी-बूटियोंसे दवाइयोंका तैयार करना, खनिज-उद्योग, शमके कीड़े पालना, मधुमक्खी पालना, लाखकी खेती, दुग्धशाला, मुर्गी पालना, ोद्यान, केसर तथा दूसरी सुगंधित बूटियोंकी खेती, मसाला पैदा करना, स्लेट र पेंसिल बनाना, नीलकमल-कस्तूरीघास-पोदीना-कालाजीरा-अज्मोदा-जवा-गुलाब आदिसे तरह तरहके सुगंधित तेल तैयार करना—यह तथा इस तरहके हुतसे उद्योग-धंधे गढ़वालमें बढ़ सकते हैं।

§३. व्यापार

१. बाहरी व्यापार—

बाहरी व्यापार अधिकतर तिब्बतसे होता है, जो कि नीती, माणा और ङ्के भोटांतिक लोगोंके हाथमें है और जिसके बारेमें हम पहले कह आये हैं। के अतिरिक्त भावरके कोटद्वारा और रामनगरकी मंडियों द्वारा नीचेके जिलोंसे ापार किया जाता है। कर्णप्रयाग, चमोली, श्रीनगर, टेहरी भी कुछ व्यापारिक त्त्व रखते हैं। यहांका व्यापार अधिकतर मैदानी बनियोंके हाथमें है। गढ़-ली व्यापारकी ओर बहुत कम ध्यान देते हैं। मालकी खरीद-बेंच ही नहीं कि माल ढोनेमें भी गढ़वाली केवल पीठपर बोझा लादकर ले जा सकते हैं, समें भी वह जुमला और डोटीसे आये नेपाली भारवाहकोंका मुकाबला नहीं र सकते। बड़ी-बड़ी बाजारोंतक लारियोंके हो जानेसे अब खच्चरों और ड़ोंका उतना रवाज नहीं रह गया, तो भी नगीना और नजीबाबादके घोड़े-च्चरवाले बदरीनाथ-केदारनाथतक धावा मारते हैं। टेहरी जिलेसे जंगल-ी चीजें, घी, चावल और आलू बाहर जाते हैं। पहले कुछ सोहागा भी तिब्बतसे ों रास्ते नीचे जाता था। गढ़वाल जिलेसे खानेकी चीजें बाहर नहीं जाती, कि उन्हें यदि बाहरसे न मँगाया जाय, तो बदरी-केदारकी यात्राको रोक देना ना।

२. भीतरी व्यापार—

तिल, मिर्च, घी, मधु, चावल, गेहूँ जैसी चीजें यहाँकी दूकानोंमें बिकती ं। भागीरथी, मंदाकिनी और अलकनंदा—यहाँकी तीनों प्रधान नदियोंके नारेसे गंगोत्री, केदार, बदरीके रास्ते जाते हैं, जिनमें किसी-किसी साल ६०००० क यात्री होते हैं। इसका भला या बुरा एक परिणाम यह हुआ है, कि पासके

८. बिजली—

कुमाऊं गढ़वालमें विजली इतने परिमाणमें मौजूद है, कि उससे आधे प्रदेशका विद्युतीकरण हो सकता है, लेकिन अभी तो इसकी तरफ ध्यान भी गया है। अंग्रेज शासक जब कभी पनविजलीका ख्याल करते थे, तो उनके करोड़ोंकी योजना आन उपस्थित होती थी। वही बात आज हमारे और इंजीनियरोंकी है। हमारे लोग कभी ख्याल भी नहीं कर सकते, कि विजली मिल जानेपर जापानकी तरह हमारे यहाँ भी बाईसिकलें कुटीर तौरपर वन सकती हैं। जब कभी हिमाचलकी अपार विद्युत्-निधिका दिमागमें आता है, तो हम यह सोच ही नहीं सकते, कि हर वड़े गाँवमें पास नदीसे थोड़ा ऊपर निकाली हुई नहरके द्वारा सस्ते साधनोंसे विजली तैयार जा सकती है। इसके लिए छोटी-छोटी टरवाईनोंकी अवश्यकता होगी, हमारे देशके कारखाने आसानीसे वना सकते हैं। महासू जिले (हिमाचल में रामपुरके पास नोगढ़ीमें एक उद्योगी अल्पशिक्षित पुरुष (ला० खुशीरा वहुत थोड़ीसी मशीनोंके सहारे पानीसे विजली उत्पादित कर ली है। उसने लोहेकी टरवाईन भी न ले गाँवके लोहार-वढ़ई द्वारा वनाये चक्केका ही किया है। अभी इस साल वदरीनाथमें विजली लगाई गई है, लेकिन वह नंदाके पानीकी विजली नहीं बल्कि वाहरसे मँगाये डीजल इंजन और उसमें वाले तेल द्वारा तैयार की जाती है, जो कि दोनों ही विदेशी-विनिमय द्वारा खरीदे जा सकते हैं। क्या इसकी जगह छोटासा पनविजली-स्टेशन नहीं सकता था? लेकिन तव हमारे इंजीनियरोंको थोड़ा दिमागी श्रम करना पैसा लगानेवालोंको थोड़ा जोखिमके लिए तैयार होना पड़ता, और कुछको मोटे कमीशनोंसे वंचित होना पड़ता । कहा जाता है, आगे हम वदरी लिए पनविजली तैयार करेंगे। तो फिर इस समय डीजल इंजनपर इतना लगानेकी क्या जरूरत थी? गढ़वाल या हिमाचलकी गरीबीको उद्योगी विना दूर नहीं किया जा सकता। उद्योगीकरणका श्रीगणेश तव तक नहीं सकता, जब तक कि सस्ती पनविजली नहीं तैयार की जाती। सिंचाईकी वारेमें हम कह चुके हैं, कि अभी उनका निर्माण आँख पोंछने भरके लिए हो है, और उसमें भी यह ध्यान नहीं दिया जा रहा है, कि सिंचाईके साथ विजली-उत्पादनको भी जोड़ा जा सकता है। यदि हम यहाँ पनविजलीको जगहसे पैदा कर सकें, तो गढ़वालका हरेक बड़ा गाँव छोटा-मोटा केन्द्र वन सकता है।

१. भविष्य—

पनबिजलीके अतिरिक्त ऊनकी कताई-वुनाई, भंगेलेकी कताई-वुनाई, यासलाई-निर्माण, जड़ी-वूटियोंसे दवाइयोंका तैयार करना, खनिज-उद्योग, मके कीड़े पालना, मधुमक्खी पालना, लाखकी खेती, दुग्धशाला, मुर्गी पालना, द्यान, केसर तथा दूसरी सुगंधित वूटियोंकी खेती, मसाला पैदा करना, स्लेट र पेंसिल बनाना, नीलकमल-कस्तूरीघास-पोदीना-कालाजीरा-अजमोदा-जवा-गुलाब आदिसे तरह तरहके सुगंधित तेल तैयार करना—यह तथा इस तरहके तसे उद्योग-धंधे गढ़वालमें वढ़ सकते हैं।

§३. व्यापार

१. वाहरी व्यापार—

वाहरी व्यापार अधिकतर तिव्वतसे होता है, जो कि नीती, माणा और ङ्के भोटांतिक लोगोंके हाथमें है और जिसके वारेमें हम पहले कह आये हैं। के अतिरिक्त भावरके कोटद्वारा और रामनगरकी मंडियों द्वारा नीचेके जिलोंसे पार किया जाता है। कर्णप्रयाग, चमोली, श्रीनगर, टेहरी भी कुछ व्यापारिक त्त्व रखते हैं। यहांका व्यापार अधिकतर मैदानी वनियोंके हाथमें है। गढ़-ली व्यापारकी ओर वहुत कम ध्यान देते हैं। मालकी खरीद-वेंच ही नहीं कि माल ढोनेमें भी गढ़वाली केवल पीठपर वोझा लादकर ले जा सकते हैं, समें भी वह जुमला और डोटीसे आये नेपाली भारवाहकोंका मुकावला नहीं र सकते। वड़ी-वड़ी वाजारोंतक लारियोंके हो जानेसे अव खच्चरों और ड़ोंका उतना रवाज नहीं रह गया, तो भी नगीना और नजीवावादके घोड़े-च्चरवाले वदरीनाथ-केदारनाथतक धावा मारते हैं। टेहरी जिलेसे जंगल-चीजें, घी, चावल और आलू वाहर जाते हैं। पहले कुछ सोहागा भी तिव्वतसे रास्ते नीचे जाता था। गढ़वाल जिलेसे खानेकी चीजें वाहर नहीं जाती, कि उन्हें यदि वाहरसे न मँगाया जाय, तो वदरी-केदारकी यात्राको रोक देना ा।

२. भीतरी व्यापार—

तिल, मिर्च, घी, मधु, चावल, गेहूँ जैसी चीजें यहाँकी दूकानोंमें विकती । भागीरथी, मंदाकिनी और अलकनंदा—यहाँकी तीनों प्रधान नदियोंके नारेसे गंगोत्री, केदार, बदरीके रास्ते जाते हैं, जिनमें किसी-किसी साल ६०००० यात्री होते हैं। इसका भला या बुरा एक परिणाम यह हुआ है, कि पासके

गाँववालोंने भी छोटी-छोटी दूकानें बनाकर हाथमें तराजू ले लिया है। ग्रा
यहाँका आर्थिक जीवन इस यात्रापर इतना निर्भर हो गया है, कि यदि
साल यात्रा रुक जाय, तो सब जगह हाहाकार मच जाये। गाँवोंमें व्यापार
तर चीजोंकी अदला-बदली द्वारा होता है—कहीं मिर्चसे गुड़ बदला जाता है
कहीं तिलसे मँडुवा।

३. नाप-तोल—

अब सभी जगह सेर और छटाँकका प्रचार हो गया है, किंतु पहलेके प्र
नाप थे:

एक नाली = दो सेर गेहूँ, पौने दो सेर चा
पाँच मुट्ठी = एक माना (माणा)
चार माना = एक नाली या पाथा
सोलह नाली = एक दोन या पिराई (=३२
बीस दोन = एक खार (खारी)

नापके मान निम्न प्रकार हैं: =
एक नाली = २४० वर्गगज
२० नाली = १ बीसी या एकड़

एक नाली बीज जितने खेतमें बोया जाता है, उसे एक नाली खेत कह
माना, पाथा, द्रोण और खारी ये हमारे देशके बहुत पुराने माप हैं।

४. मेले—

कुमाऊँके बड़े-बड़े मेलों—बागेश्वर, जोलजीबी और थाला—की
मेले गढ़वालमें नहीं हैं। गौचरमें बड़ा मेला लगानेकी कोशिश की गई,
उसमें सफलता नहीं हुई। यह मेला तिब्बतके व्यापारियोंके फायदेके लिए
बतलाया जाता है; लेकिन भोटांतिक लोगोंका कहना है, कि हम तो
तिब्बती माल लेकर वहाँ पहुँचते हैं, किंतु हमें जिस मालकी अवश्यकता है
लेकर व्यापारी वहाँ नहीं आते, इसीलिए हममेंसे भी कितने ही उदासीन
जा रहे हैं। गढ़वाल जिलेके मेले निम्न प्रकार हैं:

पर्गना	स्थान	नाम
चाँदपुर	कर्णप्रयाग	मकरसंक्रान्ति
चौदकोट	एगासर	नन्दाष्टमी, जन्माष्टमी
	औपोला	

स्थान	नाम	जनसंख्या
झलकरन	मकरसंक्रान्ति	
दंगल	नन्दाष्टमी, जन्माष्टमी	१०००
सल्टमहादेव	माघ संक्रांति, वृष सं०	
नन्दप्रयाग	मकरसंक्रांति	
वैरासकुंड	शिवरात्रि	५०००
अगस्तमुनि	विषुवत् सं०	२०००
कोटेश्वर	विषुवत् सं०	५००
जोगीनाथ, गोपेश्वर	मई, शिवरात्रि	५००
नागनाथ	जमुनाष्टमी	२०००
पांडुकेश्वर	मई	
रुद्रप्रयाग	मकर-संक्रांति	५००
असेरा	असेर (४ वैशाख)	१०००
काल वजवार	मल्याल (५ वैशाख)	२०००
कुलसरी	कुलसरी (१ वैशाख)	१०००
देवल नंदकेशरी	शिवरात्रि	१०००
पन्ती	पन्ती (१ वैशाख)	१०००
कंडा	कंडा (कार्तिक भैयादूज)	६०००
कोकंडै	शिवरात्रि	
खैरालिंग	मूँडन (जून)	१००००
देवप्रयाग	पंच (माघ)	४०००
धूतातोली	विनसर (नवंबर)	४०००
विल्वकेदार	विखवती (अप्रेल)	
श्रीनगर (कमलेश्वर)	वैकुंठ चतुर्दशी	४०००
श्रीनगर (कमलेश्वर)	विषुवत् सं०	४०००
संगरा	अष्टवलि (जेठ)	४०००
खुदस्योनखेत	खुद (२ वैशाख)	६००
कटघर	गेंडी (१ माघ)	२०००
जनकेश्वर	शिवरात्रि	२०००
थलनदी	गेंडी (१ माघ)	३०००
दादामंडी	„	३०००

सलाणा तल्ला-,	उमत्तादेवी	कर्क सं० (१६ जूलाई)
	नैनीडंडा	सिंह
	नौसिन देवी	सिंह
	बंजादेवी	सिंह
	भौन	विषुवत् सं० (१३ अप्रेल)
सलाणा मल्ला-,	झल	"
	देवरारि देवी	नन्दाष्टमी, जन्माष्टमी
	वीरों साल	विषुवत् सं०
	सल्ट महादेव	मकर सं०

§४. पशुपालन

१९१२की पशुगणनाके अनुसार गढ़वालमें निम्न संख्यामें पशु थे :

पशु	गढ़वाल	टेहरी
बैल	१७१७९४	५८०६५
गाय	२७२८०१	८१३८५
भैंसें	५६७५९	२४३१८
भैंसें (नर)	३५५२	१३५८
घोड़े	२६१३	५७०
खच्चर	६८	
गदहे	७७	
जिबू	१९९	
याक (चँवर)	२	
भेड़	२३७६२१	८६७०३
बकरियाँ	३५९७७४	

यद्यपि गढ़वालमें गाय-भैंसों और भेड़-बकरियोंके संख्याकी कमी
किंतु उनकी नसलके सुधारनेकी ओर ध्यान नहीं दिया गया, विशेषकर
उतना भी दूध नहीं देतीं, जितना कि नीचेंकी अच्छी जातिकी बकरियाँ
पीपलकोटीमें भेड़ोंकी नसल सुधारनेके लिए अच्छी जातके भेड़े रखे गये हैं
तरह गायोंके लिए भी कुछ कोशिश की गई है; लेकिन अभी यह सब
मात्र हैं। लोगोंमें नई चीजकी ओर स्वभावतः उतनी रुचि नहीं हो
यहाँ तो दुर्लंघ्य पहाड़ों और नदियोंके पारसे अपनी गायों, भैंसों, भेड़-बक

ाड़के पास लानेका भारी तरद्दुद उठाना ठहरा। किसान लाभकी नई चीजको वना नहीं चाहते, यह शिकायत गलत है। यहाँकी चट्टियोंमें किसान ही दुकान-ार बनकर बैठे हैं। १९५० ई० में सरकारकी ओरसे डी० डी० टी० छिड़कने-ा प्रबंध किया गया था, जिससे हर समय गुच्छे बनकर भिनभिनानेवाली मक्खियों-ा नामोनिशान मिट गया। १९५१ में मैं यात्रामें कुछ पहले गया था और अभी क डी० डी० टी० छिड़कनेवाले नहीं आये थे। चट्टीवाले उत्सुकता-पूर्वक उनकी तीक्षा कर रहे थे। इससे स्पष्ट है, कि किसान-पुत्र हर नई चीजका विरोधी नहीं ता। आजकल पशुओंकी नसल सुधारनेके लिए बहुत सुभीतेसे काम किया जा कता है। टेहरी और गढ़वाल जिलोंके पाँच-सात स्थानोंमें अच्छी नसलके साँड-बैल, ं, घोड़े, भेड़े और बकरे रख दिये जायँ और फिर पशुओंको वहाँ लानेकी जगह नके वीर्यको ले जा कृत्रिम रूपसे गर्भाधान कराया जा सकता है। बल्कि इसके ए यह भी जरूरी नहीं है, कि गढ़वालमें जगह-जगह साँड पाले जायँ। गौचर, त्तमुनि तथा और भी एक दो ऐसे मैदान गढ़वालमें मौजूद हैं, जहाँ बरेलीके ुसंधान-प्रतिष्ठानसे अच्छी जातकी नसलके साँडोंका वीर्य ट्यूबोंमें रखकर ाई जहाजसे घंटे भरमें पहुँचाया जा सकता है। वहाँसे सिखलाये हुए लोग व-गाँवमें घूमकर कृत्रिम वीर्य-निक्षेपका काम कर सकते हैं। बुकयालों ारों)में तो चार महीने हजारों-लाखों पशु एक जगह आसानीसे मिल सकते जहाँ कृत्रिम-वीर्य-निक्षेपका काम बड़ी आसानीसे किया जा सकता है।

१. पशु—

१. ढोर—पहाड़में घर आमतौरसे दोतल्ले होते हैं, जिसमें नीचेका भाग ओंके लिए होता है। इसे गोठ कहते हैं। गोठमें पशुओंके नीचे बंज या दूसरे ोंकी पत्तियाँ बिछा दी जाती हैं। गोबर समय-समयपर हटा लिया जाता ेकिन पेशाबको पत्ता सोखता रहता है। सालमें एक दो बार इस पत्तेको ालकर खेतोंमें डाल दिया जाता है। पशुओंके खिलानेके लिए घासें, भ्यूंल, आदिकी पत्तियाँ और भुस और पुवाल भी दिया जाता है। गाँवकी गोचर-ा पासके जंगलों तथा कटे हुऐ खेतोंमें ढोरोंको चरनेके लिए छोड़ दिया जाता ामतौरसे भुस जमा करनेका रवाज नहीं है, लेकिन उत्तरके बर्फ पड़नेवाले ानोंमें जाड़ेमें चारेकी तंगी हो जाती है, इसके लिए उसे जमा करना पड़ता जहाँ पहाड़ सीधा खड़ा होता है, वहाँ खतरेके कारण पशु चरने नहीं जाते। जगहकी घास काटकर पशुओंको खिलाई जाती है। बचे हुए पुवाल या को घरके पासके किसी वृक्षके ऊपर टाँग दिया जाता है। जाड़ोंमें गाँववाले

ऊँचे पहाड़ों और बंज आदिके बड़े जंगलोंमें दूर-दूर तक अपने पशुओंकी च लिए जाते हैं। दूदातोली अपनी गोचर-भूमिके लिए मशहूर है। उत्तरके पहाड़ोंमें जंगली वृक्षोंकी सीमासे ऊपर तथा सनातन हिमवाले स्थानोंमें घासकी ढलानें हैं, जिन्हें बुकयाल (बुग्याल, पयार) कहते हैं। वर्फ पिघल पशुपाल अपने पशुओंको लेकर वहाँ पहुँच जाते हैं और कितने तो तब तक रहते हैं, जब तक कि वर्फ पड़नेका डर नहीं हो जाता। बैडनी (वानके और बदरीनाथके पयार बहुत प्रसिद्ध हैं। दसज्युली और मल्ली-दसोलीके वर्षा आरंभ होते ही १०००० फुटकी ऊँचाई तकके पहाड़ोंपर चढ़ जाते हैं।

२. याक (चँवर)—गढ़वालमें चँवरका रखना बहुत मुश्किल है। माणा और नेलङ्को छोड़कर बाकी बस्तियाँ पाँच-छ हजार फुटसे अधिक ऊँ पर नहीं हैं। सात-आठ हजार फुटकी ऊँचाई भी याकके लिए बहुत गरम है, जहाँ वह जिंदा नहीं रह सकता। याक गोजातिका ही संबंधी है, इ नर याकसे गायका संकरीकरण कराया जा सकता है। तिब्बतकी देख भोटांतिक लोग भी गाय और याकसे पैदा हुए जीबूके गुणको जानते हैं। गायके बराबर गर्मी बरदाश्त कर सकता है। वह कद और बलमें याकके नर है, जिससे हल जोतने और बोझा ढोनेके लिए बहुत अच्छा रहता है। भोट लोग संकरीकरणके लिए तिब्बतसे याकके बच्चे लाते हैं, किंतु वह बहुत तक जीते नहीं; इसीलिए इनसे पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता है। वीर्य-निक्षेपसे यह कठिनाई दूर हो सकती है, किंतु अभी तो वह दूरकी ब कम्युनिस्ट तिब्बतमें उसका प्रचार बहुत बड़े पैमानेपर होगा, शायद उसका गढ़वालपर भी पड़े।

३. टांगन—गढ़वाल कभी अपने टांगनोंके लिए बहुत प्रसिद्ध था प्रयागसे ऊपरकी अलकनंदा-उपत्यका किसी समय तंगनके नामसे मशहूर आज भी बदरीनाथसे रास्तेपर पीपलकोटीसे ऊपर तंगणी चट्टी मौजूद उस पुराने नामका स्मरण दिलाती है। तंगण देशके घोड़ोंको ही देशके तंगन और पीछे टांगन कहा जाने लगा। लेकिन आजकल गढ़वालमें जातके टांगन नहीं पैदा होते, उन्हें तो तिब्बतसे लाया जाता है। क्या फिर अपने टांगनोंके लिए प्रसिद्धि नहीं प्राप्त कर सकता ?

२. भेड़-बकरियाँ—

गढ़वालमें दो प्रकारकी बकरियाँ पाई जाती हैं। निचले और मध्य की बकरियाँ मैदानी बकरियोंकी जातिकी ही होती हैं और उन्हें मां

ना जाता है। भोटांतिक लोगोंको माल ढोनके लिए बकरियोंकी अवश्यकता ती हैं, । यह बकरियाँ कांगड़ा और कनौरकी ओरसे खरीदकर लायी जाती तथा कुछ यहाँ भी पैदा की जाती हैं। इनके बाल लंबे होते हैं और यह शरीरसे काफी मजबूत होतीं हैं। भेड़ें भी इसी तरह दो जातिकी होती हैं। भेड़ें सेर ढो सकती हैं और बकरियाँ १२ सेर तक। पहाड़ी भेड़ोंका ऊन वैसा ा नरम नहीं होता, जैसा कि आस्ट्रलियन भेड़ोंका। तिब्बत बहुत सर्द देश । यद्यपि वहाँके भेड़ोंका ऊन लंबा और नरम होता है, किंतु अधिक सर्दी के रण उतना लचकदार और घुँघराला नहीं होता। (१) खूँडिया या तिब्बती ें भोटांतिक लोग अधिकतर बोझा ढोनेके लिए पालते हैं। (२) जुमली या ल जातकी भेड़ें निचले पहाड़ोंमें पाली जाती हैं। इनका ऊन मोटा होता है र प्रति भेड़ तीन पाव तक निकल आता है। (३) बरुआल भेड़ें कुछ संख्यामें ालमें मिलती हैं, इनका ऊन उतना बुरा नहीं होता और प्रति भेड़ सालमें -१४ छटाँक मिल जाता है। शायद विदेशी शुद्ध जातिकी भेड़ोंका पालना ंकी भूमि और आबोहवामें कठिन हो, किंतु संकरीकरणसे अच्छी नसल पैदा जा सकती है। मेरिनो भेड़के बच्चोंको पालनेकी कोशिश की गई, किंतु के लिए देहरादून जैसा स्थान चुना गया, जहाँ गर्मीका ताप और वर्षाकी सीड़ ्त करना उनके लिए मुश्किल था।

३. मत्स्य-पालन——

गढ़वालकी नदियोंमें कितनी ही जातकी मछलियाँ मिलती हैं। यहाँकी ी जातियाँ मांस-मछली खानेमें परहेज नहीं करतीं। मासिर, कलवान, खरकटा र चेलवा आम तौरसे पाई जानेवाली मछलियाँ हैं। सभी नदियाँ सरकारी ्ति हैं, इसलिए सरकारकी अनुमतिसे ही मछलियाँ मारी जा सकती हैं। लियाँ जालसे मारी जाती हैं, बंशी भी लगाई जाती है। थूहरका विष देकर मछली मारते हैं और कभी-कभी बारूदका भी इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन दोनों तरीकोंको निषिद्ध कर दिया गया है। गढ़वाल जिलेमें जंगल-विभाग और ोंमें रियासतने मछली पालनेकी ओर ध्यान दिया था। बिरही गंगामें १८९३में ाड़ गिर जानेसे गोहनाकी बड़ी झील तैयार हो गई। इस झीलमें अच्छी जातके के बच्चे २००००से ऊपर लाकर डाले गये। आजकल वहाँ बड़े-बड़े रोहू भारी परिमाणमें तैयार हैं, किंतु जानेका रास्ता खराब है, इससे वहाँकी ारों मन मछलियोंका कोई उपयोग नहीं है। पहले अंग्रेज मछली-शिकारी वहाँ पहुँच भी जाया करते थे, लेकिन आजकल तो वह भी नहीं होता। चमोली

मोटर पहुँच गई है और वहाँसे कुछ ही मील आगे विरही गंगामें भी पुल वनने है, किंतु मछलियोंके लानेके लिए गोहना तालतक कव मोटर सड़क वनेगी, ग्र जलीय विमान कव उसके ऊपर उतरेगा, यह नहीं कहा जा सकता। म पालनके वढ़ानेका गढ़वालमें काफी क्षेत्र है, इसमें तो संदेह नहीं।

४. मधुमक्खी-पालन—

आधुनिक ढंगसे मधुमक्खी पालनेका रवाज गढ़वालमें नहीं है, किंतु पु समयसे मधुमक्खियोंको निश्चित स्थानपर रहनेके लिए जंगलके पासवाले ग्रा की कोशिश होती रही है। सूखे वृक्षोंमें इसके लिए वड़े छेद वना दिये जा या हरे वृक्षोंमें लकड़ीका डव्वा जड़ दिया जाता है। कहीं-कहीं दीवारों मधुमक्खियोंके लिए स्थान वनाया जाता है। यहीं मक्खियाँ मधु-संचय क हैं, जिसे समय-समयपर निकाल लिया जाता है। घरोंमें रहनेवाली मौना की मधुमक्खियोंका सफेद मधु वहुत अच्छा समझा जाता है, जो जाड़ा ग्रा पहले मिलता है। आधुनिक ढंगसे मधुमक्खी पालनेकी यहाँ वहुत गुंजाइ किंतु उसके लिए वहुत प्रोत्साहन और संगठनकी अवश्यकता है।

अध्याय ६.

यातायात और संचार

गढ़वाल पहाड़ी इलाका है। यहाँ सड़कोंका वनाना कठिन भी है, साथ ही की वहुत अवश्यकता भी है।

§१. रेल

भारतके दूसरे भागोंसे गढ़वाल पहुँचनेके लिए रेलें वहुत उपयोगी हैं, किंतु वाल और टेहरी दोनों जिलोंमें केवल १५ मील रेलवे लाइन नजीवावाद और द्वाराके वीचमें है, जिसपर इन दोनोंके अतिरिक्त सनेहरोड एक ही और स्टेशन। गढ़वाल पहुँचनेवाले वैसे रामनगर, नैनीताल, कोटद्वारा, ऋषिकेश और हरादून स्टेशनोंको इस्तेमाल करते हैं।

§२. सड़कें

यहाँ प्रादेशिक और स्थानीय दो प्रकारकी सड़कें हैं। जंगल-विभागने पनी खास सड़कें नहीं वनवाई हैं। हाँ, उसने तथा गाँववालोंने भी कितनी ही डंडियाँ वनवाई हैं।

१. प्रादेशिक सड़कें—

सड़क	लंवाई	विशेष
१. कोटद्वारा-लैन्सडौन	२५.१ मील	मोटर सड़क
२. कोटद्वारा-कोरिया	१	गाड़ी सड़क
३. कोटद्वारा-कोहलिया	३	"
४. हरद्वार-वदरीनाथ	१६५ "	किर्तीनगरतक, फिर श्रीनगरसे चमोलीतक मोटर सड़क
५. रुद्रप्रयाग-केदारनाथ	४८ "	पैदल सड़क
६. चमोली-गुप्तकाशी	२९ मील	"
७. दोगड्डा-श्रीनगर	४८ "	पैदल सड़क
८. कर्णप्रयाग-खैरना	३० "	"
९. तुंगनाथ-मूलखाना	४ "	"
१०. जोशीमठ-नीती	४३ "	"

२. स्थानीय सड़कें—

सड़क	लंबाई		विशेष
१. अदवानी-व्यासघाट	९	"	"
२. अन्यारधार-लैन्सडौन	५	"	"
३. उखलेट-फतेहपुर	१३	"	"
४. उखलेट-दोमेला	२९	"	"
५. कैनूर-मरछूला	४०	"	"
७. ग्वालदम्-रमनी	३८	"	"
७. चमोली-पोखरी	१३	"	"
८. चाँदपुर-ऊखलकोट	५६	"	"
९. छतुवापीपल-ऊखीमठ	२९	"	"
१०. छतुवापीपल-मंदाखाल	३५	"	"
११. तपोवन-घाट	३४	"	"
१२. थराली-सीमली	२३	"	"
१३. दीपाखाल-मंडल	१५	"	"
१४. देवालीखाल-किमोली	६	"	"
१५. दोवरी-किरासाल	५	"	"
१६. नंदप्रयाग-ग्वालदम्	२९	"	"
१७. पौड़ी-देवप्रयाग	१५	"	"
१८. पौड़ी-समाई	४९	"	"
१९. पौड़ी-सराईंखेत	४५	"	"
२०. वंजवगड़-लोहवा	२१	"	"
२१. विंदासानी-द्वारीखाल	२६	"	"
२२. गुंगीधार-लोहवा	१३	"	"
२३. गुवाखेल-टेका	३	"	"
२४. बैजराव-गुंगीधार	१६	"	"
२५. ब्यासघाट-चौकीघाट	३९	"	"
२६. ब्यासघाट-दंगल	१५	"	"
२७. मंदाखाल-मासोन	७	"	"
२८. रैतपुर-धौतियाल	१९	"	"
२९. श्रीनगर-मुसागली	१२	"	"

. सासोनखाल-जड़ीपानी	९	"	"
. सेरिया-मंडल	२२	"	"

३. अन्य सड़कें—

इनके अतिरिक्त निम्न स्थानीय सड़कें भी हैं :

वानी-व्यासघाट	९	"	"
लेट-दोमैला	२९	"	"
ली पोखरी	१३	"	"
घाट-दंगल	३९	"	"
पीपल-मंदाखाल	३५	"	"
ली-सिमली	२३	"	"
-सरईखेत	४५	"	"
नी-द्वारीखाल	२६	"	"
ल-जोड़ीपानी	९	"	"
या-मंडल	२२	"	"

टेहरी-जिलेमें २६३ मील लंबी सभी प्रकारकी सड़कें हैं, जिनमें मोटर सड़कें न हैं—

केश-कीर्तिनगर	६३ मील	३ मील पैदल चलकर गंगापार श्रीनगरमें फिर मोटर-सड़क मिलती है
केश-धरासू	७७ "	

इनके अतिरिक्त निम्न पैदल सड़कें हैं—

सू-जमनोत्री	५१	"
नोत्री-उत्तरकाशी	४२	"
सू-गंगोत्री	७४	"
चट्टी-तिरजुगीनारायण	६८	"
री-मसूरी	४१	"
याग-टेहरी	३२	"

४. कुछ सड़कोंका विवरण—

कोटद्वारा ऐसा रेलवे स्टेशन है, जहाँसे सीधे १५७ मीलपर पीपलकोटी (अदूर यमें जोशीमठ तक) मोटर बसमें जाया जा सकता है। इसके रास्तेमें पौड़ी, गर, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग मिलते हैं। चमोलीसे २८ मील आगे जोशीमठ तक

मोटरकी सड़क तैयार हो जानेपर यह सबसे लंबी और महत्त्वपूर्ण मोटर
होगी। कोटद्वारामें नजीबाबादसे बढ़ाकर १८९७में बड़ी लाइनकी रेल
गई। लैन्सडौन फौजी छावनी थी, जिसके लिए इस रेलवे लाइनको
आवश्यक समझा गया और आगे फर्वरी १९०९में लैन्सडौन तक गाड़ी
भी बन गई थी। अब तो वहाँ तक मोटर-सड़क बन गई है। कोटद्वार
दोगड्डा अच्छा बाजार रहा है, किंतु अब मोटरके सीधे कोटद्वारा पहुँच जाने
महत्त्व कुछ कम हो गया है। दोगड्डासे पैदल चलनेपर खोह नदीके तटपर दा
पड़ती है। यहाँसे चढ़ाई कर लंगूर-डांडेको पारकर द्वारीखाल होते बनघाट
जा सकता है, जो कि नयार नदीके किनारे एक अच्छा बाजार है। लंगूरपर्व
पूरबसे पच्छिमको फैली हुई अपनी औसत ५००० फुटकी ऊँचाईके कारण द
गढ़वालके दुर्गका काम करती थी। बनघाटसे नयारके किनारे पश्चिम
एक सड़क व्यासघाट जाती है, जो कि नयार और गंगाके संगमपर अ
है। बनघाटसे मुख्य सड़क अदवानी होके पौड़ी जाती है। पौड़ीसे
जा गंगाके किनारे-किनारे तीर्थयात्रियोंकी सड़कसे मोटर द्वारा रुद्रप्रयाग औ
भी पहुँचा जा सकता है। रुद्रप्रयागमें अलकनंदा और मंदाकिनीका संग
यहाँसे अलकनंदा पार हो पैदल गुप्तकाशी होते केदारनाथ पहुँचा जा
है। यदि पौड़ीसे ठंडी-ठंडी जगहसे जानेकी इच्छा हो, तो पहाड़के ऊपरी
खिरसू, भैंस्वारा और जौनपुरकी ताँबा-खानोंसे होते छतबापीपलपर
वाली सड़कको पकड़ा जा सकता है। छतबापीपलसे कर्णप्रयाग छ-सात मी
रह जाता है। कर्णप्रयागसे चमोली होते जोशीमठ तक यात्राकी सड़क है। जो
फिर वह बदरीनाथ होते तिब्बतकी सीमा माणाजोतपर पहुँचा जा सकता है।
मठसे दूसरी सड़क तपोवन और मलारी होते नीती डांडेपर तिब्बतकी सीमापर
देती है। केदारनाथ और बदरीनाथकी सड़कोंके बीचमें छतबा-पीपलकेपुल
नंदा पार करके एक और सड़क खुनीगाड़के किनारे-किनारे नागनाथ और फिर
तथा मोहनखाल होते भीरीमें केदारनाथवाली यात्रा-सड़कमें मिल जाती है।
सड़कको पौड़ी-खिरसू-धनपुर-छतबापीपल-पोखरी-भीरी सड़क कह सकते हैं।
नाथके पास यह केदारनाथ-ऊखीमठ-चमोलीवाली सड़कसे मिलती है।

कोटद्वारा-दोगड्डा होते दोगड्डासे दो मील आगे फतहपुरमें एक और मह
व्यापार-मार्ग लंगूर श्रेणी पारकर उखलेटमें नयारके किनारे पहुंचता है।
इसकी दो शाखायें दोनों नयारोंके किनारे-किनारे जाती हैं। पश्चिमी
वाली सड़क मासोन पहुँचती है, जहाँसे १२ मील उत्तरपश्चिम पौड़ी है।

आगे पीपलघाट एक अच्छा चौरस्ता है, जहाँ पौड़ी-अल्मोड़ावाली सड़क आ चती है, जिसे पारकर नदीके किनारे-किनारे ऊपर चढ़ते हुए दूदाटोलीका डर आ मिलता है। डांडेसे थोड़ीसी उतराईके वाद पँवारोंका पुराना दुर्ग चाँद-र गढ़ मिल जाता है। यहाँसे १० मील आगे पिंडार नदीके किनारे यात्रावाली ऊपर सिमली है। पूर्वी नयारके किनारे जानेवाली सड़क चंदोली पहुँचती किंतु यह सड़क नहीं पगडंडी है।

रामनगर भी नैनीताल जिलेमें एक महत्त्वपूर्ण रेलवे-स्टेशन है। मुरादावादसे लाइनकी शाखा यहाँ १९०७ ई०में पहुंची थी। यह एक अच्छा व्यापा-केन्द्र है। यहाँसे मोहन होते मरछूला पहुँचा जा सकता है, जहाँ राम-पर एक अच्छा पुल है। गढ़वाल जिलेकी सीमा यहाँसे दो मील रह जाती है। छूलासे एक सड़क देवगढ़, सल्टमहादेव, कूच्यार, वीरोंखाल और वैजराव ती है। मरछूला और सल्टमहादेवके वीचकी सड़क वर्सातमें चलने लायक होती। वैजरावसे दो सड़कें हो जाती हैं, जिनमेंसे एक कैनूरकी ओर जाती और दूसरी गुंगीधारकी ओर। गुंगीधारसे पौड़ी-अल्मोड़ा सड़क द्वारा दूदा-होते लोहवा पहुंचा जा सकता है। गणाई और भिखियासैन होते द्वाराहाटके ते रानीखेत पहुँचनेकी भी सड़क यहाँसे जाती है। लोहवासे अल्मोड़ा-वैजनाथ-ओरसे आती सड़क उत्तरकी ओर नारायणवगड, रमनी होते तपोवन पहुँ-ती है, जहाँसे ऊपरकी ओर जानेपर तिव्वतकी सीमापर नीती डांडा मिलता और नीचेकी ओर ७ मील जानेपर जोशीमठ।

श्रीनगरसे व्यासघाट होते अलकनंदाके वायें किनारेसे नीचेकी ओर लछमन-पहुँचा जा सकता है, जहाँसे भूलावाला पुल पारकर थोड़े ही दूरपर ऋषी-आ जाता है।

बधाण पर्गना गढ़वाल और कुमाऊँकी सीमापर है और दोनों राज्योंके ड़ेका एक मुख्य कारण बना रहा है। ग्वालदम् बधाण पर्गनेका दरवाजा। इसमें दो सड़कें जाती हैं, उनमेंसे एक ग्वालदम्से वान होती रमनीमें वा-नारायणवगड-रमनी-तपोवन-नीती सड़कसे मिल जाती है। इस पर्गने-दूसरी सड़क पिंडारके साथ-साथ थराली तक उतरती है, फिर वहाँसे डुंगरी घाटतक चढ़ती नंदकिनी नदीकी उपत्यकामें उतर उसके साथ-साथ अलक-के संगमपर नंदप्रयाग पहुँचती है।

गढ़वाल जिलेका सदर स्थान पौड़ी है, यहाँसे अल्मोड़ाके लिए दो सड़कें ती हैं। पहली खिरसू पर्वत-श्रेणीके ऊपर मंदाखाल जा मुसागलीके पास

पश्चिमी उपत्यकामें उतर पंजक-उपत्यकाके किनारे पीपलघाट होते सक
और फिर पनढरको पारकर पश्चिमी नयारके किनारे कैन्यूर पहुँच गुंगा
ऊपर जा गढ़वालकी सीमा छोड़ देती है; जहाँसे केलानी, गणाई, द्वाराहाट
भैंसखेत होते आगे पहुँचा जा सकता है। दूसरी तरफ पौड़ीसे ज्वालपा और
होते बैजराव पहुँचती है, जहाँसे वह अल्मोड़ा जिलेमें दाखिल हो ताँवाधौ
मासी होते द्वाराहाट पहुँच जाती है।

पौड़ीसे बाहर होते अलकनंदा पार देवप्रयाग पहुँचा जा सकता है,
एक सड़क टेहरीको गई है।

अंग्रेजोंके हाथोंमें आनेपर उनका ध्यान कुमाऊँ-गढ़वालकी सड़कोंकी
पहले उतना नहीं था, लेकिन हिमालयका आकर्षण कितने ही अंग्रेज यात्रि
यहाँ खींच लाता था। यहाँकी सड़कोंकी हालत देखकर १८५२ ई०में कल
रिव्यूने लिखा था : "हमारा शायद सबसे बड़ा दोष यह रहा है, कि हमने
भिन्न-भिन्न भागोंके भीतर यातायातकी सुविधाके लिए बहुत कम काम किया
यातायातके साधनोंकी कमी किसी देशके सुधारके लिए बहुत खतरेकी चीं
और गढ़वाल जैसे देशके लिए तो और भी ज्यादा, जो कि विशाल पहाड़ोंसे
है और जिन्हें दुर्गम पहाड़ी धारायें काटती हुई चलती हैं।"

५. पुल—

गढ़वालकी नदियोंको नावसे पार करना आसान नहीं था, इसलिए
पहिलेसे ही यहाँ नदियोंको पार करनेके लिए भिन्न-भिन्न तरहके साधन वि
किये गये। सबसे सस्ता किंतु देखनेमें भयानक तरीका था (१) छीकासे
पार करना : एक रस्सा दोनों तरफकी दो चट्टानों या वृक्षोंसे बाँधकर
धारके ऊपर फैला दिया जाता था, जिसपर एक छीका रख दिया जाता
आदमी उसमें पैर डालकर लकड़ीके छल्लेके सहारे खिसकते हुए एक कि
दूसरे किनारे पहुँच सकता था। अंग्रेजी शासनकालमें भी हिमालयके कुछ
तिनकेकी रस्सेकी जगह लोहेका रस्सा पार उतरनेके लिए बाँधा गया था।
छीकासे कुछ सुधरा हुआ झूलापुल था, जो पहले प्रायः तिनकेके रस्सोंका ही
था। एककी जगह दो रस्से आर पार बाँध दिये जाते थे, जिनसे रस्सियोंके
लकड़ीके पटरे लटकाये जाते थे। पटरोंको नीचे एक दूसरेसे बाँध दिया
था। आज भी कहीं-कहीं ऐसे रस्सीके झूले देखे जाते हैं। लेकिन, अधि
झूले अब लोहेके हैं, जो हिलकर यात्रिओंको उतना भयभीत नहीं
(३) साँगा एक तीसरे प्रकारका पुल है, जो हिमालय और तिब्ब

योगमें आता है। इसमें दोनों किनारोंसे दो-दो धरनोंके एक-एक छोर किनारेमें कर दूसरे छोरोंको धारके वीचकी ओर निकाल दिया जाता है। पहली नोंके ऊपर कुछ अधिक लंवी धरनें रखी जाती हैं, जो धारकी ओर और आगे कलती हैं। उनके ऊपर और और धरनोंको आगे निकालते हुए दोनोंके वीचके लेको कमसे कम कर दिया जाता है। फिर दोनों ओरकी धरनोंको जोड़नेके ए और धरनें रखकर पटरोंसे पाटकर पुल वना दिया जाता है। (४) चौथी रका पुल साधारण पुल है, जो लकड़ी और लोहे दोनोंका होता है।

§३. डाक-बंगले

गढ़वालके मुख्य-मुख्य डाकबँगले निम्न हैं—

नाम	उन्नतांश (फुट)
वानी	६२००
द्वदरी (अल्मोड़ा)	,,
ीमठ	४३००
ारनाथ	११७५३
यूर	
ाई	
ड	
ावकोटी	५३००
ीकुंड	६५००
लदम्	६०००
ट	
ोली	३५००
लता	
ीमठ	६१५०
री	१७५०
ली	१५५०
प्रयाग	१५५०
लभीटी	७७००
ाहाट (अल्मोड़ा)	
प्रयाग	३०००

पांडुकेश्वर	६४५०
पीपलकोटी	४३५०
फाटा	५२५०
बटवलचरी	३०००
बदरीनाथ	१०३५०
मंडल	
ऋषिकेश	१११६
रमनी	५०००
रुद्रप्रयाग	२०००
लेन्सडौन	"
लोहवा	
श्रीनगर	१७०६
सकन्याना	
सौरगढ़गाड	२३००

गढ़वालके डाकबँगले (लोककार्य-विभाग=पी० डब्ल्यू० डी०)—जिला डाकबँगले हैं। कोटद्वारा और लैन्सडौनके डाकबँगलोंमें खानसामे भी हैं, जो यात्रियोंके खाने-पीनेका इन्तिजाम कर देते हैं। कोटद्वारासे पौड़ीके दादामंडी, वनघाट, अदवानी और पौड़ीमें डाकबँगले हैं। द्वारीखाल और जंगल-विभागके डाकबँगले हैं। पौड़ी-अल्मोड़ाकी सड़कपर मुसागली, कैन्यूर और गुंगीधारमें डाक-बँगले हैं। यात्रा-सड़कपर ऋषिकेशसे आगे झूला, विजनी, कोठाभेल, व्यासघाट, वाह, रानीवाग, श्रीनगर, चंटीखाल, प्रयाग, नरगासू, कर्णप्रयाग, सूनला, चमोली, पीपलकोटी, गुलावकोटी, आदवदरी, लोहवा, वदरीनाथ और शेषधारामें लोककार्य-विभागके हैं। पौड़ी-धनपुर-नागनाथ सड़कपर जंगल-विभागने खिरसू, चारी, धानपुर, सिरकोट, और नागनाथमें बँगले वनवाये हैं। भैंसवारा-आदव बीच तिलकनी, और आदवदरी तथा लोहवाके बीच दिमदिमामें भी जिला- विभागके बँगले हैं। गंगा-जंगल-विभागने कोटद्वारा, कुमाऊँ, चिला, हल्दूखाता, सनेह, कीलूचौर, चौकान, हाथीकुंड, मोरघाटी, पखराव, हल्दूपड़ाव, खेद और मिठवालामें तथा गढ़वाल-विभागने रथवाधाव, कंडा, लोहाचौर, बुकसर, कालागढ़, झिरना, पटेरपानी, मुंडीपानी, गरुड और गंजीपानीमें डाकबँगले वनवाये हैं। गंजपानीका डाकबँगला गोहनातालके किनारे है।

§४. डाक और तारघर

तारकी लाइन कोटद्वारासे श्रीनगर होते तथा ऋषीकेशसे श्रीनगर होते शीमठ बदरीनाथ तक चली गई है। दूसरी लाइन ऋषीकेशसे नरेंद्रनगर ती टेहरीतक पहुंची है। यहांके तारघरों[1] और डाकखानोंकी सूची निम्न-ार हैं--

अगस्तमुनी
अदवानी
अमोथा
आदबदरी
इरा
उत्तरकाशी
ऊखीमठ
एकेश्वर
कर्णप्रयाग
कसना
कीर्तिनगर
कुनईखाल
कुजरीवाल
केदारनाथ
कैमूर
केमेरा
कोट
कोटद्वारा ×
कोरचूना
खंका
खडा
खेडा
गुप्तकाशी

---

[1] जिनके पास × चिन्ह हैं, वहाँ तारघर भी है।

गुमखा
गोइल
गोपेश्वर
गौचर
घाट
चमनौ
चमवा
चमोली
चंद्रापुरी
चिघाट
चुपानी
चोपता
चौपरा
चोपरियों
जखनी
जखेत
जगरीखोल
जोशीमठ ×
जोहरीखाल
डागचौरी
डुंगर
डुंगरी
डुंगरीपन्त
तिमली
तोली
थराली
थानगढ़
दलेरी
दादामंडी
दुधारखाल
देलचौरी

देवप्रयाग ×
देवलकोट
देवलगढ़
दोगड्डा
द्वारीखाल
धरासू
नन्दप्रयाग ×
नरायनवगड
तंगनमहल
नैथाना
नैनीवरदा
नौली
पांडुकेश्वर
पिपलकोटी ×
पिपली
पैठानी
पैंदुल
पोखरा
पोखरी
पौंखाल
पौड़ी ×
फाटा
वडियारगाड
वडियालगाँव
वदरीनाथ ×
वनघाट
वम्पा
वलियारगाड
वंगेली
बीरोंखाल
बुंगीधार

बूवाखाल
बेरवाई
बैजराव
बैरागना
बौली
भटोली
भल्डियाना
भिरी
भ्यून
मंडल
रदमवा
राणाकोट
रिखीखाल
रिंगवारी
रुद्रप्रयाग ×
लंगासू
लैन्सडौन ×
लोहवा
विद्यापीठ (उत्तराखंड)
शांतिसदन
शिवानंदी
श्रीनगर ×
संगलाकोटी
साईंधार
सिदोली
सिमली
सियासैण
सुमरी
सूला
हेलङ्

अध्याय ७

(स्वास्थ्य और शिक्षा)

§१. स्वास्थ्य

१. बीमारियाँ——

(१) मलेरिया——गढ़वालमें भावरका इलाका बहुत थोड़ा है। भावरकी ई मलेरियाके लिए मशहूर है। वैसे मलेरिया पहाड़में भी फैलता है, और ०० फुटसे ऊपर जानेसे ही मलेरिया-मुक्त स्थान मिलता है, किंतु इसका यह नहीं, कि मच्छर भी वहाँ नहीं पहुँचते। मलेरियाके अतिरिक्त और रोग हैं, लेकिन यहाँ ६० सैकड़ा मौत मलेरियासे होती है। भावरके अतिरिक्त, , नयार और मंडल नदियोंकी निचली उपत्यकायें भी मलेरियाके लिए मश-है।

(२) पेटकी बीमारी——पेटकी बीमारीसे ३५ सैकड़ा मृत्यु होती है।

(३) चेचक——चेचककी बीमारी गढ़वालमें बहुत कम होती है। गढ़-वोंको टीकाके रवाजसे पहले हीसे एक तरहके टीकेकी आदत थी, इसलिए ने आसानीसे टीका लेना शुरू कर दिया।

(४) हैजा——चेचककी कमी गढ़वालमें हैजा पूरी करती है, जिसमें मैदानसे वाले तीर्थयात्री भी सहायक बनते हैं। १८९२में ५९४३, १९०३में ४०१७, ६में ३४२९, १९०८में १७७५, १९२१में ५५१२ आदमी हैजासे मरे थे। तो सरकारकी ओरसे हैजेकी रोकथामके लिए बहुत ध्यान दिया जाता है। के समय स्थान-स्थानपर मुफ्त इन्जेकशन देनेका इन्तजाम रहता है और लिये विना यात्री आगे बढ़ने नहीं पाते।

(५) महामारी——वर्तमान शताब्दीके आरंभमें महामारी (प्लेग)का रोग में पहुँचा। कहते हैं १८२३ ई०में केदारनाथमें महामारी आई थी। १८५५में पराकोट और चौधाममें महामारी फूट निकली। केदारनाथमें १८३४ १८३५में भी यह बीमारी हुई और लोहवामें १८४६ और १८४७में। में यह पहाड़ी महामारी नीचे मैदानमें काशीपुर, इलाहावाद और रामपुर

तक जा पहुँची। वस्तुतः यह पहाड़की ही महामारी है और १८२३के वाद तब एक-दो गाँवपर इसका आक्रमण हो जाता रहा। हर तीसरे-चौथे वर्ष यह गाँवके आधे लोगोंको खतम कर देती थी। चूहोंके मरते ही गाँववाले आप घर छोड़कर वाहर चले जाते। महामारीमें मरे आदमियोंको नहीं जाता, वल्कि गाड़ दिया जाता और चार महीने वाद फिर निकालकर जाता। यह रोगके कीटाणुओंको सुरक्षित रखनेका वहुत अच्छा इसमें सन्देह नहीं।

(६) **संजर**—संजर भी एक तरहका पहाड़ी प्लेग है, जिसमें वुखार है किंतु गिल्टी नहीं उभड़ती। यह महामारीके वरावर खतरनाक नहीं है, मेंसे केवल २० सैकड़ा मरते हैं। यह बीमारी अकाल, भुखमरी तथा कारण पैदा होती है।

(७) **कुष्ट रोग**—कुष्ट रोग गढ़वालमें काफी पाया जाता है। समयमें छूतकी इस भयंकर बीमारीको रोकनेके लिए कुष्टीको जिंदा जला जाता था। ऋषिकेशमें पहुँचते ही भिखमंगे स्त्री-पुरुष कोढ़ियोंको वड़ी देखकर आदमीको मालूम हो जाता है, कि यह रोग गढ़वालमें कितना फैला है। १९०१में श्रीनगरमें एक कुष्टाश्रम खोला गया, लेकिन कुष्टके रोक-थाम वहुत कम हो पाई। कुष्ट-रोग वस्तुतः हिमालयके और रोगोंकी यहाँ भी एक वड़ी समस्या है, जिसे रतिज रोगोंने वढ़ा दिया है।

२. जन्म और मृत्यु—

(१) **आंकड़े**—गढ़वाल जिलेके जन्म और मृत्युके आंकड़े निम्न प्रकार

सन्	जन्म		मृत्यु		कमी
	संख्या	प्रतिहजार	संख्या	प्रतिहजार	
१९२१	१६२९८	३४.४२	२४०१९	५०.०७	१५.
१९२५	१९१७०	३९.५१	१४०२०	२९.१०	१०.
१९२८	२२२८८	४५.९२	२३५६३	२७.९३	१३.
१९३१	२२२५८	४५.८७	१४८९७	३०.७०	१५.

(२) **मृत्युके कारण**—

सन्	प्लेग	हैजा	चेचक	ज्वर	पेट
१९२१	.	५५१२	१	१४७८६	२८४५
१९२५	.	३८	३३	१०९६७	२१७२
१९२७	.	१६४१	३९	१०००२	२०३१

२८	७	६५	४३	१११६२	१७२२	५६४
३१		४३०	११	१११२५	२२३६२	९६९

३. अस्पताल—

टेहरी जिलेमें राजकी ओरसे अस्पताल नरेन्द्रनगर, टेहरी, देवप्रयाग, राज- और उत्तरकाशीमें हैं। गढ़वाल जिलेमें कुछ अस्पताल जिला-बोर्डके हैं कुछ पहले जमानेसे चली आती सदावर्तोंके पैसेसे खोले गये हैं। मूलतः वर्त तीर्थयात्रियोंके भोजन देनेके लिए लगाई गई थी, अंग्रेजी सरकारने उसे त्साके काममें लगा दिया। सदावर्तोंके अस्पताल कंडी, श्रीनगर, ऊखीमंडी, नाथ, चमोली, जोशीमठ, और कर्णप्रयागमें हैं। पौठी, जनघाट, कोटद्वरा वीरोंखालमें जिलाबोर्डके औषधालय हैं। चिकित्सालयोंकी देखभालका पौड़ी और टेहरीके सिविल-सर्जनोंके हाथमें हैं।

§२. शिक्षा

गढ़वालमें शिक्षाका प्रचार कुमाऊँ जितना नहीं है। गढ़वालियोंको इसकी यत है, कि जनप्रिय मंत्रियोंके आनेपर भी उनकी शिक्षाकी ओर जितना देना चाहिए था, उतना नहीं दिया गया। अंग्रेजी शासन कायम होनेसे यहाँ कुछ पाठशालायें होती थीं, जिनमें उच्च वर्गके विशेषकर ब्राह्मणोंके संस्कृत या गढ़वालीमें लिखना-पढ़ना सीखते थे। अंग्रेजोंके शासनकालमें नरियोंका ध्यान शिक्षाकी ओर पहले गया और उन्होंने ईसाई धर्मके प्रचारके साथ नये ढंगके स्कूल खोलने शुरू किये। बीसवीं सदीके आरंभमें गढ़वाल में सिर्फ एक हाई स्कूल चोपड़ामें था, जिसे अमेरिकन मिशनने खोल रखा श्रीनगरका हाई स्कूल १९०९में बना, उससे पहले वह एक अंग्रेजी-हिन्दी था। उस समय मटियाली, कंसखेत, पोखरा, श्रीनगर, खिरसू और नाग- में मिडल-हिन्दी-स्कूल थे। पिछले २० वर्षोंमें स्कूलोंकी संख्या बढ़ी है। क्त उत्तराखंड विद्यापीठ (गुप्तकाशीके पास), पौड़ी, श्रीनगर, गोपेश्वर, याग, टेहरी और उत्तरकाशीमें हाई स्कूल या उच्च हाई स्कूल हैं। स्कूलों छात्रोंकी संख्या १९३१ तक कैसे बढ़ी, इसके लिए निम्न तालिका देखें—

	हाईस्कूल	छात्र	क्षात्रायें	प्राइमरी स्कूल	छात्र	छात्रायें
-२२	८	४१३		२६१	११३४५	७५
-२९	१२	९४१		३७५	१४९०४	२२२
-३१	१२	७७६		३९६	१५६३१	१८८

अध्याय ८

प्रसिद्ध ग्राम-नगर

गढ़वालके कितने ही ग्राम नगरोंके वारेमें अकारादि क्रमसे यहाँ कुछ वि दिया जाता है :

अदवानो (६२०० फुट)—कोटद्वारासे पौड़ीके रास्तेमें आधी दूरपर दारके जंगलमें डाकवँगला और डेरा लगानेकी जगह है। अदवानीके रानीगढ़का ध्वंसावशेष है। वहाँसे मसूरी और नीचे दूरतक देश दिखाई पड़त

आदबदरी (३०°.१'.२"×७९°.१६.'२")—कर्णप्रयागसे १३ और लं से १० मीलपर है। यहाँ भी द्वाराहाटकी भांति १६ परित्यक्त छोटे-वड़े मंदि जिन्हें कत्यूरी राजाओंने वनवाया था। सभी मंदिर एक ही जगह ४२'×४ घेरेमें हैं। यहाँ डाकघर है।

उत्तरकाशी—देखो वाड़ाहाट।

उल्कागढ़—देवलगढ़ पर्गना (तहसील पौड़ी)में एक पुराने गढ़का ध्वं

ऊखीमठ—मल्ला कालीफाट (पर्गना नागपुर)में यह गाँव मंदाकिनीके कुछ ऊपर गुप्तकाशीके सामने है। केदारनाथका रावल जाड़ोंमें यहीं रहता शिवालयमें शिव, पार्वती, मान्धाता, अनिरुद्ध और उषाकी धातु-मूर्तियाँ नवदुर्गाकी पाषाण-मूर्तियाँ पुरानी हैं। देवरीताल यहाँसे जा सकते हैं। डाकघर, अस्पताल तथा पुलिस-चौकी है।

ऋषिकेश—हरद्वारसे १४ मील उत्तर-पूर्व गंगाके दाहिने किनारेपर ऋषिकेश-रोड रेल-स्टेशन भी है और यहाँसे हरिद्वार, देहरादून नगर और धरासूकी वसें मिलती हैं। यह एक अच्छा खासा कस्वा है, वहुत वड़ी संख्या साधु-साधुनियोंकी है। पुराणोंमें इसे कुब्जकाम्रक कहते हैं

कंडारगढ़—नागपुर पर्गनेमें चंदापुरी चट्टीके पास पुराना गढ़ है।

कर्णप्रयाग (२३०० फुट)—पिंडार और अलकनंदाके संगमपर अल वायें किनारे अवस्थित है। चट्टी और वाजार पिंडारके वायें किनारे है। पि २२१ फुट लंवा झूला-पुल है। यहाँका पुराना वाजार १८९४की गोहना

गया। नन्दप्रयाग यहाँसे ११ मीलपर है। पासमें सिमलीमें एक पुराना दिर है।

कालीमठ—मल्ला कालीफाट (पर्गना नागपुर) में भेत (नारायणकोटि) चट्टीसे मीलपर काली नदीके बायें किनारे कई प्राचीन मंदिर हैं। पहिले पड़ोसी ोंके लोग अपनी ज्येष्ठ कन्याओंको मंदिरपर चढ़ा देते थे, जो देवचेली देव-राणी कही जाती थी। यहाँ हर-गौरीकी अत्यन्त सुंदर मूर्त्ति है। कत्यूरी ालेख तथा कितनी ही प्राचीन मूर्त्तियाँ भी हैं।

कांसवत—पर्गना वारहस्यूँमें बड़ा गाँव है। यहाँ सरकारी मिडल-स्कूल है।

केदारनाथ (११७५३ फुट, ३०° ४४′. १५″×७९°.६′. ३३″)—मल्ला लीफाट (पर्गना-नागपुर) महापन्थ-शिखरके नीचे हिमाल-श्रेणीसे वाहर निकली ड़ीपर मंदाकिनी उपत्यकाके सिरेकी समतल भूमिमें अवस्थित धाम है। मंदिर दर है। मंदिरके सामने पंडोंके घर यात्रियोंके रहनेके लिए वनें हैं। ट्रेलके नानुसार यह मंदिर नया तथा पुरानेके जीर्ण हो जानेपर वनाया गया था; न्तु वस्तुतः उस समय वारहवीं-तेरहवीं सदीके प्राचीन मंदिरका पुनः संस्कार या होगा। पांडव पहिचान न लें, इसलिए महिषरूप शंकर यहाँ अन्तर्धान हो गये, र उनकी पीठ भर यहाँ रह गई। उनके बाहु, मुख, नाभि और जटा क्रमशः तुंग-थ, रुद्रनाथ, मध्यमेश्वर और कल्पेश्वरमें पूजे जाते हैं। केदारनाथ, गुप्तकाशी, ीमठ और मध्यमेश्वरके महंत केदारनाथके रावल जंगम (वीरशैव) साधु । तुंगनाथ, त्रियुगी और कालीमठके पुजारी पहाड़ी हैं, जो रावलके आधीन हैं। ोली और श्रीनगर दोनों ओरसे केदारनाथ आनेवाले रास्ते नाला गाँव ुप्तकाशीसे १ मील नीचे) मिलते हैं। केदारनाथ मंदिरसे ४ मीलपर भैरव-प (भृगुपतन) चट्टान है, जहाँसे भक्त लोग कूदकर प्राण दे स्वर्ग जाते थे। नेसे पहिले वह अपना नाम एक मंदिरकी दीवारपर लिख डालते थे। अंग्रेजोंने स प्रथाको वन्द कर दिया।

केदारनाथ मंदिरमें ६० गाँव गढ़वाल जिलेके (आय १०९० रुपया) और गाँव कुमाऊँके (आय ८०८ रुपया) गुंठ लगे हुये हैं। टेहरीके कुछ गाँवोंसे भी १० रुपया वार्षिक आय होती है।

रावल पहिले तमिल नाड पीछे कर्नाटकके होते हैं। उनके चुनावमें पूर्व रावलकी च्छा, मंदिरके अधिकारियों तथा गुंठके गाँवोंके प्रधानोंका हाथ होता है। अब प्रबंधका सारा अधिकार वदरीनाथ-मंदिर-समितिके हाथमें है, जिसका सहायक मी केदारनाथ या ऊखीमठमें रहता है।

रावलोंकी बनावटी वंशावली बड़ी लंबी-चौड़ी है। उसका आरंभ पां
समकालीन भुकंडसे विश्वलिंग रावल तक ३१९ पीढ़ियाँ गिनाई गई हैं।
शताब्दीमें ७ पीढ़ियाँ लेनेपर दसवीं सदीके आरंभमें २५२वें रावल उदार
बाद निम्न रावल हुए हैं—

२५२. उदार लिंग
२५३. कारण ”
२५४. पद्मनाभ “
२५५. अघोर ”
२५६. जयनाथ ”
२५७. वीतराग ”
२५८. चंद्र ”
२५९. विचित्र ”
२६०. सुंदर ”
२६१. अष्टमूर्ति ”
२६२. यज्ञ ”
२६३. सत्यरूप ”
२६४. स्वरूप ”
२६५. कल्याण ”
२६६. पुराण ”
२६७. स्वभाव ”
२६८. विशेष ”
२६९. वैध ”
२७०. प्राणेश्वर ”
२७१. धनद ”
२७२. प्रकाश ”
२७३. ब्रह्मण्य ”
२७४. निर्मल ”
२७५. श्वेत ”
२७६. नारायण “
२७७. गौर ”
२७८. प्रकाश ”

२७९. विदेह लिंग
२८०. प्रमाण ”
२८१. स्वस्तिक ”
२८२. सदानंद ”
२८३. दुर्गम ”
२८४. चिरन्तन ”
२८५. वसन्तर ”
२८६. रहस्य ”
२८७. ज्ञानदीप ”
२८८. विशोक ”
२८९. जनार्दन ”
२९०. कृतज्ञ ”
२९१. धर्मराज ”
२९२. जटाधर ”
२९३. ख्यात ”
२९४. दुर्लभ ”
२९५. त्रिशूल ”
२९६. कल्पराज ”
२९७. अभिराम ”
२९८. वरुण ”
२९९. अजर ”
३००. देवदेव ”
३०१. कपिल ”
३०२. भालचन्द्र ”
३०३. मुरारी ”
३०४. अमल ”
३०५. काम ”
३०६. त्रिकाम ”
३०७. चान्द ”
३०८. वीरभद्र ”
३०९. शिव ” (१)

३१०. शिव लिंग (२)
३११. सितंबर "
३१२. महा "
३१३. नीलकंठ "
३१४. वसु "
३१५. सितंबर " (२)
३१६. वैद्य "
३१७. केदार "
३१८. गणेश "
३१९. विश्व "
३२०. नीलकंठ "
३२१. जय "
३२२. विश्वनाथ "

रावलकी उपाधि गढ़वालके राजाने १७७६ ई०के आसपास बदर और केदारनाथके महंतोंको दी, लेकिन उससे पहिले रावलकी उपाधि नहीं थ मानना मुश्किल है। वैजनाथके अभिलेखोंसे पता लगता है, कि उससे पहिलेसे पहाड़में महंतोंके लिए रावल या राउलकी उपाधि प्रयुक्त होती थी।

केदारनाथके रावलकी महन्ताई पाँच केदारों और ग्यारह दूसरे मंदि है। पाँच केदार हैं—

(१) केदारनाथ
(२) कल्पेश्वर
(३) तुंगनाथ
(४) मध्यमेश्वर
(५) रुद्रनाथ

दूसरे मंदिर हैं—

(१) अगस्तमुनि
(२) उषीमठ
(३) कालीमठ
(४) गुप्तकाशी
(५) गोपेश्वर
(६) गौरीदेवी
(७) तुंगनाथ
(८) त्रिजुगी
(९) मध्यमेश्वर
(१०) लक्ष्मीनारायण
(११) रुद्रनाथ

केदारनाथके पंडे प्राचीन खस ब्राह्मण हैं। टेहरीकी कुंजणी पट्टीकी देवीके पुजारी भी खस हैं। वह निम्न गाँवोंमें रहते हैं—

१. लमगौडी (बामसू)—जुगणाण (वाजपेयी, अवस्थी)
२. देउली—रुहाड़ी (तिवारी)
३. डुंगरी—कोरियाल (शुक्ल)
४. भणीगाँव—वगवाडी (उपमन्यु वाजपेयी)
५. लोहारा— " " "
६. लुम्रानी— " " "
७. फौली—कोटवाल (शुक्ल)
८. पसालत—छेमवाल (शांडिल्य)
९. नाग—रुहाड़ी (वाशिष्ट तिवारी)
१०. शुवदनी—कोटवाल
११. शाङ्—कोटवाल
१२. रुद्रपुर—शूदडा (शुक्ल)
१३. नाला—शूदडा (शुक्ल)
१४. खाट—जुगणाण
१५. नोहरा—तिनदोरी (त्रिवेदी)
१६. कुंडाल्या—तिनदोरी (त्रिवेदी)
१७. पठाली—रुहाड़ी (काश्यप, तिवारी, त्रिवेदी, तिरोरी)
१८. केमाणा—तिनदोरी (तिवारी, त्रिवेदी)
१९. भटवाड़ी—(काश्यप, तिवारी)
२०. चुन्नी—(काश्यप, तिवारी)

कंन्यूर—चोपराकोट पट्टी (पर्गना चाँदपुर)में पौड़ी-अलमोड़ाके रास्तेमें र्वी नयारके दाहिने तटपर, सकन्यानासे ८ मीलपर है। यहाँ डाकबँगला और ड़ाव है। पहिले यहाँ तहसील भी थी।

कोटद्वारा—पौड़ीसे ४८ और लैन्सडौनसे १७ मीलपर पहाड़की जड़में ह नगर है। १८७०से पहिले यहाँ २५-३० घर थे। दक्षिणी गढ़वालका यही बड़ा जार है। नजीबाबादसे रेल आ जानेसे कोटद्वाराकी बहुत अभिवृद्धि हुई। माणा-तीके भोटांतिक व्यापारी जाड़ोंमें यहाँ पहुँचते हैं। भावरका प्रशासन-केंद्र टद्वारा है। मोटर द्वारा चमोली-पौड़ी और लेन्सडौनसे संबंध हो जानेके रण कोटद्वाराकी कुछ क्षति हुई।

खरसाली—जमुनोत्रीसे ६ मील नीचे हनुमानगंगा और जमुनाके संगमके पास मुनोत्रीके पंडोंका गाँव है। यह गाँव टेहरी जिलेके रवाईं पर्गनेकी गीठ पट्टीमें है।

गंगनाणी—भटवारीसे चार मील गंगोत्रीके रास्तेमें गंगाके दाहिने किनारे है। काठके पुलसे पार हुरी गाँवमें तप्तकुंड है, जिसका तापमान १३२° है।

गंगोत्री (१०३१९ फुट, २१°.×७५°. ५७′)—टेहरीके टकनौर पर्गनेमें ोमुखसे १८ मील नीचे है। अमरसिंह थापाका बनाया मंदिर चट्टान गिरनेसे ट गया। नया मंदिर जरपुरके राजाने बनवाया। यहाँके पंडे (संमवाल) खवामें[1] रहते हैं, जिन्हें भी अमरसिंहने ले जाकर वहाँ बसाया। पहिले धरालीके

---

[1] गंगोत्रीसे १२ मील नीचे गंगाके दाहिने किनारेपर है।

चाँदपुरकोट (६९०० फुट)—कर्णप्रयागसे १० मील आगे और आदव २ मील पीछे मल्ला-चाँदपुर (पर्गना चाँदपुर) पँवार-वंशस्थापक कनकपा गढ़ था। गढ़ नीचे बहती नदीसे ५०० फुटकी ऊँचाईपर है। गढ़की दी और घर भी कुछ कुछ खड़े हैं। यह १॥ एकड़में गढ़े हुए बड़े-बड़े चौकोर पत्थ का बना है। यह सोचना भी मुश्किल है, कि ऐसे दुर्गम रास्तेसे यह विशाल कैसे ऊपर गईं। कर्णप्रयागसे लोहबाका रास्ता गढ़की दीवारके पाससे है।

चोपता (३०°. २९'×७९°.१४'.३०")—ऊखीमठसे ११ मील चमोलीसे १८ मीलपर पट्टी मल्ली-कालीफाट (पर्गना नागपुर) में यह रम चट्टी है। यहाँ डाकबंगला है। तुंगनाथ यहाँसे तीन मीलपर हैं।

जमुनोत्री (१०८०० फुट, ३१°.१'×७८°.२८')—टेहरीके रवाईं प बंदरपूँछ (२०७३१ फुट) की पश्चिमी उतराईमें, तथा जमुनाकी उद् हिमानीसे चार मील नीचे है। यहाँ एक छोटासा जमुनादेवीका मंदिर है, जि पास कई तप्तकुंड हैं, जिनमें एकका जल १९४°.७ गर्म है। इसमें चावल पक जाता है।

जोशीमठ (६१०७ फुट, ३०°.३३'.४६"×७९°.३६'.२४")—पैन पर्गनामें विष्णुगंगा और धौलीगंगाके संगमसे १५०० फुट ऊपर तथा डेढ़ दूर अलकनंदाके बायें किनारे है। चारों ओरसे पहाड़ोंने इसे घेर रखा विशेषकर उत्तरमें एक ऊँचा पर्वत हिमालकी हवाको रोकनेका काम करता विष्णुप्रयागसे जोशीमठ जानेका पुराना रास्ता सीधी कटी सीढ़ियोंका है, जि पत्थरकी पटियाँ बिछी हुई हैं। मकान सुंदर कटे पत्थरोंके हैं। रावलका नि और भी अच्छा है। बदरीनाथके रावल, मंदिर समितिके मंत्री और पु नवंबरसे आधी मई तक यहीं रहते हैं। नरसिंहका मंदिर घरकी तरह होता है, इसकी ढालुआँ छत ताँबेकी है। सामनेके हातेमें पत्थरका कुंड है, पीतलके नन्दीसे पानी गिरता रहता है। हातेकी एक ओर पुराने मंदिर केन्द्रमें ३० वर्गफुटमें विष्णुका मंदिर है। कितने ही मंदिरोंपर भूकंपका प्रभाव दिखाई पड़ता है। विष्णु-गणेश-सूर्य-नवदुर्गाके छोटे मंदिरोंको कम हुई है। विष्णुकी मूर्ति ७ फुट ऊँची काले पत्थरकी तथा किसी चतुर शि हाथकी कृति है। एक पीतलकी पंखदार तथा जनेव धारण किये मूर्ति है, जिसे ग्री बाख्तर कलाकी चीज बतलाते हैं। गणेशकी मूर्ति २ फुट ऊँची सुरक्षित पालिश की हुई है। नीती और माणाके चौरस्तेपर होनेसे जोशीमठ

त समृद्ध था, लेकिन अब भोटांतिक लोग अपना माल सीधे नंदप्रयाग ले ते हैं ।

नरसिंह मंदिरके बारेमें एक कथा प्रसिद्ध है "'इस प्रदेशके पुराने राजा वासु- का एक वंशज एक दिन जंगलमें शिकार खेलने गया था । उसकी अनुपस्थितिमें सिंहावतार विष्णुने ब्राह्मणका रूप लेकर महलमें रानीसे भोजन माँगा । नीने खूब भोजन कराया । ब्राह्मण खानेके बाद राजाके पलंगपर लेट ा । इसी समय राजा शिकारसे लौट आया । अपनी पलंगपर एक अपरि- त व्यक्तिको सोया देखकर गुस्सेमें आ उसने तलवार खींचकर ब्राह्मणकी बाँह र मारा । लेकिन बाँहसे खूनके स्थानपर दूध बह निकला । राजा भयसे काँपने ा । रानीने कहा——इसमें संदेह नहीं, यह कोई देवता है । राजाने उससे ने अपराधके लिए दंड देनेकी प्रार्थना की । देवताने कहा——'मैं नरसिंह हूँ । तुझसे प्रसन्न होकर तेरे दरबारमें आया । अब तूने जो यह अपराध किया, का फल भोगना ही पड़ेगा । तू इस सुंदर ज्योतिर्धामको छोड़कर अब कत्यूर जनाथ)में जा बस । यह घाव तू मंदिरमें अवस्थित नरसिंहकी छोटी मूर्तिमें देखेगा । जब वह मूर्ति गिरकर खंड-खंड हो जायेगी और हाथ न रह जायेगा, तेरा वंश उच्छिन्न हो जायेगा ।"

नरसिंहजीका एक हाथ पतला है । कहा जाता है, जब बाँह टूटकर गिर गी, तब धौली-उपत्यकामें तपोवनमें एक नये बदरीनाथ प्रकट होंगे ।[1] सिंह मंदिरको प्रतिदिन १।। द्रोण (=४८ सेर) चावल भोग लगता है ।

कत्यूरियोंका राज्य सतलजसे काली और हिमालयसे उत्तर पंचाल (रुहेल-) तक था । नरसिंहदेव जोशीमठ छोड़ गोमतीकी उपत्यकामें कत्यूर (बैजनाथ) ा गया ।

यहाँ डाक-तार-घर, अस्पताल, डाक-बँगला, बाजार है ।

जोशीमें शंकराचार्यके शिष्य तोटकाचार्यकी गद्दी थी, जो १७७६ ई० तक म रही । हालमें उसका पुनरुद्धार किया गया है ।

टंगणी——पीपलकोटीसे ८ मील ऊपर बदरीनाथकी सड़कपर एक चट्टी । खस जातिके तंगण नामकी इसपर छाप है । टंगणी गाँवमें बदरीनाथके री (माली) रहते हैं ।

---

[1] "यावद् बिष्णोः कला तिष्ठेद् ज्योतिःसंज्ञे निजालये ।
गम्यं स्याद् बदरीक्षेत्रं अगम्यं च ततः परम् ।।"

टेहरी--(१७५० फुट, ३०°.२३′×७८°,३२′)—भागीरथी और नाके संगमपर बसा है। १८०८में अभी यह एक गाँव[1] था। १८१५में कृपासे गढ़वाल राजके बचे-खुचे टुकड़े (टेहरी)को पाकर राजा सुदर्शन यहाँ अपनी राजधानी बनाई। १८१९ में राजाका महल एकमात्र बड़ा घर गर्मियोंमें गर्मी अधिक होनेसे राजा प्रतापशाहने प्रतापनगर बसाया, इसके कीर्तिनगर, और नरेन्द्रनगर भी दूसरे राजाओंने बसाये, जिससे टेहरीकी रुक गई। टेहरी रियासतके विलयन हो जानेके बाद अभी तै नहीं हुआ, कि जि केन्द्र टेहरी रहेगा, या नरेन्द्रनगर। यदि खर्चको बचानेके लिए शिमलाका छोड़ दिल्लीको ही सदाकी राजधानी स्वीकार करना पड़ा, तो जिलेका स्थान टेहरीको ही होना चाहिये।

ऋषिकेशसे टेहरी और आगे धरासू तक मोटर-सड़क है।

तपोवन—(ढाकतपोवन)—जोशीमठसे ७ मील नीती घाटीके रास्तेपर नदीके बायें यह गाँव है। सुरैंथोता अगला पड़ाव यहाँसे ८ मील है। जानेवाला रास्ता यहीं आ मिलता है। गाँवके पास कितने ही तप्तकुंड और शून्य मंदिर हैं, जिन्हें रुहेलोंने ध्वस्त किया। पाँच मील और ऊपरकी ओर किनारे सुबै गाँव है, जहाँ भविष्य बदरीका मंदिर है। यह भी संभव है कि रियोंका बदरिकाश्रम यहीं रहा, और वर्त्तमान बदरी तब कोई बौद्धधाम

तिरजुगीनारायण (पट्टी मल्ला-कालीफाट, पर्गना नागपुर)—गौरी चार मील गंगोत्रीसे पंवाली-डांडा पार होकर आनेवाले रास्तेपर यह है। सत्ययुगमें हिमालय-पुत्री गौरीका ब्याह यहीं शिवजीसे हुआ था, " विवाहके होमकी आग अबतक जल रही है।" यहाँ नहानेके चार कुड हैं, बहुतसे निर्विष सर्प रहते हैं।

देवप्रयाग (१५५० फुट, ३०°.१०′×७८°.३७′)—अलकनंदा और रथीके संगमपर अवस्थित पंच प्रयोगोंमेंसे एक है। गाँव धारासे १०० फुट है, जिसके पीछेका पहाड़ ८०० फुट सीधे खड़ा है। रघुनाथका विशाल बिना चूनेकी जुड़ाईवाले विशाल पाषाणोंसे बना नगरके ऊपरी भागमें नहानेके लिए पत्थरोंमें वशिष्टकुंड और ब्रह्मकुंड खुदे हुए हैं। १८०३के मंदिरोंको बहुत क्षति पहुँचाई थी, किन्तु दौलतराव सिंधियाने उसकी

---

[1] किंतु वहीं मिली प्राग्-मुस्लिम कालीन मूर्तियाँ बतलाती हैं, कि भी इसका महत्त्व था।

वा दी। रघुनाथकी मूर्ति ६ फुट ऊँची काले पत्थरकी है। मंदिरसे संगमतक ाय: डेढ़ फरलांग) पत्थरोंमें सीढ़ियाँ कटी हैं। वदरीनाथके पंडे देव-ागके हैं। रघुनाथके पुजारी महाराष्ट्र भट्ट ब्राह्मण हैं, जो देवप्रयागके पंडोंके जमाई वन जाते हैं। अधिकांश पंडे इन्हीं भट्टोंकी संतान हैं।

ऋषिकेशसे कीर्तिनगरकी मोटर-सड़क यहाँसे जाती है। अलकनंदापार के लिए लोहेका पुल है, जिसके पार वाह चट्टी है, जहाँसे ऋषिकेशसे वदरीनाथके यात्री जाते हैं।

देवलगढ़—अजयपालने १५१२ ई०में चाँदपुरके किलेसे हटाकर यहाँ अपनी धानी वनाई, और यहीं सत्यनाथ भैरव तथा राजराजेश्वरी मंत्रकी स्थापना । देवलगढ़में राजधानी थोड़े ही समयतक रही, फिर १५१७में हटाकर नंदाके वायें तटपर श्रीनगरमें लाई गई।

दोगड्डा—कोटद्वारासे १० मील लैन्सडौनकी सड़क तथा उससे ९ मीलपर पट्टी (पर्गना तल्ला-सलाण)में अवस्थित वड़ा वाजार है। यहाँसे कोट-से आनेवाली पौड़ी और लैन्सडौनकी मोटर-सड़कें अलग होती हैं—गाड या छोटी नदीको कहते हैं, यहाँ सिलीगढ़ और खोह दो गड्ड मिलते हैं, इसीलिए ड्डा नाम पड़ा। १८९१ तक इसका कोई महत्त्व नहीं था, किन्तु पीछे इतनी से वढ़ा कि कोटद्वारा इससे पीछे रह गया।

नगुण—गंगोत्रीके रास्तेमें टेहरीसे ग्यारह मीलपर यह चट्टी है। यहाँ के राना देवशमशेरकी वनवाई धर्मशाला है।

नंदप्रयाग—अलकनंदा और नंदकिनीके संगमपर पट्टी तल्ली-दसोलीमें स्थित है। पुराना वाजार १८९४में गोहनाकी वाढ़से वह गया। जोशीमठ-महत्त्व कम करके भोटांतिक व्यापारी जाड़ोंमें नंदप्रयागको गुलजार करते । यहाँसे एक पैदल सड़क ग्वालदम् होकर अलमोड़ा जाती है, और दूसरी मोटर-कोटद्वाराकी ओर।

नरेन्द्रनगर—(४००० फुट)—ऋषिकेशसे १४ मील दूर मोटर-सड़कपर र्तमान टेहरी महाराजाके पिता नरेन्द्रशाहने इसे अपने नामसे वसाया था। ठंडी जगह है।

नागनाथ—नागपुर पर्गनेमें यहाँ नागनाथका मंदिर और मिडल-स्कूल भी है।

नागपुर पर्गना—गढ़वालका यह वहुत महत्त्वपूर्ण पर्गना है, जो तिव्वतकी सीमा-मालका ठंडा प्रदेश है। यहाँ जहाँ खनिज पदार्थ प्रचुर परिमाणमें प्राप्त हैं, वहाँ यके कुछ अतिमनोरम दृश्य भी यहीं मिलते हैं। इसमें निम्न नौ पट्टियाँ हैं—

(१) नागपुर-मल्ला
(२) नागपुर-विचल्ला
(३) नागपुर-तल्ला
(४) खदेड़
(५) दशजूला
(६) कालीफाट-मल्ला
(७) कालीफाट-तल्ला
(८) कालीपार
(९) वामसू-मैखंडा

वैटनने सौ वर्ष पहिले लिखा था कि नागपुरको वह लोग कभी नहीं भूल स जो मंदाकिनीके किनारे-किनारे उसके उद्गम तक पहुँचे हैं, जो तुंगनाथके जंगलोंमें घूमे हैं अथवा जिन्होंने देवरीतालके किनारे दिन विताया है। ऊपरी पट्टियोंमें ऐसे दृश्य हैं, जो अपने सौंदर्य और भव्यतामें अद्वितीय हैं।

पर्गनेकी हाटजैसल, भकुंडा, मंगू और तालवरलीके लोह और ताल ताँवेकी खानोंमें वहुत पीछे तक काम होता रहा।

पतलीदून—रामगंगाके दोनों किनारोंपर पहाड़से वाहर होनेसे यह घासकी भूमि आती है, जो लंवाईमें १०-१२ मील और चौड़ाईमें एक मीलतक है।

पांडुकेश्वर (६३०० फुट, ३०°,३७'.५९"×७९°×३५.'३०")—यह ज मठसे आठ मील उत्तर है। वदरीनाथ यहाँसे उतना ही आगे है। पाँच वदरि एक योगवदरीका मंदिर यहीं है। कहा जाता है, पांडव राज्य परिक्षितको अपने पिता पांडुकी इस भूमिमें तपस्या करने आ गये, इसी लिए इसका यह पड़ा। जाड़ोंमें वदरीनाथकी धातुवाली उत्सव (उधव) मूर्ति यहाँ आती कत्यूरी राजाओंके चार ताम्रपत्र यहाँ रखे थे, जिनमेंसे एक लुप्त तथा जोशीमठमें रखे हैं।

पीपलकोटी—(३०°.२५'.५०"×७९°.२८'.२०")—पट्टी तल्ली- (पर्गना दसोली)में वदरीनाथके रास्तेपर वड़ी चट्टी है। हाटसे यह दो मील और हेलङ्से ग्यारह मील पीछे है।

पुनाड—देखो रुद्रप्रयाग।

पैनखंडा—गढ़वालका यह सबसे वड़ा (१६८५ वर्गमीलका) पर्गना ति सीमापर है। यहाँ खेती ६५०० फुट (रिनी)से ११५०० फुट (नीती होती है। माणामें केवल छुवा और फाफड़ होता है। नीतीके सिंचाई खेतोंमें गेहूँ, जौ और सरसों भी होती है। आवादी वहुत कम और जंगल ज्यादा हैं। वर्षा वहुत कम होती है। इसकी दो पट्टियोंमें पैनखंडा जोशीमठ, नीती है, और तल्लामें वदरीनाथ और माणा।

पैनखंडामें हिमाल-श्रेणियाँ और बुग्याल (घासवाली ढलान) ज्यादा हैं। चोटियाँ हैं नालीकांठा, धौलागिरि। कुवारी-वुग्याल और सोली-वुग्याल यहीं हैं।

पैनखंडा-गढ़—पूनी गाँवके पास इस पुराने गढ़का ध्वंसावशेष है।

पोखरा—पट्टी-तलाई (पर्गना मल्ला-सलाण)में अल्मोड़ा-पौड़ी सड़कपर गाँव है। देवदारके जंगलमें अच्छी पड़ावकी जगह है। गाँवमें मिडल-स्कूल शिक्षक ट्रेनिंग स्कूल हैं।

पौड़ी (५३९० फुट)—गढ़वाल जिलेका केन्द्र-स्थान है नदालस्यूँ पट्टी गना वारहस्यूँ)में कोटद्वारासे ४८ और श्रीनगरसे ८ मीलपर काडोलिया ड़के उत्तरी ढलानपर अवस्थित है। पहिले यह एक छोटासा गाँव था। ८७ ई०में जिलेका केन्द्र वननेपर इसकी श्रीवृद्धि तेजीसे हुई। यहाँसे हिमालय-बहुत सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है।

प्रतापनगर (७००० फुट)—टेहरीसे ९ मीलपर अवस्थित इस नगरको शाहने १८७७में वसाया। यहाँसे हिमालयका वड़ा सुन्दर दृश्य दिखाई ता है। पासमें बाँस, वुरांसके जंगल हैं।

बदरीनाथ (१०२८४ फुट, ३°.४४'.३६"×७९°.३२°.२०")—श्रीनगरसे मील और माणाजोतसे २५ मील पीछे मल्ला-पैनखंडामें यह तीर्थ अलकनंदा-दाहिने तटपर अवस्थित है। मंदिर तीन मील लंवी और एक मील चौड़ी कामें नर (पूर्व) और नारायण (पश्चिम) दोनों ऊँचे पर्वतोंसे समान दूरीपर वर्तमान मंदिर नया है, जिसकी छत देवदारकी है।

(१) मंदिरसे थोड़ा नीचे तप्तकुंड (१६'×१४') है, जिसके ऊपर लकड़ी-त है। २६ मईको ११ वजे सवेरे तापमान १२० फार्नहाइट देखा गया। गंधककी गंध उड़ा करती है।

ढ़वालमें पाँच वदरी हैं—विशालवदरी (वदरीनारायण), योगवदरी केश्वर), भविष्यबदरी (तपोवनके पास), वृद्धवदरी (अनीमठ), और वदरी (सिलङ्के पास)।

वदरीनाथपुरी ढालुआँ भूमिपर वसी हुई है। मईसे अक्तूबरतकके लिए नगरीका रूप ले लेंती है । जमीन इतनी चौरस है, कि थोड़ीसी से वहाँ विमान उतर सकता है। वस्तीके सबसे ऊँचे स्थलपर वदरीनाथ-मंदिर कटे हुए पत्थरोंका वना है। मंदिर मुगल-शैलीकी नयी इमारत है। हैं, श्रीवदरीनाथजीका वर्तमान मंदिर रामानुज सम्प्रदायी स्वामी वरदराज-

जीकी प्रेरणासे श्रीमान गढ़वाल नरेशने विक्रमीय पन्द्रहवीं शताब्दीमें नि किया था।...श्री वदरीनाथजीके मंदिरपर जो सोनेकी कलश-छत्री है, ...अहल्या वाईजीका चढ़ाया हुआ वतलाते हैं।[1]

(२) मूर्त्ति—वदरीनाथकी मूर्ति ३'.९" ऊँची काले पत्थरकी ध्या वस्थित है। इसके शिरके आगेका पत्थर टूटकर निकल गया है, जिससे आँख-नाक-मुँह-ठुड्डी गायव हैं। यह ध्यानावस्थित संभवतः भूमिस्पर्शवाली पत्थरकी वुद्ध मूर्ति है। इसकी एक वाहमेंसे भी कुछ पत्थर निकल गया है शिरके पीछे कुंचित केश तो जैनमूर्त्तिमें भी होते हैं, किंतु वक्षपर एकांस इसके वुद्धमूर्त्ति होनेको निश्चित कर देता है। माणाके मार्छा लोग इसे भोटि का देवता (वुद्ध) वतलाते हैं और गंगोत्रीके लोगोंका कहना है—यह वदरी नीचेके उन लोगोंके लिए है, जो असली वदरीतक नहीं पहुंच सकते— वदरीनाथ थोलिङ् गुम्वामें है। थोलिङ् गुम्वा तिब्वतमें ग्यारहवीं आरंभमें वना वौद्ध विहार है। वदरीनाथकी मूर्तिको रावल छोड़ दूसरा छू सकता, किंतु सवेरे आठ वजे अभिषेकसे पहिले नग्न मूर्तिका दर्शन आसान है, दूरवीनसे और स्पष्ट हो जाता है। श्री शालिग्राम वैष्णाव (भूतपूर्व मं वदरीनाथ) लिखते हैं[1]—

"इस मूर्तिके विषयमें कितनी ही प्रकारकी जनश्रुतियाँ हैं। कोई इस नारदजीकी पूजी हुई तपस्वी भगवान् नारायणकी मूर्ति मानते हैं और कोई इसको वौद्धोंकी स्थापित वुद्ध[2] भगवानकी मूर्ति वतलाते हैं। कोई-कोई हैं, कि यहाँपर पहिले वौद्ध मठ था, जिसको स्वामी शंकराचार्यने वौद्धोंको प कर सभी मूर्तियोंको भगवान् नारायणके नामसे पुजवानेका विधान किया। लोग इस मूर्तिको पारसनाथ अथवा ऋषभदेव भगवान्की मूर्ति मानते हैं। सव जनश्रुतियोंमें सत्य चाहे कोई भी हो, हिन्दुओंके लिए यह मूर्ति सव प्र ही मान्य है, क्योंकि नारायण, वौद्ध तथा ऋषभदेव ये तीन भगवान् विष्णु अवतार पुराणोंमें वर्णन किये गये हैं।

---

[1] "श्रीउत्तराखंडरहस्य", पृष्ठ १३३ (गढ़वाली प्रेस, देहरादून १९

[2] मोलारामने भी मूर्त्तिके बारेमें डेढ़सौ वर्ष पूर्व लिखा था—

केदारखंड उत्तर दिसै, भयो वौद्ध हरि-रूप।
वैठ्यो ध्यान लगाइके, सुंदर श्याम अनूप॥

—"विराट हृदय" (पृ० ३३ में उद्

"यहाँ दो पर्वत अलकनंदाके दाहिनी और वाईं तरफ हैं, जिनको नारायण और नरपर्वत कहते हैं। इन्हीं पर्वतोंके वीचकी भूमिको वदरीनाथ कहते। यहाँ एक किस्मकी झरवेरी, जिसको यहाँके लोग भ्यूँरा कहते हैं, अधिक है, इसीसे इसका नाम वदरीनाथ या वेरीका जंगल पड़ा।—"भूगोल गढ़वाल" पृष्ठ २४ (श्री शालीग्राम वैष्णव)

"तिव्वतके लामाकी ओरसे उसके प्रतिनिधि द्वारा प्रतिवर्ष चातुर्मासमें र भेंटके चाय, चँवर इत्यादि कई वस्तुयें आती हैं, और मंदिरसे प्रसाद-स्वरूप ई, भोग, वस्त्र, मुश्क लामाके लिये भेजे जाते हैं।"[1]

(३) **बदरीनाथकी माता**—"मातामूर्ति नामके स्थानमें तपस्वी भगवान् नाथजीकी माता श्री मूर्तिदेवीकी मूर्ति है। वामन द्वादशीके दिन वदरीनाथ- की उत्सव[2] (मूर्त्ति), जिसको उद्धव मूर्ति कहतें हैं, चाँदीकी पालकीपर वड़े रोहके साथ वहाँ पहुँचाई जाती है। तव वहाँपर माता और पुत्रका मिलाप कर पूजा होती है, नृत्य-गान होता है। सायंकाल वदरीनाथजीकी उत्सव- को मातासे विदा कराकर वापस वदरीपुरीमें ले आते हैं।"

(४) **अन्य तीर्थ**—वदरीनाथके आसपास और कितनी ही छोटे मोटे तीर्थ से ऋषिगंगा, कूर्मधारा, प्रह्लादधारा, नारदकुंड।

वदरीपुरीकी उत्तरी सीमापर ब्रह्मकपाल शिला है, जिसपर श्राद्ध किया ता है। यह आश्चर्यकी वात नहीं है, यदि पंडा लोग यहाँके पिंडदानका महातम के वरावर वतलाते हैं। सभी तीर्थोंके पंडे चाहते हैं, कि भारतके सभी तीर्थ- यों हमारे ही यहाँ आयें, जिसमें सारी दक्षिणा हमें ही प्राप्त हो जाये। वह यह समझते, कि इससे दूसरी जगहके पंडोंकी क्या गति होगी? चरणपादुका, शेषनेत्र, रा, भृगुधारा, उद्धवचौरी, व्यासगुफा, मुचकुन्दगुफा यहाँके छोटे तीर्थोंमें है।

(५) **वसुधारा**—वदरीसे ४ मील उत्तर है। यहाँ ४०० गजकी ऊँचाईसे रा गिरती है, जिससे सीकरोंका वादलसा उड़ता दिखाई पड़ता है।

(६) **सतपथ**—वदरीसे १२ मील पश्चिम यह सुन्दर सरोवर है।

(७) **व्यासगुफा**—वदरीसे उत्तर २ मीलपर माणा गाँवके पास है। २ र उत्तर और जानेपर मुचकुन्द-गुफा है।

---

[1] वहीं, पृष्ठ १४२,

[2] वहीं टिप्पणीमें—"...उत्सवमूर्ति चाँदीकी बनी हुई, ज शंख, चक्र, गदा, पद्म युक्त विष्णु मूर्ति है, पर यहाँके लोग इस मूर्तिको जीके नामसे पुकारते हैं।"

(८) बदरीनाथके रावल—रावल या राउल शब्द राजकुलका अपभ्रं है, जिसका अर्थ राजवंश या राजवंशिक होगा। महंत या राजमान्य धर्मचार् लिए रावलकी उपाधि १४-१५वीं सदीमें भी कुमाऊँ (वैजनाथ, कटारमल) अभिलेखोंमें देखी जाती है। वदरीनाथके प्रथम नंवूदिरी महंत (गोपाल) "रावल"की उपाधि पहिलेपहिल गढ़वालके राजा प्रदीपशाह (१७२७-७२ ई. ने दी। श्री शालिग्राम वैष्णव लिखते हैं—"जवसे स्वामी वरदा गढ़वाल नरेशकी सहायतासे वर्तमान मंदिर निर्माण कराकर श्री वदरीनाथजी पूजा नियमित रूपसे होनेका प्रवंध कराया था, तवसे यहाँपर यह नियम बाँ गया, कि श्री वदरीनाथजीकी पूजामें योग्य विद्वान् और सांसारिक व्यवहा विरक्त त्रिदंडी स्वामी नियुक्त हों।...कुछ कालके उपरान्तमें त्रिदं स्वामी लोग स्वार्थवश होकर योग्यायोग्यका विचार छोड़कर अपनी जाति अप अपने संवंधी लोगोंको वुलाकर त्रिदंड धारण कराकर अपना उत्तराधिकारी बन लगे। अतएव इस प्रकार स्वजातीय उत्तराधिकारी प्रथा जड़ पकड़ अव केवल नम्वूदिरी जातिका व्राह्मण होना ही वदरीनाथजीके पुजारी होने सनद हो गई है। योग्य-अयोग्य, पंडित-मूर्ख, सदाचारी-दुराचारी कैसा ही क् न हो, नम्वूदिरी जातिका व्राह्मण और पुराने पुजारी (रावल) द्वारा नियु किया हुआ होनेसे वह वदरीनाथजीकी पूजामें बैठ सकता है। हिन्दू जाति सर्वश्रेष्ठ इस पवित्र धामके इस पवित्र मंदिरके पुजारीका पद आजकल ऐसी निकृ अवस्थाको पहुँच गया कि हिन्दूमात्रको उससे लज्जित होना पड़ता है। जि मंदिरके पुजारी निःस्पृह विरक्त साधु व्रह्मचारी ही हुआ करते थे, उस प इन्द्रिय-लोलुप हीनवर्ण स्त्रियोंसे संसर्ग रखनेवाले विषयी पुरुष पुजारी बन भगवान् श्री वदरीनाथजीकी मूर्तिको स्पर्श करते दृष्टिगोचर होते हैं।"

वैष्णवजी नाहक रावलको कोसते हैं। वह वदरीनाथ मंदिरके वर्षों मैने रहे, इस लिए उनका उक्त कथन निजी अनुभवके आधारपर है, इसमें संदेह न किंतु क्या "निःस्पृह, विरक्त, साधु व्रह्मचारी कहने मात्रसे ही, आदमी "विशवामि पराशर-प्रभृति"से भी इन्द्रिय-संयममें वढ़ जाता है? यह वहुत भोलेपनकी है। आपके वहुतसे तथाकथित "निःस्पृह विरक्त साधु" दूसरी तरहसे सोलहो सच्चे-पक्के होते भी इन्द्रियके संवंधमें साधारण प्राणीसे ऊपर उठे नहीं मालूम हों

रावलकी नियुक्तिमें पहिले गढ़वालके राजाको काफी अधिकार गढ़वालके दो टुकड़े होनेपर "टिहरी महाराजा इस मंदिरके नाम-मात्रके ही अधि ष्ठाता रह गये। उनका अधिकार केवल रावल और लेखवारोंको नियुक्त

मंदिरके कपाट खोलनेका मुहूर्त ठहराने भरका ही रह गया। उनको इतना अधिकार नहीं रहा, कि वे मंदिरके किसी कर्मचारीको उसके अपराधके कुछ दंड दे सकें। रावल और उसके कर्मचारी निर्भयतापूर्वक मंदिरकी त्तिको फिर भी हड़पते रहे। ...(आगे मंदिरकी दुर्व्यवस्थाके कारण जिला-ने मुकदमा कर दिया)...दावेके फैसलेकें साथ सन् १८९९ ई०में अदालत लरीसे एक स्कीम इस मंदिरके प्रवंधके सम्वन्धमें तैयार हुई। इस स्कीमसे री महाराजाका रहा-सहा अधिकार भी जाता रहा अर्थात् उनको अव रावल र लेखवारके नियुक्त करनेका भी अधिकार नहीं रहा। सारा अधिकार ...रावलको ही प्राप्त हो गया। अव टिहरी महाराज केवल रावलके नियुक्त हुए नायव-रावलको मंजूर करनेके ही अधिकारी रह गये।...रावल... कुछ भी पर्वाह नहीं करता।...पहिले कभी कोई रावल वदरीनाथमें स्त्रीको साथ नहीं रख सकता था, अवके रावल निःशंक होकर वदरीनाथमें पूजा ते हुए भी स्त्रीको साथ रखते हैं।...मंदिरके धनको मनमाना खर्च कर तो रावल महाशयका वायें हाथका खेल है। प्रतिवर्ष न्यूनाधिक एक लाख रुपया मंदिरके भेंट-चढ़ावा और मंदिरके गाँवोंकी रकमसे आ जाता है, पर के अन्तमें मंदिरका कोष प्रायः खाली ही नजर आता है।"[1]

असवर्ण स्त्रियोंको रावल रखते हैं, इसकी इधर वहुत आलोचना होती रही किंतु लोगोंको मालूम नहीं कि भगवत्पाद शंकराचार्यके कुलके होनेके कारण र भारतके सभी ब्राह्मणोंको शूद्र समान समझनेवाले मलावारके नम्बूतिरियोंमें र्ण स्त्रीग्रहण सनातन धर्म माना जाता है। अभी १०-१५ वर्ष पहिले तक तिरियोंमें केवल ज्येष्ठ पुत्र ही संपत्ति तथा नम्बूतिरी कन्या प्राप्त करनेका कारी माना जाता था, वाकी पुत्र नायर-कन्याओंसे संवंध करके कन्याकुलके सन्तान-उत्पत्ति करते थे। अपनी इन नायर नामधारी संतानोंके पालन-का प्रवंध इन्होंने नायरोंमें केवल कन्याको उत्तराधिकार देकर कर दिया । डाक्टर टी० एम० नायरने आन्दोलन कर नायर-पुत्रोंको भी उत्तराधिकार का कानून वनवाया और द्वितीय विश्व-युद्धसे थोड़ा पहिले नम्बूतिरी कनिष्ट को भी सम्पत्तिमें उत्तराधिकार मिल गया, जिससे सवर्ण कन्याओंसे व्याह का भी उनका रास्ता खुल गया। अव रावल महाशय चाहें, तो नम्बूतिरी सीधे मलावारसे ला सकते हैं।

---

[1] वहीं, पृष्ठ १५०-५१

श्री वैष्णावजीके लिखनेसे मालूम होता है, कि बदरीनाथके महंत प रामानुजी वैष्णाव हुआ करते थे, किंतु ऐसा होनेपर शंकरके नम्बूतिरियों अधिकार कैसे मिलता ? हरिकृष्ण रतूड़ीका कहना ठीक मालूम होता है “यह प्रथा प्राचीन प्रतीत होती है, कि ज्योतिर्मठ (जोशीमठ) का संन्यासी मह ही वदरीनाथका अधिकारी और पूजक भी रहा।”

वदरीनाथके महन्तोंकी नामावली १४९७ ई० (संवत् १५५४)से ही मि है। उनका काल यहाँ रतूड़ीजीकी सूचीके संवत्में ५७ घटाकर ईसवी स देते हैं—

महन्त	गद्दी	महन्तीके
१. वालकृष्ण स्वामी	१४४३	५७
२. हरिब्रह्म ”	१५००	१
३. हरिस्मरण ”	१५०१	८
४. वृन्दावन ”	१५०९	२
५. अनन्तनारायण”	१५११	१
६. भवानन्द ”	१५१२	१४
७. कृष्णानन्द ”	१५२६	१०
८. हरिनारायण ”	१५३६	८
९. ब्रह्मानन्द ”	१५४४	२०
१०. देवानन्द ”	१५६४	१५
११. रघुनाथ ”	१५७९	२५
१२. पूर्णदेव ”	१६०४	२६
१३. कृष्णदेव ”	१६३०	९
१४. शिवानन्द ”	१६३९	७
१५. वालकृष्ण ”	१६४६	१४
१६. नारायण उपेन्द्र ”	१६६०	३३
१७. हरिश्चन्द्र ”	१६९३	१३
१८. सदानन्द ”	१७०६	१०
१९. केशव ”	१७१६	८

---

[१] “गढ़वालका इतिहास”, पृष्ठ ५५

[२] वहीं, पृष्ठ ५५-५९

. नारायणतीर्थ "	१७२४	४२
. रामकृष्ण "	१७६६-७६	१०

"जब शंकर-सम्प्रदायका अंतिम महन्त रामकृष्ण स्वामी सन् १७७६ ई० में मर गया, उस कालमें वहाँ अन्य कोई दंडी संन्यासी विद्यमान नहीं था द्रीनाथ अपूज्य नहीं रह सकते थे। भाग्यवशात् उस समय गढ़वाल-नरेश ाज प्रदीपशाह पुरीमें यात्रार्थ विद्यमान थे। महाराजाने गोपाल नामक ारीको, जो नम्बूरी जातिका ब्राह्मण था और मंदिरमें भगवान्‌के वास्ते पकाता था, वहीं रावल पदवीसे विभूषित करके रामकृष्ण स्वामीके स्थानपर कर दिया, और छत्र-चँवर-खिलत उसको प्रदान की। तबसे बद्रीनाथके ंकी पदवी महन्तसे रा(व)लमें बदल गई।"[1]

"रावल दक्षिण देश (मलावार)का...चोली या मुकाणी जातिका होता है। [(शंकराचार्यके) दो नातेदार...एक चोली जातिका दूसरा ी जातिका ब्राह्मण, उनकी माताकी शव-दाह-क्रियामें साथ रहे, इसीसे चार्यने उन दो जातियोंको भी अपने निर्माणित क्षेत्रमें अपनी जातिके साथ प्रदान किया"]। तबसे इन्हीं तीन जातियोंमेंसे...रावल चुने जाते हैं।[2] १७७६से अबतक निम्न रावल हुए हैं—

	गद्दी	
. गोपाल रावल	१७७६	९
. रामचंद्र रामब्रह्म रघुनाथ "	१७८५	१
. नीलदत्त "	१७८७	५
. सीताराम "	१७९१	११
. नारायण "	१८०२	१४
. डि० नारायण " (२)	१८१६	२५
. कृष्ण "	१८४१	४
. नारायण "(३)	१८४५	१४
. पुरुषोत्तम "	१८५९	४१
. वासुदेव "	१९००	१
. रामन "	१९०१	४
. वासुदेव (दुबारा)	१९०४	

---

[1] "गढ़वालका इतिहास", पृष्ठ ५६-५९ [2] वहीं, पृष्ठ ४९-५०

१३. गोविन्दन्	१९४२
१४. कृष्णन्	१९४६

(९) पंडे—"श्री वदरीनाथजीके पंडोंकी मुख्य दो जातियाँ हैं—डिम अौर देवप्रयागी। समस्त पर्वतीय देश अर्थात् गढ़वाल, कुमाऊँ, नेपाल, विशैर रा के पंडे डिमरी ब्राह्मण होते हैं। इनके अतिरिक्त सम्पूर्ण भारतवर्षके अन्य प्रान्त पंडे देवप्रयागी ब्राह्मण हैं। अपने-अपने यजमानोंसे दान लेनेका स्थान डिम पंडोंका मंदिरकी परिक्रमा तथा देवप्रयागी पंडोंका तप्तकुंड है।"[1]

लक्ष्मीमंदिरके पुजारी भी डिमरी ब्राह्मण होते हैं। ये ही वदरीना रसोईमें पाचक भी हैं। कोठियाल ब्रह्मकपालके पंडे हैं। डिमरी, हटवाल सत्ती गढ़वालके सरोला ब्राह्मणोंमेंसे हैं, और देवप्रयागी गंगाडी। मंदिर रसोईमें जानेका अधिकार होनेसे सरोला-डिमरी अपनेको गंगाडी देवप्रयागि ऊपर समझते हैं। (रसोईं पकानेवालोंको रस्वाला कहा जाता है, उसीसे सरो की व्युत्पत्ति वतलाई जाती है)।

१०. पदाधिकारी—मंदिरके मुख्य पदाधिकारी तो आजकल से मंदिर-प्रवंध-समिति हैं, वैसे पहिलेसे चले आये पदाधिकारी निम्न हैं—

रावल
नायव-रावल
लखवार
ना० लेखवार
भण्डारी
खजांची (सान-भंडारी)
मुख्तार
वडुये
उदासी (रसोइये)
चोवदार
चपरासी
पटवारी
खिदमतगा
वजंत्री

(१०) भोग—वदरीनाथमें प्रतिदिन तीन द्रोण[2] (=दो मन सोलह चावलका भोग लगता है। यात्रियों द्वारा चढ़ाये जानेवाले अटकेका भोग इ अलग है। यात्राके समय कभी-कभी रसोईमें २५-३० मन तक चावल जा जो यात्रियोंकी संख्यापर निर्भर करता है। खानेमें छुआछूत यहाँ भी क करीव उसी तरह उठ गई है, जैसी जगन्नाथपुरीमें—जहाँ चाहो जिसके साथ कर खा लो, हाँ, जगन्नाथकी भाँति जूठा खानेकी प्रथा यहाँ नहीं है।

वदरीनाथके प्रवंधमें निम्न मंदिर[3] हैं—

---

[1] "श्रीउत्तराखंडरहस्य," पृष्ठ १४४

[2] एक द्रोण ३२ सेरका होता है।

[3] "(वदरीनाथ)की अगम्यता और गम्यता"।

लक्ष्मी मठ
मातामूर्ति
पांडुकेश्वर
जोशीमठ
नरसिंह (जोशी)
जोतीश्वर(”)
वासुदेव मठ(”)
रवेश्वर मठ

९. भविष्य बदरी
१०. दाडिमी नरसिंह
११. लक्ष्मी नारायण
१२. सीताराम मठ
१३. वृद्ध बदरी
१४. लक्ष्मी नारायण द्वि०
१५. ” तृ०
१६. ” चतुर्थ

वधाण—गढ़वालका एक पर्गना है। वधाणगढ़ीमें पहिले एक राजा रहता था।

म्पा—(३०°.४४′.×७९°.५२′.६″)—जोशीमठसे नीतीके रास्तेपर एक मोटांतिक गाँव है। देवदार-क्षेत्र यहाँ समाप्त हो जाता है, और आगे भुर्ज नीलाके वृक्ष पाये जाते हैं।

बाड़ाहाट या उत्तरकाशी (३००० फुट)—“इसको देशी लोग उत्तरकाशी हैं,”[1] लेकिन इस नामकरणका श्रेय गढ़वाली पंडोंको है, जो पहाड़में प्रयागों तीर्थोंकी ढेर लगा देना चाहते हैं। वाड़ाहाट टेहरीसे ४५ मीलपर गंगोत्रीके में भागीरथीके दाहिने किनारे कुछ समतलसी भूमिमें अवस्थित है। इसे (उत्तरी)काशी बनानेका पूरा प्रयत्न किया गया है। “पूर्व दक्षिणमें गंगा- प्रवाह उत्तरमें असी गंगा, पश्चिममें वरुणानदी।...इसके पूर्व केदारघाट, दक्षिण तरफ मणिकर्णिका परमपुनीत घाट है; मध्यमें विश्वे- श मंदिर है। गोपेश्वर, कालभैरव, परशुराम, दत्तात्रेय, जड़भरत और नी दुर्गाके ये प्राचीन मंदिर हैं।”[2]

बाड़ाहाटको नकली काशी बनानेसे उसका ऐतिहासिक महत्त्व कम नहीं क्योंकि यहाँका विशाल त्रिशूल सारे गढ़वाल-कुमाऊँमें सबसे पुरानी पुराकृति तथा उसका अभिलेख प्रायः सबसे पुराना अभिलेख है।[3] तीन पक्तियोंमें है। पहली पंक्तिके अक्षर कुछ छोटे तथा श्लोक शार्दूल- ड़ित” छन्दका है। दूसरीमें बड़े अक्षरोंमें उसी छन्दका एक श्लोक है।

---

[1] “गढ़वालका इतिहास”, पृष्ठ १२६

[2] वहीं

[3] इस अभिलेखके बारेमें देखें F. A. S. B. Vol. V., PP. 347, 485; Res. XI., P. 477

तीसरीमें वहुत वड़े-वड़े अक्षरोंमें "स्रग्धरा" है । पूरा लेख शुद्ध संस्कृ
साफ और सुंदर है ।

पाठ इस प्रकार है—

"ओं । आसीद्यः क्षितिपो गणेश्वर इति प्रख्यातकीर्त्तिर्न्नरैः,
चक्रे येन भवस्य वेश्म हिमवच्छृंगोच्छ्रतं दीप्तिमत्,
कृत्वाणुर्व्वनजाधिपस्वकृपणैः सामात्यभाग्यश्रियं,
स्मृत्वा शक्रसुहृत्त्वमुत्सुकमना यातः सुमेर्वालयं ॥ (१)
पुत्रस्तस्य महाभुजो विपुलदृक् पीनोन्नतोरस्थलः
रूपत्यागनयैरनंगधनदव्यासानतीत्योद्गतः,
नाम्ना श्रीगुह इत्युदारचरितः सद्धर्म्मधुर्यस्सतां
शक्ति शत्रुमनोरथप्रमथनीं शम्भोश्चकाराग्रतः ॥(२)
प्रातः प्रातर्म्मयूखैरुरुभिरविरलं शार्वरं ध्मान्तमन्ध–
म्नालुंचंश्चारुतारानिकरपरिकरोदारशारोदरत्वं,
स्वं विम्वं चित्रविम्वाम्वरतलतिलकं यावदर्को विधत्ते,
तावत्कीर्तिःसुकीतश्चिरमरिमथनस्यास्तु राज्ञः स्थिरेयं ।ठ। (३)"

अनुवाद—"प्रज्ञानुरागी 'गणेश्वर' नामक राजा अत्यंत उन्नत श्रीविश्वना मंदिर वनवाकर, मंत्रियों सहित अपनी राज्य-लक्ष्मीको अणु समझकर औ प्रियजनोंके वशमें देकर इन्द्रकी मित्रताकी यादमें उत्सुक हो, सुमेरु-मंदिर(या कैलास)को, चला गया ॥१॥

"राजा गणेश्वरके वाद उसके पुत्र श्रीगुहके हाथमें राज्य आया, अत्यन्त वलशाली, विशाल-नेत्र और दृढ़ वक्षःस्थलवाला था। वह सौं मन्मथसे, दानमें कुवेर से, नीति या शास्त्रोंमें वेदव्याससे वढ़ चढ़ कर वह धार्मिकोंका अगुआ और वड़ा उदार था। उसने ही भगवान्के इस शक्तिस्तम्भकी स्थापना की। उसे देखते ही शत्रु लोग डर जाते क्योंकि वह प्रतापी और सुंदर गुणवाला था ॥२॥

जव तक भगवान् सूर्य अपनी तरुण किरणोंसे गाढ़ान्धकारको नष्ट नक्षत्रोंकी चित्रचर्याको मिटाकर गगनफलकमें अपने विम्वरूपी तिलकको रहें, तव तक प्रतापी राजा गुहकी यह कीर्त्ति सुस्थिर रहे" ॥३॥

इसकी लिपि ईसाकी छठी-सातवीं सदीकी है, इसी लिपिमें गोपेश्वरके त्रिशू डंडेका लेख भी है। हाट पहाड़में वाजार नहीं वल्कि पुराने समयकी धानियोंको कहा जाता था, जैसे द्वारा हाट, तेलीहाट (वैजनाथ)। त्रिशूलके

जाता है, कि यह किसी भोटके राजाने बनवाया है, तथा यह भी कि कभी किसी भोट राजाकी राजधानी थी। वाड़ाकी राजधानी[1] (वाड़ा-)में वाड़ाका क्या अर्थ है, यह बतलाना मुश्किल है; किंतु वाड़ाहाटका गूगे (मानसरोवर)के राजाओंसे अवश्य रहा है। ग्यारहवीं सदीके लमें थोलिङ् गुम्वाके बनानेवाले येशे-ऽोद् (ज्ञान प्रभ)के पुत्र देवभट्टारक राजने यहाँ एक वड़ासा बुद्ध-मंदिर बनवाया था, जिसकी अतिसुन्दर बुद्ध मा आज भी दत्तात्रेयके नामसे यहाँ पुज रही है। मूर्तिके पादपीठपर ती भाषा और अक्षरोंमें लिखा है "ल्ह-व्चन्-नगरजइ थुव्-पा (देवभट्टारक राजके मुनि)।

त्रिशूलकी ऊपरी मोटाई १'.१५" और नीचे ८' ९" तथा ऊँचाई २६ है। यह नीचे पीतल और ऊपर लोहेका है। विश्वनाथका मंदिर, जिसके ने यह त्रिशूल है, पीछेका है। उसका जीर्णोद्धार महाराजा सुदर्शनशाहने ७ ई० (संवत् १९१४)में कराया था।

बिनसर (पट्टी-चौथान)——घने देवदारोंके जंगलके बीच शिवका मंदिर "जंगलमें पुराने जमानेके लोहेके छोटे-छोटे छुरे वगैरह मिलते हैं, पर इसे नहीं उठाता।"

बूढ़ाकेदार——भटवारी (गंगोत्री मार्गपर)से ३० मीलपर यह स्थान अवस्थित है।

वृद्धवदरी——वदरीनाथ मार्गकी गुलावकोटी चट्टीसे ४॥ और हेलङ् चट्टीसे मील आगे सड़कसे एक मील नीचे अनीमठका विष्णु-मंदिर ही वृद्धवदरी है।

भटवारी——टेहरीसे गंगोत्री-मार्गपर उत्तरकाशी (वाड़ाहाट)से १८ मीलपर चट्टी अवस्थित है। यहाँसे ऊपर कुछ हटकर पुरानी मूर्त्तियाँ हैं।

रवघाटी——(३१°.२'×७८°.५३')—जाट-गंगा (जाह्नवी) और भागीरथीके र यह स्थान काफी ऊँचाईपर अवस्थित है। नीचे पुल बन जानेसे सुगमता है, नहीं तो पहिले जाड़-गंगाकी धारासे ३५० फुट ऊपर २५० फुट लंबे हिलते पुलसे पार होना खड्गकी धारपर चलने जैसा मालूम होता था।

मध्यमेश्वर——गुप्तकाशीसे १८ मील उत्तर-पूर्व चौखंवा-शिखर (२३०००

---

[1] "यह स्थान पूर्वकालमें किसी राजाकी राजधानी थी।" उत्तर०, पृ० २१९

केदारखंडमें इसके बारेमें लिखा है——

"निक्षिप्ता यत्र पूर्वं हि संगरे देवता सुरैः।
अद्यापि दृश्यते तत्र शक्तिर्धातुमयी शुभाः॥" १४।८३

फुट)के नीचे यह मंदिर पंच केदारोंमें एक है। जाड़ेमें मंदिर वंद हो जाता उस समय महादेव-मूर्तिको ऊखीमठ लाते हैं। ऊखीमठके राजपूत अपनी प कन्याको मध्यमेश्वरकी देवचेली वना देते थे, जिन्हें मध्यमेश्वरकी रानी जाता था। मध्यमेश्वरका रास्ता कठिन होनेसे नीचेके यात्री वहाँ जा नहीं, पहाड़ी लोग भी वहुत कम जाते हैं। कहावत है "केदार न कमायो म समायो।" केदारनाथके जंगम (लिंगायत) ही यहाँ भी पूजा-सेवा करते हैं।

रमनी—मल्ली-दसोली पट्टीमें ग्वालदम और तपोवनके मार्गपर अव एक वड़ा गाँव है। गाँवसे डेढ़ मीलपर जंगलातका सुन्दर बंगला है। झील यहाँसे पगडंडीसे छ मीलपर है। अमेरिकन मिशनकी यहाँ एक शाखा

रुद्रप्रयाग (पुनाड)—पाँचों प्रयोगोंमें एक, यह अलकनंदा और मंदाकि संगमपर अवस्थित है। यहाँसे केदारनाथ और वदरीनाथके रास्ते अलग हैं। केदारनाथ यहाँसे ५६ मील है।

लैन्सडौन—तल्ला-सलाण पर्गनेकी मल्ला-सीला पट्टीमें कालो-डां ऊपर ५०००-६००० फुटकी ऊँचाईपर १८८७में स्थापित यह सैनिक-छा कोटद्वारासे २८ मील तथा मोटर सड़कसे संवंधित है। अंग्रेजोंने यह छा गोरखा और गढ़वाली सेनाके लिए वनाई थी। जंगलातके डिप्टी-कंसर्व कार्यालय यहीं है, और तहसीलदार और डिपुटी-कलेक्टर भी यहाँ रहते हैं।

लोहवा (३°.३'×७९°.२०')—पश्चिमी रामगंगाके वायें तटपर ग १४ और आदिवदरीसे ११ मीलपर अवस्थित है। लोहवाका गढ़ कुमाऊँ गढ़वालकी सीमापर किसी समय वड़ा सैनिक महत्त्व रखता था। यहाँ लोक विभागका एक डाकवंगला है। धुनारघाटकी चट्टी यहाँसे अधिक दूर नहीं जो कि वदरीनाथसे लौटनेके रास्तेपर है।

विष्णुप्रयाग—जोशीमठसे नीचे धौली और अलकनंदाके संगमपर अव यह पाँच प्रयागोंमें एक है। धौलीपर १४४ फुट लंवा झूलापुल है।

श्रीनगर (१७०६ फुट)—पट्टी कतलस्यूँ (पर्गना देवलढ़)में अलकनं वायें किनारेपर गढ़वालकी यह पुरानी राजधानी अवस्थित है। पँवार प्रथम उन्नायक राजा अजयपालने १५१७में इसे अपनी राजधानी व वदरीनाथ और केदारनाथके मार्ग यहाँसे जाते हैं। १८९४ ई०की गोहना नगरको वहुत क्षति पहुँची और पुराने मंदिरोंमें केवल कमलेश्वर वच पा

"श्रीनगर वहुत ही प्राचीन नगर है।...श्रीनगर शताब्दियों तक आ रहता है और शताब्दियोंतक उजाड़ वनके रूपमें रहता है।...केदारखंड

श्रीक्षेत्रके नामसे लिखा है। नगर...:सन् १५००से १८०३ ई० तक वंशीय राजाओंकी राजधानी रहा और १८०३ ई०से १८१५ ई० तक तोंकी...।...श्रीनगरमें अलकनंदा नदीके मध्यमें एक विशाल पवित्र पर श्रीजीका प्राकृतिक यंत्र है, उसीसे यह नगर कभी श्रीक्षेत्रके नामसे कभी रके नामसे उजाड़ और आवाद होता गया।...नगर १८९४ ई०में गौना-के टूट जानेसे...१५ दिनमें समूल नष्ट हो गया। अव उसीसे मिला हुआ तरफ पाँच फर्लांगपर नई वस्ती श्रीनगरके नामसे वसाई गई है। यह नगर चौपड़के वाजारकी तरह चौड़ी सड़कों और उनके दोनों ओर वृक्षोंकी से सुसज्जित किया गया है। इमारतें दोमंजिला पत्थरकी वनी हुई हैं। रमें व्राह्मण, राजपूत, गुसाई, अग्रवाल, जैन, सुनार और थोड़ेसे मुसल्मान हैं।...यहाँ सवसे अच्छी इमारत शफाखानेकी है, जो सदाव्रत-फण्डसे हजार रुपयेकी लागतसे वनी है। पुलिस-स्टेशन, तारघर, डाकघर, हाई वोर्डिंग हाउस, डाक वँगला आदि अनेक सरकारी इमारतें हैं।...नगरकी ओर आध मीलपर कमलेश्वरका विशाल भवन है।...यही मंदिर नगरसे ऊँची भूमिपर होनेसे नदीकी वाढ़से वँच रहा था। इस मंदिरका महंत गुसाईं सियोंमेंसे होता है। श्रीनगरसे गढ़वालका जिला-केंद्र पौड़ी ८ मीलपर है।"[1]

गढ़वाल राजाओंकी राजधानी होते समय श्रीनगर कला-कौशलपूर्ण समृद्ध था। अंग्रेजी शासन स्थापित होते ही गढ़वालका राजवंश टिहरीको आवाद चला गया और अंग्रेजोंने ठंडी जगह ढूँढते जाकर पौड़ीको आवाद किया। श्रीनगर शासकोंकी उपेक्षाका शिकार हुआ, तो भी वहाँके मूर्त्तिकार (ओड) चित्रकार अपनी कलाको वहुत पीछेतक पकड़े रहे।

विशाल सुगढ़ पत्थरोंसे जो राजप्रासाद और मंदिर वने थे, गोहनाकी वाढ़ने अवशेषोंको भी रहने नहीं दिया। अजयपालके महलोंको देखकर किसीने था—"महलके द्वार वहुत विशाल और भारी हैं। इनके वनानेमें अपरिमित गा होगा।"[2]

सकन्याला—पौड़ी-अल्मोड़ा सड़क पर पौड़ीसे २२ मील तथा कैन्यूरसे ८ पीछे यह छोटासा गाँव है। यहाँ डाक-वंगला है।

---

[1] "गढ़वालका इतिहास", पृष्ठ १११-१४

[2] "The doors are very massive and heavy and it st have immense labour to put them up"—Atkinson.

सकल्याना—टेहरी राज्यकी ७० वर्गमीलकी एक जागीर टेहरी पश्चिममें है।

सतोपंत—वदरीनाथसे १८ मील उत्तर-पश्चिम एक सरोवर और है। सरोवर तिनकोना है, जिसके तीनों किनारोंपर ब्रह्मा, विष्णु, महेश्व हैं। जूनसे सितंवर तक यात्रा हो सकती है, जिसमें दो दिन लगता है; ईंधन और सारा सामान वदरीनाथसे ले जाना पड़ता है। माणाके मारछा इस सरोवरको पवित्र मानते हैं, और अपने मुर्दोंकी अस्थियाँ इसीमें डालते वसुधारा सतोपंतके रास्तेपर है।

सलाण—अपेक्षाकृत मैदानी जमीनको सलाण कहते हैं, गढ़वालके सलाण, तल्ला-सलाण और गंगा-सलाण ऐसे ही पर्गने हैं।

(१) **गंगा-सलाण**—गंगाके किनारे है। इसीमें अजमीर, धंगू, दवरा लंगूर और उदयपुरके इलाके हैं। धंगू और उदयपुरकी लड़कियोंको भाटिये मोल लेकर व्याहते रहे हैं।

(२) **मल्ला-सलाण**—यह अल्मोड़ाके पश्चिममें है। बंगारस्यूं, इरयाकोट, खटली, सवली, तलाईके इलाके इसी पर्गनेमें हैं।

(३) **तल्ला-सलाण**—यह अल्मोड़ा जिला और गंगा-सलाणके बीचमें वदलपुर, विजलोट, वूंगी, पैनो, कोडिया और सीलाके इलाके इसमें हैं।

सल्ड महादेव—तल्ला-सलाण पर्गनेमें अपने मकरसंक्रांति और मेलोंके लिए प्रसिद्ध है।

हनुमानचट्टी—वदरीनाथसे ५ मील पहिले यह चट्टी है।

हरद्वार—सहारनपुर जिलेमें गंगाके दाहिने तटपर ऋषिकेशसे १४ मील यह प्रसिद्ध तीर्थ है। उत्तराखंडकी यात्रा यहाँसे आरंभ होती है। यहाँसे (मील) है—

वदरीनाथ	१८३	गंगोत्री	१८७
केदारनाथ	१५०	जमुनोत्री	१६३

मानसरोवर ३१०

हरसिल—गंगोत्रीसे पहिले ही यह चट्टी भागीरथीके दाहिने किनारे है।

हेलङ् (कुमार)चट्टी—वदरीनाथके रास्तेपर जोशीमठसे ८ मील यह वड़ी चट्टी है। यहाँ डाकघर है। इससे एक मील आगे सड़कसे आध मील चढ़ाईपर पैनखंडागढ़के अवशेष हैं।

अध्याय ९

यात्राओंकी तैयारी

§१. यात्रा-महात्म्य

किसी वर्धमान देशकी प्रगति केवल कृषि, उद्योगधन्धे, साहित्य-निर्माण, तिक और सैनिक बल आदिके एक-एक क्षेत्रमें ही सीमित नहीं रहती, बल्कि हुए राष्ट्रके मनसूबोंकी छाप जीवनके सभी पहलुओंपर दिखलाई पड़ती ैर-सपाटे, साहस-यात्रायें भी उसी जीवनके अंग हैं। पुराने समयमें, जब कि एक सबल और वर्धिष्णु शक्ति था, उसके साहसी पुत्र और पुत्रियाँ ाके कोने-कोनेमें पहुँचे थे। आज फिर इस क्षेत्रमें हमें अपनी हिम्मतको ाना है। देश-देशान्तरोंकी साहस-यात्रायें प्रत्येक व्यक्तिके करनेकी बात हैं। हिमालयमें ऐसे स्थान हैं, जहाँकी यात्रा कर अल्प समय और अपेक्षाकृत अल्प-वाले व्यक्ति भी अपनी उमंगोंको पूर्ण कर सकते हैं। दोर्जेलिङ्, कलिम्पोंङ्, , खरसान् अथवा अल्मोड़ा, रानीखेत, नैनीताल, मसूरी, चकरौता, शिमला, हिमालयके ऐसे ही आकर्षक स्थान हैं, जहाँ आदमी बड़ी आसानीसे रेल और द्वारा पहुँच सकता है। जो लोग कुछ और कष्टके लिए तैयार हैं, और जिन्हें यमें विश्वके अद्वितीय प्राकृतिक दृश्योंके देखनेका शौक है, वह कहीं घोड़ेसे कहीं पैदल और भी कितने ही मनोरम स्थानोंकी यात्रा कर सकते हैं। यात्राओंके लिए रास्तोंको बतलानेके पहिले आवश्यक है, कि हम यात्राकी ैयारीके संबंधमें कुछ सूचनायें पाठकोंके सामने रख दें।

§२. यात्रा

यात्रीके सामने पैसेका प्रश्न पहिले आता है। उसको मालूम होना चाहिये, यात्राके लिए कितने रुपयोंके साथ उसे प्रस्थान करना चाहिये। यात्रा हकी भी हो सकती है। कितने ही ऐसे भी यात्री हो सकते हैं, जो तीन-चार-टोलीमें आवश्यक चीजोंको अपनी पीठपर लादकर पैदल हिमालयके भिन्न-स्थानोंका चक्कर लगाना चाहते हैं। यदि पथ-प्रदर्शिका (गाइड्बुक) और

मानचित्र हाथमें हैं, तो उनका खर्च उतना ही होगा, जितना खानेकी चीजों हाँ, आवश्यक वस्त्रों और वर्तनोंपर कुछ और लगेगा। अपनी पीठपर लेकर चलनेवाले यात्रियोंके लिए यह सबसे आवश्यक है, कि उनके पास तथा कमसे-कम ही सामान हो। ऐसा व्यक्ति सौ रुपये मासिकमें अपनी सकता है। यदि दो-तीन आदमी मिलकर कम सामान किंतु कुछ अधिक साथ यात्रा करना चाहते हैं, तो वे सामानके लिए एक सम्मिलित रख सकते हैं। आजके महँगाईके दिनोंमें तीन रुपया प्रतिदिनसे कममें मिलना मुश्किल है और मिले भी तो उससे कम देना नहीं चाहिये, आजकल एक स्वस्थ-प्रकृति आदमीके खानेपर दो रुपये रोजसे कम नहीं आता। भारवाहक बोझा ही नहीं ढोयेगा, बल्कि वह साधरण खाना भी देगा। उसे या अलग लिए रसोइयेको आपके भोजनमेंसे भी कुछ मिलना वेहतर यही होगा, कि भारवाहक या नौकरका भोजन अपने ऊपर ले लिया और ऊपरसे डेढ़-दो रुपया दैनिक मजूरी बाँध दी जाये। इस प्रकार साधार भारवाहकपर दैनिक तीन-चार रुपयेतक खर्च होगा।

जो यात्री अधिक पैसा खर्च कर सकते हैं और अनावश्यक कष्ट उठानेके तैयार नहीं हैं, उनके खर्चके वारेमें हम पुरानी यात्राओं या पथप्रदर्शिकाओंमें आंकड़ोंसे आजके खर्चका निश्चय नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ मई १९ चार अंग्रेज यात्रियोंके दलने दार्जेलिङ्की ओर अपनी नौ दिनकी यात्रापर रुपया खर्च किये—अर्थात् प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन १७ रुपयेके करीब पड़ा, वँगले और मदिराका खर्च सम्मिलित नहीं था। उसे भी मिला देनेपर व्यक्ति २५ रुपये प्रतिदिनके करीव पड़ा, अर्थात् महीनेका ७५० रुपया। भी २५ रुपये रोजमें यात्रा आरामसे की जा सकती है, लेकिन जिस यात्राका वर्णन है, वह कई नौकरों-चाकरोंके साथ अपना तम्बू और सामान लेकर थी, खाने-पीनेपर भी वहुत अच्छी तरह खर्च किया गया था। आजकल तो यात्रा सौ रुपये रोजसे कममें नहीं हो सकती। एक पथप्रदर्शिकाने १९२१- में एक आदमीका २० रुपया प्रतिदिन खर्च वतलाया है। इन यात्राओंमें क्रम इस प्रकार था—

§३. नौकर

१. सरदार—यदि आपको ३, ४ भारवाहक, रसोइया और दूसरे भी रखने हैं, तो एक सरदारकी अवश्यकता पड़ेगी, जो सभी चीजोंकी

ल करेगा। यदि आप खुद देखभाल करना चाहते हैं, तो सरदारकी अवश्यकता हीं। सरदारपर भोजनके अतिरिक्त प्रतिदिन ४, ५ रुपयासे कम खर्च नहीं गा। ऐसे सरदार अल्मोड़ा, नैनीताल, मसूरी या श्रीनगरमें मिल सकते जिन्होंने यात्राओंमें यात्रियोंका साथ दिया है और जिनके पास पूर्व- त्रियोंके प्रशंसापत्र भी होते हैं । वह हिन्दी समझ लेते हैं और कितने ही -फूटी अंग्रेजी भी वोलते हैं।

२. रसोइया आदि—रसोइया खानेके अतिरिक्त दोसे तीन रुपयेमें जायेगा। वहुतसे स्थानोंके बंगलोंमें जमादार (भंगी) नहीं होते और क यात्रीके पास अपना भंगी न हो, उसे इन वंगलोंमें ठहरनेका अनुज्ञापत्र मिल सकता। भंगीके लिए भी खानेके अतिरिक्त डेढ़-दो रुपया रोज देनेकी श्यकता पड़ेगी।

३. भारवाहक—अंग्रेजोंकी यात्राओंमें एक व्यक्तिपर ५से १० भार- कोंकी अवश्यकता होती थी, यदि वह १० दिनसे अधिककी यात्रा नहीं होती। रोंके लिए भी आहारकी चीजें साथ ले जानी पड़ती हैं, इस लिए अधिक र होनेपर भारवाहकोंकी संख्या वढ़ानी पड़ेगी। चार यात्रियोंके लिए १५से भारवाहक चाहिये। घोड़ा ले जानेपर कहीं-कहीं उसके लिए दाना-चारा के लिए भी भारवाहककी अवश्यकता पड़ती है। यह भी याद रखना चाहिये, हाड़में ३० सेरका वोझ मजबूत आदमीका पूरा वोझ समझा जाता है। अतिरिक्त भारवाहकको कुछ सेरका अपना सामान ओढ़ना-विछोना आदि पड़ता है। वक्स या होल्डालमें सामानको रखते समय इस वातका ध्यान चाहिये, कि वोझ २५से ३० सेरके भीतर हो। यदि यात्रा वँगलों और राजपथोंमें हो रही हो, तो नौकरोंको ८ आना १२ आना और देना पड़ेगा। हजार फुटसे ऊपरकी ऊँचाईपर ले जानेके समय यदि यात्रा अधिक समयकी नौकरोंको ऊनी कम्वल या कोट भी देना चाहिये। वर्षासे अपने सामान- चानेके लिए सामान वाँधनेकी वरसाती चादरें और भारवाहकोंके उपयोगके वरसाती कोट साथ होनी चाहिए, नहीं तो आपका विस्तरा और दूसरे सामान जायेंगे। नौकरोंके लिए भोजन-सामग्री प्रतिदिन निम्न प्रकार अवश्यक —

चावल	१० छटाँक
आटा	४ "
दाल	२ "

घी	१/२ छटाँक
चाय	१ तोला
मसाला	१ ”
नमक	१ ”
चीनी या गुड़	१ ”

(४) **खच्चर**—श्रीनगरमें सामान ढोनेके लिए खच्चर भी मिल है। वह दो मनतक बोझा ले जाता है, लेकिन अच्छा होगा, यदि बोझ दो मनसे अधिक न हो। एक खच्चर ढाई भारवाहकके बराबर सामान ले जा है। सस्तीके जमानेमें खच्चरका भाड़ा डेढ़-दो रुपया रोज था, आजकल बारह आना मीलसे कम नहीं होगा।

§४. सवारी

अल्मोड़ा, नैनीताल, मसूरी, श्रीनगरमें सवारीके लिए किरायेके घोड़े जाते हैं। मसूरीमें लड़ाईसे पहले उनका किराया ३,४ रुपया प्रतिदिन जिसमें काठी (जीन) भी सम्मिलित थी, और साईस भी, किंतु आजकल सामग्रीका भाव तिगुनासे भी ज्यादा हो गया है; इसलिए घोड़ेका किराया आना प्रति मील हो गया है। घोड़ेको किराया करनेसे पहिले देख लेना —विशेषकर यदि यात्रा सप्ताहोंकी हो—कि वह भड़कनेवाला या अधिक तो नहीं है, उसकी पीठ कटी तो नहीं है। अच्छा यही है, कि घोड़ेको चढ़ाई इस्तेमाल किया जाये। कड़ी उतराईमें तो सवारी बिल्कुल नहीं करनी क्योंकि इससे घोड़ेकी पीठ कट जाती है और सवारको भी वह सुखकर नहीं होती। ढालुवाँ उतराईमें सवारी की जा सकती है। कितने ही घोड़े किनारे-किनारे ऐसी जगहसे चलते हैं, जहाँ कुछ ही अंगुलोंपर भयानक या खड्ड रहती है। अनभ्यस्त सवार ऐसे समय घबड़ा जाते हैं। अवश्यकता नहीं है। घोड़े खुद खतरेको समझते हैं। उनपर विश्वास चाहिये। पुलों, विशेषकर झूलेके पुलोंपर अच्छा है, एक-एक करके पार जाय। घोड़ेकी सवारी न कर सकनेवाले यात्रियोंके लिए पहाड़में डंडी जाती है, जिसमें छ आदमी लगते हैं। उनकी मजूरी भारवाहकके समान है। डंडी रुपये डेढ़ रुपये रोजपर किरायेमें मिल सकती है। रिक्साके अधिकांश पैदल सड़कें अनुपयुक्त हैं। बच्चों या हल्के आदमियोंके लिए (डोका) भी मिल सकती है, जिसे एक भारवाहक अपनी पीठपर ले जाता

§५. वस्त्र-परिधान

यहाँकी यात्राओंमें कितनी ही वार ऐसे स्थानोंमें जाना होगा, जहाँ मई-नमें भी उत्तरी भारतकी दिसंवर-जनवरीकी सर्दी रहती है। हजार फुटसे की उपत्यकायें गर्मियोंमें दुःसह होती हैं, ऊपरके सर्द स्थानोंमें सप्ताह-दो-ाह बिताकर लौटे यात्रियोंके लिए तो और भी। जिन्हें नैनीताल, भवाली, मोड़ा, श्रीनगर, मसूरी तक ही रहना है, उनका काम साधारण गरम कपड़ेसे जायेगा, किंतु अधिक ऊँचाईमें जानेके लिए अच्छे कपड़ोंका होना आवश्यक है। रीनाथ, केदारनाथ तक ही जानेवालोंके लिए अधिक कपड़े नहीं बाँधने चाहिये, ोंकि वहाँ बदरीनाथ-केदारनाथ हीमें सर्दी है, जहाँ पंडोंसे या भाड़ेपर ओढ़ने-ोने मिल जाते हैं। सर्द स्थानोंमें—

१. पुरुषोंके लिये—

ट दो जोड़ा (एक काँटीदार)		मंकी केप	१
ी मोजा दो जोड़ा (मोटा ऊनी)		मफलर	१
ीपर या चप्पल	१ जोड़ा	चमड़ेका दस्ताना	१ जोड़ा
ी ब्रीचेस	२	बरसाती कोट	१
िया	४	स्वेटर	१
यान	४	ड्रेसिंगगौन या ओवरकोट	१
ी सूट	२	रंगीन चश्मा	१
ीज या कुर्ता	४	तौलिया	३
ी मोजा	६ जोड़ा	थर्मस	१
-पोशाक या लुंगी	२	पानी बोतल	१
ी	१ जोड़ा	स्टोव	१
ट टोप	१	टार्च	१
		लालटेन	१

२. महिलाओंके लिये—

	२ जोड़ा	स्लीपर या चप्पल	१ जोड़ा
ी मोजा	२ ”	थर्मस	१
ी मोजा	६ ”	रात्रि-पोशाक	२
ड़ी	४	ब्लाउज	४

पेटीकोट	४	ब्रीचेस या पाजामा (ऊनी)	१
बनियान	४	अंडरवियर	२
ऊनीकोट	२	ड्रेसिंग गौन या ओवरकोट	१
मफलर	१	मंकी केप	१
ऊनी दस्ताना	१ जोड़ा	चमड़ेका दस्ताना	१ जोड़ा
तौलिया	३		

§६. आवश्यक वस्तुयें

१. बिस्तर आदि—

कपड़ा धोनेके लिए साबुन पासमें रहे, तो शहरोंसे दूर जानेपर धुलाई कर सकते हैं। बिस्तरेमें निम्न चीजें रहनी चाहिये—

कंबल	३ या ४
चादरें	२
तकिया	१
तकिया-खोल	२
मसहरी	१

२. दूसरी वस्तुयें—

पुस्तकें
नक्शे
सुतली १० हाथ
सूआ २
हथौड़ी
टिनबंद दूध
टिनबंद मांस
फौंटन स्याही
टिनबंद मक्खन
टिनबंद तरकारी
पानी-बोतल

डोरी १० हाथ
छुरी
कैंची
चाय (टिन)
न टूटनेवाली प्लेट
" प्याला
केतली
सूई २

आलपीन
काँटी
स्क्रूड्राइवर
हजामतका सामान
बिस्कुट
सूतगोली २
नहानेका साबुन ४
केमरा
चीनी
सूखे फल

फिल्म
रसोईके बर्तन
चम्मच
लेमन जूस

आटा, चावल, सूखेफल आदि चीजें मोटे कपड़ेके थैलोंमें रखी जा सक हैं, उसी तरह मसाला, हल्दी आदिको छोटी थैलियोंमें रखा जा सकता है।

ा-मार्गको छोड़ वहुतसे स्थानोंपर मुर्गी, अंडा और दूध मिल जाता है। न हाटके दिनोंको छोड़ कभी ही कभी मिलता है। मौसिमपर साग मिलता किंतु आलू, प्याज सदा सुलभ हैं। नैनीताल, अल्मोड़ा, मसूरीमें वहुत-सी नें हैं, जहाँसे यात्रोपयोगी खाद्य-सामग्री तथा दूसरी चीजें मिल सकती ।

३. पैकिंग——

२४ इंच लंबे, १४ इंच चौड़े तथा १४ इंच ऊँचे लकड़ीके साधारण वाले वक्स चीजोंको पैक करनेके लिए अच्छे होते हैं। उन्हें घोड़ों भारवाहकों दोनोंपर आसानीसे ले जाया जा सकता है। खच्चरोंपर लोहेके के टूटनेका डर रहता है, और चमड़ेके सूटकेसोंकी तो गत वन जाती है। ड़े या फाइवरके सूटकेस भारवाहकोंकी पीठपर भी मुश्किलसे सुरक्षित रह हैं। पानीसे वचनेके लिए मोमजामा या चमड़ेमढ़े वक्स होने चाहिये। वक्सोंमें चार आदमियोंके लिए दो सप्ताहकी आहार-सामग्री आ सकती कुछ स्थानोंमें दीमक वहुत लगती है, वहाँ वक्सोंको डाकवँगलेकी मेज या ओंपर रखना चाहिये अथवा पायोंके नीचे केरासिनमें भिगोया कागज या लत्ता देना चाहिये।

४. भेंट-इनामकी चीजें——

कई जगह पहाड़में सिगरेट पीनेका वहुत रवाज है, पुरुष ही नहीं स्त्रियाँ भी पान करती हैं। हिमालयके अंतिम गाँवोंमें भी सूखी तंवाकूको मामूली पर लपेटकर पीते नर-नारियोंको आप देखेंगे, फिर ऐसी जगह सिगरेटका म्य वढ़ जावे, तो कोई आश्चर्य नहीं। इसलिए भेंट या वखशीशके लिए ट साथमें रख लेना अच्छा है। वच्चोंमें वाँटनेके लिए लेमनजूस, रेवड़ी मिश्रीके टुकड़े अच्छे हैं।

५. पड़ावोंपरके खर्च——

ार आदमियोंके लिए प्रतिदिन निम्न मात्रामें स्थानीय चीजोंकी अवश्य- होगी। हाँ, यदि किसीको दूधके साथ विशेष प्रेम न हो तव।——

दूध	१ सेर
मुर्ग या चूजे	१ या २
अंडे	१ दर्जन
इंधन	आध मन
केरासिन	आधा वोतल

चौकीदारको बखशीश	१ रुपया

६. दो सप्ताहका खाद्य—

चार आदमियोंको १४ दिनके लिए भारतीय खाद्य-सामग्री निम्न मा आवश्यक होगी —

आटा	२० सेर	चाय	२
सूजी	४ "	मांस (टिन)	२½
वेसन	४ "	विस्कुट (मीठा)	१
चावल	८ "	" (सादा)	१
दाल मूंग, मसूर या उड़द	७ "	मुरब्बा	१
सूखे मेवे	२ "	अचार	१
मकरोनी या सेवइयाँ	½ "	लड्डू-पेड़ा	१
पापड़	½ "	मठरी (मीठी)	१
वड़ी	१ "	मठरी (नमकीन)	१
घी	४ "	सरसो (चूर्ण)	½
मक्खन	२ "	काली (मिर्चचूर्ण)	½
पनीर	२ "	लाल मिर्च (चूर्ण)	१
दलदा या तेल	२½ "	हल्दी	½
चीनी	८ "	मसाला (चूर्ण)	½

चार आदमियोंके लिए युरोपीय खाद्य-सामग्री निम्न मात्रामें आवश्यक हों

चाय	२ पौंड	कोकोजम या दलदा	२ सेर
काफी	२ "	पनीर	२ सेर
क्वेकरओट	३ टिन	मुरब्बा (जाम)	३ टिन (सवाप
मक्खन	ढाई सेर	मर्मलाद	४ " "
घी	१ "	आटा	२ सेर
चीनी	५ "	नमक	पाव भर
मांस	ढाई सेर	सरसों (चूर्ण)	१ छटाँक
मीठा विस्कुट	१ सेर (टिन)	काली मिर्च	½ "
सादा विस्कुट	१ " "	मसाला (चूर्ण)	१ पाव
केक	२ डेढ़ सेरकी	वेसन	आध पाव
सूखे मेवे	२ सेर	चावल	आध सेर
सूजी	आध सेर	मकरोनी या सेवइयाँ	आध पाव

बीमारी, चोट या वर्फकी सर्दी लग जानेपर उपचारार्थ एक बोतल बरांडी लेनी चाहिये, जो स्प्रिटके अभावमें स्टोव जलानेका भी काम देगी।

७. एक दिनका खाद्य—

भारतीय भोजन करनेवालेके लिए प्रतिदिनकी आहार-सामग्री निम्न प्रकार गी—

वल, आटा	आधसेर	मुरब्बा	१ छटाँक
ल	डेढ़ छटाँक	अचार	२ तोला
लू, सागभाजी	४ "	सूखा मेवा	३ छटाँक
न या मिठाई	४ "	दूध	१ सेर
	१ "'	नमक	१ तोला
क्खन	आध "	हल्दी-मसाला	आध छटाँक
र	आध "		
य, काफी	२ तोला		
नी	२ छटाँक		

और युरोपीय भोजन करनेवाले व्यक्तिके लिए—

	आध छटाँक	आलू	३ छटाँक
	२ तोला	चीनी	डेढ़ छटाँक
मांस	२ छटाँक	जाम, मुरब्बा	१ छटाँक
क्खन	आध छटाँक	मर्मलाद	१ छटाँक
र	आध छटाँक	सूखा मेवा	३ छटाँक
करओट	एक चौथाई तोला	मांस	पाव भर
रोटी	२ या ३ पाव	दूध	१ सेर
स्कुट	१ पाव		

८. पावरोटी—

सप्ताह-दो-सप्ताह टिकनेवाली पावरोटियाँ मसूरी या अल्मोड़ा की किसी अच्छी नसे मिल सकती हैं, नहीं तो दिल्लीकी किसी अच्छी रोटीवाली कंपनीसे मँगा ा चाहिये। पावरोटियोंको तेल-कागजमें लपेटकर हल्के काठके बक्सोंमें रखना हिये। देरतककी यात्रा होनेपर चपातियाँ या परावठे ही यात्राके लिए अच्छे होते हैं।

९. लालटेन—

सभी बँगलोंमें टेबुललेम्प होता है, किंतु आजकल केरासिन सुलभ नहीं है। च्छा है, दो गैलनवाले पेट्रोल टिनमें मिट्टीका तेल भरवाकर साथ ले लिया

जाये, वह चार आदमियोंको दो सप्ताहके लिए पर्याप्त होगा। स्टोव, बैट टार्चके अतिरिक्त एक लालटेन और कुछ दर्जन मोमबत्तियाँ भी साथमें चाहियें। ६-६ मोमबत्तियोंके ३ पैकेट दो सप्ताहके लिए पर्याप्त होंगे।

१०. पेय—निचली उपत्यकाओंमें उवला पानी पीना चाहिये। शाम उवालकर पानी बोतलमें डाल लेनेपर वह सवेरे ठंडा हो जाता है, और पीने अरुचिकर नहीं प्रतीत होता। तीन-साढ़े-तीन हजारसे ऊपरके स्थानमें नदी चश्मेंका ताजा पानी स्वादिष्ट और स्वास्थ्यके लिए अहानिकर होता है। पहा कहीं-कहीं मंडुवेकी कच्ची शराब बनती है, जो हल्की होती है। इसे बाँसके पो दिया और नलीसे सुड़क कर पिया जाता है।

११. मनीआर्डर, चिट्ठियाँ—गढ़वालके डाकघरोंकी सूची अन्यत्र दी है, जहाँ मनीआर्डर आदि मँगाया जा सकता है। पहिलेसे ही बात कर रखने व्यापारी लोगोंकी कोठियोंपर चेक भुनाया जा सकता है। पासपोर्ट पास रहने डाकघरोंमें मनीआर्डर मिलनेमें तरद्दुद नहीं होता। सौ या अधिक नोटों भुनाव दूरके स्थानोंमें मिलनेमें कुछ कठिनाई होती है, इसलिए दस या क नोट साथमें हों तो अच्छा है।

§७. यात्रामें

बंगला छोड़नेके पहिले उसकी सफाई और व्यवस्थितिको देख लेना चाहि तथा टूटी-फूटी चीजोंका दाम तथा बंगलेका शुल्क दे रजिस्टरपर हस्ताक्षर देना चाहिये। भारवाहकोंमेंसे कुछको जल्दी कराके आगे भेजनेसे कोई नहीं होता, क्योंकि रास्तेमें वह एक दूसरेके साथ बैठते-उठते ही आगे चलते हैं साईस और रसोइएको मालिकके साथ बंगला छोड़ना चाहिये। यदि रसोइए मध्याह्न-भोजन साथ नहीं ले चलना है, तो उसे भी आगे भेजा जा सकता है किंतु ऐसी दशामें खानेकी कुछ चीजें अपने घोड़ेपर रख लेनी चाहिये। पानी बोतल साईसके गलेमें रखनी चाहिये। यदि तिब्बती ढंगसे टट्टू और जीन चलना मिले, तो घोड़ेकी जीनपर दोनों तरफ लटकते थैले(ताडू)में १०- सेर सामान रखा जा सकता है। उसमें या साईसके साथ चायकी केटली, टूटनेवाले प्याले भी रखे जा सकते हैं, अथवा इस तरद्दुदसे बचनेके लिए चायको थरमसमें ले सकते हैं। साधारण तौरसे देखते-भालते कुछ फोटो स्केच लेते आप घंटेमें दो मील चल सकते हैं। इस प्रकार नौ बजेसे डेढ़ दो तक ९-१० मील (एक पड़ाव) चलकर अगले बंगलेपर मध्याह्न-भोजन

हैं, अन्यथा रास्तेके किसी सुन्दर स्थानमें उसके लिए ठहर सकते हैं। डवल करनी हो, तो सवेरे ८ बजे चल देना चाहिये। अगले पड़ावके बंगलेपर अथवा जगह मध्याह्न भोजनके लिए एक बजे एक घंटा विश्राम कर आप शाम ठहरनेके डाकबंगलेपर पहुँच सकते हैं। इसके लिए भारवाहकों और नौकरों-ना वेतन देना होगा, और रास्तेके ठहरनेके बंगलेके चौकीदारको भी कुछ शीश देनी पड़ेगी। डवल मार्च करना पहिले ही दिनसे शुरू नहीं करना चाहिये, लिए आदमियों और जानवरोंको थोड़े अभ्यासकी अवश्यकता होती है। -निवासके स्थानमें आनेपर पहिला काम है चायपानी। आमतौरसे घोड़ेके घोड़ेके साथ नहीं जाते, इसलिए पर्यटकको चाहिये, कि वह घोड़ेके चारेकी ओर भी ध्यान रखे। यह मानवोचित ही नहीं, बल्कि स्वार्थोचित क्योंकि घोड़ेके दुर्बल या घायल हो जानेपर यात्राको जारी रखना कठिन जाता है।

§८. रोगादि

आठ दस हजारसे ऊपरकी ऊँचाइयोंपर कड़ी सर्दी या पतले वायुमंडलकी धूपके कारण नरम चमड़ेवाले व्यक्तियोंका चमड़ा जल उठता है। इसके "पोंडस् क्रीम" जैसी क्रीम या वेस्लीन लगा लेनी चाहिये। यदि ऐसे स्थानों-जाते समय पहिले हीसे वेस्लीन या क्रीम शरीरके खुले भागोंपर मल ली जाये, चमड़ा नहीं जलता। ऊँची चढ़ाइयों, विशेषकर बड़ी-बड़ी जोतों)को पार कर आनेपर चेहरा तथा दूसरे खुले अंगोंके चमड़ेका रंग बदल है, गोरा रंग ताम्रवर्ण और पक्का रंग काला हो जाता है। इससे रक्षाके तिब्बती महिलायें मुँहपर कत्थेका लेप कर लेती हैं, और ऊपरसे सारे मुँहको ती हैं। वेस्लीन या कोल्ड-क्रीम लगाकर यदि चेहरेको गुलूबंद या मंकीकेपसे तरह ढाँक दिया जाये, तथा आँखोंपर रंगीन चश्मा लगा रखा जाये, तो रंग-सर नहीं पड़ता। ओठोंको फटनेसे बचानेके लिए कपूरी क्रीम या ग्लेसियर लेप अच्छा होगा। जोतोंको पार करनेसे पहिली रातको कोल्ड क्रीम र सो जाना चाहिये और सवेरे चेहरे को धोना नहीं चाहिये। यदि इसके मंकी-कैपसे मुँहको अच्छी तरह ढँककर जोत पार की जाये, तो चमड़ेके होने तथा रंग बदलनेका डर नहीं रहता। जाड़े या असाधारण ठंडके हाथ या पैर जैसे किसी अंगके खुले रहनेपर उसके हिम-जड़ हो जानेका भय है। ऐसे समय विशेष सावधानी नहीं रखनेपर अनर्थ हो सकता है। ऐसी

नौबत जाड़ों हीमें आ सकती है, जव कि पर्याप्त गरम कपड़ेसे न ढँकनेके हाथ या पैरका पंजा जम जाता है। यदि ऐसा हो जाय, तो आदमीको नहीं चाहिये। यदि हृदय और शरीरके अन्य अंगोंमें गरमी है, तो वह धीरे हिमीभूत अंगमें भी पहुँच जायेगी, किंतु आदमीने यदि उसको आगमें सक तो हिमीभूत अंगका सर्वनाश समझिये। सेंकनेपर पहिले एक तीव्र उठेगी, फिर शान्ति। कुछ सप्ताहोंमें अँगुलियाँ सूखकर लकड़ी हो जायेंगी, हाथमें लकड़ी जोड़कर घूमनेकी जगह आप वढ़े नखोंकी भाँति उन्हें काट ही पसन्द करेंगे। पहाड़की उतराईमें भलामानुस जूता भी काटने लगता इसलिए परीक्षित जूतेको ही इस्तेमाल करना चाहिये। भारी सर्दी या वर्फ तो कान्वेस जूता अच्छा रहेगा, किंतु चढ़ाईमें एड़ियाँ और उतराईमें पजों चलना जूतेकी आयुको वहुत कम कर देता है, इसका भी ध्यान रखना चाहि जहाँ कटनेका डर हो, वहाँ समय-समयपर पैरको नमक-पानीमें रखकर कर लेना चाहिये। चलते समय प्रतिदिन मोजेमें फिटकरीका चूर्ण डाल भी सहायक होता है। यदि छाले पड़ जायें, तो परिशोधित सूईसे फोड़कर निकाल देना चाहिए, और वहाँ वोरिक चूर्ण या "सिवाज़ोल" मलहम औषधित रुई लगा लेनी चाहिये। छालोंसे वहुत सावधान रहना चाहि घावके उपचारके लिए "सिवाज़ोल", टिंकचर या टिंकचर-वेंज़ीन साथमें चाहिये। मधुमेहके रोगियोंको तो "रिपु रुज पावक पाप, इनहिं न गनिये करि"की पंक्ति सदा याद रखनी चाहिये। टिंकचर और सिवाज़ोलके उन्हें पेनिसिलीन भी इन्जेक्शनके सामानके साथ पास रखना चाहिये। पेनि लगानेमें सुईको स्प्रिटसे नहीं वल्कि पानीमें उवालकर निष्क्रमित करना चा

चारसे आठ हजार फुट ऊँचे स्थानोंमें वर्षा-वूँदीके समय वृक्षोंके नी घासमें छोटी-वड़ी जोंकें भी एक वाधा हैं। आदमीकी आहट पाते ही यह जंतु सहस्रोंकी संख्यामें पत्तोंके भीतरसे अपनी सूँड़ निकालकर चिपकनेकी रहते हैं। जोंकें जूतेके भीतर चली जाती हैं। कसकर वँधी पट्टीके भीतर उनके वशका नहीं है। जोकोंके लगनेसे पीड़ा नहीं होती, किंतु वह खून निर्वल तो अवश्य करती हैं। पेट भर पीकर जव मोटी हो गिर जाती हैं, इनके मुँहसे निकलकर लगे एक रसायनिक तत्त्वके कारण खून कुछ देरतक रुकता, फिर अपने आप वंद हो जाता है। हाँ, खून न जमनेवाले आदमीके यह वुरा है। इसके लिए अढेसिव या झिल्ली जैसे पतले कागजकी एक-दो को घावपर साट देना चाहिये। जोंकोंको खींचकर नहीं निकालना

तो घाव हो जानेका डर रहता है। नमक उनका भारी शत्रु है। उसके स्पर्श से वह गिर पड़ती हैं। नमक न होनेपर जलते सिगरेट या दियासलाईकी ीका स्पर्श उनके लिए काफी है। तंबाकूका पानी या नीबूका रस लगा देनेपर नहीं चिपकतीं। निचले स्थानोंमें मलेरियाके मच्छर और मक्खियोंसे के लिए मसहरी जरूर साथ रखनी चाहिये। ऊपरी भागोंमें खटमल या नींद हराम कर देते हैं। सौभाग्यसे अधिकांश डाकबँगले इनसे मुक्त भेड़-बकरियोंके रहनेके स्थानोंमें पिस्सुओंका जोर रहता है, इसलिए शिविर वक्त उनका ध्यान रखना चाहिये। फ्लिट इनकी अच्छी दवा है, उसकी ही पिचकारियाँ दीवार, चारपाई आदिपर मार लेनी चाहिये।

§९. कलाकी वस्तुयें

अल्मोड़ा, गढ़वाल, टेहरीकी सीमापर तिब्बत है, जहाँ भारतीय और चीनी अविच्छिन्न रूपसे अबतक चली आयी है। भोटान्तके लोगोंका तिब्बतसे और कला विषयक घनिष्ट संबंध है। उनके पास कितनी ही कलापूर्ण वस्तुयें आती रहती हैं। यहाँसे प्राप्य कलाकी चीजें हैं—

चित्रपट
घंटा
अस्थिभूषण
पुस्तक-पट्टिका
जूता (शोम्पा)
काष्ठ-चषक (फोरवा)
धातुडब्बा
टोपी (श-मो)
प्रतिमा-पेटिका
घंटापात्र (रोल्-मा)
चाय प्याला
चाय बैठकी
वज्र (दोर्जे)

शूल (फुरबा)
डमरू (कपालका)
कुंडल (फीरोजेका)
मूर्तियाँ
मसीपात्र
धूपदानी
खुकरी
मानी (जपचक्र)
चौकी (चोक्-ची)
चायपात्र
चकमक (चक्-ना)
दुंदुभी
पाइप (तंबाकूका)

§१०. फोटोग्राफी

फोटो खींचनेवालोंको अधिक ऊँचाइयोंपर कुछ विशेष ध्यान देनेकी अवश्य- है; क्योंकि वहाँ नील तथा अति-बैंगनी किरणोंकी अधिकतासे प्रकाश प्रखर

होता है, और अधिक एक्सपोजर हो जानेका डर रहता है। सफेद वर्फका फोटो फिल्टरके विना लेना कठिन है। वैसे भी फोटोके लिए इन पहाड़ों फिल्टरकी अवश्यकता होती है। कोडकके पाससे अच्छे फिल्टर मिलते फिल्मोंमें वेरीक्रोम अधिक उपयुक्त होते हैं। अच्छे परिणामके लिए कुछ फि को अलग-अलग एक्सपोजर-समय देकर देख लेना चाहिये।

§११. तीर्थयात्रीके लिये

गढ़वालकी यात्राओंमें हिमालयके दूसरे स्थानोंकी यात्राओंके और तो आ र्पण मौजूद ही हैं, साथ ही मानसरोवरके समीप होने एवं उसके चार रास्ते जानेके कारण भी यहाँकी यात्रायें अपना विशेष महत्त्व रखती हैं। जमुनो गंगोत्री, केदार, वदरीकी यात्रायें तो पिछले २००० हजार वर्षोंसे भारतके भिन्न-भि भागोंके लोगोंको अपनी ओर खींचती रही हैं। पिछले सौ सालोंसे सड़कों पुलोंके अच्छे इन्तजाम तथा जगह-जगहकी टिकानों-चट्टियोंके वन जानेके का अव वहाँ हर साल वड़ी भारी संख्यामें यात्री जाते हैं। मानसरोवरकी यात्र सामान अपने साथ ले जाना जरूरी है। भारतकी सीमा पार होते ही च और दूकानोंका अभाव हो जाता है। कितनी ही जगह तो टिकनेके लिए भी नहीं मिलते और आदमीको निर्जन और ठंडे स्थानोंमें टिकना पड़ता इसलिए वहाँकी यात्रामें खाना, कपड़ा सवका इन्तजाम करके जाना ही आ हैं। जमुनोत्री, गंगोत्री और केदार, वदरीकी यात्रामें लोग व्यर्थ ही बहु बोझा उठाकर जाते हैं। वहाँ कहीं-कहीं तो मील-मीलपर ही चट्टियाँ हैं, आटा, दाल, चावल, आलू, घी, मसाला जैसी साधारण खानेकी चीजें आसा मिल जाती हैं। इसलिए जिनको खरीद करके खाना है, उन्हें खानेकी साम सामग्रीको लेकर चलना वेकार है। हाँ, विशेष खानेकी चीजोंको साथ ले जा हैं। चट्टियोंमें रहनेका स्थान वहुत साफ रहता है। दिक्कत यदि होती है यात्राके समय मक्खियोंकी ही, यदि डी० डी० टी०का प्रयोग नहीं किया रहता। इधर कुछ सालोंसे सरकारकी ओरसे डी० डी० टी० छिड़कनेका होता है, यद्यपि कभी-कभी वह काफी देरसे किया जाता है। सर्दीके डरके लोग बोझका वोझ कपड़ा साथमें ले जाते हैं। लेकिन इस सारी यात्रामें जमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और वदरीनाथ ये चार ही स्थान ऐसे हैं, सर्द कहा जा सकता है और जहाँपर दिनमें गरम पोशाक और रातको काफी क की अवश्यकता होती है। लेकिन इन चारों जगहोंमें यदि आपके पंडे हैं, तो

ने-बिछौनेका इन्तिजाम कर देंगे, कालीकमली धर्मशालामें भी कपड़ा मिल ता है और केदारनाथ-वदरीनाथमें तो सस्ते किरायेपर जितना चाहें उतना ड़ा ले सकते हैं। इसलिए सर्दीके मारे वहुतसा कपड़ा पीठपर ढोना या भरियाकी पर लादकर चलना ठीक नहीं है। एक और वातका ख्याल रखना चाहिये। योंकी असावधानी तथा लोगोंके सफाईकी ओर ध्यान न देनेसे पहिले हैजा बीमारियाँ हो जाया करती थीं, जिनकी रोक-थामके लिए सरकारकी ओरसे ध्यान दिया जाता है, और अव शायद ही कभी उनको उभड़ते देखा जाता है। में पाखाने उठानेवाले बहुत कम ही मिलते हैं, इसलिए जमादार विजनौर नीचेके दूसरे जिलोंसे काफी संख्यामें यात्राके समय वुला लिये जाते हैं, जिससे में गंदगी नहीं फैलने पाती। हमारे देशके यात्री स्वयं भी सफाईकी ओर ना ध्यान देना चाहिये, उतना नहीं देते, विशेषकर पाखाना-पेशाव करनेके में बहुत वेपरवाही वर्तते हैं। छूतकी बीमारियोंको रोकनेके लिए मुख्य-स्थानोंपर हैजेका टीका देनेके लिए डाक्टर और कंपौन्डर तैयार रहते हैं, फ्त टीका देते हैं। टीका देनेपर किसी किसीको बुखार आ जाता है, जिससे में थोड़ासा विघ्न हो सकता है। अच्छा है, यात्री घर छोड़नेसे पहिले ही का टीका लगवा लें और अधिकार-प्राप्त डाक्टरसे उसका प्रमाणपत्र लेना न । प्रमाणपत्र दिखला देनेपर फिर टीका लगवानेकी जरूरत नहीं पड़ती।

अध्याय १०

यात्रायें

वैसे तो स्थानीय सड़कों या पगडंडियोंसे गढ़वालके और कितने ही द स्थानोंकी यात्रा की जा सकती है, किंतु यहाँ हम मुख्य-मुख्य यात्राओंका ही वि देते हैं :

§१. तीर्थयात्रायें

१. ऋषिकेश—जमुनोत्री

(१२५ मील, ५ दिन)

		उन्नतांश	दूरी (मील)	विशेष
मोटर	ऋषिकेश	११०६	०	डा. ता., डाव,
	नरेन्द्रनगर	४०००	१०	डा. ता., डाव.,
	टेहरी	२५२६	४१	डा. ता., डाव.,
	सिरैं		५	
	भल्डियाना		६	डा.
	छाम		५	
	नगुण		५	
	१. धरासू		५	डा.
	कल्याणी		४	
	गेऊला		५	
	२. सिलक्यारी		५	
	राडीधार		५	
	डडालगाउँ		२	
	सिमली		२	
	३. गंगाणी		२	

जमुनापट्टी	६
ओजरा	६
४. डडोटी	२
रानागाउँ	२
हनुमानचट्टी	२
खरसाली	४
५. जमुनोत्री	४

२. ऋषिकेश–जमुनोत्री–गंगोत्री–केदारनाथ–बदरीनाथ

(६१५ मील. ६४ दिन)

मोटर	ऋषिकेश	११०६ फुट	०	डा.[1] ता. डाव., अस्प.
	नरेन्द्रनगर	४०००	१०	डा. ता., डाव., अस्प.
	टेहरी	२५२६	४१	डा. ता., डाव., अस्प.
	सिरैं		५	
	भल्डियाना		६	डा.
	छाम		५	
	नगुण		५	
	१. धरासू		५	डा.
	कल्याणी		४	
	गेऊला		५	
	२. सिलक्यारी		५	
	राडीधार		५	
	डडालगाउँ		२	
	सिमली		२	
	३. गंगाणी		२	
	जमुना चट्टी		३	
	ओजरी		१	
	४. डडोटी		२	
	रानागाऊं		२	

---

[1] डा०—डाकघर, ता०—तारघर, डाव०—डाकबंगला, अस्प०—अस्पताल ।

२४

हनुमान चट्टी		२	
खरसाली		४	
५. जमुनोत्री	१००००	४	
६. सिमली		२५	यहाँतक उसी रास्ते लौ
सिंगोट		७॥	
नाकोरी		३॥	
७. उत्तरकाशी (बाड़ा-हाट)	३०००	६	डा. अस्प.
गंगोरी		३	
नैताला		३	
८. मनेरी	४३८०	४	
कुम्हाल्टी		४	
मल्ला-चट्टी	४८५०	२	
९. भटवाड़ी		२	
भुक्की		६	
१०. गंगनानी		३	डा.
लोहारीनाग		४	
११. सुक्खी		५	
झाला		३	
हरसिल	८१००	२	डा.
१२. धराली		२॥	
जांगला		४	
भैरोघाटी		२॥	
१३. गगोत्री	१०३००	६॥	डा.
१४. गोमुख		१८	
१५. गंगोत्री		१८	
१९. मल्लाचट्टी		४०	पहिले रास्ते लौटना
सौराकी गाड		३	
फूयालू		३	
छूणाचट्टी		३	
२०. वैलक		४	

	पगराणा		५	
	झाला		४	
	अगूडा		३	
२१.	बूढ़ाकेदार	४३८०	२	
	भैरवचट्टी		६॥	
२२.	भोटचट्टी		३	
	धुत्तू		९	
२३.	दुफन्दा		६	
	पँवाली	११३६४	३	
२४.	मग्गूको मांडा		९	
	तिरजुगीनारायण		५	डा.
	सोमद्वारा		३।	
२५.	गौरीकुंड	६५००	३	डा.
	रामवाड़ा		४	
२६.	केदारनाथ	११७५३	३	डा.
२७.	गौरीकुंड		७	
	रामपुर		७	
२८.	फाटा	५२५०	३	डा.
	मैखंडा		२	
	ब्योङ्-मल्ला		२	
	भेत (नारायणकोटी)		१॥	
	नाला		२	
२९.	ऊखीमठ	४३००	३	डा.
	गणेशचट्टी		३॥	
३०.	पोथीवासा		५	
	दोगलभीटा	७७००	॥	
	वनियाकुंड		१॥	
	चोपता		१	डा.
	तुंगनाथ	१२०७०	३	
३१.	जंगलचट्टी		३	
	पांगरवासा		२॥	

	मंडल		४	डा.
	३२. गोपेश्वर		४॥	
	चमोली	३१५०	३	डा.
	मठ		२	
	छिनका		१॥	
मोटर	वावला		२	
	सियासैण		१	डा.
	हाट		१	
	३३. पीपलकोटी	४०००	२	डा. ता., डाव.
	गरुड़गंगा		३॥	
	टंगणी		१॥	
	पातालगंगा		३	
	गुलावकोठी	५३००	२	
	३४. हेलंग	५०००	२	डा.
	खनोल्टी		२।	
	भड़कुला		१।	
	सिंहधार		३	
	जोशीमठ	६१५०	॥	डा. ता., डाव.
	विष्णुप्रयाग	४५००	२	
	३५. घाट		४	
	पांडुकेश्वर	६०००	२	डा. ता., डाव.
	लामवगड़	७०००	३	
	हनुमानचट्टी	८०००	३	
	२६. वदरीनाथ	१०२४४	५	डा. ता., डाव.,
	४०. चमोली	३१५०	४८	उसी रास्ते लौट
	मैठाणा		३	
	नंदप्रयाग	३०००	३	डा. ता., डाव.,
मोटर	सोनला	२८००	३	
	लंगासू		४	
	उमट्टा		४	
	कर्णप्रयाग		२	डा. ता., डाव.,

	चटुवापीपल		४	डा. ता., डाव., अस्प.
	गौचर		२	
	कमेडा		२	
	नगरासू		३	
	शिवानंदी		३	
	सुमेरपुर		४॥	
	रुद्रप्रयाग	२०००	२॥	डा. ता., डाव., अस्प.
	गुलावराय		२	
	खांकरा		५	
	छांतीखाल	३१००	।।।	
	भट्टीसेरा		१	
	सुकिरता		२॥	
४१.	श्रीनगर	१९००	५	डा. ता., डाव., अस्प.
	विल्वकेदार		३	
	अरणी		२	
	रामपुर		३	
	काल्टा		२।	
४२.	रानीवाग	१७००	१॥	डा., डाव.
	सीताकोटी		१॥	
	विद्याकोटी		२	
	वाह—देवप्रयाग	१७००	५	डा. ता., डाव., अस्प.
	सौंक		१	
	उमरासू		२॥	
	छालडी		२।	
४३.	व्यासघाट	१६५०	३	डा., डाव.
	कांडी		३	
४४.	सेमलचट्टी		३	
	महादेवसैंण		५	
	वन्दरभेल		३	
	कुंडचट्टी		३	
	न्योडलाल		२	

		वड़ी विजनी		१	
	४५.	छोटी विजनी	२५००	१	
		नाईमोहन		२	
		महादेवसैण		१	
		गूलर चट्टी		२	
		गरुड़ चट्टी		४	
		लक्ष्मणझूला	११००	२	डा. ता., डाव.
		मुनीकी रेती		१	
	४६.	ऋषिकेश	११०६	१	डा. ता., डाव.,

३. ऋषिकेश—गंगोत्री

(१५०॥ मील ८ दिन)

मोटर		ऋषिकुश	११०६	०	डा. ता., डाव.,
		नरेन्द्रनगर	४०००	१०	डा. ता., डाव.,
		टेहरी	२५२६	४१	डा. ता., डाव.,
	१.	धरासू		२६	डा., डाव.
	२.	डूंडा		८	
	३.	उत्तरकाशी (वाड़ाहाट)[1]	३०००	९	डा., डाव., अस.
	४.	मनेरी	४३८०	१०	
		मल्ला चट्टी	४८५०	६	
	५.	गंगनानी		११	डा., डाव.
	६.	सुक्खी		९	
		हरसिल	८१००	५	
	७.	धराली		२॥	
	८.	गंगोत्री	१०३००	१३	डा., डाव.

४. ऋषिकेश-चिनी (कनौर)

(१५४ मील ११ दिन)

मोटर	ऋषिकेश	११०६	०	डा. ता., डाव.,
	नरेन्द्रनगर	४०००	१०	डा. ता., डाव.,
	टेहरी	२५२६	४१	„

---

[1] उत्तरकाशीसे आगेकी सभी चट्टियोंके बारेमें देखो यात्रा २

१. धरासूँ		२६	डा., डाव.
डूँडा		८	
२. उत्तरकाशी	३०००	९	डा., डाव.
३. मनेरी	४३००	१०	
मल्लाचट्टी	४८००	६	
४. गंगनानी		११	डा., डाव.
सुक्खी		९	
५. हरसिल	८१००	५	
७. छितकुल		१८(?)	
८. सङ्ला		५(?)	डाव.
९. ब्रूये		८(?)	डाव.
१०. शोङ्टङ्		१०(?)	डाव.
११. चिनी		८(?)	डा., डाव.

५. ऋषिकेश-केदारनाथ[1] (पैदल)
(१३८ मील १३ दिन)

ऋषिकेश	११०६	०	
लक्ष्मणझूला	११००	२	
१. छोटी विजनी	२५००	११	
वंदरभेल		६	
२. सेमलचट्टी		८	
३. व्यासघाट	१६५०	८	
४. वाह–देवप्रयाग	१७००	८॥।	डा., डाव.
रानीवाग	१७००	८॥	डा., डाव.
५. विल्वकेदार		८॥।	
६. श्रीनगर[2]	१९००	३	डा. ता., डाव., अस्प.
भट्टीसेरा		७॥	
७. छांतीखाल	३१००	३॥	
८. रुद्रप्रयाग	२०००	९॥	डा. ता., डाव., अस्प.

---

[1] विशेषके लिये देखो यात्रा २।

[2] श्रीनगरसे रुद्रप्रयाग तक मोटर द्वारा भी जा सकते हैं।

	छतोली		५	
	मठ		१	
	रामपुर		१	
	सोरग	२३००	२	डा.
९.	अगस्तमुनि	३०००	२॥	डा., डाव.
	सौंडी		२	
	चंद्रापुरी		२	
	भीरी		२॥	डा.
	वटवलचारी	३०००	२॥	
	कुंड		१	
१०.	गुप्तकाशी	४८५०	२॥	डा., डाव.
	नाला		१॥	
	भेत(नारायणकोटी)		२	
	व्योंग-मल्ला		१॥	
	मैखंडा		२	
	फाटा	४२५०	२	डा., डाव.
११.	रामपुर		३	डा., डाव.
	तिरजुगीनारायण		४।।।	
१२.	गौरीकुंड	६५००	६।	डा., डाव.
	रामवाड़ा		४	
१३.	केदारनाथ	११७५३	३	डा., डाव.

६. ऋषिकेश-केदारनाथ

(१४१ मील, ६ दिन)

मोटर		ऋषिकेश	१११६	०	डा. ता., डाव., अस्
		देवप्रयाग	१५५०	४२	डा. ता., डाव.
	१.	कीर्त्तिनगर		२१	डा.
मोटर		श्रीनगर	१९००	३	पैदल डा. ता., डाव., अस्
	२.	रुद्रप्रयाग	२०००	२१	डा. ता., डाव., अस्
	४.	गुप्तकाशी		२४	डा., डाव.

५. तिरजुगी		१६।।।	डाव.
६. केदारनाथ	११८५३	१३।	डा., डाव.

७. ऋषिकेश-बदरीनाथ

(१४७ मील, ७ दिन)

ऋषिकेश	१११६	०	डा. ता., डाव., अस्प.
देवप्रयाग	१५५०	४२	डा. ता., डाव., अस्प.
१. कीर्त्तिनगर		२१	डा.
श्रीनगर	१९००	३	डा. ता., डाव,. अस्प.
रुद्रप्रयाग	२०००	२०।।	डा. ता., डाव., अस्प.
गौचर		१५	डा. ता., डाव., अस्प.
कर्णप्रयाग		६	डा. ता., डाव., अस्प.
नंदप्रयाग	३०००	१३	डा. ता., डाव.
चमोली	३१५०	६	डा. ता., डाव., अस्प.
सियासैण		६।।	डा.
२. पीपलकोटी	४०००	३	डा. ता., डाव.
३. गुलावकोठी	५३००	१०	डा., डाव.
४. जोशीमठ	६१५०	९	डा. ता., डाव.
५. पांडुकेश्वर	६०००	८	डा., डाव.
हनुमानचट्टी	८०००	६	
६. वदरीनाथ	१०२४४	५	डा. ता., डाव., अस्प.

८. ऋषिकेश-केदारनाथ-बदरीनाथ

(२४३ मील १६ दिन)

ऋषिकेश	१११६	८	डा. ता., डाव., अस्प.
देवप्रयाग	१५५०	४२	डा. ता., डाव,.
१. कीर्त्तिनगर		२१	डा.
श्रीनगर	१९००	३	डा. ता., डाव., अस्प.
२. रुद्रप्रयाग	२०००	२०।।	डा. ता., डाव.
४. गुप्तकाशी	४८५०	२४	डा., डाव.
नाला		१।।	

५.	फाटा	५२५०	७॥	डा., डाव.
६.	गौरीकुंड	६५००	१०	डा., डाव.
७.	केदारनाथ	११७५३	७	डा., डाव.
	नाला		२४॥	
८-९.	ऊखीमठ	४३००	३	डा., डाव.
	पोथीवासा		८॥	
१०.	चोपता		३	डा., डाव.
	तुंगनाथ	१२०७२	३	
	जंगलचट्टी		३	
११.	मंडल		६॥	डा., डाव.
	चमोली	३१५०	७॥	डा. ता., डाव.,
१२.	सियासैण		६॥	डा., डाव.
	पीपलकोटी	४०००	३	डा. ता., डाव.
१३.	गुलावकोटी	५३००	१०	डा., डाव.
१४.	जोशीमठ	६१५०	९	डा. ता., डाव.
१५.	पांडुकेश्वर	६०००	८	डा. डाव.
	हनुमानचट्टी	८०००	६	
१६.	वदरीनाथ	१०२४४	५	डा. ता., डाव.

§२. मानसरोवर-यात्रा

मानसरोवरके मुख्य मुख्य रास्ते हैं—'गंगोत्रीके पास' (जालूखगा) बदरीनाथके पास (माणा)से, और नीतीसे होकर। मानसरोवर-क्षेत्रमें दर्शनीय स्थान हैं—

	मील
कैलास-परिक्रमा	३२
कैलास—ग्यानिमा (मंडी)	३८
,, —तीर्थपुरी	२८
,, —दुल-वू (गोम्पा)	२१
,, —मानसरोवर	१६
,, —सिंधु-उद्गम (ताप्-छेना)	४६
वरखा —तग्-चङ्-पो-उद्गम	६५

" —ब्रह्मपुत्र-उद्गम	९२
" —सतलज-उद्गम	२२
मानसरोवर-परिक्रमा	५४
रावणह्रद-परिक्रमा	७७

९. ऋषिकेश-गंगोत्री-मानसरोवर

(२९६ मील २७ दिन)

ऋषिकेश	११०६	०	
नरेन्द्रनगर	४०००	१०	
टेहरी	२५२६	४१	
१. धरासू		२६	
२. उत्तरकाशी	३०००	१७	
३. मनेरी		१०	
मल्लाचट्टी		६	
४. गंगनानी		११	
५. सुक्खी		९	
हरसिल		५	
६. धराली		२॥	
जंगला (चट्टी)		४	
कोपड़्		१	
७. लामाथङ्		८॥।	
८. नेलङ्		७॥	गाँव
९. दो-सुम्दो		८॥	गाँव
१०. ति-पानी (?)		११।	
११. मंडी		९।	
जेलू-ख-गा (घाटा)	१७४९०	३।	
१२. ग्रोप्-नदी		४।	
१३. पु-लिङ् (मंडी)		१६।	
१४. शरबा-रब्		९।	माणाका रास्ता यहाँसे
१५. थोलिङ् (गोम्पा)		२२	गाँव

१६. मङ्-नङ्		१३
१७: दापा	१४०००	१४
१८. नुवरा (मंडी)		६॥
१९: ङोङ्-त्रू		१४
२०. रा-नग्		५॥
२२. सिव्-चिलम्		१९
२३. गु-नि-यङ्-त्ती		१५
२४. ग्यनिमा (मंडी)		१३
२५. छू-मिक्-श.-ला		१६॥
२६. कैलाश (दर्-छेन)	२२०२८	२१।
२७. मानसरोवर	१४९५०	१६

१०. ऋषिकेश–माणा (बदरीनाथ)–मानसरोवर

(४५६ मील, २६ दिन)

मोटर	ऋषिकेश	१११६	०	डा. ता., डाव.,
	देवप्रयाग	१५५०	४२	डा. ता., डाव.
	१. कीर्त्तिनगर		२१	डा.
मोटर	श्रीनगर	१९००	३	डा. ता., डाव.,
	रुद्रप्रयाग	२०००	२०॥	डा. ता., डाव.
	कर्णप्रयाग		२१	डा. ता., डाव.
	नन्दप्रयाग	३०००	१३	डा. ता., डाव.
	२. चमोली	३१५०	६	डा. ता., डाव.,
	३. पीपलकोटी	४०००	९॥	डा. ता., डाव.
	४. गुलाबकोटी	५३००	१०	डा., डाव.
	५. जोशीमठ	६१५०	९	डा. ता., डाव.
	६. पांडुकेश्वर	६०००	८	डा., डाव:
	७. बदरीनाथ	१०२४४	११	डा. ता., डाव.,
	माणा	१०५००	२	गाँव
	मूसापानी		५	
	घासटोली		३	
	८. चमराँव		४	

सरस्वती		५	
राता कोना		२	
९. जगराँव		४	
माणाधुरा	१८४०२	३	
			←भारत-सीमा
१०. पोती		९	
जगराँव		८	
११. शिपुक		३	
चारङ्ला	१६४००	३	
१२. रामूरा		१०	
१३. छाँकरा		१०	
१४. रत्तूखाना	१६४००	२०	
-१६. थोलिङ्	१२२००	३८	गाँव
१७. मङ्नङ्		१३	
१८. दापा	१४०००	१४	गाँव
१९. नवरा (मंडी)		६॥	
ङोङ्-बू		१४	
२०. रानग्-छू		५॥	
२१. सिव-चिलम		१९।	
२२. गु-नि-यङ्-ती		१५	
२३. ग्यानिमा		१३	
२४. छू-मिक्-शला		१६॥	
२५. कैलाश	२२०२८	२१॥	
२६. मानसरोवर	१४०५०	१६	

११. ऋषिकेश-नीती (दम्ज़न) मानसरोवर

(३३६ मील, १८ दिन)

ऋषिकेश	१११६	०	डा. ता., डाव., अस्प.
देवप्रयाग	१५५०	४२	डा. ता., डाव.
१. कीर्त्तिनगर		२१	डा.

मोटर	श्रीनगर	१९००	३	डा. ता., डाव.,
	रुद्रप्रयाग	२०००	२०॥	डा. ता., डाव.
	कर्णप्रयाग		२१	डा. ता., डाव.
	नन्दप्रयाग	३०००	१३	डा., डाव.
	२. चमोली	३१५०	६	डा. ता.; डाव.,
	३. पीपलकोटी	४०००	९॥	डा: ता., डाव.
	४. गुलाबकोटी	५३००	१०	डा., डाव.
	५. जोशीमठ	६१५०	९	डा. ता., डाव.
	६. तपोवन		७	डाव.
	रिणी		४	
	सुराईं (ठोठा)		५	गाँव
	७. गाड़ी		३	
	जुम्मा ग्वाड़		४	
	भावकुंड		६	
	८. मलारी	१००१४	३	गाँव
	वम्पा		७	डा.
	९. नीती गाँव	११४६०	४	
	विमलास		७	
	१०. दमजन पड़ाव		३।	
	दमजन नीतीधुरा		१०॥	
				← भारत-सीमा
	११. होती पड़ाव		६	
	तोननला		३॥	
	सग		४	
	१२. छलम्पा		६	
	डाकर		६	
	१३. तिसुम		६॥	
	सिव चिलम		३।	
	१४. गु-नि-यङ्-ती		१५	
	१५. ग्यानिमा		१३	
	१६. छू-मिक्-श-ला		१६॥	

१७. कैलाश		२१॥	
१८. मानसरोवर	१४०५०	१६	

१२. ऋषिकेश-नीती (चोरहोती)-मानसरोवर

(३२९ मील, १७ दिन)

१. ऋषिकेश	१११६	०	देखो यात्रा १०
४. जोशीमठ	६१५०	१५५	
५. तपोवन		७	
६. सुराईं		९	
७. मलारी	१००१४	१६	
वम्पा		७	
८. नीती गाँव	११४६०	४	
कसैं		३	
कालाजावर		३	
९. चोरहोती-धुरा		७	
वंजर तल्ला		२॥	
वंजर-मल्ला		१॥	
रिमखिन		१	
होती पड़ाव		२	
१०. तोननला		३॥	
११. डाकर		१६	
१२. सिवचिलम		९॥।	
१३. गु-नि-यङ्-ती		१५	
१४. ग्यनिमा		१३	
१५. छु-मिक्-श-ला		१६।	
१६. कैलाश		२१॥	
मानसरोवर	१४०५०	१६	

१३. ऋषिकेश-नीती (गणेशगंगा)-मानसरोवर

(३४५। मील, १८ दिन)

१-८. ऋषिकेश-नीती		१९८	देखो यात्रा १०,१२

	गोटिङ्		८।
९.	शापुक		३।।
	खखेसिया		४
	गिलडुङ्		४
१०.	गणेशगंगा		२
	ख्युङ्-लुङ्		२१
	नीतीधुरा		४।
११.	चङ्-लू		१२
१२.	नवरा मंडी		११।।
१३.	ङोङ्-बू (गोम्पा)		१४
१४.	सिवचिलम		२३।
	गु-नि-यङ्-ती		४१
१५.	ग्यानिमा		९।
१६.	छु-मिक्-श-ला		१६।
१७.	कैलाश	२२०२८	२१।।
१८.	मानसरोवर	१४०५०	१६

१४. ऋषिकेश-गंगोत्री-मानसरोवर-लिपूलेख-अल्मोड़ा

(५०३।। मील, ४२ दिन)

मोटर		ऋषिकेश	०
	१.	धरासू	७७
	५.	हरसिल	५८
		जङ्ला	७।।
		कोपङ्	१
	६.	डांडा	२।।।
		करचा	३।।
		लामाथाङ्	२।।
	७.	नेलङ्	७।।
	८.	दो-सुम्-दो	८।।
	९.	तिपानी	११।
	१०.	मंडी	९।

११. जेलूखागा (धुरा)	१७४९०	३।	
१२. पुलिङ्[1]		१६।	
१३. शरवा-रव्		९।	माणाघाटाका रास्ता भी
१४. थोलिङ्	१२२००	२२	
१५. मङ्-नङ्		१३	
१६. दावा (दापा)	१४०००	१४	गाँव
१७. नुवरा		६।।	
१८. ङोङ्-बू		१४	
१९. रा-नग्-छू		५।।	
२०. सिव्-चिलम्		१९	माणा-रास्ता भी
२१. गु-नि-यङ्-ती		१५	
२२. ग्यनिमा (मंडी)		१३	
२३. छू-मिक्-श-ला		१६।	
२४. दर-छेन् (कैलाश)		२१।।	
२५. मानसरोवर	१४९५०	१६	
गुरला	१६२००	९।।।	(घाटा)
२६. गुरला-फुग (गौरी उड्यार)		४	
वलडक	१५०००	४।।	
२७. तकलाकोट	१३१००	१६	नेपाल-रास्ता
२८. पाला	१४०००	६	धर्मशाला
२९. लीपू-लेख (घाटा)	१६७५०	९।	
			←भारत-सीमा
३०. कालापानी	१२०००	११	
गर्-ब्याङ्	१०३३०	५	धर्मशाला
३१. बुंदी	८८००	८।।।	धर्मशाला
मालपा	७२००	२।।	धर्मशाला
निजङ् (जलपान)		५।।।	
३२. जीपती	८०००	११	धर्मशाला
सिरखा		।।	धर्मशाला

---

[1] यह नेलङ् और कनौरवालोंकी मंडी जुलाई-अगस्तमें लगती है।

	सिरदंग		१।।।	धर्मशाला
	तिथलाकोट	९०६८	१।।	
	सोसा	८४००	३	धर्मशाला
३३.	पङ्गू	६९००	६	प्रथमगाँव
३४.	खेला	५५००	८	दूकान (दू०)
३५.	धंरचूला		१०	दू.
	बलवा		६।।	डाव., दू.
३६.	जौल-जि-बी	२१००	५	दू.
	अस्कोट	५०००	७	डाव. (जं.) दू.
३७.	डिडीहाट	६०००	२।।	डाव. (जं.) दू.
	सान्देव	६४००	७।।।	दू.
३८.	थल	३०००	९।।	डाव. (जं.) दू.
	बेरीनाग	७०००	३।	डाव. (जं.) दू.
	सुकल्याडी		३	दू.
३९.	बाँसपटन		६	डाव. (जं.) दू.
	गणाई		६	
	सेराघाट		६	डाव. (जं.) दू.
४०.	कनारी छीना		५।	डाव. (जं.) दू.
	धौल छीना	६०६०	५।	डाव. (जं.) दू.
४१.	बाडे छीना	४०००	५	डाव. (जं.),
४२.	अल्मोड़ा	५४९०	८।।	डा.ता., डाव., अस्प.

१५. ऋषिकेश-गंगोत्री-मानसरोवर-दारमा-अल्मोडा

(६२२। मील, ४२ दिन)

१–२५.	ऋषिकेश-मानसरोवर	३८२।।	यात्रा १४ जै
२६.	कैलाश	१६	
२७.	छु-मिक्-श-ला	२१।।	
२८.	ग्या-निमा मंडी	१६।	
२९.	छकरा मंडी	५	
	लामा-छोरतेन	१२	

३०. मङ्-युल		४।	
दारमा घाटा (नू-वे)	१८९१०	४	
३१. डावे		५॥	
विडङ्		११	
३२. गगो		६	
३३. नाग-लिङ्		१२	
दर		१४	
न्यो		२	
३५. खेला		९॥	
३६. धर-चू ला		१०॥	
-४२. धरचूला-अल्मोड़ा		९०॥	यात्रा १४ जैसा

१६. ऋषिकेश-गंगोत्री-मानसरोवर-उंटाधुरा-अल्मोड़ा

(५६३ मील, ४१ दिन)

-२५. ऋषिकेश-मानसरोवर		३८२॥	यात्रा १४ जैसा
२६. कैलाश (दर्छेन्)		१६	
२७. छु-मिक्-श-ला		२॥।	
२८. ग्या-निमा-मंडी		१६॥	
२९. दारमा-यङ्-ती		११॥।	
गु-ने-यङ्-ती		२।	
सूखा-ठा-जङ		९	पड़ाव
३०. ठा-जङ्		२।	
३१. छिर-चिन	१६३९०	१२	पड़ाव
कुङ्-री-विङ्-री (घाटा)	१८३००	५	
जंती-धुरा	१८५००	३॥।	
उंटा-धुरा	१७९५०	३॥	
			←भारत-सीमा
३२. वोमलास मल्ला	१५०१०	६॥	
दुङ् (टुङ्गा)	१३७२०	२।	
मिलम्	११२३२	२।	प्रथम जोहार गाँव

	विलजू		३	स्कूल
	बुरफू (मल्ला)		२॥	धर्म., वड़ा गाँव
३३.	मरतोली	११०७०	२	स्कूल
	रिलकोट	१२२००	२।	
	वाग उड़ियार	८६००	७।	डेरे
३४.	लीलम्		७॥	
	सुरिङ् घाट		२।	
	मुनसियारी		२	डाव., दूकान
३५.	गिरगाँव		१०	डाव.
३६.	तेजम्	३२८०	८।	
	खैना		७	
३७.	श्यामाधुरा	६९००	४।	दू.
३८.	कपकोट		७॥।	डाव., दू.
	लाहुगढ़का पुल		१।	डाव., वाजार
३९.	वागेश्वर		३	यहाँसे मोटरसे अल
४९.	ताकूला		१२।	
	कपड़खान		६॥	दूकान
	दीना पानी		१	दू.
४१.	अल्मोड़ा	५४९०	६॥	

१७. ऋषिकेश-नीती-मानसरोवर-गूगे-शिमला

(९८४ मील, ५० दिन)

१–१७.	ऋषिकेश-मानसरोवर	३२९	यात्रा १२ जून
१८.	दरछेन (कैलाश)	१६	
१९.	दुलछू (गोम्पा)	२१।	
२०.	तीर्थपुरी (टेटापु)	१४॥।	
	मिसर-ता-सम	४	
२१.	धरगोत्-ला	१८	
	छोपता	२	
२२.	नो-क्यु-ता-सम्	१६	

२३. गरतोक		६	(प. तिब्बत राजधानी)
गरतोक नदी		९	
जोङ्-छुङ्-ला	१८४००		
लो-श्रा-चे-ला	१८५१०		
२४. नदी		१४	
२५. नदी		१४	
शङ्		६	गाँव
२६. शङ्-छो-ज्रोङ्		१३	गाँव (ज्रोङ्-निवास)
२७. खि-नु-फुग		१३	गाँव
२८. हू-ले		१३	
२९. नुह		१२	गाँव
शि-रङ-ला (घाटा)	१६४००		
३०. शि-रिङ्-ला (तल)		१५	
३१. भियङ्		८	
३२. ठि-श्रोग		१२	गाँव
३३. गूगे		१५	गाँव
शिपकी		५	पड़ाव
शिपकी घाटा		८	
			←भारतसीमा
३४. नमृग्या		४	डाव., गाँव
३५. स्पू		१०	डाव.
३६. कनम्		१६	डाव.
३७. जंगी		१४	डाव.
३८. चिनी		१०	डा. डाव.,
३९. उडनी		१५	डाव.
४०. नचार		१३	डा., डाव.
४१. पाँडा		७	डाव.
४२. सराहन		१६	डा. डाव., बाजार
४३. गौरा		१३	डाव
४४. रामपुर		७	डा. ता., डाव.,बाजार
४५. निरत		९	डाव.

मोटर	४६. ठाणादार		११	डा.ता.,डाव.,वा
	४७. नारकंडा		११	डा.ता.,डाव.,वा
	४८. मटियाना		११	डा.ता.,डाव.,वा
	४९. फागू		१७	डा.ता.,डाव.,वा
	५०. शिम्ला	७०४३	१२	

१८. ऋषिकेश-माणा-मानसरोवर-थोलिङ-शिम्ला

(६५५।।। मील, ५२ दिन)

१–२५. ऋषिकेश-वदरीनाथ-मानसरोवर		४५६	यात्रा १० जैसे
२६. दर्छेन (कैलाश)		१६	
२७. छु-मिक्-श-ला		२१।।।	
२८. ग्य-नि-मा (मंडी)		१६।	
२९. गु-नि-यङ्ती		१३	
३०. सिव्-चि-लम् (मंडी)		१५	
३१. रा-नग्-छू		१९	
डोङ्-ञू (गोम्पा)		५।।	
३२. नवरा (मंडी)		१४	
३३. दावा (दापा)		६।।	
३४. मङ्-नङ्		१४	
३५. थो-लिङ् (गोंपा)		१३	
३६. नियङ्		१६	
३७. टिवू		९	
३८. खि-नि-फुग		२०	
३९. हू-ले		१३	
४०. नुह		१२	
शि-रिङ्-ला	१६४००		
४१. शि-रिङ्-ला (तल)		१५	
४२. मियङ्		८	
४३. ठि-ग्रोग		१२	
४४. गू-गे		१५	
शिप्की		५	

४५. शिपकी घाटा		८	
६-५२. शिपकी घाटा-शिमला		२०४	यात्रा १७ जैसे

§३. अन्य यात्रायें

१९. काठगोदाम-बैजनाथ-तपोवन-बदरीनाथ

(१८५ मील, ११ दिन)

काठगोदाम		०
भवाली		२१
खैरना		१२
रानीखेत		१५
१. अल्मोड़ा		२०
हवालवाग		५
सोमेश्वर		१२
कौसानी		६
गरुड़		७
२. बैजनाथ		२
देवल		४
३. लोहाजङ्		८
४. वाग		८
कनौल		६
५. रमनी		९
सेमखरक		९
६. कालीघाट		८
७. ढकवानी		८
कुआरी डांडा	१२४००	
८. खुलरा		९
तपोवन		६
९. जोशीमठ	६१५०	७
१०. पांडुकेश्वर	६०००	८
११. बदरीनाथ	१०२४४	११

२०. काठगोदाम-नन्दप्रयाग-बदरीनाथ

(१९७।। मील, १० दिन)

मोटर	काठगोदाम		०	डा. ता., डाव.
	भवाली		२१	डा. ता., डाव.,
	खैरना		१२	डा. ता., डाव.
	रानीखेत		१५	डा. ता., डाव.,
	१. अल्मोड़ा	५४९०	२०	डा. ता., डाव.,
	हवालबाग		५	डा., डाव.
	सोमेश्वर		१२	डा., डाव.
	कौसानी		६	डा., डाव.
	२. बैजनाथ		९	डा., डाव.
	थराली		७।	
	३. डुंगरी		५	
	४. घाट		१२।।।	
मो.	५. नंदप्रयाग		११	डा., डाव.
	चमोली		६	डा. ता., डाव.,
	६. पीपलकोटी		९।।	डा. ता., डाव.
	७. हेलङ्		१२	डा. ता., डाव.
	८. जोशीमठ		७	डा. ता., डाव.
	९. पांडुकेश्वर		८	डा., डाव.
	१०. बदरीनाथ		११	डा. ता., डाव.,

२१. काठगोदाम-द्वाराहाट-बदरीनाथ

(१७६। मील, ११ दिन)

मोटर	काठगोदाम	०	डा. ता., डाव.
	भवाली	२१	डा. ता., डाव.,
	खैरना	१२	डा., डाव.
	१. रानीखेत	१५	डा. ता., डाव.,
	कोटूली	३	

	बलना		१	
	दड़माड़		१	
	सुनोली		२	
	कफड़ा		१	
	चंडेश्वर		३	
२.	द्वाराहाट		३	डा., डाव., अस्प.
	खनरधार		२	
	चित्रेश्वर		२	
	महाकालेश्वर		२	
	ग्वालीं		२	
३.	गणाई (चौखुटिया)	३२००	३	डा., डाब.
	दिगोत		॥	
	बिरखेश्वर		२	
	रामपुर		१	
	विजरानी		॥	
	सेमलखेत		२	
४.	मेलचौरी		२॥	डा., डाब.
	मेलगुंवार		३	
	सैंजी		१	
	दरिमडली		।	
	घुनारघाट		१॥	डा., डाब.
	ग्वार-गधेरा		१	
	रसिया		१।।।	
	कालीमाटी		।।।	
	गंडावज		१	
	जंगलचट्टी		२	
	खेती		१॥	डा.
५.	आदबदरी		३।	डा., डाब.
	भटोली		४।	
	सरोली		१॥	
	सिमली		२।	

६. कर्णप्रयाग	२३०७	३॥।	डा. ता., डाव.
जैकंदी		४॥।	
लंगासू		२।	
सौला		३	
नन्दप्रयाग	२८८०	३।	डा., डाव.
मैथाना		२॥	
कुमर		१॥।	
चमोली		१॥	डा., ता., डाव.,
७. पीपलकोटी		९॥	डा. ता., डाव:
८. हेलङ्ग		१२	डा., डाव.
९. जोशीमठ	६१५०	७	डा., ता., डाव.
१०. पांडुकेश्वर	६०००	८	डा., डाव.
११. वदरीनाथ	१०२४४	११	डा., ता., डाव.,

२२. काठगोदाम—कर्णप्रयाग—माणा—मानसरोवर

(४६०॥ मील, ३१ दिन)

	काठगोदाम		०	
मोटर	१-६. कर्णप्रयाग		११०	यात्रा २१ देखो
	चमोली		१९	
	७. पीपलकोटी		९॥	
	८. हेलङ्‌		१२	
	९. जोशीमठ		७	
	१०. पांडुकेश्वर		८	
	११. वदरीनाथ	१०२४४	११	
	माणा		२	
	१२. चमरांव		१२	
	१६. चारङ्‌ ला	१६४००	३७	देखो यात्रा २५
	२१. थोलिङ्‌		६८	
	२६. सिब्-चिलम्		७२	
	२८. ग्यानिमा		२८	

३०. कैलाश (दर्-छेन्)		४८	
३१. मानसरोवर		१६	

२३. काठगोदाम–बैजनाथ–नीती–मानसरोवर

(३५१ मील, २० दिन)

१. काठगोदाम-अल्मोड़ा		६८	देखो यात्रा २१
२. बैजनाथ		३२	
३. ग्वालदम		८	
४. लोहाजंग		१२	
वान		८	
५. कनौल		६	
रमनी		९	
६. सेमखरक		९	
कालीघाट		८	
७. ढकवानी		८	
कुसारी डांडा			
खुलरा		९	
८. तपोवन		६	
९. सुराईं-ठोठा		९	
गाडी		३	
१०. मलारी		१६	
बम्पा	१००१४	७	डा.
११. नीती गाँव	११४६०	४	
विमलास		७	
१२. दमजन पड़ाव		३।	
दमजन-नीतीधुरा		१०।।	
			←भारतसीमा
१३. होती पड़ाव		६	
१४. छलम्पा		१३।।	
१५. ति-सुम्		१२।।	
सिव्-चिलम्		३।	

१६. गु-नि-यङ्-ती	१५
१७. ग्यनिमा	१३
१८. छू-मिक-श-ला	१६॥
१९. कैलाश	२१॥
२०. मानसरोवर	१६

२४. कोटद्वारा—केदारनाथ

(१३०॥ मील, ६ दिन)

मोटर	कोटद्वारा		०	
	डाडामंडी		१५	
	वानघाट		१३	
	ग्रदवानी		१२	
	पौड़ी		१०	
	श्रीनगर		८	
	१. रुद्रप्रयाग		२०॥	
	२. ग्रगस्तमुनि		११॥	
	३. गुप्तकाशी		१२॥	देखो यात्रा ८ भी
	४. फाटा	५२५०	९	
	५. गौरीकुंड	६५००	१२	
	६. केदारनाथ	११७५३	७	

२५. कोटद्वारा—बदरीनाथ

(१६५ मील, ५ दिन)

मोटर	कोटद्वारा	०
	पौड़ी	५०
	श्रीनगर	८
	रुद्रप्रयाग	२०॥
	कर्णप्रयाग	२१
	चमोली	१८
	१. पीपलकोटी	९॥

२. हेलङ्	१२
३. जोशीमठ	७
४. पांडुकेश्वर	८
५. वदरीनाथ	११

२६. कोटद्वारा–माणा–मानसरोवर

(४२८ मील, २५ दिन)

कोटद्वारा		०
चमोली		११७॥
१. पीपलकोटी		९॥
२. हेलङ्		१२
३. जोशीमठ		७
४. पांडुकेश्वर		८
५. वदरीनाथ	१०२४४	११
माणा		२
६. चमरांव		१२
७. जगरोन		११
८. पोती		१२
९. शिपुक		११
	←भारतसीमा	
१०. चारङ् ला	१६४००	३
११. रामूरो		१०
१२. छंकरा		१०
१३. सत्तूखाना		२०
-१५. थोलिङ्		२८
१६. मङ्नङ्ग		१३
१७. दापा		१४
१८. नवरा (मंडी)		६॥
१९. ङोङ्-बू		१४
रा-नग्-छू		५॥

२०. सिब्चिलम्	१९
२१. गु-नि-यङ्-ती	१५
२२. ग्यनिमा	१३
२३. छू-मिक्-श-ला	१६॥
२४. कैलाश	२१॥
२५. मानसरोवर	१६

२७. कोटद्वारा—नीती (दमज़न)—मानसरोवर

(३२९ मील, १६ दिन)

मोटर	कोटद्वारा	०	
	१. चमोली	११७॥	
	२. पीपलकोटी	९॥	
	३. हेलङ्	१२	
	४. जोशीमठ	७	
	५. तपोवन	७	
	सुराईं	९	
	६. गाड़ी	३	
	७. मलारी	१३	
	वम्पा	७	डा.
	८. नीतीगाँव	४	
	९. दमज़न पड़ाव	१०।	
	दमजन नीतीधुरा	१०॥	
			←भारत-सीमा
	१०. होती पड़ाव	६	
	छलम्पा	१३॥	
	११. तिसुम	१२॥	
	सिव्-चिलम्	३।	
	१२. गुनि-यङ् ती	१५	
	१३. ग्या-निमा	१३	
	१४. छू-मिक्-श-ला	१६॥	

१५. कैलाश		२१॥	
१६. मानसरोवर		१६	

२८. कोटद्वारा—माणा—मानसरोवर—अल्मोड़ा

(६५९। मील, ४१ दिन)

कोटद्वारा		०	
१. चमोली		११७॥	दे. यात्रा २५
४. जोशीमठ		२८॥	
६. बदरीनाथ		१९	
माणा		२	
११. चारङ्ला	१६४००	४९	
१६. थोलिङ्		६८	
२१. सिव्-चिलम्		७२	
२३. ग्य-नि-मा		२८	
२५. कैलाश		४८	
२६. मानसरोवर		१६	
२८. ग्य-निमा		५४।	देखो यात्रा १६ भी
२९. दारमा-यङ्-ती		११॥।	
३१. छिर-चिन्		२५॥	
मिलम्		२३।	
३३. मरतोली		७॥	
४१. अल्मोड़ा		८९	

कोटद्वारा—नीती (चोरहोती)—मानसरोवर—अल्मोड़ा*

(५९५ मील, ३१ दिन)

कोटद्वारा		०	
१. चमोली		११७॥	देखो यात्रा २५
५. जोशीमठ		२८॥	

---

*देखो यात्रा २६, २८

८. नीती गाँव		४३
नीतीधुरा		२०॥।
१०. होती पड़ाव		६
१३. ग्यनिमा		७५।
१६. मानसरोवर		६४
१८. ग्य-निमा		५४।
२१. छिरचिन		६६
मिलम्		२३।
२३. मरतोली		७॥
३१. अल्मोड़ा		८९

३०. चमोली–गोहनाताल

(१२ मील, १ दिन)

चमोली		०
विरहीपुल		४
गाड़ी		२
गोहना-ताल	६४००	६

३१. चमोली–भ्युंढार (नंदनवन)

(४७॥ मील, ३ दिन)

चमोली	०	
२. जोशीमठ	२८॥	देखो यात्रा २१
घाट	६	
अलकनंदापुल	१	
पुन (गाँव)	२	
घांघरिया	३	
द्वारी	२	
३. नन्दनवन	१	

३२. चमोली-हेमकुंड (लोकपाल)

(४६॥ मील, ४ दिन)

	चमोली	०	
२.	जोशीमठ	२८॥	देखो यात्रा २१, २२
	घाट	६	
	अलकनंदा पुल	१	
	पुन (गाँव)	२	
३.	भ्युंढार (नंदनवन)	४	
	घांघरिया	३	धर्मशाला
	नाराथोर गुफा	१	
४.	हेमकुंड	१	

३३. जोशीमठ—अल्मोड़ा

(१२२ मील, ८ दिन)

	जोशीमठ	०
	तपोवन	७
१.	खुलरा	६
	कुआरी डांडा	
२.	ढकवानी	९
	कालीघाट	८
३.	सेमखरक	८
	रमनी	९
४.	कनौल	९
	वान	६
५.	लोहाजंग	८
६.	ग्वालदम	१२
७.	वैजनाथ	८
	सोमेश्वर	१५
८.	अल्मोड़ा	१७

३४. देवप्रयाग–टेहरी–गंगोत्री

	देवप्रयाग		०
	१. रोड		११
	२. जेलम		१०
मोटर	३. टेहरी		११
	४. भलयाणा		११।
	५. छाम		५
	६: धरासू		९
	डुंडा		८
	७. उत्तरकाशी	३०००	९
	८. मनेरी	४३८०	९
	भटवाड़ी		९
	९. गंगनानी		९
	सूकी (सुक्खी)		८
	१०. हर्सिल	८१००	५
	धराली		२॥
	जंगला		४
	भैरवघाटी		२॥
	११. गंगोत्री	१०३००	६॥

३५. पौडी–अल्मोड़ा

(९३ मील, ८ दिन)

पौड़ी	०
१. पीपलघाट	१२
सकन्याना	६
२. कैमूर	७
३. वुंगीधार	१२
४. केलानी	१०

---

*देखो यात्रा २ भी

५. गणाई	९
महाकालेश्वर	५
६. द्वाराहाट	८
७ सोमेश्वर	७
हवाल बाग	१२
८. अल्मोड़ा	५

३६. पौडी–काठगोदाम

(१३१ मील, ८ दिन)

पौड़ी	०	
१-६. द्वाराहाट	६९	देखो यात्रा ३१
७. रानीखेत	१४	
८. काठगोदाम	४८	

३७. मसूरी–जमुनोत्री–गंगोत्री

(८३ मील, ७ दिन)

मसूरी	६५००	०
लंढौर		३
सुजाखोली		३
१. (थाना) भवन		७
मोरयाण (मराड) डांडा		८
लालूरी		३
२. धरासू		८
४. सिलक्यारी		१४
५. गंगाणी		११
६. डडोटी		१४
७. जमुनोत्री		१२

३८. मसूरी–टेहरी

(४१ मील, ३ दिन)

मसूरी	६५००	०

	लंढौर	३
	१. थाना उल्टी	१३
	२. कौंडियाला	१३
	३. टेहरी	१२

३९. मसूरी–टेहरी–बदरीनाथ

(१७३ मील, ११ दिन)

	मसूरी	०	
	१. धाना उल्टी	१६	
	२. कौंडियाला	१३	
	३. टेहरी	१२	
	४. टकूती	१२	
मोटर	५. श्रीनगर	१३	
	६. चमोली	५९॥	देखो यात्रा २४
	७. पीपलकोटी	९॥	
	८. हेलङ्	१२	
	९. जोशीमठ	७	
	१०. पांडुकेश्वर	८	
	११. बदरीनाथ	११	

४०. मसूरी–टेहरी–अल्मोड़ा

(१६७ मील, १३ दिन)

	मसूरी	०	
मोटर	५. श्रीनगर	६६	
	६. पौड़ी	८	
	१०. गणाई	५६	देखो यात्रा ३५
	११. द्वाराहाट	१३	
मोटर	१२. सोमेश्वर	७	
	हवालवाग	१२	
	१३. अल्मोड़ा	५	

४१. मसूरी—ऋषिकेश—बदरीनाथ

(२२१ मील, ८ दिन)

ोटर	मसूरी	६५००	०	
	देहरादून	२०००	२२	
	१. ऋषिकेश	१११६	२६	
	कीर्त्तिनगर		६३	देखो यात्रा ७
ोटर	२. श्रीनगर	१९००	३	
	चमोली	३१५०	५९॥	देखो यात्रा २४
	६. जोशीमठ	६१५०	२८॥	
	८. वदरीनाथ	१०२४४	२९	

४२. मसूरी—माणा—मानसरोवर

(५०४ मील, २८ दिन)

मसूरी	०	
८. वदरीनाथ	२२१	देखो यात्रा ७,२४,४१
माणा	२	
१३. चारङ्ला	२९	देखो यात्रा १६
१८. थोलिङ्	६८	
२३. सिव्चिलम्	७२	
२५. ग्यनिमा	२८	
२७. कैलाश	४८	
२८. मानसरोवर	१६	

४३. मसूरी—नीती (चोरहोती)—मानसरोवर

(४११ मील, १७ दिन)

टर	मसूरी	०
	देहरादून	२२
	१. ऋषिकेश	२६
	कीर्त्तिनगर	६३

मोटर	२. श्रीनगर	३	
	३. पीपलकोटी	५९॥	
	५. जोशीमठ	२८॥	
	९. नीतीगाँव	४३	
	नीतीधुरा	२०।।।	
	११. होती पड़ाव	६	
	१४. ग्यनिमा	७५।	
	१५. मानसरोवर	६४	

४४. रामनगर—बदरीनाथ

(१७० मील, १० दिन)

मोटर	रामनगर	०	
	गजरिया	८	
	मोहन	५	
	कुमरिया	३	
	सौराल	३	
	टोटा ग्राम	२	
	गोदी	६	
	पनवाद्योखन	२	
	मछोड	२	
	गूजरघाटी	३	
	ग्वीलखान	३	
	वासोट	३॥	
	श्रीकोट	२	
	१. भिकियासैण	३	
	वृद्ध केदार	३	
	मासी	४	
	त्याड	२।।।	
	२. गणाई (चौखुटिया)	४॥	डा., डाव., अस्प.
	सेमलखेत	५॥	
	पनुवाखाल	१॥	

		मेहलचौरी		१	
		धुनारघाट		५	डा.
	३.	लोहवा	५०००	१॥।	डाव., अस्प.
		गांडावाज		१॥।	
		दिवाली खाल		॥	
		जोंकापानी		२	
		खेती		१॥	डा.
	४.	आदबदरी		३।	डा., डाव.
		उज्वलपुर		१॥	
		भटोली		२	
		सिरौली		१॥	
		सिमली		२	डा.
	५.	कर्णप्रयाग	२६००	४	डा. ता., डाव., अस्प.
टर		नन्दप्रयाग		६	
		चमोली		८॥।	
	६.	पीपलकोटी		९॥	
	७.	हेलङ्		१२	
	८.	जोशीमठ		७	
	९.	पांडुकेश्वर		८	
	१०.	बदरीनाथ		११	

अध्याय ११

केदार-बदरी-यात्रा

§१. केदारनाथ-यात्रा

१. प्रस्थान

हिमालयमें घूमना वैसे तो मेरे लिए कोई नई बात नहीं है, केदार (बदरीनाथ)की भूमिमें मैं पहले भी जा चुका हूँ, किन्तु केदार-बदरीकी वह या आजसे ४१ वर्ष पहले (१९१० ई०में) हुई थी। उस समय इतनी बहुमु जिज्ञासा भी नहीं हो सकती थी। अबकी बार मैंने यह यात्रा खूब आं कान खोलकर करनी चाही, जिसका मुख्य उद्देश्य था अपने 'हिमालय-परिचय लिए कुछ ऐतिहासिक और दूसरे प्रकारकी सामग्री जमा करना।

२ मई, १९५१को मसूरीसे मैंने प्रस्थान किया। रातको अच्छी वर्षा गई थी और मसूरीमें तापमान ५१ डिग्रीपर पहुँच गया था। लेकिन मैं जान था—'मईका आन पहुँचा है महीना, बहा चोटीसे एड़ी तक पसीना!' दिन देहरादूनमें विश्राम करना था, जहाँ दोपहरसे पहले ही पहुँच गया। प्रोफे गयाप्रसाद शुक्लका आतिथ्य तो वैसे बहुत मधुर होता है, किन्तु वहाँसे शा ही कभी अजीर्ण लिए बिना विदा होना मिला हो! ३ मईको देहरादूनसे ऋ केशकी बसमें सवार हुआ और डोईवाला होता १ बजेकी तेज़ धूपमें ऋषिके पहुँचा। ऋषिकेश बदरीनाथ-यात्राका आरम्भिक स्थान है। जमनोत्री-गंगो जानेवाले यहाँसे धरासू (७७ मीलसे ऊपर) तक मोटर-बसमें चले जाते हैं औ केदार-बदरी जानेवाले कीर्त्तिनगर (६३ मील) तक। मैंने सोचा था, शा उसी दिन बस मिल जायगी और मैं कीर्त्तिनगर पहुँच जाऊँगा, लेकिन ऋषिके यात्रियोंकी भीड़ देखकर इसमें सन्देह होने लगा, कि कल भी कीर्त्तिनगरकी ब जगह मिलेगी। वैसे तो सभी जगहोंपर, जहाँ सरकारी बसें नहीं चलतीं, मुसा फिरोंको हर तरहकी तकलीफके लिए तैयार रहना चाहिए; किन्तु भूतपूर्व टेहरी रिसायतके क्षेत्रमें चलनेवाली बसें तो इसके बारेमें सबका कान काटती हैं। यात्रियों तथा बदरीनाथ-मंदिर-समितिने बहुत प्रार्थना की, प्रस्ताव पास कि

ुर (टेहरी) की स्त्री (पृष्ठ ४०८)

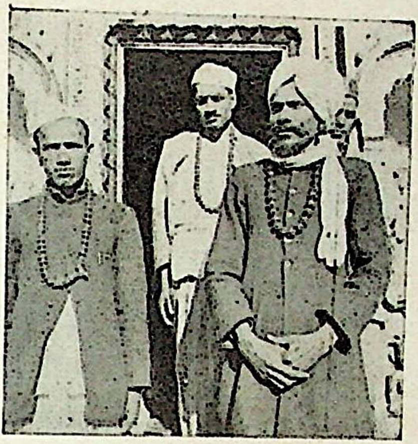

२. गुप्तकाशी–पुजारी (पृष्ठ ४१९)

ाला–शिवालयके पास बौद्ध स्तूप
(पृष्ठ ४२०)

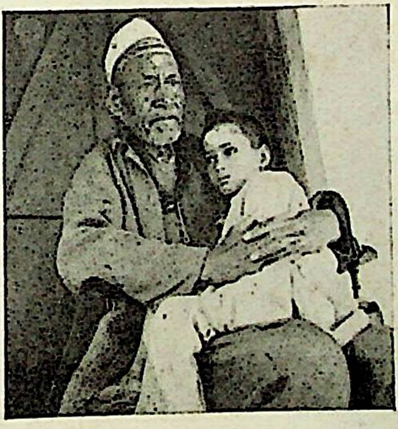

४. केदारनाथ–पंडा काशीनाथजी
(पृष्ठ ४२७)

प्रदेशकी सरकारके मंत्री महोदयके पास गाय-गोहार पहुँचाई; किन्तु के कान पर जूँ तक भी रेंगती नहीं मालूम हुई। वसके मालिक दरवारमें र अच्छी हाज़िरी दे आते हैं और मामला वहीं-का-वहीं रह जाता है। हमने को ऊपरी क्लासके लिए जगह रिज़र्व करवाई, किन्तु सवेरे लम्वे क्यूमें खड़े र मालूम हुआ कि उस रिज़र्वेशनका कुछ भी नहीं हुआ! खैर, हमने अपने को सराहा, जव कि ठसाठस भरी वसमें निचले दर्जेमें भी वैठनेके लिए मिल गई। यह ४ तारीखकी वात थी।

ऋषिकेश पहुँचनेपर पहले तो कहीं पैर रखनेकी अवश्यकता थी। एक सूरीकी शीतल आवोहवासे जलती भट्ठीमें आए थे, ऊपरसे ऋषिकेश अपने रोंके लिए कम वदनाम नहीं है। हम बेकारका वहुत-सा विस्तरा लाद लाए थे, नमेंसे केवल एक कम्वल और दरीकी ही आवश्यकता पड़ी। केदारनाथ और नाथमें सर्दी अवश्य होती है; किन्तु वहाँ पंडोंके पाससे या किरायेपर कम्वल, विछौना आदि मिल जाते हैं और उन्हें वहुत मैला भी नहीं कहा जा सकता। मको अपने साथ मसहरी जरूर लानी चाहिए थी, जो दिनमें मक्खियोंके णसे और रातमें मच्छरोंसे रक्षा करती। सो वही हम भूल आए।

ऋषिकेश कभी दस-पाँच घरोंका एक गामड़ा था, किन्तु अव तो वह याके भी कान काटता है। हनूमानजीकी सेना भी वहाँ संख्यामें रामजीकी कम नहीं हैं। विजली आ गई है और हनूमानजीकी सेना अपनी से वाज नहीं आती, इसलिए कूदते-फाँदते उनमेंसे कुछ तो मर जाते हैं और मर तुड़वाकर घसिटते रहते हैं। भगवानके भक्त उनकी सुध नहीं। पंजाव-सिंध-क्षेत्रमें एक ऐसे ही महावीर पड़े हुए थे, जो अपने कुरेद-कुरेदकर सूखने भी नहीं देते थे, किंतु साथ ही यात्रियोंको पुण्य का मौका भी देते थे। ऋषिकेशमें कालीकमलीवाला और पंजाव-सिन्ध क्षेत्र हैं। दोनों ही वहुत पुराने हैं। जव मैं ४१ वरस पहले वहाँसे गुज़रा भी ये मौजूद थे, किन्तु उस समय इनकी अवस्था सुदामाकी मड़ैयासे नहीं थी। अव तो वह दूर तक फैले प्रासाद दिखाई पड़ते हैं। नगरका भाग इनके ही हाथमें है। वुरा सौदा नहीं है, यदि वैयक्तिक लाभकी जगह म्पत्तिसे समाजको लाभ उठानेका मौका मिलता हो। कालीकमलीवाले उत्तराखंडमें सैकड़ों शाखाएँ हैं, और उनके संरक्षक अधिकतर मारवाड़ी सेठ हाँ सेठों या सदावर्त्त खानेवालोंके ही सत्कार या दुत्कारका प्रवन्ध है। दोनोंमेंसे एक भी नहीं चाहते थे, इसीलिए हमने अपना डेरा पंजाव-सिन्ध-

क्षेत्रमें ही रखना चाहा। दफ्तरमें जाते ही नाम-गाँव लिखवानेकी ज़रूरत उसमें तो कोई उज्र नहीं था; किन्तु जब बापका नाम पूछा जाने लगा, साफ़ इन्कार कर दिया। अन्दाज़ तो मालूम होने लगा कि ठौर न ऋषिकेशमें किसी होटलका भी पता नहीं लग रहा था। बेचारे क्षेत्र पास जो पुराना छपा हुआ रजिस्टर था, उसमें बापका खाना भी था। समयसे यही क़ायदा चला आता था। दुनियामें और जगह पासपोर्टमें नाम लिखानेकी ज़रूरत नहीं होती, लेकिन भारतीय पासपोर्टमें अब भी बापका नाम लिखाना ज़रूरी है। खैर, प्रबन्धकने मुझे टससे मस न बापके खानेको सूना ही रहने दिया और एक कोठरीमें जगह दे दी। कोठरी ही मुझे उस समयकी गर्मीके साथ-साथ रातकी मच्छरोंकी पल्टन याद लगी। चाहता था, छतपर कहीं जगह मिलती; किन्तु हनूमानजीकी सैनिक भी वहाँ मौजूद थे, जो बहुत दिनोंसे अभ्यस्त होनेके कारण अब भी हो गए हैं। मैंने सामान कोठरीमें बन्द किया, और फिर टिकटके निकला।

इस यात्राका निश्चय सात-आठ महीनें पहले हुआ था। उस वक्त मित्रोंने साथ चलनेका आग्रह किया, कि चार-पाँचपर पहुँचकर मुझे नाम को बन्द कर देना पड़ा। लेकिन अब जब मसूरीसे प्रस्थान करने लगा, तो से सभी किसी-न-किसी काममें व्यस्त थे, इसलिए मुझे अकेले ही निश्चित चलना पड़ा। वैसे मैंने आगे चलकर एक कुली रखनेका निश्चय कर किन्तु अभी तो अकेला था, और यात्रामें एकसे दोका रहना अधिक होता है। मैं ऋषिकेशके गली-कूचोंका चक्कर काट रहा था, उसी उत्तरी सीमा-प्रान्तके एक वृद्ध शरणार्थी भाटियाजी मिल गए। ७० ऊपर पहुँचकर भी अभी वे हट्टे-कट्टे थे और सिरपर पटेवाले बाल तथा सोनेके कुंडलको पुरुषका आवश्यक चिह्न मानते थे। बड़े सत्संगी उन्होंने मुझसे भी कहा कि गंगा-पार गीता-भवनमें चलें, वहाँ कलियुगके भक्तों—पोद्दार और गोयंदका—के सत्संगका लाभ उठायें। मैंने मेरा इतना भाग्य कहाँ कि सन्त-वाणीसे अपने कानोंको पवित्र कर भाटियाजीका आग्रह रुका नहीं, तो घुमा-फिराकर कहना पड़ा कि सेठ पहले तो थैलीपर हाथ साफ़ किया, फिर राज-काजपर और अब उन्होंने गद्दी भी सम्हालानेका निश्चय कर लिया है! मैंने भाटियाजीके आकर बड़ी नम्रताके साथ कहा था, इसलिए उन्हें बुरा नहीं लगा।

उन्होंने हमारे साथ यात्रा करनेकी भी इच्छा प्रकट की। उनका सामान उठवाए हम सिंध-पंजाव-क्षेत्रमें पहुँचे। पहले तो वहाँ 'धोवी वसिके का करे रके गाँव' वाली वात हुई थी; किन्तु इस समय आफ़िसमें जानेपर एक वहुत त उच्च कांग्रेसी नेता वहाँ विराजमान थे, जिनकी पंचोपचारसे पूजा हो थी। वे मुझे देखते ही उठ खड़े हुए और वड़े सम्मानसे प्रणामापाती करने । अव तो दफ्तरमें विजली-सी दौड़ गई। मुख्य प्रवन्धक भी अवकी वहाँ थे। उन्होंने तुरन्त आदमी भेजकर एक अच्छी कोठरी खुलवाई। छतके कहनेपर उन्होंने वहीं दरी, चारपाई, लालटेन, लोटा, वाल्टी आदिका स्वयं जाकर कराया। वैसे १९४३में भी मैं दो-चार दिनके लिए सिंध-क्षेत्रमें ठहरा था और वहाँके लोगोंके सौजन्यसे प्रभावित था; लेकिन तो वह पराकाष्ठा तक पहुँच गया था। छतपर हवा भी चल रही थी। सामान नीचे कोठरीमें वन्द कर दिया था। हनूमानजीकी सेना जूतोंको हीं छोड़ती, इसलिए जूतोंको हमने विछौनेके नीचे दवा दिया। रातको ारामसे सोए। सिंध-पंजाव-क्षेत्र, जैसा कि नामसे प्रकट है, सिंधी और सेठोंकी दानशीलताका प्रतीक है, जिनमेंसे अधिकांश अव शरणार्थी होकर में जहाँ-तहाँ गुज़ारा कर रहे हैं। उनकी आर्थिक अवस्था अव अच्छी है, किन्तु यहाँके कर्मचारी नम्रता और सेवाभावमें अव भी पहले ही हैं।

मईको कीर्त्तिनगरका टिकट लेकर हम वसमें वैठ गए। भाटियाजीको गमें पिंड-दान करना आवश्यक था, इसलिए वे वहाँ उतरनेवाले थे। समझा था, यह वस सीधे कीर्त्तिनगर तक जायगी, किन्तु देवप्रयागमें हुआ—उतरो, उतरो, यह वस आगे नहीं जायगी। पीछे उतरे सामानको फिर उसी वसपर चढ़ना पड़ा। वसवालोंकी मनमानी जो ठहरी। आदमी कष्टको वहुत वढ़ा-चढ़ा सकता है, यदि 'गतं न शोचामि'का महामन्त्र पास न रहे। यात्रामें भारतके सभी प्रदेशोंके नर-नारी श्रद्धाकी डोरसे नातन हिमालयकी ओर खिंचे जा रहे थे। कीर्तिनगर ढाई वजेके क़रीब । वड़ी धूप थी। यह स्थान १५-१६ सौ फुटसे अधिक ऊँचा नहीं है, इस-ओंकी परेशानीका क्या कहना। यहाँसे गंगा पारकर तीन मील पैदल चलनेके नगर पहुँचना था, जहाँ आगेकी मोटर मिलनेवाली थी। गंगाकी यह वड़ी सहस्राब्दियोंसे मनुष्यके दुष्प्रयत्नोंके कारण वन-हीन हो गई है और हरियालीके लिए आँखें तरसती हैं। सामान ढोनेके लिए वसके पास

वहुत-से नर-नारी छीना-झपटी कर रहे थे। हमने भी एककी जगह दो को ठीक किया। हमारा सिद्धान्त है, किराया पहले ठीक कर लिया कुछ किफायतके साथ, किन्तु मजूरी देते वक्त उदारतासे हाथ नहीं खींचना उस धूपमें वह तीन मील वड़ा ही दुस्सह था। हमने पानीकी वोतल भी रखी थी, किन्तु पानी भरकर लटकाना भूल गए थे। सामान अछूत लिए जा रही थीं। उनका गाँव रास्तेमें पड़ा, किन्तु पानी वहाँ भी पीने मिला। आगे एक प्याव देखकर प्राण लौटा। पानी गरम था, किन्तु उस तर किया जा सकता था।

१८९३ ई०में गंगाकी एक शाखा (विड़ही गंगा)में पहाड़का एक टूटकर गिर पड़ा। धार साल-भरके लिए वन्द हो गई और वहाँ एक जलाशय वन गया। अंगरेजी काग़ज़ोंमें पढ़ते हैं, कि तत्कालीन अंगरेज नियरने अपनी विद्याका वड़ा ही चमत्कार दिखाया था। जिस महीने टूटनेकी उसने भविष्यद्वाणी की थी, उसी समय वह टूटा। लेकिन कुछ वृद्ध अव भी मौजूद हैं, जो दूसरी ही कथा कहते हैं। प्रसिद्ध चित्रकार मोला प्रपौत्र वालकरामका कहना है कि अपनी भविष्यद्वाणी सत्य करनेके लि नियरने डाइनामाइट लगाकर वाँधको तुड़वाया। न तुड़वाता तो कुछ वाद अपने ही पानी ऊपरसे और शायद कुछ कम वेगसे निकलता। वाँध कमजोर नहीं था और अगस्त १८९४की प्रलयकारिणी वाढ़के वाद भी ही फुट वह सका। गोहनाकी झीलकी अपार जलराशि अव भी वहाँ है। सत्य जो भी हो, किन्तु भविष्यद्वाणीके आधारपर गंगाके किनारे प्रहारकी सीमाएँ निश्चित करके वहाँ निशान लगा दिए गए थे, जिसके मनुष्योंकी अधिक हानि नहीं होने पाई; किन्तु ग्रामों और नगरोंकी पूछिए। श्रीनगर साफ हो गया और उसके साथ पुरातत्वकी ही महत्वपूर्ण वहाँके प्रासाद भी साफ़ हो गए—वे प्रासाद, जिनको देखकर लेखकोंने लिखा था—'कैसे इन विशाल पाषाणोंको उठाकर यहाँ पहुँचाया इसका उत्तर लोग देते थे—असुरोंने इन पत्थरोंसे दीवारें चिनी थीं। होनेकी वजहसे कमलेश्वरका मन्दिर वच गया, लेकिन वहाँ सभी चीजें केवल कुछ पुरानी खंडित मूर्तियाँ हैं, जिनमें एक वूट धारिणी सूर्य-मूर्ति कमलेश्वरके दर्शनकर श्रीनगरके पास पहुँचे, तो सड़कपर लकड़ी रखकर वन्द किया हुआ था—हैजेका टीका लगाए विना किसीको आगे वढ़नेकी नहीं थी। मसूरीमें दो दिन हमने जाकर टीका लगवाया था और प्रमा

ाए थे, लेकिन यहाँ ढूँढ़नेपर वह हाथ नहीं आया। अब फिर तीसरी बार गवानेके सिवा कोई चारा नहीं था।

तोंका अच्छा प्रबन्ध हो जानेसे अब यात्रियोंकी काफ़ी संख्या हर साल ती है, जो कभी-कभी ५०-६० हज़ार तक पहुँच जाती है। मैंने समझा था, हो जानेसे पैदलके यात्री नहीं मिलेंगे—ऋषिकेशसे पैदलका रास्ता कर मिला था। मालूम हुआ, अब भी २०-२५ प्रतिशत यात्री किराया चुकानेमें असमर्थ होनेसे पैदल ही सफ़र करते हैं। कितने ही आटा-सत्तू भी साथ लाते हैं, और पहाड़की चढ़ाईमें, जहाँ खाली शरीर भी मुश्किल है, अपना बोझा सिरपर लादे चले जाते हैं। मैंने गढ़वालके डके अधिकारियोंको लिखा था कि अपने डाकबँगलोंमें ठहरनेकी इजाज़त यहाँ उनका उत्तर आया कि डाकबँगले लोककार्य-विभागके अधीन हैं, इंजीनियरको लिखना चाहिए। देर हो चुकी थी, इंजीनियरको लिखा न्तु उन्हें जवाब देनेकी फ़ुर्सत नहीं हुई!

२. श्रीनगरसे आगे

नगरमें कोई पुरानी चीज नहीं है। आजका नगर तो १८९४की भीषण बाद बसा। यहाँ देखनेकी कोई चीज भी नहीं थी। यद्यपि यह समुद्र-०० फुट ऊँचा है, किन्तु गर्मी काफी पड़ती है। हमें प्रसन्नता हुई, जब ल बलबहादुरके साथ मोटर-बसमें बैठकर पौने दो बजे यहाँसे रवाना र पहाड़में सभी जगह मोटरें एक-ओरा हैं, जिससे दुर्घटनाओंकी कम रहती है। हमें रुद्रप्रयाग जाना था। रास्तेमें एक जगह दोनों ओरकी मेल हुआ और ५ बजेके आसपास हम रुद्रप्रयाग पहुँच गये। उत्तराखंडमें ज काशियों और प्रयागोंकी भरमार है, किन्तु यह सब लक्ष्मी-भक्तोंका । कहनेको गढ़वालमें पाँच प्रयाग हैं, किन्तु उनकी संख्या दूनीसे है। अलकनन्दा और भागीरथीमें जहाँ भी कोई नदी या गधेड़ा ता है, यदि वह यात्रापथसे बहुत दूर नहीं है, तो वहाँ प्रयाग बन जाता यागका पुराना नाम पुनाड है। मोटर-अड्डा अलकनन्दाके बायें किनारे-दुकानें दोनों तरफ़ हैं। केदारनाथसे आनेवाली मन्दाकिनी और बदरी-आनेवाली अलकनन्दाका यहाँ संगम है। केदारनाथका मार्ग काफी न्दाकिनीके बायें तटसे जाता है, इसलिए यात्रियोंको केवल अलकनन्दा-पार करना पड़ता है। श्री खड्गसिंहने बतला दिया था, कि स्वामी

सच्चिानन्दके यहाँ ठहरिएगा, वह उत्तराखंडसे वहुत परिचित हैं, उनसे
वातें मालूम होगी।

आवश्यक चीजोंकी पहलेसे ही सूची वनाकर यात्रापर प्रस्थान करना
नहीं तो कितनी ही चीजें छूट जाती हैं। हम वरसाती तो लाये थे, किन्तु
लाना भूल गये थे। यहीं एक छत्ता खरीदा, कुछ मोमवत्तियाँ और दिया
ली और फिर स्वामी सच्चिदानन्दजीके आश्रममें पहुँचे। स्वामीजी प्रज्ञाचक्षु
हीन) हैं, अच्छे पठित संस्कृतका काफी ज्ञान रखते हैं। वृद्ध हैं, इसलिए
करनेके रसिक होने ही चाहिये। वह मंदिरमें वैठे हुए थे। किसी अनुचरने
कहा कि एक धोती-कुर्त्ता पहने वावू यात्री आया है। मुझे तो रातके
अवश्यकता थी, चाहता था, टिकान मिल जाय, तो वलवहादुरको
वनानेमें लगा दूं। लेकिन, स्वामीजीने जो वात शुरू की थी, उससे मालूम
कि शायद उसका छोर ही नहीं मिलेगा। मैंने संक्षिप्त करनेके ख्यालसे
तीन मर्तवे संस्कृतमें वात छेड़नी चाही, किन्तु स्वामीजी भाखा छोड़नेके
तैयार नहीं थे। अन्तमें सड़कके पासवाले चौवारेमें जगह मिली। मैं कोई
साहूकार तो था नहीं, कि मुझसे कोई आशा हो सकती थी, लेकिन मैं
खुश था।

स्वामी सच्चिदानन्द पुरुषार्थी हैं, और लोकसंग्रह करना जानते हैं।
कम इस इलाकेका उन्होंने वहुत उपकार किया है। उनके ही प्रयत्नसे यहां
अंग्रेजी हाई स्कूल, जो कि अव उच्च-माध्यमिक स्कूल है, सफलतापूर्वक चल
है। इस गरीव भूमिमें विद्याकी यह शीतल छाया खास महत्त्व रखती है।
एक संस्कृत पाठशाला और कन्यापाठशाला भी खोल रखी है। मन्दिर
अच्छे मकान भी वनवाये हैं। जान पड़ता है आजकी देशव्यापी आर्थिक
का प्रभाव इस मठपर भी पड़ा है। शामके वक्त जव सड़कसे यात्री आने
वृद्धा संन्यासिनीने सीढ़ीके ऊपर वैठकर लोगोंको पूजा-दर्शनके लिए वुलाना
किया, ठीक वैसे ही जैसे तीर्थोंके पंडे-पुजारी करते हैं। स्वामी सच्चिदानन्दके
के यह अनुरूप नहीं था। उत्तराखंडके वारेमें स्वामीजीसे वही वातें मालूम हो
थीं, जो कि किसी भी अठारहवीं सदीके वृद्धसे सुनी जा सकतीं। कुछ ही
पहले प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी गंगेश्वरानन्द इधरसे गये थे। मैंने समझा
एक प्रज्ञाचक्षु प्रतिभाशाली विद्वान्का परिचय पाकर स्वामी सच्चिदा
प्रसन्नता हुई होगी, इसलिए उनके वारेमें पूछा। जिसपर उन्होंने शेखी
शुरू की—मैंने उनको शास्त्रार्थके लिए चैलेंज दिया था, लेकिन वह सामने

। स्वामी गंगेश्वरानन्दजीने अपनी एक पुस्तकमें स्वामी शंकराचार्यके मतको
तिक कहा है, इसे भला शंकरके अनुयायी कैसे वर्दाश्त कर सकते थे । वह तो
मतके संस्थापकको आठवीं सदीका एक दार्शनिक-सुधारक माननेके लिए तैयार
हैं, लेकिन इतिहास तो यही मानता है । खैर, वलवहादुरने रोटी तरकारी
। प्याज विना आलूकी तरकारी स्वादिष्ट नहीं वनती, किन्तु "उत्तरे
भोजनं" द्वारा धर्मशास्त्रने जहाँके लिए मांसभोजन परमविहित किया है,
वहाँ ब्राह्मणोंसे लेकर सभी मांस खाते भी हैं, उसी उत्तराखंडमें चट्टियोंपर
याज ढूंढ़नेसे नहीं मिलती ! सेठों और उनके अनुयायी प्याज खाना बुरा
हैं, इसलिए दूकानदार उसे रखते नहीं ।

मईको पाँच वजे सवेरे ही उठे । धूपमें चलना हमें पसन्द नहीं है । यह
ही था, कि हर मील-डेढ़-मीलपर चट्टी और दूकानें हैं, जहाँ खानेका सामान
ता है और चाय भी । चायको तो न पीनेका हमने संकल्प कर लिया था,
एक ही पत्ती सवेरेसे शामतक उवलती रहती है, ऐसी चाय पीनेमें स्वाद
इसके साथ ही चट्टियोंमें मक्खियोंकी भरमार रहती है, जिससे यह भी
होता है, कि चाय-जलमें दो चार मक्खियोंका भी अरक उतरा होगा ।
निश्चय किया था, कि ९से ३ वजेतक चट्टीपर विश्राम करना चाहिये ।
चट्टियोंको छोड़ते आगे वढ़े । दही और छाछके प्रति हमारा कुछ अधिक
है, किन्तु यह दोनों चीजें इधर सुलभ नहीं मालूम हुईं । दूध सभी जगह सुलभ
निर्जल दूध शायद ही कहीं मिले । पहली एक दो चट्टियोंपर पके केले
ीते भी थे । हमने अनुमान कर लिया, कि वह सभी जगह मिलेंगे,
धारणा गलत निकली । तिलवड़ा चट्टीके पास पहले पहल पुराने मंदिर
पड़े । मंदिर सूने हैं । इन छोटे मंदिरोंके पास कभी कोई वड़ा मंदिर
ा, जिसका पता नहीं । यहाँकी मूर्त्तियाँ कहाँ गईं यह भी नहीं मालूम ।
मंदिर कत्यूरीकालके दसवीं-तेरहवीं शतीके हैं, इसमें सन्देह नहीं । दो
मील चलकर ७ वजे हम रामपुर चट्टी पहुँच गये । चाय-वाय पीये नहीं
ए यहाँ मध्यान्ह-भोजन और विश्राम करनेका निश्चय किया । दूकान-
ण देवता कुछ पढ़े लिखे मालूम होते थे, उनसे आसपासके गाँवोंके पुराने
वारेमें हम कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे । पासके एक छोटेसे मंदिरमें
गरुड कार्तिकेयकी मूर्ति तथा दूसरी भी द्विभुज मूर्ति थी, जो वतला रही
वहाँ कत्यूरीकालमें कोई मंदिर रहा होगा । आगे दलनंग चट्टीमें भी सड़कके
मंदिरमें कुछ पुरानी मूर्तियाँ हैं । पुजारी इसको भी कोई ज्योतिर्लिंग

महादेव वनानेके लिए उतारू हैं। नाक-कान टूटी मूर्तियोंको देखकर जव पूछा, क्या रुहेलों (१७४१-४२ ई०) ने इन मूर्तियोंकी यह गत वनाई, तो जवाव मिला—रुहेले आये थे यहाँपर, लेकिन शिवजी महाराजने भँवरे छोड़ जिनसे वह भाग गये। भागना तो गलत है, सारे उत्तराखंडमें टूटी-फूटी मू मिलती हैं, जो वतलाती हैं, कि रुहेले संपत्ति लूटने ही नहीं मूर्तिभंजनका भी लूटनेमें सफल हुए थे।

दोपहरमें काफी विश्राम करके हम आगे रवाना हुए थे। आज इरादा था मील चलकर अगस्तमुनिमें विश्राम करनेका। वलवहादुरको कह भी दिया किन्तु रास्तेके मंदिरोंको देखनेमें जव हम व्यस्त थे, तो वह आगे वढ़ गया। मुनिमें भी एक हाई स्कूल वन रहा था। यहाँ एक मैदान है, जिसमें छोटा मोटा हवाई जहाज उतर सकता है। वैसे होता तो इसे धानके परिणत कर दिया गया होता, किन्तु देवताका स्थान है, उसके डरके मारे कोई वढ़ाना नहीं चाहता। अस्गतमुनिकी मूर्त्ति दो भुजावाली तथा धातुकी देखनेमें भद्दी मालूम होती है। लेकिन मंदिरके वाहर दाहिने ओरके हरगौरीकी सुन्दर मूर्त्ति चिपकाई हुई है। और भी मूर्तियाँ रही होंगी, खंडित मूर्तियोंकी पूजा तो होती नहीं और उनके प्रेमी तथा व्यवसायी पिछले वर्षोंसे पीछे पड़े हुए थे, इसलिए वह अधिक देखनेमें नहीं आतीं, तो आश्चर्य वात नहीं है।

इधर पूछापेखी करनेपर पता लगा, कि अगस्तमुनिसे नदी पार हो मीलपर शिल्ला गाँवमें दो वड़े और कुछ छोटे-छोटे प्राचीन मंदिर हैं। रुहेले भी पहुँचे थे, किन्तु पूजा अव भी होती है। इस साल टिड्डियोंका प्रकोप हिमाल उपत्यकाओंमें भी हुआ था। केदारनाथके वरफमें भी मैंने कितनी ही टिड्डियाँ देखीं और उससे ६ मील नीचे तो जीवित भी कुछ फुदक रही थीं। यहाँ दस-पंद्रह मीलमें उन्होंने नुकसान नहीं किया था और फसल अच्छी हुई इसलिए शिल्लामें एक वड़ा यज्ञ हो रहा था, जहाँ व्रह्मभोजके अतिरिक्त अन्न और घी आगमें स्वाहा किया जा रहा था। देवताकी कृपासे रक्षा हुई इसलिए कृतज्ञता प्रगट करनी ही चाहिये, चाहे उसमें मनुष्यके मुखका दुर्लभ आ भले ही नष्ट हो जाये। अन्नके नष्ट करनेका अपराध किया जा रहा था, किन्तु कानूनको कौन पूछता है?

६ वजे शामको हम सौड़ी चट्टी पहुँचे। यात्रियोंकी भीड़ नहीं थी, लिए यहीं रात्रि-विश्रामका निश्चय कर लिया।

चंद्रापुरी वड़ी चट्टी आगे दो ही मीलपर थी, जहाँ हम ७ मईको ६ वजेसे पहले पहुँच गये थे। चाय पीनेका मन करनेके कारण हमें कुछ कठिनाई अवश्य हो थी और ख्याल आता था कि यदि हम चार जने सहयात्री होते, तो अपनी उबलवाकर चाय बनवा लेते। जल-पानके लिए कहीं कहीं कुछ मिठाइयाँ ती थीं, किन्तु वह भी अच्छी नहीं थीं। साढ़े चार मील चलनेके वाद मंदा-के झूलेके पुलके पास भीरी चट्टी मिली। आगे चलनेका इरादा था, किन्तु लग रहा था, वलवहादुर कहीं वहक न जाये। पश्चिमी नेपालका वह हिन्दी तो समझ लेता था, किन्तु निश्चय नहीं था, कि हमारे कहनेका वह पालन भी कर सकेगा। यहाँ पर पुल पारकर रास्ता मंदाकिनीके दायें रेसे चल रहा था, इसलिए पुलपर प्रतीक्षा करनेके लिए रुक जाना पड़ा। में डाकघर है, किन्तु हमें तो कोई चिट्ठी मिलनेवाली नहीं थी। मूर्ति और के वारेमें पूछनेपर एक वृद्धने वतलाया कि यहाँ भीमसेनका देवालय है, के ही कारण इस स्थानका नाम भीरी पड़ा। उनसे कौन वहस करने जाये, भीरी और भीमसेनका कोई संवंध नहीं है। भीमसेनकी मूर्ति विल्कुल भद्दी आधुनिक है, लेकिन उसके पास हीमें दो फुट ऊँची विष्णुकी प्राचीन मूर्ति है।

दोपहरका भोजन हम कुंड चट्टीमें वितानेके लिए पहुँचे अर्थात् सवेरेसे ८ चले गये। कुंड क्यों नाम पड़ा, यह समझमें नहीं आता, यहाँ कोई जलकुंड है। हाँ, मंदाकिनीकी धारमें निर्भय उतरा जा सकता है। पानी तो ठंडा था, हफ्तेमें एक दो दिन स्नान करना भी आवश्यक था, इसलिए जाकर स्नान । यात्रियोंमें जहाँ कितने ही गरीव पैसेके अभावसे पैदल चलके घरसे लाये आटेको खाकर गुजारा करते थे, वहाँ कितने ही ऐसे भी लक्ष्मीके लाडले थे, जो हन हो आराम कुर्सीकी तरह झम्पानोंपर वैठे हुए चल रहे थे। चोरवाजारी के लिए यह वहुत सुनहला अवसर था, चाहे कितना ही पैसा खर्च करें, कोई वाला नहीं था कि वह कहाँसे आया। एक सेठानी तो इतने नौकर-चाकरोंके आ रही थी, जैसे किसी समय महारानियाँ चला करती थीं। वस्तुतः आज ठानियोंके सामने महारानियाँ फीकी हो गई हैं। नदीके किनारे उनके नौकर सेठ-सेठानीके कपड़ोंको सावुनसे धोते धोवीघट्टा वनाये हुए थे, इसलिए भड़-खाभड़ जगहमें जाकर हमें स्नान करना पड़ा।

वलवहादुर भोजन अच्छा बना लेता था। दोपहरको हमने दाल-भात-री खानेका क्रम रखा था और रातको केवल रोटी-तरकारी। मक्खियोंके फत थी। दालमें पड़ जायँ तो खाना हराम हो जायँ और लेटें तो नींद हराम

कर दें। साढ़े नौ बजेसे सवा तीन बजेतक हमें यहीं विताना था। कल कुछ भद्रपुरुष और महिलाएँ यात्रामें जा रहे थे। एक भद्रपुरुषके पैरके जूतेने काट लिया था, जिससे वह नंगे पैर चलनेके लिए मजबूर हो गये। वतलाया कि तलवा कट जानेपर चलना मुश्किल हो जायगा। चप्पलके गुजारा नहीं चल सकता था, लेकिन यहाँ दूकानोंमें कपड़ेका जूता ही मिलता मेरे पासका चप्पल केवल चट्टीपर पहननेमें काम आता था, मैंने उसे दे दिया, भद्रपुरुष उसे विना वदलेके लेना नहीं चाहते थे। मैंने उन्हें अपना दर्शन लाया : मनुष्य हरेक उपकारका प्रतिउपकार उसी व्यक्तिको नहीं दे सकता: समय अच्छा है, यदि हम यह समझ लें कि उपकार हमें मानवताकी ओरसे मि है और प्रत्युपकार भी हम विशाल मानवताके किसी व्यक्तिके प्रति कर सकते हैं।

३. गुप्तकाशीसे आगे

कुंडसे गुप्तकाशी ढाई मील है, जिसमें अन्तिम डेढ़ मील चढ़ाईके हैं। यहाँ छोटी-छोटी चढ़ाइयोंमें भी किरायेके घोड़े मिल जाते हैं, लेकिन मुझे उसकी आ कता नहीं थी। गुप्तकाशी भी नया दिया हुआ नाम है, इसका पुराना नाम ही है। ७ मईको जब हम गुप्तकाशी पहुँचे, तो अभी दो-ढाई घंटा दिन था। अभी हम आसानीसे तीन चार मील और चल सकते थे, क्योंकि उतराई और समतल भूमिका था। लेकिन गुप्तकाशीमें हमें कुछ पुरानी मूर्ति पता लगाना था। यह अच्छा खासा बाजार है, जिसमें तीससे अधिक और उतने ही और घर हैं। दूकानें चट्टियों जैसी सिर्फ खाने पीनेकी ही न वल्कि लालटेन, शीशा, टार्च आदि जैसी चीजें भी वहाँ काफी मिलती हैं। घुसनेसे पहले ही पंडे लोगोंने आ घेरा और जिला तथा गाँव-ठाँव पूछने मैं तीर्थयात्राके लिए नहीं आया हूँ, यह कहनेपर भी पिंड छूटनेवाला नहीं कुलीके आनेमें देर थी, मैंने पहले ही मंदिर और मूर्तियोंके फोटोसे निवृ लेना चाहा। एक आँगनमें दो छोटे वड़े मंदिर हैं, जो कि पुराने नहीं हैं। मंदिरके सामने एक छोटे कुंडमें दो धाराएँ गिरती रहती हैं। मंदिरों कोई उतनी पुरानी चीज नहीं हैं, किन्तु बगलके उसारेमें पांडवोंके नामसे जानेवाली खंडित मूर्तियाँ काफी प्राचीन हैं। प्रधान मंदिरके दरवाजेके दोनों तरफ चतुर्भुज विष्णु और शिवकी मूर्तियाँ गंगा-जमना वना दी गई हैं पंडे लोग लिंग-भेद करना नहीं जानते।

अभीतक हम विना पंडेवाले यजमान थे, लेकिन हम पंडा-प्रथाके वि

हैं, क्योंकि जानते हैं कि अपरिचित दूरदेशीय तीर्थ-यात्रियोंकी इनके द्वारा सहायता होती रही है। काशी, मथुरा जैसे नगरोंमें तो बेचारे यात्री लुट जाते, पंडोंकी आत्मीयता उनकी सहायक न होती। हमने निश्चय किया, को पंडा बनायें, लेकिन शर्त यह रखी कि वह ७० वर्षसे कमका न हो और इतिहास-भूगोलकी अच्छी जानकारी रखता हो। यह गुण केदारनाथके पंडा लाथात्मज श्रीकाशीनाथमें मिला। वह ७८ वर्षके लूवानी गाँवके रहनेवाले वी (बगवाड़ी) भारद्वाज-गोत्री थे। इस उम्रमें भी उनकी स्मृति गजबकी थी। तहसील (ऊपरी सतलज) के एक-एक गाँवका उन्होंने नाम बतलाया। उनके ते सौ वर्षसे अधिक पुराने नहीं थे। हमारे आजमगढ़ जिलेके भी बहुतसे उनके यजमान थे, किंतु वहीमें न हमारा जन्मग्राम निकला और न पितृ-। उन्होंने बतलाया, रुहेले लूटते-पाटते आगे मस्ता गाँव तक गये। वह थ भी जाना चहते थे; लेकिन शिवजी महाराजने इतने पत्थर बरसाये, कि गना पड़ा। काशीनाथजीने एक दूकानके ऊपर रात्रिके रहनेके लिए दिलवाया, लेकिन इसी समय उत्तराखंडके विद्यापीठके एक अध्यापक तथा सरे अधिकारी आ पहुँचे। राहुल सांकृत्यायनका नाम तो उन्हें मालूम था, लेकिन यह जरूर जान पाये कि यह कोई पढ़ने लिखनेवाला आदमी है। ब मजबूर होकर मंदिरकी अतिथिशालामें जाना पड़ा। अतिथिशाला नी हुई है, और जान पड़ता है, कि किसी विशेषज्ञकी सलाह लेनेकी कता नहीं समझी गई। दरवाजे खिड़कियाँ सभी भद्दी बनी हुई हैं और कसे लगती भी नहीं है। गुप्तकाशीके मंदिर केदारनाथके रावल—
—के आधीन है। केदारनाथ और बदरीनाथ तथा उनसे संबंधित सभी का प्रबन्ध अब एक प्रबंध समितिके आधीन हैं। प्रबन्ध समितिने मंदिर-दनीका सदुपयोग करनेका प्रयत्न किया है और उसीका फल यह अतिथि-है।

रनाथके रावल कर्णाटक देशके वीर-शैव संप्रदायके हैं। पहले तो नसे संबंधित सभी प्रधान मंदिरोंमें दक्षिणके जंगम साधु पुजारी हुआ करते तु अब उतने साधु नहीं हैं। तो भी गुप्तकाशीके विश्वनाथके पुजारी डभाषी शैव साधु हैं। उनसे कुछ बातें मालूम हुईं, किन्तु यह पता सका कि केदारनाथके मंदिरोंमें दक्षिणके वीर शैवोंका अधिकार था।

रे (८ मई) भोजन करके १० बजे चलनेका निश्चय किया गया

था। पंडाजीने फिर अपने सत्संगका अवसर दिया। फोटो लेते वक्त पौत्र भी उपस्थित थे। वह वतला रहे थे: हमारे लड़कपनमें रास्ता वहुत कठिन था। इतने पुलोंका इन्तजाम नहीं था। वाप दादोंसे सुना था मुश्किलसे सौ-पचास यात्री सालमें इधर आया करते थे। हमारे समयमें आटा चावल रुपया मन, मडुवा ८ आना मन और घी साढ़े चार आना सेर था।

गुप्तकाशीसे एक मीलकी उतराईपर नाला चट्टी मिलती है, जहाँ नाथका रास्ता भी आ मिलता है। नाला चट्टीके आसपासके खेत ही थे, कि यहाँ प्राचीन कालमें वड़ी बस्ती रही होगी। कत्यूरीकालका पुराना मंदिर अब भी मौजूद है, जिसमें रुहेलों द्वारा खंडित वहुतसी रखी हैं। कोनेवाले छोटे मंदिरके दरवाजेके ऊपर चार पंक्तियोंका एक कालीन शिलालेख है, जो शाके ११६८ (१२४६ ई०) का लिखा लेख श्लोकवद्ध है, जिसके कुछ वाक्य हैं—

"स्वस्ति। श्रीदेवी...नुमः:।...मनसा कर्मण वाचा...। प्रसादेन मणदेवस्य...। पुण्यकर्मभरादेव करिष्यन्ति सुरालयं..। मुक्ति-फले तस्य...,सरस्वतीप्रसादेन घटिता प्रतिमा सुभा।..." पड़ता है, नालामें पहले और कितने ही मंदिर थे, जिनके पत्थर जहाँ तहाँ मिलते हैं। सबसे महत्त्वकी चीज यहाँपर है पत्थरका एक स्तूप, कुमाऊँ गढ़वालका एकमात्र बौद्ध स्तूप है। जाते वक्त तो मेरा ध्यान नहीं गया, यद्यपि वह सड़कके किनारे ही मंदिरकी दिवारपर मौजूद था, लौटनेंपर मैंने उसे देखा। इस मंदिरके भीतर कई खंडित मूर्तियाँ हैं, जिनमें पार्वती, लक्ष्मी-नारायणके अतिरिक्त एक जटाधारी मूर्ति किसी शैव वाहर द्वारपर मंदिरकी दायिकाकी भी पाषाण-मूर्ति है।

नालासे थोड़ा ही आगे चलनेपर मस्ता गाँवकी चट्टी हैं। वहाँके गौड़ नारायणदत्तसे पूछा कि क्या रुहेले यहाँसे लौट गये थे, तो उन्होंने लौट कहां गये, वह तो लूटते-पाटते ठेठ केदारनाथ तक पहुँचे थे।

आगे डेढ़ मीलपर ही भेंत चट्टी है, जिसे नारायणकोटी बनाकर यहाँके एक प्रसिद्ध तीर्थका स्थान देना चाहते हैं। भेंत अवश्य किसी समय महत्त्वपूर्ण स्थान रहा होगा, यह वहाँके दो जगहोंपर विखरे आधे पाषाण मंदिर वतलाते हैं, जो रुहेलों द्वारा ध्वस्त होनेके वाद फिर नहीं हो सके। गाँवसे नीचे कुछ हटकर खेतोंमें पाषाण-निर्मित एक सुन्दर

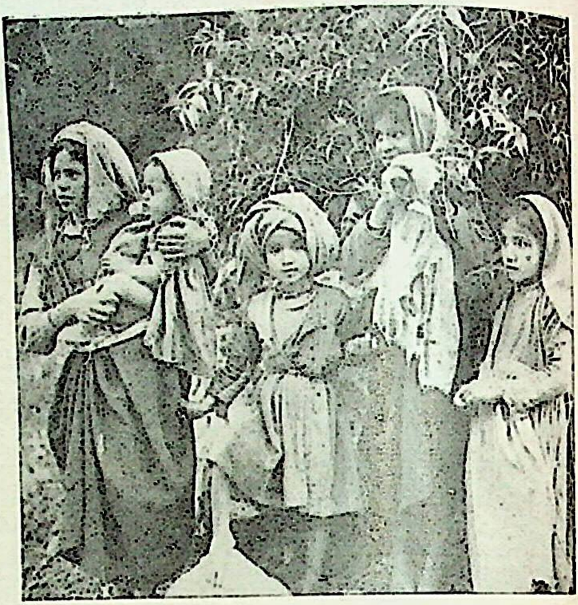

५. गढ़वाली बच्चे (पृष्ठ ४२१)

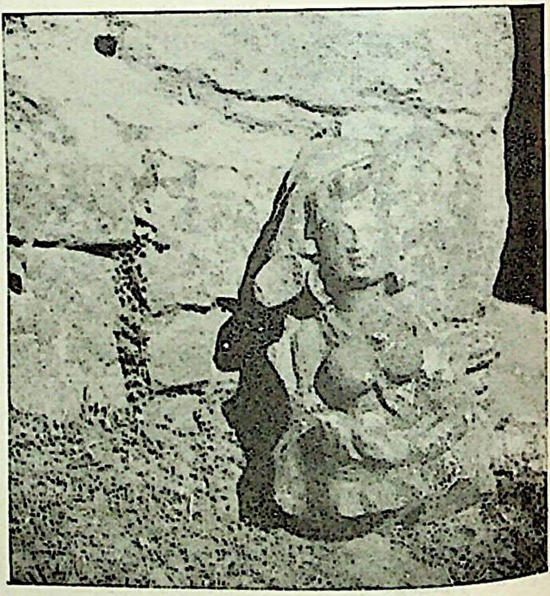

६. मैखंडा--खंडित गौरी (पृष्ठ ४२१)

के पास भी कभी किसी राजाका प्रासाद था। पंडित विशालमणि उपाध्याय- नाम गुप्तकाशी ही में सुन चुका था। अंग्रेजोंने केदारनाथके पंडोंको अब्राह्मण र खश लिखा था। विशालमणिजीने भी एक पुस्तकमें उन्हें अब्राह्मण लाना चाहा, जिसपर पंडोंने मुकदमा कर दिया और चमोलीके मजिस्ट्रेटने वंबर १९४० ई०को उपाध्यायजीपर ५०० रु० जुर्माना कर दिया। पंडित नाथजीने और वादमें एक और पंडा सज्जनने मुझे मुकदमेके फैसलेकी कापी लेकिन यह नहीं वतलाया था, कि ऊपरकी अदालतने जुर्माना छोड़ लमणिजीको अपराध-मुक्त कर दिया। विशालमणिजी संस्कृत जानते हुश्रुत हैं और भारतमें काफी घूमे हुए हैं। उन्होंने भेत जैसे एक साधारणसे नमें पुस्तक-विक्रय और प्रकाशनका काम आरंभ कर रक्खा है, जिससे लोगों- काफी लाभ हुआ। पुराने मंदिरों और मूर्तियोंमें भी उनकी दिलचस्पी है। होंने वहुत आग्रह किया कि मैं कालीमठ अवश्य देखूं। केदारनाथके पंडोंको अब्राह्मण नहीं मानता। अब्राह्मण माननेके लिए यह भी मानना पड़ेगा कि रनाथका मंदिर और तीर्थ सभी सौ-दो-सौ वर्ष परित्यक्त रह गया, खस क्षत्रियोंने पीछे दखल किया। वास्तविकता यह मालूम होती है, कि रनाथके पंडे—जो वीस-पच्चीस गाँवमें विखरे हुए हैं—वहुत प्राचीन ब्राह्मण । प्राचीन होनेके कारण पहले वह क्षत्रियोंकी भी लड़कियाँ ले लिया करते , जिसे पीछे मैदानसे आये ब्राह्मण बुरा मानते उनकी ओर सन्देह की से देखते थे।

विशालमणिजीको लौटते वक्त तकलीफ देनेका वचन देकर कुलीके आनेपर आगे वढ़ा। साढ़े तीन मीलसे अधिक चलनेपर मैखंडा मिला, जिसे वहाँके ग महिषमर्दनी देवीके साथ जोड़ना चाहते हैं। सड़कके पास ही एक झूला दोखंभों के ऊपर पड़ा है। उसके ऊपर झूलनेका भी बड़ा महातम है। डा और पैनखंडा ऊपरी मंदाकिनी और अलकनंदाकी उपत्यकाओं के नाम ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं, किन्तु उनमेंसे एकको इतना आसानीसे महिषी- खंड नहीं वनाया जा सकता। यहाँकी सवसे महत्त्वकी चीज महिषमर्दनीके रसे जरासा और आगे नीचे उतरकर सड़कके ऊपर एक उपेक्षित देवघर जिसके भीतर रुहेलों द्वारा तोड़ी दर्जनों पत्थरकी मूर्तियाँ हैं, जिनमें पत्थरकी शिव और गौरीकी मूर्तियाँ वड़ी ही सुन्दर हैं। मूर्तिभंजकोंने वड़ी रीरसे इनको तोड़ा, किन्तु कलाकारकी कोमल अँगुलियों और मधुर कल्पना- नके अंग अंगपर छाप है। शिवजीके गलेका साँप सिरकी ओर न जाकर

दाहिनी ओर कंधेके सामने लहराता दिखाई पड़ता है। मूर्त्ति छोटी नहीं
उसकी ओर देखते वक्त मुझे तो ख्याल आता था कि जैसे अजन्ताका
चित्र मूर्त्तिमान् होकर वाहर निकल आया है। यह अद्भुत मूर्ति गुप्त कालसे
ही पीछेकी होगी। उस समय मैंने कालीमठकी अखंड हरगौरीकी सुन्दर प्रति
को नहीं देख पाया था, संभव है दोनों एक ही कालकी हैं, जो सातवीं-आठवीं
हो सकता है।

आज हम फाटा (५२५० फुट) में ठहर गये। फाटा काफी वड़ी चट्टी

९ मईको ५ वजे नियमानुसार चल पड़े। ५ मीलपर रामपुरमें जल
किया। वहाँसे त्रिजुगीनारायण साढ़े चार मील हैं। डेढ़ मील केदारनाथके ही रा
पर जाना पड़ता है, फिर वाईं ओर तीन मील चढ़ाईका रास्ता है। दो मी
चढ़ाईके लिए हमने दो रुपयोंमें घोड़ा कर लिया। त्रिजुगीकी रुहेलों द्वारा खं
मूर्तियाँ और नारायण नाम भी वतलाता है, कि उसका संवंध शिव नहीं वि
है। किसी समय मंदिरमें पूजी जाती शेषशायी भगवान्की खंडित मूर्ति
भी दरवाजेके पास पड़ी हुई है। लेकिन पंडा लोग कहते हैं, कि यहीं हिमाच
पुत्रीका व्याह शिवजी महाराजसे हुआ था। मंदिरमें जलती धुनीके लिए
जाता है, कि यह वही आग है, जिसको साक्षी देकर कैलाशपतिने गौरीका हाथ प
था। इधर टिड्डियोंने फसलका वहुत नुकसान किया था। लोग वतला
थे, यहाँ जंगलोंमें अव भी वह डेरा डाले पड़ी हैं। शायद फरवरीसे यहाँ प
हुई वह शिशुपालन कर रही हैं, इसलिये शिल्लावाले यज्ञकर्ताओंको संकटसे मु
नहीं समझना चाहिए। त्रिजुगी मंदिरके आसपास कई कुंड हैं, जिनमें साँप दे
रहते हैं, जिनके दर्शन सर्वदा सुलभ नहीं है। यह निर्विष साँप हैं। यहाँ
कई मूर्तियाँ ग्यारहवीं-वारहवीं सदीसे भी पुरानी हो सकती हैं।

दोपहर वाद थोड़ा विश्राम करके दो मील पुराने रास्तेसे लौटकर एक मी
करीव उतराई उतर हम सोमद्वाराके पुलपर पहुँचे। मंदाकिनीकी एक शा
को पार करनेके वाद हलकी चढ़ाई शुरू हो गई। रास्तेमें एक जगह ६०००
अंग्रेजीमें लिखा हुआ था। जान पड़ता है, अधिकारी लोग समझते हैं कि
अंग्रेजीमें Height 6000 feet above Sea level न लिखा जाय, तो
यात्रियोंको पता नहीं लगेगा। तारीफ यह कि यह प्रयत्न अभी हालका है, अर्था
हिन्दीके राष्ट्रभाषा घोषित हो जानेके वादका। केदारनाथके रास्तेमें वड़े प्रयत्न
जगह जगह पानीके नल लगाये हुए हैं। कहीं कहीं तो वह हजार फुटसे भी दू
लाये गये हैं। हर नलकेके पास फुटकी संख्या दी रहती है। यद्यपि हम गर्मी

से वाहर आ गये थे, किन्तु चढ़ाई चढ़नेके वाद प्यास तो लगती ही है। एक ह सिरकटा गणेशके पास नलपर पानी पीनेके लिए रुके। पंडेने अपने गणेशकी मा वखान कर पूजा करनेके लिए कहा। समझ रहे थे, कि यह वही स्थान जहाँपर पार्वतीके वैठाये हुए गणेशजीकी रखवालीकी अवहेलना करके शिवजी र जाना चाहते थे। वाधा डालनेका गणेशजीको यह फल मिला, कि उनका र कट गया। पार्वतीके रोने-धोनेपर शंकरने हाथीके सद्योजात वच्चेका सिर कर लगा दिया, जवसे गणेश गजानन वन गये। सिरकटा गणेशके पासकी को गौरी कहकर पंडेने वहकाना चाहा। मैंने कहा—यदि कपड़ा हटाकर न कराओ, तो चवन्नी दक्षिणा मिलेगी और फोटो लेने दो तो अठन्नी। वह के लिए तैयार नहीं था। इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि गणेशजीको कटा और पार्वतीजीको लूली-लँगड़ी वनानेवाले रुहेले थे, जो दो सौ वर्ष ने लूटमार करनेके लिए इधर आये थे।

शामको साढ़े चार वजे गौरीकुंड पहुँचे। यहाँ एक गरम तथा दूसरा गंधकी का ठंडे पानीका कुंड है। गरम पानी मुफ्त मिलता हो, तो स्नान करनेकी को इच्छा न होगी? हमने जाकर स्नान किया। पानीमें अगर थोड़ासा भी मिला दिया जाता, तो नहानेमें वड़ा आनंद आता। मंदिर छोटा है, जिसके र कुछ धातु और पत्थरकी मूर्तियाँ हैं। अव केदारनाथ यहाँसे ७ मील रह था, जिसे पार करते ६८०० फुटसे ११७५३ फुटपर पहुँचना था। अगले के लिए एक घोड़ा ठीक कर हम आरामसे विश्राम करने लगे।

४. अंतिम मंजिल

१ मई १९५१को निश्चिंत होकर हम गौरीकुंडकी कालीकमली वाली धर्म-में सोये। घोड़ेवालेने शामको सात रुपयेमें केदारनाथ तक पहुँचा देना र कर लिया था। वैसे चलनेमें मुझे कोई दिक्कत नहीं थी, लेकिन सोचा ८०० फुटसे ११७०० फुट तककी चढ़ाई यदि घोड़ेके पीठपर कर ली जाय या हरज? आखिर मैं तीर्थयात्री नहीं था। केदार-वदरीकी यात्राका पुण्य १ वर्ष पहले ही लूट चुका था, लेकिन, जान पड़ता है, भगवान् केदारनाथ सी मेरे पल्ले पूरा पुण्य वाँधना चाहते थे। सवेरे घोड़ेवाला वहानेवाजी लगा। मालूम हुआ, गौरीकुंडमें आज यात्री अधिक हैं, इसलिए अर्थ-के सर्वमान्य नियमके अनुसार, माँगके अनुपातसे मोलका वढ़ना आवश्यक मुझे उतनी जरूरत भी नहीं थी। रामवाड़ा केदारनाथ पहुँचनेसे पहलेकी

चट्टी है। ४ मीलकी यात्रा चढ़ाईकी थी। मैं ६ वजे चला और साढ़े ७ वजे पहुँच गया। मुझे ४१ वर्ष पहलेकी बात भूल गई थी, कि केदारनाथमें ईंध अभाव और महँगाईके कारण रोटीसे पूरी खाना सस्ता पड़ता है, यद्यपि पूरी खा पेटकी शिकायत होनेका डर रहता है। तो भी मैंने रामवाड़ामें साफ सु दूकान देखकर वलवहादुरको कहा, यहीं रोटी-पानी कर लो। ९ वजे हम रोटी-पानीसे छुट्टी पा लिये। तवतक केदारनाथके कितने ही यात्री दर्शन क लौटे आ रहे थे। केदारनाथ यहाँसे ३ मील है, लेकिन सरदीमें वह कैला एक टुकड़ा है, इसीलिए बहुत कम यात्री वहाँ रात्रिवासकी हिम्मत करते हैं।

साढ़े ९ वजे फिर आगेके लिए प्रस्थान किया। यद्यपि चढ़ाई उतनी क नहीं है, किन्तु यह समुद्रतलसे १०-११ हजार फुट ऊँचाईकी जगह है, हवाके होनेसे फेफड़ेको वहुत मेहनत करनी पड़ती है, जिससे दम अधिक फूलता है दो सहस्राब्दियोंसे हमारे यात्री कहते आये हैं, कि इसका कारण वहाँकी ज बूटियाँ हैं, जिनकी मादक गंध आदमीके फेफड़ेको सबसे पहले प्रभावित क है। तिब्बतवाले इसे मट्टीका विष (स-दुक) कहकर छुट्टी पा लेते हैं।

मुझे ख्याल आया, आजसे सवा सौ वर्ष पहलेके यात्रियोंका। अंग्रेजोंके शास पहले वदरी-केदारके रास्ते भगवान्के वनाये हुए थे, जिनपर चिड़ियों और वकरि को ही तकलीफ नहीं होती थी। पहाड़ी लोग भी अभ्यस्त होनेके कारण उनकी परव नहीं करते थे, किन्तु, नीचे भारतके भिन्न-भिन्न भागोंसे आनेवाले यात्री घरसे करके चलते थे। उनमेंसे कितने तो अपने सारे पापोंको धोकर पाण्डवोंकी त सीधे स्वर्ग जानेकी लालसासे भैरवझाँप (भृगुपतन या स्वर्गारोहिणी)से गिर लिए आते थे। काशीनाथजीने वतला दिया था, कि आजसे सौ वर्ष पहले केद नाथके यात्रियोंकी संख्या सालमें सौ-डेढ़-सौसे अधिक नहीं होती थी। मैं सम हूँ, उनमें दस-वीस तो अवश्य स्वर्गारोहणके लिए आते थे। उस वक्त रेल थी, मोटर नहीं थी, शायद कंडी और डांडी (झप्पान) किसी न किसी उस समय भी मौजूद थी, लेकिन अखण्ड पुण्य कमानेके लिए आनेवाले यात्री कम ही उनका इस्तेमाल करते होंगे, विशेषकर भृगुपतनके यात्री तो वैसा ह नहीं करते होंगे। मैंने सोचा, तव तो भैरवझाँप (भृगुपतन)के लिए आने शरीरसे मजवूत होते रहे होंगे, हाँ, दिमागसे कमजोर जरूर, क्योंकि इस सं विना कोई आत्मविनाशयज्ञकी महायात्राके लिए तैयार नहीं हो सकता था जव ऊँचाईके कारण उनकी साँस जल्दी जल्दी फूलने लगती होगी और उनका वतलाता होगा, कि यह कैलाशकी वूटियोंका प्रभाव है, तो उनके मनमें क्या

ार पैदा होते होंगे। घरसे यहाँ तककी महीनोंकी यात्रामें प्रतिदिन नहीं प्रति- ी मृत्युकी मूर्ति उनके सामने आकर खड़ी होती होगी। आजकल आत्महत्या वाले तड़ाक-फड़ाक अपना काम कर डालते हैं। वस्तुतः मृत्युसे अधिक कर मृत्युके वारेमें सोचना है और इन महायात्रियोंको उसके वारेमें महीनों ना पड़ता होगा। लेकिन, जो घरसे श्राद्ध करके चल चुके, उनमेंसे वहुत कम ही संकल्पसे हट सकते थे। एक शताव्दी पहले वंद हुई सती-प्रथाके जमानेकी लोकराय भी उन्हें मजवूर करती रही होगी। इन अंतिम तीन मीलोंको करते समय उनको अवश्य मालूम होता होगा, कि मृत्यु उन सफेद शिखरोंके उस पहाड़ीपरसे झाँक रही है, जहाँ कल या परसों पहुँचना है। आज भी ारोहिणी (भैरवझाँप)को लोग दिखलाते हैं। आज भी वहाँ गये अंतिम यों द्वारा अंकित चिह्न रास्तेकी चट्टानमें मिलते हैं। पण्डोंके पास २०० वर्ष- वहियाँ मिलनेमें वहुत कठिनाई नहीं है। शायद उनके पन्नोंको उलटनेपर स्वर्गारोहियोंके नाम और पते भी मिल जायँ। हो सकता है, कुछ वूढ़े अपनी ंशिक स्मृतिके सहारे स्वर्गारोहण-संवंधी क्रिया-कलापोंके वारेमें भी कुछ ायें। यह एक ऐतिहासिक अनुसन्धानका विषय है, जिसे यदि कोई कर तो वहुत अच्छा होगा।

तरह तरहकी वातें सोचते मैं आगे वढ़ रहा था। केदारनाथ डेढ़-दो मीलसे क नहीं था। वलवहादुर २२-२४ वर्षका पतला-दुवला-ठिगना, किन्तु मज- नेपाली तरुण था। मजवूतीके अभिमानमें डंडा रखना वह अपने लिए अपमान- ात समझता था, लेकिन जव यहाँकी पतली हवाने फेफड़ेको जल्दी-जल्दी ा शुरू किया, तो उसे डंडेका गुण मालूम हुआ। मेरे पास डंडा था, न मैं उसे दे नहीं सकता था। वड़े वड़े वृक्षोंकी भूमि तो खतम हो गई किन्तु इंच-दो-इंच मोटी झाड़ियाँ अव भी कहीं कहीं थीं। मेरे पास आधुनिक ार अभी अभी खरीदा रिवाल्वर था, लेकिन उसके सहारे डंडा थोड़ी ही जा सकता था। वलवहादुरको डंडेकी अवश्यकता इतनी अनिवार्य मालूम कि उसके दिमागने आदिम मानवकी तरह सोचना शुरू किया। जावाका ितम मानव—जिसे आजसे तीन-चार लाख वर्ष पहले हुआ वतलाते हैं—अपने के हथियारोंको कुछ छीलकर वनाता था। वलवहादुरके पास दूसरे नेपालियों- तरह खुकुरी नहीं थी, लेकिन आदिम मानवकी वुद्धि तो थी। उसके पास न था न पूर्वजोंका अभ्यास, कि पत्थरको कुछ छील-छालकर तेज कर ले। ालेके किनारे झाड़ियाँ थीं, उसमें वहुतसे अनगढ़ पत्थर थे, उन्हींमेंसे एकको

वलवहादुर उठा .दो इंच मोटी लकड़ी काटने लगा। मैं वड़े कौतूह साथ उसकी प्रत्येक चेष्टाको देख रहा था। उसने जड़में चारों ओरसे थोड़ा काटा, फिर दवाकर डंडेको तोड़ लिया। मालूम होता है आदिम मा भी केवल उपयोगितावादी ही नहीं था, उसके दिलमें भी कलाके प्रति प्रेम वलवहादुरने उसी अपने पत्थरके हथियारसे डंडेके दूसरे सिरेको भी काट उसकी कमचियोंको भी निकाल डाला और गाँठोंको चिकना कर दिया। पकड़नेके छोरको छील-छाल और रगड़कर उसने कुछ गोल और चिकना लिया, फिर छिलकेके कारण वुरे मालूम होते डंडेको मानव-पुत्र कैसे इस्तेमाल इसलिए उसने अपने अतिपुरा पाषाणास्त्रसे मुठियाकी ओरसे छिलका उतारना किया। मैं सोच रहा था, शायद सारे डंडेकी छाल उतारकर ही वह चलनेका ले। वलवहादुर अपनी क्रियामें सुस्त नहीं था, इसलिए मुझे देर करनेके लिए होनेकी अवश्यकता नहीं थी। लेकिन, उसने डंडेको एक वित्ता ही छोड़ दिया। वलवहादुरका यह पुरापाषाणयुगीन डंडा कई दिनोंतक साथ वस्तुतः उसे किसी संग्रहालयमें रखना चाहिये था, किन्तु हमारे यहाँ "गुण हेरानों है।" स्वीडनके विज्ञानवेत्ताओंने पिछली शताब्दीमें क्रियात्मक की थी, कि पाषाणयुगीन हथियारोंसे क्या क्या काम किया जा सकता है। छिले हुए पाषाणास्त्रोंसे वृक्ष काटें, वृक्षोंके तनोंको खोदकर नाव वनाई, और भी कितनी ही चीजें तैयार कीं। शायद उन वैज्ञानिकोंको उस परीक्षामें रुपये व्यय करने पड़े होंगे, और यहाँ वलवहादुरने मिनटोंमें परीक्षा दिखला दिया, कि विना छिले पत्थरके हथियारोंसे भी आदमी अच्छा डंडा १०-१५ मिनटमें तैयार कर सकता है। वलवहादुरको क्या पता था, उसके पूर्वज पहले इसी तरह डंडा वनाते थे। उसके लिए तो सभी नेपाली करोंकी भाँति काला अक्षर भैंस वरावर था।

आगे वढ़ते हुए हम देवदेखनी स्थानपर पहुँचे, जहाँसे केदारनाथका "मैदा शुरू होता है। मैदान कभी अखंड रहा होगा, जव कि मंदाकिनी और आकर मिलनेवाले सैकड़ों नाले-नालियोंने उसे छिन्न-भिन्न नहीं किया लेकिन वह लाखों वर्ष पहलेकी वात है। तव शायद मैदानकी जगह यहाँ हिम या हिमानी रही होगी। इससे पहले भी एक दो जगह नालोंमें वर्फ मिली थी, अव तो आध मीलतक वर्फपर ही चलना था। केदारनाथपुरी दिखला देने लगी, जो आसपास फैली वर्फके वीचमें वर्फ-ढकी छतोंवाले मकानोंके स्पष्ट नहीं थी। १० मईका दिन और यह वर्फ, नीचे लूह चलती हवा और

यह सर्दी ! कितना वैचित्र्य ? मध्यान्हका समय था। सवेरे गौरीकुंडसे चले कितने यात्री मंदाकिनीमें डुवकी लगा केदारनाथका दर्शन कर लौटे आ रहे थे। साढ़े वजे थे, जव कि मैं मंदाकिनीके पुलको पारकर पुरीमें दाखिल हुआ। वहुतसे आये, लेकिन मेरे पंडे तो वृद्ध काशीनाथ शर्मा हो चुके थे। नाम-धाम वतलाने- पर्वाही दिखलानेपर एक पंडा-तरुण वल्कि लाल हो गया। जवानीका खून शायद दो अक्षर पढ़ा भी था और उसके साथ ही उसे यह भी मालूम होगा, अव हमारा देश परतंत्र नहीं है, इसलिए नम्रतामें प्रसिद्ध पंडोंकी वृत्ति करते भी उसके खूनमें थोड़ी गर्मी आ जाय, तो कोई आश्चर्यकी वात नहीं।

पुरीके राजपथपर भी कहीं कहीं वर्फ थी। आसपासकी भूमिमें तो वह थी। कितनी ही दीवारोंको छततक वर्फ ढँके हुए थी, यद्यपि राजपथ- रफ खुलनेवाले दरवाजोंको वर्फमें छेदकर खोल दिया गया था। केदारखंड लपति भोले वावाकी भूमि है, जिनके लिये कोई कायदे-कानूनकी पावंदी नहीं। जानता था, कि इस वक्त जो धूप दिखलाई दे रही है, वह किसी समय हो जा सकती है; इसलिए मैंने उससे पहले फोटो ले लेना आवश्यक समझा। वुद्धिमानीने सचमुच ही काम कर दिया। एक ही घंटे वाद आकाशमें चारों सफेद-सफेद वादल दौड़ रहे थे। दूसरे दिन यद्यपि मैं साढ़े ९ वजे चला, न आकाश उतना निरभ्र नहीं था। लोग भी कहते थे, पूर्वाह्णमें मौसिम रहता है। पंडित काशीनाथ शर्माने अपने घरका पता दे दिया था, और वतला दिया था, कि केदारनाथका डाकखाना मेरे ही घरमें है। वैसे पुरी होनेसे यह नहीं समझना चाहिये, कि काशी-कांची-अवंतिका पुरियोंमेंसे एक है, जिनकी गलियोंमें आदमी भूल जा सकता है। मैं सीधे काशीनाथ- में गया। १९१०के जून-जुलाईके महीनोंमें मैं यहाँ डेढ़-दो महीने रहा से वीते ४१ वर्ष हो गये थे, इसलिए यदि स्मृति अधिक सहायता न करती को दोष देनेकी अवश्यकता नहीं। तो भी इतना कह सकता हूँ, समयके मकानोंकी अपेक्षा आजके मकान ज्यादा वड़े और अच्छे हैं, उनकी भी अधिक है। कालीकमलीवाली धर्मशालाके उस दो महले भवनको भी ,जिसमें मैं शिष्य वननेकी इच्छासे स्वामी धर्मदासके साथ ठहरा था। लेकिन धर्मशालाका एक छोटासा भाग है। वस्तुतः पिछले ४० सालोंमें हमारे सेठोंने दो-दो विश्वयुद्धोंकी लक्ष्मीकी वाढ़ोंसे जो लाभ उठाया, उसका प्रभाव इन तीर्थ-पुरियोंमें दिखाई पड़ता है। काशीनाथजीके मकानको जमानने वनवा दिया है। दीवारें गढ़े हुए पत्थरोंकी, छत साफ-सुथरे

टीनकी, खिड़कियाँ काफी बड़ी और कोठरियाँ भी अच्छी थीं। उसे देख
कहा जा सकता है, इन ४० वर्षोंमें यहाँके मानवने सुरुचिकी ओर काफी प्र
की है। लेकिन मनुष्यके लिए सबसे आवश्यक पाखाने-पेशाबके स्थानका
कोई प्रबन्ध नहीं था। खैर, यह तो हमारे सारे देशकी बीमारी है। हम भारत
परिभाषा बना सकते हैं—जहाँ स्वच्छ शौच-स्थान बनानेपर कमसे कम या बिल
ही खर्च न किया जाय। मैं तो डायाबेटिसका मरीज ठहरा, जिसके लिए पेशाब
स्थान सबसे समीप होना चाहिए। लेकिन काशीनाथ-भवन कैसे अपवाद
सकता था? पोस्टमास्टर साहबसे चिट्ठियोंके बारेमें पता लगाया, तो
गुप्तकाशीसे कलकत्ताके लिए भेजी गई चिट्ठी पहुँची हुई मिली। आखिर कल
और केदारनाथ दोनोंमें ककार पड़ता है, और केदारनाथ नजदीक भी है, इस
हमारे डाकखानोंके सुयोग्य कार्यकर्त्ता यदि कलकत्ताकी चिट्ठीको केदार
भेज दें, तो कोई अचरज नहीं। पंडित काशीनाथजीने अपने लड़केको
दिया था, उनके दामाद भी यहाँ ही थे। उन्होंने अपने मकानमें जो सबसे अ
कोठरी थी, उसमें हमें टिकाया। गद्दा और कालीन भी आ गया, दो रजा
भी रख दी गईं—दोपहरको भी यहाँ सर्दी काफी थी। मालूम हुआ, केद
नाथमें (और बदरीनाथमें भी) ओढ़ना-बिछौना पंडा लोगोंके यहाँ काफी रहता
और बदरीनाथमें तो किरायेपर भी मिलता है। ओढ़ने-बिछौनेको गंदा
कह सकते हैं, जो सबेरेके पहने कपड़ेको शामको गंदा समझ लेते हैं। मुझे
सोस होने लगा, कि मैं क्यों कंबलों और बिछौनोंका बोझा लदवाये आया।
केदारनाथ और बदरीनाथ छोड़ रास्तेमें कहींपर भी एक कंबलसे अधिकका
नहीं पड़ता। एक दरी, एक छोटा तकिया और एक कंबल काफी था। मैंने
बल्कि कुछ किफायत भी की थी, कलकत्ता बंबईसे आनेवाले सेठ तो एक
गधेका बोझ लेकर यहाँकी सर्दीसे मुकाबला करना चाहते हैं।

केदारनाथमें इंधन बहुत महँगा है। एक आदमीके खानेके लिए एक रु
इंधन लग जाय। जहाँ ढाई रुपया सेर आटा मिलता है और तीन साढ़े
रुपया सेर पूरी, वहाँ महँगी रोटी बनानेके लिए तैयार होनेवाले समझदार आद
कम ही मिलेंगे।

५. केदारनाथपुरी

रामबाड़ामें खा-पी आये थे, इसलिए खानेकी चिंता नहीं थी। हाँ,
थकावट अवश्य मालूम होती थी, जिसके लिए एक घंटा सो लेना जरूरी

कर वाहर निकले, तो देखा निरभ्र आकाश अब साभ्र हो गया है। केदारनाथमें डस्फोट (टूटी-फूटी) मूर्त्तियाँ वहुत हैं, जिनका फोटो लेना था। लेकिन इस ायामें कैसे लिया जा सकता था? अगले दिनपर इसे छोड़ना पड़ा।

आज मैंने मंदिरों और टूटी-फूटी मूर्त्तियोंकी जाँच-पड़ताल कर लेनी चाही। वदुर्गाकी मढ़ीमें कत्यूरीकाल (१०वीं-१२वीं शताब्दी)की कई मूर्त्तियाँ थीं। केदार- थके मंदिरके पीछे भी चार-दीवारीमें टूटी-फूटी मूर्त्तियाँ जड़ी हुई थीं। केदार- थका मंदिर अब सरकारी गैर-सरकारी प्रतिनिधियों द्वारा संगठित एक कमीटीके ीन है, जिसके सेक्रेटरी वदरीनाथमें रहते हैं, किंतु असिस्टेंट सेक्रेटरी (सहायक- चिव) केदारनाथकी देखभाल करते हैं। इस समय वह ऊखीमठमें गये हुए लेकिन उनके सहायक यहाँ मौजूद थे। मैंने उनसे मिल लेना आवश्यक समझा। वड़ी अच्छी तरहसे मिले। वहीं उत्तराखंड विद्यापीठके अध्यापक शास्त्रीजी मिल गये। अपरिचित आदमीके साथ भी इस तरहकी शालीनता स्तुत्य है। स्त्रीजी शंकरके अनन्य भक्त हैं, और इसीलिए भगवान् केदारनाथकी सेवा- ाके लिए इस समय यहाँ ठहरे हुए थे। उनके दीर्घ केश, लंवी दाढ़ी, शिरपर पुंड्र और वेषभूषाको देखकर मुझे अपना काशीका विद्यार्थी-जीवन याद ाने लगा और वहाँकी कुछ इसी तरहकी मूर्त्तियाँ मेरे मानस-पटलपर उतरने लगीं, न्तु मैं जानता था, कि वह इस समय ९० वर्षसे ऊपर पहुँचकर ही हो सकती । शायद क्या निश्चय ही, अब वह इस धराको छोड़कर अन्यत्र चली गई होंगी! किन आदमीको अपनी प्रत्यक्ष देखी हुई मूर्त्तियाँ ही नहीं स्मृतिकी कृपासे देखने- ो मिलती, इतिहास और प्राचीन अवशेषोंमें अंकित मूर्त्तियाँ भी साकार होकर के सामने आती हैं। मैं जानता था, केदारका प्रथम मंदिर उस समय स्थापित ा, जब कि यहाँ प्राचीन पाशुपतोंका जोर था। गुप्त राजा चाहे अपनेको ष्णव कहते हों, लेकिन उस समयका ब्राह्मणधर्मी शिक्षित भारत विष्णुका नहीं से अधिक शिवका भक्त था। केदारनाथमें शिवजी विराजमान थे, उज्जयिनीमें ाकाल, कांचीमें भी पार्वती-परमेश्वरका ही जयनाद घोषित होता था। यही ीं इन्दोनेसिया और इन्दोचीन तक शैवधर्मकी विजय-दुंदुभी वज रही थी। ोचीन (कंवोज)के वह विशाल मंदिर और उनके भीतरके शिलालेख मुझे द आने लगे, जिनमें शंकरकी पूजाके लिए बृहत् आयोजनका सविस्तर वर्णन —जो कि अब इतिहासकी वस्तु वन चुके हैं। शैव साधु सैकड़ोंकी संख्यामें ाँ रहते थे और उनके महन्तके वैभवके सामने आजके रावल किसी गिनतीमें ीं। परन्तु मुझे वह वैभव आकृष्ट नहीं करता था। मैं आकृष्ट होता था

उस शतरुद्रीके पाठसे, जो त्रिपुंड्रधारी यज्ञोपवीती, रुद्राक्षमाली, वेदपाठि मुँहसे सरस्वर निकलता था। मैं आकृष्ट होता था, उस अगर-तगरकी धूप- और फूलोंकी नाना प्रकारकी मधुर सुगंधियोंसे, जो आजसे डेढ़ हजार वर्ष पह के मंदिरोंमें उड़ती थीं। अब भी मुझे मालूम होता है, कि वह मेरी नासि द्वारा भीतर प्रविष्ट होकर दिमागको भीनी-भीनी सुगन्धसे भर रही हैं। उन मगाते शिवालयोंमें सर्वत्र सौंदर्य, कला और स्वच्छताका अखंड राज्य था। वस्तु शिवं सुन्दरं थी। मुझे यह भी मालूम है, कि यह सव वैभव उन दासदासियों परिश्रमसे पैदा हुआ था, जो सारी जनताकी चौथाई थीं। शिवं सुन्दरंके लिए वड़े कलंककी वात थी, तो भी स्मृति जिस भव्य रूपको सामने चित्रित करती है उसे देखकर थोड़ी देरके लिए आनंद और आकर्षण हुए विना नहीं रह सक विशेषकर जव कि मैं जानता हूँ, कि वह दासताका युग फिर लौटकर नहीं सकता, मनुष्यके पूर्ण स्वतंत्र होनेको कोई नहीं रोक सकता। काली निशा दुनिया वहुतसे भागोंसे दूर हो चुकी है, वह वाकी भागोंमें भी देर तक नहीं रह सकती।

अगले दिन मंदिरके भीतरकी चीजोंको देखना था। शास्त्रीजी और पोस्टमास्ट साहव दोनों हीने वतलाया, कि मंदिरके भीतर दीवारोंपर कई शिलालेख हैं। इ वातने मेरी उत्सुकताको और वढ़ा दिया। वहाँ उपस्थित समिति-अधिकारी, शास्त्री जी और पोस्टमास्टर साहवमेंसे किसीने भी मेरा नाम नहीं सुना था और न मे पुस्तकें पढ़ी थीं, यद्यपि तीनों ही शिक्षित नहीं सुशिक्षित कहे जा सकते थे, कि यह ज्ञान मेरे लिए कोई आविष्कार नहीं था। मैं नहीं आशा करता, कि ह एक शिक्षितके लिए राहुल सांकृत्यायनकी कोई न कोई पुस्तक पढ़ना आवश्य है। उन्हें यह मालूम हो गया, कि मैं संस्कृत जानता हूँ (शास्त्रीजीसे संस्कृत ही वात चली थी) और यह भी कि मुझे प्राचीन लिपियोंका ज्ञान है। पुरा पंथी चाहे वह अपनी पूजा भक्तिमें रहे हों, किंतु तीनों ही सज्जन पुरातत्त्व औ पुरालिपिके ज्ञानके महत्त्वको मानते थे, इसलिए यहांकी हर एक चीजको दिख लानेके लिए वह मुझसे कम उत्सुक नहीं थे।

९ वजेसे कुछ पहले ही केदारनाथका मंदिर यात्रियोंके लिए खुल जाता है। इसके पहले ही मंदिरके कुछ पुजारी तथा शास्त्रीजी जैसे अन्तरंग भक्त भगवा शंकरकी पूजा करते हैं। इस पूजाके आरंभ होनेसे भी पहले आकर देखनेका इन्तजाम कर दिया गया। मैं ७ वजे ही मंदिरके भीतर गया। केदारनाथका मंदिर गोपेश्वरकी तरह उत्तराखंडका सवसे विशाल मंदिर है। इसके दो खं हैं, शिखरदार पिछले खंड (गर्भगृह) में शिवजी विराजमान हैं और वाहर उसके

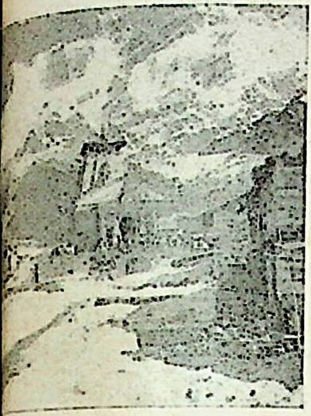

दारनाथ-मंदिर (पृष्ठ ४३०)

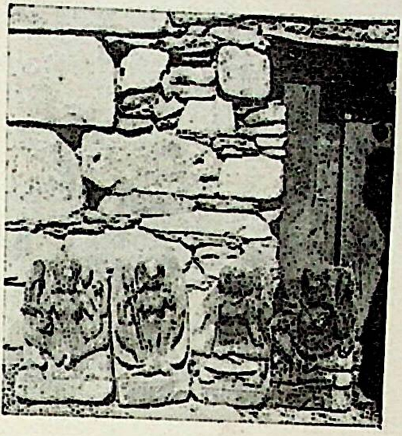

८. केदारनाथमें खंडित मूर्तियां (पृष्ठ ४३५)

कालीमठ-खंडित मुखलिंग
(पृष्ठ ४४०)

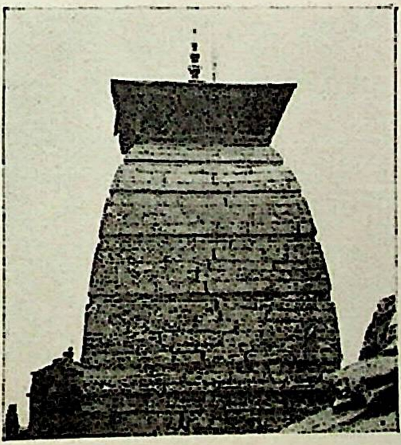

१०. गोपेश्वरका प्राचीन मंदिर
(पृष्ठ ४५६)

वड़ा सभा-मंडप है। ११ मई होनेसे यह न समझें, कि यहां भी हम मजेमें पैर विश्वनाथका दर्शन कर सकते थे। वौद्धोंने भिन्न-भिन्न जलवायुके अनु- अपनी पूजा-प्रक्रियामें परिवर्तन किया है, तिव्वत और मंगोलिया जैसे अति- ल देशोंमें मंदिरके भीतर जानेके लिए जूता उतारनेकी अवश्यकता नहीं होती। ानियोंने भी समझ लिया है, कि शीतल फर्शका नंगे पैरके तलवेके साथ सीधा चित्तकी एकाग्रतामें सहायक नहीं हो सकता, इसलिए वह साधारण जूतेके र ऊनी खोलको लगाकर भीतर जानेमें कोई हर्ज नहीं देखते। वर्मा और में भारतकी तरह ही जूतेको वहुत दूर छोड़ना पड़ता है। यहां ११७६० की ऊंचाईपर चारों तरफ वर्फ पड़ी धरतीके ऊपर अवस्थित, दिनमें भी दीपक नेकी अवश्यकतावाले मंदिरके गर्भमें नंगे पैर जाना ठहरा। मुझे वहां हरएक को वहुत गौरसे देखना था, लेकिन तलवे वर्फ वनते जा रहे थे। खैर पानीमें ा हुआ कंवलका टुकड़ा पुजारीने दे दिया, जिससे कुछ हिम्मत वढ़ी। आधु- ज्ञानलाभ आदमीको वुद्धिवादी वनाए विना नहीं रहता। शास्त्रीजी, पोस्ट- र साहव तथा सहायक-सचिव श्रीनारायणदत्त वहुगुनाके सहायक अफसर तरहसे सहायता करनेके लिए तैयार थे।

केदारनाथका मंदिर, जैसा कि पहले कहा, उत्तराखंडका एक सवसे वड़ा मंदिर अंग्रेजी राज्यके कायम होनेके वाद पहले वीस वर्षोंसे अधिक ट्रेल कुमाऊंके नर या राजा थे। अपने समयके कुमाऊं-गढ़वालके वारेमें ट्रेलने वहुत सी लिखी हैं, जिनका हिन्दीमें आना वहुत आवश्यक है। ट्रेलने लिखा था, नाथका मंदिर नया है। मंदिर देखनेसे यह विश्वास करनेका मन नहीं ा कि, यह १८०० ई० के आसपास वना होगा। उसके समयके आसपास लमें भयंकर भूकंप आया था, जिससे अपार हानि हुई थी और उसी ं लाभ उठाकर नेपालने आसानीसे गढ़वालपर अधिकार कर लिया था। कता है, उस वक्त भूकम्पसे मंदिरको क्षति हुई हो, और उसकी त करनी पड़ी हो। वस्तुतः मंदिर उस समय वना था, जिस समयके लेख गर्भगृहके भीतरी दीवारोंमें जड़े हुए हैं, तथा जिस समयकी मूर्त्तियां हके द्वारके चौखटपर वनी हुई हैं। सभामंडपमें भी कई पुरुषप्रमाण मूर्त्तियां ो भी उसी कालकी हैं। मंदिरके अधिकारियों और मेरी भी वड़ी इच्छा कि कोई शिलालेख पूरी तौरसे पढ़ा जाये, किंतु मंदिरमें घीके चिराग वाले हैं। भगवान्के ऊपर भी घीका लेप होता है, और लेप करनेके वाद हाथमें ीको दीवारोंपर पोंछ दिया जाता है। शताव्दियोंसे यह होता आया है,

जिसके कारण अभिलेखोंके अक्षरोंमें घी भर गया है। सुपरिन्टेन्डेन्ट सा
गरम पानी भी भिजवाया था, कंबलसे रगड़कर मैंने साफ करनेकी कोशिश
लेकिन उससे वह काम होनेवाला नहीं था। उसे तो गरम पानीमें घुले हुए सा
कड़े ब्रुशके सहारे धोनेकी अवश्यकता थी। मैंने देख लिया, यह काम इस
नहीं हो सकता। लेकिन कुछ अक्षरोंको पढ़नेमें मैं अवश्य सफल हुआ, जिससे मा
हो गया, कि अभिलेखका काल १२वीं-१३वीं सदीसे पीछेका नहीं हो सक
अक्षर पत्थरमें काफी गहरे खुदे हुए हैं, इसलिए ठीकसे धोकर छापा लेनेपर प
मुश्किल नहीं होगा। मैंने जो अक्षर पढ़े थे, उनमें “रजदेवके. . . .।. . . .
लिखा था। पहले चार अक्षर वैसे ही थे, जैसे कि १२वीं सदीके तालप
(मुझे तिब्बतमें मिले) हैं अथवा जैसे अक्षर कत्यूरी राजाओं (१०वीं-१
सदी) के अभिलेखोंमें मिलते हैं, इतिमें ई ऊपर दो बिंदियोंके नीचे
मात्रा लगाकर लिखा गया था। यह शिलालेख उत्तराखंडके इतिहासके
महत्त्वपूर्ण सावित होंगे।

केदारनाथमें महादेवका कोई लिंग स्थापित नहीं है। पुराणोंमें कथा आती
कि जब पाण्डव हिमालय गलनेके लिए आए, तो शंकरजीको ढूंढ़ते हुए इस के
(क्यारी या मैदान) की भूमिमें उन्हें शंकरजीका पता लगा। शंकर कुल-ह
पापी पांडवोंको मुंह नहीं दिखाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने भैंसेका रूप धा
करके चरना शुरू किया। वर्फ पिघलनेके वाद वर्षा शुरू होते ही केदारकी
और उपत्यका हरी हरी घासोंसे ढँक जाती है। आजकल यहां तो नहीं, किंतु
पासके पहाड़ोंके बुक्यालोंमें भैंसें चरने जाया करती हैं। अस्तु, इसी तरहकी भैं
भीड़में शंकरजी भैंसा वनकर चरने लगे। लेकिन पांडव आसानीसे पिंड छो
वाले नहीं थे। अगमजानी सहदेव पंडित भी उनके वीचमें थे। भीमको
अक्ल कहां थी, किंतु सहदेवकी पंडिताईसे उनके विशालकायने मिलकर शं
पकड़ना चाहा। शामके वक्त भैंसें जब नीचेकी ओर जाने लगीं, तो भीमने
दोनों पैर दोनों ओरके पहाड़ोंपर रखकर ऐसा कर दिया, कि भैंसें उनके पै
वीचसे ही निकल सकें। शंकरके लिए वड़ा धर्मसंकट उपस्थित हो गया। उन्हों
चाहा, कि धरतीमें डूबकर छुटकारा पायें। शंकर डूबने लगे, उनकी पीठभर
रही, इसी समय पांडवोंने पहचान लिया। महिषरूपी कैलाशपतिका पृष्ठ मात्र के
नाथमें रह गया, जिसपर ही यह मंदिर बना हुआ है। जान पड़ता है, केदार
नामसे पूजी जाती शिला की आकृतिको देखकर महिषपृष्ठकी कल्पना हुई।
दिखाई देती केदारनाथकी पीठ दो तीन हाथसे कम वड़ी नहीं है। यह

र नीचे कितना वड़ा है, यह नहीं कहा जा सकता। पत्थरके चारों ओर चौकोना ा है, जो आम अर्घोंकी आकृतिका न होकर केवल छिला हुआ चौकोर र है। सारा अर्घा एक पत्थरसे खोदकर वनाया गया है। केदारनाथ-शिला- ारेमें तो नहीं कह सकता, कि उसे कहींसे उठाकर यहां रक्खा गया, लेकिन ां और शिला एक पत्थरके नहीं हैं। इतने वड़े अर्घेके वनानेके लिए शिला लाना नसेन ही का काम होगा। पुजारीने पानी गिराकर यह भी दिखलाया केदारनाथ और अर्घेके वीचकी दरारमें गिरनेवाला पानी अपनी आवाजसे ाता है, कि वहां कुछ हाथ गहरी पोली जगह जरूर है। केदारनाथ शिला ं पहलेसे मौजूद थी। उसके किनारेका अर्घा उसी वक्त तैयार हुआ, जव कि ान या इसके पूर्वगामी मंदिरका निर्माण हुआ, अर्थात् कमसे कम १२वीं- ीं सदीसे अर्घा और केदारशिलाका संवंध अक्षुण्ण चला आ रहा है।

१७४१-४२ ई०में लूटपाट करते रुहेले केदारनाथ तक पहुँचे थे। उन्होंने हाँकी सारी मूर्त्तियोंको तोड़-फोड़कर सवाव हासिल किया। लेकिन केदार- की न कोई मूर्त्ति थी, न लिंग ही, इसलिए उन्होंने इस नैसर्गिक शिलापर हाथ छोड़ा, हाँ, मंदिरकी और मूर्त्तियों तथा नवदुर्गा आदिकी प्रतिमाओंको नासा- लँगड़ी-लूली करके छोड़ दिया। १७४२ ई०से पहले शायद और भी लुटेरे पहुँचे हों, किन्तु उनके वारेमें कुछ पता नहीं मिलता। यद्यपि रुहेलोंके यहाँ की वात न इधरके पंडा लोग माननेके लिए तैयार हैं, न वर्तमान अधिकारी किन्तु इस सवालका उनके पास कोई उत्तर नहीं है, कि मूर्त्तियोंको किसने और अपने हथौड़ेका लक्ष्य मूर्त्तियोंकी नाकोंको ही क्यों किया गया? कोई संदेह नहीं, कि रुहेले गढ़वाल और कुमाऊँके सभी धनाढ्य मंदिरोंमें और केदारनाथ तथा वदरीनाथ उनके प्रहारसे नहीं वच सके।

र्भगृहमें अर्घके पास चारों कोनोंपर वहुत मोटे चार पाषाण-स्तंभ हैं, की वगलसे होकर भीतर ही भीतर केदारनाथकी प्रदक्षिणा की जा सकती है। की दीवारें दूसरे पुराने मंदिरोंकी तरह वहुत मोटी तथा वड़े वड़े सुगढ़ पत्थरों- ोड़कर वनाई गई हैं। शिखरके वारेमें वतलाया जाता है, कि पहले यह और ंचा था, जिसे मरम्मत करते समय कुछ छोटा रख दिया गया। लेकिन, के आकारके तारतम्यको देखनेसे यह वात ठीक नहीं जँचती। सभी इधरके ोंकी तरह शिखरके ऊपरी भागमें काष्ठवेष्ठनी है। गर्भगृहके द्वारपर आकर ो वहाँ चौखटकी चारों ओर वहुतसी अलंकारार्थ मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं, जो मंदिरका अभिन्न अंग, तथा १२वीं-१३वीं सदीके पीछेकी नहीं हो सकती।

गर्भगृहके वाहर सभा-मंडप है, यद्यपि इसमें भी गर्भगृहकी तरह रोशनदान है, किन्तु दरवाजोंके होनेसे यहाँ रोशनी काफी आती है। इस मंडपमें भी चार विशाल पाषाणस्तंभ हैं। दीवारके गौखोंमें आठ पुरुष-परिमाण मूर्तियाँ जिन्हें पंच पांडव और द्रौपदी वनाकर यात्रियोंको दर्शन कराया जाता है। कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि वह पांडव-मूर्त्तियाँ नहीं हैं, वल्कि उनका शैव संप्रदायसे है। इनमेंसे पाँच मूर्त्तियाँ काफी प्राचीन हैं और कलाकी भी अच्छी हैं।

अव यात्री लोग भी दर्शन करनेके लिए आने लगे थे, इसलिए मैं वाहर आ गया। केदारनाथका मंदिर एक ऊँचे चवूतरेपर स्थित है। वाहर मंदिरका हाता है। मंदिरके पीछेकी ओर वहुतसे पत्थरोंका ढेर पड़ा था, जिसे कमीटीने साफ करवाकर उसे और प्रशस्त वनवा दिया है। पीछेवाली चहारदीवारीमें वहींसे निकली कुछ मूर्त्तियोंको जड़ दिया गया है, मूर्त्तियाँ "खंडस्फोट" हैं और सभी व्राह्मण-धर्मसे संवंध रखती हैं। वाहर हुए मैं पीछेसे हातेके दाहिने कोनेपर गया। वहाँ श्री अम्बादत्त तंगवालने मंदिर नहीं ईशान कुटिया खड़ी कर रक्खी है। उनका कहना है, कि यही खंडके मूल ईशान भगवान् हैं, जिनका वर्णन महात्म्यमें मिलता है। पुस्तक खोलकर ईशान शब्द दिखलानेसे पहले ही मेरी दृष्टि मंदिरके वाहर हुए पत्थरोंमेंसे एकपर पड़ी। मुझे गौरसे देखते हुए देखकर उन्होंने यह भोटिया अक्षर है। मैंने जव इस मंदिरको ठीक-ठाक करनेके लिए कराई, तभी यह लेख निकल आया। यद्यपि भोटिया वू-मे (शिरोरेखा लिपिके अक्षरोंसे इस अभिलेखकी दोनों पंक्तियोंके दसों अक्षर मिलते हैं, यह भी याद रखना चाहिए, कि वू-मे लिपि मध्य-एसियाकी गुप्ता व्राह्मीसे है, इसलिए इसे जैसे भोटिया लिपि कहा जा सकता है, वैसे ही गुप्ताव्राह्मी यह तो निश्चित है, चाहे यह भोटिया वूमे लिपि हो या गुप्ताव्राह्मी, इसका कत्यूरीकालसे पहलेका है। यदि गुप्ताव्राह्मी होती, तो ४थी-५वीं सदी सकती थी। यदि वू-मे तो ७वीं-८वीं शताव्दी की, जव कि तिव्वती साम्रा तरिमउपत्यकासे लेकर सारे हिमालयमें था। अक्षरोंको मैंने पढ़नेकी कोशिश नहीं की। शायद संस्कृत नहीं है। तिव्वती भाषा होना ही संभव ऐसा होनेपर पहला अक्षर ये है, दूसरा य, तीसरा र, चौथा यू, पाँचवाँ र क और छठवाँ द होगा। इससे कोई अर्थ नहीं निकलता। शिलालेख है। संभव है, इसका दूसरा टुकड़ा भी यहीं कहीं आसपासमें पड़ा

ा तो इस लेखसे स्पष्ट ही हो जाता है, कि १२वीं-१३वीं सदीमें वने वर्तमान रसे पहले भी यहाँ कोई मंदिर था, जिससे इस लेखका संवंध है। यदि यह ब्राह्मी और भाषा संस्कृत या प्राकृत होती, तो यह ४थी-५वीं सदीका होनेसे केदारखंडके अभीतक प्राप्त लेखोंमें सवसे पुराना माना जाता, किन्तु तिव्वती होनेपर भी यहांका सवसे पुराना तिव्वती लेख है ही। मंदिरके आसपास टीने जो खुदाई की थी, वह पुरातात्त्विक दृष्टिसे नहीं की गई, उसका उद्देश्य मंदिरके हातेको कुछ साफ करके वड़ा वना देना। श्रीअम्वादत्तजीने जव महातम दिखलाया, तो मैंने भी उस लेखका महातम वतलाकर कहा, कि पहले इसे आप मंदिरके भीतर रखिये।

नवदुर्गाका मंदिर नहीं, एक टूटी फूटी मढी है, जिसमें ११वीं-१२वीं सदीके “खंडस्फोट” मूर्त्तियाँ रक्खी हुई हैं, जिनमें नौ तो नहीं, पाँच मातृकायें हैं, यह भी मालूम होता है, कि शायद पहले यहाँ नवो मातृकायें थीं।

शास्त्रीजी इस वातका अफसोस कर रहे थे, जिसमें मैं भी उनका साथ दे था, कि यहाँसे थोड़ी दूर उत्तर जिस स्थानपर भगवत्पाद शंकराचार्य मरे थे, उक्त आचार्यका कोई स्मारक नहीं है।

नवदुर्गाकी मूर्त्तियोंको देखें या मंदिरके चौकठेके पत्थर और मूर्त्तियोंको र १७४१-४२ ई०में हुए रुहेलोंके प्रहारका साफ पता लगता है। मंडपमें वड़ी चार धातु-मूर्त्तियाँ भी हैं, जो यही वतलाती हैं, कि उन्हें कहीं छिपा दिया था, क्योंकि रुहेलोंके साथ मूर्त्तियोंको गलाकर द्रव्य वनानेका भी पूरा प्रवंध

§२. बदरीनाथ-यात्रा

१. कालीमठ

११ मई(१९५१)को साढ़े ९ वजे धूप काफी फैल गई थी, जव कि मैंने केदार-वदरीनाथकी यात्रा आरंभ की। वलवहादुरको सामान-सहित ६ वजे ही गौरीकुंड भेज दिया था। मैं कोई वोझ नहीं उठाये हुए था, यद्यपि मैंने ले चलनेका थैला पिछले ही साल खरीदकर रख लिया था। मुझे यहाँ र उसकी अवश्यकता मालूम होती थी। कैमरा मेरे कंधेसे लटक रहा था, र पाकेटमें थी, किन्तु उनके अतिरिक्त भी दो-एक चीजोंकी अवश्यकता होती थी, जिनके लिए पीठका थैला उपयोगी होता। खैर, मैं खाली था

और ११७६० फुटसे ६८०० फुटपर उतरनेका, सात मीलका रास्ता फिर लीफ होनेकी संभावना क्या थी ? दो घंटेमें गौरीकुंड पहुँच गया। दुरने भोजन तैयार किया और भोजनोपरान्त यही अच्छा समझा, कि कुछ मंजिल तै की जाय; इस प्रकार उसी दिन शामके ५ वजे हमने रामपुर पहुँचकर डेरा डाला।

जाते समय पं० विशालमणि उपाध्यायसे वचन देकर गये थे, कि लौटते जरूर उनके यहाँ ठहरेंगे।

१२ मईको नित्यके अनुसार ५ वजे सवेरे ही उठ दो घंटेमें ५ मील चलके पहुँच गये। चट्टीकी दुकानें अभी अभी खुल रही थीं, चायका पानी रखा रहा था। एक तरुण दुकानदारसे वातचीत करने लगा। वलवहादुर पीछे इसलिए उसके लिए प्रतीक्षा करनेकी भी अवश्यकता थी। दुकानदारने पत्ती डालकर चाय तैयार की। अभी मक्खियोंकी वाढ़ नहीं आई थी, एक गिलास चाय पी लेनेका मन किया। वलवहादुरको भी चाय पि यह कह देना जरूरी था, कि मध्यान्ह भोजन हम व्योंग चट्टीमें करेंगे। यह इलाका मैखंडाके नामसे प्रसिद्ध है। मैखंडा गाँव फाटासे डेढ़ मीलपर ब्राह्मणोंने वहाँ महिषमर्दनीका मंदिर वनाकर इस नामकी व्याख्या भी है और महात्म्य वढ़ानेके लिए पासमें दो विशाल खंभोंपर झूला भी डाल है। लेकिन यह सव न होनेपर भी मैंखंडाकी प्राचीनतामें कोई संदेह वदरीनाथ धाम जिस इलाकेमें अवस्थित है, उसको पैनखंडा कहते हैं और नायके इलाकेको मैखंडा। दोनोंकी व्याख्या एक ही तरहकी होना यह दोनों अलकनंदा और मंदाकिनीकी ऊपरी उपत्यकाओंके नाम हैं। खंडामें जिस तरह जोशीमठ पुराने मंदिरोंका एक प्राचीन स्थान है, करीव वही स्थिति मैंखंडाकी है। यद्यपि यहाँसे अधिक मंदिर भेतमें हैं, किन्तु किनारेकी मढ़ीमें यहाँ भी वहुतसी खंडित मूर्त्तियाँ रखी हुई हैं। मढ़ीके पीछे मुखोंसे पानीकी धार गिरती रहती है। जाते वक्त ही मैंने शिव-पार्वतीकी किंतु अद्भुत मूर्त्तिको देख लिया था, लेकिन उस समय मूर्तिका अच्छी तरह नहीं ले सका था। इस समय वह काम करना था। शिव-पार्वतीको हथौड़ोंने तोड़कर अलग अलग कर दिया। उनके अद्भुत सौंदर्यको दिल कहता था—वह कैसे कठोर-हृदय पशु होंगे, जिन्होंने ऐसी कलाकृतिपर हाथ छोड़नेकी हिम्मत की। किंतु, धर्मान्धता क्या नहीं कर आगे आनेपर कुछ चर्मकारोंकी झोपड़ियाँ मिलीं। उनसे पूछनेपर मालूम

वह अपने चमड़ोंको वहुत कुछ यहीं सिझा लेते हैं। उनका सिझानेका ढंग ीन है और काम आनेवाले मसालोंमें वंज (ओक) की छाल मुख्य है। यह देखकर भी उत्सुकता हुई। यह लोग चमड़ेको गढ़ा-सिझाई प्रक्रियासे सिझाते हैं, कि नीचे आम तौरसे चरसे (चमड़े) में मसाला डालकर उसे टाँगकर सिझाया ा है, जिसके कारण चमड़ेके वाहरी तरफ मसाला नहीं पहुँच सकता। मैंने गरके सरकारी चमड़ा स्कूलके प्रवंधकको इस वातका रोना रोते देखा, कि छात्र- देनेपर भी हमें विद्यार्थी नहीं मिलते। मैंने वहाँके शिल्पकारोंसे कहा— क्यों नहीं उस स्कूलसे फायदा उठाते। उनका उत्तर उचित ही था—हम अपने कोंको वूट-चप्पल वनाना यहीं सिखला सकते हैं और सिखलाते भी हैं। लेकिन ा जूता वनानेके लिए हमें नीचेसे चमड़ा मँगाना पड़ता है। आठ-नौ रुपयेमें नेवाले जूतोंमेंसे सात रुपया तो चमड़ेमें चला जाता है। मैंने कहा—क्या अपने लड़कोंको चमड़ा सिझाईका काम सीखनेके लिए श्रीनगर नहीं भेज ते। मैंने यह भी वतलाया, कि तुम्हारी गढ़ा-सिझाई प्रक्रिया वहुत अच्छी यदि तुम उसमें आधुनिक रसायनके मसालेको डाल सको, तो चीनी चर्म- ोंकी तरह वहुत अच्छा चमड़ा तैयार कर सकते हो। शिल्पकारोंने इसके लिए उत्सुकता प्रकट की, लेकिन मुझे विश्वास नहीं, कि सरकारी स्कूलके लोग ी सहायता करना चाहेंगे।

योंगमें वलवहादुरने भात-तरकारी वनाई। कुछ ही फर्लांगपर ऊपरी में जहाँ आलू दस आने सेर था, वहाँ निचले व्योंगमें वह सवा रुपये सेर । भोजनोपरान्त यहाँ अधिक नहीं ठहरा, क्योंकि जानता था, विशालमणिजी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। पाँच फर्लांग चलनेपर जुरानीमें पेंशन-प्राप्त ओवर- श्रीनारायणसिंहका वाग मिला। इन्होंने यहाँ अंगूर, मालटा, नारंगी, आदि कई तरहके फल लगाये हैं। मैखंडा और पैनखंडामें वह सारे मेवे जा सकते हैं, जिन्हें कि हमें पाकिस्तानसे मँगाना पड़ता है। नारायणसिंहने तजर्वा करके रास्ता भी दिखला दिया है। सुन्दर नारंगियाँ पेड़ोंपर लगी , लेकिन जान पड़ता है, नारायणसिंहको वगीचेसे वहुत आशा नहीं है, अथवा लाभके लिए वह सड़क और नहरकी ठेकेदारीको ज्यादा पसंद करते हैं। णसिंह वहाँ नहीं मिले और उनके नौकरने भी मेरी जानकारीमें वृद्धिके सहायता नहीं करनी चाही। पता लगा, नारायणसिंहकी जमीनके ही भागमें थोड़ीसी भूमि लेकर सरकारने भी अपनी फलोंकी नरसरी खोल दी नरसरीकी जगह ठीक करते समय आँखके भरपूरोंने यह नहीं देखा, कि वहाँ

पानी भी है ? पानी न होनेके कारण भला नरसरीका काम कैसे आगे बढ़ सक
है । वैसे भी सिर्फ नरसरीके सस्ते पौधों और दो-चार आदमियोंके सामने कु
लेक्चर दे देनेसे पैनखंडा और मैखंडा मेवोंकी भूमि नहीं वन जायेंगे । उसके लि
यातायातका सुभीता तथा वाहर फल भेजनेवाली एजंसियोंकी अवश्यकता हो
तभी यहांके खेतोंमें गेहूँ-जौकी जगह अधिक महँगे मेवेके वगीचे लगाये जा सकते

भेत—साढ़े १२ वजे मैं भेत पहुँचा । श्रीविशालमणिजी और दूसरों
भी आग्रह है, कि इसे भेत न कहकर नारायणकोटि कहा जाय । शायद नाराय
कोटिसे आगे उसे तीर्थपुरी वनानेकी आशा हो, लेकिन इस स्थानका ऐतिहासि
महत्त्व भेत शब्द हीसे प्रकट हो सकता है । सड़कके ऊपरकी ओर कई पुराने मं
और पानीका कुंड है । इनमेंसे कितने ही मंदिरोंमें अव मूर्त्तियाँ नहीं हैं, व
तो खंडित हैं । वाजारमें सड़कके किनारे भी दो कत्यूरीकालके मंदिर हैं । गां
थोड़ा नीचे वड़े लंवे चौड़े खेतोंके वीचमें अलंकृत पत्थरोंकी वनी छतके नीचे सु
वावड़ी है, जो किसी समय लोगोंके घरोंके लिए स्वच्छ शीतल जल दिया क
थी, किंतु जिसे अव लोगोंने अनावश्यक समझकर पत्थर डालकर वंद कर दि
है । इसमें संदेह नहीं, कि भेत पहले किसी छोटे-मोटे सामन्तकी राजधानी र
होगी । उसके ध्वंसमें सवसे आखिरी हाथ वटाया रुहेलोंने ।

मैं जल्दी जल्दी भेत आया था, कि विशालमणिजीको लेकर जितना सं
हो सके कालीमठ चलूं । विशालजी उस स्थानको ढाई मील वतलाते थे । आधा
मंदाकिनीके किनारे तक उतरना फिर उतना ही चढ़कर वहाँ जाना था ।
लौटनेके वारेमें मुझे कोई फिकर नहीं थी, लेकिन चाहता था, यदि काफी रो
रहते ही कालीमठ पहुँचूं, तो फोटो लेनेमें आसानी होगी । मगर जल्दी कर
भी शर्माजी ढाई वजेसे पहले तैयार नहीं हो सके । विचारोंमें कुछ आधुनि
रखते हुए भी शर्माजी संस्कृतके पंडित हैं, इसलिए दो घंटेमें तैयार हुए, तो
वात नहीं । हमें कालीमठ जाना था । ढाई वजे जाते वक्त सूरज पीठकी
था और रास्ता उतराईका, इसलिए कोई तकलीफकी वात नहीं थी । भे
नारायणकुटी वनाकर उसकी प्राचीनताको कम करनेका प्रयत्न जरूर हो र
है, किंतु यह कत्यूरीकालमें एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा, इसके परिचायक अव
वहांके वहुतसे पुराने शून्य मंदिर हैं । हम पगडंडीके रास्ते उतरते निचले टो
उस जगह पहुँचे, जहाँ कि "भयहरनाथ जोगीसिध"वाली सुन्दर वावड़ी है
१८वीं सदीके इस लेखसे यह नहीं समझना चाहिये, कि भयहरनाथ हीने इसे
वाया होगा, क्योंकि वावड़ी जितनी सुन्दर है, उसमें यह लेख सजता नहीं । इ

काफी चौड़े-चौड़े खेत हैं। वैसे यहाँका पहाड़ धीरे-धीरे चढ़ा-उतार है, किंतु तो भी इन खेतोंके इतने चौड़े होनेमें पहले कारण इनपर खड़े मकान। शर्माजी बतला रहे थे, कि यहीं राजाका प्रासाद था। अब वहाँ कोई नहीं था। संभव है, वहींके पत्थरोंको ले जाकर लोगोंने घर बना लिया। खेतकी बाँधोंमें कहीं-कहीं कोई गढ़ा हुआ पत्थर भी मिलता है। बावड़ीसे नीचे नालेके पास "नीलंग"का ध्वंसावशेष है। शर्माजीने इसका नाम लिंग केदार" बतलाया। नहीं कह सकता, यह पंडिताऊ व्याख्या ठीक है या रण आदमी द्वारा बतलाया नीलंग नाम ठीक है। खंडहरके स्थानमें अवश्य मंदिर या स्तूप रहा, यद्यपि स्तूप माननेके लिए मेरा अधिक आग्रह नहीं है। कुछ टूटी फूटी मूर्त्तियाँ पड़ी हैं, जिनमें सवा बित्तेकी एक दीपधारिणी स्त्री-धातुकी है। जिस तरह अपने पासकी दूसरी मूर्त्तियोंकी तरह यह धातु-अरक्षित स्थानमें है, उससे इसे कभीका ही उठ जाना चाहिये था। न उठने-कारण यही होगा, कि बाहरके मूर्त्तिचोरोंको इसका पता नहीं लगा, या इसका क सुन्दर न होना उनकी नजरमें नहीं जँचा, गाँवके लोग तो इस दिव्य-वाली मढ़ीके डरके मारे ही उसे छू नहीं सकते थे। मूर्त्तिके पास किसी त-दंपतीकी पत्थरकी दो मूर्त्तियाँ हैं, जो शायद इस मंदिरके बनानेवाले थे। एकाध तांत्रिक देवता भी हैं।

हम वहाँसे अब खेतोंको लाँघते मंदाकिनीके किनारे पहुँचनेसे पहले सड़क-आ गये। मंदाकिनीपर लोहेका झूला नहीं पुल है। पुल पार भी अब सड़क दी गई है। इसमें श्रीविशालमणिजी और जिलाबोर्ड दोनोंका कृतज्ञ होना ये। पुल पार होते ही चढ़ाई लगी। चढ़ाई चढ़कर हमलोग काली गंगाकी कामें आ गये, जिसके दाहिने किनारेपर कालीमठ स्थित है। नाम सुननेसे मोंको भ्रम होगा, कि कलकत्तेके कालीघाटकी सस्ती नकल करते किसी तांत्रिक-हाँ एक नया स्थान खड़ा कर लिया होगा। शायद कालीमठका पहले कुछ नाम रहा हो। सौभाग्यसे वहाँके मंदिरमें एक बड़ा कत्यूरीकालीन शिला-है, उसके पढ़े जानेपर स्थान और स्थानीय सामन्तका पता लगे बिना नहीं ा। फर्लांग दो फर्लांग पहले हीसे कत्यूरीकालीन मंदिरोंके शिखर दिखाई गे, जिससे मुझे विश्वास हो गया, कि विशालमणिजी कृत विशाल प्रशंसा नहीं है, किंतु यह देखकर अफसोस हुआ, कि हम ऐसे समय पहुँच रहे हैं, कि सूर्यका प्रकाश करीब करीब समाप्त हो चुका है। यहाँपर कई मंदिर किन कालीजी इन मंदिरोंमें नहीं, बल्कि खम्भोंपर खड़ी छतवाले एक चबू-

तरेके गढ़ेमें यंत्रके रूपमें विराजमान हैं। इस नवीन सिद्धपीठके होते भी स्थानके वातावरणसे प्राचीनताकी गंध आ रही थी। सबसे बड़ा मंदिर शायद अपने प्राचीन रूपमें नहीं है। उसमें कितनी ही मूर्त्तियाँ हैं। वहाँके लोगोंने बतलाया कि असली कालीपीठ या कालशिला सामनेके दुरारोह पर्वतशिखरपर है। कुछ लालसी छींटें पड़ी कालीगंगाके भीतरकी एक शिलाको दिखलाकर बतला कि जब दुर्गाने कालशिलामें बैठे रक्तबीजके अत्याचारोंसे भक्तजनोंके प्राणों रक्षाके लिए कालिकाको पैदा किया, तो उसने यहीं आकर रक्तबीजको मार परंपरा इस कालिकाको दुर्गाके क्रोधसे उत्पन्न हुई एक छोटे दर्जेके देवी मानते है। संभव है, कालशिला और कालीगंगा पुराने नामोंके अवशेष हों, यद्यपि संस्कृ का काल शब्द समय और ध्वंसक वस्तुके लिए ही आता है, रंगवाची 'का शब्द हूणोंकी भाषाका है, जिनका नाम भारतमें ईसाकी आरंभिक सदियों पहले नहीं सुना गया।

कालीमठमें एक और प्रथा प्रचलित थी, जो कि अब बंद हो चुकी है। यहाँ चार-पाँच गाँवोंके खस लोग अपनी लड़कियोंको देवीके मंदिरपर चढ़ा देते थे जिनको रानी, देव-चेली या देव-रानी कहा जाता था। आजसे थोड़े ही साल पू अभी एक-दो वृद्धा देव-रानियां मौजूद थीं। हमारे पथप्रदर्शकने नदी पार उस घरको भी दिखलाया, जिसमें रानियां रहती थीं। चाहे इस प्रथाका आरंभ कैसी भी शुद्ध भावनासे हुआ हो, किंतु एक शाक्त वातावरणमें उनसे आजन्म कौमा व्रतकी रक्षाकी आशा रखना केवल दुराशा मात्र था, इसलिए यदि ये देव-रानि देवदासीका रूप ले लेती हों, तो इसमें आश्चर्य करनेकी अवश्यकता नहीं निश्चित गांवोंके लोगोंने कालीदेवीको कुपित करके बहुत जोखिम उठाया जब कि कुछ सालों पहले उन्होंने अपनी लड़कियोंको मंदिरपर चढ़ाना बंद दिया। लेकिन समाजका कोप दैवीकोपसे भी बड़ा होता है। वह जानते थे इस प्रथाको जारी रखनेपर हम साधारण खस (राजपूत) जातिमें कभी अप प्रतिष्ठा नहीं रख सकते। यहां हरगौरी, सरस्वती और लक्ष्मीके तीन मंदिर हैं हातेमें जो खंडित मूर्तियां और लिंग हैं, और जिनमें एक-लिंग त्रिमुख और दूसरा चतुर्मुख है, उनकी कला भी प्राचीन है। मालूम होता है, पहले यह स्थान पाशुपतों (लकुलीशों) का था। लक्ष्मीमंदिर टूट फूट गया था, जिसे पीछे पुराने पत्थरोंको जोड़कर ठीक किया गया। इस मंदिरके साथ एक लंबा मंडप है, जिसकी बाहरी दीवारमें सामने एक बड़ा-सा शिलालेख है। संध्या हो चली थी, हमें भेत लौटना भी था, इसलिए कहीं कहीं अस्पष्ट उस सारे लेख

डालना संभव नहीं था। लेख २० इंच लंबा १० इंच चौड़ा और कुल त्यां १८ हैं। लिपि कत्यूरी ताम्रलेखोंकी है, जो १० वीं-१२वीं शताब्दियोंकी पास की हो सकती है। लेखके कुछ अंश हैं—

संध्या-समाधि-घटितांजलितः स्वपाणौ कृष्णौ सके पि सुम ऽाऽक्षिणांसः।
शर्व्वस्यऽस्वकर-संस्थित-तोयराशेः संधित्र(१)...दयितयेव गृहीतकेशः॥
दक्षोद्भवांतरुमपास्य शिरे प्रस्तुत शर्व्वं...पतिमवाप्य... (४)
गिरिपति गृहगोप्ता महारुद्राभिधार...
...बाल ऐवाभवत् स्वामी सर्व्वसंग्रामकृद्यतः। (११)
रुद्रसूनु ......कालिकाला शैल...
(१४)...संग्रामकीर्तिः प्राकृतकवयो (१५)।
(१५)...कर्त्तुः शिला-कुट्ट(१६)कैः..."

मालूम होता है, गिरिपति मंदिरके गोप्ता (संरक्षक) कोई रुद्र नामके त के पुत्र (रुद्रसूनू) सर्व्वसंग्रामाजित् बालपनमें ही हो गये थे। उन्होंने मंदिरको बनवाया था।

लक्ष्मीमंदिरके सामने दो कत्यूरी कालीन शिखरदार मंदिर है, जिनमें हरगौरीका इतना आश्चर्यकर साबित होगा, यह मुझे कभी कल्पना भी नहीं थी। मंदिर-तर अब प्रकाश बहुत ही क्षीण रह गया था, उसमें फोटो न ले सकनेके लिए पछताने लगा। मैं इसे अतिशयोक्ति नहीं समझता, यदि कहूं आज सारे भारतमें इतनी सुंदर अखंड हरगौरीकी मूर्ति कहीं भी नहीं है। मूर्ति ४० इंच लंबी तथा २४ इंच चौड़ी एक शिलासे बनाई गई है। मैं की खंडित हरगौरी मूर्तिसे ही बहुत प्रभावित था, किंतु यहां मैंने शोभा सौन्दर्यमें अद्वितीय इस हरगौरीकी मूर्तिको देखा। इसकी कोमल वंकिम ओंमें वही सौंदर्य भरा था, जो कि अजन्ताके चित्रोंमें दिखाई पड़ता है, बल्कि में ऐसा तन्वंग उत्कीर्ण करना संभव हो सकता है, इसपर आंखें विश्वास करती थीं। ललितासनस्थ हरके वामांकमें अनुपम सौन्दर्यराशिकी मूर्ति भूधरसुता विराजमान हैं। शिव चतुर्भुज हैं, किंतु गौरी साधारण मानवीकी द्विभुज। नीचे गणेश और मयूरारुढ़ कार्त्तिकेयकी मूर्तियां हैं। वहीं उस मी भक्तकी भी मूर्ति है, जिसने इस सुंदर मूर्तिके निर्माण करनेका व्यय किया था। मेरा मन तो कहने लगा, कि वह शायद रुद्रसूनु ही हो, और यह मूर्ति यहांकी प्रधान मूर्ति रही होगी। आश्चर्य और अत्यन्त प्रसन्नता

भी मुझे यह देखकर हो रही थी, कि यह कलाराशि रुहेलोंके प्रहारसे कैसे बच गई ? अवश्य यह किसी तरह उनके सामने आने नहीं पाई, नहीं तो उन्होंने इसके साथ भी वही वर्ताव किया होता, जो कि मैखंडाके हरगौरीके साथ किया। लोग बतला रहे थे, पहले कालीगंगाके परले तटपर भी मंदिर था, जिसे किसी बाढ़में कालीगंगा वहा ले गई। किंतु पारके मंदिरमें होनेके कारण यह सुंदर मूर्ति रुहेलोंके हाथोंसे नहीं वच सकती थी, इसे अवश्य किसीने छिपा दिया था। मैं घंटों मूर्तिके सामने वैठा, दर्शनसे तृप्त नहीं हो सका था, इसलिए अपनी तृप्तिके लिए भी मुझे मूर्तिके फोटोकी अवश्यकता थी और साथ ही यह आकांक्षा तो थी ही कि अपने पाठकोंको भी इसका दर्शन कराऊं, लेकिन संध्याके कारण वह नहीं हो सका। ऐसी सुंदर प्रतिमा और सुंदर मंदिरकी सेवाके लिए सुंदरी देवचेलियोंकी अवश्यकता थी ही। कुछ फोटो वाहरसे लेनेका प्रयत्न किया, और हम लौटनेके लिए तैयार हो गये। वहां स्थित भद्रजनोंने चाय पिलाये विना नहीं छोड़ना चाहा। विशालमणिजीका ७-८ वर्षका लड़का भी आग्रह करके चला आया था, किंतु लौटते वक्त वेचारा थक-सा गया था। फिर हम दोनोंकी जो वातें हो रही थीं, उनमें वह सहभागी नहीं हो सकता था, इसलिए और भी उसका मन नहीं लगता था। विशालमणिजी केदारनाथके पंडोंके साथ मुकदमेकी वात कभी वतलाते थे और कभी आसपासके ऐतिहासिक ध्वंसावशेषोंका जिक्र करते थे। उनको इन ध्वंसावशेषोंसे वहुत प्रेम है। वह चाहते हैं, कि इनका रहस्य खोला जाय। यदि इनकी तीव्र जिज्ञासाको शांत करनके लिए उनको पुरातत्त्व और मूर्तिविद्या-संवधी पुस्तकोंके अध्ययनका मौका मिला होता, तो वह वड़ा काम कर सकते थे। वह संस्कृत पंडित हैं। एक संस्कृत काव्य उस समय छपवा रहे थे। व्यवहारवुद्धि भी रखते हैं, इसलिए पुस्तक-प्रकाशन और पुस्तक-विक्रय द्वारा स्वावलंवी हैं।

२. ऊखीमठको

१३ मईको फिर हमारी डोरी वदरीनाथकी ओर खिंची और वलवहादुर आगे चलनेके लिए कहकर सवा ५ वजे सवेरे ही चल पड़ा। पं० विशालमणिजीने मना करनेपर भी नाला तक साथ चलनेका आग्रह नहीं छोड़ा। नालाके पुल मंदिरको मैं देख गया था, किंतु चाहता था, उसे फिर एक वार अच्छी तरह देखूं। मंदिरके पास पहुंचते ही वाहरकी चारदीवारी पर सड़कके किनारे ही एक पाषाण-स्तूप देखा। स्तूप वहुत वड़ा नहीं है, किंतु कुमाऊं-गढ़वालमें प्राप्त एक मात्र वौद्ध स्तूप होनेके कारण उसकी ओर मेरा ध्यान उस दिन क्यों नहीं गया

र आश्चर्य हुआ। कुमाऊं-गढ़वालमें असंदिग्धरूपसे बौद्धधर्मके तीन ही ह बच रहे हैं—(१) वदरीनाथकी मूर्ति, जो वस्तुतः ध्यानावस्थित बुद्धकी त मूर्ति है, (२) नाला का यह पाषाण-स्तूप और (३) वाडाहाट (उत्तर ी) में दत्तात्रेयके नामसे पूजी जाती बुद्धकी भव्य धातुमूर्ति। मैंने विशाल-जीका ध्यान भी इधर आकृष्ट कराया और इसके वाद उन्हें मंदिरके कोने- छोटे मंदिरके द्वारपर उत्कीर्ण कत्यूरी शिलालेखको जाकर दिखलाया। जल्दी जल्दीमें कुछ पढ़नेकी कोशिश की—

> "स्वस्ति। श्रीदेवि...नुमः।
> तत्र...भद्रस्य (२) मनसा कर्मणा वाचा अंगुष्ठाण..धि-यत।
> देवपितृ-प्रसादेन मण देवस्य...(३)
> पुण्यकर्म्मभरादेव करिष्यन्ति सुरालयं।
> भुक्तिमुक्तिफले तस्य...(४)
> सरस्वतीप्रसादेन घटिता प्रतिमा सुभा।
> सुक्र धरम।...साके...११६८"

इस लेखसे यह तो निश्चित हो जाता है, कि शकाब्दकी १२वीं शताब्दीके र्द्ध अर्थात् ईस.की १३वीं शताब्दी (१२४६ई०) में यह मंदिर वनाया गया। इसकी लिपि भी कत्यूरी अभिलेखोंकी है, जो जान पड़ता है १३वीं ब्दी तक उत्तराखंडमें प्रचलित थी।

विशालमणिजीसे विदा हो मैंने ऊखीमठकी ओर जल्दी जल्दी पग बढ़ाया। में ही उत्तराखंड विद्यापीठ मिला। विद्यापीठके प्रिंसिपल श्री अय्यर महा- के अनथक परिश्रम तथा मंदिर कमेटी और दूसरे दाताओंकी सहायताका ह फल है, जो इस झारखंडमें यह विद्यापीठ खड़ा हो गया। एफ० ए० के छात्र यहांसे परीक्षामें वैठते हैं। ऐय्यर महाशयकी बड़ी इच्छा है, कि पीठ डिग्री कालेज हो जाय। इसमें आयुर्वेद और संस्कृतके विद्यालय भी लित हैं। काशीकी संस्कृत-परीक्षाओंमें यहांके छात्र वैठते हैं। आज रवि-का दिन था, छुट्टीके कारण विद्यापीठके मकानों और फरनीचरोंको ही मैं सकता था, इसलिए वहुत आग्रह करनेपर भी मैंने देखनेके लिए क्षमा मांगी। तरफ मुझे अय्यर महाशयके उत्साह और परिश्रमके लिए उनके प्रति श्रद्धा ही थी, दूसरी ओर ख्याल करता था, कि कव तक हमारा देश अर्थकरी विद्या केवल संगीत-साहित्य-कलामें ही मग्न रहना चाहेगा। देशकी आर्थिक

कठिनाइयां तभी दूर हो सकती हैं, जब कि शिक्षामें विज्ञानका सबसे अधिक
हो। उत्तराखंडमें नाना धातुऐं हैं, जिनसे लाभ उठानेके लिए पर्वत-पुत्रों
पुत्रियोंको खनिज विज्ञान सिखलानेकी अवश्यकता है। उत्तराखंडके
गात्रको मेवोंके बगीचोंसे ढंका जा सकता है, जिसके लिए उद्यान-विज्ञानकी
अवश्यकता है। यहां अच्छी जातिकी भेड़ोंको पालकर अच्छे किस्मका ऊन
पैदा किया जा सकता है, उसके लिए पशुप्रजननके वैज्ञानिक तरीकोंको सिखलाने
अवश्यकता थी। लेकिन यह बीमारी तो सारे भारतकी है। अंग्रेजोंके
बाद भी अंग्रेजोंकी ही खर्चीली तथा कम-लाभकरी शिक्षा-प्रणाली चलती जा
है। इमारतपर ज्यादा-से-ज्यादा खर्च करनेके लिए मजबूरी है,
प्रयोगशालापर खर्च करना कठिन मालूम होता है, अथवा साधारण घरमें
शाला रखनेकी जगह उसके लिये खर्चीली इमारतकी मांग की जाती है।
महाशय तथा उनके सहयोगियोंको हजार धन्यवाद है, जो एक-एक पैसा
जांचकर, तथा बदरीनाथ मंदिर समितिकी उदारतासे अपना काम चला
हैं। विद्यापीठका आयुर्वेद विभाग चाहता है, कि औषधि-निर्माण द्वारा
आय-मार्ग निकाला जाय।

ऊखीमठ—बलबहादुर आगे चला गया था। मैंने भी बिना एक क्षण बैठे
जल्दी आगे पग बढ़ाया। मंदाकिनीका पुल बहुत दूर नहीं था, उसे पार होकर
एक मील चढ़कर ऊखीमठ पहुंचा। बदरीनाथ मंदिरके लिए जो स्थान
मठका है, वही स्थान केदारनाथके संबंधमें ऊखीमठका है। जाड़ोंमें
रावल तथा प्रबंधक यहीं रहते हैं। वैसे ऊखीमठका मंदिर नया है, मूर्तियां
बहुत-सी नई हैं, जिनपर द्रविड़-मूर्तिकला और वास्तुकलाका प्रभाव है, किंतु,
कुछ पुरानी मूर्तियां भी हैं। बगलके मंडपमें कई मूर्तियां हैं, जिनमें
मूर्ति पुरानी है। अबूटधारी किंतु सूर्यमुखी फूलवाली द्विभुज दो
भी मौजूद हैं। भीतरका शिवलिंग मुखलिंगवाला है। पुरुषप्रमाण,
किसी सामन्तकी भी मूर्ति मंदिरमें है। वहीं बगलमें किसी दाढ़ीवाले
पास राजकुमार और राजकुमारीकी दो मूर्तियां हैं। मुमकिन है यह किसी
कत्यूरी सामन्तकुलकी हों।

ऊखीमठ और केदारनाथके बारेमें एक प्रश्न मेरे सामने उपस्थित था।
समझता था कि यहांके रावल साहबसे उसमें सहायता मिलेगी। रावल
तरुण तथा सज्जन पुरुष हैं और बदरीनाथ मंदिर समितिके सहायक मंत्री
नारायणदत्त बहुगुणा भी बड़े भद्र पुरुष हैं। दोनोंने अपनी शक्तिभर मुझे

ता प्रदान करनेका प्रयत्न किया। रावल साहब पठित हैं। पहलेके कितने ही
वलोंकी तरह ये भी कर्नाटक देशके रहनेवाले हैं। उनसे दक्षिणके शैव-संप्रदायके
बंधमें बातचीत हुई। मेरी समस्या थी--उत्तर (हिमाचल) का यह प्रधान
दिर दक्षिणी शैवोंके हाथमें कैसे चला गया। कुषाणकालसे लेकर गुर्जर-प्रतिहार-
न तक अथवा ईसाकी प्रथम दश शताब्दियोंमें उत्तरी भारतमें जिस ब्राह्मण-
की प्रधानता थी, वह शैव धर्म था। कुषाणोंके सिक्कोंमें शिव और नंदीको प्रमुख
ान मिलना इसी बातको सिद्ध करता है। गुप्त चाहे अपनेको परमवैष्णव
खते हों, किंतु उस कालकी मूर्तियों तथा साहित्यपर शैव धर्मकी ही अधिक छाप
। हिमाचलका यह भूखंड ईसाकी आरंभकी शताब्दियोंमें ही प्रधान तीर्थ
ा, जिसका अधिक प्रचार गुप्तकालमें हुआ। उस समयसे ही इसका नाम भी
रखंड पड़ा। आजकल यद्यपि बदरीनाथ या बदरीनारायणके नामसे ही गंगाके
उद्गम-स्थान प्रसिद्ध हैं, किंतु हमारे पुराने ग्रंथोंमें इसे बदरीखंड नहीं, केदार-
कहा गया है। मौखरियों और हर्षवर्धनके कालमें भी शैव धर्मका पता
ता है। गुर्जर-प्रतिहारोंके समय तो खजुराहो जैसे सुंदर शैव वास्तुशिल्प
र मूर्तिकलाके केंद्र स्थापित हुए। उसी समय हिमाचलमें कत्यूरियोंका शासन
. जिनके यहां शैव मूर्तियों और देवालयोंकी बहुतायत थी। वामांके विराजमान
री सहित हरकी मूर्ति, मुखसहित शिवलिंग, और केवल शिवलिंगमें भी रेखाओं
ग उसे शिश्नका रूप देना जैसे पुराने शैव चिह्न काली (सरयू) नदीसे सत-
की उपत्यका तक मिलते हैं।

इसका यह मतलब नहीं, कि उस समय दक्षिणमें शैवोंका प्रभाव कम था,
न प्रश्न यह है: जब ईसाकी १०वीं-१२वीं शताब्दी तक उत्तरमें भी शैव धर्म
नता रखता था, तो दक्षिणके शैवोंके हाथमें कैसे केदारनाथ का प्रबंध चला
। रावल साहबने यह बतलाया कि, यहां आनेवाले रावलोंमें कितने ही द्रविड़
े आये थे, लेकिन इधर वह कर्णाटक देश हीसे आ रहे हैं। यह भी उन्होंने
ाया, कि हम बसवके वीर-शैव संप्रदायके अनुयायी नहीं हैं। वस्तुतः उत्तरवाले
हासकारों और विद्वानोंमें अक्सर यह भ्रम देखा जाता है। वह समझते हैं,
णमें जो वीर-शैव संप्रदाय प्रचलित है, वह बसवको ही अपना प्रधान आचार्य
ता है। केदारनाथमें जिस शैव संप्रदायके रावल आते हैं, वह बसवके सुधारके
पहलेके हैं। उनका और बसवके संप्रदायका वही संबंध है, जो सनातनी और
समाजी हिंदुओंका, अथवा पुराने सिक्खों तथा अकाली सिक्खोंका। रावल
कह रहे थे: बसवने कोई सुधार-उधार नहीं किया। वह तो एक राजमंत्री

था और अपने राजनीतिक दलको मजबूत करनेके लिए ही उसने प्राचीन धर्ममें विगाड़ पैदा किये । अस्तु, यह निश्चित है, कि केदार नाथके रावलों संप्रदाय दक्षिणके प्राचीन शैव संप्रदायसे संबंध रखता है । दक्षिणमें जिस शैव वैष्णव संप्रदायोंकी तनातनीसे शिव और विष्णुको एक दूसरेसे वहुत होना पड़ा, वह अवस्था उत्तरमें नहीं हुई। यहां शैव विष्णुकी पूजा करनेसे नहीं हो जाता था। आजकल दक्षिणके प्राचीन या नवीन दोनों ही प्रकारके विष्णुको शिवका साधारण सेवक भर मानते हैं और उनकी पूजाको कर्तव्यमें नहीं शामिल करते ।

मैंने रावल साहवसे कहा--उत्तरमें ईसाकी १२ शताब्दियों तक शैव संप्रदा खूव प्रचार मालूम होता है और आजसे कमसे कम ३-४ शताब्दियों पहलेसे दक्षिणसे यहां धर्माचार्य रावल आने लगे । इससे जान पड़ता है, कि १२वीं १६वीं शताव्दीके वीचमें किसी समय उत्तर भारतीय शैवाचार्यका स्थान भारतीय शैवाचार्यने लिया । रावल महाशयने वतलाया, कि उनकी परंपरा ऐसा कोई समय मालूम नहीं है, जब कि इस तरहका परिवर्तन हुआ हो । मैंने अपनी कल्पना वतलाई: चाहे शंकराचार्यको वदरी-केदारके संवंधमें कितनी प्रधानता दी जाय, और उनके चार महान् पीठोंमें जोशीमठको गिना जाय, गढ़वाल-कुमाऊंके सारे पुरातत्व-संवंधी अवशेष वतला रहे हैं, कि कत्यूरी के अंत (१२वीं सदी) तक इस भूमिमें शंकरके अनुयायियोंकी नहीं, वल्कि लीश शैवोंकी प्रधानता थी। वही लकुलीश शैव यहांके कत्यूरी राजाओंके गुरु थे यहांके मंदिरोंके रावल थे और यहांकी भव्य इमारतों तथा मूर्तियोंके निर्माता प्रतिष्ठाता थे । १२वीं शताव्दी तक शंकराचार्यके अनुयायियोंको यहां प्रधानता नहीं मिली थी । शंकराचार्यके संवंधकी यह परंपरा शायद सच्ची कि छद्मवेशमें किसी शैवने ही उनको केदारनाथमें विष देकर मार डाला । पड़ता है १२वीं शताव्दीके वाद नीचेकी तरह पहाड़के भी विद्वानोंमें वेदांतका प्रभाव वढ़ा । शंकरके वेदांतियोंको न विष्णुसे कुछ लेना था, न ही, और काम पड़नेपर अर्थात् व्यवहारमें वह सव कुछ वननेके लिए तैयार “अन्तःशाक्ताः वहिःशैवा” भी हो सकते थे, “अन्तःशैवा वहिर्वैष्णवाः” भी हो थे। जान पड़ता है अपनी इसी नीतिसे उन्होंने वदरीनाथको अपने हाथमें लिया । ११वीं-१२वीं शताव्दीमें वदरिकाश्रमके रावल शैव होते थे या इसके वारेमें अभी निश्चय नहीं कहा जा सकता । कत्यूरी राजा अपनेको परम कहते हुए भी वदरिकाश्रम भगवान्की पूजा-अर्चाके लिए वड़े-वड़े वृत्ति-वंधान

इसका कारण उनकी राजनीतिक उदारता थी अथवा तत्कालीन शैव धर्मका मिक समन्वय वाद, इसे नहीं कहा जा सकता । अभी तक केदारखंडके वहुतसे नोंका पुरातात्विक अनुसंधान नहीं हुआ है, हो सकता है, आगे इस पर और प्रकाश । मैं समझता हूं, केदारनाथके तत्कालीन रावलने जव देखा, कि धीरे-धीरे शैव को शंकरके वेदांतियोंने शैव वनकर उदर-सात् कर लिया है, कहीं ऐसा न हो, कि केदारनाथको भी अपने हाथमें कर लें । पहाड़से जो उनको उत्तराधिकारी मिल ते थे, अव वह ऐसी अवस्थामें नहीं थे, कि वेदांती शैवोंका मुकावला डटकर करते प्राचीन शैव धर्म तथा पूजा-कलापको अक्षुण्ण रखते । अंतिम शैव राउलने ष्यको अंधकारपूर्ण देखा । उन्हें मालूम होने लगा कि यदि सावधानीसे काम लिया गया तो कुछ ही समय वाद केदारनाथसे शैवधर्मका नाम भी लुप्त जायगा । केदारनाथ सारे भारत ही क्या जावा, और कम्वोज जैसे प्रधान देशोंमें एक प्रख्यात और पवित्र तीर्थ-भूमिकी तरह प्रसिद्ध था । दक्षिणी भारतसे की तरह तव भी तीर्थयात्री आते रहते थे । अंतिम उत्तरी राउलको उनके यह मालूम था, कि दक्षिणमें शैव धर्म खूव फूल-फल रहा है, उसकी नींव वहां है । उसने सोचा: असली शैव माता-पिताका पुत्र ही पक्का शैव राउल सकता है, इसीलिए उसने किसी दक्षिणी शैव साधुको अपना उत्तराधिकारी या, जिसके वाद दक्षिणसे ही रावल आने लगे ।

ऊखीमठमें केदारनाथ भगवान्के लिए प्रदत्त भूमि या ग्रामोंके वहुतसे दानपत्र न्तु उनमें १८वीं शताब्दीसे पहलेका कोई नहीं है । शाके १७१९ र्थात् १७९७ ई०) का एक नैपाली राजाका ताम्रपत्र है । संवत १८६८ १८११ ई०) में—जव कि रणवहादुरशाहकी मैथिल ब्राह्मणी कनिष्ट पत्नी न्तवती देवीके नावालिग पुत्र गीर्वाणयुद्ध विक्रमशाहका शासनकाल था—गोरखा-अधिकारी रामदास थापाकी मांने निजभर्तृ-विक्रमार्जित कूर्माचलके ली इलाकेमें कुछ भूमिदान केदारनाथ भगवानके लिए किया था । काल के १७१९ विजयनाम संवत्सरे माघ कृष्ण चतुर्दसी सोमको यह दानपत्र ा गया ।" इससे पहले १७५५ में फतेपतशाह, १७६२ में जैकृतशाह और ३ में प्रदीपशाह इन गढ़वाल नरेशोंने भी केदारनाथ भगवान्को भूमि प्रदान ीं। १७४१–४२ के रुहेला-आक्रमणने जहां मूर्त्तियोंका खंड-स्फोट किया, मंदिरों- टा, वहां उस समय तक चले आये कागज या भोजपत्रके लिखे अभिलेखोंको शायद नष्ट कर दिया, इसीलिए १८ वीं सदीसे पहलेके कोई अभिलेख केदार वदरीनाथके रावल कार्यालयमें नहीं मिलते । संभव है, यदि पूरी तौरसे छान-

बीन की जाय, तो पंडोंके घरों, रावल-कार्यालयके रद्दीखानोंमें कुछ कामकी मिलें। देशके भिन्न-भिन्न स्थानोंसे राजा लोग जो भेंट भेजते थे, उसके रावल लोगोंकी चिट्ठियां जाती थी। सौ-सवा-सौ वर्ष पुरानी ऐसी मैंने रामपुर-बिशेर रियासतके कागजोंमें देखी हैं। संभव है, ऐसी और चिट्ठियां राजस्थान, हिमाचल, सौराष्ट्र और दक्षिण भारतके रियासती में मिल जायं।

× × ×

ऊखीमठ अच्छी चट्टी है, यहां बहुतसी दूकानें हैं। हम मंदिरमें जाकर आये, तब तक बलबहादुरने भोजन भी तैयार कर रखा था। भोजन बाद यहां कोई काम न रह गया था, इसलिए तीन बजे चल पड़े। मंदाकिनी आरपार किंतु धारसे मील-डेढ़ मील ऊपर गुप्तकाशी और ऊखीमठ बसे हुए दोनों ही एक दूसरी जगहसे अच्छी तरह दिखाई पड़ते हैं। ऊखीमठसे तो दूरतक गढ़वालकी पर्वतमयी भूमि दिखलाई पड़ती है। यहां जंगलोंका बहुत कम ही लगता है, अधिकतर भूमि या तो खेतोंकी सीढ़ियोंमें परिणत हो है, अथवा जंगलोंके कट जानेसे नंगी बन गई है। मईके महीनेमें तो यहां प्राकृतिक हरियाली या सौंदर्य नहीं था, वर्षामें अवश्य यह सारी भूमि हरियाली ढंक जाती होगी। बलबहादुरसे चलते वक्त मैंने कह दिया था, कि आज नदी किनारेवाली चट्टी (ग्वालियाबगड़) में रात्रि-विश्रामके लिए ठहरना है। कंठा चट्टीपर (ऊखीमठसे साढ़े ३ मील) दो घंटे तक प्रतीक्षा करता रहा, कि बलबहादुरका पता नहीं था। मुझे तो डर लगने लगा, कि कहीं वह पीछे ही किसी दूकानमें तो नहीं बैठ गया—शायद सोचता हो, मैं पीछे छूट गया मैं लौटनेकी सोच रहा था, इसी समय दूर बलबहादुरकी छोटीसी मूरत धीरे आती दिखाई पड़ी। वहीं ठहर जाते, किंतु मक्खियां इतनी अधिक कि मन नहीं माना। बलबहादुरके आते ही उसके साथ-साथ दो मील कर उसी नामकी छोटी नदीके किनारे ग्वालियाबगड़ चट्टीमें पहुंचा। सूर्य हो गया था, शायद इसलिए भी मक्खियां भिनभिना नहीं रही थीं। पिछली चट्टीमें जहां पानीका बहुत तोड़ा था, वहां इस चट्टीमें आगे-पीछे अगल-बगल जगह पानीकी नाली या धार कलकल कर रही थी। और भी बहुतसे लोग टिके हुए थे। कानपुरके दो नातिवृद्ध कुर्मी भगत साथ ही तीर्थ करनेके लिए थे। दोनोंका गांव पास-पास था, तथा दोनों ही एक जातिके थे, किंतु उनमें एक, जो आयुमें कुछ कम था, इस धुनमें था कि सरपट दौड़कर यात्रा पूरी

जाय। उसके साथीमें इतनी शक्ति नहीं थी। उसे इस दौड़-धूपके कारण कुछ रत-सी भी आ गई थी। कंठाचट्टीमें उसने अपने साथीसे कहा, कि आज यहीं जाय, साथीका कहना था कि दो घंटा दिनसे टिकना अच्छा नहीं होगा। खिरमें वह नहीं माना और अपने साथीको छोड़कर ग्वालियाबगड़में चला आया। उससे कहा—परदेशमें आकर अपनें भाईबंधको ऐसी अवस्थामें छोड़कर चल जीवन भरके लिए कलंककी बात है, ऐसा तुम्हें नहीं करना चाहिए। हुआ यदि दो दिन बाद घर लौट कर गये। उसने भी अपने पक्षका समर्थन ा। चमोलीमें पहुंचनेपर मैंने देखा, उसका साथी बुखारमें पीड़ित हो अस्प-में आया है, लेकिन अब वह भी उसके साथ है।

३. तुंगनाथ

ग्वालियाबगड़से दस-साढ़े-दस मील तकका रास्ता चढ़ाईका है। मैंने देखा, घोड़े मिल रहे हैं, ऐसी अवस्थामें पैदल चलनेकी अवश्यकता नहीं थी, लिए मैंने रुपया मीलपर घोड़ा कर लिया। १४ मईको ५ बजे ही घोड़ेपर के चला। घोड़ेवालेने बड़ी तारीफ की थी, लेकिन घोड़ा कमजोर था। तीन मील चलनेके बाद रास्ता अधिक ऊँचाईपर आ गया। यहाँ हरे-भरे न भी काफी थे और जूड़ी जूड़ी छाया बहुत सुखद मालूम होती थी। केदार-की तरफसे इधर भी कहीं-कहीं ऊँचाई दिखलानेवाले साइन्बोर्ड हाल लगाये गये थे। इनमें "समुद्रतलसे ऊपर...फुट" अंग्रेजीमें लिखा था। १९५१ ई०के अप्रैल या मईमें खड़े किये जानेवाले यह साइनबोर्ड ीमें क्यों? उत्तर-प्रदेशमें मैंने बहुत जगह सड़कोंपर हिन्दीमें मीलके अंक संकेत लिखे हुए देखे हैं, यह पहाड़ भी उत्तर-प्रदेश हीका अंग है, फिर अंग्रेजी-इतनी क्यों? जान पड़ता है, यदि किसी अधिकारीका ध्यान पंतजीकी ओर उसने हिन्दीमें लिखवा दिया। लेकिन अधिकारियोंमें अंग्रेजी-भक्तोंकी मी नहीं है, विशेषकर जब कि वह जानते हैं, कि हिंदीके राष्ट्रभाषा स्वीकृत लिये जानेपर भी उनके प्रधान-मंत्री नेहरू अपनी जगहसे टससे मस नहीं हुए, नकी हिम्मत और बढ़ जाती है। शायद यह उसीका परिणाम है Above level 7000 feet (समुद्रतलसे ऊपर ७००० फुट)। शायद यह भी तर्क किया जा सकता है, कि बदरी-केदारधाम अखिल भारतीय हैं, सुदूर मद्रासके वासी हिंदी अक्षरों-अंकोंको नहीं समझ पायेंगे, उनके लिए अंग्रेजीमें ना अधिक लाभदायक है। उन्हें इसकी क्या परवा कि ८० फी

सदी तीर्थयात्री उत्तर भारतके होते हैं, जिनमेंसे मुश्किलसे १० सैकड़ा अंग्रे परिचित हैं।

पैदल चलनेमें भी आनंद आता। यहाँ हिमालयके एक सुषमापूर्ण भूखं चलना हो रहा था, किंतु तव वीच-वीचमें ठहरते हुए चलनमें ही आनंद आ जिसके लिए कि समानधर्मा सहयात्रीकी अवश्यकता होती। खैर, हम ६ मील चलकर ८ वजेसे पहले ही वाणियाँकुंडीचट्टीमें जव पहुँचे, तो घोड़ा चुका था। घोड़ेवालेने भी तुंगनाथ तक चलनेका आग्रह नहीं किया। य तुंगनाथ ३ मील था और चढ़ाईके साथ ऊँचाई भी मिल जानेसे ऐसा-वैसा घो मेरा वोझ उठाके चल नहीं सकता था। वाणियाँकुंडीके एक चट्टीवालेके घो वड़ी प्रशंसा हो रही थी। कह रहे थे, उसे पलटनमें ले जाना चाहते थे, आप ही ले जायँ। मैंने 'एवमस्तु' कहा, और पीछे पछताना नहीं पड़ा। घोड़ा मजवूत और काफी तेज भी था। घोड़ेके आनेमें एक घंटेकी देर हुई। ७-८ ह फुटकी ऊँचाईपर भी मक्खियोंका अखंड राज था। चट्टीवाले शिकायत कर थे, कि डी० डी० टी० छिड़कनेवाले अभी नहीं आये। उनका डी० डी० टी० विश्वास हो गया है। उन्होंने अपनी आंखोंके सामने देखा, डी० डी० टी० छिड़ का अर्थ है, मक्खियोंके लिए महा-प्रलय। शायद हमारे तीर्थयात्रियोंमें भी कम ऐसे होंगे, जो कि मक्खियोंके संवंधमें अहिंसा-धर्म पालन करनेका आग्रह सत्याग्रह करेंगे।

घोड़ेपर चढ़कर चलनेमें अव एक तरहका आनंद आ रहा था। सवा लिए अच्छा जानवर मिलनेपर ऐसा ही होता है, यद्यपि इस घोड़ेपर वह लोग निर्भय होकर चल सकते थे, जो कि पृथिवीके गुरुत्वाकर्षणके वलपर सवारी क चाहते हैं। आसपासके जंगलोंमें खरशू और तूनके वृक्ष अधिक थे, देवदार-जा वृक्षोंकी कमी थी। वाणियाँकुंडीके कुछ नीचे हीसे गाँव खतम हो जाते ऊपर जाड़ोंमें वर्फ पड़ती है, इसलिए शायद लोगोंने गाँव वसाना पसंद नहीं कि हाँ, आजकल कहीं-कहीं ग्वालोंकी झोंपड़ियाँ लग गई थीं, गाय-भैंसें चरनेके आई हुई थीं। इधरकी चट्टियोंमें कितने ही घर उजड़े दीख पड़े।. जान प है, पिछली अर्ध-शताब्दीमें जिस तरह बरावर यात्रियोंकी वृद्धि होती रही, कारण हर एक पास-पड़ोसका ग्रामीण दूकान छाननेके लिए तैयार हो ग माँगसे अधिक दूकान छाननेका यह परिणाम हुआ, कि कुछको टाट उलट हट जाना पड़ा। उन्हींके नामपर यह खंडहर रो रहे हैं। नवीन भारतमें इन चट्टि को और समृद्ध होना चाहिए। यदि तीर्थयात्रिओंकी संख्या कम हो, तो हिमाल

सौंदर्यका आनंद लूटनेके लिए सैलानियोंकी संख्या वढ़नी चाहिये। हाँ, ये मक्खियोंसे भिनभिनाते, फूसकी झोंपड़ियोंवाले दरिद्र घर पसंद नहीं । भारतके लोगोंका साधारण जीवनतल अधिक ऊँचा हुए विना नहीं रह , क्योंकि आजके निम्न जीवन-तलके विरुद्ध अकाल और भूखमरीने धावा दिया है। पैसा अधिक हाथमें आने दीजिये, और हर एक भारतीय नर-को कमसे कम चार सालकी अपनी मातृभाषामें अनिवार्य शिक्षासे गुजरने , फिर अपने ही झुंडके झुंड सैलानी हिमालयकी ओर निकल पड़ेंगे। के दोनों ओर ग्वालियावगड़ और मंडल तककी पर्वतस्थली हिमालयके रमणीय स्थानोंमें हैं। ऐसे स्थान जापान या कोरियामें सैलानियोंसे भरे हैं।

वाणियाँकुंडीसे चौपता चट्टी एक मील है। इससे थोड़ा आगेसे तुंगनाथका (२ मील) अलग होता है। पिछली यात्रामें किसी अनाड़ीने तुंगनाथकी इतना भय दिखलाया, कि मैं वहाँ गया ही नहीं, लेकिन अव की बार वहाँ जाना था। दुराहेपर मैंने देखा, अव भी कुछ तीर्थयात्री तुंगनाथको छोड़-दाहिनेके रास्ते निकले जा रहे हैं। एक असाधारण मोटी वंगाली प्रौढ़ा महिला-हिम्मतको मैं दाद दिये विना नहीं रह सकता था। वह तुंगनाथके रास्तेपर आध आगे मिलीं और वड़े करुणाजनक स्वरमें पूछ रही थीं,—अभी कितना दूर है। डेढ़ मील कहना उनके ऊपर अत्याचार करना होता, इसलिए मैंने कहा—दूर नहीं है, चढ़ाई भी खड़ी नहीं है, लेकिन ऊँचाईके कारण साँस अधिक है, धीरे-धीरे बैठते-सुस्ताते चली आओ। मेरी तरह और भी कितने दमी घोड़ोंपर चल रहे थे, और कितने ही यहाँ भी पैदल २५-२५ कदमपर आगे वढ़ रहे थे। तुंगनाथ जव मीलभरके करीव रह गया, तो वनस्पतिका खतम होने लगा। आज सवेरेसे साढ़े चार हजार फुटसे ९ मील चलकर ०७० फुटपर पहुँचा था। जहाँ आखिरी २००० फुट वनस्पतिके राज्यसे निकलते जा रहे थे, वहाँ ऊँचाईके अनुसार अलग-अलग वनस्पति-जातियों-राज्य था। ९००० फुटके आस-पास खरशू (ओक) और देवदार मिल रहे तुंगनाथके आखिरी हजार फुटमें तो सिवेरियाकी तुंद्रा दिखाई पड़ रही यहाँ आज (१४ मईको) भी वर्फ थी, यद्यपि वह सारे पर्वतपर अविछिन्न नहीं थी। तुंगनाथ हम १० वजे पहुँचे। सैकड़ों यात्री वहाँ आ चुके थे। में हिमगलित पानीवाली आकाश-गंगामें श्रद्धालु नर-नारी डुबकी भी थे। हमने तो अपना नियम रक्खा है, ६००० फुटसे ऊपरकी ऊँचाईपर

हफ्तेमें एक दिनका स्नान पर्याप्त है। युधिष्ठिरकी राजसूय यज्ञके प्रधान पुरोहि धौम्यने यह गुह्य तत्त्व बुलानेके लिए आये अर्जुनको समझाना चाहा, लेकिन पड़ता है, गांडीव धनुषके चलानेमें इतनी फुर्ती रखनेवाले कौंतेय बुद्धिकी दौड़में कमजोर-से ही थे। वेद-वेदांग-पारंगत महर्षि धौम्यने हिमालयके ऐसे स्थानमें वर्षोंसे अपने शरीरको जल डालकर उसी तरह अपवित्र नहीं किया था, जिस त कम्यूनिस्टोंके हाथमें जानेसे पहलेके तिब्बतके लोग। अर्जुनने बातसे नहीं अपने भावोंसे धौम्यके प्रति घृणा प्रकट करनी शुरू कर दी, जब कि पहाड़के स्थानमें पहुँचते ही ऋषिने नित्य स्नान और संध्या-तर्पण शुरू किया। अर्जुनको बहुत समझाना चाहा, कि हिमालयकी हवा शरीर और मन दोनों पवित्र कर देती है, यहाँ जल-स्नानकी अवश्यकता नहीं है। जब मैदानमें धौम्यने त्रिकाल-संध्या-स्नान शुरू किया, तो अर्जुनने समझ लिया, कि यह पूरा ढोंगी है, न जाने क्यों भैयाने इसे ही अपने यज्ञका प्रधान ऋत्विज मानने हठ ठानी है।

केदारनाथ और बदरीनाथमें तो कितने ही लोग एकाध रात ठहर भी हैं, किंतु तुंगनाथमें रात्रिवास करनेवाला शायद ही कोई अभागा यात्री ईंधनके अभाव अतएव महँगाईके कारण यहाँ रोटी नहीं पूरी खाई जाती है साढ़े तीन रुपया सेर थी, भारवाहक लोग ही रोटी खाते होंगे। मुझे यह बड़ा अफसोस हुआ, कि आज आकाश साफ नहीं था, नहीं तो इस उच्च-स्था नीचे मैदान तक और ऊपर हिमाचल-श्रेणियों तकके विराट भूभागका बड़ा दृश्य दिखलाई पड़ता। हिमश्रेणियाँ तो दिखाई दे रही थीं। तुंगनाथ सबसे अधिक ऊँचाईपर अवस्थित हिंदू-तीर्थ है। यह शिखर नहीं बल्कि पर्वत उच्चतम पृष्ठभूमिपर है। मंदिर निर्माताओंने अच्छा किया, जो एकदम नहीं बल्कि जरासा नीचे उसे बनवाया, नहीं तो प्रायः सदा चलनेवाले झंझा यात्रियोंको बहुत कष्ट होता। आज खैरियत थी, जो हवा नहीं चल रही थी, तो नहानेवाले यात्रियोंकी और भी परीक्षा होती। हमको फोटो लेना था, धूपके न होनेके कारण अच्छा नहीं आ सकता था। यहाँ भी रुहेलों द्वारा बहुतसी मूर्त्तियाँ हैं। कहीं पढ़ा था, तुंगनाथमें पत्थरकी एक बुद्ध मूर्त्ति है। वह मूर्त्ति कहीं दिखलाई नहीं पड़ी। भीतर शिवलिंग है, जिसके पीछे पद्मासन कुंडलधारी किसी भक्त साधुकी मूर्त्ति है। शायद इसीको लोगोंने बुद्ध समझ हो। हाँ, ५-६ इंच ऊँची भूमिस्पर्श मुद्रामें एक धातुमयी बुद्ध मूर्त्ति अवश्य रक्खी है, जो मूर्त्ति कहींसे लाई गई हो सकती है। १७४१-४२

ा लूटमें भला यह मूर्ति कैसे वच सकती थी; लेकिन छोटी होनेसे इसको छिपाया कता था। यह मूर्त्ति इस वातका प्रमाण नहीं है, कि तुंगनाथमें पहले कोई मंदिर था। ऐसे दुरारोह स्थानमें मंदिर वनाना प्राचीन वौद्ध नियमके था। तिव्वतमें भी ऐसे स्थानोंमें विहार १३वीं-१४वीं शताब्दीके वाद लगे। मुख्य मंदिरके वाहर भी छोटी-मोटी आधे दर्जनके करीव मढ़ियाँ जिनमें हरगौरी या दूसरी खंडित मूर्त्तियाँ हैं। पंडोंने सभीके सामने पैसेकी रख छोड़ी है।

एक घंटेमें हमारा दरस-परस हो गया, फोटो उतारना और पूरी खा लेना समाप्त हो गया। दरस-परसमें अवश्य ज्यादा समय लगा, क्योंकि कुछ श्रद्धालु ी भद्र पुरुष और महिलायें आ गई थीं, इसलिये पुजारीने लंवा संकल्प पढ़ना किया और सो भी एक-एकका अलग-अलग। एक दर्जनके करीव आदमी के भीतर संकल्प पूरा करानेके लिए खड़े थे, इसलिए दर्शन करना संभव था और मुझे झुंझलाते हुए प्रतीक्षा करनी पड़ी।

घोड़ा यहीं तकका था। आगे उतराई ही उतराई (आठ मील तक) थी, ए उसकी अवश्यकता नहीं हो सकती थी। मैं ११ वजे तुंगनाथसे रवाना । जहाँतक रास्तेका सवाल है, यात्रीको मंदिरसे अधिक ऊँचाईपर चढ़नेकी कता नहीं पड़ती, लेकिन पर्वतकी रीढ़ तो पार करनी ही पड़ती है। रीढ़ हुँचकर दोनों तरफकी पहाड़ी ढलान अच्छी तरह दिखाई पड़ी। दोनों प्राय: हजार फुट तक वृक्ष या झाड़ियाँ नहीं, वल्कि उनकी जगह घास थी। यहाँके पशुपाल इसे वुक्याल न कहें, क्योंकि वह वुक्याल विस्तृत ढालुवाँ घास-ोंको कहते हैं। दो मील उतरकर भेलकना चट्टी है। खरशू और देवदार वृक्ष तुंगनाथसे हजार फुट नीचेसे शुरू हो गये थे। भेलकनामें चौपतासे आनेवाली सड़क आ मिलती है। यहाँ घंटों इन्तिजार करनेके वाद वलवहादुर । कलसे ही देख रहा था, वह चलनेमें वहुत ढिलाई कर रहा है। क्या हो सकता है, इसका पता अगले दिन लगनेवाला था। वोझ इतना नहीं था, जिसके कारण गति मंद हो सकती थी। भेलकना वैसे छोटी चट्टी । यहाँ कई मकान खंडहर पड़े थे, जो आसपासके ग्रामीणोंकी अविचार-याके परिचायक थे। भूले-भटके यात्रियोंके लिए मील दो मीलपर चट्टियों-ा अच्छा है, लेकिन दूकानदारको तो रोज दस-पाँच यात्री चाहिये। यहाँ म ही यात्री ठहरते हैं। वैसे स्थान अच्छा है। वसंत या वर्षामें और भी मालूम होता होगा, मक्खियाँ भी और स्थानोंकी अपेक्षा कुछ कम थीं।

इतना सवेरे ठहर जाना मैंने अच्छा नहीं समझा और जैसे ही बलबहादुर आया यह कहकर आगे चल पड़ा, कि पौने तीन मीलपर आनेवाली अगली चट्टी रात्रि-विश्राम होगा।

आगे उतराई ही उतराई थी, लेकिन एकदम सीधी नहीं। थोड़ी दूर त पहाड़की रीढ़पर भी चलना पड़ा। इस जंगलकी यात्रा सैलानियोंके लिए ब आकर्षक हो सकती है। पांगरवासा चट्टीका नाम सुनकर यात्रामें ही परिचि हो गये डाक्टर घोषने कहा: "बंगाली नाम वासा"? मैंने कहा: ऐसे बहुत शब्द उत्तर-भारतीय भाषाओंमें समान हैं, इसलिए उन्हें किसी एक भाषा नहीं कहा जा सकता। उन्होंने पूछा—पांगर क्या है? मैंने कहा—आसपास जंगलोंमें पांगर अर्थात् चेस्टनटके वृक्ष अधिक हैं, इसीलिए चट्टीका नाम पांगरवा पड़ गया। अभी भी दिन बहुत था, लेकिन बलबहादुरकी गति देखकर मैंने य रहना ठीक समझा। पहले मक्खियोंने बहुत दिक किया, किंतु जब सूर्यने अप किरणें बटोर लीं, तो उनसे त्राण मिला। पांगरवासा बड़ी चट्टी नहीं है। तुंगना की उतराई करके आनेवालोंके लिए भेलकना बहुत नजदीक पड़ जाती है, उ बाद यही अनुकूल चट्टी है। घोष महाशय तो यहाँसे आगे बढ़ गये थे। मेरे आने समय अधिकतर टिकानें खाली पड़ी थीं। लेकिन अँधेरा होते ही कहीं रहने ठौर नहीं रह गया। चट्टीवाले दूकानदारोंने यह अच्छा किया है, जो खानेकी चीजें खरीदकर रसोई नहीं बनाने वालोंको भी एक आना प्रति आदम पर टिकनेके लिए स्थान दे देते हैं। लोगोंकी भीड़ देखकर हमें एक ओर सिमट पड़ा। बलिया जिलेके एक वृद्ध ब्राह्मण किसी प्रौढ़ा भक्तिनके साथ तीर्थ क आये हुए थे। भक्तिनने रातको मीरा और तुलसीके भजनको तोड़-मरोड़कर अप भाषामें जोर-जोरसे गाना शुरू किया। उस समय कुछ लोग तो सोनेमें विघ्न सम कर झुँझला रहे थे और कुछ भक्तिभाव-संपन्न जन उन्हें और गानेके लिए प्रोत्साहि कर रहे थे। भक्तिनने भक्तोंके आग्रहको देखकर कहा—भूखमें कहीं भज होता है? मैंने सोचा, कबीर साहबने भी कहा है "भूखे भजन न होय गोपाला लेकिन दो-तीन घंटा रात गये, अपने-अपने बिछौनेपर लेटे लोगोंमेंसे किसी मनमें इतनी श्रद्धा नहीं उत्पन्न हुई, कि उठकर भक्तिनको दो-चार पैसे दे भजनको जारी रखवा सके। दूसरोंके लिए अच्छा ही हुआ, नहीं तो यह बेसु गान न जाने कबतक चलता रहता।

१५ मईको ५ बजे सबेरे ही रवाना हुए। यहाँसे मंडल (सवा तीन मील तक कलसे भी सुंदर अरण्य-भूमि थी। सारा रास्ता उतराईका था। मंडल

बँगला कुछ ऊपर ही है, लेकिन मुख्य चट्टी अलकनंदाकी एक शाखाकी समतल यकामें है। चट्टीके भीतर घुसनेसे पहले ही टीका लगानेवाले रहते हैं, किंतु पड़ता उसके लिए वहुत आग्रह नहीं है। श्रीनगरमें टीकाके लिए वड़ी कड़ाई ी है, और उससे वहुत कम ही वच निकलते हैं, तो भी हमारे लोग भरसक ा नहीं लगवाना चाहते। यहाँ भी कुछ ऐसे आदमी आये थे, लेकिन डाक्टर अभी वहाँ मौजूद नहीं थे और उनके आदमीने वहुत जोर नहीं दिया। की चट्टी काफी लंवी है, दूकानें भी वहुत हैं। लेकिन सभी चट्टियोंकी तरह या आटा-चावल लेकर रसोई वनाइये, या दूध अथवा दिनभर औटती पत्तियोंकी पीजियें। दहीका वहाँ नाम नहीं। इस भूमिमें केला तथा दूसरे फल हो सकते किन फलोंका भी कहीं पता नहीं। कितने ही दिनोंकी वनी विना स्वादकी इयोंको खानेको किसका मन होगा? वलवहादुरको हमने चाय पिला दी वहाँसे चल पड़े। इस उपत्यकामें भी टिड्डियाँ आई थीं। उन्होंने फसलको नुकसान पहुँचाया था, लेकिन कुछ खेतोंमें गेहूँ कट रहे थे। रास्ता नदी करके उसके वायें किनारेसे था। विना चट्टियोंकी भी एक-दो दूकानें रास्तेमें ीं। वैरागन कुछ वड़ी चट्टी है, किंतु कहीं न खाने पीनेका आकर्षण था, न सुननेका, इसलिए हम आगे ही वढ़ते गये। फिर पहाड़की एक वाहीं पार दूसरी छोटी नदीको पुलसे पार किया। यहाँसे गोपेश्वर तक सवा मीलका चढ़ाईका था। चढ़ाई शुरू होते ही किरायेके घोड़े खड़े मिले। हमने रुपयेपर घोड़ा कर लिया।

४. गोपेश्वर

गोपेश्वर वड़ा गाँव है, किंतु उससे ढाई मील ही पर चमोली एक अच्छा कस्वा है। यह समझमें नहीं आता, कि चमोली छोड़कर यहाँ क्यों हाई वनानेकी अवश्यकता पड़ी। चमोलीमें मोटरका अड्डा है। अभी श्रीनगरसे हाँ मोटर आती है, किंतु आगे २८मील जोशीमठ तक मोटरकी सड़क वन है। चमोलीमें हाई स्कूल होनेपर लड़कोंके लिए अधिक अनुकूलता हो सकती हाँ, गोपेश्वर एक तीर्थ है, यह आकर्षण जरूर हो सकता है। स्कूलके पक समझते होंगे, कि यात्रियोंसे कुछ सहायता मिल जायगी, लेकिन आज-गोपेश्वर कोई वैसा तीर्थ नहीं है, चढ़ाई चढ़नेके कारण कुछ देरके लिए लोग म भले ही कर लेना चाहें, नहीं तो यह तीसरी श्रेणीके पूज्य-स्थानोंमें भी है। इसमें शक नहीं, पुराने समयमें यह केदारखंडके प्रमुख तीर्थोंमें रहा

होगा। केदारनाथ छोड़ यहाँका प्राचीन मंदिर गढ़वाल और कुमाऊँका सवसे पुराना और विशाल मंदिर है। कई दर्जन पुरानी टूटी-फूटी मूर्त्तियाँ इसके गत वैभव को वतलाती हैं। १३वीं शताब्दीके दो नैपाली विजेताओंने यहाँके विशाल लौ त्रिशूलपर अपने अभिलेख खोद छोड़े हैं। त्रिशूलके डंडेपर तो उससे भी ५- शताब्दियों पूर्वका अभिलेख है। गोपेश्वरके ऐतिहासिक महत्त्वसे कौन इन्कार कर सकता है? विशाल मंदिरके शिखरमें एक ओर लंबी दरार पड़ गई है यदि उसकी मरम्मत न हुई, तो मंदिरका ध्वस्त हो जाना निश्चित है। मंदिरके आगे सभामंडप, जान पड़ता है, किसीने पीछेसे वनवाया। इसमें चित्रकारी भी की गई थी, लेकिन वह वहुत कुछ मिट गई है। यह मंदिर भी, वदरीनाथ मंदि समितिके आधीन है। चाहे यहाँपर अधिक पूजा न चढ़ती हो, किंतु पुरातात्त्वि महत्त्वको देखते हुए इसपर अधिक खर्च करनेकी अवश्यकता है। मैं जानता है था, कि वलवहादुर जल्दी नहीं आयेगा, इसलिए दर्शन और फोटोके कामसे निवृत्त हो लेना चाहता था। मंदिरके वाहर एक जगह एक दर्जन टूटी-फू पाषाण-मूर्त्तियाँ हैं, जिनमें वूटधारी सूर्य और चार मुखवाला मुखलिंग भी है मुखलिंग ही नहीं वल्कि साधारण लिंगमें रेखा द्वारा शिश्नका आकार लाने प्रयत्नने वतलाया कि यहाँ लकुलीश शैवोंका प्राधान्य था। वूटधारी सूर्यकी मूर्त्तियाँ वतला रही थीं, कि यह शकों द्वारा प्रचालित मूर्त्ति कत्यूरीकालकी है गोपेश्वर नाम तथा अभिलेखसे मालूम होता है, कि यहाँ सूर्यकी नहीं शिवकी प्रधानता थी। मंदिरके भीतर शिवलिंग है। सभा-मंडपके एक गलियारेमें क खंडित मूर्त्तियाँ रक्खी हुई हैं। उनमें एक वूटधारी सूर्य मूर्त्ति अधिक प्राची मालूम होती है। यह खंडित मूर्त्तियाँ रुहेलोंकी करतूत या उससे पहले अकबर समयमें आये टुकड़िया हुसेन खांकी धर्मान्धताको वतला रही थीं। इसमें ग नहीं, गोपेश्वरमें इस मंदिरके अतिरिक्त भी कितने ही छोटे-वड़े मंदिर थे, जिनकी ही मूर्त्तियाँ जमा करके जहाँ-तहाँ रक्खी हुई हैं। मुमकिन है, यदि खुदाई जाय, तो और भी कुछ मूर्त्तियाँ मिलें। गोपेश्वरके अपने रावल (गृहस्थ हैं, जिनकी प्रधान जीविका मंदिरकी दक्षिणा नहीं, वल्कि उसमें लगे खेतों उपज है। साथ ही उन्होंने एक छोटी-मोटी दूकान भी खोल रक्खी है। मक्खिय वहुत तंग कर रही थीं, लेकिन खाना तो खा करके यहाँसे चलना था।

वलवहादुर देरसे आया। फिर रसोई वनाते समय भी देखा, उसमें उत्सा नहीं है। मैंने उससे पूछा, तो कहा--इतनी मजूरी कम है। मैंने डेढ़ रुपया रो और खानेपर उसको नियत किया था। मैंने जव कहा, कि तुमने तो श्रीनगर

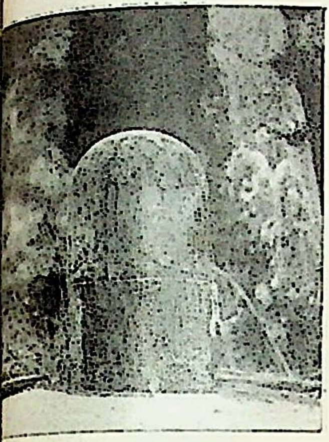

गोपेश्वर–प्राचीन शिवलिंग
(पृष्ठ ४५६)

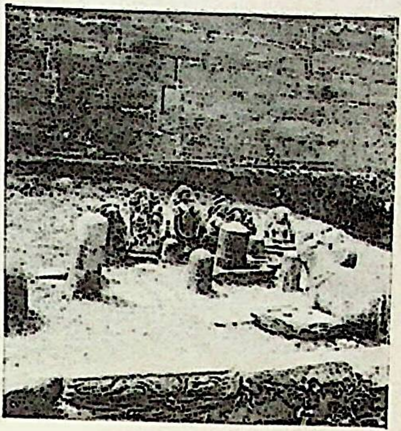

१२. गोपेश्वर–खंडित मूर्तियां
(पृष्ठ ४५६)

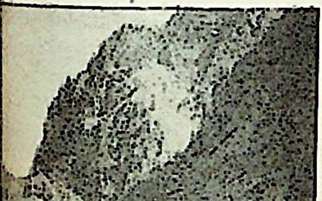

३. पांडुकेश्वरके जोड़े मंदिर
(पृष्ठ ४६६)

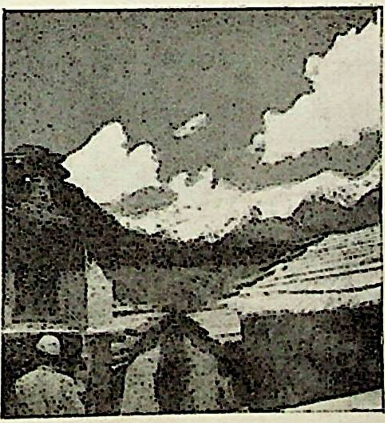

१४. हिमालयका एक दृश्य
(पृष्ठ ४६७)

कबूल किया था। उसने कहा—मैंने समझा था, दिनमें दो-चार मील चलना ना। खैर, मैंने समझ लिया, कि इधर वारह आना और रुपया मील तक कितने ही नैपाली कंडीवाले कमा रहे हैं। इसका भी ध्यान उसी ओर होगा। नें उससे कह दिया, कि आज हम चमोली पहुँच रहे हैं, यदि तुम्हें पहलेकी रीपर नहीं रहना है, तो वहाँसे मोटरका किराया देकर तुम्हें श्रीनगर भेज देंगे। मेरे लिए भी अच्छा था, क्योंकि मैंने देख लिया था, जो सामान अपने साथमें लाया हूं, उनमेंसे उतनी ही की मुझे आवश्यकता है, जिन्हें मैं अपने कंधेपर कर चल सकता हूं। भोजनोपरान्त २ वजे गोपेश्वरसे प्रस्थान किया। ोली यहांसे कुल ढाई मील है और रास्ता भी कहीं चढ़ाईका नहीं है। हां, वक्त इस जंगल-शून्य पर्वतस्थलीमें गर्मी अधिक मालूम हो रही थी—हम ५० फुटकी ऊंचाईपर उतर भी तो रहे थे। अलकनंदा आध मील चलनेके ही नीचे वहती मिली, किंतु उसके किनारे हम चमोलीके पास ही आकर े। अलकनंदाके दाहिने तटपर भी दो चार अस्थायी दूकानें थीं और घोड़े ांसे भी ऊपर थे। सोचा, यदि वदरीनाथ आने-जानेका घोड़ा मिल जाय, किरायेपर ले लें, लेकिन इस पारके सभी लद्दू घोड़े थे, जिनकी पीठपर जीन थीं। लादनेके आस्तरणपर वैठकर चलना सांसत मोल लेना था। मैंने उन्हें कर पुल पार हो चमोलीमें भाग्य-परीक्षा करनी चाही।

चमोलीका यह स्थान वस्तुतः एक कस्वे या व्यापारकेंद्रके उपयुक्त नहीं है, कि जिस जगह टेढ़ी-मेढ़ी गलियोंके किनारे दूकानें बनी हैं, वहांका पहाड़ सीधी ढ़का है। एक सज्जनके पास घोड़ा था, जो था तो लद्दू ही, किंतु चारजामा हे थे, परन्तु वह गरजू समझकर मनमाना किराया मांग रहे थे। मैं वस्तुतः लेनेके लिये मजबूर नहीं था। घोड़ा इसी ख्यालसे ले रहा था, कि उसके साथ वाला आदमी रसोइयेका भी काम करेगा। अगर हर दूसरी-तीसरी चट्टीपर वनाया भोजन मिल जाता, तो मैं पैदल चलना वहुत पसंद करता। लेकिन हाथसे रसोई वनाना वर्तन-भांडा मलना उतना आकर्षक काम नहीं था। मालूम था, कि कहीं कहीं भलेमानुस दूकानदार भोजन वनाकर दे सकते हैं, न वैसा हर जगह होना मुश्किल था और होता भी तो केवल रातके खानेके हीं। मैंने निश्चय कर लिया कि एक ऊनी चादर, एक दुसूती चादर, लटकाये दो कैमरे, एक रिवाल्वर और पोर्टफ़ेलमें डायरी जैसी कुछ चीजें वाकी सभी सामान चमोलीमें छोड़ दें। मसूरी छोड़नेके वाद अवतक मुझे लेनेकी जरूरत नहीं पड़ी, इसलिए इंजेक्शनका सामान ढोना भी मैंने

बेकार समझा। सोचा था, शायद कालीकमलीवालेके यहां सामान रखनेक इंतजाम हो जाय, लेकिन अभी वहां सारा प्रबंध चौकीदार कर रहा था, और व भी बेचारा बुखारमें पड़ा हुआ था। मेरा ध्यान अस्पतालकी ओर गया। वहां श्रीजीवानंद सुन्दरियालसे परिचय हुआ। वस्तुतः मैं यहां सामान रखवानेके ख्यालसे नहीं आया था, बल्कि एक छिले स्थानमें दवा लगवाना चाहता था। सुन्दरियालजी लेखकके रूपमें मुझे नहीं जानते थे, लेकिन साक्षात्कार होनेपर उन्होंने जिस प्रकारक सौजन्य दिखलाया, उससे मैंने यह कहना अनुचित नहीं समझा, कि मैं अपना सामान यहां छोड़ जाना चाहता हूं। उन्होंने खुशी खुशीसे स्वीकार किया। मैंने सोचा था, अगले दिन चलते वक्त सामान रख जाऊंगा, लेकिन कितनी ही देरकी प्रतीक्षाके बाद जब बलबहादुर आया, तबतक यहांकी सारी धर्मशालाय भर चुकी थीं और मुझे रहनेके लिए कहीं भी स्थान नहीं मिल रहा था। मैंने इससे यही अच्छा समझा, कि सामान इसी समय सुन्दरियालजीके यहां रख और अगली चट्टीका रास्ता पकड़ूं। बलबहादुरको उसकी ११ दिनकी मजदूरी, श्रीनगरतकका किराया, और कुछ इनाम-बखशीश देकर छोड़ दिया। सामान अस्पतालमें सुन्दरियालजीके पास रक्खा, फिर चादर कंधेपर और हाथमें पोर्ट फोल लेकर चल पड़ा। अभी घंटाभर दिन था। मालूम ही था कि आगे चट्टिय बहुत नजदीक-नजदीक हैं। दो मील जा मठ चट्टीकी एक दूकानके ऊपर ठहरा। दूकानदारसे बड़ी बेतकल्लुफीके साथ कहा और उसने रोटी-तरकारी बनाक खिला देनेका भार अपने ऊपर ले लिया। चटाईपर जिस वक्त मैं बैठा, तब त अंधेरा नहीं हुआ था। इसी समय एक मंगोल मुखमुद्रायुक्त तरुण मेरे पास आक कहने लगा: मैंने आपको कहीं साक्षात् अथवा फोटोमें देखा है। देखना तो नहीं ह सकता था, क्योंकि बाम्पा(नीति)निवासी श्रीउदयसिंह पाल जिन स्थानोंमें मुझे देख सकते थे, वहां मैं गया ही नहीं था। वह पठित थे, विशारद-परीक्षा देनेकी कि समय तैयारी भी कर चुके थे। नीती डांड़ाके भोटांतिक होनेके कारण उन बहुत-सी बातें मुझे भी जाननी थी, इसलिए कितनी ही देर तक उनसे बातची होती रही। जाते हुए वह एक नीतीवाले व्यापारी सज्जनसे बात कर गये, जो उसी रात मेरे पास आये। उदयसिंहका आग्रह था कि मैं उन दोस्तके घर चला चलूं, लेकिन मैंने रातको यहीं रहना पसंद किया। घोड़ा औ आदमी मिल जाय, तो निश्चित होकर यात्रा हो सकेगी, यह विचार उनपर प्रक कर दिया, किंतु घोड़ेका इंतजाम नहीं हो सका।

अब मैं बिलकुल अकेला था। यदि खाना पकानेका सवाल न होता, अथव

ई सहयात्री मिल गया होता, तो बड़े आरामसे पैदल यात्रा कर सकता था, लेकिन हो नहीं सका। उदयसिंह पालकी वातसे यह निश्चय हो गया, कि नीती र माणा दोनों घाटोंमें किसी तिव्वती पुस्तक या मूर्ति आदिके मिलनेकी संभा- ा नहीं है। किसी समय भोटांतिक लोग भले ही बौद्ध रहे हों, लेकिन अब का इससे उतना ही परिचय है, कि जब कोई मंत्र-तंत्र करनेवाला लामा आ ता है, तो उससे ये झाड़-फूँकका काम करा लेते हैं। इन लोगोंको व्यापारके ए तिव्वत हरसाल जाना पड़ता है, इसलिए पुरुषोंमेंसे अधिकांश तिव्वती भाषा ते भी हैं और उनसे शताब्दियोंसे खान-पानका संबंध चला आया है, इसलिए का वायकाट करके अपने व्यापारको धक्का लगानेके लिए तैयार नहीं हैं। यसिंह और उनके दूसरे मित्र इस वातके लिए परेशान थे, कि तिव्वत और की जो तनातनी है, उसके कारण व्यापारको वहुत धक्का लगेगा। उस य(१५ मई १९५१)अभी चीन और तिव्वतका समझौता नहीं हो पाया । वैसे भी ल्हासासे वहुत दूर रहनेके कारण मानसरोवर प्रदेशमें शासन- वस्था ठीक नहीं थी। हमारे व्यापारी अपने हथियारके वलसे ही डाकुओंसे नी रक्षा कर सकते थे। मालूम हुआ, वहुत गिड़गिड़ानेपर भारत सरकारने ीवालोंको १५-१६ वन्दूकें दीं। उनको कमसे कम ५० वन्दूकोंकी आवश्यकता । वन्दूकें भी इतालियन १०-१० सेरवाली थीं, जो वकरीपर माल ढोनेवालोंके ए भारी थीं। थोड़े समय वाद चीन और तिव्वतका समझौता हो गया, ो हमारे व्यापारियोंको उस साल डाकुओंसे और भी ज्यादा संत्रस्त होना ा। अनिश्चित अवस्था होनेके कारण पश्चिमी तिव्वतके राजकर्मचारियोंमेंसे ोंने अपने-अपने परिवारोंको भारतमें भेज रक्खा था। फिर उनसे डाकुओंसे पानेमें कहाँतक सहायता मिल सकती थी?

५. जोशीमठ

केदारनाथके रास्तेमें जिस तरह आसानीसे घोड़े मिल जाते हैं, वही ख्याल ीनाथके वारेमें भी हमारे मनमें था। यद्यपि इधर घोड़े कम नहीं हैं, किंतु क्तर वह माल ढोनेका काम करते हैं, खाली घोड़े मुश्किल हीसे मिलते । लेकिन मैं प्रायः खाली हाथ था। पछतावा यही था, कि पीठपर ढोनेका ा क्यों नहीं साथ लाया। फिर तो हाथके पोर्टफेलको उसमें रखकर सीटी वजाते ंडके साथ यात्रा कर सकता था। हाँ, चिन्ता थी तो यही, कि हर जगह वनी- ई रोटी नहीं मिलेगी। मठसे डेढ़ ही मीलपर अगली चट्टी छिनका है।

उदयसिहने वतलाया था, कि वह और नीतीवाले दूसरे वहुतसे भोटांतिक परिवार आजकल छिनका हीमें हैं। नीती, माणा, नेलङ् वाले और यही वात अल्मोड़ा जिले के भी भोटांतिकोंकी है, जाड़ा आते ही अपने १०-११ हजार फुट ऊँचाईके गाँवोंको छोड़कर नीचेकी ओर खिसकने लगते हैं। उनके गाँवोंमें अक्तूबर होते सर्दी तेज हो जाती है, और वर्षाकी जगह वादल वर्फ वरसते हैं। उनके गाँव भी ऐसे स्थानोंमें है, जहाँ वृक्ष क्या झाड़ियाँ भी नहीं उगतीं। ऐसी जगहोंमें जाड़ा विताना पशु-प्राणीके लिए संकट मोल लेना है; इसीलिए अचित्य कालसे उनके यहाँ परिपाटी चली आई है—शरदके अन्त होते ही लोग अपने गाँवोंको छोड़कर नीचेकी ओर चल देते हैं। गाँवमें घर पीछे एक या गाँव पीछे कुछ आदमियोंको तव तकके लिये छोड़ दिया जाता है, जव तक कि वर्फ पड़कर उनके मकानों की सारी दीवारोंको ढक नहीं देती। लोग अपने घरोंकी सभी चीजें अपने साथ तो नीचे नहीं ले जा सकते, इसलिए उनकी रक्षाके लिए गाँवमें कुछ आदमियोंको छोड़ना अवश्यक है। यदि अपने या पड़ोसके गाँवोंके आदमियोंके मुँहमें पानी न भरे, तो भी डांडे पार तिव्वती लोग रहते हैं, जिनमें डाकुओंकी संख्या कम नहीं होती। आजकल भोटांतिक लोग अपनी भेड़-वकरियों गायों, गदहों, घोड़ोंको लिये वच्चोंको पीठपर वाँधे या अँगुली पकड़ाये ऊपरकी ओर जा रहे थे। कृषिजीवी होते हुए भी यह लोग सालमें दो वार घुमन्तू जीवनका आनन्द लेते हैं। जिनके पास पैसा-कौड़ी है, उनकी स्त्रियाँ अपने सारे जेवरोंको पहने अच्छे कपड़े-लत्तेके साथ चल रही थीं। यहाँकी भोटांतिक स्त्रियोंमें सूती कपड़ेकी एक शोभार्थ ओढ़नी ओढ़नेका रवाज है। यह लड़कोंके कंटोप (कुलवारे) की तरह शिरसे पैरोंतक पहुँचती है। शिरके सामने वाले भागमें वहुत अच्छा सुईका काम भी होता है।

हमें अपनी मंजिल काटनी थी, इसलिए उदयसिहके वारेमें पूछ-ताछ नहीं की। उन्होंने जोशीमठमें मिलनेके लिए कहा था और इस वातका वहुत आग्रह किया था, कि मैं उनके साथ वाम्पा (नीती) चलूं। साढ़े चार मील चलकर सियासैंण चट्टीमें कुछ साफ सुथरी एक दूकानमें प्याले रक्खे देखकर सोचा, चाय पी लें। चाय पीनेसे भी ज्यादा इच्छा थी घोड़ेके वारेमें पूछ-ताछ करनेकी। तरुण दूकानदारने ताजी चाय वना करके पिलाई और वतलाया, कि एक मील आगे हाट गाँवमें अलकनंदाके लोहेके पुल पर दूकानदारके पास वहुत अच्छा घोड़ा है। थोड़ी देरमें मैं पुल पार करके उस दूकानपर पहुँच गया। चलते हुए सोच रहा था, कारण कुछ भी हो, कुमाऊँ-गढ़वालमें हाट ऐसे गाँवोंको कहते हैं, जो कभी किसी

मन्तकी राजधानी रहे। ऐसे गाँवोंमें किसी पुराने मंदिरका मिलना अवश्यक। सड़कसे ऊपर गाँव है। देखा उसके एक छोरपर एक कत्यूरी मंदिर खड़ा है। नदार (केदारदत्त)से बहुत मोल-भाव नहीं करना पड़ा। उन्होंने रुपया पर घोड़ा देना स्वीकार कर लिया। शायद मोल-भाव करनेपर बारह आना न भी हो जाता, लेकिन मुझे उसकी इच्छा नहीं हुई और पीछे जब देखा, अन्न छोड़कर एक रातमें घोड़ेको खानेके लिए तीन-तीन रुपयेकी घास लग ती है, तो यह कोई महँगा सौदा नहीं मालूम पड़ा।

थोड़ी देर ठहरना पड़ा, क्योंकि घोड़ा पहाड़पर चरने गया था। घोड़ेकी मजूरीमें दमीकी मजूरी भी शामिल थी, लेकिन हमें तो आदमीसे रसोइएका काम भी ा था और उस श्रमके लिए भोजनमें साझीदार बनाना था। मुझे यह विश्वास ीं था, कि केदरदत्तजीके भाई वाचस्पति भोजन बनानेमें इतने निपुण े। मुझे उतने प्रकारोंकी तो अवश्यकता नहीं थी, लेकिन देखता था, रोटी, , भात, तरकारी सभी चीजें वह बहुत स्वादिष्ट बनाते थे और फुर्तीके बारेमें कहना ही क्या। वाचस्पति २६-२७ वर्षके तरुण होंगे, किंतु इसी उमरमें री और दूसरी जगहोंमें कई साल रसोई बनानेका काम कर चुके थे। घोड़े- चढ़ते ही मालूम हुआ, कि अब दिनमें बीस-पचीस मील चलना मुश्किल नहीं ा। पुल परसे ही चढ़ाई शुरू हो जाती है, जो कि दो मील चलकर पीपलकोटि ं खतम होती है। पीपलकोटीको बड़ी चट्टी नहीं, बल्कि बाजार कहना चाहिए। सभी तरहकी चीजें मिलती हैं। हमको जब वहाँ माल्टाके सुंदर और दिष्ट फल मिले, तो ख्याल आया, सचमुच हिमालयकी यह भूमि स्वादिष्ट की खान हो सकती है, यदि थोड़ा अक्लसे काम लिया जाय। पीपलकोटीमें जातकी भेड़े पैदा करनेके लिए सरकारकी ओरसे इन्तिजाम है, लेकिन का लाभ धीरे-धीरे होता है, उसकी ओर हमारे ग्रामीणोंका ध्यान भी धीरे ही जाता है।

रास्तेमें हर जगह मील-मील दो-दो मीलपर चट्टियाँ और टिकानें हैं। स्पतिसे सलाह हो चुकी थी, कि आज जोशीमठ चलके रहा जाय। अब तो भी ख्याल आ रहा था, कि घोड़ेसे निश्चित हो जानेके कारण नीतीकी यात्रा निश्चित है। पीपलकोटीसे साढ़े तीन मीलपर टँगनी चट्टी मिली, जो ईसाकी सदीमें भी प्रसिद्ध इस जनपदके तंगण नामको बतला रही थी। इसीने जातके मजबूत और फुर्तीले घोड़ोंको टांघन नाम दिया, किंतु आजकल घोड़ोंके पालनेका रवाज नहीं है। अभी कुछ सवेरा था, इसलिए

तीन मील आगे पातालगंगा चट्टीमें भोजन वनाने-खानेके लिए दोपहरको ठहरे। चट्टीके पास प्रायः आधा मीलतक वरसातमें वरावर पहाड़ गिराता रहता है। ढीली किस्मकी मट्टी अधिक और पत्थर कम हैं, इसी कारण वरसातमें यहाँ सड़क वह जाती है। वरसातके लिए चक्कर काट कर ऊपरसे एक सड़क निकाली गई है। मोटर सड़क तो इससे वचनेके लिए अलकनंदा पारसे घुमाई गई है।

चमोलीसे जोशीमठ साढ़े २८ मील है। उत्तर प्रदेशकी सरकारने जोशीमठतक मोटरकी सड़क वनवानेका संकल्प ही नहीं कर लिया, वल्कि आखिरी ४-५ मील छोड़कर सड़क वन भी गई है। वीचमें पुल नहीं वन पाये हैं, लेकिन हमारी सरकारें कितनी सूझ-वूझ रखती हैं, यह सड़क उसका उदाहरण है। दो-दो चार चार मील हर साल वढ़ानेकी जगह सरकारने एक ही वार सारी सड़कको वना लेना चाहा। जव जेवकी हालत देखी, तो जैसे और कितने ही काम छानकर छोड़ दिये गये, वैसे ही यह सड़क भी छोड़ दी गई। चलते हुए कामको, कहते हैं, तार देकर रुकवाया गया। कोई पूछे, जनताकी गाढ़ी कमाईके दस-वारह लाख रुपये जो वर्षासे वहनेके लिए छोड़ दिये गये, उसकी जिम्मेवारी किसपर थी? यह पहले ही ख्याल कर लेना चाहिए था, कि पैसेकी कमीके कारण कोई वाधा तो नहीं होगी। पैसेकी कमीके वारेमें क्या पूछते हैं? जहां फजूलखर्चीमें लखनऊके नवावोंको मात किया जाता हो, वहाँ पैसा रहेगा कैसे? यह फजूलखर्ची स्वयं केंद्रमें प्रधान-मंत्रीसे शुरू हुई है। जिस वक्त पाकिस्तान और हिन्दुस्तान एक थे, उस वक्त दिल्लीके सचिवालयमें जितने आदमी काम करते थे, उससे आज तिगुनेसे अधिक हैं। जहाँ पहले ६४२ क्लर्क थे वहाँ अव २५४८ काम करते हैं। सहायक जहाँ ४९३ थे वहाँ २३१० हैं। सवसे मोटी तनखाह पानेवाले सेक्रेटरी पहले ९ ही थे, जो सारे अखंड-भारतका काम चला लेते थे, आज १९ हीं नहीं हैं, वल्कि हाल हीमें प्रधान-मंत्री साहवने एककी संख्या और वढ़ा दी। संयुक्त सचिव ८की जगह ४० हैं, उप-सचिव १२की जगह ८९ हैं। केंद्रमें इस तरह जव भाई-भतीजे-भानजोंको नौकरी दिलानेके लिए व्यर्थ ही आदमियोंको भरकर संख्या चौगुनी और खर्च उससे भी अधिक कर दिया गया, तो प्रान्तोंके मंत्री क्यों पीछे रहने लगे? उड़ीसाकी सरकारने भी कर्मचारियोंको तिगुना करके खर्च इतना वढ़ा लिया, कि उसका दीवाला निलकनेको है। पंडित जवाहरलाल नेहरूको अपना हर्ता-कर्ता वनाकर कांग्रेसवाले समझते हैं, नैया पार जायगी। लेकिन सच तो यह है, कि नवावी खर्चकी वुरी आदत लगानेकी सवसे अधिक जिम्मेवारी उन्हींपर है। केन्द्रीय सरकारके कार्यालयोंके चलानेपर

बेदर्दीसे रुपया वर्वाद किया जा रहा है। उससे भी बेदर्दी हमारे दूतावासोंके पर की जा रही है। हमारा दरिद्र देश अपने वाशिंगटन, लंदन, और मास्कोके वासोंके खर्चमें इंगलैंड और अमेरिकासे होड़ लेना चाहता है। कोरी लफ़्फ़ाजी र कागजी घुड़-दौड़की आशा आप भले ही नेहरूजीके नेतृत्त्वसे कर सकते हैं, तु यदि देशकी नैयाको कोई सवसे जल्दी डुवा सकता है, तो वह नवावी आदत- पंडित नेहरू ही हो सकते हैं। शायद अमेरिकासे कर्ज ले-लेकर हम रोटी ाध साल भले ही चला लें, लेकिन इसके लिए देशकी महँगे मोल खरीदी ज़ादीको वहुत सस्ते वेंच देना होगा। इसी तरहके ख्याल मेरे दिमागमें आ थे, जव मैं परित्यक्त मोटर सड़कको देखते आगे बढ़ रहा था। (पीछे काम शुरू करके मोटर सड़क पीपलकोटी तक १९५२ में पहुंचा दी गई।)

दोपहरको दो-ढाई घंटेके लिए पातालगंगामें ठहरे। हमारे चूल्हेके पास ही ानाकी तीन-चार ग्रामीण स्त्रियाँ रोटी वना रही थीं। अभी उनका घरका ा आटा खतम नहीं हुआ था। वह २०-२५ रुपयेमें सारी यात्रा करके घर जाना चाहती थीं। अगर रेल और मोटरका सवाल न होता, तो शायद भी कम खर्च होता। एक तरफ हमारे देशमें १००मेंसे ९० ऐसे लोग हैं, के लिए पैसा अव भी अशर्फीका मोल रखता है और दूसरी तरफ हमारे प्रधान- हैं, जिनको अशर्फी भी पैसे जैसी मालूम होती है। भोजनोपरान्त फिर चले। ोड़ेकी सवारी चढ़ाईमें ही पसन्द करता हूँ, उतराईमें चढ़ना अपनी और दोनोंकी सासत करना है। मुझे मालूम नहीं था, कि पातालगंगामें एक ी टोली साथके लिए तैयार है। नागपुरके पंडित ऋषीकेश शर्माकी वीवी ं। वह चार-पाँच सहयात्री स्त्री-पुरुषोंके साथ वदरीनाथ जा रही थीं। ा आग्रह देखकर ही नहीं वैसे भी मेरा मन कर रहा था, यदि घोड़ा न होता, दल यात्रा वड़ी अच्छी रहती। दिनमें तीन तीन वार स्वादिष्ट भोजन तैयार ा और बात करनेके लिए शिक्षित भद्रपुरुषों और महिलाओंका साथ। अव तो वदरीनाथ तकके लिए घोड़ा किराये पर कर चुका था। घोड़ेको ी चालसे चलानेमें वाचस्पतिको दुख होता और उन्हें घोड़ेकी चालसे चलाना, संभव भी होता, तो भी भारी अत्याचार होता। मैंने केवल अफसोस ही नहीं किया, वल्कि साथ ही अकाल-दर्शनके लिए प्रसन्नता भी जाहिर की। आगे ीलपर गुलावकोटी और उससे दो मीलपर हेलङ्-चट्टी थी। हेलङ् यह विचित्रसा शायद प्राचीन किरात भाषाका अवशेष है। यहाँसे कुछ आगे चढ़नेपर नन्दाके परले पार ऊँचाईपर उरगम्की विस्तृत ढालुवाँ पर्वतभूमि दिखाई

पड़ी। वहाँ कई गाँव और लहलहाते खेत थे। मुझे मालूम था, उस गाँवमें
कत्यूरीकालीन प्राचीन मंदिर हैं। वहाँ ऐतिहासिक सामग्री काफी होगी,
संदेह नहीं; किन्तु इतनी उतराई-चढ़ाई करके दो तीन दिन लगानेके
मेरे पास समय कहाँ था? मैंने तो पहले ही समझ लिया था, कि केदारखंड
ऐतिहासिक स्थानोंमेंसे हाँडीके चावलोंकी तरह मैं कुछ ही को देख सकूँगा।
जोशीमठ आधा मील रह गया, जव सिंहधारा चट्टी मिली। शंकराचार्य
फिरसे स्थापित हुआ नया मठ यहीं पासमें है। साइनवोर्ड भी संस्कृतमें था,
नारा लगा रहा था "चलो वेदोंकी ओर।" सिंहधारामें एक दूकानमें मोसम्मी
फल देखे। दूकानदारने पूछा, सेवको कैसे सालभर रक्खा जा सकता है?
हालमें फलोंकी ओर लोगोंका ध्यान गया। फलोंके लिए यह अत्यन्त
भूमि है। यदि मोटर यहाँतक आ जाय, तो यहाँके फल जल्दी और सस्ते
शहरोंमें पहुँच सकते हैं। उस समय हाटसे ऊपर-ऊपर गोपेश्वर तककी
सेव, नास्पाती, नारंगी, माल्टा आदिके वगीचोंसे ढँक सकती है। इस
तो लोग सोचते हैं, यदि हम इसी तरह फलोंको सात-आठ महीने रख सकते,
यात्राके वक्त इनकी अच्छी विक्री होती। मुश्किल यह है, कि फल तैयार
हैं जुलाईके वाद (सेव आदि तो सितंवरमें पकते हैं) और यात्रा जून हीमें
करीव खतम हो जाती है।

अभी कुछ दिन था, जव कि हम जोशीमठ पहुँचे। जोशीमठका
जोशिका (योषिका) के नामसे नवीं-दसवीं शताब्दीके कत्यूरी-शिलालेखोंमें
है। वदरीनाथ मंदिरकी वहियोंमें गाँवका नाम 'जोशी' है। यहाँके पुराने
जोशियाल कहे जाते हैं। जोशिका कत्यूरियोंकी राजधानी थी। कत्यूरी राज्य
समय सारे कुमाऊँ-गढ़वाल तक नहीं, वल्कि शिमलेतक फैला हुआ था।
वड़े राज्यकी जोशिका राजधानी इसीलिए रही होगी, क्योंकि वह उक्त
की पुरानी राजधानी थी। यद्यपि इस जगह पहाड़ वहुत कुछ ढालुवाँ है,
वस्ती काफी वढ़ाई जा सकती थी, लेकिन किसी विशाल राज्यकी
लिए यह स्थान अनुकूल नहीं हो सकता। नीचे गोचर, या श्रीनगरमें अच्छे
नगर वसानेके लिए काफी समतलसी भूमि है। हो सकता है, श्रीनगरमें
एक राजधानी रही हो, जहाँ जाड़ोंमें कत्यूरी दरवार लगता हो। यह तो
है, कि श्रीनगरमें पहले भी नगर था, लेकिन वहाँ कभी कत्यूरिनोंकी
रही, इसका कोई प्रमाण नहीं। १८९४ ई०की वाढ़में श्रीनगरके पुराने
वहाये जा चुके हैं, इसलिए वहाँसे कोई नया प्रमाण मिलनेकी संभावना

जोशीमठ अच्छा खासा गाँव है। इसके चारों तरफ पहाड़ोंका परकोटासा घिरा म होता है, लेकिन वह शत्रु नहीं केवल दृष्टि रोकनेके लिए ही है। ६१५० की ऊँचाई होनेके कारण मेरे मसूरीके निवासस्थान (६५०० फुट)से कम भी हिमालके नजदीक होनेसे यहाँ वर्फ अधिक पड़ती है। कमसे जोशीमठके पासकी भूमि अलकनंदाके किनारेसे ऊपर पहाड़की रीढ़ तक तो के बागोंसे ढँक जानी चाहिए। कत्यूरियोंके वक्तमें फलोंकी ओर कितना न था, यह नहीं कह सकते। शरावके लिए अंगूरकी लतायें तो यहाँ अवश्य होती । उनकी लाल शरावकी कन्नौजके महलोंमें भी कम माँग नहीं रही होगी। ीमठके ८-९ सौ वर्ष पुराने वैभवके अवशेष अव कुछ मंदिर रह गये हैं, जिनमें नरसिंहका मंदिर है और दूसरा वासुदेवका। यह दोनों मंदिर वदरीनाथ रके ही अधीन हैं। जाड़ोंमें वदरीनाथका पट वंद होनेपर कर्मचारी यहीं आते हैं। नरसिंहकी मूर्ति छोटी है और उसके चमत्कारोंकी तरह तरहकी यें कही जाती हैं। वासुदेव मंदिर अधिक पुरातत्त्विक महत्त्व रखता है। मंदिरमें वासुदेवकी प्रायः पुरुष-प्रमाण पत्थरकी मूर्ति है। मंदिरके चारों कई और छोटे छोटे मंदिर हैं, जिनमेंसे कुछमें मूर्त्तियाँ नहीं हैं। दाहिनी ओर ाके मंदिरमें नवदुर्गाकी मूर्त्तियाँ हैं। यह आश्चर्यकी वात है, कि जोशी- टूटी या सावित मूर्त्तियाँ वहुत कम हैं। लेकिन इसका कारण मूर्त्तियोंका विक अभाव होना नहीं है, वल्कि पिछले सवा-सौ वर्षोंसे उनके ग्राहकोंकी जिस प्रकार वढ़ती रही, उसके कारण किसी भी खंडित मूर्त्तिका वच रहना नहीं था। भूतपूर्व रावल साहव वतला रहे थे, कि मैंने यहाँ सूर्यकी एक मूर्त्ति देखी थी, किंतु अव वह दिखाई नहीं पड़ती। जान पड़ता है यात्रियोंके नीचेके मूर्त्ति-व्यापारी भी आते रहे हैं, जिनके कारण एक भी खंडित मूर्त्ति नहीं पायी। अव जो वासुदेव जैसी थोड़ीसी मूर्त्तियाँ है, वह अखंडित है। १-४२ ई०में रुहेलोंके हाथोंसे यह कैसे वच गई? हो सकता है, रुहेला को पुजारियोंने अच्छी रिश्वत दे दी, अथवा मूर्त्ति हीको छिपा दिया। आज रातको यहीं विश्राम किया। जोशीमठसे तिव्वतको दो रास्ते जाते हैं, एक ांडी होकर, जिसमें भोटांतिक लोगोंके दस-ग्यारह गाँव हैं और दूसरा माणा । जिस तरह वदरीनाथ अर्थात् माणा डांडेकी ओर पुराने अवशेष पांडुकेश्वर वदरीनाथके रूपमें हैं, उसी तरह नीतीके रास्तेमें भी भविष्यवदरी, तपोवन प्राचीन मंदिरोंके अवशेष हैं। यद्यपि तपोवनके पास भविष्यवदरीको वतलाया है, लेकिन संभव है वही वास्तविक वदरी (अर्थात् भूतवदरी) रही हो।

९वीं-१०वीं शताब्दीके कत्यूरी ताम्रपत्रमें तपोवनीय वदरिकाश्रम भगवान् लिखा हुआ है, जिससे मालूम होता है, कि वदरिकाश्रम आजके वदरीनाथ नहीं, वल्कि तपोवनके पास था। तपोवन आज भी इसी नामसे प्रसिद्ध है और नीतीके रास्ते पर जोशीमठसे सात मीलपर अवस्थित है। वहाँ पुराने मंदिर भी हैं और गर्म कुंड भी, जिसीके कारण उसका नाम तपोवन पड़ा। क्या जाने, माणावालोंकी प्राचीन परंपरा सच्ची हो, जिसमें कहा जाता है, कि वर्तमान वदरीनाथ पहले लामाओं (तिब्बतवालों)के देवता थे। जोशीमठका महत्त्व इसलिए भी वढ़ने वाला है, कि यहीं वारहो महीना रहने लायक ऐसी वड़ी वस्ती है, जहाँ नीती और माणासे तिब्बत जानेवाले दोनों रास्ते मिलते हैं। तिब्बतमें कम्यूनिस्टोंके आ जानेका यह तो फल हुआ, कि नीतीके वड़े गाँव वाम्पा और माणा गाँवमें अनु सीमांतीय पुलिस-थाने वन गये, जो जाड़ोंमें जोशीमठ हीमें आयेंगे। इसके अति रिक्त हिमालय पार वहती हुई कम्यूनिज्मकी वाढ़को रोकनेके लिए पूंजीवादी भारत इधर जो कुछ प्रवंध करेगा, उसका केंद्र जोशीमठ ही होगा। जोशीमठ तक मोटर सड़क आ जानेपर, इसमें संदेह नहीं, यहाँ फलोंके वगीचोंकी अच्छी उन्नति हो सकेगी।

६. वदरीनाथपुरी

१७ मई (१९५१ ई०)को साढ़े ४ वजे सवेरे हम जोशीमठसे चल पड़े। वदरीनाथ कुल १९ मील रह गया था, इसलिए आज वहाँ पहुँच जानेमें कोई संदेह नहीं था। जोशीमठ तक मोटरके पहुँच जानेपर वदरीनाथ कितना नजदीक हो जायेगा। दो मील उतराई उतरकर विष्णुप्रयाग पड़ता है, जहाँ धौलीगंगा और अलकनन्दा का संगम है। धौलीगंगा नीती डांडासे आती है और अलकनंदा माणासे। यदि किसी नदीकी मुख्य शाखा वही हो सकती है, जो सवसे अधिक लंवी हो और जिसमें पानी अधिक आता हो; तो इसमें संदेह नहीं, कि हमारी गंगाकी मुख्य धारा अलकनन्दा है, और माणाके पास मिलनेवाली दो धाराओंमें भी अलकनंदा नहीं वल्कि सरस्वतीको ही मुख्य धारा मानना पड़ेगा, जो कि माणा डांडेसे आती है। विष्णुप्रयागमें इतनी काफी जगह नहीं, कि वहाँ कोई वड़ी चट्टी वन सके, लेकिन दूकानें और टिकानें यहाँ भी वन गई हैं। ९ वजेके करीव ८ मील चलकर हम पांडुकेश्वर पहुँचे। पांडुकेश्वर कोई महत्त्वपूर्ण स्थान था, इसका परिचय वहां अव भी विद्यमान दो प्राचीन मंदिर दे रहे हैं। इनमेंसे एकका शिखर गोल है और दूसरेका नोकदार। दोनों मंदिरोंकी सभामंडपें वाहरसे ऐसी तिकोनी

हुई हैं, जिसके कारण लोगोंको यह कल्पना करनेका मौका मिला, कि यह किसी स्थापत्यका अनुकरण है। आसपासकी भूमि देखनेसे मालूम होता है, कि यहाँ दो नहीं बल्कि और भी मंदिर रहे होंगे। कौन जानता है, बदरीनाथके मान स्थानको निश्चित करनेसे पहले पांडुकेश्वर ही बदरीनाथ रहा हो। का दूसरा नाम योगबदरी भी है, जो उसी ओर संकेत करता है। पुरातत्त्व-ताओंको पांडुकेश्वरका परिचय वहाँ रक्खे गये ९वीं-१०वीं शताब्दीके चार पत्रोंसे हुआ। हो सकना है, यह ताम्रपत्र पहले किसी और जगह रक्खे जाते । चार ताम्रपत्रोंमें एक तो कोई अंग्रेज अफसर ले गया, जिसे उसने लौटाया । तीन ताम्रपत्र मैं समझता था अब भी पांडुकेश्वरमें हैं, लेकिन पूछनेपर लूम हुआ, कि वह बदरीनाथ मंदिर समितिके पास हैं। मेरी इस यात्राका एक प्रयोजन था, इन ताम्रपत्रोंका पढ़ना। इनमेंसे एक हीको मैं छपे ब्लाकके रे पढ़कर पहलेके पठित पाठको शुद्ध कर सका था। मैं इस सूचनासे निराश हुआ, लेकिन बदरीनाथ जानेपर जब पता लगा, कि ताम्रपत्र जोशीमठमें और जबतक सेक्रेटरी साहब, और खजांची दोनों मौजूद न हों, तबतक उन्हें लकर दिखाया नहीं जा सकता, तो अवश्य मुझे निराश होना पड़ा। मंदिरमें तियां पुरानी हैं। मंदिरका एक यह महत्त्व भी है, कि यहाँके पुजारी शंकरा-वंशज नम्बूतिरी ब्राह्मण होते हैं, अर्थात् बदरीनाथके रावलके भाईबंद। सबेरा था, इसलिए यहीं भोजन बनानेकी सलाह नहीं हुई और तै हुआ, अंतिम (हनुमान) चट्टीमें भोजन बनाया जाय।

विष्णुप्रयाग समुद्रतलसे साढ़े चार हजार फुटपर है, पांडुकेश्वर ६ हजार हनुमानचट्टी ८ हजार। विष्णुप्रयागसे हनुमान चट्टी तक पर्वत-स्थली सस्यशामला और रमणीय है। रामबगड़के आसपास तो देवदारोंके जंगल हैं, यद्यपि वह उतने घने नहीं हैं। यह रक्षित वनखंड है, किंतु, तो भी लकड़ी उदारतासे काम लिया गया, जिसका प्रभाव जंगलोंपर बुरा पड़ा है। मान चट्टी पहुँचकर वृक्षोंका अभाव हो जाता है, जिसका प्रभाव तुरंत भोजन-पड़ता है। यहाँ लकड़ी इतनी महँगी है, कि यदि उसको खरीदकर रसोई जाय, तो कच्ची रसोई भी तीन रुपया सेर पड़ जाती है, और पूरी भी तीन सेर ही मिलती है; इसलिए अधिकांश यात्री पूरी ही खरीदकर खा लेते आटा यहाँ सवा दो रुपया सेर था। हनुमानचट्टी तक भी चढ़ाई चढ़के आना पड़ता है, किंतु वह उतनी कठिन नहीं है। इससे आगे बदरीनाथ तक लमें साढ़े तीन मील चढ़ाईके हैं, जिसमें ८००० फुटसे १०००० फुटकी ऊँचाई-

पर उठना पड़ता है, इसीके कारण साँस वहुत फूलती है। लेकिन हमारे पास तो वाचस्पतिका मजवूत घोड़ा था, इसलिए सांस फूलनेकी अवश्यकता नहीं थी। देवदेखनीसे डेढ़ मील वदरीनाथ रह जाता, जैसा कि नामसे ही प्रकट है, इस जगहसे वदरीनाथ पुरी दिखाई पड़ती है। प्राचीनकालमें जव छुरेकी धार जैसे रास्ते पर चलकर लोग देशसे यहाँ पहुँचते होंगे, उस वक्त अपने महीनोंके परिश्रमके वाद यह सौभाग्य प्राप्त करनेपर उन्हें कितना आनन्द आता होगा? आजकल तो लोग पीपलकोटी तक मोटरमें आते हैं। जोशीमठतक भी मोटरकी सड़क वन ही रही है, वाकी १९ मीलकी भी सड़क वहुत प्रशस्त है, तो भी जो लोग पैदल चलके आते हैं, उन्हें हनुमानचट्टीसे देवदेखनीकी चढ़ाईके वाद व्रदरीनाथ को देखकर वहुत सान्त्वना मिलती है।

मैंने समझा था, पंजाव-सिंध क्षेत्र पुरी हीमें होगा, लेकिन वह पुरीसे एक मील पहले ही सड़कके ऊपर मिला। पंजाव-सिंध-क्षेत्रवालोंको पुरीमें कोई अनुकूल जगह सस्ती नहीं मिल सकी, इसलिए उन्होंने यहीं अपना क्षेत्र वना लिया। कालीकमलीवालोंकी तरह इस क्षेत्रने उत्तराखंडके सभी जगहोंमें अपनी धर्मशालायें वनवानेकी होड़ नहीं की, वदरीनाथमें इसकी शाखा अभी थोड़े ही दिनों में पहले वनी। देशके विभाजनका इस क्षेत्रपर वहुत प्रभाव पड़ा है, क्योंकि इसके वड़े वड़े दाता सिंधी या पश्चिमी पंजावी थे। क्षेत्रके प्रवन्धक भगतजीके लिए मेरे पास परिचयपत्र था। वैसे भी भगतजी वड़े सज्जन पुरुष हैं, प्रवंध-कुशल तो हैं ही, इसलिए इसमें संदेह नहीं, उनका स्वागत मुझे अवश्य मिलता, लेकिन चिट्ठीने भी अपना प्रभाव डाला और एक अच्छी कोठरीमें मुझे ठहराया गया। चाय पहले आई। मैंने आज ही पुरी हो आनेका निश्चय कर लिया। पहलेसे यही तय कर चुका था, कि दो रात तीर्थवास किया जाय, १८ मईको देखने दाखनेका काम पूरा करके १९को यहाँसे चल दिया जाय। लौटनेके लिए घोड़ा और वाचस्पति जैसा रसोइया साथ था ही।

पुलपार हो पुरीमें गये। सोचा कोई अच्छी पथप्रदर्शिका (पुस्तक) मिले, तो ले लें। अलकनंदाके दाहिने तटपर वसी पुरी समुद्रतलसे १०२४४ फुट ऊपर एक अच्छी खासी नगरी वन गई है। चीजें महँगी अवश्य हैं, किंतु सभी वस्तुयें मिल जाती हैं। पुस्तकोंकी तो कई दूकानें हैं, यद्यपि उनमें अधिकतर महातम और पथप्रदर्शिकायें ही मिलती हैं। दो तीन दूकानोंको देखते श्रीगोविन्द-प्रसाद नौटियालकी दूकानपर पहुँचे। उनकी दूकान महेशानंद एण्ड सन्स सारे भारतमें प्रसिद्ध है। गोविन्दप्रसादजीकी अंग्रेजी-हिंदी पथप्रदर्शिका मुझे

ंद आई थी और मैं चाहता था, उसके नये संस्करणकी कापी ले लूँ। मैंने हाँ वैठे एक प्रौढ़ सज्जनसे पुस्तकोंके वारेमें वात करते गोविन्दप्रसाद नौटियालका ना पूछा, तो मालूम हुआ, कि मैं उन्हींसे वात कर रहा हूँ। वह भी मेरा नाम च्छी तरह जानते थे। दोनोंको मिलकर वड़ी प्रसन्नता हुई। उत्तराखंडकी ापर अंग्रेजी और हिंदीमें उनकी दोनों पुस्तकें तो यात्रियोंके लिए वहुत ज्ञान-ंक हैं ही, उसके अतिरिक्त भी उत्तराखंडके संवंधमें पारंपरिक, आधुनिक तथा राणिक ज्ञानका उनके पास वहुत भारी भंडार है। इस वातकी शिकायत कर थे, कि वड़े परिवारका वोझ सिरपर पड़नेके कारण समय मुझे नहीं मिलता, उस सामग्रीको पुस्तकका रूप दे सकूँ। वस्तुतः ३०-३५ वर्षकी उमरतक आदमी तना काम करनेमें अपनेको स्वच्छंद समझता है, उसके वाद वह वैसा नहीं ता। मैंने कहा—मैं कल यहाँ हूँ और इसी समय मंदिर कमीटीके सेक्रेटरी श्री ोत्तम वगवाड़ीसे मिल लेना चाहता हूँ। केदारनाथमें मुझे हर प्रकारकी ायता मिली, वदरीनाथमें भी उसकी पूरी आशा थी, लेकिन यह नहीं सम-ा था, कि यहाँ इतना अप्रत्याशित स्वागत होगा। नौटियालजीने अपने आदमी- मेरे साथ कर दिया। मैंने घरके वाहर हीसे अपना नाम देकर सूचना भेजी, वगवाड़ीजी ऊपरके अपने कमरेसे दौड़े दौड़े आये। मैं जानता हूँ, उनका गर्म स्वागत केवल शिष्टाचारके ही लिए नहीं था। उनसे पहले मैंने काम- वात कही। उन्होंने भी सवसे पहले इस वातका आग्रह किया, कि इसी वक्त हमारी अतिथिशालामें आ जायें। इसे मैंने भी उचित समझा, क्योंकि काम यहाँ करना था, इसलिए एक मील दूर ठहरना अच्छा नहीं था। दूसरी उन्होंने कहा—मैं घोड़ा लौटा देता हूँ, आपको अपना घोड़ा दूँगा, इसलिए ी जल्दी वदरीनाथ छोड़नेकी अवश्यकता नहीं। आज रातको तो मैं भगत-ा आतिथ्य छोड़ना नहीं चाहता था, इसलिए उसके लिए मजवूरी जाहिर लेकिन वदरीनाथमें तीन रात रहनेका निश्चय कर लिया। उनसे मालूम , कि पांडुकेश्वरके तीनों ताम्रपत्र यहाँ नहीं हैं। उनकी मजवूरियोंको देख-ह कहनेका साहस नहीं हुआ, कि आप अपने और खजांचीके एक-एक आदमी-भेजकर ताम्रपत्रोंको दिखानेका प्रवंध कर दें। यह भी मालूम हुआ, कि त्र वदरीनाथके आभूषणोंके साथ रक्खे हुए हैं।

× × ×

अगले दिन १८ मईको व्राह्ममुहूर्तसे पहले ही वगवाड़ीजीका आदमी हमारे मौजूद था। लेकिन भगतजी भी ऐसे ही छुट्टी देनेवाले नहीं थे। उन्होंने

आदमीके पहुँचने तक चाय और नाश्तेका प्रवंध कर लिया था। वाचस्पतिको आज छोड़ देना था। सामान हमने आदमीके हाथ अतिथिशालामें भेज दिया और स्वयं इस वातकी प्रतीक्षा करते ठहरे रहे, कि धूप निकल आये तो आसपास कु कामके फोटो ले लें। पश्चिम ओरकी हिमाच्छादित पर्वतमालामें रौप्य-स्तूपकी तर नीलाकाँटाकी चोटी दिखाई पड़ती थी। पूरवकी पर्वतमालामें कुवेर-भंडारका शिखर था। दोनों पर्वतमालाओंके वीचमें अलकनंदा कलकल करती वह रही थी, जिसकी धारसे पर्वतकी जड़तक वहुत कुछ ढालुवाँसा मैदान था। मेरी तर वहुतोंको वदरीनाथकी हवाई यात्राकी वात पढ़कर भ्रम पैदा हुआ होगा, कि शायद हवाई जहाज ठेठ वदरीनाथपुरीमें उतरता था। यहाँ ऐसी जगह आसानीसे तैयार हो सकती है, जहाँपर हवाई जहाज उतर सकें, लेकिन वह पहले हीसे तैयार नहीं है, वल्कि तैयार करना पड़ेगा। यदि अधिक विस्तृत मैदान वनाना हो, त तो माणाके लोगोंके वहुतसे खेतोंको छीनना पड़ेगा, जो कि अन्नके इस प्रकार टोटेके समय अच्छी वात नहीं होगी। लेकिन हमारी सरकार तिव्वतमें कम्यु निस्तोंके आनेकी खवरसे ही वहुत परेशान है। उसे हर वक्त लगा रहता है कि कहीं इसी रास्ते कम्यूनिज्म भारतमें न चला आये!

वगवाड़ीजीने अपने चपरासी गंगासिंह दुरियालको मेरे लिए पथप्रदर्श दे दिया। गंगासिंह जिस दुरियाल जातिका है, वह वदरीनाथकी चार प्रधा संरक्षक जातियोंमेंसे है। वदरीनाथकी भूमि स्वयं माणाके मारछा लोगोंकी है नीचे पांडुकेश्वर तक दुरियाल लोग रहते हैं। जोशीमठके रहनेवाले जोशियाल कहे जाते हैं। यह तीनों जातियों अब्राह्मण (राजपूत) हैं। चौथी जाति डिमरी ब्राह्मणोंकी है। वदरीनाथके गर्भ-मंदिरमें केवल मलावारके नंवूतिरी ब्राह्म रावल जा सकते हैं, या डिमरी ब्राह्मण। वदरीनाथकी मूर्त्तिको तो केवल राव ही छू सकते हैं। यहाँके पंडे देवप्रयागके हैं। गंगासिंहने वहुतसी वातें वतलाई उस दिन तप्तकुंडमें स्नान और भोजनको छोड़कर अपना सारा समय हमने गंगा सिंहके साथ इधर-उधर घूमनेमें विताया। माणाके मारछा लोगोंका तो विश्वास है, कि वर्तमान वदरीनाथ पहिले तिव्वतवालोंके देवता थे। उनकी वात इस अंशमें ठीक भी है, क्योंकि वदरीनाथकी मूर्त्ति असंदिग्ध रूपसे वुद्ध-मू है। शामको हम घूमते-घामते माणाकी ओर गये। पुल अभी लकड़ीके तख्तों को रखकर चलने लायक नहीं वन पाया था, इसलिए माणा गाँवको हम अलकनंदा दूसरे तीरसे ही देख पाये। थोड़ा ही आगे माता मूर्त्तिका छोटासा मंदिर है गंगासिंहके मुँहसे वदरीनाथकी जो अलिखित जीवनयात्राका पता लगा, अव ज़रा उ

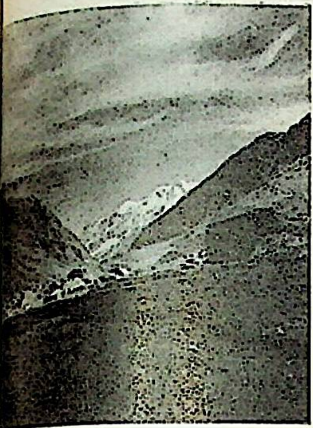

बदरीनाथ–हिमालयका एक दृश्य
(पृष्ठ ४७०)

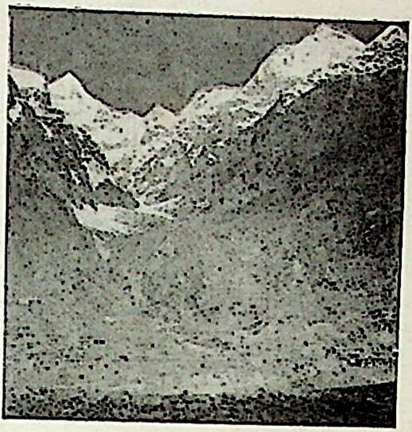

१६. बदरीनाथ–हिम-शिखर
(पृष्ठ ४७०)

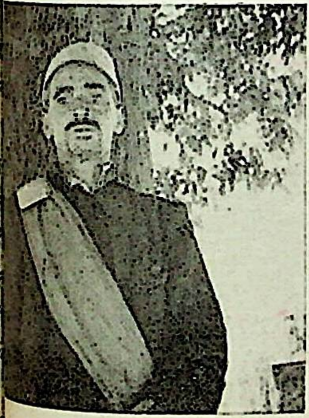

बदरीनाथका–गंगाराम चपरासी
(पृष्ठ ४७०)

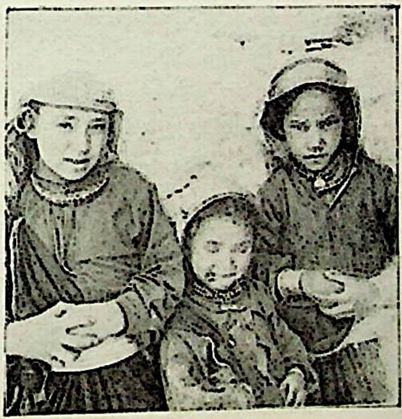

१८. बदरीनाथ–मारछा बच्चे
(पृष्ठ ४७८)

ुनिये। यह स्मरण रखना चाहिये, कि यह गंगासिंहकी कोई अपनी कल्पना हीं है, बल्कि इस भूमिमें शताब्दियोंसे चली आई परंपरा है।

बदरीनाथ पहले सतलजके किनारे (पश्चिमी तिब्बतके) थोलिङ् मठमें रहते । जिस मंदिरमें रहते थे, आज भी वह मौजूद है। लामा लोग उनकी पूजा करते , लेकिन वह भक्ष्या-भक्ष्यका कोई परहेज नहीं रखते थे। एक शुद्ध हिन्दूकी तरह दरीनाथको यह अनाचार बुरा लग रहा था। एक दिन दरवाजा बंद करके लामा ग निश्चित सोये पड़े थे, बदरीनाथने इस मौकेको गनीमत समझा और मंदिरके रवाजेके ऊपर दीवालमें छेद करके निकल भागे। गंगासिंह थोलिङ्-मठ देख आये । कह रहे थे कि वह छेद आज भी वहाँ मौजूद है। बदरीनाथ बहुत दूर नहीं गये , कि लामा लोगोंको पता लग गया। उन्होंने भी उनका पीछा किया। बदरी- थने देखा, वह बहुत पास पहुँच गये। वहाँ चौंरी गायें चर रही थीं। बदरी- थ छोटा रूप लेकर एक चौंरीकी पूँछमें छिप गये। लामा लोग इधर-उधर दूर- र तक ढूँढ़ने लगे। चौंरी गायके इस उपकारके बदले बदरीनाथने वरदान दिया: जसे चौंरी गायकी पूँछ पवित्र मानी जायगी। तभीसे उसकी पूँछका बना चँवर वताओंके ऊपर डुलता है। बदरीनाथ फिर आगे भगे। एक बार फिर लामाओं- ो पास पहुँचते देखा। उन्होंने रास्तेमें आगकी एक बड़ी लंबी पाँती खड़ी कर ी। लामा उससे भी नहीं रुके, जिसके कारण उनके मुँहकी दाढ़ी-मोंछ जल ई। यही कारण है, जो तिब्बतवालोंको मूँछ-दाढ़ी नहींके बराबर होती है। मा फिर पकड़ना ही चाहते थे, कि बदरीनाथको श्यामकर्ण घोड़ा हाथ आ ा। वह उसपर चढ़कर मूँछपर ताव देते भाग निकले। लामा बहुत पीछे ह गये। माणा गाँवके पास आकर उन्होंने श्यामकर्ण घोड़ेको छोड़ दिया— ब दो-ढाई मील ही तो रह गया था। आज भी माणा गाँवके पास श्यामकर्ण घोड़ा ट्टानके रूपमें मौजूद है, जिसको देखकर अविश्वासी लोग कह देते हैं: चट्टानोंमें स तरहकी विचित्र आकृतियाँ भिन्न-भिन्न पत्थरोंके मिलनेसे बन ही जाती हैं।

उस समय बदरीनाथ नहीं शिव-पार्वती इस भूमिके स्वामी थे। उनका दिर तप्तकुंडके ऊपर वर्तमान मंदिरके आसपास ही कहींपर था। आसपास जकी तरह ही खेत थे, जिनमें बहुत बढ़िया चावल पैदा होता था। भगेलू रीनाथका मन इस सुंदर भूमिको देखकर ललचा गया और उन्होंने किसी तरह से हथियानेका निश्चय कर लिया। लेकिन देखा, शिवजीसे बलपूर्वक भूमि छीनी हीं जा सकती, इसलिए उन्होंने छलका रास्ता स्वीकार किया। पुरीके पास ही वणी नामक दुरियालोंका गाँव है। वहाँ अब भी उस चट्टानको देखा जा सकता है,

जहाँ सद्योजात शिशुका रूप धरके बदरीनाथ "ह्याउ" "ह्याउ" करने लगे थे। शिव-पार्वती सबेरे ही सबेरे हवाखोरीके लिए निकले। पार्वतीने वहाँ सुनसानमें फेंके बच्चेके करुण क्रंदनको सुना और उनका हृदय द्रवित हो गया। शिवजीने बहुत समझाया—दुनियामें बहुत धोखा है, तुम इस फेरमें मत पड़ो। लेकिन पार्वतीके मातृ-हृदयने उसे नहीं माना। उन्होंने उस अनाथ बच्चेको गोदमें उठा लिया। ले आकर बच्चेको उन्होंने अपने मंदिरके भीतर रक्खा और स्वयं भोले-नाथके साथ तप्तकुंडमें स्नान करनेके लिए उतरीं। लौटकर मंदिरमें घुसना चाहती थीं। देखा, किवाड़ भीतरसे बंद है। कितना ही खटखटाती, कितना ही चिल्लाती रहीं, लेकिन वह वज्र किवाड़ अब कहाँ खुलनेवाला था? शिवजी महाराजने कहा—मैंने कहा न, धोखा खाओगी। लो, अब उसने हमारा मंदिर दखल कर लिया। अब झगड़ा करनेसे कोई फायदा नहीं। दुनिया बड़ी लंबी चौड़ी है, चलो कहीं दूसरा देश देखें।

पार्वतीजीका मुँह गुस्सेसे लाल हो गया था। उन्होंने कहा—मैं तो इस तप्त-कुंडमें बर्फ गिराकर इसे ठंडा कर दूँगी, जिसमें इस बदमाशको गर्म पानी स्नान करनेको न मिले।

शिवजीने कहा—इससे इसको उतना नहीं नुकसान पहुँचेगा, बल्कि इससे तो बेचारे यात्री सर्दीके मारे मरेंगे।

पार्वतीजीको शिवजीकी यह बात पसंद आई, लेकिन वह बदला लेनेके लिए कुछ तो अवश्य करना चाहती थीं। उन्होंने मना करनेपर भी शाप दे दिया, कि इस भूमिमें अबसे चावलकी खेती नहीं हो सकेगी। अपने घरको दोनोंने छोड़-कर नीचेका रास्ता लिया। थोड़ा उतराई उतरकर जब कांचन गंगाके नामसे प्रसिद्ध छोटे नालेको पार कर रहे थे, तो देखा, लोग पीठपर चीजें लादे हुए चले आ रहे हैं। पार्वतीजीने पूछा—क्या ले जा रहे हो? लोगोंने कहा—बासमतीका चावल है भगवानके लिए। शिवजीने मुस्कुरा दिया। पार्वतीजीने सिर धुन लिया—मेरा शाप भी व्यर्थ ही गया। यहाँ तो और भी बढ़िया चावलकी ढुलाई लगी हुई है।

बदरीनाथ अब अपनी नई दखल की हुई जगहमें बड़े मौजसे रहने लगे। अटकामें ५६ परकारका भोग लगता, शृंगारमें सोना और रतनके आभूषण होते, केसर, कस्तूरी तथा दूसरी बहुमूल्य सुगंधियाँ रोज आध-आध सेर चढ़तीं। दुनियाभरके भक्त लोग पूजा करनेमें होड़ लगा रहे थे। कुछ समय बाद बदरी-नाथके पिता-माताको पता लगा, कि बेटा तो बड़ी मौज कर रहा है। उन्होंने

सोचा—चलो बुढ़ापेमें हम भी वेटे हीके पास आरामसे रहें। दोनों जने न जाने कितनी दूरसे उस बुढ़ापेमें मंजिल मारते वेटेके घरपर पहुँचे, लेकिन वदरीनाथ कोई श्रवणकुमार थोड़े ही थे, कि अपने अंधे माता-पिताको कामरमें बैठाकर घूमते फिरते। वदरीनाथकी लक्ष्मी भी अव पतिके दिग्विजयके वाद पास पहुँच गई थीं। दोनों पूरे कलजुगी वेटे-वहू थे। उन्होंने सोचा, यदि यह बूढ़े पासमें वस रहे, तो हमारे मौज-मेलेमें भारी विघ्न पैदा करेंगे। वदरीनाथने चाल चली। पिताको तो पाँच मील दूर वसुधाराके जलप्रपातपर भेज दिया, जहाँ वह अव भी तपस्या कर रहे हैं। माँको पितासे अलग करके माणाके सामने मातामूर्त्ति वनाकर वैठा दिया।

हम मातामूर्त्तिके पास वैठे हुए थे। वहाँ दरभंगाके एक भूतपूर्व मैथिल ब्राह्मण पंडित भी मौजूद थे। सरस्वती और अलकनंदाके संगमपर व्यास गुफा है। श्वास किया जाता है, कि व्यासजीने यहीं अठारहों पुराणोंको लिखा था। दरीनाथ विष्णुका स्थान है, इसलिए रामानुजी आचारियोंका इस स्थानसे निष्ट संवंध होना ही चाहिये। यहाँके आचारी महंत व्यास गुफाके सामने अवके भागवत्का १०८ पाठ कराना चाहते थे। उन्होंने हमारे मैथिल आचारी-भागवत-वाचकोंमेंसे एक वनाकर रख छोड़ा था। मैं भी कुछ समयतक चारी रह चुका हूँ, इसलिए उनके टंट-घंट और पूजा-पाखंडका परिचय रखता। मैथिल आचारी वेचारे सर्दीसे परेशान थे। कह रहे थे: न जाने कव इतने त मिलेंगे, जव १०८ भागवतका पाठ आरंभ होगा। मुझे तो यह सर्दी वर्दाश्त होती। मैंने कहा—आप महंतजीके लिए मेंडकोंकी तुलाई मत वन जाइए, र इसी तरह हर एक व्यास सर्दीका वहाना करके खिसकता रहेगा, तव तो ८ पाठ हो चुका। मैंने यह भी सलाह दी कि महंतजीको कहें, कि सवके आकी प्रतीक्षा न करें, जैसे जैसे व्यास मिलते जायें, वैसे वैसे पाठमें लगाते जायें। ११००० फुटकी ऊँचाईपर दिनमें १२-१४ घंटा पाठ करना और हर एक शंका-दीर्घशंकाके वाद वर्फके पानीमें स्नान करना शायद कोई अभागा ही पसंद करे। मैथिल पंडितका भी मन सकपका रहा था। मैंने गंभीर र पूछ दिया—आप कैसे आचारियोंके फंदेमें पड़े? विष्णुके तीन अव-(मत्स्य-कूर्म-वाराह)को चटकर जानेवाले और विष्णुको नरसिंह रूप धारण के लिए मजवूर करनेवाले एक मैथिलको यह क्या सूझी? वेचारोंने वुरा माना, मुस्करा दिया और कहा—हमारे वाप-दादा आचारी हो गये थे। याद हो आया, लंकामें विभीषण भी होते हैं। गंगासिंहने जो वदरीनाथ-

पुराण सुनाया था, उसको सुनकर हमारे मैथिल पंडितको भी पता लग गया, कि वदरीनाथ भगवान् कलजुगी लड़के-लड़कियोंके सामने कोई अच्छा उदाहर उपस्थित नहीं कर सकते।

संध्याको वदरीनाथके पंडा लोगोंने भी अपनी पंडा-पंचायतकी ओरसे "महा लेखक राहुल सांकृत्यायनके सम्मानमें" चाय-पानका आयोजन किया। मुझे उस सम्मानसे भी अधिक यह देखकर प्रसन्नता हुई, कि पंडा लोगोंकी नई पी मेरे जैसे नास्तिककी पुस्तकें भी पढ़ने लगी हैं। चाय-पान क्या, वह तो मिठ इयोंका एक अच्छा खासा भोज हो गया था, जिसमें इतने आदमी सम्मिलित हु थे, जिनकी संख्या शायद ही कानूनकी मर्यादाके भीतर रही हो।

वदरीनाथकी अतिथिशाला दोमहला नया भवन है। कोठरियाँ साफ-सुथ हैं और उनके साथ नहानघर-शौचालयका भी प्रबंध है। अलकनंदा उसके नीचे वहती है। निवासस्थान ऐसा था, और भोजनके लिए भगवान्का प्रसाद इतन स्वादिष्ट मिलता था, कि यदि एक-दो महीने रहा जाता, तो भी आनंद ही आत था, लेकिन हम तो समयके वंदे ठहरे। जीवन इतना आरामसे वैठनेके लिए थो ही पाया था। अगले दिन सवेरे वदरीनाथका दर्शन करना तै हुआ था।

७. वदरीनाथजी

१९ मई (१९५१ ई०)का सवेरा आया। आज वदरीनाथका दर्शन कर था। पहले ही गोविंदप्रसाद नौटियाल और कितने ही मर्मज्ञ पुरुषोंसे सुन चु था, कि वदरीनाथकी मूर्ति बुद्धकी मूर्ति है। यद्यपि कान और आँखमें चार अंगुलका अन्तर होता है, लेकिन आँखकी वात सवसे प्रमाणिक समझी जाती है सवेरे ७ वजे वदरीनाथका स्नान होता है, जिसके लिए उनकी मूर्तिको निराव (निर्वसन) कर दिया जाता है। यही समय है, जब कि असली मूर्तिको देखा जा सक है, शृंगार की हुई मूर्तिका तो केवल मुँह भर दिखलाई पड़ता है। वदरीना मंदिर तीन भागोंमें विभक्त है। सवसे भीतर छोटासा गर्भगृह है, जिसके अंति छोरपर वदरीनाथ तथा दूसरी मूर्त्तियाँ हैं। यहीं वाईं ओर रावल और उनके सहा डिमरी पुजारी वैठते हैं। गर्भगृहके वाहर छोटा सभामंडप है, जिसके वाहर ए और कुछ वड़ासा मंडप है। प्रवेश करनेके दरवाजे वाहरी मंडपमें हैं। म मंडपमें वहुत आदमियोंके खड़े होनेके लिए स्थान नहीं है, लेकिन मेरे लिए वगवा जीने ऐसी जगह वैठनेका इंतिजाम किया था, जहाँसे मैं सवसे नजदीकसे मूर्ति दर्शन कर सकता था। मंदिर के भीतर दिनके प्रकाशके आनेका रास्ता नहीं

न वहाँ चिराग जलते रहते हैं। कहते हैं, एक चिराग तो मंदिरका पट बंद
जानेके बाद भी जलता रहता है। दीपकी बत्ती तेज कर दी गई थी, जिसमें
अच्छी तरहसे देख सकूँ। पहले बदरीनाथकी मूर्तिका फोटो भी लिया जा सकता
लेकिन कमीटीने मूर्तिकी पवित्रताका ख्याल करके उसे बंद कर दिया। तेलके
ककी तेज बत्तियोंके प्रकाशमें ४-५ फुटसे जितना स्पष्ट देखा जा सकता है,
ना मैं देख सकता था। बगवाड़ीजी दूरबीन भी ला रहे थे, लेकिन वह जरा
ले पहुँचे, जब कि पौन घंटा अच्छी तरह देखकर मैं मंदिरसे चला आया था।

मैंने जो देखा, वह यह था :—मूर्त्ति पद्मासनस्थ है। उसका चेहरा तथा एक
खंडित है। चेहरेमेंसे दो-ढाई-इंच मोटा एक पत्थर निकल गया है, जिसके
दोनों आँखें, नाक और मुँह गायब हैं। शृंगार करते वक्त इस खाली जगहमें
लपंक लगा दिया जाता है और आँखोंको भी कृत्रिम रूपसे बना दिया जाता
। दाहिने हाथमेंसे भी कुछ पत्थर निकल गया है। जान पड़ता है, दाहिना हाथ
मिस्पर्श-मुद्रामें है। हम जानते हैं, बोधगयामें वज्र-आसन मार कर दृढ़
ल्पके साथ जब सिद्धार्थ गौतम बैठे, तो अपने दाहिने हाथकी अँगुलियोंको पृथिवी
ओर दिखलाते हुए उन्होंने प्रतिज्ञा की थी—या तो इसी आसनपर मेरा शरीर
जायगा, नहीं तो मैं जिस तत्त्वज्ञानकी खोजमें हूँ, उसे प्राप्त करके ही उठूँगा।
मालूम होता था, बायें हाथका भी थोड़ासा पत्थर निकल गया है, लेकिन
दूसरे प्रत्यक्षदर्शी नहीं मान रहे थे। बायाँ हाथ पैरके ऊपर है। ऐसी मूर्ति
और तीर्थंकर महावीर इन दोनोंमेंसे एककी हो सकती है। मैं देख रहा
छातीपर यज्ञोपवीतकी तरह पतलीसी रेखा पड़ी हुई है। इस बातका समर्थन
मान रावल और भूतपूर्व रावल श्रीवासुदेवजीने भी किया। इस प्रकार इसमें
ह नहीं रह गया, कि मूर्ति बुद्धकी है। बदरीनाथकी मूर्ति अखंड रहनेपर बहुत
र रही होगी, इसमें संदेह नहीं, उसके छाती, कमर आदि सारे अंग बिल्कुल ठीक
पातमें हैं। वर्तमान रावल चीवरके छोरको यज्ञोपवीत मानते हैं। ३० वर्षोंसे
नीकसे देखनेवाले भूतपूर्व रावल इसे बुद्धकी मूर्ति मानते हैं। उन्होंने सारनाथ
दिमें जाकर बुद्धकी ऐसी मूर्त्तियाँ देखी हैं। सिरके पिछले सुरक्षित भागमें
की तरह ही बाल हैं, यह भी वह बतला रहे थे। इस प्रकार मूर्तिके बुद्ध-मूर्ति
में संदेह नहीं। बदरीनाथकी दोनों बगलोंमें और भी कितनी ही मूर्त्तियाँ
जिनमें नारदकी धातु मूर्ति भी बुद्धकी मूर्तिसी मालूम होती है। वर्तमान रावल
ने बतलाया, कि मूर्तिके पीठासनमें कुछ रेखायें हैं, जो फूल-पत्ते या अक्षर हो
ते हैं।

मूर्तिके इतिहासके वारेमें वतलाया जाता है, कि पहले यह मूर्ति नारदकुंड फेंकी हुई थी, जहाँसे किसी शंकराचार्यने निकलवाकर उसे तप्तकुंडके पास र वाया। पीछे गढ़वालके किसी राजाने उसके लिए वर्तमान मंदिर वनवाया। मंदि १८वीं सदीके उत्तरार्धमें वना। इस सदीके पूर्वार्ध (१७४१-४२ ई०)में लू मार करते रुहेले वदरीनाथ तक पहुँचे थे। उससे भी पहले १६वीं सदीके उ रार्द्धमें अकवरके एक भूतपूर्व अफसर टुकड़िया हुसेन ख़ांने भी काफ़िरोंके नि धर्म-युद्ध कर, कुमाऊँ-गढ़वालके मंदिरोंको लूट मूर्त्तियोंको तोड़ सवाव हासिल कि था। लेकिन टुकडियाके वारेमें नहीं कहा जा सकता, कि वह वदरीनाथ तक पहुँचा गढ़वालमें इन दो मूर्तिभंजक टोलियोंका आना इतिहाससे सिद्ध है। इनमें एक तो अवश्य ही वदरी-केदारनाथ तक पहुँची, नहीं तो हिंदू-मूर्त्तियोंको नाक कान तोड़कर किसने खंडित किया? इससे पहले एक और भी मूर्त्तियों औ मंदिरोंकी ध्वंस-लीलाका पता लगता है, जिसका शिकार यह वुद्ध मूर्ति हुई तिव्वती इतिहाससे मालूम है, कि ६५०-८५० ई०में (प्रायः २०० व तक) यह भूखंड तथा नेपालसे लेकर कश्मीर तकका सारा हिमालय तिव्वत आधीन था। एक शताव्दी तक चीनी तुर्किस्तानका भी स्वामी तिव्वत रहा। वैसे भी उस समय हिमालयमें नेपालकी तरह वौद्ध धर्मका वहुत प्रचार था, लेकि तिव्वती शासकोंके वौद्ध धर्ममें वहुत अनुराग होनेके कारण इस समय केदारखंड और भी अधिक वौद्ध विहार वने। ९वीं सदीके मध्यमें तिव्वती साम्राज्य छिन्न भिन्न होने लगा, उसी समय यहाँसे भी तिव्वती शासन खत्म हुआ जान पड़ता है। स्वदेशी विद्रोहियोंका विदेशी शासनके साथ जो संघर्ष हुआ, उसमें शासक धर्म होनेके कारण वौद्ध धर्म भी पिस गया। यही कारण है, जो कुमा और गढ़वालमें वौद्ध मूर्त्तियोंका इतना अभाव है। कुमाऊंके द्वाराहा वैजनाथ, वागेश्वर जैसे स्थानों में सैकड़ों खंडित मूर्त्तियोंके रहते हु भी कोई वुद्ध मूर्त्ति नहीं मिलती। वागेवश्रकी दो मूर्त्तियोंपर आ मारे वुद्ध मूर्ति होनेका संदेह होता है, लेकिन मंदिरमें आग लगने उनका अगला भाग इतना अधिक नष्ट हो गया है, कि केवल रेखाओं ही वुद्ध-मूर्ति होनेका अनुमान होता है। गढ़वालमें केवल तीन वौद्ध मूर्ति या स्तूप मिले हैं, जिनमें वाड़ाहाट (उत्तरकाशी)में दत्तात्रेयके नामसे पूजी जात धातुकी खड़ी वुद्ध-मूर्तिमें संदेह नहीं है। जिस राजा नागराजने इस मूर्तिको वनवाया था, वह पश्चिमी तिव्वतमें ११वीं सदीके आरंभमें शासन करता था मंदाकिनी-उपत्यकामें नालाचट्टीके मंदिरके वाहर एक वौद्ध पाषाण स्तूप है, इसके

बौद्ध होनेमें संदेह नहीं है। यदि तुंगनाथ और बदरीनाथ (नारद)की धातु तियोंको छोड़ दिया जाय, तो तीसरा चिन्ह बदरीनाथकी बुद्ध-मूर्त्ति है। तप्त-के नीचे अलकनंदाका ही एक भाग नारदकुंड है। यहाँ एक चट्टानके कुछ र होकर अलकनंदाका पानी बहता है, जिसके कारण वहाँ पानीके कुंडवाली गुहासी बन गई है। आजकल बर्फके बहुत पिघलनेसे धाराका पानी कुंडके क भरा हुआ था, लेकिन वर्षाके बाद जब धार कम हो जाती है, तो कुंड ऊपरसे खाली हो जाता है और उसमें आसानीसे उतरा जा सकता है। भूतपूर्व रावल, गवाड़ीजी तथा दूसरे भी बहुतसे सज्जन कहते थे, कि नारद कुंडमें अब भी मूर्त्तियाँ पड़ी हुई हैं। रावल वासुदेवजी तो कह रहे थे: अपने ३० वर्षके रीनाथके संबंधके समय वर्षाके अंतमें कितनी ही बार मैं नारदकुंडमें स्नान ने गया। मेरे साथियोंने कहा था, कि मुँहमें तेलका कुल्ला लेकर कुंडमें उतर-यदि पानीपर तेल फेंक दें, तो अँधेरी गुफामें कुछ अधिक प्रकाश हो जाता फिर मूर्त्तियाँ देखी जाती हैं। मैंने वैसा ही किया, और वहाँ लेटी हुई मूर्त्तियाँ। बदरीनाथकी वर्तमान मूर्त्ति पहले नारदकुंडकी ही मूर्त्तियोंके बीचमें। सेक्रेटरी साहबका मैंने ध्यान आकर्षित किया और उन्होंने कहा, कि पानी होनेपर मैं मूर्त्तियोंको ढुँढ़वाऊँगा।

बदरीनाथकी मूर्त्तिके बारेमें मेरी निम्न कल्पना है: ९वीं शताब्दीमें ती शासनको हटानेके लिए तिब्बतियोंसे स्थानीय सामन्तोंका संघर्ष हुआ। समय बहुतसे बौद्ध मंदिर और मूर्त्तियाँ नष्ट की गईं। उन्हीं नष्ट हुई योंमें यह वर्तमान बदरीनाथकी मूर्त्ति भी है, जिसे नारदकुंडमें फेंक दिया था। माणावाली परंपरा जब इसके बुद्ध-मूर्त्ति होनेकी बात करती है, उसका इशारा ९वीं शताब्दीके यहाँके विहार और मूर्त्तियोंकी ओर है। मूर्त्तिको हटा देनेपर वहाँ उसी समय या बादमें वासुदेव या बदरीनाथका किसी कत्यूरी राजाने बनवाया होगा, यदि वह पहलेसे नहीं था। टुकड़िया हुसेन खाँ यहाँतक पहुँचा, तो १६वीं सदीके चौथे पादमें उस समयकी मूर्त्तिको नष्ट किया, नहीं तो १७४१-४२ ई०में रुहेलोंने को लूट और नष्ट-भ्रष्ट करके मूर्त्तिको तोड़ डाला, और तत्कालीन बदरी-की मूर्त्ति भी नारदकुंडमें पहुँच गई, जहाँ कि वर्तमान बदरीनाथरूपी बुद्ध-मूर्त्ति और साथियोंके साथ पहिलेसे पड़ी थी। नारदकुंड एक प्रकार बौद्ध और न मूर्त्तियोंका समाधि-स्थान बन गया था। पीछे किसी संन्यासीने परंपराको र नारदकुंडसे मूर्त्ति निकलवानेका प्रयत्न किया। उस वक्त पीछे फेंकी हुई

वदरीनाथकी मूर्त्ति न मिलकर पुरानी बुद्ध-मूर्त्ति हाथ आ गई। किसी पंडितको यह ख्याल नहीं आया, कि यह बुद्धकी मूर्त्ति है। कहा जाता है, मूर्त्ति कुछ दिनोंतक ऐसे ही रखकर पूजी जाती रही, फिर जब गढ़वालके किसी राजाने मंदि बनवा दिया, तो वहाँ स्थापित कर दी गई। यह हम नहीं कह सकते, कि वदरी-नाथकी पुरानी मूर्त्ति नारदकुंडमें अवश्य ही होगी। यदि नारदकुंडमें फेंकी गई तो उसे वहाँसे मिलना चाहिए और यदि अलकनंदाकी धारमें इधर-उधर हटकर फेंक दी गई, तो उसका मिलना असंभव है। जो भी हो, वदरीनाथके इतिहासपर और प्रकाश डालनेके लिए नारदकुंडकी मूर्त्तियोंको निकालना आवश्यक है।

× × ×

वदरीनाथके कार्यालयके सभी कागजपत्र अधिकतर जोशीमठमें रहते हैं, तो भी यहाँ मौजूद वहियाँ १७वीं सदीतक जाती हैं। यदि मंदिरके सभी काग पत्रोंका अनुसंधान किया जाय, तो मुसलमानोंके आक्रमणोंके वारेमें बहुत कु पता लग सकता है। गढ़वालके आर्थिक और सामाजिक इतिहासकी साम इन कागजोंमें बहुत मिलेगी। यदि कोई विश्वविद्यालय अपने एक छा को इसी विषयपर डाक्ट्रेट देवे, तो इन वहियों और कागज-पत्रोंमें छिपी बहुत ऐतिहासिक वात प्रकाशमें आ सकती हैं। पांडुकेश्वरके ताम्रपत्र तो नहीं मि सके, किंतु पंडित रुद्रदत्त पंत द्वारा की हुई उनकी प्रतिलिपि मंदिर-कार्यालयमें थी उनकी शुद्धतापर पूरा विश्वास तो नहीं किया जा सकता, किंतु दूसरी प्रतिलिपियों की अपेक्षा वह अधिक शुद्ध हैं, इसमें संदेह नहीं। मैंने उनको उतार लिया सेक्रेटरी साहव और उनके सहायकने वचन दिया, कि जोशीमठमें जितने काग पत्रोंके कूड़ा-करकट हैं, हम उनको सम्भालकर रखवा देंगे।

दोपहरसे पहले ही मैंने माणा गाँवको भी देख आना चाहा। कलकत्तेके डाक्ट हिमांशु घोष भी साथ थे और गंगासिंह दुरियालके बिना तो हमारी यात्रा पूरी नहीं हो सकती थी। गाँवके पासवाला झूलापुल अभी तैयार नहीं हो पा था, इसलिए अलकनंदा पार होकर जानेका निश्चय किया गया। माणावाले लो जाड़ोंके लिए नीचे चले गये थे। अब वह ऊपर आने लगे थे। स्त्रियाँ पी कंडी या बच्चोंको लिये तकलीसे ऊन कातती सज-धजकर आ रही थीं। उनकी विचित्र पोशाकके लिए फोटो लेना चाहा, लेकिन उसमें लौटते वक्त पा केश्वर हीमें ही सफल हो पाया। पूरी तरह तो नहीं कह सकता, क्योंकि जो कु या साड़ी मारछानियाँ पहनती हैं, वह आसपासकी दूसरी पहाड़ी स्त्रियोंकी पोशाक हैं। कानमें कई वालियाँ, नाकमें बड़ा नत्थ, गलेमें हँसली, कुमाऊँ

लके आम आभूषण हैं। शिरपरकी ओढ़नी भोटांतिक स्त्रियोंका विशेष न्ह है, जिसमें ललाटके ऊपर सुईका किया हुआ सुन्दर काम बहुत आकर्षक मालूम ता है। मैं उस कामको अपने फोटोमें नहीं ला सका। मुझे संदेह है, कि यह चीन कत्यूरी सामन्तों और राजाओंकी रानियोंका विशेष परिधान रहा होगा। सूती कपड़ेका होता है और पीछेकी तरफ एड़ीतक लटकता रहता है। सर्दी नेमें इससे कोई सहायता नहीं मिलती। पहले सजानेके लिए जो वस्त्र कत्यूरी नियाँ इस्तेमाल करती थीं, वही अब भोटांतिक स्त्रियोंकी सज्जाके रूपमें रह है।

माणा कोई सौ परिवारोंका गाँव होगा। यह बिल्कुल तिब्बतके गाँवों-जैसा ूम होता है, फर्क इतना ही है, कि यहाँ मिट्टीकी छतें नहीं हैं। गाँवमें हमें ंके स्कूलके मास्टर तथा कुछ और सज्जन मिले। अभी बहुतसे घरोंमें ताले हुए थे। स्कूल अभी जमा नहीं था। गाँवके आगे सरस्वती (अलकनंदा- बड़ी शाखा) पर एक बड़ी चट्टान पुलकी तरह पड़ी हुई है। लोगोंने इसका भीमसेनका पुल रख लिया है। ऐसा ही पुल कुछ दूर आगे भी है। तिब्बत- रास्ता सरस्वतीके किनारे-किनारे जाता है। माणा गाँववाले बड़े चिंतित थे। पड़ता है, बदरीनाथका काम बढ़नेके कारण माणावालोंने तिब्बती व्यापारके कुछ उपेक्षा कर ली, जिसके कारण उन्हें वह सब व्यापारिक सुभीते नहीं मिले, कि नेलङ् (गंगोत्री), नीती (धौलीगंगा), जोहार, ब्याँस और दरमाके भोटां- लोगोंको प्राप्त हैं। औरोंकी अपनी-अपनी मंडियाँ तिब्बतमें निश्चित हैं, माणावालोंकी कोई अपनी मंडी नहीं है। इस साल तिब्बतमें कम्यूनिस्तोंके ंकी जो अफवाहें उड़ रही थीं, उनसे भी इनकी चिंता और बढ़ गई थी। कम्यू- पश्चिमी तिब्बतमें पहुँचकर हमारे व्यापारमें बाधा डालेंगे, उनकी यह धारणा गलत सिद्ध हुई। पीछे जो खबरें व्यापार करनेवालोंने भेजीं, उनसे हुआ, कि कम्यूनिस्त सैनिकोंका वर्ताव बहुत अच्छा था। इतना अच्छा, छ लोग तो भय करने लगे हैं, कि कम्यूनिस्त इसी बहाने हमारे लोगोंका रना चाहते हैं। लेकिन जिस वक्त मैं माणामें था, उस वक्त चीन और का समझौता नहीं हुआ था। वैसे तो पश्चिमी तिब्बतमें बराबर ही ओंका जोर रहता है, लेकिन इस साल राजनीतिक अवस्थाके अनिश्चित के कारण उनका उपद्रव बहुत अधिक होता, इसमें संदेह नहीं। हमारे सभी तिक व्यापारी अपने हथियारोंके बलपर ही आत्मरक्षा करते रहे हैं। इस तो उन्हें और भी हथियारोंकी आवश्यकता थी। भारत सरकारसे प्रार्थना

करनेपर माणा गाँवके सौ परिवारोंके लिए केवल तीन वन्दूकें मिलीं। उन्हें कमसे कम पंद्रह वन्दूकोंकी अवश्यकता थी। नीतीवालोंको ५० वन्दूकोंकी जरूरत थी पर मुश्किलसे उन्हें १०-१२ वन्दूकें मिलीं। एक दूसरे गाँवका वृद्ध कह रहा था—भालू हमारे यहाँ खेतीको वचने नहीं देते। हमने वहुत कोशिश की, कि एक वन्दूकका लाइसेंस मिल जाय, लेकिन वह नहीं ही मिला। समझमें नहीं आता, अंग्रेजोंके जमानेका हथियारोंका कानून जैसाका तैसा स्वतंत्र भारतमें क्यों लागू है? कांग्रेसने वर्षों प्रस्ताव पास किये, कि हथियारका कानून उठा दिया जाय और भारतके प्रत्येक नागरिकको हथियार रखनेका अधिकार हो। लेंकिन कांग्रेसकी सरकारने शासनकी वागडोर सम्भालते ही अपने सव पुराने प्रस्ताव भुला दिये। जान पड़ता है, आजके शासक भी अपने देश-वन्धुओंसे उसी तरह डर रहे हैं, जैसे विदेशी शासक। हमें इस वातका जवर्दस्त आन्दोलन करना चाहिये, कि अंग्रेजोंके समयसे चले आये हथियार-कानूनको उठा दिया जाय। वंदूक और पिस्तौलका आजके युद्ध हथियारोंमें वही स्थान है, जो कि भाले और तलवारका। चोरों और डाकुओंको निहत्था आप नहीं वना सकते। आये दिन वंदूक और पिस्तौल ले-लेकर डाका डालनेकी खवरें अखवारोंमें छपती रहती हैं, फिर साधारण नागरिकोंको हथियारसे वंचित रखकर हिंस्र मनुष्योंके मुँहमें डालना कहाँतक उचित है?

माणावाले यह भी कह रहे थे, कि पुराने जमानेमें हमारे लोग जाड़ोंमें नीचे चले जाते थे। उस समय जंगल वहुत थे, जिनमें चरते हमारे ढोर और भेड़ वकरियोंसे माल ढोना जीविकाका एक अच्छा साधन था, लेकिन आजकल मोटरोंके चल जानेसे हमारा वह रोजगार छिन गया। जंगलोंकी जगह खेत वन जानेसे गाँववाले हमारे ढोरोंके चरनेमें वाधा डालते हैं। अव वहाँ जाना वेकारका कष्ट उठाना है। घाट और पांडुकेश्वरके पासके जंगलोंमें अगर अपना मकान वनानेभरके लिए हमें जगह मिल जाय, तो हम पचासों मीलकी मंजिल मारनेसे वच जायें। मैं नहीं समझता, घाट या पांडुकेश्वरमें जंगलातकी भूमिमेंसे २५-५ एकड़ दे देनेसे सरकारको भारी हानि होगी। वस्तुतः जहाँ यह लोग अपना घर वनाना चाहते हैं, वहाँ देवदार जैसे कीमती वृक्षोंका जंगल भी नहीं है। लेकिन सरकारकी मशीन तो अव भी वही पुरानी है, जिसमें जनताके कष्टकी ओर केवल व्याख्यानोंमें सहानुभूति दिखलाई जाती है। मुझे विश्वास है, अगर गाँववाले मिलकर प्रयत्न करें, तो उनकी उचित माँग मान ली जायगी।

जब हम माणासे लौट रहे थे, तो एक बहुत मोटेसे पुलिस दारोगा साहब स्टेबलके साथ माणाकी ओर जाते दीख पड़े। तिब्बतमें कम्यूनिस्तोंके आनेका णावालोंको पहला फल मिलने जा रहा था, उनके गाँवमें पुलिस थानाका पित होना। गाँववालोंको लकड़ीके अत्यन्त अभावके कारण वैसे ही रोंकी कमी है, इसपर पुलिसवाले अपने रहनेके लिए भी उन्हीं घरोंमें स्थान ना चाहते हैं। दारोगा साहब घर देखने जा रहे थे। दारोगा साहबके मोटे-ड़े शरीरको देखकर मुझे तो ऊपरके अफसरोंकी बुद्धिपर आश्चर्य आया। भला ड़की चढ़ाई-उतराईके लिए क्या यही शरीर उपयुक्त था! मालूम हुआ, स्टेबल भी दूरके भेजे गये हैं। पूछनेपर यह जानकर संतोष हुआ, कि कमसे एक स्थानीय आदमी दुभाषियाके रूपमें रख लिया गया है। यदि भाषासे था अपरिचित आदमी ही यहाँ रख दिये जाते, तो आश्चर्य करनेकी बात नहीं, र नगरी जो ठहरी।

८. मसूरी वापस

२० मई (१९५१ ई०)को सबेरे ही चलना था। बर्फ पिघल जानेपर ड़ोंमें जहाँ-तहाँ घास निकल आती है, यद्यपि वह वर्षाकी जैसी बड़ी नहीं होती, भी काफी होती है। बदरीनाथके लोग अपने घोड़ोंको घरमें रखनेकी जगह नेके लिए पहाड़ोंमें छोड़ देते हैं और महीनों उनकी खोज-खबर नहीं लेते। रका घोड़ा भी इसी तरह छोड़ा हुआ था। वह घोड़ोंकी जमातमें चरते-चरते दूर निकल गया था, इसलिए शामको उसे पाये बिना ही गंगासिंह लौट आये। बड़े तड़के चलनेकी सलाह थी, वह पूरी नहीं हो सकी; बल्कि, संदेह लगा, कि शायद आज न चल सकेंगे। आजके लिए कामका कोई प्रोग्राम भी था, इसलिए दिन काटना मुश्किल होता। सेक्रेटरी साहबने और भी आदमी और ९ बजे घोड़ा आ गया। वह अच्छी जातका टांघन था। देखकर कुछ भी मालूम होता था, लेकिन घोड़ा जितना देखनेमें तगड़ा मालूम होता था, चंचल नहीं था। सेक्रेटरी साहब श्रीपुरुषोत्तम बगवाड़ी, उनके सहायक सभी लोगोंका सौहार्द और साहाय्य मुझे प्राप्त हुआ था। मैंने यह भी देखा, मंदिरके संबंधमें उनकी व्यापक दिलचस्पी है। जहाँ पूजा-पाठ और यात्रियोंके मके बारेमें वह हर तरहकी सहायता करनेके लिए तैयार रहते हैं, वहाँ कला पुरातत्त्वकी तरफसे भी वह उदासीन नहीं हैं। मैंने बगवाड़ीजीके सामने सुझाव रक्खा, तो मालूम हुआ, कि वह पहले हीसे कुछ इस तरहकी बातें

सोच रहे थे। मैंने कहा वदरी-केदारके यात्रा-क्षेत्रमें पुरातत्त्विक महत्त्वके वहुतें मंदिर, मूर्तियाँ और शिलालेख हैं। हेलङ्के सामने उरगम-उपत्यका, तथा मध्य मेश्वरकी भाँति कितने ही और भी ऐसे प्राचीन मंदिर हैं, जहाँ यात्री नहीं ज सकते। कालीमठ जैसे मंदिर (जो रास्तेसे ढाई तीन ही मीलपर हैं) में इतना मह त्वपूर्ण कत्यूरी शिलालेख और मास्टरपीस हरगौरीकी मूर्त्ति है, लेकिन उनका प मुझे वहाँ जानेसे पहले नहीं था। एक अच्छे फोटोग्राफर द्वारा यदि कि पुरातत्त्वमें दिलचस्पी रखनेवाले विद्वान्के साथ मंदिरों, मूर्त्तियों और शिला लेखोंका फोटो-छाप उतरवा लिया जाय, तो वड़ा काम होगा। कमीटीकी तरफ़ आप उनका एक अच्छा अलवम छपवा सकते हैं, जिससे लगा हुआ पैसा आसानी निकल आ सकता है। हाँ, फोटोग्राफर पहाड़का होना चाहिये, नहीं तो दुरारो रास्तोंमें वह जाना पसंद नहीं करेगा। पीछे मुझसे वात हुई, तो अपनी क और इतिहास संवंधी लगनके लिये प्रसिद्ध वैरिस्टर मुकुंदीलालजी तैयार दीख प आजकल देहरादूनमें काम करते वहुत कुशल फोटोग्राफर तरुण गंगासिंह विरोलि भी इस कामके लिए तैयार मिले, लेकिन और कामोंमें व्यस्त होनेके कारण मैं इ पहले इसकी सूचना वगवाड़ीजीको नहीं दे सका। मुझे विश्वास है, वह नारदकुं मूर्त्तियोंको निकलवाने तथा इस फोटोके कामको अवश्य करायेंगे।

वदरीनाथमें मैं दो दिन तीन रात रहा, किंतु इतने ही समयमें इतना हेलमे हो गया कि सचमुच ही चलते वक्त कुछ सूना-सूनासा मालूम होता था। दोपह का भोजन सिंध-पंजाव-क्षेत्रमें करना था। भगतजीने वहाँ भोजन पहले हीसे तै कर रखा था। ११ वजे हम वदरीनाथपुरीसे प्रस्थान कर सके। यह जान प्रसन्नता हुई, कि गंगासिंह दुरियाल हमारे साथ घोड़ा लेकर जा रहे हैं। नी जानेका वड़ा अच्छा साधन और सुअवसर मिला था, लेकिन एक तो अभी नी वाले धीरे-धीरे नीचेसे अपने घरोंकी ओर जा रहे थे, इसलिए अभी वहाँके वहु गाँव निर्जन ही होंगे, यह विचार वाधक हो रहा था। दूसरे रास्तेके कई मह पूर्ण स्थानोंके छोड़ देने तथा आदिवदरी तक जानेका ख्याल भी छोड़ देनेसे म उतना उत्साह नहीं रह गया था, इसलिए नीतीका ख्याल छोड़ना पड़ा। लो पूछनेपर यह मालूम हो गया था, कि वहाँ किसी वौद्ध पुस्तक, मूर्त्ति या अव मिलनेकी संभावना नहीं है, तो भी यदि कोई समानधर्मा सहयात्री होता, मैं नीती अवश्य जाता।

रास्ता उतराईका था। ऐसी जगह घोड़ेपर चलना मैं पसंद नहीं करता, लिए गंगासिंहको आनेके लिए कहकर आगे-आगे पैदल ही चल पड़ा। हनु

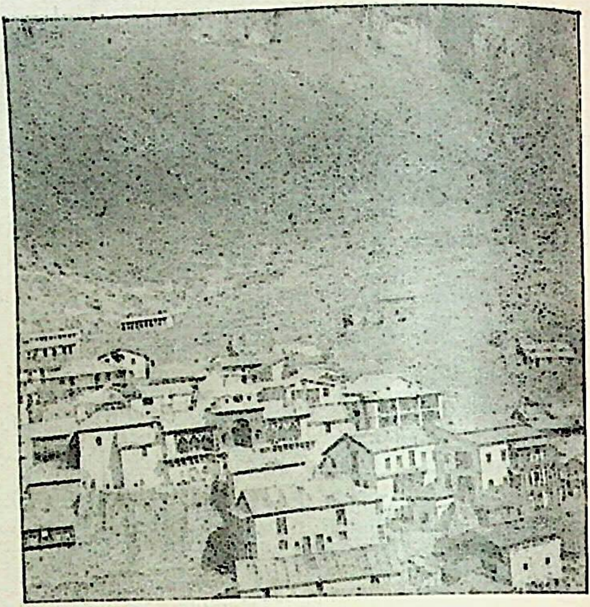

१९: बदरीनाथ धाम (पृष्ठ ४७०)

२०: बदरीनाथ-मारछा तरुणी (पृष्ठ ४८३)

ट्टीमें नहीं ठहरा और सीधे हरियालीकी भूमि ढूँढ़ते विनायक चट्टीपर पहुँचा। ब गंगासिहके साथ साथ ही चलना अच्छा मालूम हुआ। यहीं माणावाले ास्टर और कुछ और आदमी मिल गये। उन्होंने नदीपार सामनेकी वन-भूमि- ो दिखलाकर कहा : यदि वहाँ जगह मिल जाय, तो हम माणावाले जाड़ोंके लिए ना घर यहीं बना लें। जगह ६००० फुटसे कुछ ऊपर थी। आसपास बारहों म बसनेवाले लोगोंके गाँव हैं, इसलिए घुमन्तू जीवन छोड़नेके लिए तैयार णावालोंके लिए यह बहुत अनुकूल और समीपकी भूमि है। गंगासिहके आ नेपर आगे बढ़े। पांडुकेश्वरमें जरासा ठहरे। मैं किसी मारछानी महिला- ा जातीय आभूषण और पोशाकके साथ फोटो लेना चाहता था। उसकी साध हाँ पूरी हुई। एक तरुणी ऊनी कपड़ा बुन रही थी। उसने फोटो लेनेका रोध नहीं किया। बादल आसमानमें छाये हुए थे, इसलिए और अच्छे फोटोकी मीद तो नहीं थी, तो भी पीछे यह देखकर प्रसन्नता हुई, कि फोटो आ गया ।

पौने ५ बजे हम घाट चट्टीपर पहुँचे अर्थात् बदरीनाथसे १३ मील नीचे र आये थे। आज जोशीमठ पहुँचनेकी संभावना नहीं थी, और इससे अच्छी ी आगे नहीं थी। घोड़ेकी घासका भी प्रश्न था। आगे साढ़े ६ मील चलकर ीमठ पहुँचनेपर ही घासका प्रबंध हो सकता था। यही सब सोचकर आज ी चट्टीमें विश्राम करनेका निश्चय किया। घाटतक आज पैदल ही आये थे, पि उतराईमें कहीं-कहीं सवारी कर सकते थे, लेकिन मुझे पैदल चलना ही पसंद ा। सबसे पहले घोड़ेकी घासका प्रबंध करना था, दाना तो दूकनदारके महँगा या सस्ता मौजूद था। गंगासिह जब तीन रुपयेकी घास पीठपर लादे , तब मालूम हुआ, कि यहाँ रुपया मील घोड़ेका किराया देना अधिक नहीं सब घास एक शामके ही लिए पर्याप्त हुई। गंगासिह अपने ४० सालके नमें जो भी कथा पूर्वजोंसे सुनते आये थे, उसे सुना रहे थे। कह रहे थे, नाथ मंदिरसे संबंध रखनेवाले लोगोंके चार थोक हैं, जिनमें माणाके मारछा पहले आते हैं, फिर पांडुकेश्वरके आसपासके गाँवोंमें रहनेवाले हम दुरियाल ोशीमठवाले जोशियाल तीसरे हैं और चौथे डिमरी (सरोला ब्राह्मण)। यह आश्चर्यसा मालूम होता है, कि चार थोकोंमें देवप्रयाग-निवासी बदरीनाथके नहीं गिने जाते। देवप्रयागके पंडोंकी गढ़वालके ब्राह्मणोंमें एक अलग ही है। उनके विवाह महाराष्ट्र और दूसरे ब्राह्मणोंसे भी होते आ रहे हैं। बड़ा गाँव नीचेके तीर्थयात्रियोंके आनेके रास्तेमें पड़ता है, इसलिए यात्राके

महत्त्वको वह समझ सकते थे। यही कारण है, जो जोशीमठके नीचे रहनेवाले डिमरी ब्राह्मण चार थोकोंमें एक होनेपर भी बदरीनाथके रसोइया और सहाय पुजारी ही रह गये, धनकी खान नीचे वालोंकी पंडागिरी उनके हाथमें नहीं आई। चारों थोकोंके लोग बदरीनाथ धाममें अलिखित कुछ विशेष अधिकार रखते हैं, उनके पास बहुतसी अलिखित परंपरायें भी हैं, जिनका उल्लेख शायद बदरीनाथकी पुरानी बहियोंमें मिले। किसी अनुसंधानकर्ताके लिए यह एक अच्छा विषय है, किंतु हमारे यहाँ जिस तरह नून-तेल-लकड़ीकी चिंता पहले ही सिरपर सवा हो जाती है, तथा युनिवर्सिटीकी डिग्री पाते ही विद्याकी समाप्ति समझ ली जात है, उसके कारण इन बिखरे हुए रत्नोंको परिश्रमके साथ जमा करनेवाले तरु मिलने मुश्किल हैं।

घाट चट्टीसे मील भर ऊपरसे हेमकुंडका रास्ता अलग होता है। अलकनंदा पर एक साधारणसा झूला-पुल बना हुआ है। वहाँसे बटिया घाँघरिया गाँ (६ मील) तक भ्युँढार नदीके किनारे-किनारे जाती है। वही आखिरी गाँ है। घाँघरियासे एक रास्ता फूलोंकी उपत्यका भ्यूँढार या "नंदनवन"को जाता है, जहाँ वर्षामें सैकड़ों तरहके फूल खिलते हैं और दूसरा रास्ता लोकपाल कुंडकी ओ जाता है। लोकपालकुंडको हेमकुंड कहकर अब सिक्खोंने अपना तीर्थ बना लि है। ढूँढ-ढाँढ़कर ग्रंथसाहेबसे इसके प्रमाण निकाल लिये गये हैं, कि गुरु गोवि सिंहने पहले जनममें इसी जगह तपस्या की थी।

२१ मईको हम ५ बजेसे भी पहले रवाना हुए। धौलीपार दो मील चढ़ाई घोड़ेकी सवारीसे करके ७ बजेके करीब हम जोशीमठ पहुँच गये। यहाँ मंदिरोंको तो जाते वक्त देख चुके थे, हाँ, भूतपूर्व रावल श्रीगोविन्दन्से बात कर जरूरी था। उनकी बहुज्ञताके बारेमें दूसरोंके मुँहसे भी सुन चुका था। इसीलिए रावल पदसे च्युत कर दिये गये, क्योंकि उन्होंने किसी पहाड़ी तरु ब्याह कर लिया। लोग आशा रखते हैं, कि रावल लोग विश्वामित्र-परा प्रभृति वातांबु-पर्णाशन महर्षियोंके शिरपर भी पैर रखकर अखंड ब्रह्मचर्य पा करें। गोविन्दन्जी औरोंकी अपेक्षा अधिक ईमानदार थे, जो अपनी संतान पत्नीके प्रति अपने उत्तरदायित्वको खुलकर स्वीकार करना चाहते थे। इसी उनको दण्ड मिला, जो उन्हें रावल पदसे हटा दिया गया। मुझसे जब कि इस बातकी शिकायत की, तो मैंने उन्हें बतलाया, कि रावलने किसी क्ष कन्यासे ही तो ब्याह किया। मलाबारमें नम्बूतिरी ब्राह्मणोंमें यह आम र है। वहाँ नम्बूतिरी ब्राह्मणोंके बड़े लड़केको ही बापकी संपत्ति और अ

जातिमें विवाह करनेका अधिकार होता है। छोटे लड़के नायर-कन्याओंसे दायित्वहीन विवाह-संबंध करते हैं। इसके कारण उन्हें जातिच्युत नहीं होना पड़ता। रावल गोविन्दन्ने कोई नियमोल्लंघन नहीं किया, यदि उन्होंने किसी त्रिय-कन्यासे विवाह कर लिया। रहा यह, कि जो अखंड ब्रह्मचारी नहीं, उसे बदरीनाथकी मूर्त्तिको हाथ लगाना नहीं चाहिये, यह केवल भोलेपनकी बात है। आजतक हुए रावलोंमेंसे शायद कोई भी ऐसा नहीं हुआ होगा। हाँ, रावलोंकी निरंकुशता अवश्य उठ जानी चाहिये थी, जो कि कमीटीकी स्थापना द्वारा हो गई।

रावल गोविन्दन् कूपमंडूक नहीं हैं। उनको देश-दुनियाकी खबर है। भारतके दक्षिणी छोरमें जन्म लेकर बचपन हीमें छोटे भाई होनेके कारण अपने किसी संबंधीके साथ हिमालयमें चले आये। उनसे देरतक बातें होती रहीं। उनका कहना है: (१) नारदकुंडमें और भी मूर्त्तियाँ है, (२) बदरीनाथकी मूर्त्ति निःसंदेह बुद्धकी मूर्त्ति है, और वह पद्मासनस्थ है। बाँह भी छिली हुई है। सामनेसे मुँहका एक टुकड़ा निकल गया है, जो शायद कहींपर मौजूद है, नेऊकी भाँति चीवरकी रेखा है, कान लंबे हैं, अवशिष्ट शिरोभागमें केश हैं, ३) वह मेरी इस रायसे सहमत थे, कि प्राचीन मूर्त्तिके नष्ट होनेपर पहलेसे की खंडित बुद्ध-मूर्ति नारदकुंडसे निकालकर स्थापित की गई, (४) यह मूर्त्ति लाकी दृष्टिसे बहुत ही सुन्दर रही होगी, (५) जोशीमठमें उन्होंने सूर्यकी कोई र दूसरी खंडित मूर्त्तियाँ देखी थी, जो अब नहीं हैं; (६) जान पड़ता है, उन्हें ग ले गये; (७) तपोवनमें कितनी ही खंडित मूर्त्तियाँ और मंदिर हैं उनके बारेमें मैंने बतलाया, कि यह रुहेलोंकी करतूत है), (८) थोलिङ्मठ पश्चिमी तिब्बत) से प्रतिवर्ष भेंटके साथ चिट्ठी आती है, जिसमें बदरीनाथको पना देवता' लिखा रहता है।

वार्तालापमें हमें रस आ रहा था, लेकिन मुझे चलना भी था, इसलिए ी लेनी पड़ी। खनोल्टी छोटीसी चट्टी है। विश्वास नहीं था, कि यहाँ बढ़िया वल खानेको मिलेगा। गंगासिंहने भोजन बनाया। भोजनोपरान्त थोड़ा श्राम किया और फिर चल पड़े। यदि कल जोशीमठ पहुँच गये होते, तो आज मतक बड़ी आसानीसे चमोली पहुँच जाते। घाटसे आकर जोशीमठमें न करनेमें भी काफी समय लग गया, इसलिए २१ मील चलकर गरुड़गंगामें न रात्रिके लिए विश्राम करनेका निश्चय करना पड़ा। चट्टियोंमें घंटा-डेढ़- पहले पहुँच जानेपर ठहरनेके लिए अच्छा स्थान मिल जाता है, देर करके

आनेवालोंके लिए जगह मिलनी मुश्किल हो जाती है। हमें वहुत ढूँढ-ढाँढ करनेपर कालीकमलीवाली धर्मशालाके वरांडेमें जगह मिली। कुछ लोग हमसे भी देर करके आये, जिनको टिकान मिलनेमें वड़ी कठिनाई हुई। अव कल हमारा चमोली पहुँचना निश्चित था और यदि मोटरमें जगह मिल गई, तो समझ रहे थे, कल ही श्रीनगर भी पहुँच जायेंगे।

२२ मईको साढ़े ४ वजे पैदल चल पड़ा। यहाँसे १० मील हाटके पुल तक उतराई थी। मैंने वहाँतक घोड़ेकी सवारी नहीं की, यद्यपि गंगासिहका उसके लिए वहुत आग्रह था। उतराई हो, तो पैदल चलनेमें जो आनंद आता है, उससे अपनेको वंचित रखना मैं पसन्द नहीं करता। हाट पहुँचनेपर देखा, अभी सवेरा ही है, इसलिए आगे मठमें हमने चाय पी और वहाँसे चलकर साढ़े वजे चमोली पहुँच गये। ११ वजे श्रीनगरकी मोटरें छूट रही थीं। कंपौंडर श्रीसुंदरियालजी और डाक्टर विश्वासने कोशिश की, कि टिकट मिल जाये, लेकिन वसें भर चुकी थीं। डाक्टर विश्वास भी सुंदरियालजीकी तरह ही वड़े भद्रपुरुष निकले। उन्होंने मध्यान्ह-भोजनके लिए निमंत्रण दिया। उनका वँगला अस्पतालसे कुछ ऊपर कचहरी और डाकवँगलेके पास था। कह रहे थे, मेरी पत्नी ऐसे झारखंडमें रहना नहीं चाहती, जहाँ मछली मुयस्सर न हो। वंगालीके लिए मछली तो जातीय भोजन है। उन्होंने वहुत कोशिश की, कि कहींसे मछली मिल जाय, किंतु सफलता नहीं मिली। सूखा-रूखा खाना खिलानेमें उन्हें वहुत संकोच हो रहा था। उसे वह "भोजन" नाम देनेके लिए तैयार नहीं थे। यहाँसे कुछ ही मीलोंपर १८९३ ई०के पर्वतपातकी निशानी गोहनाका महासरोवर मछलियोंसे भरा पड़ा है, लेकिन चमोलीमें अगर उसके काफी ग्राहक हों, तव न मछली यहाँ पहुँचे। यहाँसे जव मोटरें कोटद्वार तक जाती हैं और आगे रेल है, तो क्यों नहीं गोहनाके लाखों मन रोहुओंमेंसे कुछको नीचे भेजा जाता—क्या वह अन्नके अभावको कुछ मात्रामें कम नहीं करेंगे ?

मोटरके रास्तेपर आ जानेके वाद आदमीके भाव दूसरे ही हो जाते हैं। वह समझता है, अव मैं सभ्यताके सीमाके भीतर आ गया, मोटरपर चढ़कर जल्दी ही जहाँ चाहूँ वहाँ पहुँच सकता हूँ। वहुत प्रयत्न करनेपर ३ वजेकी वसमें जगह मिली। वदरीनाथसे लौटे यात्रियोंकी भीड़ थी। वहुतसे लोग तो वदरीनाथमें ही वसका टिकट कटवा लेते हैं, उन्हें जगह मिलनेमें सुभीता होता है। आगे एकके वाद एक नंदप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग आये। हाटसे नीचेके पर्वतोंमें वनश्रीका अभाव है, उन्हें हिमालयका अंग कहनेमें भी संकोच होता है। रास्तेमें हमें गौचरका

दान मिला। यहाँ छोटे हवाई जहाज उतर सकते हैं। पहले जब कभी बदरी-वकी विमानयात्रा चालू थी, तो उसका अर्थ था, इसी गोचरके मैदानमें उतरना। चरमें हम काफी दिन रहते ही पहुँच गये थे। यह स्थान कर्णप्रयागसे ६ मील पहले ता है। यहाँपर भोटांतिक लोगोंके लिए बागेश्वरकी तरहका एक मेला लगाने-ी कोशिश की गई, लेकिन भोटांतिक लोग उससे अधिक संतुष्ट नहीं मालूम डते। उनका कहना है: हम तो तिब्बतसे लाई अपनी चीजोंको लेकर वहाँ हुँच जाते हैं, किंतु नीचेकी जिन चीजोंकी हमें अवश्यकता है, वह नहीं मिलतीं। से भी जब आगे रेलके अन्तिम स्टेशन और बड़े बाजार कोटद्वारा तक मोटर जाती , तो कोई बड़ा व्यापारी क्यों यहाँसे चीजें खरीदेगा, जब कि उसे वही चीज टद्वारामें सस्ती मिल सकती है। अब तो हाट-मेला जोशीमठमें या आस-स में ही कहीं अच्छी तरह लग सकेगा, जब कि वहाँतक मोटर जाने लगेगी र साथ ही नीती और माणा घाटोंके पारवाले तिब्बतके व्यापारियोंको आकृष्ट या जायेगा—कम्युनिस्त तिब्बतका व्यापार अब अधिकतर अर्ध-सरकारी हो ायेगा, इसमें संदेह नहीं।

रुद्रप्रयागमें अँधेरा हो गया। रास्तेमें एक जगह मोटर बिगड़ गई। र लगने लगा, कहीं रात यहीं न बितानी पड़े, लेकिन आखिर साढ़े ९ बजे रात-ो हम श्रीनगर पहुँच ही गये। बदरी-केदारके रास्तेके कुछ परिचित यात्री भी सी बससे उतरे थे। हमारा विचार तो श्रीखड्गसिंहके नेशनल-होटलमें रातको हरनेका था, लेकिन साथकी महिलाओं और भद्रपुरुषोंके आग्रहने इस बातके ए मजबूर किया, कि उसी रातको ३ मील पैदल चलकर अलकनंदा पार कीर्ति-गरके मोटर-अड्डेपर चले चलें। श्रीनगरमें खड्गसिंहके यहाँ भोजन तैयार था, कानोंसे भी कुछ मिल सकता था, लेकिन नहीं लिया। कीर्तिनगरमें आधी तको पहुँचे। उस वक्त तक दूकानें बन्द हो चुकी थीं, इसलिए हम लोगोंको ने ही एक पेड़के नीचे सो जाना पड़ा। भीड़ इतनी थी, कि डर लग रहा था, हीं सवेरेकी बसमें जगह न मिले।

सवेरे ऋषीकेशका टिकट मिल गया। सूर्योदयसे पहले ही बस चली। ऋषी-श और कीर्तिनगरके बीच चलनेवाली बसें अपने व्यावहारसे बतला रही थीं, हम किसी रियासती सवारीमें चल रहे हैं। वैसे कोटद्वारा-चमोली सड़ककी में भी प्राइवेट हैं, और इस बातकी उचित माँग की जाती है, कि रोडवेजकी में चलाई जायं, किंतु कीर्तिनगरसे ऋषीकेश तककी बसें तो सवारी नहीं सासतके ए हैं। बसवाले यात्रियोंकी परवाह नहीं करते और ड्राइवर तो अपनेको पूरा

तानाशाह समझते हैं। आगेवाली बसें धूल उड़ाती जा रही थीं और पीछेवाली बसें चाहती थीं, कि उनके मुसाफिर खूब धूल फाकें। जहाँ मन होता, वहाँ ड्राइवर अपनी बस खड़ी कर देता और उसके पीछे आ-आकर कितनी ही बसें रुकी पड़ी रहतीं। जान पड़ता है, यहाँ कोई धनी-धोरी है ही नहीं। देवप्रयागमें घंटे भरके लिए बस रुकी। व्यासी चट्टीपरका घंटे भरका रुकना अच्छा था, भोजनका समय था और चट्टीपर रोटी-तरकारी, पूरी-तरकारीका प्रबंध माकूल था, यद्यपि पानीकी शिकायत थी। ऊपरसे आनेवालोंके लिए यहाँ गर्मी ज्यादा मालूम हो रही थी।

हमारी बसमें काफी स्त्रियाँ थीं। यात्रामें न जाने कौनसी संपत्ति लुटी जा रही थी, कि उनमें बराबर वाग्युद्ध होता रहा। २३ मईके साढ़े ११ बजे हमारी बस ऋषिकेश पहुँची। गर्मीके बारेमें क्या पूछना है? मालूम होता था दोजखमें चले आये। मन यही कहने लगा, कि जल्दी भागकर देहरादून पहुँचा जायं। देहरादूनकी बस तैयार थी, टिकट भी मिल गया, लेकिन ड्राइवर साहबकी मनमानीके कारण साढ़े १२ बजेके पहले वहाँसे चल नहीं सके। इन प्राइवेट बसोंसे गवर्नमेंटकी रोडवेजकी बसोंमें यात्रियोंको बड़ा आराम रहता है, इसमें संदेह नहीं। अगर यात्रिओंको पूछा जाय, तो वह यही कहेंगे, कि कमसे कम यात्राकी सभी मोटर-बसोंको तो सरकारी बना दिया जाय। सरकारको इसमें घाटा नहीं है, लेकिन प्राइवेट स्वार्थ, घूस-रिश्वत और खुशामदके भरोसे शिरपर आई बलाको टाल देनेमें सफल हो जाते हैं। दो घंटेमें २७ मीलकी यात्रा करके ढाई बजे हम देहरादूनमें पंडित गयाप्रसाद शुक्लके घरपर पहुँचे।

देहरादून २००० फुटकी ऊँचाईपर बसा है, लेकिन हमें तो वहाँ भी मालूम होता था, किसी भट्टीवाले घरमें बैठे हैं। मन यही करता था, कि भागकर मसूरी जा धरें, लेकिन महीनोंसे हिंदी-परिषद्की बैठकमें सम्मिलित होनेके लिए हम वचन दे चुके थे। शुक्लजीने उसे २५ मईको रख रक्खा है, यह सुनकर दिल मसोस करके रह गया—पूरे ढाई दिन और तीन रात इस भट्टीमें तपना होगा, न जाने किस जन्मका कर्मविपाक है। बिजलीका पंखा चलानेपर भी पसीना बंद नहीं होता था। रातको खुले आकाशके नीचे सोये। २४ मईको यह देखकर जानमें जान आई, कि आज आकाशपर बादल छाये हुए हैं। दिनमें थोड़ीसी वर्षा भी हो गई, लेकिन रातको फिर आकाश निरभ्र हो गया। फोटो धुलवानेपर मालूम हुआ, कि हमारी यात्राके अधिकांश फोटो अच्छे आये हैं। २४-२५को जैसे-तैसे देहरादूनमें बिताया। शुक्लजीकी धर्मपत्नीके हाथका स्वादिष्ट भोजन आग्रहपूर्वक

धिक खा जानेसे पेट खराव होनेका डर वना ही रहा। शुक्ल-पीखार कहने हीके ए कान्यकुब्ज हैं, नहीं तो कनौजियोंके धर्मको पूरी तरह छोड़ चुका है। भला ी पड़ोसी पंडित हरनारायण मिश्रजीका, जिनके कारण धर्म वचा हुआ है, नहीं ां कनौजिया पितरोंको भूखे ही रहना पड़ता। मिश्रजीने २५के मध्यान्हको भोज कराया—वहुत स्वादिष्ट मांस वना था, यद्यपि घीके अधिक होनेकी कायत थी।

आते समय जिस तरह सूर्य देवताने ग्रीष्मसे मिलकर अपने चंडरूपको दिखाया ा, उससे तो यदि उसकी चली होती, तो देहरादूनके ढाई दिन असह्य हो ाते, लेकिन पिछले दो दिनों कुछ वादल आते-जाते रहे और जरासी वूँदा-वाँदी ा गई। जव २६ मईको सवा ८ वजे सवेरे मसूरीकी वस रवाना हुई, तो सिर से एक वड़ासा भार उतर गया। पौने दस वजे वस मसूरीके अड्डेपर आई र ११ वजेसे पहले ही हम अपनी कुटिया (हर्न किल्फ, हैपीवेली) में पहुँच गये। स प्रकार २ मईसे २६ मई तककी वदरी-केदार-यात्रा समाप्त हुई।

अध्याय १२

जन-साहित्य

गढ़वालका अलिखित जन-साहित्य अन्य पर्वतीय प्रदेशोंकी भाँति ही बहुत समृद्ध है। लेकिन अभीतक उसके संग्रह करनेका वैज्ञानिक क्या साधारण ढंगसे भी बहुत कम ही प्रयत्न किया गया है। यहाँ हम उसके कुछ गद्य-पद्यके नमूने देते हैं।

§१. गद्य

१. चिट्ठी[1]

नैलचामी, टिहरी गढ़वाल कार्तिक ८ गते १९९४

श्रीमान् मान्यवर धर्ममूर्त्ति पं० विशालमणिजी साहिव भटवाड़ी भवानन्दकी सेवा चौंरा कीर्तिसिहको पैलागुन स्वीकार हो। खवर मिले, कि केदारनाथका पंडा फेरवालोंका साथ आपकी जीत होये, वड़ी खुशीकी वात छे। हमारा वोख[2] भी वारा जात गुसाईं वणिगे छया। हमन साल ८२से मुकद्दमा चलाये और वो लोग वोरा कोम करार दिया गया, वोंका ब्राह्मण श्रीनन्दकी चान्द्रायण जनेऊ देण वावत होये, वल्के एक जालसाजी मुकद्दमा भी वोंपर वावत जात वदलनको चले ६५० रु० जुर्माना और छ माहकी सजा वोरोंको होए। फतेराम वा० भटवाड़ी झड़ू उन्याल, महानन्द, वलिराम थापली डूंडसीर व अम्विकादन्त्त, रघुवरदत्त रविलखेड़ा वगैरह ब्राह्मणोंकी काटल अकरीवालोंकी चान्द्रायण शुद्धता वोरोंको जनेऊ देणपर दरवारने करवाये। यखमाँ १४ साल मुकद्दमा माँ लगेन बाद २ भैंडोंका साथ मुकद्दमा चले यख नीलचामीश्वरकी पूजा कर्नवाला भैंडा जो फूलवाली व धारवाली व दोठ गाय-भैंस हलचिराका वैल और मुर्दाको घूर लेंद छया, वोंन लेणो इन्कार करे। वोले कि हम ब्राह्मण छवाँ, भैंडा नि छवा। खास मट्टीका भैंडोन हलचिराका वैल नि लीनेन। वाँका वावत सरकार-

---

[1] "फूलकण्डी" पृष्ठ भू० ११-१२

[2] यहाँ।

फैसला होए कि ये ऐवदार पशु तुम लोग ही लीक आयेन। तुम अपना र निरखणों च दानत तोंकी विकरी करीक टेमल फंडमा रुपया जमा कर देवा। (नायक) नग्याल वणीक पँवार वणना छ्या, वो भी हजूर कोर्टसे नैक वणाया गयां। कुमारधारका कुमार भी पँवार वणना छ्या, वो भी कुमार रख दिया गयेन। सौरा भरदार कारगिरी जातका रौतेला वणना छ्या, तौपर रु० जुर्माना होयेन और कारगिरी ही रख दिया गयेन। हमारा महाराजा साफ कर्ना छन। खबर छ कि आपका यख भी भैडा, सेठी, वोरा, नैक जात दलान छन। आपसे प्रार्थना छ कि, वो लोगूंको अपणा वाप-दादा वदलणसे वश्य रोका, जाँसे कोई जात वदलीक अपणो नाम जार-पुत्रोंकी गणतीमाँ डालो।

पत्र भेजणवाला——पं० भवानन्द नौटियाल भटवाड़ी, किर्तसिंह, नर्डिसिंह, सिंह, उप्राण चौरा, वादरसिंह खुंटीनेगी, पुडोली नैलचामी, टिहरी गढ़वाल।

२. कृतज्ञता[1]

श्रीमान् पं० ज्ञानानंदजी विजल्वाण धन्नूल (पट्टी) क्वीलीका सुपुत्र पं० नान्दजी विजल्वाण असिस्टेन्ट सब-इन्सपेक्टर पुलिस तथा श्रीमान् लाला शरणजीका सुपुत्र लाला मामचन्दजी दुकान मगरा जौनपुरको मैं विशेष ज्ञ तथा आभारी छौं, जौंन कि ई पुस्तकका प्रकाशन मा विशेष अनुरोध करे र प्रकाशनको खर्च प्रदान करिक सहायता करे। ईश्वर यों सज्जनोंकी चिरायु कामना सफल करे।

मैं कृतज्ञ छौं उपरोक्त सज्जनोंको, और कृतज्ञ छौं ऊंकू जो मैंसणी अपणा भदन; और जौंसणी मैं अपणा समझदौं।

यशोभिलाषी :
टीकाराम "कुंज"।

§२. पद्य

१. नथुली[2] (मध्य बोली)

नथुली पँवर[3], नथुली पँवर दा,
तू होली[4] गूलावी फूल, मैं होलूँ भँवर दा।

---

[1] "गढ़गुंजार"

[2] पहिले तीन पद्य श्री गोविन्द चातक द्वारा संगृहीत तथा हिमाचल"में प्रकाशित हैं।

[3] नथुलीका मुड़ा सिरा

[4] होगी

ताकुलाकी ताकी,[1]
मैं छौं दिलदार सुवा,[2] तू छै मन वाँकी।
ग्यों[3]-जौका कीस,[4]
तेरी गीची[5] इनी सुवा, जनु ठंडू पाणी तीस[6]।
दरजीकी कैंची,
सीं सनकौंण्या आँखी, मैं दी दे पैंछी[7]।
फटी जाली टाँटी,[8]
घणा गौकी वाट नी औंण,[9] माया जाँदी वाँटी।
गुड खायो माँख्योन,[10]
और खाँदा गीचिन,[11] तू खाँदी[12] आँख्योन।

२. ताचुली

ताचुली[13]की ताच,[14]
गाडू[15] घायी लाडु सुवा,[16] धारु दैंदी वाच[17]।
झंगोराको वोट,[18]
कुयेडी[19]को मोडो[20] मरे, होइगे अद्या लोट[21]।
चौंल[22] भरी पाथी,[23]
कैंका सिरवाणी[24] रलीं[25], चूडियों भरी हाथी।
सड़ककी कैंच,
वायीं हाथी सिरवाणी, दहिणी हाथी ऐंच[26]॥
हींसर[27]की गोंद,
मेंन[28] फास खाण सुवा, तेरी नथुली ऊंद[29]।
घास बाँधी पूली,
भुवकी फंडु पेयी,[30] पर बुलाक[31] न घूली[32]॥

---

[1] घुमाव, नाच [2] तोता [3] गेहूँ [4] टूस [5] मुख [6] प्यास [7] उधार-पैंचा [8] मालूलताका फल [9] आना [10] मक्खियोंने [11] मुखसे [12] खाती हैं [13] एक घास [14] पत्ता (?) [15] नाले [16] शुक, प्रियतम [17] पुकारका उत्तर [18] बूटा [19] कुहरा [20] मुर्दा [21] छा जाना [22] चावल [23] दो सेर [24] सिरहाना [25] रहेगी [26] ऊपर [27] काँटेदार झाड़ी [28] में [29] में [30] ले ली [31] नथकी [32] निगलना

कतरी तो प्याज,
सौकारुको मोडो मरे,[1] ज्योंको[2] वडे व्याज ॥
दली जाली दाल,
नाककी नथुली च्यूली,[3] न जा सुवा माल ॥

३. बेटी नगीना

तिन त वोले मैना[4] अंग्रेजी पढन बेटी नगीना,
तव नी पढे ओं नम सिधं[5] बेटी नगीना।
तिन त वोल मैन पट्टीकी पट्वान[6] होंणे बेटी नगीना;
तब नी होये गौंकी पदानीं[7] बेटी नगीना।
तिन त बोल मैन लाहौरी लड्डू खाणा बेटी नगीना,
तब नी मिले झंगोरा[8]को पजवाणी[9] बेटी नगीना।
तिन त वोले मैन हारमुनी वजौणें बेटी नगीना,
तव नी मिले फुटचूँ कनस्तर बेटी नगीना।

४. ढोल-मंत्र[10]

वन्मो आदेस,[11] माता पिता गुरु देवताको आदेस,
रण कू दली[12] ठोकत ताल, फुट-फुट रे बावा वजर सी ताल।
पूड नी फुटे डोर नी खुले मंत्र नी चले,
दैणा नरसी बाबा हणमान, तेरी आण[13] पडे परथमें[14]।
जत खोलु, सत खोलु, कंकणी[15] खोलु,
मुंदडे[16] खोलु, हार खोलुँ डोर खोलु,
तामा रोदन खोलु, कोन्ती[17]का सत न खोलु,[18]
सीताका सत न खोलु, दुरपतीका खाडा न खोलु,

---

[1] मुर्दा मरे [2] जिनका [3] देना [4] मैन [5] ओं नमः सिद्धं [6] पटवारिन [7] प्रधानकी स्त्री [8] सँवा [9] माँड [10] चौथीसे सातवीं तककी गीत "विशाल हृदय" (श्री शंभुप्रसाद बहुगुणा, पृष्ठ २२६, २१६, २१७८, २१७)से ली गई हैं। [11] ओं नमो आदेश [12] रणदलन करनेवाले [13] शपथ, जान [14] पूडा [15] ढोलकी मेखला [16] मुद्रा [17] कुन्ती [18] नंगा करूँ

नकोल[१]की छडी न खोलु, सहदेवकी छडी न खोलु,
अर्जनका धनक न खोलु, भीमकी गजा[२] न खोलु,
दुद्ध्या[३]की वाचा न खोलु, मंत्र नी चले अंजनीका पुत्र,
नरसी वीर तेरी आण पड़े, पंच पंडव तेरी आण पड़े।

५. *चांछड़[४]

बौडी[५] ऐन बौडीजी वारा मैनों[६]की वारा वसुंधरा।
रितु बौडी ऐ गैन[७] ढांइ जसु[८] फेरा। बौडी क ऐ गैनजी वसन्त-पंचमी।
तव बौडी क ऐ गैन फूल सगरांद।[९] वारा फूलू मान कू फूल प्यारूँ।
वारा फूलू मान[१०]कू फूल-सरदार। सेल[११] सिरताज छ, रातू[१२] मखीमला।
जाई[१३] सुरमाडी छ, वू[१४]फूल गुलाव। नीगंदु[१५] वुरांस[१६] डोला-सी गच्छेंदु[१७]
बौडी क ऐ गैन वैसाख विखोत[१८]। बौडी क ऐ गैन पापडी त्योहार।
बौडी क ऐ गैन जी वूथल[१९] तमाश।
जौं दिसा ध्याणियों[२०] का मैती[२१] ह्वला[२२] ग्वीनी[२३]।
तौ दिसा ध्याणी मैतु जाली देसु, नि मैतणी[२४] फचोंली[२५] देलीउँ जाली[२६]।

६. *चौफोला[२७]

डांखरि ढूरलि[२८] तैं[२९] वांकी रँवाई,[३०] डांखरि ढूरलि।
राँवाई ना जा तू राँवाई ना जा,
तेरी मामी हँसाड[३१] रणू, डांखरि ढूरलि।
तैईं पाली-पछौंउ रणू, डांखरि ढूरलि।
डांखरचूं क तल होली, डांखरि ढूरलि।
तू येकू येकेंतो[३२] छ ई, डांखरि ढूरलि।

---

[१] नकुल [२] गदा [३] दुधिया बाबा

*"विराट हृदय" पृ० ६ (२१६) [४] चाँचर (गीत) [५] फिर (बहुरि) [६] बारह महीना [७] आ गई [८] बैल जैसे [९] फूल संक्रान्ति (चैतकी) [१०] महीना [११] पीला [१२] लाल [१३] जई (जूही ?) [१४] वह [१५] निगंध [१६] रोडेन्ड्रन [१७] फूला [१८] विषुवत् संक्रान्ति [१९]. . . [२०] धीया [२१] मातृ पक्षीय [२२] होंगे [२३] सखियो ! [२४] मातृपक्षीय [२५] एक फूल, स्त्रीका नाम, [२६] देहलीपर जायेगी

[२७] *"विराटहृदय" पृ० २१८. [२८] फरसे रहते [२९] तू [३०] टेहरीका पर्गना जिसमें जमुनोत्री है [३१] हँसोड़ [३२] एकलौता

मैं जादू रँवाई आमा[1] डांखरि ढूरलि।
काल का डस्याणा[2] ना जा, डांखरि ढूरलि।
वैरीका वंदांण ना जा, डांखरि ढूरलि।
मैं जाँदू रँवाई आमा डांखरि ढूरलि।
दरोलो[3] ना होई रणू, डांखरि ढूरलि।
सिंहणी सपूत छई, डांखरि ढूरलि।
भड़ू[4]को वचणो रणू, डांखरि ढूरलि।
होंदो दुई दिनू रणू, डांखरि ढूरलि।
मरणू अवसिहि होण, डाखरि ढूरलि।
जव जग जलम[5] लीने, डाँखरि ढूरलि।

७. बारहमास्या[6]

भादों की अँधेरी झकाझोर, ना वास,[7] ना वास पापी मोर।
ग्वेरु[8]की मूरली तू त वाज, भैंस्यूँकी घांड्यौं न डांडो गाज।
आँसुन चादरी मेरी रुझ,[9] तुम तैं स्वामीजी नी सूझ।
वाज्यौ ती वाज्यौ ती वाज्यौ डंका, सीता हर लीगे रावण लंका।
ना वास, ना वास पापी मोर, भादौंकी अँधेरी झकाझोर।

८. चेतावनी[10]

रे लोला दीरिदा[11], जाग जरा गढ़वाल॥
डाँडी व कांठ्यौं[12] घाम लगीगे, अव तु होश सम्हाल।
दगड्या[13] लगी गयाँ कामू सवेरे, जोडि लीने धन माल॥
रे लोला दरिद्री जाग जरा गढ़वाल॥
पूपको पालो जेठ कि रुडे[14] काल जून वसगाल।
त्वैन सत्याये नंगाहि तन सव, खाँदी समै[15] अन्नकाल॥

---

[1] मा
[2] डँसा
[3] शराबी
[4] जोधा
[5] जन्म
[6] "विराट हृदय" पृ० २१७
[7] बोल
[8] ग्वाला
[9] भीगी
[10] "फूलकन्डी" पृ० ५
[11] अरे भाई
[12] डांडा कोठा
[13] साथी
[14] गर्मी
[15] खाते समय

रे लोला दरिद्री जाग जरा गढ़वाल ॥
दाणो नि घर माँ बालक भूखा, नांगान होयाँ बेहाल ।
रे, तख माँ[1] मी जाँदी[2] अदालत कैकी तु कर्ज कपाल ॥
रे लोला दरिद्री जाग जरा गढ़वाल ॥
वोइ[3] व बाबू[4]का दगडा[5] भी, दावा व झूटा ववाल ।[6]
जुआ शरावे राँडू पिछाडे,[7] होंदी तु हाल बेहाल ॥
रे लोला दरिद्री जाग जरा गढ़वाल ॥
अप्फू नि कुछभी कर्नू कमौणू, उद्यमको नि छ खियाल ।
बेटी कु बेची वींका रगतते[8], चाँदी तु होणू निहाल ।
रे लोला दरिद्री जाग जरा गढ़वाल ॥
'योगीन्दर' यो जतन विचारा, सुधरि पड़ो सब जाल ।
नींद रलिया[9] इन्ने पडीं त ऐगे समै अन्त काल ।
रे लोला दरिद्री जाग जरा गढ़वाल ॥

९. स्वामीकु रैवार गीत*

पौन तू प्राण मेरी, दास छौ मै भि तेरी ।
जैं दिशा भौंर[10] मेरो, तैं दिशा मारी फेरो ।
देखि स्वामी को डेरो, बोलि रैवार[11] मेरो ।
भौंर तू प्राण मेरो, केशरु को रसिया ।
बागों को तू बसिया, फूलु को छै हसिया ।
कै[12] विराणी हि जाई,[13] देखिकी तू ना भूल ।
भौंर अलसीगे[14] तेरो, यो गुलाबी सी फूल ।
भौंर की आश धरी, फूली गुलाब कली ।
भौंर विदेशु रम्यों, नी छ या बात भली ।
खूब मैदान बड़ा, बाटामां त्वै मिलला ।
हौंसिया[15] लोग रंदा,[16] सेठुका गांऊ भला ।

---

[1]तो भी [2]जाता है [3]मा [4]बाप [5]साथ [6]आफत [7]पीछे [8]रक्तसे [9]रहेगी

*"फूलकंडी" पृ० ७९ [10]प्रियतम, भँवर [11]संदेशा [12]किसी [13]स्त्री [14]मुर्झा गया [15]खुशदिल [16]रहते

सेरो[1] चौसरसी विछ्यूँ, चौकोण्यों चारि गाउ।
नैर सी कूल भली, पट्टि चौरास नाउँ।
नौर नौटयाल[2] रहंदा, खूब ज्यूंदीको सेरो।
नैणिकी कूल भली, जा गडयालू[3]को डेरो॥
किलकिलेश्वर छै तखी[4] मैति[5] मादेव मेरो।
"महन्तयोगीन्द्र" पूरी राखला ध्यान तेरो॥

—योगीन्द्र (फूलकंडी, पृष्ठ ७९-८०)

१०. बेटी बेची दुर्गति

कथा सीराकि या सूणि लेवा। पापि धनसिंह धिकार देवा।
बेटी बेचिक जैन[6] पाप करे। तैको करजा तोभि नि तरे॥
नौनि[7] वेच्यां कि रै वात सूणा[8]। ना करा पाप रुप्यों करुणा[9]।
धनसिंह कि छै इक नौनी। दान देणक सौ मरे क्योंनी॥
लूथि वूथि तैंका[10] दुई नौना। वांजा पड़ो तौंकी जगा क्योंना।
नौनी को नाउँ छ सीरा देवी। जैकि विपदा सूणौदु मैं भी॥
जैं घडी माझ स्या[11] पैदा होये। वोद[12] धनसिंह अव कर्जा धोये।
पालिसैंती नौ वर्स ह्वैग्यां। कुछ जगों का मँगदारा[13] गैग्यां॥[14]
वात मंगदारा करदो गैन। धनसिंहन हजार कैन।
वोद धनसिंह "हम जाति रौत। वडि जात खांदी रुप्या भौत॥
वेटि सीरा को हों चाहे मौत। चाहे दस पांच ह्वै जौन सौत।
वर चाहे बूढ़ो हो या कोढ़ी। पर रुप्योंने मिलौणि जोड़ी॥
जैका ना हो एक भी दांत। और ना होव क्वै जात-पांत"।
कर्ज धनसिंह को देण जैन। सीरा वेटि जो वेवोणि[15] तैन॥
कर्जा गाडदो[16] जाणी च रौत। वेटि का वाना[17] सो ह्वैगे भौत।
खूब ऊडौंद्रा सी[18] मालपूआ। सदा खेलदो जांदान[19] जूआ।

---

[1] सिचाईकी भूमि [2] नौर गाँवका नौटियाल
डयाल मच्छी [4] तहाँ [5] पीहर [6] जो [7] लड़की
नो [9] लालच [10] तिसके [11] वह (सा) [12] कहता
[13] मंगनीवाले [14] चले गये [15] विवाहनीय [16] निकाल दो [17] बहाना [18] वह
[19] जाते हैं

वोद धर्नसिह "हे कुल देवी। वेटि विकैक पूजाई त्वै वीं[1]।
जै कि देणि तैन ऊज-पैंच[2]। तैको भरोसो की नौट[3] छै" ॥
ग्यारह वर्स कि स्या सीरा ह्वैगे। थैली लीक[4] नन्दु बुढ्या ऐगे।
नन्दु सेठ छ वर्सों को साठ। दस मीलका द्वी दिन वाट ॥
वाल सफेद सव छन तैका। नौना नी होया तौं माभ्क कैंका[5]।
वोद नन्दु सेठ खुसी ह्वैके। "रौत नौनि छे देवा तुमू मैक।
नौना नी होया कैकाभि डेरा[6]। तान[7] रौत आयो पास तेरा ॥
तेरि वेटिका नौन्याल[8] होला। धन दौलत कू त्वैभि[9] देला ॥
मै छौं सारा मुल्कमा सेठ। देवा नौनिकु ना करा लेट।"
"मैन द्वी हजार रुप्या लेणी। कोल-छडाई[10] और त्वेन देणी।"
बोद नन्दु "मैं तय्यार छऊं। कोल-छड़ाई क्या देण तौंऊं" ॥
सीरा की माता वर्सोंकि तीस। वोदि "जंवाई छै देणि वीस[11]।
और नथुलि धागुलि[12] देया। तव सुख कीजो नींद सेया" ॥
नन्दु सेठको कलेऊ खाये। सीरा न जाणे कि नाना आये।
टीको समौण स्या आज ह्वैगे। व्याह को दिन भी होइ गैंगे।
व्याउक रैग्यन[13] दिन आठ। नन्दु थैलि दीक[14] लैगे वाट।
माघ का मैनाकी गते ग्यार। सीरा को व्याह जुडिगे यार।
देखा रुप्यों नहीं वोरा जात। भारी रौतु मां[15] मार दी हात।
डेरा आइक तैं नन्दु बोरो। "सवि बराति मेरि चला सोरो[16] ॥
सवि वौरा हि पैंटेन[17] पौणा। छूडा[18] सोनेरा नौनी का गौंणा[19].
कूडि[20] धर्नसिहकी लैले आग। सीरा छोरि को फोडचाले[21] भाग ॥
स्वारा चलीगे स्या वेटि सीरा। रौत धर्नसिह वणिगे मीरा।
सीरा वेचिंकतैं[22] राणि पाणी। धोउ करिकतै लाणि खाणी ॥
साट को वुढ्या सो नन्दु वोरो। देखे सीरान फोडदी खोरो।[23]
देख्या सीरान जव वुरा हाल। रौंदि रोंदि ह्वैगी आंखि लाल ॥

---

[1] तुझे भी [2] कर्जा [3] नोट [4] लेके [5] उनमेंसे
किसीका [6] घरपर [7] इसीलिए [8] लड़के [9] तुझे भी [10] गोद
छुड़ाई [11] एकसो बीस देना [12] हाथके कड़े [13] रह गया [14] देकर [15] रावतोंके
बीच [16] भाईबंद [17] तैयार [18] खालिस [19] गहना [20] मकान [21] फोड़ा [22] बेंच
कर [23] खोपड़ी

बोदि सौत "द्वि हजारि वांद[1]। धाण-धंदाकु[2] लगऊ कांद"।
दुइ कोदलि[3] सीराकु रोज। सौत दें दिन[4] खांणको भोज।
भूख प्याससे तैं छै मैना[5]। स्वारा ही पर बीतण लैना ॥
मौंडि-बाबुक[6] रैंबार सीरा[7]। रौत रौतिण पागल नीरा[8]।
"बाबा निर्वंश होयान तेरो। सारो खून खाये जैन मेरो ॥
मांजि[9] होयान मेरि तू कोढ़ी। बांजा पड्यान भायों कि जोड़ी।
जैन थैलि पर लाये डीठ। मैकु[10] फेरिले इकदम पीठ" ॥
सीरा विलाप करदी भारी। मेरो नी होये क्वै मैति-स्वारी[11]।
गंगा माता मा समाइ जांदू। काली वणीक मैत्यूंकु खांदू ॥
सीरा देवि पडि गैगे गाड। धनसिंह कुवाणि गैगै खाड।
लूथि-बूथि दूई कोढ़ि ह्वैन। तौंकि मां का आंखा फूटि गैन ॥
घर नी रये अब चूला-छार। बोद धनसिंह "क्या कदु[12] यार"।
ह्वैगे दिवाल्या सो बड़ो रौत। पाप तापो मा ह्वै तैंकि मौत ॥
बेटि बेंचला जो तौंकि बीक[13]। यनी ही दशा ह्वै जालि ठीक।
देला जो कोई कन्याको दान। तीनी लोगु मां सी पौला मान[14] ॥

—ठा०औतारसिंह नेगी ठा०बहादुरसिंह रावतकी "गढ़वालशिक्षाके" आधारपर
—(फलकंडी, पृष्ठ ७-९)

११. [15]प्युली

“सुण मेरा स्वामीजी सौण[16] आये। झुण-मुण वर्षा भी सांत ल्याये[17]।
सरसर डांड़ी कुयेड़ि[18] आये। चौदिश स्वामि अंधेरी छाये ॥
देखि कुयेडि ज्यु खुदि ऐंगे[19]। स्वामिकी यादन रोण लैगे ॥
कनी[20] लगी वर्षा रुण-झोण। भीतर-भैर छन[21] धूल-मोण[22] ॥
सरसु[23] उपाणा[24] क्यों देला सेण[25]। लागी जो लौलि[26] तय[27] बैठो रोण ॥
क्यारि-कुण्डौंमा भरिएगे पाणि। कब औला स्वामि मै कदु[28] गांणी[29] ॥

---

[1] स्त्री [2] कामधंदा [3] मंडुये की रोटी [4] देती [5] महीना
ा-पिताको [7] संदेश [8] बिल्कुल [9] माता [10] मेरे लिए
हर-संबंधी [12] करूँ [13] उसकी भी [14] पावेगा
म [16] सावन [17] साथ [18] कुहरे [19] उदास
या [20] कैसी [21] हैं [22] मच्छर [23] खटमल [24] पिस्सू [25] शयन [26] खुजली
[28] करूँ [29] प्रतीक्षा।

अव डेरा ऐंजावा[1] मेरा स्वामि। ये पापी मन नी सकदु थामी।
क्या मैसे कोई खता होये होली। आम[2] लोगौमां तुम लेला वोली ॥
कुजाती नारि नी छों मैं स्वामी। वदजवान नी सकु थामी ॥
कुजात्या रांडूको काम यो च[3]। मेरा अग्वाडि[4] दूसरो को च ॥
मालिक वणैक पूरो वैल। देखा रे मैक क्या वोन[5] कैल[6] ॥
भलो आदिम कोई आयो धोरा। मैं वोनदें[7] तु पागल छोरा ॥
अफुत[8] खैण्डि-वटिक[9] खाण। स्वामिक कौणि-झंगोरो[10] लाण ॥
लैक्वी[11] छाणो चौक मां ऐंगे। वेटि-वुवारि[12] मैक्यूंण लैगें[13] ॥
स्वामिन वोल्यो "नी देण गाली। तुरत लगौदी द्वार ताली ॥
मेरे माचद अव चली जांदो। लीक सिराणि[14] मै गला लांदो" ॥
उल्टी आफत लगीगे स्वामी। रोई छूटिगे नी सकद थामी ॥
छोटि जाति कि यनि[15] होंदिलोको,[16] खानदान्यों मां विगड़ी न कोको॥
पतीकी सेवा करीक राम। सीता सतीको अमर नाम ॥
—विशालमणि उपाध्याय (फलकंडी, पृष्ठ २२)

१२. नारीवर्णन

पथ ओ चलदी सुनसान वणी[17]।
दुःखड़ा मन का मन मांहि गणी ॥
मन थौ वोखि[18] ही उइं नोनि परैं[19]।
जुकडी मु[20] दिन्यूं थउ प्रेम घरैं ॥
लगदी वणु मा कनि[21] प्यारि थई[22]।
वणु आछरि हो जनि घूमि रई ॥
जवरी[23] वखमा[24] चुप-चाप थई।
वण-देवि जनी कि विराजदि थई ॥

---

[1] आ जाओ
[2] साधारण
[3] यह ही
[4] साम
[5] कहना
[6] किसीने
[7] कहने लगी
[8] अपने आप
[9] अच
[10] कंगुनी-सवाँ
[11] लेकर
[12] बेटीबहू
[13] गाली लग
[14] लेकर तकिया
[15] ऐसी
[16] अपवाद
[17] वनके
[18] वहाँ
[19] उसी लड़कीपर
[20] छातीमें
[21] कैसी
[22] थी
[23] जैस
[24] वहाँ।

मन मेरु हरी कनु[1] पापिण हे ।
जुकड़ी मुत्यरी कनु पाप रहे ॥
अफु गै तवरी[2] हंसदी हंसदी ।
करि गै मइकू यनि या दुखदी[3] ॥
चुप चाप खड़ी कनि थै वखमां ।
जनि मूर्ति स्वनेरि[4] धरीं तख-मां[5] ॥
वणु या जनि[6] ग्वैरनि गोपि कुई ।
खुश शांत वणी कृष्ण गैल थई ॥
घुमदी कुइ या सुखि भारि[7] यनी ।
करदी मृगणी वणु सैल[8] जनी ॥
मुखड़ी पिंगली कनि स्वाणि[9] थई ।
जनु सूर्जमुखी भलु फूल कुई ॥
पग हाथ कना प्रिय कोमल था ।
फुलवाड़ि फुल्यां यन[10] फूल नि था ॥
चलदी कनि थै रगड़ों[11] वणु मा ।
चिफली[12] सड़क्यों जनि की घरुमा ॥
कुरता हरि धारि ध्वती पिंगली ।
कि कनेर जना लगदा जंगली ।
चलदी यनि थै सँगता[13] हि भली ।
जनि राज हंसीण दिखेदि भली ॥
घर ओज[14] लगान्दि वलू[15] जव थै ।
बोलदी तुम्हारु मुलाजु[16] भि थै ॥
पथ याद रख्या न सदा यख[17] यो ।
चुभगे तव से मेरि छाति थयो ॥
थइ वाणि पियारि सि कोकिल की ।
हरदी सुध वुद्धि थई मनु की ॥

---

[1] कैसे [2] तब [3] दुख देकर [4] सुनहरी [5] वहाँ पर
[7] भारी [8] सैर [9] सुहावनी [10] ऐसा [11] रेडा
सलाऊ [13] सर्वत्र [14] तरफ [15] बैल [16] मुलाहिजा
रह ।

जवरे बोलदी यनि वाणि थई।
मन होस मेरा तवरे नि रई॥
तवसे मन मेरु कनू[1] हरले।
वश मा म्यरु प्राण कनू करले॥
जब तै रलु[2] प्राण मेरा तन मा।
त्यरि सूरत याद रली मनमा॥
अपणा मन-मन्दिर मूर्ति त्यरी।
सहि[3] प्रेम धरे मन प्यार करी॥
मन तेरु कनू यनु जाणि भि नीं[4]॥
अब मर्जी तेरि करि चाहि जनी॥
अधमे कुछ भी करली अब तू।
सब श्राप भि मेरू भोगलि तू॥
कनु कैक[5] अऊं अब मै त्वइ मा।
बसिगे मुखड़ी तनमा मनमा॥
यनु सोचद सोचद आंसु झड़ी।
निकले तव आँखुन भारि बड़ी॥
अँसु-धार यनी मुखमा बगदी[6]।
करुणा विरही जनि[7] द्वोइ नदी॥
—टीकाराम "कुंज" ("गढ़-गुंजार-वाटिका", पृ० २९)

---

[1] कैसे [2] रहेगा [3] सहित [4] जाना भी नहीं [5] कैसे करके [6] बहती [7] जैसी।

नाम-सूची

अकबर–१३१, १३६, १५१, १९६, ४७६
अकरी–२४३, ४९०
अक्टरलोनी–२२५, २२८, २३२, २३३, २३६
अगरगार–९८ (विन्ध्य)
अगस्तपाल–१२१
अगस्तमुनि–६१, १५५, ३०५, ३०७, ३१९, ३३०, ३७६, ३९६, ४१६
अगस्तेश्वर–९५
अगारी–२७६
अगूडा चट्टी–३७१
अग्निकुंड–९५
अग्निकुली–१२४
अग्नितीर्थ–९५, ९९ (गौरीकुंड)
अंगद सरदार–२११
अंग्रेज–३, १२९, १५३, २५८, २५९
अघोरलिंग–३२८ (रावल)
अचाम–२०७, (देखो अछाम् भी)
अजन्ता–४२२
अजबपुर–१२८
अजबराम–१७१, १७३ (नेगी), १७४-७६, १८२, २१० (खवास)
अजमीर–११७, २८२, ३५२
अजमेर–२३९
अजयपाल–४०, १२०, १२२-२४, १२७-३०, १३८, १३९, ३३७, ३५०
अजयसिंह–१८९
अंजनी-पुत्र–४९४
अ-जिग्-मल–११३
अजरलिंग–३२९ (रावल)
अजिल्ल–१८७
अजीरगढ़–१८३, १९०
अजेयपाल–१२२
अटकबनारस–१०४
अटका–३४६
अटकिन्सन्–५५, ५७, ८०, १०१, १०२, ११२
अटपहरिया–२७७
अटल्ल–१८७
अठागुली–९७ (पट्टी)
अठूर–२४२
अढोर–२४४
अणथ्वाल–२६६
अणेय–२६६
अंडारिगणिक–८६, ९०
अदयपाल–१२०
अदरक–२९३
अदवानी–३१२-१४, ३१७-१९ (डा० वं०), ३२६, ३९६
अधिधज–७२, ७३, ८१, ८२ (कत्यूरी)
अनन्तनारायण–३४४ (स्वामी)
अनंतपाल–१२१
अनपाल–१२२
अनमल–११३
अनिरुद्ध–१८७
अनिरुद्धपाल–१२१
अनिलादित्य–११५ (राउत्तराज), ११६
अनीमठ–३३९ (वृद्ध वदरी), ३४९
अनूप–१२० (राजा)
अनेकमल्ल–११४
अन्तग–९०
अन्तराग–५६, ९०
अन्तरागविषय–८५
अन्यारधार–३१२
अस्तोर–५६

अपूर्वदेवपाल—१२१
अफगान—१५१-५३, २२९, २३०
अफगानिस्तान—६५
अफरीका—१८
अब्दाली—१५४
अब्दुर्रहमान—१०२
अब्दुल्ला—१०२, १५२ (खाँ)
अब्बासी—१०३ (खलीफा)
अभयपाल—१०८, ११० (कत्यूरी), १२०, १२२
अभयराणा—१८७
अभयसिंह—१८८
अभिगतपाल—१२०
अभिपाल—१२१
अभिमानसिंह (वस्नेत)—२०२
अभिराम—३२९
अमरसिंह थापा—१८०, १८१, २०३-११, २१५, २१९, २२१ (काजी), २२४-२६, २३२-३४, २३८, ३३१
अमरलिंग—३२९ (रावल)
अमलेखगंज—२३६
अमृतसर—२९९
अमृतसरकी संधि—२०६
अमेरिका—२५९, ४६३
अमेरिकन—२५८
अमेरिकन मिशन—२५८, २८३, ३२५, ३५०
अमोथा—३१९
अमोला—१७
अम्दो (तंगुत्)—२६१
अम्बलिपालका—८१, ९०
अम्बिकादत्त—४९०
अय्यर—४४३
अयोध्या—१२, ४०९
अरणी चट्टी—३७३
अरब—६८, १०३-५
अरहमनी—१३
अरु (पहाड़ी)—१९७
अरुण नदी—२०१
अर्की—२०७
अर्घा—१८५, १८६
अर्जन—४९४
अर्जुन—६९, ४५२
अर्जुनशाही—१०९ (कत्यूरी)
अर्जुन्या—२६६
अर्ज्याल—१८९, १९१
अलकनन्दा—४, ६-८, ११ (उद्गम), १२-१४, २०, २४, ४०, ५०-५२, ९१, ९७, १०६, १११, ११८, १३२, १३६, १४९, १८०, १८१, २३६, २४९, २९१, ३२०, ३०३, ३०८, ३१४-१६, ३२६, ३३७, ३३९, ३४१, ३५०, ४१३, ४२१, ४५७, ४६०, ४६३, ४६५, ४६६, ४७०, ४७३, ४७५, ४७७
अलकनन्दा-पुल—४००, ४०१
अलक्षणपाल—१२१
अलखणिया—२६६
अलीवर्दी खां—१५३
अलताई—५८
अल्प-तगिन—१०३
अल्बेरूनी—१०२ (देखो बेरूनी भी)
अल्मोड़ा—३, ४, २७, २८, ६६, ९६, ९९, १०१, १०६, १८०, २०३, २१२, ३१५, ३३९, ३५१, ३५३, ३५५-५७, ३५९, ३६१, ३६५, ३८६-८८, ३९१, ३९२, ३९५, ३९९, ४००, ४०१, ४०३, ४०४
अवध—१५२, २७०
अवस्थी—३३१
अवन्तिका—४२७
अविगतपाल—१२१
अव्यक्तपाल—१२१
अशोक—६४, १०७ (कत्यूरी)

शोकचल्ल–४१, ६१, ११०-१२, ११६, ३२ (अनेकमल्ल)
शोकमल्ल–(देखो अशोकचल्ल)
शी–२८०
ष्टमूर्तिलिग–३२८
ष्टवलि (जेठ)–३०५
सनदेव–१०८ (कत्यूरी)
सन्तिदेव–१०८ (कत्यूरी)
सलदेव–१०७ (कत्यूरी)
सवाल–२७१, २७६ (अस्वाल भी)
सवालस्यूँ–५०, २३९
साप्रतापपाल–१२२
सी–३४७
सुर–६०
सुरगिरि–९५
सेरा–२०५
स्कोट–४२, ९८ (में मल्लिकार्जुन), ०१, १०६, १०७, ०९, ११०, १८४, ८६
ोर–५५
मदशाह–१२५ (सुल्तान)
मदशाह अब्दाली–१५३
मदाबाद–१२५
ल्याबाई–३४०
मानसिंह–१९५

अहिरामकुंवर–२३१
अहीर–६५
आकाशगंगा–९५, ४५१
आछाम–३०३
आजमगढ़–४१९
आत्माराम–१३३
आदबदरी–६१, ३१७ (डा० वं०), ३१८, ३१९, ३२६, ३३४, ३९३, ४०७
आदिगौड़–२६९, २७०
आदित्य–९१
आनंद–१२० (राजा)
आनंदपाल–१२१, १२२
आन्ध्र–६६, ६७, ७५, ८०, ८५, ९४, १०१, १०३
आभीर–६६
आम्रवन–५७
आरगढ–२४३
आर्की–२३३
आर्य–५८, ६४
आर्यसमाज–२८६, ४४५
आलमसिंह–१४८
आशलपाल–१२२
आसफजाह–१५१
आसफुद्दौला १५८
आसाम–२६२, २७९, २९६
आसुरी रीति–२८७
आस्ट्रेलियन–१८, २४, ३०९

इगासर–३२
इंगलैंड–१९, २४८, २५९, २९७, ४६३
इच्छट–७३, ७४, ८० (० देव)
इच्छावल–८६, ९१
इज्जर–९१
इडवाल–२७१
इडवालस्यूँ–११८, २३९, २४३
इतालियन–४५९
इतिनराज–१०८ (कत्यूरी)
इदवालस्यूँ–५०
इंदरसेन–१२० (राजा)
इन्दोचीन–१८४, ४२९
इन्दोनेसिया–४२९
इन्दोर–२४८
इन्द्र–२१९
इन्द्रजीतसिंह–१९५
इन्द्रपाल–२६८
इन्द्रयात्रा–२००
इन्द्रलक्ष्मी–२०७
इन्द्रवक–९१, ९२
इन्द्रायुध–७०
इरा–३१९
इरियाकोट–२३, ३५२
इलाहाबाद–३२३
इष्टगण–७२ (कत्यूरी राजा), ७३, ७५, ७७, ८२, ८३
इस्तखी–१०२

इस्मा–१८५, १८६, २०३, २०७
इहंग–८६, ९१
इडिया–११७
इडियाकोट–२३९
ईड–२७१
ईरान–१५३, १८७
ईरानी–१५१-५३
ईलराज–१०८ (कत्यूरी)
ईशान वर्मा–६७
ईशाल–७३, ९१
ईश्वरीदत्त–८७
ईश्वरीदेव–११२
ईश्वरीसेन–२०६
ईसाई–२७८, २८२
ईसाईधर्म–३२५
उइगुर–१७०
उखलेट–३१२, ३१४
उगंक–८६, ९१
उज्जयिनी–४२९
उज्जैन–१८७, १८८, २६७-६९, २७२, २७४
उज्वल–२६९
उज्वलपुर–४०७
उंटाधुरा–३८७
उडनी–३८९
उडीसा–४६२
उत्तरकाशी–९९ (थाना), १८१, २४२ (=वाड़ाहाट). २५१, ३१३, ३१९, ३२५, ३२६, ३५७, ३७०, ३७४, ३७५, ३७९, ४०२
उत्तरपंचाल–३३५ (=रुहेलखंड)
उत्तर-प्रदेश–३, ४८, ३०२. ४०९ (सरकार), ४४९, ४६२
उत्तराखंड–४०९, ४१३, ४४४
उत्तराखंड-विद्यापीठ–३२५, ४१९, ४२९, ४४३
उदकासेला–१०८ (कत्यूरी)
उदकोट–२४२
उदयपुर–२९, ११७, २०१ (गढ़ी), २३९ (तल्ला, पल्ला, वल्ला), २४२, ३५२
उदयसिंह–१३९
उदारलिंग–३२७ (रावल)
उदासी–३४६ (वदरी)
उदोतचंद–१४३
उद्धव चौरी–३४१ (वदरी)
उद्धवजी–३४१ (वदरी)
उद्धवसिंह (दीवान)–१७६
उद्योतचंद–१३१, १४७
उपल्लो कोट–१९०
उपाध्याय (विशालमणि)–४२१, ४३६-४३; ४९०, ५००
उपु–११७
उपेन्द्रशाह (१७४९-५०)–१२३, १२९. १५०, १५१, १५५
उप्राण चौरा–४९१
उफल्डा–१६७, १७४
उमट्टा चट्टी–३७२
उमत्तादेवी–३०६
उमरासू चट्टी–३७३
उमेदसिंह मियाँ–१७३, १७९, १८०, २०५
उष्णोदक–८६
उरग–५१
उरगम्–६१, ९५, ९६, २३९, ४६३
उरगा–२०७
उल्का–११७
उल्कागढ़–३२६
उस्मान–१०२ (खलीफा
ऊखीमठ–१६, १९, २८ ९८, १५५, २०४ २४५, (थाना), ३१२ १४, ३१७, ३१९ (डा० बं०), ३२५-२७, ३३०, ३५०, ३७१, ३७८, ४२९, ४४२. ४४४, ४४७
ऊन्याल–२६६, २७२, ४९० (झड़ू)
ऋषभदेव–३४०
ऋषिकेश–६, ९५, २५०

२५१, ३११ ३१३, ३१८, ३१९, ३२५, ३२६, ३३३, ३३७, ३५२, ३६८, ३६९, ३७४-९०, ३७४, ३७५, ४०५, ४०८-१०, ४२६, ४८७, ४८८ (=कुब्ज-काम्र)
ऋषिगंगा–३४१ (वदरी)
एकपद–५८
एकेश्वर–३१९
गासर–३०४
ंग्लो-अमेरिकन–२४९
रासु–११७
वरेस्ट–१९३
म्हर्स्ट–२९६
ऐमक–१०४
यार–२३
ल्ग्-दे (०ल्दे)–११३
जरा चट्टी–३६९
ड (वाढी)–२७७
ड़–५४, ८०, ८५, १४
द्-दे-(०ल्दे)–११३
द्-सुङ्स्–६९, ७०, ३३
प् (नदी)–३७०
मा–२४४
रे–२४४
जी (वाजगी)–२७७
पोला–३०४
औबर–२२७
औरंगजेब–१३३, १४४, १४५, १४७, १४९, १५०, १५२, १५३
कक्कठयाला–८६
कंक–६६
कंगुनी–२९३
कंचवा–२८४
कंचुकी–२८४
क-जी (अमात्य)–१९४
कटघर–२०५
कटलेहर–२०५, २०६
कटनसिल–९१
कटारमल–६६, ९९ (वरादित्य), १०१, १०८ (कत्यूरी), १५५, ३४२
कटुस्थिक–८७, ९१
कटूलस्यूँ–११८, २३९
कटेत–२७२
कटेहर–१५४
कंटोच–२१९, २७१, २७२
कटोर–५७, १०१ (काबुली वंश, कत्यूर), १०२-४, १०४ (प्रदेश, शाह)
कटोरमान–१०२, १०३
कट्टरशिल्ल–८६
कठोत–१४८
कंठा (चट्टी)–४४९
कडवाल (रावल)–२७१
कड़ाकोट–२३९, २४२
कणमाली–२६५
कंडवाल–२६६
कंडवालस्यूँ–२३९
कंडा–३०५, ३१८ (डा० वं०)
कंडायिक–९१
कंडार–११७
कंडारगढ़–६३, ३२६
कंडारस्यूँ–३६
कंडारीगढ़–२७२
कंडालस्यूँ–२३९
कंडी–२७२ (गुसाईं), ३२५
कतलस्यूँ–३५०
कतील (भूम) प्रथा–३९
कत्यूर–१०१ (कार्त्तिकेयपुर), १०४ (कार्त्तिकपुर, गोमती-उपत्यका, वैजनाथ), १३५, १५४, २७१
कत्यूरी–४१, ५२, ५६, ५७, ६१, ६७, ७१-११०, १०० (उद्गम), ११६, १२४ (डोटी), १४९, १८६, २५६, २७८, ३२६, ३३५, ३३८ (राजा), ४१५ (काल), ४२०, ४२९, ४३२, ४३९, ४४१,

४४६, ४५६, ४६१, ४६४-६६, ४७७, ४७९
कथासिल–९१
कथुरा–२०५
कनक–१२५
कनकपाल–११८, १२०, १२४-२७, २६८, ३३४
कनकाई–२०२
कनफटे–२७९
कनम्–५८, २७९, ३८९
कनारी–२५५
कनारी छीना–३८६
कनिंघम–६८
कनियाँ–२०५
कनिष्क–६५, ६६, १०२, १२५
कनेत–२७१
कनौज (कन्नौज)–७१, ७३, १११, २६९, २७०, ४६५
कनौजिया–२६६-६९, २७०
कनौर (किन्नर)–४१, ५८, १८४, १८७ (वंश), २०५, २५२, २६२, २६३, २८७, ३०९, ३८५
कनौल–३९१, ३९५, ४०१
कन्-जुर–२६१
कंदवालस्यूँ–५०
कन्सू–३०
कपकोट–३८८
कपडखान–३८८
कपरोली–१७७
कपिलंलिंग–३२९ (रावल)
कपिशा–१०२, १०४
कपूचिन्–१९९, २०० (कैथलिक), २०२
कफडा–३९३
कफोलस्यूँ–५०, २४०
कफोला–२७२ (विस्ट, रावत), २७६ (विस्ट)
कबिरी–२४०
कबिलास–२०२
कबिलासपुर–१९८
कबीर–५६, ४५४
कमरुद्दीन–१५१
कमला–२०१ (नदी)
कमलेश्वर–३५० (श्रीनगर)
कमीण–२७१
कमेडा चट्टी–३७३
कमेत–११, १३
कम्पनी–१९९, २०४ (साहेब), २१७ (साहेब), २२६, २२७
कम्पिला–२७२
कम्बोज–५४, ४२९
कम्युनिस्ट–२५७, २५९ (कमूनिस्त), २६१, २७९, ४५२, ४६६, ४७०, ४७९, ४८७
कयाडा–२७२ (रावत)
करण सिल–९१
करनाली–१०० (शारदा, सरयू), १८३, १८६, १९३, २०२
करन्दू–२४० (पल्ला, वल्ला)
करम–१२० (राजा)
कराकोरम–४२
करेन–१८४
करौंदा–(कीचका डंडा) ८
कर्कट थल–९१
कर्कण्ठक–८७
कर्णजित–२६७
कर्णदेव–२६८
कर्णपाल–१२०
कर्णप्रयाग–४, १५, २०, २८, ६१, ६३, ९५, १४९, २४५ (थाना), ३०३, ३०४, ३११, ३१३, ३१८ (डा० वं०), ३१९, ३२५, ३२६, ३३३ ३७२, ३७७, ३८०, ३८२, ३९४, ३९६, ४०७, ४८६, ४८७,
कर्णसेन–२०१, २०२

कर्नाटक—२६६, २६७, २७०, ३२६, ४१९, ४४५ (कर्णाटक)
करमपरकास—२२२, २०५ (कर्मप्रकाश)
कर्मप्रकाश—२०५
कलकत्ता—१९, २०१, २३४, २५६, २९६, ४२८
"कलकत्ता-रिव्यू"—३१६
कलङ्गा—२२९, २९५
कलन-मल—११३
कलमसिंह—१४८
कलवान—३०९
कलमटिया—९५ (शिखर)
कलार—१०३ (मंत्री)
कलाल—२७७
कलिंग—८०, ८३, ८५, ९४
कलिम्पोङ्—२५८, ३५३
कलिया—२३
कलूडा—२७२
कलोनगढ़ी—(लैंसडौन)—३५०
कल्पराज—३२९
कल्पस्थल—९५
कल्पेश्वर—६१, ३२७, ३३०
कल्पेश्वर लिंग—९५ (रावल)
कल्याणचंद—१५५
कल्याणपाल—१२२
कल्याणपुर—१२८
कल्याण लिंग—३२८ (रावल)
कल्याणशाह—१२२, १२९
कल्याणी चट्टी—३६८, ३६९
कवि—२६६
कश्कर—५६
कश्-गर—९५
कश्तबार—५५
कश्मीर—३, ४०, ५५, ६७, १०२, १०४, १०५, ११७, २२३, २२४, ४१४, ४७६
कषाय—९५
कसना—३१९
कंसखेत—३२५
कंसमर्दनी—२८०
कसेरा—२७७
कसे—३८३
कस्की—२०७, २३१
कस्पियन—६७
कस्पेरोइ—५५
कहलूर—२०५, २०६
कहरसिंह बस्नेत—२०१
कहार—२७७
कहुडकोट—११५
काकस्थल—५६
काकस्थली—८४
काकाचंल—५६
काकुवा-मोर—१३२
कांगड़ा—५५, १४८, २०३, २०५-७, २०९, २१५-२१, २२३, २२४, २२६, २७२, २७४, २७६
कांगुन—२९२
कांग्रेस—२४९, ४८०
कांचनगंगा—४७२
काजी—२०१
कांची—४२७, ४२९
काटल—४९०
काटील-२११
काठगोदाम—३९१-९५, ४०३
काठमांडव—(देखो कान्तिपुर भी)—१९४, १९५, १९७, १९८, २००, २०१, २०८, २१०, २२८
काडोलिया—३३९
काण्डी—२७२, ३७३ (चट्टी)
कात्यायनी—९५
कानदेव—१०० (हंस-तीर्थ)
कानपुर—३१, २९९, ३०१, ४४८
कानादेव (पहाड़)—९५
कानूनगो—२४५

कान्तवती—२०४, ४४७ (रानी)
कान्ति (कादिल) पाल—१२१
कान्तिपुर—११४ (काठमांडव), २०९, २२०
कान्तिमती—१८७
कान्दली—१५०
कान्यकुब्ज—६७, ७०, ४८९
कान्हपाल—१२१
काफिर—१०४
कावुली—६९, १०१-१०४, १५३
कावुलशाही—१०२
काम जय—१०७ (कत्यूरा)
कामदेवपाल—१२१
काम-लिंग—३२९ (रावल)
कामह्रद—९८
कामेत (२५,४४३ फुट)—६, १०
काम्बोजक—५४
कारणलिंग—३२८ (रावल)
कार्त्तिकपुर—१०१ (कार्त्तिकेयपुर)
कार्त्तिकेय—४१५ (मूर्त्ति)
कार्तिकेयपुर—७२, ७३, ७५-७७, ८३, ९१, १०१ (=वैजनाथ), १०२ (=जोशीमठ), ११४ (कीर्त्तिपुर, कर्त्तृपुर)
कार्नवाल—१९
काल नंगवारा—९५
काल वजवार—२०५
कालभैरव—३४७ (उ० काशी)
कालसी—१२, २७, ६३, ६४, ९९, १५९, २६६
काला—२६६, २७२
कालागढ़—३१८ (डा० वं०)
काला जावर—३८३
कालापानी—३८५
कालिका—४४०
कालिदास—५२
काली—३, १२, १५, ४०, ५१, ५२, ९५, १४७, १७९, १८३, १८४, १८६, २०५, २३५, २८०, ४९९ (नदी)
कालीकमलीवाला—४०९, ४२३, ४२७, ४५८, ४८६
काली-करनाली—१८७
कालीकुमाऊँ—११०, २६६, २७२
कालीक्षेत्र—९५
कालीगंगा—४४२
काली गंडकी—१९३
कालीघाट—३९१, ३९५, ४०१
कालीयार—३३८
कालीपीठ—४४०
काली फाट—२३, २४० (तल्ला, मल्ली), ३२६, ३३४, ३३८ (तल्ला, मल्ला)
कालीमठ—६१, २८०, ३२७, ३३०, ३९३, ४२२, ४३५-४२, ४८२
काली-शिला—६१, ४४०
कालीह्रद—९८ (पंच सरोवर)
कालू पांडे—१९६, १९८
कालो डांडा—३५०
काल्टा चट्टी—३७३
काशगर—४२, ५३ (खसगिरि), १०४
काशी—१९५, २०१, २२३, ३४७ (उत्तर सौम्य-वाडाहाट), ४१९, ४२७, ४२९, ४४३
काशीनाथ (पंडा)—४१९, ४२१, ४२४, ४२७
काशीनाथ-भवन—४२८
काशीपुर—२८, ३२३
काशीराम—१३३
काश्मीर—५६ (देखो कश्मीर)
काश्यप—३३१
कांसवत—३२७
कासिम खाँ—१४४

कास्की–१८५, १८६, १८९, १९६
कास्पियन–१०२ (देखो कस्पियन भी)
केदार–६७
किनलक (कप्तान)–१९९, २२५
किन्नर–४२, ४८, ५०, ५२, ५८, १३८, २५२
किमाडी (किमगाडा)–२४०
किमोटा–२६६
किमोटी–२६६
किमोली–३१२
कियारी–२०५
किरात–४२, ५०, ५१ (-मंडल), ५२, ५४, ५५, ५८, ५९, ६६, ७५, ८०, ८३, ८५, ४, १८४ (देश, वंश), २०१, १८७, २५२, २५४
रात-पुत्र–७५, ८२
रासाल–३१२
र्कपेट्रिक–१८५
र्तिसिंह–४९१
लकेश्वर–४९७
ला (रावत)–२७२
ानसिंह–२७९
ना–१०८ (कत्यूरी)
र्तिनगर–२४२, २४७, २५०, २५१, ३११, ३१३, ३१९, ३२६, ३३६, ३३७, ३७६, ३७७, ३८०, ३८१, ४०५, ४०८, ४११
कीर्त्तिपाल–१२१
कीर्त्तिपुर–११४ (कीर्त्ति-केयपुर), १९८, १९९
कीर्तिमहोद्दामशाह–१९५
कीर्तिशाह (१८८६-१९१३)–१२३, १३०, २४७
कीलूचोर–३१८ (डा० वं०)
कुआरीडांडा–३९१, ४०१
कुइली–११७ (गढ़)
कुकरेती–२६६
कुकुरटा–२६६
कुङ्-री-बिङ्-री–३८७
कुङ्-री-बुग-री–१४
कुजरी वाल–३१९
कुजेगी–११७ (गढ़)
"कुंज" टीकाराम–४९१, ५०२
कुंजणी–११९, २४३ (पट्टी)
कुंजापुरी–३३०
कुडाल्या–३३१
कुडियाल–२६६
कुडी–२६६
कुणिंद–६३
कुण्ड (चट्टी)–३७३ (देव प्रयाग), ३७६, ४१७, (गुप्त-काशी), ४१८
कुतुब–२३
कुत्ती–१९७, २००
कुदरीगढ़–९९
कुनई खाल–३१९
कुनार–१०१ (उपत्यका)
कुनिंद (=कुनैत)–६३
कुनेत–५३, ५५
कुन्-लिङ–१०, १६ (शिखर)
कुबेर-चौक–२२
कुबेर भंडार–४७० (शिखर)
कुब्जकाम्रक–३२६ (ऋषिकेश)
कुमाऊँ (कूर्माचल)–३, ५, ९, २५, ४२, ५८, ६५, १०२, १०९, ११९, १२४, १२६, १२९, १३०, १३५, १४२, १४४, १४७, १४९, १५४, १५६, १५९, १६०, १६२-६४, १७२, १७८, १७९, १८१, १८७, १८९, २१०, २२६, २३३, २४५, २६२, २६७, २६८, २७०, २७३-७६, २८३, २९६,

३१८, ३४६, ४२०, ४३३, ४७६ (देखो कूर्माचल भी)
कुमाऊँ (काली)–९६
कुमरिया–४०६
कुमार–७४, १०७, ३९४, ४९१
कुमारधार–४९१
कुम्हार–२७७
कुम्हालटी चट्टी–३७०
कुरमणी–२७२
कुरु–४२, ६०, १५२, २७४
कुरु-पंचाल–४, ४२
कुरुवंशी–२७१
कुलसरी–३०५
कुलसानी–१७
कुलिन्द–५१, ५३, ५५
कुलिन्द्रिन–५५
कुल्लू–५३, ५५, २०५
कुँवर–२२१, २७२
कुषाण–६२, ६५, ६७, १०१, १०४, १०५, ४४५
कुष्टरोग–३२४
कुसारडांडा–३९५
कुहुरियाताल–९९, १००
कूच्यार–३१५
कूर्म–२७२
कूर्मधार–३४१ (वदरी०)
कूर्मशिला–९५
कूर्माचल–३ (=कुमाऊँ), ४०, ५२, ९५, १४३, १५६, १५७, १५९, १६१, १६६, १७२, १७४, १७८, २०४, २१७
कूल–१५
कृतज्ञलिंग–३२९ (रावल)
कृपाराम डोभाल–१६२, १६३, १६४-६७, १६९, १७०, १७२
कृष्ण–१८८, १९३, ३४५ (रावल)
कृष्णदेव–३४४ (स्वामी)
कृष्णन्–३४६ (रावल)
कृष्णानन्द–२६९, ३४४ (स्वामी)
केतुमान्–९६
केदार–३४९ (बूढ़ा)
केदारखंड–४१, ७१, ९०, १०५, १२९, ४३५, ४४५, ४४७, ४६४
केदारगंगा–१२
केदारदत्त–४६१ (दूकानदार)
केदारधार–३४७
केदारनाथ–३, ६, ७ (शिखर-समूह), ११ (तीर्थ), १२, १७, ३६, ४०, ५२, ६१, ९९, १००, १११, १५५, २०४, २५०, २७१, २८ (शिव), २८१, ३०१, ३०३, ३११, ३१८, ३१७, ३१९, ३२३, ३२६, ३२७, ३३०, ३५०, ३५२, ३५७-६७, ३७१, ३७६-७८, ३९६, ४०८, ४१३, ४१६, ४१९, ४२३-३६ (पुरी), ४४९, ४५६, ४८९, ४९०
केदारमण्डल–४१, ११६ (खसमंडल)
केदार-लिंग–३३० (रावल)
केदारसिंह–१६७, १७५
केमर–२४३
केमेरा–३१९
केरल–५४
केरलगि–९६
कुलानी–३१६, ४०२
केली–२३०
केशव–३४४ (स्वामी)
केशव बोहरा–१८९, १९०
केसवारा–२२
केहरिनारायण शाह–२
केहरसिंह–१३९
कैकई–१५९

कैखी–१८५
कैखे–१८५
कैत्युरा–२७२, २७५, २७६, २८२
कैयोला–२६६
कैयोली–२६६
कैनूर–१७२, ३१२, ३१५
कैन्यूर–२७२, ३१६-१८, ३३१, ३५१
कैमूर–३१९
कैल गंगा–७, १५, ९५
कैलखोरा–२६६
कैलाखुरी–२७६
कैलास (दर्-छेन्)–९७, ३७८, ३८३-९०, ४०५
कोकण्डे–३०५
कोकस डांडा–९७ (नीलगिरि)
कोट–३१९
कोटा–१०० (दून)
कोटगाँव–२०
कोटताला–२६६
कोटद्वारा–५, २६, ३१, ६३, १४४, २४५ (थाना), २५०, २५१, २८२, २९५, ३०३, ३११, ३१४, ३१८ (डा० वं०), ३१९, ३२५, ३२६, ३३१, ३३३, ३३७, ३३९, ३५०, ३९६-९९ (=कोटद्वार)
कोटरी दून–२९
कोटली–३०
कोटवाल (शुक्ल)–३३१
कोटा–१४
कोटादूण–५
कोटियाल–२६६
कोटी–२४३, २७१, २८२
कोटीगाँव–२६६
कोटीगुरु–२०५
कोटी फेंगुल–२४३
कोटूली–३९२
कोटेश्वर–३०५
कोटचाल–२६६
कोट्वाल–२६६
कोठाभेल–३१८ (डा० वं०)
कोठार–२६६
कोठारी–२६६
कोठियाल–३४६
कोठी–२०५
कोडिया–३५२
कोल–६६
कोसा–१३
कोहलिया–३११
कोदा–२९२, २९३
कोनदेव–११५
कोन्ती–४९३ (कुन्ती)
कोपङ्–३७९, ३८४
कोरचूना–३१९
कोरिया–२९६, ४५१
कोरियाल (शुक्ल)–३३१
कोलसारी–६१
कोलागढ़–२४०
कोलाई–२७७
कोली–२७७
कोल्टा–२७७
कोल्या–२७२
कोल्ली–११७ (–गढ़) २७२
कोशो–२३५
कोसी–९६ (नदी), १०४, १८४, २३५
कौट्याल–२६६
कौडिया–२४० (पल्ला, वल्ला)
कौडियाला–४०४
कौणी–५०० (=कंगुनी)
कौशिकी–४०, ९६
कौसल्या—१४३
कौसानी—११०, ३९१, ३९२
कौस्वाल—२६६
क्यूँठल—१४८ (गढ़), २०५, २०६
क्रशिस्-स्दे—७४ (देखो ट-शी-दे भी)
क्रसिध्यि—१०८ (कत्यूरी)
क्राचल्लदेव–६१, ११४-१६, १८३

क्रौंचछिद्र–२८९
क्रौंचद्वार–६
क्वैली–२४३
क्षत्रियाणी (खत्री)–५५
क्षीर गंगा–९६
क्षीरानावा–९६
क्षेमपाल–१२०
खंका–३१९
खखेंसिया–३८४
ख-छे (खश)–५६
खजीरी–२६८
खटली–१४९, ३५२
खडक–३५
खड़काड़ी–२७२
खडखोला–२७२
खड़बोली–२७२
खड़ा–३१९
खंडका–१८९, १९०
खंडूडा–२६६, २७१
खंडूड़ी–१६५, १८०, २६६, २६९
खड्गसिंह–४१३, ४८७
खंडचूरी–२६६
खणोदुपरिउल्लिका–८४
खतली-श्रेणी–८
खती–२७१
खत्ती–२७२, २७५
खंदाल–१९१
खंदूडा–१३७
खदेड–३३८
खनरधार–३९३
खनसर–२४०
खनोल्टी चट्टी–३७२, ३८५
खमगढ़–९९
खमलेकगढ़ी–८
खमिल-श्रेणी–७ (चोटी १३, ३५६ फुट)
खरकटा–३०९
खरचाखंड–११ (शिखर)
खरगसिंह–१२० (राजा)
खरना–२०, २२
खरवारा–१५०
खरसान–३५३
खरसाली चट्टी–३३१, ३६९, ३७०
खरायत–९८ (पट्टी)
खरी–१९२
खरीफ–२९२
खरोही–२३
खर्पर–७२, ७३
खर्परदेव–८१ (कत्यूरी राजा), १०८
खलंगा–२२९, २३० (=कलंगा), २३२, २३६
खलीलुल्ला–१४३, १४४
खवास–१६५
खश–४२, ५२-५५, ५८, ५९, ६४-६६, ९४, १८४, २७१ (=खश, खष, खसिया)
खष–९४ (=खश)
खस–५८ (खश), ६६, १८४, २७१
खस-कुरा–१८४
खस-ब्राह्मण–२७१
खस-भाषा–२६५
खस-मंडल–५१, ११६ ११७ (केदार-मंडल, ०खंड)
खसिया–५५, ५७, १०२, ११९, १४२, १५६, १५७, २८५, २८७
खसिया-बामन–१४२
खांची–१८५, १८६
खाटल–२४३
खाटली (खाल्टी)–२४०
खाट स्यूं–५०
खाड–११९ (गढ)
खाडी–११९
खातस्यूँ–२४०
खाती–२७२
खान–१६५, १८७
खान्छा–१८६-८८
खार–३०४ (खारी)
खालसा–२४६ (=सरकारी)
खासण–१५
खि-नु-फुग्–३८९, ३९०
खिरसू–८, ३१४, ३१५, ३२५
खिलुंग–१८८

कुरी–३००
टीनेगी–४९१
ड़बुड़ा–१५०, १८२, २०८
दस्योनखेत–३०५
रासान–१०३, २२४
लरा–३९१, ३९५, ४०१
श–२३
शबख्तिया–१०४
शीराम–३०२
खरी–२२२
टी–२७२
डिया–३०९
नीगाड़–३१४
चर तीर्थ–९६
डा–३१९
तसारी–१६३
ती–३९३, ४०५
ला–३८६, ३८७
कार–२८७
ना–३८८
याम–१३
ला–३११, ३९१, ३९२
लिग–३०५
–५६
करा चट्टी–३७३
जरनाथ–९६ (तिब्बत)
टाखोटनक–९१
तन–४२

खोरखोट्टक–८६
खोर्-दे (०ल्दे)–११३
खोरवा-चन्–६९, ७३ (ऽखोर-व-ब्चन्)
खोर-स्दे–७४ (ऽखोर०)
खोलिया–२८१
खोलों–१९२
खोह–१५, २९, ३१४ (नदी)
ख्मेर–१८४
ख्यात-लिंग–३२९ (रावल)
ख्युङ्-लुङ्–३८४
ख्री-स्रोङ्-ल्दे-ब्चन्–(=ठा-स्रोङ-दे-चन्) ६९
गगली–२२
गंगदेव–२६७
गंगनाणी चट्टी–१७, ३३१, ३७०, ३७४, ३७९, ४७५, ४०२ (गंगोत्री)
गंगभद्र–७७, ८०
गंगरक–८६
गगवाड़स्यूँ–२०, ५० (गंगवार०), २४०
गंगवाड़ी–२७१, २७२
गंगवारस्यूँ–५०
गंगा–३, ५, ११, २४, ९१, १२७, १३६, १५२, १८३, २८० (गंगोत्री), ३२३, ४९९
गंगाड़ी–२६६, २६९-७१, २८५, ३४६

गंगाणी (चट्टी)–३६८, ३६९, ४०३ (जमुनोत्री)
गंगाद्वार–४१ (हरद्वार), ९५
गंगारक–९१
गंगाराम राना–१८९, १९० (मगर), १९२
गंगाशरण (लाला)–४९१
गगास–९६ (नदी)
गंगा-सलाण–३०, ६२, २४०
गंगासिंह (दुरियाल)–४७०, ४७१, ४७३, ४७८, ४८१-८६
गंगेश्वर–९५
गंगेश्वरानन्द (स्वामी)–४१४, ४१५
गगो–३८७
गंगोत्री–७, १३, १७, ६०, ९७, ३०३, ३३२, ३३७, ३४७, ३५२, ३६६, ३७०, ३७४, ३७९, ३८०, ४०२, ४०८, ४७९
गंगोवारिक–९१
गंगोरी चट्टी—३७०
गंगोली–६६
गंगोह–१२५
गजकोट–१८५
गजनी–१०३

गजरकोट—१८५
गजराज मिश्र—२३५
गजरिया—४०६
गजलक्ष्मणसिंह—१८७
गजल्डी—२६८
गजाचोक—२२
गजानन पटराई—१९०
गंजीपानी—३१८ डा०वं०
गर्जेसिंह—१४५, २११
गंडक—१८३, २३५
गंडकी—९६
गडगाढ—२४४
गडताङ्—६१, ११७
गड़सार—१४९
गंडावज—३९३
गढ(बावन)—११७, १५६, १५७, १६०, १६२
गढकोट—११७
गढताङ्—६१, ११७
गढ-पति—१४०, १४२, २७४
गढराज—१५१, १६३
"गढ़राजवंशका इतिहास"—१३३
गढ़वाल—३-६, ९, १३, १८, २९, ४० (नामकरण), ४१, ४२, ५१, ५८, ६३-६५, १२९, १३५, १४७, १४८, १५१, १५३, १५४, १६३, १७२, १७९, १८१, १८९, २०५, २०७, २१०, २१२, २२६, २३२, २३४, २३६, २३९, २६२, २६४, २८१, २८९, ३०७, ३६५, ३६६, ४१३
गढ़वाल-कुमाऊँ—५१
गढ़वाली—१४, १४३, ३५०
गणनाथ—९६
गणपति—१०८(कत्यूरी), २७०
गणराज्य—२४८
गणाई—६१, १४७, ३१५-३१७(डा० वं०), ३५० ३८६, ३९३(=चौखुटिया), ४०३, ४०४, ४०६
गणेश—४२३ (सिरकटा)
गणेश गंगा—१४, ३८४
गणेशचट्टी—३७१
गणेशपांडे—१८९, १९०, १९२, १९६
गणेशलिंग—३३० (रावल)
गणेश्वर—३४८
गंतुश्रा—२८०
गत्-क्युत्-छो—१००
गदी-खोला—१९२
गंदी नदी—१९२
गदोली—२९८
गद्दी—६५
गंधमादन—६
गंधो रिक—९१
गनितपाल—१२२
गन्तोक—३५३
गबरक—१०४
गंबिर्यापिड—९२
गब्नोल—२००
गमशाली—२५१, ३३२ (गमसाली)
गमीरी—२४२
गरहूं—१८३, १८५, १८६, १८८, २०१, (नेपाल)
गरुड—३१७ (डा० वं०) ३१८, ३९१ (बाजार)
गरुड गंगा—६१, ३७ ४८५
गरुडचट्टी—३७४
गरुडाश्रम—८०
गर्ग—९६
गर्तोक—१३९, ३८ (०नदी)
गर्देश—४०
गर्पोन—२३७
गर्ब्याङ्—२५५, २६३, ३८५
गलकोट—१८५, १८६, १
गल्-दन्-छेवङ्—१३९
गहड़वार (वंश)—७४ (गहरवार)

हत–२९३
ागर–९६
ाजणाकठूर–२४४
ाजीउद्दीन–१५३
ाडी–३८२, ३९५, ३९८, ४००
ंडाबाज–४०७
ंडीव–४५२
न्दोडारिक–८६
ल्यार–५४
विनी–१५
र्गी–९६
ंडनर–१८ (कमिश्नर), २३६
र्सिन–५, ९
लव–९६
र्विया–९६ (काली ुमाऊँ)
गाँव–३८८
यी–९, १४
ड्ङ–३८४
स्पी (जेनरल)–८-३०, २३३, २३४
गित–४२, ५२, ५५, ५९, ६०, १०४, ५
ाड–१४९
–२४८
–३३१
भवन–४१०
णयुद्ध (विक्रमशाह)
–६, २०४, २०५, २२१, २२२, २४७ (गोरखा-राजा)
गीलेत–२३
गुंगीधार–३१२, ३१५, ३१६, ३१८ (डा० वं०)
गुजडू–११७, २४०
गुजरात–२६६, २६७-७०, २७२, २७६
गुटिमा–२०७
गुंठ–२८१
गुडयार (ताल)–१६
गुणादित्य–८४
गु-नि - यङ् - ती–३८०, ३८१-८५, ३८७, ३९०, ३९६, ३९८
गुप्त–५२, ४२९, ४४५
गुप्तकाशी (=मारी)–६१, ९६ (मारी गाँव), १५५, ३११, ३१९, ३२६, ३३०, ३३२, ३७६ (वाजार), ३७७, ३९६, ४१८, ४२०, ४२१, ४२८
गुप्त वाराणसी–९६
गुप्ताब्राह्मी–४३४, ४३५
गुबाखेल–३१२
गुम–२८२
गुमखा–३२०
गुमानी–२११
गुरंग–४२ (देखो गुरुङ्, गुरुंग)
गुरन–११७ (श्री गुरुगढ)
गुरला–१०० (शंभु), ३८५ (-फुग)
गुराड–२७२
गुराड़स्यूँ–२४०
गुराडी–२७२
गुरारस्यून–२८२
गुरुगढ़–११७ (गुरन, श्रा०)
गुरुंग–१८३, १८४, १८९ (गुरुङ्), १९१, १९२
गुरुसेन–२६८
गुरुपति–२६६
गुर्खा–१८५ (देखो गोरखा)
गुर्गीन खाँ–१९८
गुर्जर-प्रतिहार–७०, ७१, ८८, १०५, ४४५
गुर्जरात–१२५
गुल (कुल, कुल्या)–२९१
गुलदारी–१७६
गुलाब–१२० (राजा)
गुलाबकोटी–३१७, ३१८ (डा० वं०), ३४९, ३७२, ३७७, ३७८, ३८०, ३८२, ४६३

गुलाबराय (चट्टी)—३७३
गुलाबसिंह—१५८
गुलामकादिर (१७८५-८९ ई०)—१५९, १७९
गुल्दारन—१७२
गुल्मी—१८५, १८६
गुश्रीखान—१३७
गुसाईं—२७२-७४, २७६
गुंसाई पट्टी—२४२
गुह—३४८ (राजा)
गुह्येश्वरी—१९७
गूगे—४०, १११, ११३, ३४९, ३८८-९०
गूजर—६५, १४९, १५४, १५८, १८१, २७१-७५
गजरघाटी—४०६
गूजरू—३५२
गूंठ (देवोत्तर)—२४६
गूलरचट्टी—३७४
गृहकोट—२०१
गेऊला चट्टी—३६८, ३६९
गेन्-दुन्-छोम्-फेल्—२६१
गेशे-शे-रब—२६१
गेहूं—२९१
गैंदूड़ा—२६७
गैंडी (माघ १)—३०५
गैरोला—१३७, २६६, २६७
गैरोली—२६७
गोइल—३२०
गोकुल—१२० (राजा)
गोखी—२७२
गोंचिगटक—९१
गोटिङ्—३८४
गोठ—३०७
गोडर—२४३
गोथल—९६ (मल्ला नागपुर)
गोदावरी—९६
गोदी—४०६
गोदू—२६७
गोदोधक—८६, ८९
गोनगढ़—२४३
गोपतारा—१५
गोपाई—९६
गोपी—१२० (राजा)
गोपीवन—९६
गोपेश्वर—६१, ९६, ९९, १०१, १११, ११२, ३२०, ३२५. ३३०, ३३२, ३३३, ३४७. ३४८, ३७२, ४३०, ४५५, ४६४
गोबी—१०६
गोमती—११४, १०४ (कत्यूर उपत्यका), १९५
गोमुख—१५, ३३१, ३७०
गोयंदका—४१०
गोर—१००
गोरक्षपा—१८९
गोरश्राम—९६
गोरखनाथ—१८९, १९०, २८०
गोरखपंथ—२७१
गोरखपुर—१५१, १९६, २२५, २२७, २२८, ३३२
गोरखा—२१, ३०, ४२, ६४, १८०-८२, १८५, १८९, १९०, १९२-९४, १९६, १९७, २०१, २०७, २०८, २१६, २२१, २२३, २२४, २८०, ३५०
गोरखा-चौकी—२११
गोरखाली—२००, २११, २१४, २२८
गोरखावंश—११९, २८
गोरखा-शासन—१८३, २१०
गोरखिया—२०९
गोरला (रावत)—२७
गोरिल—२८०
गोरीफाट—८६, ९६
गोरुन्नासा—७६, ९१
गोल—२३
गोलदार—१६५
गोलाम—२०७
गोल्डिंग—१९९
गोवन—२९६
गोवनीगढ़—२७२
गोविण—२७२
गोवितंगक—८६
गोविन—१२० (राजा

गोविंद—७४, १२० (राजा)
गोविंद उपाध्याय—२१०
गोविन्दचन्द—२०५
गोविन्दन्—३४६, ४८४, ४८५ (भू० पू० रावल)
गोविन्दपाल—७४
गोविन्दसिंह—११७, ११९ (थोकदार), १४९, १५०, २८२, ४८४ (गुरु०)
गोस्थल—९६
गोहना (ताल)—१६, ३८, ६३, ३१८ (डा० वं०), ३३३ (गोणा), ३३७ (-वाढ), ४००, ४८६
गोहनाबाढ—३२६, ३३७
गौचर—३०४, ३०७, ३२०, ३७३ (वाजार), ३७७, ४८६, ४८७
गौड—६७, ६८ (वंगाल), ८०, ८३, ८५, ९४, २६६, २६७, २६८, २६९, २७० (देखो ग्रादिगौड भी)
गौडवंश—१११, ११३
गौतम (सिद्धार्थ)—४७५
गौना (गोहना) ताल—३५१
गौरलिंग—३२८ (रावल)
गौरा—३८९
गौरांग (गौर)—१०८ (कत्यूरी)
गौरी उडियार—३८५
गौरीकुंड—१७, ६१, ९९ (वह्नि तीर्थ), १०० (हिरण्यगर्भ), ३१७ (डा० वं०), ३३३, ३३६, ३७१, ३७६, ३७८, ३९६, ४२३, ४२४, ४२७, ४३५, ४३६
गौरीगिरि—९६
गौरीदेवी—३३०
गौरीपर्वत—११
गौरेश्वर उपाध्याय—१९३
गौला—९६
ग्यल्-छो—१००
ग्यान्ची—२५७-५९
ग्यानिमा—३७८ (मंडी), ३८०-८६, ३९०, ३९६-४००, ४०६
ग्यारहगाँव—२४४
ग्रग्स्-ब्चन्-ल्दे—देखो डग्-चन्-दे
ग्रहवर्मा—६८
ग्रामिदारक—८६
ग्रीक—६२, ४६७
ग्रुबर—२००
ग्लङ्-दर्-म—देखो लङ्-दर्-म
ग्वारगधेरा—३९३
ग्वालदम—१३५, २९७, २९८, ३१२, ३१५, ३१७, (डा० वं०), ३३३, ३३७, ३५०, ३९५, ४०१
ग्वालदम-श्रेणी—७
ग्वालियर—६७, १४५
ग्वालियाबगड—४४८, ४४९
ग्वाली—३९३
ग्वीलखान—४०६
घघटो (गढ़)—११७ (तल्ला-सलाण)
घंडियाल—२७३
घणसाला—२६७
घणसाली—२६७
घमंडसिंह (मियाँ)—१६३, १६७-७८, १८०
घरन—३०९
घरनाग—९१
घले—१९१, १९२
घसमाण—२६७
घांघरिया—४००, ४०१, ४८४
घाट—३१२ (वदरी०), ३१७ (डा० वं०), ३२०, ३७२, ३९२ (नंदप्रयाग), ४००, ४०१, ४०८, ४८३ (चट्टी), ४८४
घासटोली—३८०

घिल्डियाल—२६७, २७१
घिल्डी—२६७
घीरिङ्—१८५, १८६ (नेपाले), २०१
घुड़दुड़स्यूँ—२४०
घुरदुडा—२७३, २७६
घोरल—१९३
घोष (डाक्टर हिमांशु)—४७८
घोषेश्वर—९६
ङ-री—७३, १३२, १३९
ङ-री-कोर्-सुम्—५८, ६८ (मानसरोवर- प्रदेश)
ङोङ्-बू (गोम्पा)—३८०, ३८१, ३८४, ३८५, ३९०, ३९७
चकराता—२७, ३५२ (चकरोता)
चक्रायुध—७०
चक्रेश्वर—९६
चंगेल-वंश—१५२
चङ्-लू—३८४
चटुवापीपल—३७३
चंटीखाल—३१८ (डा० वं०)
चंडालमुंडा—८२
चंडी—१२८, २३६
चंडीश—९६
चंडेश्वर—३९३
चतुर्दंष्ट्र—९६ (चौदंस)
चनपाल—१०८ (कत्यूरी)
चनाब—५५
चन्-छुग्-दे—११३ (व्चन्-फ्युग्-ल्दे)
चंदर—१२० (राजा)
चन्दवंश—११९
चंदापुरी—३२६
चंदोला—२६७
चंदोली—३१५
चंदोसी—२६७
चन्द्रगुप्त—८५
चंद्रदेव—७४, ११५, ११६
चंद्रपुरी—१५४
चन्द्रप्रभावती—१९४
चंद्रभागा—४२, ९६
चंद्रलिंग—३२८, ३२९ (रावल)
चंद्रवदनी—२४३
चंद्र-वंश—११६, २७३
चंद्रवंशी—१२४
चंद्रवीर कुँअर—१८१, २११, २०६, २३२
चंद्रवीर थापा—२११
चंद्रशिला—११
चंद्रशेखर—९६
चंद्रशेखर उपाध्याय—२३५
चंद्रापुरी—३२०, ३७६, ४१७
चंद्रोदय—११२
चपरङ—१३९
चमनौन—३२, ३२०
चमराँव—३८०, ३९४, ३९७
चमवा—३२०
चमार—२७७
चमुआ—१८१
चमेता खाल—८
चमोला—१३७, २६७, २७१, २७३
चमोली—२०, ५५, ९६, १११, २३९, २४५, २४९-५१, २६५, २७३, ३०३, ३०९, ३११-१३, ३१७, (डा० वं०), ३१८, ३२०, ३२५, ३२७, ३३१-३३, ३७२, ३७७, ३७८, ३८०, ३८२, ३९२, ३९४, ३९६-४०१, ४०४-७, ४४९, ४५५, ४५७, ४६२, ४८५-८७
चम्पा—११८
चम्पारन—२२५, २२६
चम्पावत—१२९, १४७
चम्पावती—१३२ (= चम्पावत), १५९
चम्बा—५५, ५८, २०५
चरणपादुका—३४१ (बदरीं०)
चरस—२९५
चराल—८५

र्मण्वती–९६
लणस्यूँ–२४०
ला(नदी)–१९
लिया–२३
ह्वान–२७४-७६
ग्या–१९१, १९२
ङ–१९२ (मध्यतिब्बत)
ङ-क्राइ-शेक–२५८
चटंक–८६
णक्यनीति–१८९
चातक" (गोविन्द)–४९१
दकोट–३२, ३०४
दपुर (६९०० फुट)–, २३, ३४, ३६, ६१ (गढ़), ११८ (तेर्लां-गीली–), १२४, १२६ (मल्ला), १२७, १२९, ४७, १४९, २१२, ३९-४२, २४६ र्गना), २६८, २७०, ९५, २९८, ३०४, १२, ३१५, ३३१, ३४ (कोट), ३३७
सुरी–२६७
–२३२
सारी–१५०
बगान–२९६
ङ्ला–३८१, ३९४, ३९९, ४०५
ंग–२३

चालूक्य–१२४(=सोलंकी)
चिघाट–३२०
चिंकिलिच खां–१५१
चितरू–१२० (राजा)
चिंता–१२० (राजा)
चितोड़–१८७, २७३, २७५
चित्तोला–२७३
चितोलगढ़–२७३
"चित्रविलास"–१८७, १९०
चित्रशिला–९६
चित्राल–५६,१०१,१०४
चित्रेश्वर–२९३
चिधामारिका–८७
चिनी–१३८,३७५,३८९
चिरंतन–३२९
चिल्डो–२४३ (पट्टी)
चिला–३१८ (डा० वं०)
चिली–२०७
चिल्ला–२४३
चीन–४ (गणराज्य),६, ५४, ६९, १८०, १९६, २००, २०७, २०८, २२८, २३४(०सम्राट्), २५७, २५८, २६०, २७८, २७९, २९३, २९५ (०तुर्किस्तान), २९६, ४५९
चीनी–३०१,(मोर्चा), ४१९

चुग्-ल्दे-ब्चन्–६९
चुनरिया–२७७
चुन्नी–३३१
चुपानी–३२१
चुरामन–१२० (राजा)
चूडाल–९४
चू-ते–२६१
चूहान–२७३, २७४ (देखो चौहान भी)
चेचक–३२३
चे-दे (०ल्दे)–११३, ११४
चेपे–१९३, १९४
चेलवा–३०९
चोपड़ा–२४० (०कोट), २७३, ३२५
चोपड़िया–२७३
चोपता चट्टी–११, ३१७ (डा० वं०), ३२०, ३३४, ३७१, ३७८, ४५३
चोपराकोट–३२३
चोपरिया–३२०
चोवदार–३४६ (वदरी, सियाराज)
चोली–३४५ (नंबूतिरी ब्राह्मण)
चोरहोती (घुरा)–३८३
चौकान–३१८ (डा०वं०)
चौकीघाट–३१२, ३१३
चौकोट–१४९, १५५

चौक्याल—२६७

चौखम्बा—६, ११, ३४९ (शिखर)

चौखुटिया—२९३ (=गणाई), ४०६

चौगरखा—६६

चौडा—११८

चौंडाल—११८

चौतरा—२२१

चौतरिया—२०४ (=राजवंशीय), २०७, २१०

चौतारा—२१० (=चौतरिया)

चौथान—२४०, ३४९(पट्टी)

चौदंडी—२०१

चौदंस—९६ (चतुर्द्रंष्ट्र)

चौंदकोट—११८ (गढ़), २३९-४२, २४६

चौधाम—३२३

चौपता चट्टी—४५१ (देखो चोपता)

चौपरा—३२०

चौबीसी—१८४, १९३, १९९, २०१, २०२, २०३, २०७

चौमटिया—२२

चौरास—२४३, ४९७ (पट्टी)

चौहान—११७, १२४ (चाहमान, चह्वान), २७१, २७३

छंकरा—३८६ (मंडी), ३९७

छङ-ग्रन्—७०

छज्यूला—२४३

छतवापीपल—६२ (चट्टी), ३१२ (छतुवा०), ३१३, ३१४, ३७६

छत्रशाह—१९१

छत्रू भंडारी—२११

छ-लम्पा—३८२, ३९५, ३९८

छांकरा—३८१ (देखो छंकरा भी)

छांतीखालच—३७३, ३७५

छाम—३६८, ३६९, ४०२

छालडी (चट्टी)—३०३

छिजोनली—४

छितकुल—३७५

छिनका (चट्टी)—३७२, ४५९

छिर्-चिन्—३८७, ३९९, ४००

छीका—३१६

छीपी—२७७

छीरापानी—९५

छुरा—१५

छुवा—२९०, २९३

छूणा चट्टी—३७०

छू-मिक्-श-ला—३८०-८६, ३९०, ३९५, ३९८

छेछल्—९६ (व्यांस)

छेमवाल—३३१ (शांडिल्य)

छोपता—३८८

छोप्राक—१८९

छोल्-गन—१०० (=रावणह्रद)

छोवा—२९१

जखनी—३२०

जखरी खोल—३२०

जखेत—३२०

जगजीत पांडे—२०७

जगज्जय मल्ल—१९७

जगत—१२० (राजा)

जगतगढ—२३३

जगतचंद—१४९

जगत परकास—१७९

जगतपाल—१२२

जगन्नाथपुरी—३४६

जगप्रकाश—१७७, १७८

जगरनाथ—१२० (राजा)

जगरांव—३८१

जगरोन—३९७

जंगबहादुर—१८७, १९८, २३१

जंगम—३२७ (वीरशैव), ३५० (लिंगायत) ४१९

जंगल चट्टी—३७१, ३७८, ३९३

जंगला (चट्टी)—३७९, ३८४, ४०७

जंगी–३८९
जटाधर लिंग–३२९ (रावल)
जडभरत–३४७ (उत्तरकाशी)
जड़ीपानी–३१३
जनकपुर–१९९
जनकेश्वर–३०५
जनघाट–३२५
जनार्दन लिंग–३२९ (रावल)
जन्ती (धुरा)–३८७
जमनीभाषा–२१७
जमुना–१२, ४१, ५१, ५५, १२७, १२८, १३६, १४४, १७९, २०७, २२७, २२८, २८० (जमुनोत्री)
जमुनापट्टी (चट्टी)–३६९
जमुनोत्री–३१३, ३३१, ३३४, ३५२, ३६६-७०, ४०३, ४०८, ४९४
जम्बू द्वीप–२३५
जम्ब्वाल–२७३
जम्मू–१४४, २६८, २७३, २७५
जय–१२२ (राजा)
जयकूल भुक्ति–८२, ९१
जयकृतशाह (१७९१-९७ ई०)–१२३ (जयकीरत), १२९, १५८, १५९, १८२ (जय(कीर्ति०), १६२, १६६, १७१, ४४७
जयकृष्ण–२३१, २३२
जयचंद–७४, २६७
जयचंद्रपाल–१२१
जयतपाल–१२१
जयतिपाल–१२०
जयदेवपाल–१२२
जयनार्थलिंग–३२८ (रावल)
जयन्त राना–१९४, १९७
जयपाल–१०३ (काबुल)
जयपुर–३३१
जयप्रकाश मल्ल–१९४, १९७, १९८, २००
जयरामपाल–१२२
जयलिंग–३३० (रावल)
जयसिंह–१०८ (कत्यूरी), ११५ (मांडलिक), ११६ (०देव) १४४
जयानंद जोशी–१६१, १६२, १६५-६७
जंयाड़–२७३ (गढ़)
जरदारी–२७३
जलंधर–३, ४०, २०५, (द्वाबा), २६८, २६९
जलमाल–१०० (हरिद्रा नदी)
जलासू–१५४
जवाड़ी–२७३
जसवन–२०५
जसोला–२६७
जसोली–६३
जसेरकोट–२०७
जस्कोट–२७३
जहांगीर–१०४, १२४, १२८, १३१, १४७
जाखटोली–२३
जागेश्वर–५७, ६६, ९७ (दारुन पर्वत, दारुकावन, तंकर, तंकरा), ३३३
जागेसर–५७, ६६, ९७ (टंकर)
जांगला–३३२, ३७० (चट्टी)
जाट–६५, ९६, २७१, २७६, २७८, २८३
जाड़गंगा–१५, ६४, ३३२ (=जाह्नवी), ३४९
जातिपोतक–८६, ९१
जाबिता खां (१७७०-८५ ई०)–१५९
जापान–२९६, ३०२, ३५१, ४३१, ४५१
जाह्नवी–१५, २५१, ३४९ (=जाड़गंगा)
जितंगपाल–१२२
जितपाल–१२२
जितार्थपाल–१२२
जितवान–२५

जिनिकुल—१४४ (=भ्किनि०)
जिन्-दर-मल—११३
जिल्ल—१८७
जिवरी—२०६ (सुकेत)
जिहलदेव—११६
जीतसिंह—२०५
जीपती—३८५
जीबू—३०८
जीलदेव—११५ (मांडलिक)
जीवाक सीमादित्य—८६
जीवार—९६
जुगडाण—२६७
जुगड़ी—२६७
जुगणाण—२६७, ३३१
जुनियागढ़—१४४, १४९
जुब्बल—२०५
जुमला—४२, १८६, १९३, २०७
जुमा—१३
जुमागवार—९, ३८२
जुम्माग्वाड—३८२
जुम्मापट्टी—२४२
जुयाल—२६७
जूया—२६७
जू-चे-ब्चन्-पो—६९
जेठक—२२९, २३३
जेठा—२७३
जेम्सन—२९७
जेलम—५१, ४०२
जेलू-ख-गा (घाटा)—३८५
जेसप—१९९
जैकंदी—३९४
जैकीरत—१६२
जैकृतशाह—१६५, १६८, १७०, १७७, १७८, २१८, २८२
जैतोलस्यूँ—२४०
जैन—२८२, ३४०
जैनखान—१८७
जैसी—१९८
जैस्वाल—२६७
जोंकापानी—४०७
जोगड़ी—२६८
जोगामल्ल—२१०
जोगी—२७७, २७९ (नाथ)
जोङ-छुङ-ला—३८९
जोङ पोन—२५७
जोजी-ला—५५
जोजेक—२९६
जोड़ीपानी—३१३
जोतीश्वर—३४७ (जोशीमठ)
जोयसी—१५६
जोरावरसिंह—१३८
जोशिका—(देखो जोशीमठ)
जोशियाल—२५६, ४६४, ४७०, ४८३
जोशी—२६७, २६८, ३३४
जोशीमठ—८, १७, २८, ५५, ५६, ६२, ६६, ७३, ९७ (ज्योतिर्धाम), १०२ (कार्त्तिकेयपुर), १११, ११८, २४५ (थाना), २७३, २८०, २९३, ३०५, ३११, ३१३, ३१५, ३१७ (डा० बं०), ३१८-३२० (डा० ता० घ०), ३२५, ३३२, ३३७, ३३८, ३४७, ३५०, ३५२, ३७२, ३७७-८०, ३८२, ३९१, ३९२, ३९४, ३९७-४०१, ४०४-७, ४५५-५७, ४५९; ४६०, ४६२, ४६४-६८, (योषिका), ४७८, ४८३-८७
जोश्याल—२७३ (देखो जोशियाल भी)
जोहार—९६ (=जीवार), २०८, २५५, २६३, २७८, ३२०, ४७९
जोहारीखाल—३२०
जौट—११८ (गढ़)
जौणपुर—१६८
जौनपुर—६४, ११८, १६८, २४३, २६५

(टेहरी) २८०, २८८, ३१४, ४९१
जौनसार–४, २३, २४, ४१, ५०, ५७, ६४, २२९, २५६, २६५, २८८
जौरासी–११७ (गढ़), ११८ (कुइली)
जौल-जोबी–३०४, ३८६
जौलपुर–११८ (गढ़)
ज्ञवाली–(सूर्यविक्रम)–१८५
ज्ञानचंद (१६९८-१७०८ ई०)–१४९
ज्ञानदीप–३२९
ज्ञानप्रभ–३४९ (येशेऽोद्)
ज्योतिप्रकाश–१९७
ज्योतिर्धाम–९७, ३३५, ३४४ (=जोशीमठ)
ज्योशी–२६७
ज्वालपा–३१६
ज्वालातीर्थ–९७ (ज्वालामुखा)
ज्वालापुर–१८२, २७४
ज्वालामाई–२०६
ज्वालामुखी–९७ (कांगड़ा, ज्वालातीर्थ), २०६
ज्वालाराम–१३३
झगड़ू–१२० (राजा)
झंगोरा–२९२, ४०० (सेंत्रां)
झल–३०६
झलकरन–३०५
झाला (चट्टी)–१२, ३७ (बूढ़ाकेदार), ३७० (गंगोत्री)
झिक्वासा–२७३
झिनिमथ कुल–११४
झिरना–३२८ (डा० वं०)
झिली–१८५
झीबर–२७७
झुमरिया (ढाकी)–२७७
झुल्का–२८४
झूलापुल–३१६
झेलम–५५
झोराली–,३१३
ञि-म-गोन्–७३ (०म्-गोन्)
ञेनम्–१९७, २००
टकनौर–३३
टंकणपुर–८३, ८५, ११७, २४२, ३३१
टंकर–९७
टकूती–४०४
टंगण (प्रदेश)–५१
टंगणिया–५३
टंगणी चट्टी–५१, ५६, ६२, ३३५, ३७२, ४६१
टशी-दे–११३ (वृक्ष-शिस्-ल्दे)
टशी (पण्-छेन) लामा–२६१
टशी-ल्हुन्पो–२०८, २६०, २६१
टिवू–३९०
टिहरी–(देखो टेहरी)
टीकाराम शर्मा "कुंज"–२८८
टेहरी– ३, ४, ७, १२, २८, ३१, ३६, ३८, ९८-१००, १४४, २३६, २३९, २४५-२४७, २४९, २६२, २६४, २६८, २७६, २८२, २८९, २९८, २९९-३०३, ३०७, ३११, ३१३, ३१६, ३१७, ३२५, ३३६, ३३७, ३४२, ३४३, ३४७, ३५१, ३५२, ३६५, ३६८, ३६९, ३७४, ३७९, ४०२, ४०४, ४९०, ४९१
टोटा ग्राम–४०६
टौंस–१२, १४, १६, २३, २४, ३०, ५५, ५७, ९७, १४३, १५० (तमसा नदी), २०५
ट्रावनकोर–२४८
ट्रेल–१८, २६, २८ (कमिश्नर), ११२, २४५, २९०, ३२६
ठकराल–२४४

ठकुरी–१८६, १८९ (राजा), २७२, २७३, २७५, २७६
ठठेरा–२७७
ठाईज्युली–२४०
ठाकुर–२७३-७६
ठाकुरद्वारा–२८
ठा-गङ–३८७ (सूखा)
ठाणादार–३९०
ठि-ग्रोग्–३८९, ३९०
ठियोक–२०५, २४८
ठी-ल्दे-स्रोङ–६९ (देखो दे-स्रोङ् भी)
ठी-स्रोङ्-दे-चन–७०
डंगवाल–२६७, २७१, २७३
डग्-चन्-दे–११३ (ग्रग्स्-व्चन्-ल्दे)
डडालगांउ (चट्टी)–३६८, ३६९
डडोटी (चट्टी)–३६९, ४०३
डंडा–२१, २२
डंडातोली–२३
डवराल–२६७
डमर–१५
डम्वर–१८८, १९३ (–शाह)
डल्ड्या–२५५
डाक तार-घर–३१९
डाकर–३९२, ३९३
डागचौरी–३२०
डांग–२६७, २७३
डांगर–२४३
डाडामंडी–३९६
डावर–२६७
डावे–३८७
डिडीहाट–३८६
डिमरी–२६७, ३४६, ४७०, ४८३, ४८४
डिम्भर–१३७, २६७, २७१
डंगरी–३१५, ३२० (पंत), ३३१
डुंडा–२५१, ४०२
डुंगरा–२३
डुंगरा बचछनस्यूँ–२२
डुंगरी–३९१
डुमराकोट–२०३
डूंगर–२१
डूंडसीर–४९०
डूंडा चट्टी–३७४, ३७५
डेरानानक–१५०
डोईवाला–४०८
डोटी–१०१, १०६, १०७, १०९, ११०, १२४ (कत्यूरी), १४७ नेपाल, १५५, १५९, १८२, १८६, २०३, २०७, २२६, २३३, २७६
डोडरा क्वारा–११८ (गढ़)
डोभाल–१६३, १६६, १६७, १८०, २६६, २६७
डोम–२६५, २८५, २८७
डोमकोट–११६
डोरा–९५, ९९ (मल्ल)
डोल्-मा-ला–९६ (गौरी-गिरि)
डौंडियाखेडा–२७०
ड्योंडी–२६७
डूमंड–१९, २१
ढकवानी–३९१, ३९५, ४०१
ढंगाण–२६७, २६८
ढलोटी–२७७
ढाकी झुमरिया–२७७
ढांगू–११७ (मल्ला), ११८ (गढ़), २४० (तल्ला, मल्ला)
ढुंढसिर–२४२
ढेला–१९
ढोर–१८३, १८५, १८६, १८८ (नेपाली) ३०७
ढौंड–२६७
ढौंडियाल–२४० (०स्यूं) २६७
तंकर–९७ (तंकरा)
तकलाकोट (स्पु-रङ्स्)–३८५
तकलामकान–१०६
तक्षक–५१ (नाग), ९७

तच्छिरा—२४
तंगण—५१ (प्रदेश), ५३-५४, ९२, ३०८, ४६१
तंगणपुर—५६, ९१,३२१
तंगणी—३०८ (चट्टी)
तंगवाल (अम्वादत्त)—४३४, ४३५
तग्-चङ्-पो (उद्गम)—३७८
तड़ियाल—२७३
तड़ी—२७३
तड्याल—२७३
तत्क्षेत्र—९७
तनहूं—१८५ (नेपाले), १८६, १९२, १९६, २०१-२०३, २०७
तपोवन—१७, ५६, ६३, ८०, ९२, ९७, ३१२, ३१४, ३१५, ३३६ (ढाक-तपोवन), ३३९, ३५०, ३८२, ३८३, ३९१, ३९५, ३९८, ४०१, ४६५, ४६६, ४८५
प्तकुंड—१०, ३३९, ४७०, ४७१, ४७७
ंबाधोंध—१५५
तमसा—४१ (टौंस नदी) ९७,९९,
मिलनाड—३२७
तमेहक—९२
तमोटा—२७७ (टमटा), २९९
तमोर—२०१
तराई—२०२
तरिम्-उपत्यका—६९, १७०
तलकोटा—११५
तलवरी—२९८
तलाई—२४०, ३३९ (पट्टी), ३५२
तलिगर—१५
तल्लासाट—९२
तल्लोकोट—१९०
तँवर—२७१,२७४,२७६
तलोर—१५
ताकी—१८५
ताकूला—३८८
तागाधारी—१८९, १९४
ताजिक—१०४
तातारी—२९० (तिब्बत)
ताप्-छेना—३७८ (सिंधु-उद्गम)
तांबाधोत—३१६
तारक—९७ (धुरा)
तारा—१२० (राजा)
तारिमघाट—२०३
तार्कू—१८९, २०३ (घाट)
तालमी—५१, ५५
ताल-पुंगला—२१, २२
तालबरली—३३८
तालबुंगा—३३८
तिथलाकोट—३८६
तिनदोरी—३३१
ति-पानी—३७९, ३८४
तिब्बत—६, ११, १८, ४०, ४२, ७०, ७३; १०५, ११३, १३०, १३२, १३६-३८, १४४, १४५, १९३, १९५-९७, २०२, २०७, २३४ २३५, २५१, २५२, २५५, २५७, २५८, २६०, २६२, २७९, २९६-९९, ३२६, ३३७, ३४०, ३६५, ४२४, ४३१, ४३२, ४५९, ४८१, ४८९
तिमली—२२९, ३२०
तिरजुगी—३७७ (देखो तिरजुगी नारायण, त्रियुगी०)
तिरजुगीनारायण—३१३, ३३६, ३७१, ३७६, ४२२ (त्रिजुगी०)
तिरहुत—२२७
तिरा-सुर्जनपुर—२०६
तिरंगा—८६
तिंरिग—९१, ९२
तिल—२९३
तिलकनी—३१८ (डा० बं०)

तिलवाडा–४१५
तिलंगराज–१०८ (कत्यूरी)
तिलंगा–२१४, २२०
तिलोत्तमादेवी–२१०
तिल्ला–२७३
तिवाड़ी–२६७, २६८
ति-सुम–३८२, ३९५, ३९८
तिस्ता–२०२
तीरभुक्ति–७१ (=तिरहुत)
तीर्थपुरी–३०, ३७८, ३८८ (टे-टापु)
तुखार–६५
तुगलक–१५१
तुंगनाथ–७, ११ (शिखर), १४, ३६, ६२, ९५, ९८, २७१, ३११, ३१४, ३२७, ३३०, ३३८, ३७१, ३७८, ४५४, ४७७
तुंगादित्य–८७, ९२, ९३
तुथाराज–१८७
तुर्क–५६, १०२, १३१ (तैमूर)
तुर्कमान–१५१
तुर्किस्तान (चीनी-)–४७६
तुलसा–२७३
तुलसिंह–११८
तुलासेन–१९३
तूरानी–१५१, १५३
तूँवर–१४२ (तँवर भी)
तृषि–९७ (=नैनीताल)
तेगबहादुर (१६६४-७५ ई०)–१४९, १५० (गुरु०)
तेजम्–३८८
तेजनरसिंह–१९८, २००
तेजराम–१३३
तेल–२७३
तेलगू–२६७
तेलचामी–११९
तेली–२७७
तेलीहाट–३४८ (वैजनाथ)
तेवाड़ी–२६७
तैमूर–१०४, १२७, १२८ (०लंग), १५२
तैलंग–२७०
तैली–२४०
तोटकाचार्य–३३५
तोनन्-ला–३८२, ३८३
तोप–११८
तोपाल–११८
तोरडा–२७३
तोरमाण–६७
तोली–३२०
तोल् छा–२५२, २५६, २७८, २७९
त्याड–४०६
त्रिकार्मालिंग–३२९ रावल)
त्रिगर्त–५४
त्रिजुगी–देखो तिरजुगी०
त्रित्सु–५९ (=पंचाल)
त्रिपाठी–२६७
त्रिभुवन काजी–२०५
त्रिभुवनपाल–१०१ (कत्यूरी)
त्रिभुवनराज–७२, ७३, ८२
त्रियुगी–९६, ९७-९९ (देखो तिरजुगी भी), ३२६, ३३०
त्रिरोरी–३३१
त्रिलोकपाल–१०८ (कत्यूरी), ११०
त्रिलोचन–७४
त्रिविक्रम–९७ (नदी)
त्रिवेदी–३३१
त्रिशूल–६, ७, १० (शिखर), ११, १३, ९८, ९९ (नदी)
त्रिशूलगंगा–४०
त्रिशूल-गंडकी–१९४
त्रिशूल लिंग–३२९ (रावल)
त्रिशली–४१, १८३, १८४, १९२
त्र्यंबक–२७०
थपलियासारी–९२

थपल्याल–२६७, २७३
थराली–१४९, ३१२, ३१७ (डा० बं०), ३२०, ३९२
थल–२८६
थलनदी–३०५
थलेङ–१८४
थाङ-सेना–७०
थातीं कठूर–२४३
थानकोट–२०४
थानसंगला–२८२
थाना–४०३ (भवन्)
थाना उलटी–४०४
थानेश्वर–६७, ६८
थानो–१२८
थापली–१३७, २६७ (चांदपुर), २७१, २७३, ४९० (महानंद)
थापा–४४७ (रामदास)
थापादल–२०४, २०५, २१०
थारू–१८४
थाला–२१, २२, ३०४
थिग्रपका बांक–१३ (शिखर)
थोक–४८३
थोकदार–२४५, २८७
थो-लिङ–११४ (शङ्-शुङ् में) १३८, ३४० (गुंबा), ३४९, ३७९, ३८१, ३८४, ३८५, ३९०, ३९७, ३९९, ४०५, ४७१ (मठ), ४८५
दक्षतीर्थ–९७
दक्षप्रजापति–२२२
दक्षिणापथ–१०७
दखणी बाजा–१६८
दंगल–३०५, ३१२, ३१३
दजला–२७०
दड़माड़–३९३
दत्तात्रेय–११२, ३४७ (उत्तरकाशी), ४४३
दधीचि–८५
दबका–९७ (देवकी नदी)
दबरालस्यूँ–३५२
दमजन–३८२, ३९५ (नींतीधुरा), ३९८
दमजन पडाव–३८२
दमयन्तीताल–९७ (दमयन्तीसर)
दयानन्द जोशी–१६६
दयालसिंह–१४८
दर–३८७
दरकोट–९७ (दाख), २०७
रदद–१३, ५४, ५५ (जाति), २९८
दरमा–९८, २३४
दरमा-जोहार–२०७
दरवाज़–१०१
दरिमंडली–३९३
दरेल–१०४
दरौंदी–१९० (उपत्यका), १९३
दर्-छेन् (कैलास)–३८०, ३८५, ३९०
दर्ज़ी–२७७
दलनंग (चट्टी)–४१५
दलभंजन पांडे–२२०, २२१, २२६
दलमर्दनशाह–१९५, १९८
दलाई लामा–१३७, २५९, २६०
दलेरी–३२०
दशजूला–२४३, ३३८
दशरथ–८५, २१२ (खत्री), २२४
दशौली–१६, २३ (दसौली), २१, ९९ (मल्ली), ११८ (गढ़), १३७, २३९-२४१, २४६, (पर्गना), २८१, ३०५, ३३३, ३३७ (तल्ली), ३३८, ३५०
दसगी–२४३
दसज्यूला–२४३
दसज्यूली–३०८
दसनामी–२८०
दस-लिंबू–२०१

तिलवाडा—४१५
तिलंगराज—१०८ (कत्यूरी)
तिलंगा—२१४, २२०
तिलोत्तमादेवी—२१०
तिल्ला—२७३
तिवाड़ी—२६७, २६८
ति-सुम—३८२, ३९५, ३९८
तिस्ता—२०२
तीरभुक्ति—७१ (=तिरहुत)
तीर्थपुरी—३०, ३७८, ३८८ (टे-टापु)
तुखार—६५
तुगलक़—१५१
तुंगनाथ—७, ११ (शिखर), १४, ३६, ६२, ९५, ९८, २७१, ३११, ३१४, ३२७, ३३०, ३३८, ३७१, ३७८, ४५४, ४७७
तुंगादित्य—८७, ९२, ९३
तुथाराज—१८७
तुर्क—५६, १०२, १३१ (तेमूर)
तुर्कमान—१५१
तुर्किस्तान (चीनी-)—४७६
तुलसा—२७३
तुलसिंह—११८
तुलासेन—१९३
तूरानी—१५१, १५३
तूँवर—१४२ (तँवर भी)
तृषि—९७ (=नैनीताल)
तेगबहादुर (१६६४-७५ ई०)—१४९, १५० (गुरु०)
तेजम्—३८८
तेजनरसिंह—१९८, २००
तेजराम—१३३
तेल—२७३
तेलगू—२६७
तेलचामी—११९
तेली—२७७
तेलीहाट—३४८ (वैजनाथ)
तेवाड़ी—२६७
तैमूर—१०४, १२७, १२८ (०लंग), १५२
तैलंग—२७०
तैली—२४०
तोटकाचार्य—३३५
तोनन्-ला—३८२, ३८३
तोप—११८
तोपाल—११८
तोरडा—२७३
तोरमाण—६७
तोली—३२०
तोल् छा—२५२, २५६, २७८, २७९
त्याड—४०६
त्रिकार्मालिंग—३२९ रावल)
त्रिगर्त—५४
त्रिजुगी—देखो तिरजुगी०
त्रित्सु—५९ (=पंचाल)
त्रिपाठी—२६७
त्रिभुवन काजी—२०५
त्रिभुवनपाल—१०१ (कत्यूरी)
त्रिभुवनराज—७२, ७३, ८२
त्रियुगी—९६, ९७-९९ (देखो तिरजुगी भी), ३२६, ३३०
त्रिरोरी—३३१
त्रिलोकपाल—१०८ (कत्यूरी), ११०
त्रिलोचन—७४
त्रिविक्रम—९७ (नदी)
त्रिवेदी—३३१
त्रिशूल—६, ७, १० (शिखर), ११, १३, ९८, ९९ (नदी)
त्रिशूलगंगा—४०
त्रिशूल-गंडकी—१९४
त्रिशूल लिंग—३२९ (रावल)
त्रिशली—४१, १८३, १८४, १९२
त्र्यंबक—२७०
थपलियासारी—९२

थपल्याल–२६७, २७३
थराली–१४९, ३१२, ३१७ (डा० वं०), ३२०, ३९२
थल–२८६
थलनदी–३०५
थलेङ–१८४
थाङ-सेना–७०
थातीं कठूर–२४३
थानकोट–२०४
थानसंगला–२८२
थाना–४०३ (भवन)
थाना उलटी–४०४
थानेश्वर–६७, ६८
थानो–१२८
थापली–१३७, २६७ (चांदपुर), २७१, २७३, ४९० (महानंद)
थापा–४४७ (रामदास)
थापादल–२०४, २०५, २१०
थारू–१८४
थाला–२१, २२, ३०४
थिम्रपका बांक–१३ (शिखर)
थोक–४८३
थोकदार–२४५, २८७
थो-लिङ–११४ (शङ्-शुङ् में) १३८, ३४० (गुंबा), ३४९, ३७९, ३८१, ३८४, ३८५, ३९०, ३९७, ३९९, ४०५, ४७१ (मठ), ४८५
दक्षतीर्थ–९७
दक्षप्रजापति–२२२
दक्षिणापथ–१०७
दखणी बाजा–१६८
दंगल–३०५, ३१२, ३१३
दजला–२७०
दड़माड़–३९३
दत्तात्रेय–११२, ३४७ (उत्तरकाशी), ४४३
दधीचि–८५
दबका–९७ (देवकी नदी)
दबरालस्यूँ–३५२
दमजन–३८२, ३९५ (नींतीधुरा), ३९८
दमजन पडाव–३८२
दमयन्तीताल–९७ (दमयन्तीसर)
दयानन्द जोशी–१६६
दयालसिंह–१४८
दर–३८७
दरकोट–९७ (दाख), २०७
रदद–१३, ५४, ५५ (जाति), २९८
दरमा–९८, २३४
दरमा-जोहार–२०७
दरवाज़–१०१
दरिमंडली–३९३
दरेल–१०४
दरौंदी–१९० (उपत्यका), १९३
दर्-छेन् (कैलास)–३८०, ३८५, ३९०
दर्जी–२७७
दलनंग (चट्टी)–४१५
दलभंजन पांडे–२२०, २२१, २२६
दलमर्दनशाह–१९५, १९८
दलाई लामा–१३७, २५९, २६०
दलेरी–३२०
दशजूला–२४३, ३३८
दशरथ–८५, २१२ (खत्री), २२४
दशौली–१६, २३ (दसौली), २१, ९९ (मल्ली), ११८ (गढ़), १३७, २३९-२४१, २४६, (पर्गना), २८१, ३०५, ३३३, ३३७ (तल्ली), ३३८, ३५०
दसगी–२४३
दसज्यूला–२४३
दसज्यूली–३०८
दसनामी–२८०
दस-लिंबू–२०१

दसौली—(देखो दशौली)
दाङ—१८५
दाडिमी नरसिंह—३४७
दादामंडी—३०५, ३१४, ३१८ (डा० बं०), ३२०
दानपुर—९७ (पर्गना)
दानवभूतल—१११,११३
दापा—१३२, १३७, १३८, ३८०, ३८१, ३८५, ३९०, ३९७ (दावा)
दाबा—१३७, १३९,१४९, ३९० (=दापा,दावा)
दामोदर पांडे—२०४
दारक—९१, ९२, ९७ (शिखर)
दारमा—३८७ (घाटा, नू-वे), ४७९
दारमा-यङ्त्ती—३८७, ३९९
दाराशिकोह—१३३, १४४
दारु—९७
दारुण—९७
दारुदेश—५७
दारुन—९७
दारुम—९७ (दारूण)
दारुकावन—९७
दावीद—५७
दालीमूल—८६, ९२ (०मूलक)
दावक—९२
दा-वा—३९० (देखो दापा, दावा)
दासता—२११
दास-बाजार—२११
दिकोला—२७३(दिकोली)
दिगरचा—२३५ (शिगर्चे)
दिग्बंधनसेन—१९८
दिघवा-दुबोली—७१ (सारन)
दिपाल—१२२
दिमदिमा—३१८(डा०बं०)
दिलीप—८३
दिलेवरसिंह—११९ (लोहवा)
दिल्ली—२३, ३०, ७५, १२७, १३०, १३३, १४२, १४६, १४७, १४९-१५४, २१६, २५६, २६२, २७३, २७४, २७६, २७९, २९९, ४६२
दिवालीखाल—४०७
दिवोदास—५२, ५९-६०
दीनापानी—३८८
दीपचंद—१५५
दीपडांडा—६
दीपाखाल—३१२
दीर्घादित्य—८४
दुइनेद—२२
दुगड्डा—२४५ (चौकी, दोगड्डा)
दुङ-दुङ्गा—३८७
दुज्जणातंग—८६
दुज्जन—८२
दुदुली—१४९
दुधारखाल—३२०
दुध्या—४९४
दुफन्दा (चट्टी)—३७१
दुभागी—२६६, २७१
दुरपती—४९३
दुरमी (ताल)—१६
दुरयाल—२५६ (दुरियाल, दुर्याल), २७३
दुरियाल—२७३, ४७० (दुरयाल)४७१, ४८३
दुर्गम—३२९
दुर्गा—८७ (देवी),२८०, ३४७ (उत्तरकाशी)
दुर्गाभट्ट—९२
दुर्गेश्वर—९७
दुर्रानी—१५३
दुर्लभ लिंग—३२९ (रावल)
दुलड़ी—१५९, १६२
दुलारामशाह—१२२, १२९, १३५ (राजा), १३६, १३९
दूलू—११६, १८६, २०७ (दुलू-दैलख भी)
दुलूदैलेख—१८३, १९३
दुलोराम—१३९ (दुलाराम)

दुल-छू (ग़ोम्पा)–३८८
दुल्-बू (गोम्पा)–३७८
दुःशासनेश्वर–९७
दुस्-स्त्रोङ्–६९
दूण (दून)–१४४, १४५, १५०, १५४, १५८, १६३, १६७, १६८, १७१, १७५, २१६, २२४, ३३८ (पतली)
दूदातोली–६, ७ (श्रेणी) ८, ३२, ३४-३६, ३०८, ३१५
दून–(देखो दूण)
दूनागिरि–११, १३, ९७ (द्रोण), १४७, १५५
दूलभ–१२० (राजा)
देउराली–१८५
देउली–३३१
देखवाली–२८२
दे-चुग्–११३ (ल्दे-ग्चुग्)
देन्द्रवाक–८०
देप्राग–१७९
देल-चौरी–३२०
देवकी–९७ (नदी)
देवगढ़–३१५
देवचेली–३२७, ३५०, ४४० (देव-रानी), ४४२
देवताल–१०, १६, १७
देवथान–२२
देवदासी–४४०
देवदेखनी–४६८ (बद्री)
देवदेव-लिंग–३२९ (रावल)
देवपाटन–१९७
देवपाल–६९, ७३, ७५, ८८, १८९
देवप्रयाग–, १५, २७, ५६, ६२, १२४ (रघुनाथ मंदिर), १२८, १३०, १४५, २४४, २६६-७१, ३०५, ३१२, ३१३, ३१६, ३१७, ३२१, ३२५, ३३६, ३३७, ३४६ (पंडा), ३७३, ३७६, ३७७, ३८०, ३८१, ४०२, ४११, ४८३, ४८८
देवप्राग–१७९
देवराज–११३
देवराणी–२६८ (देव-चेली), ३२६, ४४०
देवरारि देवी–३०६
देवराली–१९७
देवबंद–२८ (देववन)
देवरी ताल–१६, १७, ३२६, ३३८
देवल–११८ (गढ़), ३९१
देवलकोट–, ३२१
देवलगढ़–२१, २२, ११७, १२९, २३९-४१, २४६, (पर्गना), ३२१, ३२६, ३३७, ३५०
देवल नंदकेसरी–३०५
देवलीखाल–१४९
देवशमशेर (राणा)–३३७
देव सुमन–२४८
देवानंद–३४४ (स्वामी)
देवापि–५४
देवाल–७०
देवालीखाल–३१२
देवीकुंड–९७
देवीचंद–१५४
देवीदत्त (पौड़ी)–१६२, १६३, १६६, १६८, १७१, १७३, १७४
देवीदास–२६८
देवीसिंह–१८१, १८२
देवोत्तरसंपति–२८१
देशट–७२ (राजा), ७३, ७४, ८३ (देव), ८५
देहरादून–३, ४, २६, २८, ९८, ११८, १४४ (उपत्यका), १४९, १५०, १५३, १५४, १७१, १८१, १८२, २०५, २०८, २३२, २३४, २३६, २४७, २५१, २९३, ३०९, ३११, ३२६, ४०५, ४०८, ४८८, ४८९

देहली–२३४, २३५ (देखो दिल्ली भी)
दैलख (दुलू)–२०३
दोगड्डा–२८२ (दुगड्डा), ३०१, ३११, ३१४, ३२१, ३३७
दोगलभीटा (चट्टी)–३७१
दोगलभीटी–३१७ (डा० बं०)
दोगी–२४३
दोन–३०४
दोबरी–३१२
दोमेला–३१२, ३१३
दोख्याल–२७३
दोरविल–२००
दोर्जेलिङ्–१८३, १८४, २२६, २६०, ३५३, ३५४
दो-सुम्दो–३७९, ३८४
दौलतराव सिंधिया–३३६
द्रव्यशाह–१९४
द्रविड (द्रमिड)–४८, ४९, ५४, ६०, ७५, ८०, ८३, ८५, ९५, २६६, २६७-७०, ४४४ (मूर्त्तिकला), ४४५
द्रमिड–(देखो द्रविड)
द्रुणिन–९७
द्रुमती–८४
द्रोण–९७, ३४६ (=३२ सेर)
द्वङ-ल्दे–(देखो वङ्-दे)
द्वारका–९७
द्वाराहाट–५८, ५९, १०१, १०६, ११२, १५४, १५५, १५७, २६९, २७३, २७५, ३१५-१७ (डा० बं०), ३२६, ३४८, ३९३, ४०३, ४०४, ४७६
द्वारी–४००
द्वारीखाल–३१२-१४, ३१८ (डा० बं०)
धंगू–३५२
धण:–८४
धनद लिंग–३२८ (रावल)
धनपुर–२०-२२, २४, २४०, ३१४, ३१८ (डा० बं०)
धनपुर श्रेणी–८
धनसिंह–४९७-९९
धनंजय–१०७ (कत्यूरी)
धनाई (तेली चांदपुर)–२८२
धनारी–२४२
धनीराम डोभाल–१६३, १६८, १७३, १७४, १७७-७९
धन्नू–१७२, १७३ (देखो धनीराम भी)
धन्मूल–४९१ (पट्टी)
धमाद्रा–११९, २७४
धम्मवाण–२६८
धम्मादा–२७४
धयज्यूली–२९८ (पट्टी)
धयाण–२६८
धरगोत्-ला–३८८
धरचूला–३८६, ३८७
धरणी (खंडूड़ी)–१६३, १८१, १८२
धरणीधर (संतोली)–२६७
धरतावाल–१५०
धरमा–१५
धरा–८२
धरा मंडल–२४४
धराली–३३१, ३७० (चट्टी), ३७४, ३७९, ४०२
धरासू–५०, २५१, ३१३, ३२१, ३२६, ३६८, ३६९, ३७४, ३७५, ३७९, ४०२, ४०३
धर्मदास–४२७ (स्वामी)
धर्मपाल–६९-७१ (मगध राज), १०७ (कत्यूरी), ४०४
धर्मराज लिंग–३२९ (रावल)
धर्मवर्धन–२६१ (गेशे)
धवलागिरि–१९३
धस्सेरुका–८६
धाखोची–२५५

धातु-शिल्प—२९९
धादिङ—१९२, १९३ (नेपालें)
धानी—२०५, २०७
धामदेव—१०८ (कत्यूरी)
धामावाला—१५०
धामूवाला—१५०
धार—२७२, २७४, २७६
धार-अकरिया—२४३
धारणाक—८६
धारा नगर—१२५
धारूमेंगक—९१
धिकला—३१८ (डा० घं०)
धिरवाण—११८
धुत्तू चट्टी—३७१
धुनार—२७७, ३५० (घाट), ३९३, ४०७
धुन्धुमार—८३, ८५
धुरकोट—१८५, १८३
धुलेक—२०७
धुवांकोट—२०१, २०३
धूणी-रमणी—१८०
धूतातोली—३०५
धोणी—२७७
धोबरी—२१, २२
धोबी—२७७
धौतियाल—३१२
धौना—११८ (गढ़)
धौन्याल—१९९
धौम्य—४५२
धौलछीना—३८६
धौलागिरि—३३९
धौलिया-जौलियाअन—१५४
धौली (नदी)—१० (गंगा), १४, ३५, २३२, ३३४, ३३५ (-उपत्यका), ४६६, ४७९
धुव—७० (राष्ट्रकूट), ७१
ध्वज (पहाड़)—९८ (पताका)
घास-मेंगक—९३
नऊनी—२६८
नकुलदेव—१०८ (कत्यूरी)
नकोटी—२७४
नकोल—४९४ (नकुल)
नगर—४८ (कुल्लू)
नगर कोट—२०६, २७२ (कांगड़ा), २७४
नगरासू—३७३ (चट्टी)
नगीना—१४४, ३०३
नगुण (चट्टी)—३३७, ३६८, ३६९
नचार—३८९ (कनौर)
नज—१०७ (कत्यूरी)
नजीबाबाद—६३, १५४, २४७, २९९, ३०३, ३११, ३१४, ३३१
नजीब खां—१५३ (नजीबुद्दौला), १५४ (अमीरुल्-उमरा), १५८
नर्डिसिंह—४९१
नयनसिंह थापा—२०६
नदालस्यूँ—३३९ (पट्टी)
नदी (गरतोक्)—३८९
नन्द—११५ (-पुत्र भट्ट-नारायण)
नन्दकिनी—७, १४, १६, ९७, ३१५, ३३७
नन्दनवन—४०० (म्यूंढार)
नन्दप्रयाग—१४, ६३, ९७, २५१, २८०, ३०५, ३१२, ३१७ (डा० वं०), ३२१, ३२७, ३३३, ३३७, ३७२ (बाजार), ३७७, ३८०, ३८२, ३९२, ३९४, ४०७, ४८६
नन्दभद्र—८४, ८७
नन्दा—७७
नन्दाक—२४०
नन्दाकोट—३, ४, ६, ११ (शिखर)
नन्दादेवी—६, ७ (०हिमालश्रेणी), ८, ९, १४ (शिखर), ५२, ८५, १९३, २८० (पार्वती)
नन्दा भगवती—७५, २७९
नन्दाव—२०६

नन्दिनी–५४
नन्दी–१२२
नन्दु–४९८
नपीणा–८६
नबरा–३९०, ३९७ (०मंडी)
नम्बूतिरी–३४३, ४६७, ४७०, ४८४
नम्बूदिरी (०तिरी)–३४२
नम्बूरी (नम्बूतिरी)–३४५
नम्-ग्या–५८, ३८९
नय–८२, ८६
नयपाल–७४
नयाकोट–१८५ (नुवाकोट, नेंपाल)
नयार–६, ८(-उपत्यका) १४, २०, ३२, ३३, ५०, ३१४,३१६,३२३(नदी)
नयाल–११८ (गढ़)
नर–१० (शिखर),३३९ (पर्वत), ३४०
नरगासू–३१८ (डा० वं०)
नरपतिशाह–१८९
नरभूपाल–१८८, १९३, १९५, १९७, २३१
नरवीरसिंह–११७
नरशाही–२१०
नरसिंह–२८०, ३४७ (जोशीमठ)
नरसिंह काजी–२०५
नरसिंह मंदिर–३३४,३३५
नरसीबाबा–४१३
नरसीवीर–४१४
नरहरिशाह–१८८-९०
नरायनदेव–१२० (राजा)
नरेन्द्रनगर–२४३, ३१९, ३२५, ३३६, ३३७, ३६८, ३६९, ३७४, ३७९ (बाजार)
नरेन्द्रप्रकाश–१९७
नरेन्द्रशाह–१२३, १२४, १३०, २४७, ३३७ (राजा)
नर्तक–२७७
नलकुंड–९७
नलपटन–९७, ९९
नल्ला–६१, ६२ (= (नाला)
नवकोण–९७(सरोवर)
नवदुर्गा–४२९, ४३५
नवलिंग केदार–४३९
नवादा–१२८
नस्खलिपि–१२७
नाई–२७७
नाईमोहन–१२८, ३७४ (चट्टी)
नाऊन–२६८
नाकोरी (चट्टी)–३७० (नाकूरी)
नाक्स–२०४
नाग–५०, ५२, २५२, २७१, २८१, ३३१
नागदेव–११३, २७०
नागनाथ–५१(नागपुर), ६२, ९७, ३०५, ३१४, ३१८ (डा० वं०), ३२५, ३३७
नागपुर–१९-२१, २३, ३२, ५१, ६२ (गढ़), ६३, ९६ (मल्ला), ९७ (बिचल्ला), ११६-१८, २३९-४१, (तल्ला, बिचल्ला, मल्ला), २४६, (पर्गना), २७१, २८१, ३०५, ३२६, ३२७, ३३२, ३३३, ३३७, ३३
नागभट्ट–६९
नागमंदिर–१००
नागमल्ल–१०९(कत्यूरी
नागर–२२
नागराज–५१ (तोक), ६२ (तिव्वती राजा), ७४, १११-१३, ३४९, ४७६
नागल–१२८
नागलिङ्ग–३८७
नागवंशी–११८(राणा), २७१, २७५
नागशिखर–१०० (हेमश्रृंग)

नागसिद्ध१०० (सिद्ध-कूट)
नागा-गोसाईं–१९९
नाथ–२७७
नाथपंथी–२७९
नांदलस्यूँ–५०
नादिर कुल्ली–१५३ (नादिरशाह)
नादिरशाह–१२८, १५१
नानकिङ्ग–२६१
नापइस्यूँ–५०
नाप-तोल–३०४
नाम्बरंगीय–८६
नायक–२७४
नायर–३४३, ४८५
नारकंडा–३९०
नारद–२७०, ३४०
नारदकुंड–३४१ (बदरी०), ४७६, ४७८, ४८२, ४८५
नाराथोर (गुफा)–४१
नारायण–१० (शिखर), ७३, ८७, ११५, (भट्ट वंगज नन्दपुत्र) १३३, १८९, ३३९ (पर्वत), ३४१, ३४५ (रावल)
नारायण अर्ज्याल–१९०
नारायण उपेन्द्र–३४४ (स्वामी)
नारायणकुटी–६३
नारायणकोटी (भेत्)–३७१, ४२०
नारायण तीर्थ–३४४ (स्वामी)
नारायणदत्त–८४, ४२९ (ब्राह्मण)
नारायणपाल–६९, ७१, ८८
नारायण वगड–६२, ३१५, ३२१
नारायण भट्टारक–७६, ८०
नारायण लिंग–३२८ (रावल)
नारायणसिंह–४३७
नालंदा–७०, १०५
नाला (चट्टी)–६१, ९७, ११८ (गढ़), ३३१, ३७१, ३७६-७८, ४२०, ४४२, ४७६
नालागढ़–१८२, २३३
नालापानी–२२९, २३२
नाली–३०४
नालीकंठा–१३
नाल्डकठूर–२४२
नाशू–७२, ७५, ८२ (देवी)
नाहण–१८, १५९, १६०, १७७, १७८, २१६, २२२, २३२ (सिरमोर)
निजङ्ग–३८५
निजामुल्मुल्क–१५१, १५२
नित्यानंद खंडूडी–१६२, १६४-६६
निफि–१०८ (कत्यूरी)
निम्बर–७५, ७७, ८६, १०८, १०९
नियङ्ग–३९०
निरत–६६, ३८९
निरंजनदेव–१०८ (कत्यूरी), ११०, २७०
निरंजनपाल–१०३ (कावुलो)
निर्गुणानन्द–२०४ (रणबहादुर)
निर्भयपाल (०देव)–१०९ (कत्यूरी)
निर्मल लिंग–३२८ (रावल)
निलय राम–१०८ (कत्यूरी)
निवर्त–७२, ७३, ८२
निवारचोक–१९२
नीती–८, १०, १४, १८, २७, ३७, ५१, १३७, १४९ (,घाटा), १५४, २५१, २५२, २५६, २६२, २७९, २८३, २८६, २८७, २९४, ३०३, ३११, ३१४, ३१५, ३३१, ३३२, ३३८, ३८४, ३८८, ३९५, ४००, ४०६,

४५८, ४५९, ४६०, ४६५, ४७९, ४८०
नीती गांव–३८२, ३८३, ३९५, ३९८, ४००, ४०६
नीलकंठ–१० (नीलाकांठा शिखर), २६८, ३३०
नीलकंठी–२७४
नीलगिरि–९७
नीलदत्त–३४५ (रावल)
नीलपाल–१०७ (निलै०)
नीलराज–१०८ (कत्यूरी)
नीलंग–४३९
नीलाकांटा–४७० (शिखर)
नुबरा (मंडी)–३८०, ३८१, ३८४ (नवरा), ३८५
नुवाकोट–१८५, १८६, १८९, १९२, १९४, १९५, १९७, १९९, २०३
नुह–३८९, ३९०
नू-वे (दारमा घाटा)–३८७
नेगी–१६५, २७२-७७ २८२, ४९९ (अवतारसिंह)
नेतवाल–२५५
नेपाल–३, ११, ४०, ४१, ५२, ५६, ५९, १०७, ११७, ११९, १२९, १८०-८७, १९३, २०३-१४, २१९, २२०, २२४, २२५, २२७, २२८, २३२, २३५, २६४, २७५, २८१, २९९, ३४६, ४१७, ४४७, ४७६
नेपाल-उपत्यका–१९४, १९५
नेपाली–१११, ११४, ४५६
नेलङ–९६, २५१, २५२, २५६, २६३, २७८, २८३, २८९, ३०३, ३७९, ३८४, ३८५, ४६०, ४७९
नेवार–१८४, १९६, १९७, २०० (नेपाल-उपत्यकावासी)
नेशनल होटल–४८७ (श्रीनगर)
नेहरू (जवाहरलाल)–४६२
नेक (नायक)–४९१
नैताला (चट्टी)–३७०
नैथाणा–२६८
नैथाणी–२६८
नैथाना–३२१
नैर्नसिह–२१८ (काजी), २१९, २२०
नैनी–६६
नैनीडांडा–३०६
नैनीताल–३, ४, १६, ९७ (तृषि), २४७, ३११, ३१५, ३५३, ३५५-५७, ३५९
नैनीवरदा–३२१
नैन्याल–२६८
नैर्भणी–१७४
नैलचामी–२४४, ४९०, ४९१
नैलेश्वर–९६
नो-क्यु-ता-सम्–३८८
नोता–२१, २२
नोलीकांठा–३३९
नोहरा–३३१
नौकुचिया–९७
नौटियाल–२६७-६९
नौटियाल (गोविंदप्रसाद)–४६८, ४६९, ४७४
नौटियाल (भवानंद)–४९१
नौटी–१३७, २६८, २७१
नौट्याल–४९७
नौड़ियाल–२६८
नौड़ी–२६८
नौढाखाल–१२८

नौदलस्यूँ–२४१
नौरंगजेब–१५०
नौरंगा–२२३
नौली–३२१
नौसिनदेवी–३०६
न्यायपट्टक–८६, ९१,९२
न्यो–३८७
न्योडलाल (चट्टी)–३७३
न्यारिया–२७७
पकली–१०४
पंकरहस्त–८३
पखराव–३१८ (डा० वं०)
पगराणा च०–३७१
पङ्गू–३८६
पँचगाई–२४४
पंचचूली–९८ (पंचशिरा)
पंचशिरा–९८
पंचसरोवर–९८
पंचाल–४२, ५९, ६०, १५२
पयुङ्–१८५
पंजक-उपत्यका–३१६
पजाई–२७४
पंजाब–६५, ६८, १५३, २०५, २७६
पंजाब कुअर–१५०
पंजाब-सिंध-क्षेत्र–४०९, ४११, ४६८
पटना–२००, २७५
पटवारी–२४५ (-प्रथा), २८७, ३४६ (बदरी.)
पटवाल–२७४
पटवालस्यूँ–५०, २४१
पटूडा–२७४
पटूडी–२७४
पटेरपानी–३१८ (डा० वं०)
पठान–१५१, १५२
पठाली–३३१
पडियार–११९ (परिहार, प्रतिहार), १३५, २७४ (नेगीं, गिस्ट)
पणिभूतिका–७६
पण्छेन् लामा–२०७, २५९, २६०, (ट-शी०)
पंडवाखाल–१४७, १४९
पंडितबाड़ी–१५०
पंडीर–२७४ (नेगी, भंडारी)
पतली दून–३१
पताका–९८
पदमसिंह–२०८
पद्म–९०
पद्मट–७२, ७३ (०देव), ८३, ८५, ८८
पद्मनाभ लिंग–३२८ (रावल)
पद्मपाद–१११
पद्मल्लदेवी–७३, ८३, ८५
पद्महृद–९८
पधान–२८७
पनचक्की–३०१
पनवाद्योखन–४०६
पनुवाखाल–४०६
पन्त–१३४, १८९,१९४, २६८, ४४९ (मु० मंत्री), ४७८ (रुद्रदत्त०)
पन्तकोरापिका–८७
पन्ती–६२, ३०५
पन्थराम–२६८
पन्दुल–३२१
पन्याला–२६८
पबिगर–१६
पब्बर–३०, १४३ (नदी)
पमाई–६६
पयार–३०७
पयाल–११७, २७३, २७४
परकंदै–२८१
परताब–१२० (राजा)
परमा–१२० (राजा)
परमार–२७२, २७४, २७५, २७६
परशुराम–३४७ (उ० काशी)
परसा–२२५
परसारा–२७४.
परसारी–२७४
परसुराम–२११ (थापा)
पराकरम साह–१६५

पराक्रमशाह—१५८,१६२, १६३, १७५, २०९, १७९, १८०, १८२, २०९
पराशंर—३४२, ४८४
परिहार—१२४(प्रतिहार), २७१, २७४
परीक्षित—३३०
पर्वत—१८५, १८६,१९३, २०१, २०३, २०७
पलसारि—८०
पलसिया—२३२
पलाई—१७(नदी), ३०, ३१
पलायन—१५
पलासी—१५३, १९५, १९८, २३३
पल्-ज्झ—१३९
पल्याल—२६८
पल्लव—५४
पल्ला-बधाण—३३३
पवमाणक—८६
पंवार—३, ५२, ६१, ११६-८३, ११९ (शकवंशी), १२४, २७१-७५,३५०,३५१,४९१
पंवाली (चट्टी)—३७१ (०डांड्रा)
पवुपडिदल—८१
पशुपालन—२०६
पसालत—३३१
पसीन—१४
पुस्तराकभूति—८५
पहरी—२७७
पहलवी—१८७
पह्लव—५४
पाकिस्तान—२४८, ४३७
पाखी (गांव)—६१
पाँगरवासा—३७१, ४५४
पाटन—९८,११४,१९५, १९६, १९८, २००
पाटा—२७४
पांडव—२८०, (देवता), ३२६, ४२४
पांडुकेश्वर—३५, ५१, ५६, ६२, ६५, ७२, ७५, ८३, ८४, ९०, ९१, ९८ (पांडुस्थान) २५१, २५२, २७३, ३०५, ३१८ (डा० बं०), ३२१, ३३८ ३३९, ३४७, ३७२, ३७७-८०, ३९१,३९२, ३९७, ४०४, ४०७, ४६५, ४६७ (योगबदरी), ४६९, ४७०, ४७८, ४८०, ४८३
पांडुपाल—१२०
पांडुवाला—६२
पांडु स्थान—९८ (पांडुकेश्वर)
पांडे—१९१, २६७, २६८
पातली-दून—५
पाताल-गंगा—१४, ३७२ (चट्टी,) ४६२, ४६३
पातीराम—५० (डाक्टर)
पाथा—२०४
पान—१५
पानीपत—१५३, २७५
पान्थर—२६८
पान्थरी—२६८
पाबी—१५
पारकंडी—२४१
पारद—५३, ५४
पारसनाथ—३४०
पार्थिव-वंशी—२८७
पाल—७५
पाल (उदयसिंह)—४५७-६०
पालकोट—२४३
पालपा (पाल्पा,पल्पा)—१८५-८७,१८९,१९३, १९६, २०३, २२५-२७
पाल वंश—७३, ८८
पाला—३८५
पाली—९५, १०१ (द्वाराहाट), १०६, १०७, १०९
पालीगाड—२४३
पावन—९८ (पहाड़)
पांवटा—१४९
पाविल—२९५, २९६
पाशुपत—४२९

पासपोर्ट—४१०
पिंगर—१७
पिंगली पाखा—२४१
पिंडखार—२४१ (०यार)
पिंडार—७, १४, १७, २४, ३३, ३६ (नदी), ९७, ९८ (पिंडारक), ११८, १२९, १३५, (-उपत्यका), १४४, १४९, ३१५, ३२६
पिंडारक—९८
पिंडारी—४, १३, ९८
पिंडूर—२०
पितृकुंड—२८१
पिथियराज—१०८ (कत्यूरी)
पिननाथ—९८ (पिनाकीश)
पिनाकीश—९०
पिपली—२३, २८२, ३२१
पिरथी—१२० (राजा)
पिराई—३०४ (=३२ सेर)
पिसौर—२२३ (पेशावर)
पीजक—७७
पीतर—१९५
पीपलकोटी—६ (चट्टी), ६१, ३०८, ३१३, ३१८ (डा० बं०), ३२१, ३३५, ३३८, ३७२, ३७७, ३७८, ३८०, ३८२, ३९२, ३९४, ३९६-९८, ४०४, ४०६, ४०७, ४६१, ४६८
पीपलघाट—३१५, ३१६, ४०२
पीरू—१९२ (राना)
पुग—९१
पुछार—२८०
पुज्यारी—२६८
पुड़ोली—४९१
पुंडीर—१४९, १५८ (राजपूत), १८१, २७१, २७४, २७५
पुन—१८५, १८६, ४००, ४०१ (गांव)
पुनाड (रुद्रप्रयाग)—६३, ३३८, ३५०, ४१३
पुरन्दर—१८८, १९०
पुराण-लिंग—३२८ (रावल)
पुरापाषाणयुग—४२६
पुरिया नैथाणी—१४६
पुरुषोत्तम—१३५, ३४५ (रावल)
पुरोहित—२६८
पुल—३१६
पुलफोर्ड—३३३
पु-लिङ् (मंडी)—३७९, ३८५
पुलिंद—५४, ६६
पुलोमा—९८ (शिखर)
पुल्कस—६६
पुष्कर—५१ (नाग), ९८ (शिखर)
पुष्पभद्र—९८
पूरन (-पाल)—१२० (राजा)
पूर्णदेव—३४४ (स्वामी)
पूर्णपाल—१२१
पूर्णशाह—१९०
पूर्णिया—२२७
पूर्वदेव पाल—१२१
पूर्विया—२६८
पूर्व्याण—२६८
पृथिपतशाह—१४६
पृथिवीनारायण—१८८, १८९, १९४-२०४, २२५, २११, २३२
पृथिवीपतिशाह—१२३, १८८, १९३
पृथिवीपाल—१२१, २२५
पृथिवीपुर—१४५
पृथिवीराज—१२६ (चौहान)
पृथिवीशाह—१२९, १४३
पृथिवीश्वर—१०८ (कत्यूरी)
पृथीपुर—१२८, १७९
पृथीशाह—१४५
पेकिंग—२०७
पेट्टक—८१, ८६

पेशावर—२३२
पैठानी—३२१
पैडुलस्यूँ—२४१
पैन—१८५
पैनखंडा—६, ८-१३, २०, २३, ५१, ५३, ११६, ११८, (गढ़) १३७, १८०, २३९, २४१ (तल्ला, मल्ला),२४६ (पर्गना), २५१, २८९, ३०१, ३३२, ३३८, ३३९, ३५२, ४२१, ४३६, ४३७
पैनों—२४१, ३५२
पैन्यूली—२६८
पैपून—२३
पैयूँ—१८५, २०१
पैरी—८६, ९१
पोइन—१८५
पोखरा—१८५, १८९, ३१६, ३२५, ३३९
पोखरियाल—२६८
पोखरी—२१, २२, ९८ (भृगुतुंग, ०गांव पुष्कर-शिखर), २६८, ३१२-१४, ३२१
पोखाल—३२१
पोती—३८१, ३९५
पोथीबासा (चट्टी)—३७१, ३७८
पोद्दार—४१०
पौठी—३२५
पौंडा—३८९
पौडी—२०, २७, २८, ५०, ५१, २३६, २३९, २४४, २४५, २४७, २६५, २८२, ,२९७, ३१२-१८, ३२१, ३२५, ३२६, ३३१, ३३७, ३३९, ३५१, ३९६, ४०२-४
पौंड्र—५४
पौन—१५
प्यूठान—१८५, १८६ (नेपाले), २०३,२०७ (प्युठन)
प्रकाशलिंग—३२८ (रावल)
प्रतिहार (गुर्जर-प्रतिहार)—७२, ७५ (राजशक्ति)
प्रथमादित्य—८६
प्रतापनगर—२४४, २४७, ३३६, ३३९
प्रतापशाह—१२३, १३०, २४७, ३३६, ३३९
प्रदर—५३
प्रदीपशाह—१२३, १२९, १५०, १५४, १५५, १५७, १५८, २१८, ३४०, ३४५, ४४७
प्रदुमन—१७८
प्रदुमनचंद—१६१, १८२, (प्रदुमन साह, प्रद्युम्न शाह)
प्रदुमन साह—१६१, १६५
प्रद्युम्नशाह—१२३, १२९, १३६, १५५, १५८-६२, १७९-८२, १८७, २०८, २१८, २२२
प्रबल राणा—२१०
प्रभाकर—२७०
प्रमर (पंवार)—१२४
प्रमाण लिंग—३२९ (रावल)
प्रमोदसिंह—११९ (लोहवा)
प्रयाग—३४७
प्रह्लादधारा—३४१ (बदरी)
प्राक्रम—१७८, २१८ (पराक्रम शाह)
प्राणेश्वर लिंग—३२८ (रावल)
प्रिय निहारपाल—१२२
प्रीतम—१०८ (कत्यूरी)
प्रीतमशाह—१५८, १६३, १८१, १८२
प्रेम—१२० (राजा)
प्लीनी—५५
फटिक सिला—१०८ (कत्यूरी)

फतेपत शाह–४४७ (फतेहशाह)
फतेहशाह–६४(सिक्का), १२०, १२३, १२९, १३३,१४७-५०, १५४, २१३ ३१२
फतेराम–४९०
फतेहराम–१३३
फनिमल्ल–१०८ (कत्थूरी)
फनेब–१०८
फरतियाल–१५५, २०८ (दल)
फर्पिंग–१९९, २३२
फरसूडा–२७४
फरस्वाणा–२७४
फरासी–२६८
फरासू–२६८, २७४
"फरिश्ता"–७५, १३६
फर्रुखसियर–१५१, १५३
फर्रुखाबाद–१५२-५४
फलदिया–१७
फलासी–९६ (तल्ला नागपुर)
फल्दाकोट–११८
फल्याण–११८ (ब्रह्मण, गढ़)
फाकोनर–२९६, २९७
फागू–३९०
फाटा (चट्टी)–३१८ (डा० वं०), ३२१, ३७१, ३७६, ३७८, ३९६, ४२२, ४३६
फाफड–२९०
फार्चून–२९७
फाल्गुण तीर्थ–९८
फिदा खां–१४४
फिरकेप–१९२
फिरंगी (अंग्रेज)–१९६, २१४,२१६-१८, २३६-३८
फीका–१९ (नदी)
फुटगढ़–२४३, २४४
फुलंगा–२९५
फूयालू–३७०
फोस्टर–१५८
फौजदार–१६५, २१२
फोली–३३१
फ्रेजर–२११, २१२, २३०, २३१
बक्सी–१६५
बख्तावर वसन्यात–२२४, २३४
बखना स्यूँ–२१
बखरिया–२७७
बगडवाल–११७(विस्ट), २७४
बगदाद–१०३
बगलाण–२७४
बगवाडी–३३१ (उपमन्यु), ३३१, ४७०, ४७५, ४७७
बगवाड़ी (काशीनाथ)–४१९ (पंडा)
बगवाडी (केदारनाथ)–४१९ (पंडा)
बगवाडी (पुरुषोत्तम)–४६९, ४८१ (सेक्रेटरी)
बगवाली-पोखर–१५५
बंग–११५
बंगताल–२२
बंगश–१५२-५४(पठान)
बगात खरक–१३
बंगान–२४४
बंगारस्यूँ–५०, १४४, २४१, ३५२
बंगारी–२७४
बंगाल–२३४, २६९, २७०, ४५१, ४८३
बगौड़ी–२१, २२, २७४
बंगोली–३२१
बघाट–२०५
बच्छक–८७
बच्छरक–८६
बछवाण–११७ (विस्ट), २७४
बछन स्यूँ–२०
बछवाडस्यूँ–११७
बजरी–२४४
बजंत्री–३४६ (वदरी)
बंजर–३८३ (तल्ला, मल्ला)

बंज-बगड़—३१२
बंजादेवी—३०६
बटफरगढ़—१४८
बटवल चरी—३१८ (डा० वं०), ३७६
बडकोट—२४४
बडमा—२४४
बंड—२४१
बड़ासूँ—२४४
बडियारगाड—३२१
बडियाल (गांव)—३२१
बड़ुये—३४६ (वदरी०)
बडोदा—२४८
बडोनी—२६९
बडोला—२६९
बड्थवाल—२६९
बड्यारगढ़—२४३
बड्याल—२४४
बढ़ई—२७८
बढौल—१८५
बणस्यूँ—२४१
वणेलस्यूँ—२४१
बदखशाँ—१०१
बदयार—१८६
बदरिकाश्रम—(वदरीनाथ वदरीनारायण, वद्रीनाथ), ५६, ८०, ८४, ४४६, ४६६
बदरीनाथ—६ (वदरिकाश्रम), ६, ८, १०, १६, १७, ५१, ५६, ६०, ६२, ९८, ११९, १२६, १४९, १५४, १५५, २३५ (चोकी), २४५, २५०, २६२, २७३, २८०-८२, २८९, ३०२, ३०३, ३०८, ३११, ३१४, ३१८ (डा० वं०), ३२१, ३२५, ३२७, ३३७, ३३९ (ध्यान०, वृद्ध०, भविष्य०, योग०, विशाल०), ३४०-४९, ३५७, ३६६, ३६७, ३७२, ३७७, ३७८, ३८०, ३९१, ३९२, ३९४, ३९६, ३९७, ४०४-९, ४१३, ४१९, ४२०, ४२३, ४२४, ४२८, ४३३, ४३५, ४३६, ४४२-४४, ४५२, ४५६, ४५७, ४६३, ४६६-८५, ४८९
बदलपुर—१७, ११८ (गढ़), २४१ (तल्ला, पल्ला, मल्ला), ३५२
बदाणी—२६०
बधाण—५, ७ (गढ़), ८, १७, ११८, १२८, १२९, १३५, १४२, १४४, १४७-४९, १५४, २३९-४६, २९८, ३०५, ३१५, ३४७ (गढ़ी)
बनगढ़—११८, १६६, २४३ (पल्ला, विचल्ला, वल्ला)
बनगढ़स्यूं—२४१
बनघाट—३१४, ३१८, ३२१
बनपुर नाग—५१
बनवाड़ी दास—१४२
बनारस—१६५, २०४, २६६, २७०
बनारसीदास—१३३
बनाल—२४४
बनियाकुंड चट्टी—३७१
बनेलस्यूँ—५० (वणेलस्यूं)
बनेपा—१९४, १९६
बन्दर पूंछ—१२ (शिखर २०, ७३१ फुट), १४, ३३४
बन्दरभेल—१२८, ३७३, ३७५
बन्दीबल—९१
बमशाह—२१० (भीम०), २११, २१२, २२६ (चौतरिया, कुमाऊं), २३२, २३३
बमूंड—२४३
बमोथ—६२
बम्पा—२४५ (थाना, देखो वाम्पा)

बम्बई–२५६, २६६, ३५२
बरखा–३७८
बरमदेव–७
बरवाणी–२७४
बरांव–६८ (पट्टी)
बरुआल–३०१ (भेंड़)
बरेली–२७, ३१, १६०, २२५, २२७, २६२, ३०७
बरोज–१२७
बर्त्वाल (पँवार)–१३८, २४४
बर्बर–५४
बर्मा–१८४, ४३१
बलडक–३८५
बलना–३९३
बलबहादुर–४१३-१७, ४२४-२६, ४३६, ४४२ ४४४, ४४८, ४५३, ४५५, ४५६, ४५८
बलभद्र कुंवर–२२४, २२९-३२, २६७
बलभद्रशाह–१२२ (वहादुर०), १३१
बलभी–६७
बलरामपुर–३६
बलवा–३८६
वलाकदेव–१०८ (कत्यूरी राजा)
बलि–८५
बलि उपाध्याय–१९३ (कडरिया)
बलिभंजन–२०३
बलिया–४५४
बलियार गाड–३२१
बलिराज–१६१
बलिराम–४९०
वलीवर्दशिला–८६, ९१
बलोडी–२६९
बल्लालदेव–११५ (मांडलिक)
बसेरी–१९२
बसोर–२७२
बस्पा–४१, १३८
बस्यारी–१९२
बहरा–१२८
बहरोज–१२७
बहादुर भंडारी--२१२, २२४
बहादुरशाह–१२२, १३१, २०३, २०७
बहादुरसिंह–१५८
बहुगुना–२६६ (=बहुगुणा), २६९
बहुगुणा (नारायणदत्त–४३१, ४४४
बहुगुणा (शंभुप्रसाद–४९३
बाईसे–१९३
बांके–१३
बाख्तर–६५, २७६
बाग–११८ (गढ़), ३९१
बागउडियार–३८८
बागड़ी–२७४
बागभैरव–२००
बाग्मती–१९५
बागर–११८ (गढ़)
बांगर–२४४, २७४
वागल–२७४
बागली–२७६ (नेगी)
बांगा–२६८
बागिनी–१३
बागूडी (नेगी)–११८
बागेश्वर–५८, ५९ (वागेसर), ७२, ८१, ९०, ९१, ९७, ९९, १०१, १०५, १०६, ११०, १५५, ३०४, ३८८, ४७६, ४८७
बागेसर–(=वागेश्वर)
बागौरी–२५१
बाजगी (औजी)–२७७
बाजनारायण–
बाज-बहादुर–१४४, १४७
बाडागढ़ी–२४२
बाडाहाट–२८, ५७, ६२ (उत्तरकाशी), ६३, १११, ११२, १३८, १८१, २०८, २४२, ३२६, ३४७, ३४९, ४७६ (देखो बाराहाट भी)

बाडियालिक–८६
बाड़ी–२७७
बाडेछीना–३८६
बाणियाकुंडी–४५०
बादरजी–२५९
बादरसिंह–४९१
बादी–२७७
बान–३९५, ४०१, ४९८ (उपत्यका, ब्रह्मस्थान)
बानघाट–३९६
बाबर–१५२
बामसूं–२४१, ३३८ (मैखंडा)
बाम्पा–९ (=वम्पा), २५१, २६३ (नीती), ३२१, ३४७, ३८२-८५, ३९८, ४५८, ४६०, ४६६
बारह्ज्यूला–२४३
बारहस्यूँ–३२, २३९-४२, २४६ (पर्गना), ३२६, ३३९
बारादरी–२२२
बारामंडल–११०
बारास्यूँ–३०५ (बारहस्यूँ)
बाराहाट–११२ (= बाड़ाहाट, उत्तरकाशी)
बार्लो–२२५
बालकदास–२६९
बालकराम–१६, १३३, ४१२
बालकृष्ण–३४४ (स्वामी)
बालखिल्य–९८
बालादित्य–६७
बालासुती–१४, ३३२
बालेश्वर–७२, ९१, ९८, ११४-१६ (बालेसर भी)
बाह्लीक–६५
बावणी–४७१ (बावनी)
बावनी–११७ (=गढ़वाल), ४७१
बावला (चट्टी)–३७२
बावलिया–२६९
बाँसपटन–३८६
बासर–२४३
बासुकि–५१
बासोट–४०६
बाह–३१८ (डा० वं०), ३३३, ३७३, ३७५ (देवप्रयागके पास)
बिकियासाइं–९६
बिखवती (अप्रेल)–३०५
बिजनी–३१८ (डा० वं०), ३७४ (छोटी बड़ी), ३७५
बिजनौर–४, २९, २६५, २६६
बिजरानी–३९३
बिजली–३०२
बिजलोट–२४१ (तल्ला, वल्ला), ३५२
बिजल्वाण–२६९, ४९१ (जनानंद, ज्ञानानंद)
बिजोला–२६९
बिंजोली–२८२
बिज्ज–२६९
बिज्जासिंह–१३९
बिडङ्–३८७
बिडही–४, ७ (=बिरही गंगा), १४, ३९, २४९, ३०९-१२
बिडिमालक–८६
बिडोलस्यूँ–२४१
बिदासण–१५
बिदुर शाही–२०५
बिधा–१८५
बिंधोन–९९ (विद्रोण)
बिनसर–८ (श्रेणी), ३०५, ३४९ (चौथान पट्टी)
बिन्दासानी–३१२
बिमलास–३८२, ३९५
बिरखेश्वर–३९३
बिरही–६३ (देखो बिडही)
बिरहीपुल–४००
बिराल्टा–११८ (गढ़)
बिरोरिया (गंगासिंह)–४८२
बिर्खभान–१२० (राजा)
बिलजू–३८८
बिलहित–२६८, २६९ (बिलाहेत)

बिलेंडी–२४३
बिल्वकेदार–६३
बिल्वल–२६८
बिशोर (रामपुर-)–११८ (महासू), १३०, १३२, १३८, १३९, १४७, १८७, २०५, ३४६ (=विशहर)
बिसौली–२०५
बिस्ट–२४२ (०पट्टी), २७१, २७३-७६
बिहार–२३२
बीजक–८०
बीठ–२६५ (विस्ट), २८६
बीरभद्र–२२१, २२२
बीरी–१९
बीरोंखाल–३०६, ३१५, ३२१,
बुकसर–३१८ (डा०वं०)
बुवकु–७० (उइगुर सेनापति)
बुक्याल–३०७ (देखो वुग्याल)
बुखंडा–२३
बुंगीधार–३२१, ३५२, ४०२
बुगेलसिंह–१५८
बुग्याल–(=बुक्याल, पयार) ३०७, ३०८, ३३९, ४३२, ४५३
बुग्याल (कुवारी)–३३९
बुग्याल (सोली-)–३३९
बुटवल–१८५ (बुटौल), १९६, २२५-२७, २३२, २३५
बुटौला–२७४
बुडवाल–२५५
बुत्थू–२९१
बुद्ध–३४० (मूर्ति), ४५२
बुद्धदत्त–१०४ (गिल्गित राजा)
बुद्धश्रवण-शत्रु–८२ (बुद्धश्रमण शत्रु)
बुद्धाचल–५६ (वौद्धाचल)
बुधाणा–२६९
बुन्दी–३८५
बुरफू–३८८ (मल्ला)
बुलसाड़ा–२७२, २७५
बूंगी–२४१ (वुंगी भी)
बूढ़ाकेदार–३७१
बूढ़ासीनी–३१३
बूढ़ीगंडक–१९२
बूबाखाल–३२२
बृटिश सरकार–२२७, २४७
बृद्धकेदार–४०६
बृद्धबदरी–३४७
बेंक्स–२९६
बेग–७२
बेगवाल–२६८
बेटातोली–१३
बेड़ा (वादी)–२७७
बेताल–१११
बेतिया–१९८-२००, २०३, २२५ (-राजा)
बेदी–२७१, २७५, २७६
बेनीताल–२८२, २९७, २९८
बेनी शहर–१९३
बेन्द् वाल–२७५
बेरवाई–३२२
बेरी नाग–३८६
बेरूनी–१०३ (देखो अल्बेरूनी भी)
बेलनधार–३२
बेलार–६६
बेहरमपाल–१२०
बैजनाथ–५८, ५९, १००, १०१ (=वैद्यनाथ, कार्त्तिकेयपुर), १०४, १०६, ११०, १३३, १३५, १५५, ३१५, ३३०, ३३५, ३४२, ३४८, ३९१, ३९२, ३९५, ४०१, ४७६
बैजराव–३१२, ३१५, ३१६, ३२२
"बैजूकी बामणी"–१८१
बैटन (कमिश्नर)–८, २९१, ३३८
बैडनी–२०८

बैंडिवल–८६
बैंडोगा–२७५
बैंडोगी–२७५
बैरागन चट्टी–४५५
बैरागना–३२२
बैरागी–२६९
बैराट–६३, १५९ (गढ़)
बैरासकुंड–६३
बैलक (चट्टी)–३७०
बैस (राजपूत)–१०७, १२४
बोड–२७८
बोधगया–४७५
बोमलास–३८७ (मल्ला)
बोरचा (नाग)–५१
बोरा–४९०, ४९८
बोरैंला–२४
बोसी–३०४
बोहरा–१९१, २७५
बौखंडी–२६९
बौद्ध–२७८
बौद्धाचल–(देखो बुद्धाचल)
बौराई–२६९
बौली–३२२
बौसोली–२६८, २६९
ब्क्र-शिस्-ल्दे–(देखो टशी-दे)
ब्यांस–९६, ९८, १०० (व्यासाश्रम), २५५, २६३, ४७९
ब्यासुड़ी–२६९
ब्युम–१५
ब्योङ–३७१, ३७६ (चट्टी), ४३६, ४३७
ब्रजमोहन–१३३
ब्रह्मकंठी–९८ (ब्रह्मद्वार)
ब्रह्मकुंड–३३६
ब्रह्मकपाल–९८, ३४१ (बदरी), ३४६
ब्रह्मचारी–२८०
ब्रह्मणिक–१८७
ब्रह्मण्यलिंग–३२८ (रावल)
ब्रह्मदत्त–१२७
ब्रह्मदेव–१०८ (कत्यूरी), ११०
ब्रह्मद्वार–९८
ब्रह्मनाथ–२६८
ब्रह्मपुत्र–६८, ३७९ (-उद्गम)
ब्रह्मपुत्रस्थान–९८
ब्रह्मपुर–५७
ब्रह्मपुरी–११९
ब्रह्म-सरोवर–९८
ब्रह्मानंद–३४४ (स्वामी)
ब्रह्मेश्वर–८७
ब्राह्मण–२६५
ब्रूये–३७५
ब्रेकेट–१२०
भकुंडा–३३८
भक्ति थापा–१८१, २०३, २१०, २११, २३३
भक्तिपाल–१२१
भगत जी–४८२
भगतसिंह–१४८
भगदत्त–१२०, १२१ (०पाल)
भगद्वार–२४३
भगवतपुर–१२८
भगवानपाल–१२०
भागीरथ–८३, ८५, १८९ (पन्त), १९०
भंगेला–२९५
भगोता–१६८
भग्गू–११८ (ठाकर)
भज्जी–२०५
भट–२६६, २६८-७०
भटवाडी–(भटवारी), ६३, ३३१, ३४९, ३७० (चट्टी), ४०२, ४९०, ४९१ (नौटियाल)
भटवारी–६३
भटोली–३२२, ३९३, ४०७
भट्ट–२६९ (भट)
भट्ट (भटमास)–२९३
भट्टीसेरा–१४८, ३७२ (चट्टी), ३७५
भडकुला (चट्टी)–३७२
भडासन–२७०

भंडारस्यूँ—२४४
भंडारी—२७०-७६, ३४६ (वदरी॰ सानभंडारी)
भंडी-वंश—६९, ७०
भणी गांव—३३१
भदकोट—९९
भदुरा—२४४
भ-दे (भ-ल्दे)—११३
भदेला—२६९
भद्र—२२१
भद्वान—२६९
भयहरनाथ—४३८
भरके—८२
भरत—८५, १२३, १२४ ("ज्योतिराय"), १२८ १४०
भरतपुर—२२६
भरतवालकुंड—२२
भरदार—११८ (गढ़), २४४
भरंपूर—११९ (गढ़), २४४
भरोज—१२७
भरोत—११४
भरोसिकं—९०, ९१
भलडा—२७५
भल्याणा—१११, ४०२
भल्दियाना—३२२, ३६८, ३६९
भवन (थाना)—४०३
भवाई—२८२
भवागढ़—११९
भवानंद—१६३, १६४, १६७, १६८, १७१, १७६, ३४४ (स्वामी), ४९० (विशालमणि)
भवानी पांडे—१९२
भवानीशाह—१३०, २४७
भवारी—१५
भवाली—३९१, ३९२
भविष्य वदरी—३३६, ३४७ (तपोवन), ४६५
भाई (गंगा)—१५
भागदेव—२७०
भागलपुर—८८
भागीरथी—७, १४, १५, ३३, ४०, ५२, ९१, १३६, २४६, २५१, २९१, ३०३, ३३२, ३४७, ३४९, ४१३
भाट—२७७
भाटिया—३५२
भाटियाजी—४१०, ४११
भादगांव—१९४ (भातगांव, भक्तपुर, नेपाल), १९५, १९६, २००
भानुप्रताप—११८, १२६, १२७
भानुवीर—२७०
भाबर—२९, ३६, ३७, २३९, २४१, २४२, २४६ (पर्गना), २९४, ३०३, ३२३, ३३१
भारत—३, १३६, १९६, २३५, २४८, २९७, ४५१
भारतखंड—१० (शिखर), १२
भारतीपाल—१०९ (कत्यूरी)
भारदार (-सौरा)—४९१
भारद्वाज—४१९ (-गोत्री)
भारवाहक—३५५
भालचन्द्र लिंग—३२९ (रावल)
भावकुंड—३८२
भावकोट—५
भिखियासेन—३१५, ४०६
भिंग्रीकोट—१८५
भिछाखोरी—२३६
भिरी—३२२
भिलङ्—२०, १२६, १२७, २४४
भिलंगना—१५, ३३ (भिलंगणा), ९८ (भिल्लक्षेत्र), २४६, ३३६
भिलम्—१४
भिल्ल—५१, ५२
भिल्लकेदार—६३
भिल्लक्षेत्र—९८ (भिलंगना)
भीम—४३२, ४३३ (भीमसेन), ४९४

भीम उडियार—९८
भीमताल—९८ (भीम-) सरोवर, पुष्पभद्र, ०नदी)
भीमपाल—१०३ (कावुले)
भीमसरोवर—९८
भीमसेन—९८, २१५, २२०, २२५, ४१७, ४७९
भीमसेन थापा—२०३, २०४, २०६, २१३, २१४, २२४-२६
भीरकोट—१८३, १८५, १८६, १८८, २०१, २०३ (नेपाले)
भीरी चट्टी—३७६, ४१७
भुकंड—३२८
भुकुंडकवि—२६९
भुक्की—३७०
भुक्तिपाल—१२१
भुजनपाल—१०७ (कत्यूरीं)
भुवना—११९ (गढ़)
भुवनेश्वर (पाताल-)—९८
भूइज्जार—८६
भूदेव—७२-७५, ८१, ८२, ९०, २७८
भूपसिंह—११८ (थोकदार), २०५
भूपाल—१८७, १८८
भूल—२७७
भृगुतुंग—९८
भृगुधारा—३४१ (बदरी०)
भृगुपतन—३२७, ४२४ (स्वर्गारोहिर्णी), ४२५
भृगुपंथ—१२
भृगु पृष्ठ—१३
भेकल ताल—१७
भेकल नाग—५१
भेटसारी—८६
भेत्—६१, ६३, ३२६ (नारायणकोटीं), ३७६, ३७७, ४२०, ४३८
भेद—९५
भेरङ्ग—९८ (पट्टीं)
भेलकना (चट्टीं)—४५३
भैरगांव (अजमीर)—२८२
भैरव घाटी—३३२, ३४९ ३७० (चट्टी) ३७१, ४०२
भैरव-झांप (२२१४१ फुट)—१३, ३२६, ४२४, (स्वर्गारोहिणी, भृगुपतन), ४२५
भैरव थापा—२११
भैरवसिंह—१९६
भैंसखेत—३१६
भैंस्वारा—३१४
भोगदत्त—१२५
भोगता—१८४
भोज—६९, ७० (गुर्जर), ७१, ७३, १०४, १०७ (कत्यूरी)
भोट—(तिव्वतं) ४, ५२, ७५, ९५, १०४, १०५, ११७, १९३, १९६ २३४
भोटचट्टी—३७१
भोटान्त—२५१
भोटांतिक—४२, २४६, २५१, २५२, २८३-८५, २९०, २९३, ३०४, ३०८, ३०९, ३३१, ३३२, ३६५, ४६०, ४७९, ४८७
भोटिया—२७५
भोटलिपि—४३४
भौन—३०६ (भवन)
भ्यूंखी (गांव)—(दुर्गेश्वर)
भ्युंडर खरक—१३
भ्युंढार—४०० (नन्दन-वन), ४०१, ४८४
भ्यून—३२२
मकवानपुर—१८७, १९८, १९९, २०१, २२४-२६
मकवानी—१८७
मक्का—२९३
मखलोगा—२७३-७५
मखलोगी—२४४, २७५
मगध—६७, ७३
मगर—४२, १८३, १८४, १८७, १८९, १९१, १९

मगरा–४९१ (जौनपुर)
मगरांत–१३३, १८८ (मगरप्रदेश)
मंगल–१२० (राजा)
मंगलोर (सहारनपुर)–१३२
मंगितपाल–१२१
मंगू–३३८
मंगोलिया–२९६, ४३१
मग्गूको भांडा (चट्टी)–३७१
मग्नदेव–२६७
मङ्-नङ्–३८०, ३८१, ३८५, ३९०, ३९७
मङ्-युल्–३८७
मङ्-स्रोङ्- मङ्-ब्चन्–६९
मछोङ्–४०६
मंजखोला–३६८, ३६९
मटियाना–३९०
मटियाली–३२५
मठ (चट्टी)–३७२, ३७६ (देवप्रयाग), ४५८, ४८६
मठिक–७७
मडवाल–२६९
मंडल–३१२, ३१३, (डा० वं०), ३२२, ३२३, ३७२, ३७८, ४५१ (चट्टी), ४५४
मंडली–३०
मंडी–२०५, ३७९, ३८४
मंडुवा–२९२ (कोदा, रागी), २९३
मणदेव–४२० (राजा)
मणिकर्णिका–३४७
मणिभद्रा–९८
मतवाली–१८९, १९४
मतहसवर–२६६
मत्स्य–५४
मथुरा–२७२, २७४, ४१९
मथुरा बौराणी–१४५
मदनचंद–७४
मदन पाल–७४, १२१
मदनमोहन–१३३
मदनसहायपाल–१२१
मन्दाकिनी–७, ११ (उद्गम), १२, १४, १५, ३३, ९६ (ऊपरी-धारा), ९९, १००, ११७, २३६, ३०३, ३१४, ३२६, ३२७, ३३२, ३५०, ४१३, ४१७, ४२१, ४२२, ४२६, ४२७, ४३६, ४४८
मंदाखाल–३१२, ३१३, ३१५
मंदाल–१५
मद्रक–५४
मद्रास–४४९
मन्दोवर (विजनौर)–६८
मन्द्रवाल–२७५
मध–१०० (नदी)
मन्धाता–९८
मधुमक्खी-पालन–३१०
मधेस–२१५
मध्य-एसिया–४२, २५६
मध्यमेश्वर–१९, ३२७, ३३०, ३४९, ३५०, ४८२
मनमोहन–१३३
मनियारस्यूं–२४१ (पश्चिमी, पूर्वी)
मनिहारी–२८२
मनेरी (चट्टी)–३७०, ३७४, ३७५, ३७९, ४०२
मनोकामना–१९०
मन्मथ–१८७, ३४७
मन्यार–२४२, २७५ (पट्टी)
मन्यारस्यूं–५०
मन्यारी–२७५
ममगाई–२६९
ममने–९
मयचन्द–२६७
मयाल–२७५
मरछूला–३१२, ३१५
मर (गांव)–५१
मरतोली–३८८, ३९९, ४००
मरस्याङ्–१९२-९४, २०२ (नदी)

मरहट—१७९
मरहटा—२७३, २७६
मराठा—१५३, १५४
मराड (डांडा)—४०३ (मोरयाण०)
मराडूड़ी—२६९
मर्कतेश्वर—९८
मलबार—३४५
मलाणी—४२, ४८
मलाया—१८४
मलारी—९, ३५, २५१, ३१४, ३४३, ३८२, ३८३, ३९५, ३९८, ४७०, ४९४
मलांव—२३२, २३४
मलासी—२६९, २७१
मलेथा—१३८, २४३
मलेबम—१८५, १९३
मलेया—१३८
मलेरिया—३२३
मल्दाधार—३२
मल्याल—३०५
मल्ल—१०६, ११३ (उस समय सप्तगंडकीसे कर्नाली ग्रौर काली तक के राजवंशोंमें मल्ल उपाधि प्रचलित थी) १८६, १९४ (वंश)
मल्लनारायण—९८
मल्लाचट्टी—३१३, ३७०, ३७४, ३७५, ३७९
मल्लिका—९८
मल्लिकार्जुन—९८
मल्लिकादेवी—९८
मल्ली-दसोली—३०८
मवालस्यूँ—२४१, २८२
मसऊद—१०४ (गज़नवी)
मसंतन—८१
मसूरी—२७, २३२, २४७, २७९, २८२, ३१३, ३२६, ३५३, ३५५, ३५९, ३६१, ४०३-६, ४०९, ४१०, ४१२, ४१३, ४६१, ४६५, ४८९
मंसूर—१५२
मसोल्या—२७५
मस्कोट—२०७
मस्ता—४२०
मस्तूल—५६, १०१
महतर—१०४
महताब—१२० (राजा)
महमूद(गज़नवीं)—१०३, १०४
महरा—१५०, २०८, २७२(–दल)
महर्जियाक—८६
महलमोरी—२०६
महलोग—२०५
महा—१२० (राजा)
महाकाल—४२९
महाकालेश्वर—३९३, ४०३
महाँचंद—२०५
महादेवसर—६८ (मणिभद्रा)
महादेव-सैण (चट्टी)—३७३-७५
महान—१२० (राजा)
महानन्द—१६२
महापंथ—१२, ९९, १००, ३२७ (शिखर)
महाभद्र—९९
महाभारत—६०
महामारी—३२३
महाराम—१७५
महाराष्ट्र—२६७, २६९, २७३, २७६, ३३७ (भट्ट), ४८३
महालिंग—३३० (रावल)
महावीर (तीर्थंकर)—४१५
महासिंह—२१९
महासू—५०, ११८, २७९ (विशोर), ३०२
महिपाल—७३, ७४
महिषमर्दनी—९९, ४२१, ४३६
मही—१२० (राजा)
महीन्द्रमल्ल—१९४, १९६
महीपति—१४०
महीपति शाह—१२३, १२९, १३६-३९, १४३, २०१, २०२

महीपाल–७१ (गुर्जर), ७२
महेन्द्र–३९
महेन्द्रचंद्र २०७
महेन्द्रपाल–७१ (गुर्जर), ७३
महेन्द्रसिंह–२०५, २०८
महेशानंद–४६८
महोदर–१८२
माको–९८ (मर्कतेश्वर, तुंगनाथके पंडोंका गांव)
माणा–१०, १३, १६, २७, ३६, १५५, २४५ (थाना), २५१, २५२, २६२, २६३, २७५, २७९, २८३, २८९, २९०, २९४, ३०३, ३१४ (जोत), ३३१, ३३८-४१, ३५२, ३८०, ३९०, ३९४, ३९७, ४०५, ४५९, ४६०, ४६५, ४६६, ४७०, ४७१, ४७७-८३, ४८७
माण्डलिक–११५
माधवसिंह–१३८ (भंडारी), १४५
माध्वी–९९
मातामूर्त्ति–३४१, ३४७, ४७०, ४७३
मानवर–११८
मानवेन्द्रशाह–१२३, १३०, २४८
मानशाह–१२२-२४, १२७, १२९, १३१, १३९
मानस–९९
मानसखंड–९०, ९५
मानस प्रदेश–११२
मानसरोवर–५८, ९८ (ब्रह्मसरोवर), ९९, २३५, २५६, ३४९, ३५२, ३६६, ३७८-९०, ३९७-९९, ४०५, ४०६, ४५९
माना–९६, ३०४(माणा)
मानिकसेन–२०१
"मानोदय"–१२३
मानोशाही–६४
मान्धाता–८३, ८५
माफी–२४६
मामचंद (लाला)–४९१
मायापुर–६८ (हरद्वार) २७२-२७५
मारछा–१४२, २५२-५५, २७८, २७९, ३५२ (माणा), ४७०, ४८३
मार्छानी–२५६
मारी–९६ (-गुप्तकाशी)
"मार्कण्डेय पुराण"–५७
मार्तण्ड–६६
माल–१७८
मालकोटी–२६९
मालगुड़ी–२७०
मालन–५ (शकुंतलाकी मालिनी), १४, १५
मालवराज–६८
मालवा–१२५, ३८५
मालवेश्वर–६७
माला (गांव)–९८ (मल्लिका)
मालिया–२७०
माली (पट्टी)–९८ (पावन)
मालीवाल–२७०
मॉर्ले–२२८
मावी–२२९
मासिर–३०९
मासी–२७४ (गढ़), ३१६, ४०६
मामून–१०३
मासोन–३१२, ३१४
मास्को–१२७, ४६३
मिठवाला–३१८ (डा० वं०)
मिन्टो–२२५, (लार्ड)
मि-फम्-छो–९९ (=मानसरोवर)
मि-यङ–३८९, ६९०
मियाँ–२७१-७६
मियांवाला–१५०
मिर्चं–२९३

मिल (डाक्टर)–११२
मिलम्–३८७, ३९९, ४००
मिश्नरी–३२५
मिश्र–२६८, २७०, ४८९
मिसर-ता-सम्–३८८
मिस्र–५८
मिस्सर–२७०
मिहिर कुल–६५, ६७ (०गुल), १०२
मीचा—१८६-८९ (खान)
मीर कासिम–१९८
मुकाणी–३४५ (नम्बूतिरी ब्राह्मण)
मुकंदराम–१३३
मुकुन्दसेन–१९३
मुकुंदीलाल–१३४, ४८२ (वैरिस्टर)
मुखमाल–२७५
मुखवा–२७५, ३३१
मुंगरसंती–२४५
मुंगरा–११९
मुगल–१५१ (–शक्ति), १५४ (-साम्राज्य)
मुगेर–८८
मुचकुन्द गुफा–३४१ (वदरी०)
मुंजराज–१०७ (कत्यूरी)
मुंडन धार–३२
मुंडीपानी–३१८ (डा० वं०)
"मुताखरीन"–१५२
मुनवरा–६३
मुनसियारी–३८८
मुनियारसिंह–१७९
मुनिवरसिंह–१५९
मुनीकी रेती–३७४
मु-ने-चन्-पो–६९
मुरली खवास–१८९,१९०
मुराद–१५१
मुरादाबाद–३१, १४४, १५१, ३१५
मुरारी-२६९
मुरारी लिंग–३२९ (रावल)
मुर्शिदाबाद–१५२-५४, १९८
मुलतान–१०५, १५३, २२४
मुलद्युली–२७०
मुलाणी–२७२, २७५
मुसड़–२७०
मुसड़ा (मुसुड़ा)–२७०
मुसल्मान–२७८
मुसापानी–३८०
मुसीकोट–१८५, १८६
मुसागली–३१२, ३१५, ३१८ (डा० वं०)
मुहम्मदशाह–१४४, १५२, १५३
मुहम्मद गौरी–१११
मुहम्मद तक़ी–१९६
मूंडन–३०५
मूलखाना–३११
मूलेन–९८ (मल्लनारायण)
मूसदेव–११५ (मांडलिक)
मूसेटी—२९७
मेची–१८३, १८४, २३५
मेंजीवराम–२६६
मेद–८०
मेदिनीशाह–१२३, १२९, १४४, १४५, १४८
मेना–९६ (नदी, उरगम्)
मेयाड़दी–१९३
मेरठ–३, ३०, ७१, १५२
मेरिनो–३०९
मेलगुंवार–३९३
मेलचौरी–१४९, ३९३
मेलधारस्यूं–२४१
मेले–३०४
मेहलचौरी–२४५ (चौकी), ४०७
मैंकोट–२७० (मैंकोटी)
मैखंडा–२४१, २८१, ३३८ (वामसू), ३७१, ३७६, ४२१, ४३६, ४३७, ४४७
मैटवाणा–१३७, २७०, २७१

मैटवाणी–२७०
मैठणा (चट्टी)–३७२
मैथाना–३९४
मैथिल–२६६, ४४७, ४७३, ४७४
मैंघी–१९२
मैनपुरी–२७३, २७५
मैयार–२४
मैराव जोशी–२७०
मैसी साहु–१४७
मोक–२३
मोगल–१३१
मोची–२७७, २७८ (वाडी)
मोटा ढांक–२४१
मोंडा–२७५
मोन––१८४
मोरघाटी–३१८ (डा० वं०)
मोरध्वज–६३
मोरयाण डांडा–४०३ (मराड०)
मोरंग–२०१, २०२
मोलाराम (१७४०-१८३३ ई०)–१६, ६३, १३३, १३४, १३९, १४५, १४७, १५१, १५५, १५७, १५९, १६२, १६३, १७५-७७, १८२, २०८, २१३-१५, २३६-३८, २९४, ३४० (टि०), ४१२
मोलें–२३२
मोल्पा–२५५
मोल्या–११९
मोहकमचंद–१६० (=मोहनचंद, मोहनसिंह), १६१, १६४
मोहन–४०६
मोहनखाल–३१४
मोहनचंद–१५५ (मोहकमचंद भी), १६०, १७०
मोहनसिंह–१५५, १६२ (=मोहनचंद)
मौखरि–६७, ६८, ४४५
मौंदारा–२७५
मौंदाडस्यूं–२४१
मौंदाड़ी–२७५
मौराडा–२७५
मौरी–१७
मौर्य––६४
यक्षमल्ल–१९४
यच्छसद्दा–९१
यच्छसूघ–८६
यज्ञलिंग–३२८ (रावल)
यदुवंशी–२७१, २७२
यमुना–३, १४, ३३, २०५, २३३
यमुना ग्राम–९१
यमुनोत्री–७, १२, १७, ६०, १०२
यवन–५४, ६४-६६
यशपाल–७४
यशोब्रह्म–१८८-९
यस्सन–५६, १०१
याक–(चंवरी) ३०८
याकूब (लैसपुत्र)–१०३
याखा–४२, १८४
यार मुहम्मद खां–२३२
याहडदेव–११५ (मांडलिक)
युधिष्ठिर–५३, ११६, १२८, ४५२
युरोप–१९५, २९६
युसुफजई–२३२
योगबदरी–३३८
योगीन्दर–४९६, ४९७ (योगीन्द्र)
योशि–८४
योशिका–९१ (जोशीमठ)
योषिक–८६ (जोशीमठ), ८७
रंगनाथ–२२६
रंगरेज–२७७
रंगी बिस्ट–१८०
रघान–२९७
रघुनाथ–२६७, ३३७, ३४४ (स्वामी)
रघुनाथ-मंदिर–१३०
रघुबरदत्त–४९०
रच्चपहिल्लका–८७

रजनार–२७५
रजपूत–१५६
रजदेव–४३२ (राजा)
रंजनदेव–११२
रजवार–२७२
रज़ाशाह–१८७
रंजे–२०३
रडवक–८७
रणजितमल्ल–१९४, २०१
रणजितसिंह–२०५-७, २१७, २२३, २२४
रनजीतसिंह–२११ (कुंवर), २२९-३२
रणजोर–२२१, २२२
रणजोरसिंह–२०५, २१२, २३२
रनजीत–१२० (राजा)
रणथंभौर–२७१
रणदुल्लशाह–१९३
रणध्वज–२०४, २२६ (थापा)
रणबहादुर–६४, २०२-४, २०७, २१०, ४४७
रणमल्ल–१९४
रणरुद्रशाह–१९६
रणावत–२७५
रणौत–२७५
रत गांव–५१
रतन–११९ (गढ़)
रतड़ा–१३७
रतनपाल–१०३ (रनवल)
रतीश्वर–९९
रतूड़ा–२७०, २७१
रतूड़ी–१२० (हरिकृष्ण), १२४, १३७, २७०, ३४४ (हरिकृष्ण)
रतन परकास–२२२
रत्नपाल–१२१
रत्नमल्ल–१९४
रत्नावली–९०-९२
रथवाधाब–३१८ (डा० वं०)
रथवाहिनी–९९
रदमवा–३२२
रनचूला–१५४
रनडोला–२७०
रनधीरसिंह–२११
रनबल–१०३ (रत्नपाल)
रब्बी–२९२, २९३
रमक–६६
रमणी–३५
रमनी–४ (दसोली), ७, २८२, ३१२, ३१५, ३१८ (डा० वं०), ३५०, ३९१, ३९५ ४०१
रमानाथ–१३३
रमोला–११९, २७५
रमोली–११९, २४४
(तल्ली, मल्ली),२७५
रम्य–८१
रवाईं–१२, ३३ (रेंज), ११७ (वडकोट), ११९, २३३, २४४, २८०, ३३१
रविलखेडा–४९०
रवेश्वर (मठ)–३४७ (जोशीमठ)
रसिया–३९५
रसुवा–१९२, १९३
रसोली–२६८
रस्वाला–३४६ (सरोला)
रहमतख़ां (हाफ़िज़)–१५५
रहस्य लिंग–३२९ (रावल)
राई–४२, १८४
राउत्तराज–११५
राकसताल–९९ (रावणह्रद)
राक्षसविवाह–२८७
रांगण–१८१, २७५
रागी–२९३
राजगढ़ी–३२५
राजगृह–५१
राजदास–२६९
राजपाल–१२६
राजपुर–१२८, २४७
राजपुर–२४७
राजपुरा–१५०

राजपूत—६५, १५४, २६६, २७१
राजबुंगा—२३
राजमल—११२, १९३
राजराजेश्वरी—९९
राजस्थान—२६७, २७५
राजस्वरूप—१४४
राजा-खान—२१, २२
राजा रामदयाल—१५८
राजी—४२, ६० (भाषा), १८४
राजेन्द्र—२६७
राजेन्द्र लक्ष्मी—२०३
राज्यपाल—७३
राज्यप्रकाश—१९७
राज्यबर्धन—६८
राज्यश्री—६८
राडीधार चट्टी—३६८, ३९६
राणा—२७५, २७६
राणाकोट—३२२
राणावंश—१८७
राणी—११९ (गढ़)
राताकोना—३८१
रा-नग्-छू—३८०, ३८१, ३८५, ३९०, ३९७
राना—९९, १९१
रानाकीना—१०८(कत्यूरी)
रानागाउं (चट्टी)—३६८
रानीखेत—३१५, ३५२, ३९१, ३९२, ४०३
रानीगढ़—८, २४२, ३२६
रानीबाग—८, २०, ९६, ३१८ (डा० बं०) ३७३ ३७५, (चट्टी)
रापती—२३५
राम—७४ ८७, १२० (राजा), १८८
रामकृष्ण—१९८ (कुंवर), २३१, ३४४ (स्वामी)
रामगंगा (पश्चिमी)—३, ७, १४, १५, २४, २९-३३, ९९ (रथवाहिनी), १४४, १४९, ३१५
रामचंद्र (रामब्रह्म रघुनाथ)—३४५ (रावल)
रामज़े—२९, २४७ (कमिश्नर), २८२ (हेनरी०)
रामदयालसिंह—१८१, २०८ (लंढौर-राजा)
रामदेव—२६६
रामन्—३४५ (रावल)
रामनगर—६१, २५१, २९५, ३०३, ३११, ३१५, ४०६
रामनरायन—१२० (राजा)
रामपुर—१३८, १३९, १५२, १५८, ३७६ (रुद्रप्रयाग,) ३०२, ३२३, ३७१ (केदार-), ३७३, ३७६, ३९३, ३९९, ४८८ (-विशेर), ४१५, ४२२ (तिरजुगी)
रामबगड़—४६७
रामबाड़ा (चट्टी)—३७१, ३७६, ४२३, ४२४, ४२८
रामभजन—२६६
रामभद्र—७७
रामराय—१४०, १५०
रामरू—१२० (राजा)
रामशाह—१८५, १८९, १९१-९४, २३५
रामसरोवर—९९
रार्मासिह—१४५
रामा—१६३, १८०-८३
रामाधीन—२११
रामानन्दी—२८०
रामानुज—३३९
रामानुजी—३४४
रामासिराई—२४५ (तल्ली, मल्ली)
रामी—११९ (गढ़)
रामी तरसाली—९९ (गांव)
रामूरा—३८१
रामूरो—३९७
रायकाना—१३
रायल (डाक्टर)—२९६

रालीमूलक–९१
राव–५५
रावण–१८२
रावणह्रद–९९ (राकस-ताल), ३७९
रावत–११७ (०स्यूं), ११८, ११९, २७३, २७६
रावत (बहादुरसिंह)–४९९
रावत स्यूँ–५०, २४२
रावल–३२६, ३२७, ३४०-४६, ३४३ (नायव०), ३४६ (वदरी०), ४४४ (केदारनाथ०), ४१९
रानी–५५
राष्ट्रकूट–७०, ७१
रिखनीखाल–८
रिखीखाल–३२२
रिखोला लोदी–१३७, १३८, २७५
रिंगबाड–२४२
रिंगवाड़ा–२७२ (रावत), २७५, २७६
रिगबारी–३२२
रिंगवाल–२९८
रिणी (६५०० फुट)–२९०, ३८२
रिनी–८ (नदी) ९, १४ (०गंगा), ३३८
रिमाखिन्–३८३
रिलकोट–३८८
रिशिकेश–१४०
रीसिङ–१८५, १८६, १९३, २०१ (नेपाले), २०३, २०७
रुदक–१३९
रुदता–९६
रुद्र–१८८, ४४१
रुद्रगंगा–१४
रुद्रचंद–१३२, १३५, १३६
रुद्रनाथ–१४, ३२७
रुद्रपाल–१०१ (कत्यूरी)
रुद्रपुर–३३१
रुद्रप्रकाश–१४९
रुद्रप्रयाग–१२, १५, ६३, ३१४, ३१८ (डा० वं०), ३०५, ३०८, ३११, ३१४, ३१८, ३२२, ३२५, ३३३, ३३८ ३५०, ३७३-७७, ३८०-८२ (= पुनाड), ३९६, ४१३, ४८६
रुद्रवीर (चौतरिया)–२२०
रुद्रवीरशाह–२१०, २११
रुद्रशाह–१९३
रुल्लथ–९१
रुपिन–१४, १६
रुहाडी–३३१ (वाशिष्ट तिवारी)
रुहेलखंड–६०, ७१, १५१-५४, २२५, ३३५
रुहेलें १५३-५५, १५९, ४१६, ४२१, ४२३, ४३३, ४३५, ४३६, ४४२, ४४७, ४५३, ४५६, ४६५, ४७६, ४७७
रुडिया–२७८
रूपचंद–११७, २६७, २७०
रूस–५८, १९५, २५७-६०
रूसी–६६, २९६
रेकिनडोर्फ–२१
रेणु–६३
रेतीपाल–१२१
रेपर–२११, २१२
रेल–३११
रेतपुर–३१२
रैका–११९ (गढ़), २४४
रैणका (राजा)–१०७, १८६
रैनका–१०७
रैवानी–२७०
रोड–४०२
रोमक–६८
रोमन कैथलिक–१९५
रोसी–१९२

रोहिदास—१९२
रौछेला—२७६
रौत (रावत)—४८७
रौतहट—२२५
रौतेला—२७६, ४९१
रौथाण—२७६
लउदधा—७२
लंकपाल—१२०
लंका—१२, ४३१
लकुलीश (पाशुपत)—१०५, २७८, ३३३, ४४०, ४४६, ४५६
लक्षणपाल (महा)—१२१
लक्ष्मणझूला—६, ३७४, ३७५ (लक्ष्मण-स्थान)
लक्ष्मणस्थान—९९
लक्ष्मीचंद—१३२, १३६
लक्ष्मीनारायण—३३०, ३४७
लक्ष्मीमठ—३४७
लक्ष्मीमंदिर—३४६ (वदरी०)
लखनऊ—१५२, २२५, २५०, ४३२
लखनपाल—१०० (कत्यूरी)
लखनपुर—६१, ६६, ६८
लखवार—३४६
लखेड़ा—२७०
लखेंड़ी—१३७, २७०, २७१ (लखेसी)
लखेसी—१३७
लंगासू—३२१, ३२२, ३७२ (चट्टी), ३९४
लंगूर—११९ (गढ़, गढ़ी), २४२, २८२, ३१४ (डांड़ा), ३५२
लंगूरगढ़—१८०, १८१, २०७, २०८
लंगूरगढ़ी—८, २१२ (लंगूरगढ़)
लघौल—११५
लङ-दर्-म—६९, ७०, ७१, ७४
लछमन—१२० (राजा), १७३
लछमनगिरि—२२५
लछमनझूला—२४, ९९ (लक्ष्मणस्थान), ३१५, ३१८ (डा० बं०)
लछमी—२०९
लछे—१२० (राजा)
लटहूं—१८५ (नेपाले)
लंढौरा—२७, १५८ (= लंढौर), १८१ (जि० सहारनपुर), २०८, २७२, २७५, २७९, ४०३, ४०४
लदाख—५८, २६२, २७९
लद्धांदेवी—८१
लमगौंडी (बामसू)—३३१
लमजुङ—१८५ (= लामजुङ्), १८६, १८९, १९०, १९१ १९२, १९६, १९९, २०१, २०३, २०७, २३३
लयादेवी—८२
ललित त्रिपुरसुन्दरी—२०५
ललितशाह—१२३, १२९, १५५, १५८-६४.
ललितशूर—५६, ६२, ६६, ६७, ७२-७७, ८१, ८८, १२४, २७८
ललितसाह—२१८
लवानी—१३
लस्तेर—१५
लस्था—२४४
लाटा खरक—१३
लातूर—९५ (नदी)
लामजुङ—देखो लमजुङ्
लामबगड़ (चट्टी)—३७२
लामा—४६६, ४७१
लामा छोर्तेन्—३८६
लामाथङ—३७९, ३८४
लालगंगा—२१
लालढंग—१९, ३१८ (डा० वं०)
लालदर्वाजा—२४
लालसिंह—१७९, २०७, २०८
लालसांगा—३३३
लालूर—२४३
लालूरी—४०३

लावा—२८४
लासत (=ल्हासा)—९५
लास्यतरंगिणी—९९ (लातूर नदी)
लाहुगढ़ (पुल)—३८८
लाहुल—५८
लाहौर—१४४, २१६, २२३
लिंगवास—२८१
लिच्छवि—११३
लिपूलेख—३८४, ३८५ (घाटा)
लिप्पा—५८
लिबुग्रान—२०१ (सप्त-कौशिकी)
लिम्बू—४२, १८४
लीग-लीग—१८८, १९०
लीलम्—३८८
लुग्रानी—३३१
लुधियाना—२३२
लुंबिनी—२२५ (रुम्मिन्-देई)
लूथराज—२६७
लेखवार—३४३
लेन्सडौन—३१, २३९, २४५, २६५, २८२, ३०१, ३११-१४, ३१८ (डा० वं०), ३२२, ३३१, ३३७, ३५०
लेह—२७
लो-ग्रा-चे-ला—३८९
लोकपाल कुंड—१३, १६, १७, २८२, ४०१, ४८४ (=हेमकुंड)
लोद—११९ (गढ़)
लोदन—११९ (गढ़)
लोदी—११९ (जाति), १८३ (नदी)
लोधी—१४२
लोध्र शिखर—९९
लोब्-जङ-ग्यम्छो—१३७
लोस्तु-बड्यारगढ—२४३ (चिग्रड़ी)
लोह—९९
लोहबा—७ (पट्टी), २०, २१, २३, १०० (नदी), ११९ (गढ़), १४४, १४७, १४९, १५४, २४२, २७६, २८२, २९७, २९८, ३१२, ३१५, ३१८ (डा० वं०), ३२२, ३२३, ३२६, ३३६, ३५०, ४०७
लोहवान—२७६
लोहवाल—११९ (नेगी)
लोहँबिया (नागा)—५१
लोहाचौर—३१८ (डा० वं०)
लोहाजंग—३९१, ३९५, ४०१
लोहाघाट—९९ (नदी)
लोहार—२७८, २९९, ३३१ (लोहारा)
लोहारी नाग (चट्टी)—३७०
लौंगस्टाफ (डाक्टर)—११
लौदंडी—२०१
ल्दे-ग्चुग—११३ (दे-चुग्)
ल्युतमदेव—२६७
ल्ह-दे—(०ल्दे)—११३
ल्ह-स्दे—७४
ल्हासा—७०, ७१, २००, २०२, २३५, २५६, २५७, ३६०-६२
वङ-दे—११३ (द्वङ्-ल्दे)
वज्र—१०७ (कत्यूरी)
वज्रवाहु—१०८ (कत्यूरी)
वत्सराज—६९ (गुर्जर-प्रतिहार), ७०, ७४
वदनकुमारी—२३२
वनराष्ट्र—५८
वरदराज—३३९
वरदाचार्य (स्वामी)—३४२
वरादित्य—९९ (कटार-मल्ल)
वराह—८६
वराहमिहिर—५७
वरुण लिंग—३२९ (रावल)
वरुणा—३४७
वरोषिका—८६

वंशराज पांडे–२०१
वशिष्ठ–५१ (मुनि), ५४, ३३६, (०कुंड)
वसंतनदेव–७१ (कत्यूरी), ७२-७४, १०५-८
वसन्तपुर-दरबार–२०१
वसन्तर लिंग–३२९ (रावल)
वसन्ति–१०८ (वसन्तन)
वसव–४४५
वसुदेव–२६७
वसुधारा–३४१ (वदरी०), ४७३
वसुलिंग–३३० (रावल)
वसुष्क–६६
वह्नितीर्थ–९९ (= गौरीकुंड)
वागलक्षेत्र–९९
वाङ-लुङ–२०३
वाचस्पति–४६१, ४६८, ४७०
वाजपेयी–३३१
वान–३०८
वामसू–२८१
वारपाक–१९१, १९२
वारा–२२५
वाराणसी–९९ (उत्तरकाशी)
वाराहाट–बाड़ाहाट (उत्तरकाशी)
वालिच–२९६
वाशिंगटन–४६३
वासुदेव–६२ (राजा), ६६, १००, १०२, १०५, १०६, ३४५, ३४७ (जोशीमठ), ४७५ (रावल), ४७७
विक्रम–१८७
विक्रमपाल–१२१
विक्रमशाह–२१०
विक्रमशिला–१०५
विक्रमसिंह–२०५
विक्रमादित्य–१०७, १११
विग्रहपाल–६९, ७३, ७४, १०४
विचित्र–१८८
विचित्रपाल–१२१
विचित्रलिंग–३२८ (रावल)
विजयपाल–७४, १२०-२४, १२७, १२९
विजयराम–१७३, १७६ (विजे०), १७७ (नेगी)
विजयानंद–२११ (उपाध्याय), २६६, २६७
विजे–१२० (राजा)
विज्जट–८६
वितस्ता–५५ (झेलम्)
विदेहलिंग–३२९ (रावल)
विद्याकोटी (चट्टी)–३७३
विद्याचंद्र–११५ (मांडलिक), ११६
विद्यापीठ–३२२ (उत्तराखंड०)
विद्याराज–१०८ (विधि० कत्यूरी)
विद्रोण–९९
विधिपाल–१२१
विधिमाल–९३
विनयचंद–११५ (मांडलिक), ११६
विनयपाल–१०७ (कत्यूरी)
विनायक–७४, ९९, ४८३ (चट्टी)
विनायकद्वार–९९ (सोमद्वार)
विनोदसिंह–११९ (राजा)
विन्ध्य–९८
विभांडेश्वर–९९
विभोगपाल–१२१
विभोगितपाल–१२१
विमिकराज–१८७
विरहवती–९९ (विडहीगंगा, विरही)
विरहीगंगा–९९ (विरहवती), ३३३
विलासपुर–२०५ (कहलूर), २०६
विलियम्स–१०१, १२०, १२५

विल्किन–१९
विल्वकेदार–३०५,३७३, ३७५
विल्वेश्वर–९९
विशालदेवी–८५
विशेषपाल–१२०
विशेषलिंग–३२८(रावल)
विशोकलिंग–३२९ (रावल)
विश्वनाथ–२६७, ४१९, ४३१
विश्वलिंग–३२८(रावल), ३३०
विश्वामित्र–५४, ३४२, ४८४
विश्वास (डाक्टर)–४२६
विश्वेश्वर–२७०
विश्वेश्वरपाल–१२०
विषयतंग–८६
विषयी–८६
विष्णुगंगा–१०,१४,१६, ८०,९९ (अलकनन्दा), ३३४
विष्णुतीर्थ–९९ (कालसीके पास)
विष्णुप्रयाग–१४, ३३४, ३५०, ३७२, ४६६, ४६७
विष्णुमल्ल–१९४, १९७
विहलक–८६
विहान्दक–९२
विहार–४८, २२८
वीतराग लिंग–३२८ (रावल)
वीर–१२० (राजा), २२१
वीर अधिकारी–२१२
वीरदेव–१००(कत्यूरी), १०९, १११, २६७
वीर दत्त–१२७
वीरभद्र–१८८, १९३, २०५ (कुंअर), २०६, २२१, २३२, ३२९
वीरभूमि–२६६, २७० (वंगाल)
वीरशैव–४१९
वीरसिंह(नूरपुर)–२०५
वीरसेन–२७०
वीरोंखाल–३२५
वूड–२२८, २३२
वृन्दावन–३४४(स्वामी)
वेग–७५ (देवी)
वेणु–९९
वेतालीन–९९
वेदधारा–३४१(वदरी०)
वेनवाक–८६
वेलेज्ली–२०४
वैकर्तन–८५
वैतरणी–९९
वैद्यनाथ–१०१ (कार्त्तिकेयपुर, वैजनाथ)
वैद्यलिंग–३२८(रावल), ३३०
वैरापट्टन–६८
वैरागी–२८०
वैरासकुंड–३०५
वैष्णव–२८०
वैष्णव (शालिग्राम)–३४०-४४
वोणीगांव–२६६
व्यक्तपाल–१२० (राजा)
व्याघ्रेश्वर–८१, ८२, ९०, ९९(=वागेवर)
व्यापार–३०३
व्यास–५५, २६९, ३४८ (वेद०)
व्यासगुफा–३४१(वदरी) ४७३
व्यासघाट–८,१४,३१२-१५, ३१८ (डा०बं०), ३३३, ३७३, ३७५
व्यासाश्रम–१००
व्यासी (चट्टी)–४८८
शक–५२,५४, ६४, ६५, १०१, १०६, १०७ (कत्यूरी) २७१
शंकर–९३, २७९, ३४५ (संप्रदाय) ४४७ (आचार्य)
शंकर डोभाल–१४९
शंकराचार्य–१०५, २७८, २८०, ३३५, ३४०,

३४३, ३४५, ४१५, ४४६, ४६४, ४६७, ४७६
शक्तिवाहन—१०७ (कत्यूरी)
शङ्-छो-जोङ—३८९
शङ-शुङ—११४ (थोलिङ्)
शतद्रु—१०० (सतलुज)
शतद्रू—१८३ (सतद्रू)
शतौली—२०४ (सतौली), ४४७
शत्रुसिंह—४९१
शबर—५४
शंबर—५२, ५९-६०
शमशेरसिंह—११८
शम्भु—१००
शरणखोन—८५
शरणभद्र—२३२
शरणार्थी—४११
शरणेश्वर—८१
शर्बा—रब्—३७९, ३८५
शरभू—५५
शशांक—६८
शशिधर—२६८
शाकद्वीप—६७
शाकंभरीक्षेत्र—१००
शाङ्—३३१
शातवाहन—१०१ (आंध्र)
शान्तरक्षित—७०
शान्तिसदन—३२२
शापुक—३८४
शामदास—१३३
शारदा—५१, ५५, १००
शालिग्राम—देखो वैष्णव (शालिग्राम)
शालिवाहन—६७, १०१ (शातवानण) १०६, १०७, १२१, १२४
शालिनकुल—१०७ (कत्यूरी)
शाली—१००
शाल्मलि—१००
शाहजहाँ—४३, १४३, १४४, १५१, २३०
शाह (दलीप)—१५५
शिक्षा—३२५
शिखन—८६
शिगरी—६३
शिताब—१२० (राजा)
शिन्-अर्हन—५३
शिन्दे—२२८
शिपकी—३८९, ३९० (घाटा)
शिपुक—३८१, ३९७
शिमला—४०, ५३, ११९, २४७, २४८, २६४, ३३६, ३५३, ३८८, ३९०, ४६४
शिमार—३३
शिरा—९८, ११४ (रानी)
शि-रिङ्-ला—३८९, ३९०
शिल्पकार (डोम)—२६६, २७६, २९५
शिल्ला—४१६
शिव—३२९
शिवकुंड—१००
शिवदत्तसिंह—१९५
शिवदेव जोशी—१५५
शिवपुरी—३०, ३३, ४१, १९८
शिवराजपुर—२२५, २२६
शिवसिंह मल्ल—१९४
शिवानंद—३४४ (स्वामी)
शिवानंदी—२२२, ३७३ (चट्टी)
शीतलशाह—१२२, १३८
शीतवनि—१००
शीया—१५२
शीरा—९३
शीलादित्य—८६, ९१
शीशगंज—१५०
शीशराम सकलानी—१५५
शुक्ल (गयाप्रसाद)—२६६, ४०८, ४८८, ४८९
शुजाउद्दौला—१५३
शुबदनी—३३१
शुभयान पाल—१२१ (सुभजान०)
शुभसेन—३०१
शूदडा—३३१
शूर—७४

शेख जबर—१९६
शेरबहादुर—२०४
शेरशाह—२४७
शेषधारा—३१८ (डा० वं०)
शेषनाग—५१, १००
शेषनेत्र—३४१ (वदरी)
शेषेश्वर—१००
शैलोदा (नदी)—५३
शैव—४४५
शोङ-टङ—३७५
शोषिजीवाक—८६
श्यामकर्ण—४७१
श्यामदास—१३३
श्यामपाल—१२०
श्यामशाह—१२९, १३२-३४
श्यामधुरा—३८८
श्रवणकुमार—४७३
श्रावस्ती—७१ (भूक्ति)
श्रीकंठ (२०, १३५ फुट) —१२
श्रीकोट—४०६
श्रीक्षेत्र—३५१
श्रीगढ़—१६६
श्रीगुरु—११९ (गढ़)
श्रीनगर—१६, २०, २५-२८, ६३, ६४, ११७, १२८, १२९, १३५, १३६, १४०, १४४, १४५, १४७-४९, १५६, १६१, १६७, १७१, १७८, १८०, १८१, २०८, २१२, २१३, २२१, २२४, २३६, २३८, २४५ (थाना), २५०, २८१, २८२, २९४, २९९-३०३, ३०५, ३११, ३१३, ३१५, ३१८, ३१९, ३२२, ३२५, ३३२, ३३३, ३३७, ३३९, ३५०, ३५१, ३५५-५७, ३७३, ३७५-७७ (बाजार), ३८२, ३९६, ४०४-६, ४११-१३, ४३७, ४५५-५८, ४६४, ४८६, ४९०
श्रीविलास—१६३, १६७, १७१, १७३, १७४
श्वेतलिंग—३२८ (रावल)
श्वेतहूण—६५
सआदतअली—१५१, १५२, १९५
सकन्याना—३१६, ३१८ (डा० वं०), ३३१, ३५१, ४०२
सकलाना—२४४, २७० (सकलाणा, सकल्याणा)
सकल्याणी—१८३, २७०
सकल्याना—३५२
संकट—८७
संकसर—१०८ (कत्यूरी)
सकिल—१०८ (कत्यूरी)
सग—३८२
सगर—८३
संगरा—३०५
संगल नाग—५१
संगतिपाल—१२१
संगलाकोटी—३२२
संगेला—११९ (गढ़), २७६ (विस्ट)
संघधर्मबर्धन—२६१ (गेशें)
सङ्-ला—१३८, ३७५
सच्चिदानंद (स्वामी)—४१४
सजनसिंह—११८ (राजा)
सजवाण—११७, ११९, २७३, २७६, (सजवान)
संजय—१०७ (कत्यूरी)
संजर—३२४
सज्यनरा—७२ (रानी), ८१
सटिकतोक—९३
सठयारा—२९३
सड़कें—३११
सडायिक—९३
सतपती—१६
सतपथ—३४१ (वदरी)
सतपाल—१२१

सतलज (सतलुज)–३, ४१, ४२, ६६, १००, १३८, १४३, १८४, २०५, २०६, २१६, २२४, २२७, २२८, २३३, ३७९ (उद्गम), ४१९

सतहूं–१८५, १८६, १८८ (नेपाले) २०३, २०७ (शतहू भीं)

सतोपन्त–३५२ (सतोपथ, ०पंथ)

सतोपंथ–१० (शिखर), १२, १३, १६, १७

संथोली–९७

सत्ति–२७०

सत्तूखाना–३८१, ३९७

सत्ती–२६२, ३४६

सत्पूरा–२९८

सत्यनाथ (भैरव)–३३७

सत्यपाल–१२१ (अनंत०)

सत्यरूपलिंग–३२८ (रावल)

सत्यानन्द–२७०

सत्रक-पुत्र–९३

सदानंद–१२० (राजा), ३४४ (स्वामी)

सदानंद लिंग–३२९ (रावल)

सदायिक–९३

सदायिका–८७

सदावर्त (भोजन)–२८१

सदाव्रत–२४६

सनेश्वर–१०८ (कत्यूरी)

सनेह–३०, २४२, ३११ (रोड), ३१८ (डा० वं०)

सन्धिपाल–१२१

संन्यासी अखाडा–२०२

सप्तकौशिकी–१८७, २०१

सप्तगंडकी–१८६, १८७, १९३, २०१

सफदर-जंग–१५२ (नवाब), १५३

सबलसिंह–११९ (राजा)

सबली–१४४, ३५२

समरसिंह (समरसी)–१०७ (कत्यूरी)

समाई–३१२

समिज्जीय–८६, ९३

समेहक–८७

सम्भल–१३६

सम्भवाल–३३१

सरईखेत–३१२, ३१३

सरदार–३५४

सरना–९३

सरयू–११, १००, १८६, ४४५

सरवाल–२७६

सरसल्यान–१९२

सरसावा–१२८

सरस्वती–१४, १६, ५२, १००, ३८१, ४७३, ४७९

सराइखेत–३१२ (सरईखेंत)

सराहन–३८०

सरोला–१३७ (ब्राह्मण), २६६-७१, २८५, ३४६, ३९३, ४८३

सरौंखाल–३१३

सर्पगांव–९७ (तक्षक)

सर्वेश्वर (खनाल)–१८९, १९०

सलखेद–३१८ (डा० वं०)

सलाण–१७, ११७-१९, १६४, १७५, १७६, २३९ (गंगा०, तल्ला०, मल्ला०), २४० (तल्ला०, मल्ला०), २४२, २४६ (पर्गना गंगा० मल्ला०), ३०५, ३०६, ३३७, ३३९, ३५०, ३५२

सलानी–१४२

सलोड़–२९८

सलोणादित्य–७१ (कत्यूरी), ७३, ७४-८३, ८५

सल्ट महादेव–३०६, ३१५, ३५२

सल्मान—१८५
सल्याण—१८६
सल्यानो—१९२
सवाथू—२३३
सँवा—२९२
संसारचंद—२०५; २०६, २२०, २२३ (राजा)
सस्क्य-विहार—१३८ (तिब्बत)
सहजपाल—१२२-२४, १२७, १२९, १३०, १३१
सहदेव—४३२, ४८४
सहारनपुर—२८, १२५, १२८, १४९, १५३, १५४, १५८, १८१, २२९, २७३-७६, ३५२
साईंधार—१४९, ३२२
सांकरी—११९ (गढ़), २४४
सांकृत्यायन (राहुल)—४१९, ४३०, ४७४
साँगा—३१६ (=पुल)
सातगांव—१९४
सात्यकि—५३
सान्देव—३८६
सामदेवी—७६
सामिज्जीय—९३ (समिर्जीय)
साम्राज्यवादी—२५८
सारंग देव—१०७ (सारंग्य०)
सारंगधर—१०७ (कत्यूरी), २६६
सारज्यूला—२४२
सारन—७१, २२५-२७
सारनाथ—४७५
सारस्वत—२६६-६९
सारा—१००
सालम—१००(शाल्मलि)
सावली (खाटली) ११९ (गढ़), १४९, २४२
सासोनखाल—३१३
साहसपुर—१२८
साही-ठकुरी—१८६, १८७
सिक्किम—२०१, २०२
सिक्ख—१७, १५८, २०५, २८२ (सिख)
सिङ्-क्याङ्—६५, ७०
सिगोट (चट्टी)—३७०
सिट्टक—८६, ९३
सितंबर लिंग—३३० (रावल)
सितोनस्यूं—२४२
सितोला—१००(स्वयंभू)
सिदारा—९१, ९३
सिदौली—३२२
सिद्ध—२७९
सिद्धकूट—१००
सिनी—९७ (त्रिविक्रम नदी), १०० (गढ़)
सिनोन स्यूं—५०
सिन्दूरयात्रा—२००
सिन्ध—६८, १०५
सिन्धदेव—१०८ (कत्यूरी)
सिन्धवली—८३
सिन्धु—५५, ७३, १०२
सिन्धु देवी—८३, ८५
सिन्धुली गढ़ी—१९९, २२५
सिपाही—२७६
सिबेरिया—२६
सिब्-ख्लिम्—३८०-८५, ३९०, ३९४, ३९५, ३९८, ३९९, ४०५
सिमरोनगढ़—२२५
सिमली—३१२, ३१३, ३२२, ३२७, ३६८-७०, ३९३, ४०७ (चट्टी)
सियासैण—३२२, ३७२ (चट्टी), ३७७, ३७८, ४६०
सियाहीदेवी—९५
सिरखा—३८५
सिरगुर—२०१, २४२
सिरगुरौ—२७१
सिर-दङ—३८६
सिरमोर (नाहन)—१३० १३२, १४४, १४७, १४९, १५९, १७९, १८०, २०५, २०६, २२१-२४, २३२, २७४

सरा–१३५
सराजउद्दौला–१५३
सरगुरू–२७०
सरीनगर–१४०, १६२ (श्रीनगर), १६८, १७३, १७४, १७८, १८२, १८३
सरोविलास–१६४, १६८, १७६
सिरई (चट्टी)–३६८, ३६९
सिरौली–४०७
सिलकोट–२९७, २९८
सिलक्यारी (चट्टी)–३६८, ३६९, ४०३
सिलगढ़–११९, २४४
सिलङः–३३९
सिलवार–२४३
सिला–९३
सिली–२४२
सिलूरीय–१८
सिलौड़ा–२७०
सिल्ला–२७०
सिल्वाल–२७०
सिवराम–१८२
सिवालिक–१८, १५०
सिसोदिया–२७५
सिंह–२१६, २१७, २७६
सिंहधारा (चट्टी)–३७२, ४६४
सिंहप्रताप–१९८, २०२, २०३
सिंहवली–७३, ८५
सिंहमल्ल–१०८ (कत्यूरी)
सिंहल–५४
सिहारा–८६
सिह्लानचोक–१८३, १९०, २०३
सीश्रापति–१९३
सीगतपाल–१२१
सीताकोटी (चट्टी)–३७३
सीताराम–३४५ (रावल), ३४७ (मठ)
सीताह्लद–१००
सीबा–२०५
सीथमल्ल–१०८ (कत्यूरी)
सीयागाड–१२
सीरादेवी–४९७, ४९९
सीला–२४२ (तल्ला, मल्ला), ३३७ (पट्टी), ३५२
सीसराम–१८२
सुई–१०, २७०
सुकरौ–२४२
सुकल्याडी–३८६
सुकिरता (चट्टी)–३७३
सुकेत–२०५, २७५
सुकोचर–९७ (दुःशासनेश्वर)
सुक्खी (चट्टी)–३७०, ३७४, ३७५, ३७९
सुख–१२० (राजा)
सुखल देव–१३५
सुखेती–१६८
सुगौली–२३६
सुग्यानपाल–१२१
सुजाखोली–४०३
सुदर्शनशाह–१२३, १२९, १८१, १८२ (सुदरसन), १८३, २३६, २४६, २४७, २७०, ३३६, ३४९
सुवास्–५२, ५९-६०
सुनार–२७६, २७८
सुनोली–३८३
सुन्दरढुंगा–१००
सुन्दरपाल–१२२, १२९
सुन्दरलिंग–३२८ (रावल)
सुन्दरियाल–२७०, ४८६
सुन्दरियाल (जीवानंद)–४५८
सुन्दरोली–२७०
सुन्यामुन्या–६३
सुपन–१६
सुपिन–१४, १६
सुबताल–१७
सुबधनकोटपाल–१२१
सुबादार सिंह–२१२
सुबुंक-तगिन–३०३
सुभचंद–१२० (राजा)
सुभट्ट–८६

सुभट्टक–९१
सुभिक्ष–८८, ९०
सुभिक्षपुर–५६, ७२, ७३, ८४ (जोशीमठ ?)
सुभिक्षराज (राजा)–७२, ७३, ८४, ८५, १०६
सुमतिपाल–१२०
सुमरा–३३
सुमरी–३२२
सुमाडी–६४
सुमेर–३४८ (सुमेरू, कैलाश)
सुमेरपुर (चट्टी)–३७३
सुमेरू–१२
सुयाल–२७०
सुरखेत–२०३
सुरतान–१९२
सुरतिपाल–१२१
सुरयपाल–१२०
सुराई (ठोठा)–३८२, ३८३ (सुरै), ३९५, ३९८
सुरिङ्ग–९८, ३८८, (घाट)
सुरैंथोता–३३६ (सुराई ठोटा)
सुलक्षणदेव–१२१
सुलिक–६७
सुलक्षणपाल–१२१ (लखन०)
सुलेमानशिकोह–१३३, १४४, १४५
सुवर्णकण–२४
सुवर्णगोत्र–६८
सुवर्णपाल–१२१
सुवर्णप्रभा–२०४
सुवर्णभूमि–५८
सुवाल (नदी)–१०० (शाली)
सुवै–६३, ३३६
सुसवा (नदी)–९८ (वालखिल्य)
सूष्टधीमा–८६
सूकी–४०२ (सुक्खी)
सूखाताल–४
सूजदत्त–१२५
सूनला–३१८ (डा० वं०)
सूना–१५
सूरगढ़–२३३
सूरत–१२० (राजा)
सूरजपाल–१२१
सूरजप्रतापशाह–१९९
सूरवीर खत्री–२०६
सूरे–१२० (राजा)
सूर्य कमल–२६९
सूर्यकुंड–१००
सूर्यखान–१८७
सूर्यवंशी–११८, २७५
सूला–३२२
सेक्रेटरी–३४६ (बदरीनाथ, श्री पुरुषोत्तम वगवाड़ी), ४२९
सेती नदी–१९४
सेन–१८६
सेनठकुरी–१९३
सेनापति–२६१
सेनीयक–९४
सेमगांव–२७०
सेमखरक–३९१, ३९५, ४०१
सेमलखेत–३९३, ४०६
सेमल चट्टी–२७३, ३७५
सेमल्टा–१३७, २७०
सेमल्टी–२७०
सेमवाल–२७०
सेमा–१३७, २७१
सेरांघाट–३८६
सेरिया–३१३
सेवायिका–८७
सैंजी–३९३
सैंधार–२४२
सैयद अली–१४९
सैयद-बन्धु–१५१, १५२
सैल–२७०
सैल्वाल–२७०
सोतदेव–१०८ (कत्यूरी)
सोन नदी–१३६, २७६
सोनगढ़–२४
सोनपाल–१२१ (सोहन०), १२६
सोनला चट्टी–३७२

सोनी—२७०
सोन्याल—२७० (सुन्याल)
सोमद्वार—३७१ (चट्टी), ४२२
सो[illegible]नर्सिंह—१७६
सोमेश्वर—९७, ९८, ३९१, ३९२ (बाजार), ४०१-४
सोलंकी—१२४ (=चालूक्य)
सोलन—३५३
सोरग व (चट्टी)—३७६
सोरगंगा—२४
सोशीजीवक—९१
सोसा—३८६
सौंक—३७३ (चट्टी)
सौंडी (चट्टी)—३७६, ४१६
सौतिया-बांट—२८६
सौती—२७६
सौत्याल—२७६
सौन्दाड़ी—३७६
सौन्दनेगी—२७६
सौम्यकाशी—१०० (उत्तरकाशी)
सौराकी गाड (चट्टी)—३७०
सौराल—४०६
सौराष्ट्र—६७
सौला—३९४
स्कंदगुप्त—६७
स्ट्रेची (सर जान)—९
स्तूप (बौद्ध)—४२०
स्पुरङ—१३९, ३८५ (=तकलाकोट)
स्पिती—२७
स्पू—५८, ३८९ (=पू)
स्यरतान—१९२
स्यामशाह—१३६ (श्यामशाह)
स्रुघ्न—६८
स्रोङ-चन्-गम्-पो—६९ (स्रोङ्-वचन्०)
स्रोङ-ल्दे-ब्चन्—६९
स्रोङ-स्दे—७४, ११३ (०ल्दे)
स्वभावलिंग—३२८ (रावल)
स्वयंभू—१००
स्वर्गारोहिणी (२०, २९२ फुट)—१००, ४२४ (भैरवझांप)
स्वरूपलिंग—३२८ (रावल)
स्वस्तिक लिंग—३२९ (रावल)
स्वहारगाडी—११५
स्विट्जरलैंड—९
स्वीडन—४२६
स्वेन्-चाङ—५७, ५८, ६८
हटवाल—२७०, ३४६
हटौड़ा—१९८
हड़ताल—१७०
हणमान—४९३
हथछिना—११०
हनुमान्—१२
हनुमान गंगा—३९, ३३१
हनुमान चट्टी—३५२, ३६९, ३७० (जमुनोत्री), ३७२ (बदरी०), ३७७, ३७८, ४६७, ४६८, ४८२
हनुमान-ढोका—२००, २०१
हर—१२० (राजा)
हरकसिंह—१४८
हरकी पौड़ी—२११, २१३
हरदास—१३३
हरदेव—२६७
हरखदेव जोशी—१८२ (हर्षदेव०)
हरद्वार—७, २८, ३०, ९६, १२८, १३२, १३९, १४०, १४४, १८२, २११, ३११, ३२६, ३५२
हरपा—१२० (राजा)
हरप्रसाद—१५०
हरबर्ट—१९, २४
हरबंस—१७४
हरराय—(मृत्यु १६६१ ई०)—१४९

हरशिल—१३८, २५१ (हरसिल), ३५२, ३७० (चट्टी), ३७४, ३७५, ३७९, ३८०, ४०२
हरिकृष्ण रतूड़ी—१४९, २८५
हरिण काली—१०० (नदी)
हरितपाल—१२१
हरितसिंह—१०७ (कत्यूरी)
हरिद्रा नदी—१००
हरिद्वार—२१३ (देखो हरद्वार)
हरिनारायण—३४४ (स्वामी), ४८९ (मिश्र)
हरिपुर—१२
हरियाना—४६३
हरिब्रह्म—३४४ (स्वामी)
हरियाकोट—२३
हरियाली—६३
हरिराज—११५ (राउत्त-राज), ११६
हरिराम जोशी—१५५, १५६
हरिवर्मा—१०७ (कत्यूरी)
हरिश्चन्द्र—३४४ (स्वामी
हरिस्मरण—३४४ (स्वामी)
हरिहर—१८८
हरिहरसिंह—१९४
हरी—१२० (राजा)
हरीसिंह—१६९
हरू—१२० (राजा)
हर्नक्लिफ—४८९
हर्षदेव जोशी—१६०, १६२-७९, २०३, २०७, २०८
हर्षपुर—८६, ९४
हर्षवर्धन—६७-७१, ४४५
हलिया—२७८
हल्दी—२९३
हल्दूखाता—२४२, ३१८ (डा० वं०)
हल्दूपड़ाव—३१८ (डा० वं०)
हवालबाग—३९१, ३९२, ४०३, ४०४
हस्तिनापुर—२७३, २७४
हस्तिदल थापा—१५१, १६३, २०९ (हस्ती०), २१२, २२६ (गढ़वाले), २११
हस्तिदल शाह—१८१ (चौतरिया), २१०, २११
हंसतीर्थ—१००
हंसदेव—१२९
हंसदेवपाल—१२२
हंसपाल—१२१
हाट—२३, २७० (गांव), २७१, ३३८, ३४८, ३७२, ४६०, ४६४, ४९६
हाटकोटी—१४३
हाटजैसल—३३८
हातड—२४३
हाथी—२७६
हाथीकुंड—३१८ (डा० वं०)
हाथी पर्वत—१३
हार्डविक—१२०, १२५, १३६, १६३
हिदाऊ—२४४
हिन्दी—२५०
हिंदुस्तान—२४८
"हिन्दुस्तान टाइम्स"—२५८
हिन्दुस्तानी—१५१
हिन्दू—४७, २७८
हिंदूर—२०६ (नाला गढ़)
हिन्दोस्ताँ—२३६
हिमाचल—१८९, १९५ २२९, २७९, ३०२
"हमाचल"—४९१
हिमाल—१९३ (श्रेणी २०२
हिमालय—३, ९, ५ १५१, २५१
हियरसी—२२८, २ (हेंरसी)
हिरण्यगर्भ—१००

हीरालाल—१३३
हुज्जाज—१०३
हुडकिया—२७२
हुविष्क—६६
हुसेन अली खां—१५२
हुसैन खां (टुकड़िया)—१५१, ४७६
हूइचाव—२९७
हूण—५४, ६५-६७, ८०, ८३, ८५, १०१ (श्वेत०), १०२, २७१, २७५
हूणदेश—११३ (तिब्बत), २७५
हू-ले—३८९, ३९०
हृषिकेश—८५ (ऋषीकेश)
हेफताल—६८ (श्वेत-हुण), १०२
हेमकुंड—१७, २८२, ४०१ (=लोकपाल-कुंड) ४८४
हेमशृंग—१००
हेमिल्टन—१८५
हेलङ—६३, ११८, ३२२-३४९ (चट्टी), ३५२, ३७२, ३९२, ३९४, ३९७, ३९८, ४०४, ४०७, ४६३, ४८२
हेस्टिंग्ज—२०२, २२५ (गवर्नर-जेनरल), २२६, २२७
हैजा—३२३
हैदराबाद—१५१, १५२
हैपीवेली—४८९
होडरिया—२७१
ढोती पड़ाव—३८२, ३८३, ३९५, ३९८, ४००, ४०६
होरस—२००
होलकर—२२८
होलयूनी—२८२
ह्यूंल-उपत्यका—८
ह्वाङ्हो—६९
ह्वीलर—५०